॥ उक्तंच ॥

सदितिभणीएणजम्हा । सव्वथ्थाणुपव्वत्तएबुद्धि ॥
तोसव्वसंत्तमंतं । नथ्थितदंतरंकिंचि ॥ १ ॥
इतिसंगृहनय कह्यो २

हवे व्यवहारनय कहिये छिये जे पूर्वे संगृहनये जे वस्तु गृहण करी तेने भेदंतर करीने वेंहेंचवुं तेने व्यवहारनय कहिये जेम द्रव्य कह्यो ते सामान्य कह्यो ते मध्ये व्हेंचण करिये त्यारे द्रव्यना वे भेद थाय एकरूपी १ बीजो अरूपी २ अरूपीना वे भेद एक चेतन १ बीजो अचेतन २ इत्यादिक जे भेद व्हेंचवा ते सर्वे व्यवहारनयनो पक्ष जाणवो, अथवा व्यवहार कहेतां प्रवर्तन तेने व्यवहारनय कहिये छिये तेना वे भेद शुद्ध व्यवहार १ अशुद्ध व्यवहार २ ते शुद्ध व्यवहारना वे भेद वस्तुगत व्यवहार कहेतां जे सर्व द्रव्यनो स्वरूप रूप शुद्ध प्रवर्ति होय जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता अधर्मास्तिकायनी स्थिर सहायता, जीवनी ज्ञायकता इत्यादिक वस्तुगत व्यवहार छे तेना त्रण भेद छे द्रव्य व्यवहार १ गुण व्यवहार २ स्वभाव व्यवहार ३ बीजो साधन व्यवहारना वे भेद उत्सर्ग साधन १ अपवाद साधन २ जे उत्सर्ग साधन ते द्रव्यनुं उत्सर्ग नीपजाववा माटे रत्नत्रयीनी शुद्धता करवी ते गुण स्थाने श्रेणिक आरोहणरूप थावुं हवे जे अशुद्ध व्यवहारना वे भेद जे क्षेत्र अवस्थाने अभेद रह्या जे गुण ज्ञानादिक भेद कहेवा असद्भूत व्यवहार कहेतां अमुको क्रोधी मानी विषयी इत्यादिक अथवा देवता मनुष इत्यादिक अथवा देवतापणुं ते हेतुपणे परिणमे ग्राहा जे देवगती वीपाकी कर्म तेने अहोरूप प्रभाव छे पण यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञान शून्य

जीव एक करी माने छे ते अशुद्ध व्यवहार कहीये ते वली अशुद्ध व्यवहारना बे भेद, एक संश्लेषित अशुद्ध व्यवहार ते मारुं शरीर हुं शरीर इत्यादिक श्लेषित असद्भूत व्यवहार, तथा असंश्लेषीत कहेतां पुत्र धनादिक महारु एम कहेवुं ते असंश्लेषीत ए अशुद्ध व्यवहारना बे भेद महा भाष्यमां कह्या छे हवे जे व्यवहारना बे भेद मूल छे एक वहेंचणरुप व्यवहार १ बीजो प्रवृत्तिरूप व्यवहार तथा प्रवृत्ति एक वस्तु प्रवर्तन १ साधन प्रवृत्ति २ लौकिक प्रवृत्ति हवे साधन प्रवृत्तिना बे भेद छे, एक लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति जे अरिहंतनी आज्ञाये शुद्ध साधन मार्गे इह लोकसंसार पुद्गलभोगाशंसा-यश आशंसादिराहित जे रत्नत्रयीनी परिणति परभाव त्याग स-हितने साधन प्रवृत्ति तथा जे स्याद्वाद विना मिथ्याभिमान सहित कुप्रवचवन कुसाधन प्रवृत्ति अथवा लोक व्यवहार परोवाये वचने जे लोकनो स्वस्वदेश अनुकुल प्रवर्ते ते लोक व्यवहार कहीये एटले आप आपणे स्वार्थनो मार्ग चलववो अथवा आप आपणा स्वार्थनो उपदेश ते मार्गमां जे प्रवर्ते अथवा प्रवर्त्तावे ते सर्व लोक व्यवहारना भेद जाणवा. तथा द्वादशारनयचक्र मध्ये एक एकनयना सो सो भेद कह्या छे, ते शास्त्र रहस्यना जाण जीव होय तेने ए ग्रंथथकी जाणवा. ए विचार धारवाथी खुलासो घणो थशे ए व्यवहारनय कह्यो ३ हवे रुजुसूत्रनय कहीये छीये रुजु सरल जे श्रुत कहेतां बोधते रुजुसूत्र कहीये, रुजु शब्दे अवक्रपणुं छे सरल श्रुतने रुजु सूत्र कहे छे. रुजु अवक्रपणे वस्तु पदार्थने सत्य करी जाणे तेने रुजुसूत्र कहीये, वस्तुनुं वक्रपणुं केम जणाय ते कहीये छीये, वर्त-मानपणे उपन्यो वर्तमान काल वस्तु ते रुजु कहीये अने जे अतीत अनागत ते रुजुसूत्रनी अपेक्षाये अछतो छे एटले अतीत तो वणशी गयो, अनागत तो आव्यो नथी, ते वारे अतीत अनागत ए बे छे

ते अवस्तु छे अने जे वर्त्तमान पर्याय वर्ते ते वस्तुपणुं सत्य छे. पूर्व काल पश्चातकाल लेइ वस्तु कहेवी ते नैगमनये आरोपणरूप छे त्यां कोइ पुछशे के संसारी जीव कर्म सहितने सिद्धसमान कहे छे ते अनागतकाले सिद्ध थाशे ते माटे कहे छे तेने तमे अनागतने अवस्तु केम कहोछो तेनो उत्तर.

हे भव्य ! ए अनागतभावी माटे कहेता नथी एतो वर्तमान सर्व गुणनी छतिपर्याय आत्मप्रदेशे छे, जो छतिपर्यायन होय तो सामर्थ्यपर्याय क्यां थकी थाय, माटे ए वर्तमानमां वस्तु छेज, पण आवर्णे करीने ढंकाइ गयो छे, तेथी प्रवर्तन नथी ते माटे तिरोभावपणा माटे संग्रहनय कहिये, पण वस्तुमां ते सर्वे सकल ज्ञानादिक गुण छतां वर्ते छे, ते माटे सिद्ध कहिये छिये, अने जे वस्तु ते नामादिकपर्याय सहित वर्ते छे माटे नामादिक निक्षेपाते सर्व रुजुसूत्रना भेद छे एटले नामादिक त्रण निक्षेपा द्रव्य अने भाव ए बे व्याख्या कारण कार्य भावनी वहेंचण करे ते माटे छे पण वस्तुमां सहज चार निक्षेपा ते भाव धर्मज छे. तथा पोतपोतानुं कार्य करताज छे ए रुजुसूत्र तथा बीजो स्थुल रुजुसूत्र ए क्षण वर्तमान कालनो, एक समयं तेने सूक्ष्म रुजुसूत्र कहिये, अने बहु कालीन रुजुसूत्र ए पण कालापेक्षा भावे छे, तथा ए भावनये छे, तथा एने जोगा विलंबीपणे ते वहाज छे ते द्रव्य मध्ये गणे छे, ए रुजुसूत्रनय कह्यो ४ हवे शब्दनयनुं स्वरूप कहिये छिये, संमति कहेतां बोलावे, तेने शब्द कहिये, अथवा सपीये बोलाविये, वस्तुपणे ते शब्द कहिये, ते शब्द ते वाच्य अर्थ तेने ग्रहे ते प्रधानपणे, जे नये ते पण शब्द कहिये, जेम करतकर्ते जे कर्यो तेनो हेतु जे धर्म वस्तुमां होय ते बोलाविये एटले शब्दनुं कारण तो वस्तुनो धर्म थयो, जलाहरण धर्म छे तेने घट कहिये छिये, एम अहिंयां पण शब्द वाच्य अर्थ ग्रेह

ते नये पण शब्द कहेवाय, जेम रुजुसूत्रनयने वर्तमान कालनो धर्म इष्ट छे तेम शब्दादिकनय ते पण वर्तमाननेजइष्ट छे जे कारणे पेटे पृथु पहोलो बुध्न गोल संकोचीत उदरकलित युक्त जलाहरण क्रिया सामर्थ प्रसिद्ध घटरूप भाव घटमांज घटे छे. पण शेषनाम स्थापना द्रव्यरूप त्रण घटनये घट न माने, घट शब्दना अर्थने ते संकेतनेज घट कहे. घट धातु ते चेष्टा वाची छे, ते कारण माटे शब्दनय ते चेष्टा करतानेज घटकहे एटले रुजुसूत्रनयचार निक्षेपा संयुक्तने पण घट माने अने शब्दनय ते भाव घटने घट माने, एटलुं विशेषपणुं छे. शब्दना अर्थनी ज्यां उत्पत्ति होय तेने ते वस्तु कहे, एटले ऋजु सूत्रनय सामान्य घट गवेख्यो, अने शब्दनयसदूभाव जे अस्तिधर्म असदूभाव जेनास्ति धर्म ते संयुक्त वस्तुने वस्तुपणुं कहे. एटले वस्तुने शब्द बोलावतां सातभागे बोलाववी एटले ए सप्तभंगी जेटला ते शब्दनयनाभेद जाणे ते सप्तभंगीनुं स्वरूप बोधदिनकरथकी जाणवुं. ए शब्दादिकनय वस्तुना पर्यायने अवलंबीने वस्तुनाभाव धर्मना ग्राहक छे ते माटे भावनिक्षेपे ए नयमुख्य छे, अने आद्यना चार नयमांना मादिक त्रण निक्षेपा मुख्य छे एवं ए शब्दनयनुं स्वरूप कह्युं ५ हवे समभिरूढनयनी व्याख्या कहिये छिये, पूर्वे जे शब्दनय कह्या तेने मतें इंद्र शक्रपुरंदर इत्यादि सर्वेनाम भेद छे एकपर्यायवंतने देखि इंद्र सर्व नाम कहे.

उक्तंच. विशेषावश्यके

एकस्मिन्नपि इंद्रादिके वस्तुनि ।

इंदनसकनपुरणदाय अर्थाघटंतेतदूवशेसनसक्रादि ॥

बहुपर्यायमपि तद्वस्तु शब्दनयोमन्यते ॥
साभिरूढस्तु वस्तुन मन्यते इत्यनयोभेदः ॥

एक पर्याय प्रगट पणे शेष पर्यायने अण प्रगटवे तेटलां सर्वनाम बोलावे पण समभिरूढ ते न बोलावे एटलो शब्द नय तथा समभिरूढ नयनो भेद छे तें माटे हवे समभिरूढ नय कहे छे जे संज्ञाघट कुंभादिका मध्ये जे संज्ञानो वाच्य अर्थदीसेतेज संज्ञा कहे संज्ञांतर अर्थने विषे प्रमुख छे ते समभिरूढ नय कहिये जो एक संज्ञा मध्ये जे सर्व मंत्रमानिये तो सर्व संकर थाय त्यारे पर्यायनुं भेदपणुं रहे नहि अने जे प्रजा अंतर होवे तेतो भेदपणुंजहोय ते माटे प्रजा अंतरनुं भेदपणुंज रह्युं छे ते माटे लिंगादिभेदने सापक्षपण वस्तुने भेद पणेंजमानवा ए समभिरूढनय वखाण्यो ए नयपण भेदज्ञाननी मुख्य ता छे एटल समभिरूढ नयकह्यो ६ हवे एवंभूतनय कहिये छिंय जेम घट ए शब्द चेष्टावाचि इत्यादिक रूपे शब्दनो अर्थ कह्यो छे ए रीतिज प्रवर्ते ते घटादिक अर्थ तें ए महिजवर्ते विद्यमानपणे जे शब्दना अर्थने लाधिनेवर्ते तेशब्दनो वाच्यनथी अने शब्दार्थपणुं जेमां न पांमिये ते वस्तु ते रूप नहि शब्दार्थमांहेथी एक पर्यायपण ओछो होय तो एवंभूतनय तेन कहे ए माटे शब्द नयथी तथा समभिरूढ नयथी एवं भूत विषेशांतर छे ए एवं भूतनय स्त्रिने माथे चड्यो पाणी आणवानी क्रियानानिमितमार्गे आवता पणेनी चेष्टा करतो घटमाने पण घरने खूणे रह्यो तेने घटनमाने केमके चेष्टाने अणकरवा माटे जे क्रियावंतथको होय तेने वस्तु कहे विजाने न कहे ते अर्थ कह्यो. जे लक्षण कह्यां ते रूपे विशेषथी ए जे चेष्टा घट शब्द वाचे प्रसिद्ध छे योषितास्त्रिने माथे पाणी लावतो ते घट तथा स्थानके रह्यो अथवा त्रण क्रिया करतां ने ते एवंभूतनय घट न कहे

ए शब्दे अर्थ तथा अर्थे शब्दने वापे छे अहियां तो रहस्य एज छे जे स्त्रिने माथे चडयो चेष्टावंत अर्थ ते घट शब्दे बोलावे ते थकी अन्यथा तेने न बोलावे. जेम सामान्य केवलीने समभिरूढनये अरिहंत कहे. जेज्ञानादिकगुण सामान्य छे पण एवंभूतनये समोव सरणादि अतिशय संपदा सहित केवलि इंद्रादिक पूजता युक्तनेज अरिहंत कहे वाच्यवाचक नी पूर्णताने कहे ए स्वरूपेएवंभूतनय जाणवो ए सातेनयना विशेषावश्यकने अनुसारे भेद कह्या ते भेद पुर छे तेनो विवरो, निगमना १० संग्रहना १२ व्यवहारना १४ ऋजुसूत्रना ६ शब्दनयना ७ समभिरुढनयना २ एवंभूत नयना १ भेद एवं सर्व मलीने ५२ भेद कह्या वली नयचक्र मध्ये सातसें भेद पण कह्या छे ते पण जाणवा तथा अष्ठावीस भेद पण केटलेक ठकाणे कहेला छे तथा स्याद्वादरत्नाकरमां नयनुं स्वरूप कह्यं छे ते रीते अहियां कहिने देखाडिये छिये नय ते कहेतां श्रुत ज्ञान रूप प्रमाणे पमाडे जेणे विषय कीधो जे पदार्थनो अंश तेथी इतर कहेतां बीजो अंश तेथी उदासिनपणे तेनेजपडीवजवावालानो अभिप्राय विशेष त नय कहिये एटले वस्तुना अंशने ग्रहे अने बाकी पदार्थथी उदासिनपणुं ते नय कहिये अने एक अंशने मुख्यपणे करी बीजा अंशने उथापे तेने नयाभास कहिये ते नयना बे भेद छे एक द्रव्यार्थिक बीजो पर्यायार्थिक त्यां द्रव्यार्थिकना चार भेद नैगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ ऋजुसूत्र ४ एचार भेद छे कोइक ऋजुसूत्र नयने भावनय करी गृहे छे ते नये द्रव्यार्थिकना त्रण भेद थाय.

हवे निगमनयनुं स्वरुप केहेछे धर्मनो प्रधान तथा गुणपणे अथवा धर्मने प्रधान अथवा गौणपणे त धर्मथी ए बेना प्रधान तथा गौणपणे जे गवेख्यो एटले धर्मनी प्रधानता ते वारे पर्यायनी प्रधानता थाय तथा धर्मनुं प्रधानपणुं तेवारे द्रव्यनुं अप्रधानपणुं तथा गुण·

पणुं तथा धर्मनुं प्रधान गौणपणुं ते जे द्रव्यपर्यायनुं गौणप्रधान-पणुं ए रीते जे गवेखणारूप ज्ञाननो उपयोग तेने निगम नय जा-णवो तेना बोधने निगम बोध कहिये हवे एना उदाहरण कहे छे सत् कहेतां छतां पण चेतन कहेतां जाणपणुं ए बे धर्म मध्ये एक धर्मनो पक्ष मुख्य गणे बीजाने गौणपणे करीने गवेखे ए रीते निग-मनय जाणवो आहियां चेतन नामे व्यंजन पर्याय ते प्रधानपणे गणे. जे कारणे चैतनपणुं विशेष गुण छे अने सत्वनामा व्यंजन पर्याय छे ते सकल द्रव्य साधारण छे ते माटे तेने गौणपणे लेखवे ए प्रथम निगम भेद कह्यो तथा वली वस्तुपर्याय वद्द्रव्यं, ए धर्मनो निगम छे अहियां पर्याय एवं द्रव्य एम वस्तु छे आहियां द्रव्यनुं प्रधानपणुं वस्तु पर्यायवंत आहियां वस्तुनुं गौणपणुं पर्यायनुं मुख्यपणुं अहियां उभय गोचरपणा माटे ए निगम बे भेद लक्षणमे कसुंवी विषयासक्त इति तुं धर्म धर्मीनो रीति आहियां विषयासक्त जे व्याख्या जे धर्मनी मुख्यताना विशेषपणाथी सुख लक्षण धर्मनुं प्रधानता ते विशे पणे करीने धर्म धर्मीने आलंबने संगम ठारे एटले धर्म तथा धर्मी छे ने आलंबे ए बे गृहेतां संपूर्ण वस्तुनुं ग्रहण थयुं ते वारे ए ज्ञानने प्र-माण कह्यो त्यां उत्तर द्रव्य पर्याय ए बंने प्रधानपणे अनुभवतां जे ज्ञान ते प्रमाण थाय आहियां बे पक्षने विषे गौणता बीजानी मुख्यता लेइने ज्ञान थाय छे ते माटे नये कही तथा वली सूक्ष्म निगोदीय जीव सिद्ध समा सत्तावंत छे अथवा अयोगी जन ते संसारी ए अंश निगम छे.

हवे नैगमाभास कहे छे वस्तुमां धर्म अनेक छे ते एकांते एक बीजाने सापेक्षपणेनमाने एक धर्मने मानेबीजा धर्मने न माने ते नैग-माभास कहीये ए दुर्नय जाणवो जे कारणे अन्यनयने गवेखे नही तेसर्वे दुर्नय जाणवो जेम आत्माने विषे सत्वतथा चैतन ए बन्ने

धर्म भिन्न छे तेणे चैतन्यपणुं माने सत्वपणुं न माने ए नैगमाभास कहीये एटले नैगमनय कह्यो १ सामान्य मात्र समस्त्तविशेष रहीत सत्वद्रव्यत्वादिकने ग्रहेवानो छे स्वभावजेनो सं कहेतां पंडय्यपणे विशेप राशीने ग्रहे पण वक्तव्यपणे नग्रहे ए संग्रह कहीये ए भावना छे एटले स्वजातिना दिठा जे इष्ट अर्थ तेने निरोधे करीने विशेष धर्मने एक रूपपणे जे ग्रहेवो ते संग्रह नय कहीये तेना वे भेद एक परसंग्रह वीजो अपरसंग्रह त्यां परसंग्रहनो अर्थ लखीये छीये ॥ अशेष विशेपदासीनां भजमानंस्तुधद्रव्यं सनमात्रमभी मनमान्य परसंग्रह इति ॥ समस्त विशेप धर्मपणाने भजतो एटले विशेपपणाने अणग्रहेता शुद्ध द्रव्य सत्तामात्र मत्येमाने ते परसंग्रह कहिये यथा द्रव्य ए परसंग्रह विश्वएक सत्यपणा माटे एम कहे छे ता पणानो एक पणानो ज्ञान थाय छे, एटले सर्व पदार्थनो एक एने ग्रहण छे अने जे सत्तानो अधेतश्रीकरे द्रव्यंतरभेद माने सकल विशेपने ना कहेतां जे ग्रहण करे ते परसंगृहाभास कहिये एटले अद्वैतवादीदर्शन जे वेदांती तथा सांख्य दर्शन, ए वंने संग्रहाभास छे जे माटे दीसताभेद धर्म तथा द्रव्यंतरनमाने ते माटे संगृहाभास कहिये जिनतो विशेप सहीत सामान्यनेगृहे ते माटे संगृहनय कहिये हवे अपरसंगृहनुं स्वरूप कहिये छिये ' द्रव्यत्वादीन अंतर सामान्यनोमित्वातवानभेदभेदे सुगजनीमलीकाम चलमवमान अमसंगृह, एटले द्रव्य जे जीव अजीवादिक जे अवांतर सामान्यने मानतो अने जीवने विपे प्रति जीवनो भेदव्य अभव्य समकीति मिथ्यात्वी नर नरकादि जे भेद तेने गज मलीका कहेतां मस्ताइये नगवेल्यो ते अपरसंगृह कहिये अने द्रव्यने सामान्यपणुं माने पण स्वद्रव्यने प्रणमीकतादिक धर्म न माने ते अपर संगृहाभास कहिये एटले ए संगृह नयनुं स्वरूप कह्युं. २

हवे व्यवहार नयतुं स्वरुप कहिये. छिये जे संग्रहनये ग्रह्या सत्वादिक धर्म पदार्थ तेने जे गुण भेदे वहेंचे भिन्न भिन्न गवेखे तथा जें पदार्थ तेनी जे गुण प्रवृत्ति तेने मनुष्यपणे गवेखे ए व्यवहारनय कहिये जेम द्रव्य छ. जीव १ पुद्गल २ धर्मास्ति ३ अधर्मास्ति ४ आकशास्ति ५ काल ६ तथा पर्याय वे प्रकारना क्रमभावी १ स्वभावी २ तथा द्रव्य वे प्रकारना एकरूपी विजो अरूपी ते अरूपीना वे भेद एक चेतन विजो अचेतन ते चेतनना वे भेद एक सिद्ध विजा संसारी ते संसारीना वे भेद एक अयोगी विजा सयोगी ते सयोगीना वे भेद एक सयोगी केवली तेरमा गुणं ठाणाना विजा सजोगी संसारी ते सयोगी संसारीना वे भेद एक क्षीणमोहि वारमा गुणठाणाना विजा उपशातमोहि ते उपशात मोहिना वे भेद एक अकपायी विजा सकपायी अकपायी उपसंत मोहि आगियारमा गुण ठाणाना विजा सकपायी ते सकपायीना वे भेद एक सूक्ष्मकपायी ते दशमा गुण ठाणाना विजा वादरकपायी ते वादरकषायीना वे भेद अवेदीने सवेदी अवेदी ते नवमा गुण ठाणाना विजा सवेदी ते सवेदीना वे भेद एक श्रेणिप्रतिपन ते आठमा गुणठाणाना विजा श्रेणिरहित ते श्रेणिरहितना वे भेद अप्रमादी ते सातमा गुण ठाणाना बीजा प्रमादी ते प्रमादीना वे भेद सर्व विर्ति ते छट्ठा गुण ठाणाना विजा देशविर्ति ते देशविर्तिना वे भेद एक देशविर्ति ते श्रावक ते पांचमा गुण ठाणाना विजा अविरति ते अविर्तिना वे भेद एक समकिति ते चोथा गुण ठाणाना विजा मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वीना वे भेद एक भव्य विजा अभव्य ते भव्यना वे भेद एक ग्रंथीभेदी विजा ग्रंथी अभेदी इत्यादिकगती प्रमुख चेतनना अनेक भेद थाय, तथा अचेतन अरुपीना चार भेद धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ तेना पण खंधादिक

भेदे अनेक भेद थाय, तथारूपी द्रव्य कहेतां पुद्गल तेना बे भेद खंध तथा परमाणुं तेना पण खंधादिक भेद करतां अनेक भेद थाय इत्यादिक कार्य भेदे तेने भेद माने तेने व्यवहारनय जाणवो. हवे कर्मभावी पर्यायना भेद एक क्रियारूप बीजो आक्रियारूप एम वहेंचण सामर्थादिक गुण भेद पडे ते सर्व व्यवहारनय जाणवो जे परमार्थ विना द्रव्य पर्यायना विभाग करे ते व्यवहारभास जाणवो जे कल्पनाये करीने भेद वहेंचे ते दुर्नय जाणवो ए चार्वाकमतने व्यवहारनय दुर्नय छे शा माटे जे चार्वाकमतवालानुं कहेवुं एवुं छे के जीवतो लोकमां प्रत्यक्ष द्रष्टिगोचर आवतो नथी, ते माटे जीव जगतमां छे नहि, जे आ जगत्मां सर्वरूप मनुष्यादि छे ते सर्व पंचभूतनुं पुतलुं छे पण कांइ जीव छे नहि एवी खोटी कल्पना करीने लोकोने कुमार्गे पाडे छे, पुण्य पाप परलोक सर्व उथापे छे माटे ते मतवालाने व्यवहारनय दुर्नय कहीये, एटले व्यवहारनयनुं स्वरूप कह्युं.

हवे ऋजुसूत्रादिक चार नयनुं स्वरूप कहिये छिये प्रथम ऋजुसूत्र कहेतां सरल आतित अनागतने अणगवेखता वर्तमान समये वर्तता जे पर्याय मात्र प्रधानपणे श्रुत कहेतां गवेखे ते रुजु सुत्रनय कहीये जे ज्ञानने उपयोगे वर्तताने ज्ञानी कहे दर्शननो उपयोग वर्तताने दर्शनी कहीये कषायनो उपयोग वर्तता जीवने कषायी कहीये समताने उपयोगे वर्तताने समायक कहीये अहींयां कोइ पूछशे जे एम करतां ऋजुसुत्र तथा शब्दनय ए बन्ने नयो एक थइ जाय छे तेनो उत्तर कहे छे जे विशेषावश्यक ग्रंथमां कह्युं छे के कारण ऋजुसूत्र एटले ज्ञानना कारणपणे वर्तता रुजुसुत्र ग्रहे छे अने ज्यारे जाणपणारुप कार्यपणे थाय त्यारे शब्दनय कहीये ए फेर छे वर्तमान काळ ते पण ग्रहे तेने रुजुसुत्र भास कहीये अने छता मात्र अछता

भाव कहे अथवा विपरीत कहे अथवा जीवने अजीव कहे अजीवने जीव कहे इत्यांगत कहेतां बौध दर्शननो ए मत छे शा माटे जे छतो सदा वर्ततो जीव पदार्थ तेने पर्याय पलटणनी हारे, द्रव्यनुं पलटण करावे छे शा माटे के समे समे पर्यायनो विनाश थाय छे ते थानके ते दर्शन वाळा द्रव्यनो विनाश माने छे माटे ए दर्शन वाळानेन याभाश जाणवा ए रुजुसुत्र कह्यो हवे शब्दनय कहीये छीये एक पर्यायने प्रगट दीसवे अन्य जे ते शब्द वाचक पर्यायने तिरोभावे अणप्रगटवे पणे ते पर्यायने ग्रहे ते शब्दनय कहीये अथवा कालादि भेदे त्रण काल वचन त्रण लींगने भेदे शब्दने भेद ते पडे. ते भेद अर्थने कहे ते शब्दनय कहीये जलाहरणादि सामर्थने घट अने कहेतां कुंभादिक वचन पर्याय जेटला छे तेटलानो अर्थ वर्ततो न दीसे पण ते नाम कही बोलावे ते कार्य सामर्थवंतने ग्रहे ते शब्द नय कहीये पण माटीना पिंडने घट न कहे संग्रह निगमवाळो कहे ते नयवाळा सत्ता जोगता अंशना ग्राहक छे तथा तत्वार्थ टिका मध्ये शब्द वसथी अर्थ पडी वजवतो शब्दे बोलावतो होय जे अर्थ वस्तुमां धर्मपणे प्रगट दीसे तेने ते वस्तु माने ए नयशब्द अनुयायी अर्थे पण माते जे वस्तुने वस्तु कहे छे काल लिंगादि भेदे अर्थनो भेद छे ते भेदने ते धर्म वस्तु माने ते शब्दनय कहीये अने ते अर्थ विना ते वस्तु मध्ये ते पणो वर्ततो दीसतो नथी ते वस्तुपणे सामर्थ्य करे ते शब्दभास कहीये ए शब्दनय कह्यो. ९

हवे समभिरुढनय कहीये छीये एक पदार्थने अवलंबीने जेटलां सरखां नाम ते पर्यायनाम जेटलां होय तेटलां निरुक्ति व्युत्पत्ति भिन्न होय ते अर्थने सं कहेतां सम्यक् प्रकारे आरोहतो एटले एटलो सर्वे अर्थ संयुक्त जे ते समभिरुढ कहीए जेम इंद्रादि धातु परमेश्वरने अर्थे छे ते परमेश्वर्यवंतने इंद्र कहीए तथा शक्रन कहेतां

नव नवी शक्ति संयुक्तने शक्र कहीए पुरके दइतने दलेके विडारे. ते पुरंदर शचि तेना पति कहेतां स्वामि ते शचिपति कहीए एटला सर्व धर्म ते इंद्र जे देवलोकनो धणी छे तेने ए नामे बोलाय छे बीजां नामादिक इंद्रने ए नाम न कहे.

एटले जेटलां पर्यायनां नाम छे तेना जे अर्थ थाय ते सर्वेने भिन्न भिन्न अर्थ कहे, पण कार्य अर्थे न जाणे. ते समभिरूढाभास कहिए. एटले समभिरुढनय कह्यो.

हवे एवंभूतनय कहिये छिये. शब्दनी प्रवृत्तिनी निमित्तभूत जे क्रिया ते विशिष्ट संयुक्त जे अर्थ तेनो वाच्य जे धर्म तेने पोचतो जे एटले ते कारण कार्यधर्म सहित ते एवंभूतनय कहिये. तथा अश्वर्य सहित ते इंद्र शक्ररुप सिंहासने वेसे ते शक्रशचिनी संगे वेठो. ते शचिपति एटले जे शब्दना जेटला पर्यायने सर्व तेमां पहोचता भाव ते नाम कहिने बोलावे. जे पर्याय पहोचता भावने ते नाम कहिने बोलावे जे पर्याय पहोचतो न दीसे. ते पर्यायनी ना कहे एक पर्याय उणा सुधी समभिरुढनय कहिये, सकळ वचन पर्यायने पहोचे. ते वारे एवंभूतनय कहिये. जे पदार्थ नाम. भेदनो भेद देखी पदार्थनी भिन्नता कहे. ते नयाभास कहिये. नाम भेदने वस्तुना भिन्न हाथी, घोडा, हरणी जेम भिन्न छे. एम भिन्नपणुं माने ते एवंभूतनयनो दुर्नय कहिये घटथी जेम पट भिन्न अर्थ भिन्न माटे. तेम इंद्रपणाथी पुरंदरपणुं भिन्न माने. ते दुर्नय जाणवो. एटले घटथी जेम पट भिन्न अर्थ भिन्न माटी छे. पण कंइ इंद्रपणाथी पुरंदरपणुं भिन्न छे नहीं. तेने भिन्न माने ते दुर्नय जाणवो. एटले एवंभूतनय कह्यो. ७ एटले सात नयनी व्याख्या कही. अदधारणा कहेतां चार नय ते विशुद्ध छे. शा माटे जे पदार्थ जे द्रव्य सामान्य कहेवानो अधिकारी छे, क्यां एक अर्थ नय एवुं नाम छे. अर्थ

शब्द द्रव्य लेवो. तथा शब्दादिक त्रण नय छे. ते शुद्धनय छे जे कारणे शब्दना अर्थनी एने मुख्यता छे. धुरला चार नय भेदपणे वहेचवाने वांछे छे. शब्दादि भेद जे लिंगादिके अभेद वहेंचणे अभेद कहे अने भिन्न वचने भिन्नार्थ कहि माने. समभिरुढनय भिन्न शब्द ते वस्तु पर्याय माने पण शब्द ना पर्याय माने. एवं भूतनय भिन्न गोचर पर्याय भिन्न भिन्न माने घटने चेष्टा करतो घट कहे. पण खुणे पडयो घट न कहे. चित्रामण कर्ता उपयोगवंतने चित्रकार कहे. तथा सुता जमताने चित्रकार न कहे. ते उपयोग रहित छे. ते माटे ए नय तो शब्दने तथा अर्थने अभेदपणुं माने छे. ते अर्थ शुन्य शब्दने प्रमाण नथी. शब्दने प्रधान अर्थ द्रव्यने गोपणे वर्तता शब्दादिक कह्या छे ए सात नयने विषे निगम ते सामान्य छे. विशेष बे नय माने छे. ने संग्रहनय ते सामान्य ते सामान्यने माने छे. व्यवहारनय ते विशेषने माने. अने द्रव्यार्थाविलंबी छे. ने ऋजुसूत्र विशेष ग्राहक छे. ए चार नय दुरला द्रव्यार्थक नयमां छे ने शब्दादिक त्रण नय पर्यायार्थक नयमां छे विशेषालंबी भाव छे. तथा शब्दादिक नय ने त्रण निक्षेपाने अवस्तु माने छे.

अत्र निक्षेपानो विचार संक्षेपथी लखीये छीये. श्री विशेषावश्यक भाष्यमां लख्युं छे ते कहिय छिये. त्तारोवथ्थूपज्जाया ए वचन छे ते माटे स्वपर्याय कहिये. शा माटे जे वस्तुना सहेजना जे चार निक्षेपा छे. ते वस्तुमांज छे. ते वस्तुना स्वपर्याय छे. तथा श्री अनुयोग द्वार सूत्र मध्ये कह्युं छे.

जे ज्यां जे वस्तुना निक्षेपा जेटला जाणीए. आपणी बुद्धि शक्ति ज्यां सुधी पहोचे त्यां सुधी तेटलाज निक्षेपा करीए. कदाचित वधता निक्षेपा भासमां ना आवे अथवा आपणी बुद्धि शक्ति एटली न फेलाय. तोयपण चार निक्षेपा अवश्य करवा.

हवे चार निक्षेपानां नाम कहिए छिए. नाम निक्षेपो १ स्थापना निक्षेपो २ द्रव्य निक्षेपो. ३ भाव निक्षेपो, ४ त्यां नाम निक्षेपाना बे भेद छे. एक सहेज नाम, एक संकेतिक नाम सहेज नाम ते चेतन जीव आत्मा इत्यादिक ए नाम कोइनां करेलां छे नही. ए नाम ज्यां जशे. त्यां भेगु ने भेगुज छे. ए नामनो नाश कदापि थवानो नथी. माटे ए सत् नाम छे. बीजुं संकेतिक नाम ते देवदत्त प्रमुख एटले लोकनी बांधेली संज्ञा जे एनुं नाम देवदत्त. अथवा एनुं नाम धर्मचंद इत्यादिक ए लोक संज्ञाए नाम पडेलां छे. ते असत्य कल्पना छे. शामाटे के ते नाम प्रमाणे गुण होय अथवा न होय वळी ते नामकांइ आगळ चाले नही तेम आ भवमां पण एनुं ए नाम रहे एवो निश्चय नहि ए बीजा भेदे नाम निक्षेपो कह्यो.

हवे स्थापना निक्षेपो कहिए छीए. तेना बे भेद छे एक सहज स्थापना १ बीजी आरोपित स्थापना हवे सहज स्थापनाना बे भेद, एक सहज स्वभाविक स्थापना. एक सहज विभाविक थापना हवे सहज स्वभाविक थापना ते आत्माना असंख्यात प्रदेशरुप अवगाहना थापना पुद्गलनो परमाणु रुप इत्यादिक स्वरुप अवगाहना ए सहित ते सहज स्वभाविक थापना कहिये. ते भांगो अनादि अनंत छे. हवे बीजो भांगो जे सहज विभाविक थापना कहेतां आप आपणा शरीरनी अवगाहना ते विभाविक थापना छे अहियां कोइ कहेशके शरीर विभाविक तेने तमे सहज पद केम मेळवो छो. तेनो उत्तर जे ए सहज जे जीवनो स्वभाव संसारीपणे वर्ते. त्यां सुधी शरीरनो बांधनारो ते छे. अंश ग्राहीने अमे सहज पद जोडयो छे. ए निगम नयनो पक्ष छे. पण ऋजुसुत्र नये तो ए विभाविक थापना कहेवाय.

अहियां सहेज पद लागु थाय नहि पण ए शरीर थापना सादिसंत भांगे छे. ते शरीर छे. ते विभाविक छे. ते मांहे चेतन रह्यो ते सहज स्वभाविक छे माटे एने सहज विभाविक भांगो कहिये तेनुं कांइ दोषण छे नही.

हवे जे आरोपित थापना ते चेतन रहित शरीरथकी भिन्न हरकोइ वस्तुने विषे हरकोइ नामनी थापना करवी. ते थापना कृत्रिम कहेवाय. ए आरोपण थकी थाय छे ते असत् कल्पना छे. पण बाळजीवने समजाववा रूप छे तेथी अनुयोगद्वारमां दशप्रकारनी थापना कही छे. कष्ट कर्मे. चित्तकर्मे. इत्यादिक छे ते मध्ये पांच आकार सहित छे. पांच आकार रहित छे. आकार सहित ते काष्टनो घोडो हाथी प्रमुख अनेक छे. ते आकार सहित थापना कहिए. अथवा जेम अन्य लोक देव देवीने काष्टनां फळो मुके छे ते आकार रहित थापना छे. एसोरठ देश प्रसिद्ध छे. अथवा जेम सारंगराम जेने मों. माथुं कशुं नथी—गोळ लांबो त्रिखुणो जेवो मळे तेवो थापे छे. तेनुं नाम आरोपना थापना कहिये. ए बिजो थापना निक्षेपो कह्यो.

हवे द्रव्य निक्षेपो कहिए छीए ते द्रव्य निक्षेपाना बे भेद, आगम द्रव्य निक्षेपो नोआगम द्रव्य निक्षेपो आगम द्रव्य निक्षेपो कहेतां जे पुरुपने स्वस्वरुपनुं परस्वरुपनुं जाणपणुं छे पण हमणां तेनो उपयोग नथी हवे नोआगम कहेतां जे ते वस्तुमां ते सर्वे गुण छे पणहवडां ते वर्तता नथी तेना त्रण भेद जे पूर्वे शरीर हतुं पण हमणां मरण पाम्युं जेम श्री रीखव देव स्वामीनुं शरीर जेम जंबुद्वीप पन्नतिमां रूप लक्षण गुण वखाण्या तेम आपणे कहीए छीए. वळी भव्य शरीर कहेतां हमणां ते गुण मय नथी पण गुण मये थाय जेम पद्मनाम तिर्थंकरनुं शरीर वखाणिये तद्वत् तथा

द्रव्यातिरिक्त कहतां. जेणे गुणे वर्ते छे पण हमणां ते उपयोग वस्तुता नथी जेम रमणी कहेतां स्त्री महाचतुर विलक्षण पोताना स्वामी जोडे क्रिडा करवानी वखते रमणी कहेवाय तेवे समे कोइ अपर चिंता उत्पन्न थइ ते वारे रमणी पणानो उपयोग गयो ते वारे ते द्रव्यमणि कहेवाय तद्वत् 'अण उवियोगो दवो' ए अनुयोग द्वारसूत्रनुं वचन छे माटे उपयोग रहित तेने द्रव्य निक्षेपो कहिये. ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो. ३

हवे भाव निक्षेपो कहिए छीए ते भाव निक्षेपाना वे भेद छे एक आगमिक बीजो नोआगमिक हवे आगमिक कहेतां जे आगम शास्त्रनो जाण वली तेनाज उपयोगमां प्रवर्ते छे १ हवे नोआगमिक भाव निक्षेपो कहेतां जे रूपे आत्मा तद्वतज आत्माने उपयोगे प्रवर्ते छे. अथवा ज्ञानी ते ज्ञाननेज उपयोग प्रवर्ते छे. दर्शनी ते दर्शनने उपयोगे प्रवर्ते छे. एम जे जे गुण ते ते गुण उपयोग सहित प्रवर्ते तद्रूप होय तेने भाव निक्षेपो कहिए. एटले अनुयोग द्वारमां कह्युं छे उवओगोभावो, एटले उपयोग तेज भाव छे ए भाव निक्षेपो कह्यो ए जे चार निक्षेपा कह्या ते मध्ये त्रण निक्षेपा धुरना जे छे ते कारण रूप छे, अने भाव निक्षेपो तो कार्य रूप छे. एटले कार्य कारण विना निष्फळ छे जेम चक्र दंड दोरो. कुंभकार माटीना पिंड विना घट थाय नही माटे ए कार्य विना निष्फळ. जो माटीनो पंड होय तो ए कारण खप लागे तेम भाव निक्षेपा विना धुरना त्रणे निक्षेपा निष्फळ छे अने भाव निक्षेपा निपजतां प्रथमना त्रणे निक्षेपा प्रमाण छे. नहीतर अप्रमाण छे धुरना त्रणे निक्षेपा द्रव्य नयमां छे. एक भाव निक्षेपो ते भाव नयमां छे. माटे भवा नय अणनिपजतां द्रव्यादि प्रवृत्ति निष्फल छे ते श्री आचारांगजीनी टीका मध्ये कह्युं छे. ते लोकविजय नाम अध्ययननी टीका

मध्ये छे ते लखीए छीए.

फलमेव गुणफलगुणफल च क्रियाया भवति सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र क्रियायास्त्वैकान्तिकनाबाधसुखा रप्प सिद्धि गुणो वाप्यते एतदुक्तं भवति सम्यक् दर्शनादिके वेक्रिया विद्धि फलगुण न फलवन्यपरातुं संसारीक सुख फलाभ्यास एव फलाध्यारोपानि फलेत्यर्थः

एटले ज्ञान दर्शन चारित्रनी प्रणमन विना जे क्रिया करवी ते सर्वे फोक छे अथवा जे थकी संसारी सुख प्राप्त थाय एटले देवता इंद्र चक्रवर्ती वासुदेव राजा शेठ शाहुकार पुत्र कलत्रादिक सुख निपजे एवी जे क्रिया ते सर्वे निष्फल छे एवी रीते ए पाठ छे एटले भाव निक्षेपाना कारण विना त्रणे निक्षेपा निष्फळ छे एटले संक्षेप मात्र निक्षेपानो विचार कह्यो माटे आहियां शब्द नयते त्रणे निक्षेपाने अवस्तुजमाने छे एक भाव निक्षेपानेज वस्तु माने छे तिनहं सदनयाणं अवथु. ए अनुयोगद्वारनुं वचन छे. तथा एक एक नयना सो सो भेद थाय छे एम सातनय मलीने सातसे नयना भेद थाय छे ए अनुयोगद्वार थकी अधिकार कह्यो.

हवे पूर्व कहेतां पुंठलानयनो विषय घणो जाणवो. अने तेथी उपल्योनयते परिमित विषय छे. एटले थोडो विषय छे. सत्ता मात्रनो ग्राहक संग्रहनय छे एटले छती सत्ताने संग्रहनय ग्रहे. अने निगमते छताभाव अथवा संकल्पपणुं अथवा अछताभाव सर्व ग्रहे. अथवा सामान्य विशेष बन्ने ग्रहे. एटले ए नयतुं कोइ प्रमाण छे नही. अने व्यवहार नयशक्ति विशेषनेज ग्रहे ते माटे संग्रह नयथी व्यवहारनयनो विषय थोडो छे. तथा ऋजु सूत्र नय वर्तमान विशेष धर्मनो ग्राहक छे. अने व्यवहार तरकालीक विषयनो ग्राहक छे ते. माटे व्यवहार बहु विषय छे. अने व्यवहारथी ऋजु सूत्र अल्प वि-

पय छे. ने ऋजु सूत्रनय वर्तमान काली शब्दनय कालादि वचन लिंगथी वहेंचता अर्थने ग्रहे. अने ऋजुसूत्र वचन लिंगने भिन्न पाडतो नथी. ते माटे ऋजुसूत्र नयथी शब्दनय अल्प विषय छे. अने शब्द नयथी सर्व पर्यायने एक ग्रहे अने समभिरुढते जे धर्मव्यक्त ते वाचक पर्यायने ग्रहे. ते माटे शब्दनयथी समभिरूढनयनो अल्प विषय छे. तथा समभिरुढ ते पर्यायने वधोयेकाल गवेखे छे. अने एवंभूतनय प्रतिसमये क्रियाभेदे भिन्नार्थपणे मानतो अल्प विषय छे. ते माटे एवंभूत अल्प विषयी जाणवो. ए नयवचन छे. ते पोताना नयने स्वरूपे आस्तिपणुं छे. एम सर्व नयनी विधि प्रतिबंधे करीने सप्तभंगी उपजे पण नयनी सप्त भंगी न उपजाववी ए पूर्वाचार्यजीओए निषेधी छे.

तथा रत्नाकरावतारीकायां विकलादेशस्वभावादि नय सप्त भंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूपकत्वात् सकलादेशस्वभावानुगमाणसप्त भंगी संपूर्ण वस्तु स्वरूप प्ररूपकत्वात् ए वचन छे.

एटले यथायोग्यपणे नयाधिकार कह्यो. हवे पूर्व उत्तर सामान्य संग्रहना छ भेद कह्या नहोता ते कहिए छीए. एटले ए मूल सामान्यना छ भेद ते सर्व द्रव्यमां व्यापकपणे रह्या छे. तेनां नाम आस्तित्व. १ वस्तुत्व. २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सत्वं ५ अगुरु लघुत्वं ६ एवं छ मूळ स्वभाव सर्व द्रव्य मध्ये प्रणामिकपणे प्रणमे छे. ए धर्मने कोइनी सहाय नथी ते कहेतां सर्व द्रव्यने विषे उत्तर सामान्य स्वभावनि नित्यत्व अनित्वादिक तथा विशेष स्वभाव प्रणामिकत्वादिक तेनो आधार भूतधर्म ते धर्मने सामान्य स्वभाव कहिए. अस्तित्वरूप कहे छे. तीर्थंकर देवे तथा गणधरे जे गुण पर्याय आधारवंत ते वस्तु पणे कहिए.

अर्थ जे द्रव्य तेनीज क्रिया यथा धर्मास्तिकायनी चलण सहाय

क्रिया, अधर्मास्तिकायनी सहाय क्रिया, आकाश द्रव्यनी अवगाहना क्रिया जीवनी उपयोग लक्षण क्रिया. पुद्गलनी मलवा विखरवानी क्रिया ए क्रियानुं आकारीपणुं अर्थ क्रिया जे पर्यायनी प्रवृत्ति ते अर्थ क्रियानो अधिकारी धर्म ते द्रव्यपणुं कह्युं छे. तथा वली लक्षणांतर कहे छे. उत्पाद पर्यायनो जनक प्रसव शक्ति आविर्भाव लक्षण जे शक्ति तेना व्ययभूत पर्यायनो तिरोभाव थयो. अथवा अभाव थयो. रुप जे शक्तिनो आधार भूत धर्म ते द्रव्य काहिए स्वते पोते आत्मपर जे पुद्गलादिक धर्मास्तिकायादिक अन्य तेनेज यथार्थपणे जाणे तेने ज्ञानी कहिए. अने ते ज्ञानना पांच भेद छे. ते ज्ञान उपयोगमां आवे. एवी जे शक्ति तेने प्रणमीए पणुं कहिए. ते प्रणमी ए पणुं सर्व द्रव्यनो मूळ धर्म छे ते प्रमाणे मेय जे वस्तु ते प्रणमीयपणुं कहीए. ते सर्व द्रव्य पर्याय प्रणमीए छीए अने आत्मानो ज्ञानगुण तेमां प्रमाणपणुं प्रमेय. पणुं ए वे धर्म छे. पोतानुं प्रमाणपणुं पोतेज करे छे. दर्शन गुणनो प्रमाण ज्ञानगुण करे छे. ए कारणे दर्शन गुण ते अविशेष छे साव्येव छे. जे साव्येव होय ते अविशेषज होय जे विशेष ते ज्ञान जाणीए. दर्शन गुण ते सामान्य द्रव्यनो ग्राहक छे पण प्रमाणना सव्येव कह्या. त्यां ज्ञानज ग्रहे छे तेवुं कारण जे दर्शन उपयोग वक्त पंडतो नथी तेने प्रमाणमां गवेण्यो नथी.

हवे प्रमाणनाभेद लखीए छीए. मूळ प्रमाणना वे भेद प्रत्यक्ष १ परो २.

स्पष्टं परोक्षं प्रत्यक्षं मन्यवत् इतिस्याद्वाद रत्नाकर वाक्यात् एटले उत्पाद कहेतां उपजवुं वय कहेतां विणसवुं ध्रु कहेतां नित्यपणुं वस्तुमां एक समे त्रणे गुण सहाय साथे प्रणमे छे. एवुं जे प्रणमन ते सत्यपणुं कहीए. सत्यपणानो भाव ते सत्यपणुं कहीए.

हवे षट्गुण हाणी वृद्धि कहिए छीए. अनंत भाग हानि १ असंख्यात भाग हानि २ संख्यात भाग हानि ३ संख्यात गुणी हाणी. ४ असंख्यात गुणी हाणी. ५ अनंत गुणी हाणी. ६ ए छ प्रकारनी हाणी.

हवे छे प्रकारनी वृद्धि कहीए छिये अनंत भाग वृद्धि असंख्यात भाग वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३ संख्यात गुणी वृद्धि ४ असंख्यात गुणी वृद्धि ५ अनंत गुणी वृद्धि ६ एटले ए हाणी वृद्धि सर्व द्रव्यने सर्व प्रदेशे छे एतुं नाम अगुरु लघु स्वभाव कहेवाय ए अगुरु लघु पर्याय प्रणमे ते एक प्रदेशे वा अनेक प्रदेशे कोइ समे अनंत भाग हाणीपणे प्रणमे छे कोइ समे अनंत भाग वृद्धिपणे प्रणमे छे एवं बारे प्रकारे प्रणमे छे ते अगुरु लघु पर्यायनी प्रणमन शक्ति ते अगुरु लघुत्वं कहीए एटले अगुरु लघुनो भाव जाणवो तत्त्वार्थनी टिकाने विषे पांचमे अध्याये अलोकाकाशनो अधिकार छे त्यां कह्युं छे ए स्वभाव सर्व द्रव्यने विषे प्रणमे छे ए छ द्रव्यनो मूळ स्वभाव छे. छ द्रव्य ना प्रदेशनुं भिन्नपणुं अगुरु लघुने भेदपणे थाय छे ते माटे ए मूळ सामान्य स्वभाव छे ए द्रव्यादिक धर्म छे एनो पणमन ते पर्यास्तिक धर्म छे तथा सामान्य स्वभाव वस्तुमां अनंता रह्या छे तथा अनेकांतजयपताका ग्रंथने विषे सामान्य स्वभाव तेर कह्या छे तथा शास्त्रने विषे विशेषस्वभाव पण अनेक प्रकारना कह्या छे अनेक ग्रंथने विषे कह्या छे तथा वार्तिक समुच्चय ग्रंथ श्री हरिभद्र सूरिकृतमां प्रमाण स्वभाव कह्या छे

जीवने जाणवापणानी शक्ति आपणी ते ज्ञान लक्षण जीवनुं कहीए ए वचन उत्तराध्ययनजीमां छे तथा आवश्यक निर्युक्तिने विषे जीवने ग्राहक शक्ति कही छे एटले कर्त्ता भोक्तापणुं पण जीवमां छे उक्तंच.

(कर्ता सएव भोक्ता.)

इति वचनात्

लक्षणता १ व्यापकता २ आधाराधेयता ३ जन्य जनकता ए तत्वार्थ टीका मध्ये कह्या छे तथा अगुरु १ लघुता २ विभुता ३ कारणता ४ कार्यता ५ कारकता ६ ए शक्तिओनी व्याख्या विशेष्यावश्यक ग्रंथमां छे भावुक तथा अभावुक शक्तिना ग्रंथ श्री हरिभद्र सूरिकृत भावुक प्रकरणमां छे एम केटलीक शक्तिओ जैन तर्क अनेकांत जयपताका तथा सुमति प्रमुख ग्रंथोमां छे तथा उर्ध्व प्रचय शक्ति १ तिर्यक् प्रचय शक्ति २ ओघ शक्ति ३ समुचित शक्ति ४ ए सुमति ग्रंथमां छे इत्यादिक अनेक शक्ति तथा अनेक रूप जे आत्मानां तथा अनेक स्वभाव तथा अनेक लक्षण तथा अनेक गुण जे आत्माना कह्या छे ते ग्रंथादिक शास्त्रो जोयाथी समज्यामां आवे अथवा बहुश्रुतनी सेवा करे तेना मुखथी सांभळी ने समज्यामां आवे ते माटे जेने आत्मस्वरूप समजवानी खप होय ने धर्म रुचि होय ते ग्रंथ जोवानी खप करजो ने बहुश्रुतनी सेवा करज्यो एटले जे ज्ञानो पयोगी होय स्वस्वभावनी रमणतावाळो होय मंदकषायी होय परभाव त्यागी होय एवा गुणवान गुरु होय तेनी सेवा करजो तो तमारु कार्य थशे एनयाधिकार कह्यो एटले अहिंआं शब्दनयवाळो श्रुत ज्ञानवंत उपयोगीने आत्मा माने छे माटे अत्र समजवानुं ए के शब्दादिक त्रणे नयमां धर्म रह्यो छे अने त्यां तो आत्माना गुण जेम जेम प्रगट थाय तेम तेम उपला नयवाळो तेने आत्मा माने माटे आत्मानो स्वस्वभाव शुद्धोपयोगे ग्रहण करवो तेज धर्म छे अहिं ज्ञान गुण विशिष्ठ छे ते ज्ञान स्वरुप समजवा वास्ते प्रमाण बतावीए छीए ते प्रमाणनुं स्वरूप कहीए छीए सकल नयनुं स्वरूप तथा सप्त भंगि

नयनु स्वरूप तथा निक्षेपानु स्वरूप तथा पक्षनुं स्वरूप इत्यादिक जे जे प्रकार शास्त्रमां कह्या छे ते ते रूपने ग्रहे तो सर्व धर्मनुं जाण तेने ज्ञान कहीए ते ज्ञान तेज प्रमाण कहीए ते प्रमाणनो कर्त्ता आत्मा छे तेनेज परमात्मा कहीए ते प्रत्यक्षादि प्रमाण ते चेतन स्वरुपमां परिणमेलां छे प्रणामित भवान धर्मथी उत्पादव्ययपणे परिणमवुं ते माटे परिणामिक छे ए द्रव्य स्वभाव छे एटले आत्मा पोताना स्वभावमांज परिणमे तेने सहेज आत्मा कहीए परभावमां प्रणमे तेने विभाविक आत्मा कहीए.

हवे सहेज आत्मा ते पोताना स्वरुप रमण, अरुपी मूर्त्ति, निरंजन निराकार, अनंत ज्ञानादिक गुणमय, सदाय रमणता स्वउपयोगी, एवी रीते जे वर्ने तेने जीवन् मुक्त कहीए एटले ते जीव मोक्षे अवश्य जाय ते मुक्तिनुं स्वरुप किंचित् लखीए छीए जे आ चौद राज लोक छे तेना उपरनो चौदमो राज लोक तेने छेडे सर्वार्थ सिद्ध नामा विमान ते विमाननी ध्वजाथकी बार योजन उपर जइए त्यां सिद्ध सलाका स्फाटिक रत्नमय छे ते मध्ये आठ योजन जाडी छे छेडे उतरती उतरती मांखीनी पांख जेवी रही छे जेवुं अडधा कोठनुं आकार ते आकारे छे अथवा जेवो आठमनो चंद्रमा ते सरखे आकारे छे उपर पीस्तालीस लाख योजन लांबी पूर्व पश्चिमे छे. दक्षिण उत्तरे पिस्तालीस लाख योजनथी त्रण गणी झाझी प्रधीपणे छे उपरनुं तळीयुं घणुं सरखुं समरमणिक छे जेवुं वाघचर्म खीलेलुं सरखुं होय ते सरखुं छे अथवा जेवो जळनो भाग उपरनो सरखो होय अथवा जेवुं मादलनुं पडुं सरखुं होय अथवा काच सरखो होय एवी रीते उपरनो भाग समो रमणिक छे घणुं निर्मळ छे ते तला थकी एक योजन उछिद्र आंगलना मापनुं एटले उंचे अलोक छे ते योजनना तेवीस भाग नीचेना मुकीये त्यारे चोवीश-

मो भाग उपलो रह्यो ते चोवीस भाग मध्ये सिद्ध परमात्मा छे ते अलोकने अडीने रह्या छे शामाटे के चोवीशमा भागे त्रणशे ने तेत्रीश धनुषने बत्रीश आंगलनो छे अने पांचसे धनुषनी कायावाळा उभा उभा मोक्ष जाय ते त्रीजा भागनी अवगाहना पोलारना भागनी घटे त्यारे बे भागनी अवगाहना घन रूप रहे ते अवगाहनाए सिद्धि वरे त्यारे ते बे भागनी अवगाहनाना त्रणसें ने तेत्रीश धनुषने बत्रीश आंगल रहे ते अवगाहना वालो तेवीश भाग उपरना आकाश प्रदेशने चरण अवगाहना फरसे ने मस्तकनी अवगाहना उपर अलोकने फरसे एटले ए चोवीशमो भाग सर्व सिद्धि क्षेत्र छे.

हवे त्यां सिद्धि वरे तेना शरिरनुं मान कहीए छीए उत्कृष्टो पांचसे धनुषनी कायानो मान वालो सिद्ध जघन्य बे हाथनी कायाना मान वालो सिद्ध मध्यस्थ अवगाहनाना बे हाथथी मांडीने पांचसे धनुषथी उणो एक प्रदेश होय त्यां सुधी मध्यस्थ अवगाहना कहीए ते अवगाहना वाला सिद्ध तेने मध्यस्थ अवगाहना कहीए.

हवे ए सिद्ध क्षेत्रमां केवी रीते अवगाहनाओ रहि छे ते कहिए छिए. जे अहिआं उभां थकां मोक्ष गयो. तेनी अवगाहना सिद्धमां पण उभी छे. बेठां गयो तेनी बेठी छे सुतां गयो तेनी सुती छे. कोइ चतो सुतो, तथा कोइ उंधो सुतो. तथा कोइ पासाभेर सुतो तेनी तेवीज अवगाहना छे. अथवा कोइ विकटादिक आसने होय अथवा कोइ विपरीत आसने होय. तेनी तेवीज अवगाहना त्यां होय. अथवा कोइ खोडो पांगळो कांइ खोड वाळो होय तो तेनी तेवीज अवगाहना होय. ते सर्व उपर अलोकने अडीने रहे उंची–नीची–अवगाहना ते नीचला भागमां रहे पण उपरना भागमां न होय. अहि कोइ प्रश्न करशे के ज्यारे अवगाहना तमे मानो छो. त्यारे रूप घाट सर्व साबीत थाय छे. तेनो उत्तर जे त्यां कोइ पुद्गल छे नहि.

के रूप घाट थाय ए तो एक आत्माना प्रदेश निरावरणीय जे अ-
ङ्किना शरीरनी अवगाहना हती ते आत्माना प्रदेश ते प्रमाणे विस्ता-
रे हता. पण आ शरीर मध्ये एक भागनी पोलार छे. ते पोलारनो
भाग घटाडीने घन पणे करी तेने अवगाहना कहिए छिए. पण अ-
हि कांइ रूपपणुं नथी. ए तो अरुपी अमूर्त्तिज छे. ने जो कदापि रूप
कहिए तो मोटो विरोध आवे शामाटे के षट् द्रव्यमां एक रूपी पदा-
र्थ तो पुद्गल छे. ने पुद्गलमां तो मलवा विखरवानो स्वभाव र-
ह्योछे. ते स्वभाव पण पाछो सिद्धने विषे लेवो पडे. त्यारे मलीने
विखरवुं साबीत थयुं. त्यारे सिद्धपणाथी पाछुं संसारमां आववुं-
थाय. त्यारे सिद्धपणुं निष्फल थयुं. माटे मोटो विरोध आवे. अ-
थवा ज्यां रूप रहे त्यां वर्णादिक पर्याय पण होय त्यारे ते पर्या-
यनी तो समये समये हानि थवी जोइए. त्यारे तो सिद्धनी पण
समये समये क्षिणता थाय. ए पण मोटो विरोध आवे. अहिआं
कोइ प्रश्न करशे के. सिद्धांतमां एवुं कह्युं छे.

दवठीयाए, सासीयाए पजवठीयाए असासीयाए

माटे पर्याय थकी क्षिण थाय. ते पर्याय तो अशाश्वता छे. तेमां
कांइ दोषणा छे नही तेनो उत्तर-सिद्ध परमात्माने पर्याय थकी
अशाश्वता कहेवा ते अपेक्षा थकी छे पण कांइ स्वभावथी नथी.
अने जो कदापि स्वभावथी कहिए तो महा विरोध आवे शामाटे जे.
सिद्धना ज्ञान दर्शनादि जे पर्याय तेनो शुं कांइ नाश थाय. अथवा
शुं कोइ ओछु वधतुं थाय. कदापि जो नाश कहिए तो आत्म
भावना नाश थाय ने जडभाव थइ जाय. त्यारे तो नास्तिकपणुं
आवे अथवा ओछुं वधतुं कहिए तो शुं एमने कर्म पाछां वलग्यां.
केमके आवर्ण विना तो ज्ञानादिक गुण ओछा वधता थाय नहि क-

दापि अहिआं कोइ तर्क करशे के ज्ञानादिक तो गुण छे. तेने तमो पर्यायमां केम कहोछो. तेनो उत्तर—सिद्धांतमां तो एने पर्याय कह्या छे.

ज्ञान पजवाए. दर्शन पजवाए.

इत्यादिक पाठ छे माटे ज्ञानदर्शनादिकने पर्याय कहिने बोलाव्या छे अने द्रव्य गुण पर्याय कहिये छिये ते भेद ज्ञाननी अपेक्षा लइने बाल जीवने समजवा वास्ते छे. शामाटे के सिद्धांत तथा सुमति प्रमुख ग्रंथने विषे नयो बे कह्या छे द्रव्यार्थक तथा पर्यायार्थक पण कंई गुणार्थक नय कह्यो नथी. माटे पदार्थ बेज छे. एक द्रव्यने बीजो पर्याय, त्रिजो पदार्थज नथी गुण पदार्थ जो त्रीजो होत तो गुणार्थक नय कहेता. पण ए गुण ते तो द्रव्य पर्यायनी ओळखाण कराववा रूप जुदो कहिए छिए. पण एनुंज नाम पर्याय छे. माटे अहियां ज्ञानादिक जे पर्याय तेनी हानी वृद्धि थाय नहि कदापि अहि कोइ कहेशे के षडगुण हानि वृद्धि लागे छे. तेनो उत्तर जे ए पर अपेक्षा वडे छे. केमके जे जे ज्ञेय पदार्थ जाणवा देखवामां आवे छे. ते ज्ञेय पदार्थनो नाश. अथवा उत्पत्ति अथवा हानि वृद्धि थाय तेथी ज्ञानादिक गुणनी हानि वृद्धि नाश कहेवाय छे. ते पर अपेक्षाए छे. पण कांइ पोतानुं ज्ञान दर्शन ओछुं वधतुं थतुं नथी. जेटलुं छे एटलुं ने एटलुंज रहे माटे जे पर्याय अशाश्वता कह्या ते पर अपेक्षा ए जाणवा अने जे वर्णादिक पर्याय ते तो सडणपडण स्वभावना धणी छे. तो ते पर्याय कांइ सिद्धमां नथी ते तो संसारीमां रह्या छे. माटे अहिआं रूपी पणुं मानतां महा विरोध आवे. अथवा बीजे प्रकारे पण विरोध आवे छे ते कहुंछुं.

हवे जे सिद्ध छे ते अनादि अनंत भांगे छे एटले एम सिद्धनी

आदिनथी के फलाणे दहाडे सिद्ध थया. तेम अंत पण नथी के फलाणे दिवसे सिद्ध संसारमां आवशे. माटे अनादि कहेतां आगळ अनंता अनंत पुदुगल परावर्त्तन वहि गयां ने अकेका पुदुगल परावर्त्तनमां अनंता काळ चक्र वहि गयां एम आगलना काळ नुं कोइ रीतनुं प्रमाण बंधाय नहि ने एक काळ चक्रना वे भेद एक अवसर्पिणि अने उत्सर्पिणि ते अकेका भेदे अकेकी चोविशी गणाय ते एक चोविशीनां दश कोडा कोड सागरोपम वर्ष जाय छे तेमां पांच भरत ने पांच अइरवर्ते एक कोडा कोड सागरोपममां मुक्ति कही छे पण पांच महा विदेहमां तो सदा काळ निरंतर मुक्ति छे अने आ दश क्षेत्र थइने तो एक महा विदेहनी विजय जेटलुं तो नथी अने त्यां महा विदेहमां तो सदा मुक्ति चालती छे तो एवी रीते मोक्षे जातां आगळ अनंता अनंत काळ वहि गयो तेथी अनंता अनंत जीव मोक्षे गया ने मोक्ष क्षेत्र तो पीस्तालीशलाख योजनमां छे ते केम करीने माय ज्यां रूप कहीए त्यां तो पुद्गलादिक थयुंज त्यां तो संकडाश थाय ने ते जीव मुक्तिमां माय नहि माटे ए पण एक मोटो विरोध आवे ए अवगाहना कही ते अरूपी छे कहेवा मात्र छे शामाटे के एक अवगाहना जो शावीत होय त्यां बीजी अवगाहना पेशी शके नहि अने अहिंआं ज्यां सिद्ध परमात्मानी एक अवगाहना छे त्यां अनंता सिद्ध भगवाननी अवगाहना छे कोई आडी कोइ उभी कोइ बेठी कोइ सुती इत्यादिक रूपे रही छे ते आकाशवत् छे एक जाणपणारूप लक्षण ते चेतना गुण छे तेथी सिद्ध भगवान कहेवाय छे पण त्यां कांइ रूपादिक पदार्थ एमने विषे नथी ए तो अरुपी पदार्थ छे.

हवे सिद्धना जे गुण लक्षण छे ते कहीए छीए एटले सिद्ध परमात्मा अरागी छे राग कहेतां जे प्रेमदशा तेथी रहीत तेना बे भेद

एक प्रशस्त राग १ बीजो अप्रशस्त राग २ प्रशस्त कहेतां देवगुरु धर्म संबंधी राग ने अप्रशस्त कहेतां संसारादिक राग ते बन्ने थकी रहित छे तथा अद्वेषी छे तेना पण बे भेद प्रशस्त एक बीजो अप्रशस्त प्रशस्त कहेतां देवगुरु धर्म उपर खेद करतो देखी तेना उपर द्वेष आवे अप्रशस्त कहेतां पोताना संसारादिक कार्यपणामां खेद करतो देखी तेना उपर द्वेष आवे एवा द्वेषथी रहित छे अज्ञानपणाथी रहित छे तथा मोहदशा जे मारुं मारुं करवुं तेथी रहित छे तथा आश्रवपणाथी रहित छे आश्रव एटले नवां कर्म खेंचीने आत्मसत्तामां संग्रह करवो तेथी रहित छे तथा अनंतु ज्ञान छे अहिंआं कोइ प्रश्न करशे के ज्ञानतो एकज छे ने तमे अनंतु केम कहोछो तेनो उत्तर जे ज्ञेय पदार्थ अनंता छे ते प्रति जाणे छे माटे अनंतु ज्ञान कहीए तथा लोक अलोक रूपी अरूपी सर्वे पदार्थ ने जाणे छे देखे छे ते लोक पण अनंत छे तथा पुद्गल परमाणुं तथा पुद्गलिक खंध ते पण अनंता छे एवा अनंत पदार्थने जाणे माटे अनंतु ज्ञान कहीए छीए.

शिष्य वाक्य स्वामि! एतो पर अपेक्षावडे करीने अनंतु ज्ञान ठरे छे पण स्वभाविक ज्ञान तो ठरतुं नथी जेम कोइ एक चादरने विषे राइ प्रमुख वस्तुओनो गांसडो बांधी लाव्यो ए राइना दाणा अनेक छे तेथी ए चादर पण अनेक ठरे छे पण चादर जोतां तो एकज छे जेम मनुष्य एकज ते अनेक पदार्थने जाणे देखे छे तेथी ते मनुष्यनां कांइ मन पण अनेक न थयां अने आंख्यो पण अनेक न थइ तेम सिद्ध परमात्मानुं ज्ञान ते एकज ठरे छे.

तेनो उत्तर--आत्माना असंख्याता प्रदेश छे ने प्रदेशे प्रदेशे अनंतु ज्ञान छे ते पर अनुयायीपणे छे स्वअनुयायीपणे सर्वे प्रदेशे

जाणवुं छे ते जाणवानो स्वभाव जोतां एकज छे पण पर अपेक्षा-वडे करीने अनंत प्रकारनुं जाणवुं रह्युं तेथी अनंतुज्ञान कहीए ते सर्व उपमावाच छे. माटे अनंतु ज्ञान कहेवुं एटले सिद्ध परमात्मा अनंत ज्ञानी छे तथा सिद्ध परमात्मा अनंतदर्शनी छे एटले अनंत पदार्थने देखवे करीने अनंतदर्शनी कहीए ने सर्व पूर्ववत् जाणवुं अहीं काइ कहेशे के चोथुं ज्ञान जे मनःपर्यवने तेने दर्शन छे नहीं तो केवल ज्ञानने दर्शन क्यां थकी थयुं तेनो उत्तर जे मनः पर्यव ज्ञान छे ते विशेष उपयोगी छे शामाटे के ए एक अवधि ज्ञाननो भेद छे जे अवधि ज्ञान छे ते सर्व पुद्गलिक भावरुपी पदार्थ ने संपूर्ण जाणे देखे अलोक विषे लोकलोक जे-वडां असंख्याता खांडवा जाणे देखे अने मनः पर्यव ज्ञाननो अढी द्विप प्रमाणे मनोवर्गणाना पुद्गल द्रव्यने जाणे माटे अवधि ज्ञान करतां मनः पर्यव ज्ञाननो विषय अत्यंत अल्प छे अने तेने विषे पण रुपी पदार्थनुं जाणवुं देखवुं छे ने एने विषे पण रुपी पदार्थनुं जा-णवुं छे तथा अवधि ज्ञानि पण मनना पर्यायने जाणे देखे छे एम अधिकार भगवतिजीमां छे ज्यां बे देवता विमानीके भगवानने मन थकी वांद्या पुज्या प्रश्न पूछयां भगवाने पण मनथकी उत्तर दीधा एवी रीतनो आधिकार छे तथा प्रत्यक्षपणे जे मनुष्यनी पासे देवनुं आववुं थाय छे ते मनुष्य मन थकी देवने स्मरे छे अथवा मनथी कोइ वात पूछे तेनो उत्तर देव आपे छे माटे एम जाणवामां आवे छे के मनोवर्गणाना प्रदेश देवने जोवामां सारी रीते आवे छे ए वात प्रत्यक्षमां पण भाषण थाय छे तथा सिद्धांतमां पण लेख छे तेथी एम जाणीए छीए के अवधि ज्ञान सर्व रुपी पदार्थनो विषयी छे ते मध्येथी मनोर्गणानो अल्प विषय मनः पर्यव ज्ञानथी नाम संज्ञा कहीने जुदो भेद पाडयो छे तेथी तेने दर्शन गण्युं नथी पछी

तत्व तो ज्ञानी गम्य छे माटे सिद्ध परमात्माने जे अनंतु दर्शन छे ते सामान्य उपयोगी छे अने विशेष उपयोगी तो ज्ञान छे ए जिन भद्रगणी क्षमां श्रमणने मते छे तथा सिद्धसेन दीवाकरने मते तो भिन्न उपयोग मान्यो नथी त्यां एक समे बन्ने उपयोग कह्या छे तथा सिद्ध परमात्मा अनंत चारित्रना धणी छे एटले चारित्र कहेतां जे ज्ञानदर्शनने विषे स्थिर भाव तेने चारित्र कहीए अहींआं व्यवहार चारित्र गवेखवुं नहि व्यवहार चारित्र तो पुद्गलिक भाव छे एटले व्यवहार कहेतां जे पंच महाव्रतादिक बाह्य थकी पाळवुं पळाववुं ते सर्व पुद्गलिक भाव छे तेमां कांइ आत्मानुं कल्याण नथी ए पुद्गलिक भावनो नाश थये ज मुक्ति मळे माटे अहींआं निश्चय चारित्र लेवुं ते निश्चय चारित्र ते आत्मानो स्थिर भाव जाणवो एज चारित्र सिद्ध परमात्माने छे.

वळी सिद्ध भगवानने अनंतु विर्य कह्युं छे विर्य कहेतां जे आत्मानी शक्ति ज्ञान दर्शनने विषे स्थिरतापणे विस्तरेलीज छे अहीं पुद्गल विर्य जाणवुं नहीं पुद्गलिक विर्यथी सिद्ध परमात्मा रहित छे अनंत सुखमय कहेतां ज्यां आधि कहेतां मननी चिंता व्याधि कहेतां शरीरना रोगादि तथा क्षुधा वेदनी तथा सात भय प्रमुख अनेक रीतनां संसारमां दुःख छे तेथी रहित थया तेज सुख वळी सिद्ध भगवान अनंत तपना धणी छे ते सदायकाळ ज्ञान दर्शनमां रमणता रुप छे तथा अनंत उपयोगी छे एटले ज्ञान दर्शननो उपयोग अनंताज्ञेय पदार्थोमां प्रवर्ति रह्यो छे तथा शुद्ध छे अज्ञान भावादिक अशुद्धता गइ छे माटे शुद्ध कहीए तथा बुद्ध कहीए एटले बुद्ध कहेतां जे क्षायक भावे ज्ञान दर्शन प्रगटेलुं छे तथा अविनाशी कहीए एटले अवीनाशी कहेतां हवे कोइ काले सिद्ध क्षेत्रथकी नाश थवानो नथी अज कहीए अज कहेतां हवे कोइ काळे जन्म लेवो नथी

अने त्यां पण कांइ जन्म लीधो नथी जेवा अहींथी असंख्यात प्रदेश निर्मल थइने गया तेवाज त्यां प्रगटपणे स्थिर भावे रह्या छे. तथा अनादि छे एटले आदि जेनी नथी तथा सिद्ध अनंत छे एटले एक एवा अनंता छे तथा अक्षय छे एटले कोइ काळे सिद्धपणानो क्षय थवानोज नथी तथा अक्षर छे एटले कोइ काळे सिद्धपणामांथी खरवाना नथी. तथा कोइ प्रदेश पण खरी पडे नही तथा कोइ गुण पर्याय पण खरे नही, माटे अक्षर कहीए, तथा अणअक्षर छे एटले अकारादि अक्षर तेमां ए रूप आवे नही एटले अक्षरादिकथी रहीत छे. त्यां कोइ कहेशे के सिद्ध अथवा मुक्ति जे कहेशो ते तो अक्षर सहित छे ने तमे अण अक्षर केम कहोछो तेनो उत्तर जे सिद्ध अथवा मुक्ति इत्यादिक कहीने बोलाववुं ते तो अहीआं संसारीने उच्चारण करवानी संज्ञा छे पण त्यांनुं तो रूप बंधाय नहि अने त्यां कांइ नामादिक नथी माटे अण अक्षरज कहीए. तथा अकळ छे एटले ए कोइना कळवामां आवे नहि. एक ज्ञानि ज एने जाणे, बीजाना जाणवामां ना आवे तथा अचळ छे एटले एक प्रदेश आकाशनो आघो पाछो न थाय जे उर्ध्व अधो तिर्च्छो बीजो प्रदेश वडे एक फरसे नहि जे पोताना आत्मप्रदेश उपजती वखत फरशेला छे तेना तेज रहे पण आघो पाछो प्रदेश न फरशे माटे अचळ कहीए.

तथा अमर कहिए एटले शुभा शुभ कर्मथकी रहित एटले पाप पुण्य जेने करवुं नथी तथा शुभा शुभ प्रदेश थकी रहित कहेतां जे पाप पुण्यादिकनी वर्गणाओ आठ जे आत्माने वळगेली हती ते वर्गणाथकी रहित थया. एटले सर्व कर्मरूप मेल हतो ते थकी रहित थया. माटे अमर कहिए, तथा अगम कहिए. एटले जे सिद्धपरमात्माना स्वरूपनी गम बीजाने नथी ए तो एक ज्ञानी गमज वस्तु छे.

अहिंआं कोइ कहेशे के ज्ञानी गप वस्तु एवुं कहो छो तो ज्ञानी वी-जाने जेवुं रूप होय ते कहे के नहि जाणता होय तो कहेज तेनो उ-त्तर जे पुरुष जाणे छे. तेने केटलीक वस्तु कहेवा योग्य छे. केटलीक कहेवा योग्य नथी. तेनुं कारण सांभळो के जे वस्तुना हेतु युक्ति द्रष्टांत संसारिक वस्तुने लागु थाय. ते कीधामां आवे पण जे वस्तुने संसा-रीक हेतु द्रष्टांत लागु न थाय ते कीधामां न आवे. जेम संसारने विषे घृत खावानो अभ्यास सर्व माणसने छे. अने जे माणस घृत खाय तेना स्वादनी पण मालुम छे. पण कोइ ए स्वादनुं स्वरूप पूछे के घृतनो स्वाद केवो छे. ते वारे ते कहेवानी सामर्थ्यता कोइमां छे नही शामाटे जे एनो कोइ हेतु द्रष्टांत एना स्वाद जेवो पडखे देखाडवानो नथी, ते रीते ज्ञानी पुरुष सिद्धना स्वरूपने जाणे छे. पण कांइ शक्ति नथी. वळी कोइ अहिंआं कहेशे के अनुमान थकी समजावे. शामाटे के उपमा देइने कोइ वस्तु समजावा योग्य नथी तो ठीकज छे. पण अनुमान प्रमाण कह्युं छे. ते रीते समजावे तेनो उत्तर जे अनु-मान प्रमाण पण वस्तुना अनुसार विना थतुं नथी माटे जे वस्तुनुं द्रष्टांत संसारमां नथी तेनुं अनुमान प्रमाण शातुं करवुं. माटे सिद्ध भगवाननुं स्वरूप अगम्य छे. तथा सिद्ध भगवान अनामी छे. ते स्वरूप पूर्वे आवी गयुं छे. तथा अरूपी छे एटले सिद्ध परमात्माने विषे रूप कशुंए नथी एटले रूप कहेतां वरण धोळो-लीलो, पीळो रातो, श्याम इत्यादिक वर्ण विना रूप शानुं थाय. ए रूपतो पुद्ग-ळने विषेज छे. माटे सिद्ध अरुपी कहिए. तथा सिद्ध अकर्मी छे. अकर्मी कहेतां जे कर्म रहित एटले ज्ञानावरणीय१ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयुकर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरा-यकर्म ८ ए आठ कर्म थकी रहित तेने अकर्मी कहिए. तथा बीजे प्रकार कर्म कहेतां जे करवुं. क्रिया आचार कष्ट प्रमुख करवुं तेने

कर्म कहिए. ते कर्मथकी रहित थया. माटे अकर्मी कहिए माटे सिद्ध भगवान् अकर्मी छे.

तथा सिद्ध भगवान् अबंध छे. बंधना बे भेद राग बंध द्वेष बंध २ तथा बंधना चार भेद प्रकृति बंध १ स्थिति बंध २ रस बंध ३ प्रदेश बंध तेना भेद अनेक छे. इत्यादिक बंध थकी रहित माटे अबंध कहिए. तथा अणउदय कहिए. एटले कर्म कोइ छे नहि. माटे उदयशानो होय. तेथी अणउदय कहिए. तथा अण उदारिक कहिए एटले कर्म विना कोइ उदिरणा करवी होय नही तथा अयोगी कहिए. एटले मनः योग १ वचनयोग २ काययोग ३ ए त्रणे योगना १५ भेद छे. ते सर्व योगथी रहित छे. माटे अयोगी कहिए तथा अभोगी कहिए, एटले पांच इंद्रिओना तेविश विषय तेमांनो एके विषय त्यां नथी, तथा इन्द्रीओ पण त्यां नथी तथा मननो भोग पण नथी. तेथी रूपी पदार्थ त्यां कोइ नथी तेथी अभोगी कहिए. तथा अरोगी कहिए. रोग वात पित्त कफ आदि जे शरीर होय तेने थाय त्यां कोइ शरीर नथी माटे अरोगी कहिए. तथा अभेदी कहिए. एटले जे असंख्यात प्रदेशरुप आत्मानो जे घन छे. तेने कोइ भाला प्रमुख भेदे कहेतां विंधे एटले छिद्रादिक पडे नही सदाय अभेदी छे. तथा अछेदी कहेतां जे घनमांथी कोइ कडको जुदो पाडवो चाहे तो कोइ काले पडे नही तथा अवेदी कहेतां जे पुरुष वेद १ स्त्री वेद २ नपुंसक वेद ३ ए त्रणे करीने रहित छे. तथा अखेदी कहेतां जे जे कार्य करतां थाक लागे तेने खेद कहिए. तेमांनुं त्यां कोइ कार्य करवुं कराववुं नथी तेथी अखेदी कहिए. तथा अकषायी कहिए. कषाय कहेतां जे क्रोधादिक तेना चार भेद क्रोध कहेतां जे तप्त परिणाम, मान कहेतां जे अभिमान तेने जगत्मद कहे छे. तेना आठ भेद छे. जातिमद १ कुलमद

२ बलमद ३ रूपमद ४ धनमद ५ ऐश्वर्यमद ६ ज्ञानमद ७ तपमद ८ इत्यादिक अनेक भेद अहंकारना छे.

: तथा माया कहेतां जे कपट स्व अर्थे करे. पर अर्थे करे तथा स्वभावे पण कपटमांज रम्या करे. लोभ कहेतां जे तृष्णा धननी, राजनी, पुत्रनी, स्त्रीनी, यश कीर्तिनी, आभवनी. परभवनी, ते सर्वे ने तृष्णा कहिए. ए क्रोधादिकचारने कषाय कहिए, ए चारे कषाय थकी रहीत तेने अकषायी कहिए. एटले सिद्ध भगवान् अकषायीज छे. तथा असखाइ कहेतां जे सिद्ध भगवान् सखाइ कहेतां कोइनी साह्य करे नही एटले जे मुक्ति गया तेनी कोइ जीव आशा राखे जे म्हारुं कार्य करे. ते सर्वे मिथ्या छे. सिद्ध भगवान अहिआं आवे पण नही ते कोइनुं कार्य करे पण नही. त्यां बेठा पण कोइनुं कार्य करे नहि ए तो पोताना स्वभावमां स्थिर भावे छे. माटे एमने असखाइ कहिए. तथा बीजो अर्थ जे असखाइ कहेतां ए बीजा कोइनी साहाजे कोइ सिद्ध रह्या नथी अने कोइनी साह्य थकी सिद्ध थया नथी ए तो पोतानी आत्म शक्तिएज सिद्ध थया छे. ने पोतानी आत्म शक्ति एज स्थिर भावे सिद्धने विषे रह्या छे. अही कोइनी साह्य खप लागती नथी, कोइनी साह्य थकी सिद्ध पूर्वे सिद्ध थया नथी हमणा पण कोइनी साह्य थकी सिद्ध थता नथी, आवते काले पण कोइनी साह्यथी सिद्ध थवाना नथी अहि तो एक आत्म शक्ति खप लागे छे. माटे असखायीज कहिए वली अलेसी छे. एटले लेश्या कहेतां कृष्णा लेश्या. १ नील लेश्या. २ कापोत लेश्या. ३ ते तो लेश्या. ४ पद्म लेश्या. ५ शुक्ल लेश्या. ६ ए छये लेश्या थकी रहित छे. माटे अलेशी कहीए. तथा अशरीरी कहेतां.

औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस् ४ कार्मण. ५ ए पांचे शरीरे करीने रहित माटे अशरीरी कहिए. तथा अणाहारी कहेतां जे

कोळीए वासीने मुखमां धरे रोमाहार कहेतां १ रोम रोमथकी प्रणमे. २ ओजाहार इत्यादिक आहार करीने रहित तेने अणाहारी कहिए. तथा अव्याबाधक कहेतां जे बाधा पीडा रहित तथा अण अवगाह कहेतां जे अवगाहना शरीरनी संसारमां नोखी नोखी छे. ते संक्षेपथी कहिए छीए. पृथ्वी आदिक चार थावरने आंगळने असंख्यातमे भागे छे. वनस्पतिनी हजार योजननी छे. बेरेन्द्रियनी बार योजननी, तेरेंद्रियनी त्रण गाउनी, चौरेन्द्रियनी चार गाउनी तिर्यंच पंचेन्द्रियनी आंगळनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी हजार योजननी, नारकीनी पांचसे धनुपनी, देवतानी सात हाथनी मनुष्यनी त्रण गाउनी, एवी चार पन्नवणा सूत्रथी जोइ लेज्यो. इत्यादिक अवगाहना ए करी रहित तेने निरअवगाहना कहिए. अहिआं कोइ कहेशे के. सिद्धनी अवगाहना जघन्य बत्रीस आंगळनी उतकृष्टी त्रणसे तेत्रीश धनुपने बत्रीश आंगळनी छे ने तमे अण अवगाही केम कहो छो. तेनो उत्तर जे. त्यां कांइ पौद्गालिक अवगाहना नथी ने त्यां जे छे ते तो आत्मिक अवगाहना छे. ते एक अवगाहना त्यां अनंति अवगाहनाओ छे. माटे ए अवगाहनातो कहेवा मात्र रही छे. ने पौद्गालिक अवगाहनामां एक बीजुं समाय नहि. अहिआं कोइ कहेशे जे मनुष्य तथा जनावरना शरीरने विषे कीडा वगेरे पडे छे माटे बीजी अवगाहनाओ समाय के नहीं; तेनो उत्तर जे मनुष्य तथा जनावरमां कीडाओ पडे छे. ते तो अल्प शरीरी छे. ने रोगादिक कारणे पडे छे. माटे कांइ मनुष्यमां मनुष्य कोइ पडतां नथी ने जनावर जनावरमां पडतां नथी ने स्त्री आदिक गर्भ धरे छे. ते तो गर्भनो-कोठो न्यारोज छे. गर्भ स्थिति पुरि थये प्रसव थाय माटे ए अवगाहनामां अवगाहना कहेवाय नाहि माटे ए तो स्थितिअभाव छे. माटे अहिआं पुद्गलीक भावमां बीजी अ-

वगाहना समाती नथी ने सिद्ध भगवानने तो एक सिद्धनी अवगाहना त्यां अनंता सिद्धनी अवगाहना रही छे. माटे ए अवगाहना गणाय नहि तेथी सिद्ध भगवान पण अण अवगाही छे. तथा वली अगुरु लघु कहेतां खटगुणी हाणी वृद्धि अथवा हळवो भारे ए सर्वे व्यवहार नये करीने सिद्ध भगवानने कहिए छीए. आ माटे के स्व अपेक्षाए नथी पर अपेक्षा ए लाधे ते विचार सर्व सम्मति ग्रंथ थकी जाणवो. तथा अपरिणामी कहेतां कोइ गति आदिक विषे परणववानो स्वभाव नथी माटे अपरिणामी कहिए

तथा अतीन्द्रिय कहेतां श्रोत्रेन्द्रिय १ चक्षुरिन्द्रिय २ घ्राणेन्द्रिय ३ रसेन्द्रिय ४ स्पर्शेन्द्रिय ५ ए इन्द्रिओथी रहितने अतीन्द्रिय कहिए. तथा अप्राणी कहेतां जे पांच इन्द्रिओ पूर्वे कही ते मनाबल १ वचनबल २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ ने आयुष्य ५ ए दश प्राणथी रहितने अप्राणी कहिए. तथा सिद्ध भगवानने नो पर्याप्ति कहिए. पर्याप्ति कहेतां अहार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति २ इन्द्रिय पर्याप्ति ३ श्वासोश्वास पर्याप्ति ४ भाषा पर्याप्ति ५ मनः पर्याप्ति ६ ए छ पर्याप्तिथी रहितने नोपर्याप्ति कहिए. तथा अयोनि कहेतां मनुष तिर्यंचनी आंवलीपत्र तथा काचबादि आकार योनि तथा देवता नारकीनी उत्पात योनि सन्मुर्च्छिना अनेक जातनी योनि ते योनिमां जेने प्राप्त नथी थावुं तेने अयोनि कहिए, तथा असंसारी कहेतां संसारने देवता मनुष तिर्यंच नारकी ए चार गति संसारथकी रहित तेने असंसारी कहीए. तथा अपर कहेतां संसार स्वरुप थकी नांखा. तथा अपरंपार कहेतां जेनो पारन पामीए, अव्याप्त कहेतां संसारादिकमां व्यापे नही. अकंप कहेतां जे वायु आदि ए कंपे नही अविरोधी कहेतां कोइ जीव साथे विरोध नथी. अनाश्रव कहेतां शुभाशुभ पुण्य पाप नथी अहिंसा प्रमुख पण आश्रव नथी तथा

अढारे पाप स्थानथी रहित थया छे. तथा अनाश्रव कहिए अमंगी कहेतां पुद्गलादिकनो संग छे नही, अनाकार कहेतां परिमंडळ प्रमुख स्वस्थान एक नथी इत्यादिक अनंत गुणे करी विराजमान एवे लक्षणे सहित तेने सिद्ध परमात्मा कहिए. हवे अहिं सिद्ध जे थाय ते जे चौदमा गुण ठाणाने अंते उच्छिन्न क्रिया प्रतिपाति ध्यान करतो शैलेशिकरण करिने सिद्ध एटले पूर्वे आठ गुण आत्माना ते आठ कर्मे दावेला छे ते थकी छुटे तेनुं नाम मुक्ति कहिए. ते आठ गुण नां नाम कहिए छीए ज्ञान गुण ते ज्ञानावर्णिय कर्मे दाव्यो छे. १ दर्शनगुण ते दर्शनावर्णीय कर्मे दाब्यो छे. २ अव्याबाध गुण ते वेदनीय कर्मे दाब्यो छे ३ भाव चारित्र क्षायक भावनुं ते गुण मोहनीय कर्मे दाव्यो छे. ४ अविनाशी गुण ते आयुकर्मे दाव्यो छे ५ अरुपी गुण तेज नाम कर्मे दाब्यो छे ६ अगुरु लघुगुण गोत्र कर्मे दाव्यो छे. ७ वीर्यादिक गुण ते अंतराय कर्मे दाव्यो छे ते आठ कर्मे आठ गुण दाव्या छे ते आठे कर्मने द्रव्य कर्म कहिए. तथा रागद्वेपने भाव कर्म कहिए ते कर्मथकी छुटे तेने मुक्ति कहिए. ते जीव कर्मथी मूकाइने सिद्ध क्षेत्रमां सिद्धि वरे.

शिष्य वाक्य—स्वामिन्! ए जीव कर्म थकी मुकाणो त्यारे केना जोरथी सिद्ध सुधी जाय. केमके अहिआं तो जीवने गति आदिने विषे आनुपूर्वी छे ते खेंची जाय छे. अहिंतो कोइ प्रेरकनथी ते प्रेरक विना सात राज उंचा केम करीने चडे.

उत्तर—पूर्व प्रयोग कहेतां अनादिकालनो एज प्रयोग जवा आववानो छे. तेथी करीने जाय. तथा बीजे प्रकारे गति पण मन कहेतां जे ते गतिमां जवुं छे यथा कुलाल चक्रवत् एटले कुंभारनो चाकडो प्रथम फेरवीने पछी दंड पडतो मूके तो पण ते चाकडो

तेनी मेळे फर्या करे. तेम जीव संसार गति आदिथी छुटो छे. तो पण गति प्रयोगथी चाल्यो जाय. तथा त्रीजे प्रकारे बंधन छेद् कहेतां जे बंधन थकी छेदाणो जेम एरंडानुं बीज एरंडानुं फळ फाटेके एरंडानुं बीज उंचे चाले. तेम आहिआं कर्म बंध थकी छूटयो एवो आत्मा उंचो चाल्यो जाय तथा चोथे प्रकारे असंग क्रिया कहेतां जेम अग्निनो धूमाडो छे. ते वायु रहित शिखा बंध उंचो चाल्यो जाय. तेम जीवने अनादिकाळनी असंग क्रियाए उर्ध्व गतिज वल्लभ छे. तेथी उंचो चाल्यो जाय ए रीते सिद्ध गतिमां जाय

शिष्य वाक्य—स्वामिन्—चौदमुं गुण ठाणुं अक्रिय छे. तो चौदमे गुण ठाणेथी एवी क्रिया केम करे के सात राज उंचो जाय.

उत्तर—सिद्ध तो अक्रियज छे. परंतु पूर्णप्रेरणाये जाय छे. जेम तुंबडुं छे. तेनी उपर बहु मृतिका प्रमुखनो लेप दइने धराने तळीए नाखीये तो ए लेप धोवाइ जाय. त्यारे तुंबडुं पाणिनी उपरज आवे ए तुंबडानो स्वभाव छे. तेम आत्मा कर्मना लेप थकी रहित थयो तेथी मूळ स्वभाव आत्मानो उर्ध्व गतिनो छे. अने जीवने चालवानी शक्ति छे, धर्मास्तिकायने साह्य करवानी शक्ति छे, तेथी जीव कर्म रहित थयो तो पण सिद्ध क्षेत्रमां रहे. अहिं कोइ कहेशेके आगळ अलोकमां ए जीव केम चाल्यो न गयो ? तेनो उत्तर अलोकमां धर्मास्तिकाय नथी, त्यारे त्यां चालताने सहाय कोण आपे माटे प्रेरक कोइ नहिं तेथी न गयो. अथवा कोइ कहेशे के त्यारे निचो केम न पडयो तेनो उत्तर जे भारे होय ते नीचुं आवे ने ए आत्मातो कर्मरूप भारथी रहित थयो एटले हलको थयो ते निचो शाथी आवे.

अथवा कोइ कहेशे के त्यां डाभो जमणो त्रीछो आघो पाछो केमन जाय ?

उत्तर—ए चेतन तो अकंप छे ते वायु थकी हाले चाले नहि अथवा कोइ प्रेरणा करता पण नथी जो कर्म होत तो प्रेरणा करत. अथवा अचळ छे. एटले पोताना आकाश प्रदेश जे फरसेला छे. त्यांथी चालीने आघो पाछो जाय नहि शामाटे के सिद्ध भगवान् आक्रिय छे. माटे क्रियाविना ए बधुं कारण बने नहि. ने अहि तो क्रियानो नाश करीने सिद्धि वर्या छे. माटे ए काम न बने अथवा कोइ कहेशे के सिद्धने ए कर्म केम न लागे.

तेनो उत्तर—कर्म तो अज्ञानना योगथी लागे छे अने सिद्ध भगवाने तो अज्ञानयोगनो क्षय कर्यो छे. तेथी करीने कर्म कोइ लागे नहि एटले एवा सिद्ध क्षेत्रमां आत्मा सिद्धपदने पामे अने एवाज सिद्धपरमात्माना गुण कह्या तेवाज सर्वेना आत्माना छे ते आत्मिकगुणनुं स्मरण ध्यान जे करे ते पोते सिद्ध परमात्मा थाय. ए वातमां संदेह राखवो नही.

दुहा.

सूक्ष्म बोध विण जीवने, नहि आत्म अनुभव ।
ते कारण ए वरणव्यो, सूणी लेजो तमो भव्य.॥१॥
आत्मचिंतामणि वरणवी, वरणव्यो सुक्ष्म बोध ।
हेय ज्ञेय ने उपादेय, एत्रणेतो करी शोध ॥ २ ॥
शुभाशुभ दशा वरणवी, त्यागवी कहि निरधार ।
शुद्ध भाव ते आदरो, निज स्वरूप सुखकार ॥ ३ ॥
भेद ज्ञान अहिं वरणव्यो, जड चेतन विभाग ।
गुण पर्याय तेम जाणिए, द्रव्य संगाते जाग ॥ ४ ॥

नयो साते वरणवी, बहु ग्रंथ अनुसार ।
बेउ प्रकार एमां कह्या समजो चतुर विचार ॥ ५ ॥
बावनभेद ते भाखीया, साते नयनातेह ।
एम अनेक भेद पक्षथी, वरणव्यां त्यां गुण गेह ॥६॥
लक्षण गुण स्वभाव ते, प्रत्येके प्रत्येक जोय ।
साधारण रीते वरणव्या, समझी लेजो सोय ॥ ७ ॥
निक्षेपा चार भाखीया, ग्रंथ थकी निरधार ।
अर्थ ते सवीधारजो, पंडित मुख निरधार ॥ ८ ॥
स्वरुप कहयुं जे सिद्धतुं, भिन्न भिन्न करी सार ।
बहु हेतु बहु युक्तिथी. भाख्युं हरख अपार ॥ ९ ॥
इत्यादिक बहु वारता, भाखी ग्रंथ मोझार।
सूत्र ग्रंथ प्रकरण थकी, ए भाख्यो अधिकार ॥ १० ॥
न्याय तर्क एमां घणो, समझुने सुखदाय ।
भुख्याने घेबर मळे, तेम ग्रंथ चित्त लाय ॥ ११ ॥
एह ग्रंथ जे हृदय धरे, तेने सिद्ध पदसार ।
पामवा नहि ते आंतरो, भाखुं छुं निरधार ॥ १२ ॥
ए ग्रंथथी अळगो रहे, तेने भव स्थिति दूर ।
जन्म मरण ते पामशे, रहे संसार भरपूर ॥ १३ ॥
एह ग्रंथ अविरचळ रहो, सुरगीरि सम तेह ।
ज्यां लगी रवि शशी रहे, त्यां लगी गुणनो गेह ॥१४॥

ए ग्रंथ मुख मुख हजो, वसुधामां विस्तार ।
तेल बिंदु जेम विस्तरे, भव्य जीव सुखकार.॥ १५ ॥
ओगणीशत संवत्सरे, त्रेवीस कार्तिक मास ।
शुक्र त्रयोदशी जाणीए, भोमवार सुखवास.॥ १६ ॥
एह ग्रंथ पूरण हवो, संघने अति आनंद।
मुज मन पण आनंद घणो, प्रगटयो सुखनो कंद. १७
मोदीकपुर मोटकुं, बहु श्रावकनो वास ।
तेहतणे आग्रह करी, कीधुं अहि चोमास. ॥ १८ ॥
श्रोता वक्ता सहु वसे, श्रावक पुण्यपवित ।
तेहतणे आग्रह करी, कीधो ग्रंथ ए नीत. ॥ १९ ॥
हुकम माथे चडावीओ, जिनवर केरो सार ।
तेनो वचन अनुसारथी, भाख्यो एह विचार. ॥ २० ॥
हुकम मुनिनो मानशे, आदरशे ए ग्रंथ ।
शाश्वत सुखडां पामशे, होशे शिववधुकंथ. ॥ २१ ॥

(इति हुकम मुनिजीकृत आत्मचिंतामणि.)

अनुभवप्रकाश ग्रंथ.

श्रीगुरुभ्योनमः

अंतर अनुभवनी प्रकाशता जे अनुभव तेनो बोध थाय एवो आ ग्रंथ छे. एटले आ ग्रंथने विषे अनुभवनो विचार कहुछुं शामाटे जे मुक्ति मार्ग साधनना अनेक मार्ग छे. पण अनुभव विना कोइ जीवनी मुक्ति थाय नही. मुख्य राजमार्ग तो एज छे बीजा जे मार्ग छे ते सर्वे छिंडियो छे ते पण छिंडियो अनुभवनी हदसुधी तो पोचतीज नथी तो आगल शानीज चाले अने अनुभव छे ते केवो के, साक्षात् रत्न चिंतामणि जेवो छे जेम रत्न चिंतामणितो वांछितपुरे ते पण एक भवनुं ने विनासीक सुखनो दातार छे. अने अनुभव छे ते तो अविनाशी सुखनो दातार छे. शामाटे जे आभवनें विषे तो आत्मअनुभव करवाथी संतोषरूपी जे सुख उत्पन्न थाय ते सुख थकी तो कहेवाय नहि. जेने केवली तथा अनुभवी जाणे. केमके ए सुखने पडखे कोइ बीजा सुखनी उपमा देवा जोग छे नहि तो प्रत्यक्ष जोतां अनुभव छे, ते तो चिंतामणि रत्न छे. अने परभव सर्व कर्म थकी मुकावीने शुद्ध स्वरुप निरंजन निराकार थइ पोताना शुद्ध स्वभावने स्थिरतापणुं पामीने सिद्ध क्षेत्रमां विराजमान थकी अनंतो काल रहे एटले एने जन्म जरा मरणनां दुःख टले, माटे अनुभव एज चिंतामणिरत्न छे एज सत्य छे पेलुं चिंतामणि रत्न छे ते तो पौद्गालिक छे ते तो जीवने घणो काल रखडावनार छे अने आतो मोक्ष दातार छे अहींयां कोइ कहेशे जे चिंतामणि रत्न भव वधारनार छे तो एनी उपमा केम दीधी.

तेनो उत्तर जे संसारनी मांहेली कोर एथी बीजी वस्तु उत्तम जोवामां आवती नथी, माटे एनी उपमा दीधी माटे उपमाते कंइ बराबर गणवी नही, हवे जे अनुभव छे ते महाअमृतरस छे एटले अमृत कहेतां शुं के जेने खाधे फरीथी मरवुं न पडे तेने अमृत कहीये, अहीयां अजाण लोक घणी जगाये बतलावे छे पण ते सरवे असत् छे, केमके इंद्रादिक सर्वेने जन्म मरण रह्यां छे माटे त्यां कंइ अमृत रस छे नहि, अमृतरस तो एक अनुभवज्ञानमांज छे, जेने पीधे थकी जन्मवुं मरवुं पडे नहि, इत्यादिक घणी उपमा जे सारमां सार होय ते अनुभव ज्ञानमांज लागु पडे छे, पण बीजाने सारी उपमा लागु पडती नथी शामाटे जे मुक्ति साधनने विषे तप जप, क्रिया, कष्ट, पूजा, सेवा, दानादिक ए सर्वे मिथ्याभाव छे, ए थकी पण मुक्ति त्रण कालमां थाय नहि मुक्तिनो मार्ग तो ए अनुभव ज्ञानज छे एटले अनुभव छे ते शुद्ध स्वरूपनां पगथीयां छे. अने शुद्धस्वरूप ते मुक्तिनो दरवाजो छे ते कारण माटे धर्म अर्थी जीवोने आत्म अनुभव रूप पगथीये पगथीये चडवुं तो कोइ वखते शुद्ध स्वरूप रूप दरवाजामां पेसाशे तो मुक्तिनां सुख पण पामशो, अने ए अनुभव विना बीजे आडे अवले पगथीये चडशो तो धर्मकोइदिन पामवाना नथी. मुक्तिनां सुख तमने मलशे नहि चारगति संसारमां रखडशो माटे आत्म अनुभव करोके तमारु कल्याण थाय ए हमारा हेतु उपदेश छे इति पिठिका.

हवे अनुभव पदार्थ छे एटले अनुभव कहेतां जे विचार तेने अनुभव कहिये तेना बे भेद छे एक शुद्ध. १ बीजो अशुद्ध २ हवे जे अशुद्ध अनुभव छे तेना बे भेद छे एक शुभ १ बीजो अशुभ २ ते मध्ये अशुभना बे भेद छे. एक कृत्रिम १ एक सहजथी हवे जे कृत्रिम अशुभ अनुभव छे. ते संसारनीमां मांहेली कोरे अशुभनो

जेटलो विचार तथा केटलाकमां धर्म तथा पुन्य कहे छे. रागद्वेष मोह विषय कषायादिक उत्पन्न करवां तेने लौकिकने विषे धर्म तथा पुन्य केटला एक काममां माने छे. ए सर्वे कृत्रिम अशुभ अनुभव जाणवो हवे. जे सहेजे अशुभ अनुभव तेनो विचार कहुंछुं एटले जीव मात्र अनादि काळना अज्ञानी छे अने मिथ्या १ अव्रत २ कषाय ३ योग ४ प्रमुखने विषे कारण विना रमणता करी रह्यो छे. क्रियारुप छे ते अनंताकर्म नवां अशुभ बांधे छे एज विचारणा तेने स्वभाविक अशुभ अनुभव कहीये ए बीजो भेद २ हवे जे शुभ कृत्रिम अनुभव तेनो विचार कहुंछुं एटले शुभ केहेतां जे रुडा पुदूगलनुं मेळववुं अशुभ केहेतां जे माठा पुदूगलनुं मेळववुं माठा पुदूगल ते पापरुप, रुडा पुदूगल ते पुन्यरुप हवे आहियां शुभ जे कृत्रिम ते पुण्यरूप छे ते अहींयां शुं विचार करे ते कहुंछुं हिंसा मृपा अदत्त मैथुनने परिग्रह इत्यादिक त्यजवानो जे विचार तेने विपे एकाग्र चित्त (तलालीनपणुं) तेने अनुभव कहिये ते कृत्रिम अनुभव थयो पण कंइ स्वभावथकी क्षयोपसमभाव आवे नही तो एथी कंइ आत्मानुं कल्याण थयुं नाहि. विशेष पुण्यबंध पण थाय नाहि. ए सामान्य प्रकारे शुभ कृत्रिम अनुभव कहिये छीये पण एथी कंइ आगळ कार्यसिद्धि नथी हवे जे आगळ कृत्रिम स्वभाविक जे शुभ अनुभव तेनो अनेक भेद छे कोइक तो व्यवहार समकितनो विचार करे, कोइ देशविरति कोइक सर्व विरतिपणानो विचार करे, पण ते शुद्ध नथी शा माटे जे ते ते स्थानकनी प्रकृतियोनो नाश थयो नथी माटे ते अशुद्धज छे.

शिष्यवाक्यः—स्वामी एने स्वाभाविक तो कहोछो अने अशुद्ध केम कहोछो तेनो उत्तर जे स्वाभाविक कहिये छिये तेनुं कारण सांभळ—जे एने स्वभावेज संसार उपरथी रागादिक मंद पडयो छे.

अने भवभयथी करिने उद्वेगपणुं छे तथा स्वभावेज शुभ रमणता रहे छे ते मध्ये कोइक जीव यथा प्रवृत्तिकरणे गयो अने कोइक न गयो ए माटे एने स्वाभाविक शुभ कहिये पण शुद्ध तो एनाथी घणुं दूर छे अने ए शुभ अनुभवथी पुण्य किंचितसार उपार्जे माटे एने स्वाभाविक शुभ अनुभव कहिये, हवे जे शुद्ध अनुभवनुं स्वरुप कहुंछुं के ए श्रोताजनो एकाग्र चित्त थइने धारजो, एथी तमारा आत्मानुं कल्याण थशे, हवे शुद्ध अनुभव ते विचित्र प्रकारनो छे परंतु समुदाये तेना बे भेद २ एक कृत्रिम अशुद्ध अनुभव १ बीजो कृत्रिम शुद्ध अनुभव हवे जे कृत्रिम शुद्ध अनुभव छे ते आत्माने देवतत्व करी विचारे अथवा द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे अथवा ज्ञान दर्शन चारित्रनो विचार करे तेने कृत्रिम शुद्ध अनुभव कहिये.

शिष्यवाक्यः—स्वामिए तो प्रथम अशुद्धवालाने घेर विचार हतोज तो आहियां विशेष शुं थयुं, ने शुद्ध शाथी कहो छो ॥ तेनो उत्तर ॥ हवे गुरुजी महाराज शिष्यने समजावे छे देवानुं प्रिय त्यां तो सम्यक् गुण प्रगट थयो, माटे एने शुद्ध कहिये छिये एटले जेने सम्यक् गुण प्रगट्यो, तेने ज्ञानी कहिये जेने सम्यक् गुण न प्रगट्यो तेने अज्ञानी कहिये, अज्ञान ते अशुद्धने, ज्ञानते शुद्ध ते माटे तेने शुद्ध अनुभव कहिये छिये.

शिष्यवाक्यः—स्वामि सम्यक्भाव ते शुं. ॥ तेनो उत्तर ॥ जे सम्यक कहेतां जे भले प्रकारे आत्मस्वरूपनुं जाणवुं तेने सम्यक्भाव कहिये हवे ते सम्यक्भावनुं जे प्रगटवुं तेना बे भेद छे एक व्यवहारथकी १ बीजो निश्चयथकी त्यां व्यवहारथकी जे देव अरिहंत १ गुरुसुसाधुनिर्ग्रंथ शुद्ध प्ररूपक शुद्धभावमां रमणतावाला २ धर्म जे केवली भाषित षट् द्रव्य पंचास्तिकाय ते मध्येथी एक आत्मद्र-

व्य जीवास्तिकाय ते आदरवाजोग छे वाकी धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ ए त्रण द्रव्य जाणवा जोग छे. पुद्गलास्तिक छांडवाजोग ए त्रणे तत्व ३ साचा करिने जाणे तेने सद्दहे तेने व्यवहार समकित कहिये. ए व्यवहार समकित एकेका जीवने अनंतिवार आवे पण एथकी कांइ जीवनुं कल्याण थाय नहि ने जन्म मरणना फेराटले नाहि माटे ए व्यवहार समकित पण जाणवायोग्य छे.

हवे निश्चय सम्यक्भाव कहु छुं जे निश्चय केहतां आवी वस्तु पाछी न फरे तेने निश्चय कहिये. अहियां कोइ कहेशे जे निश्चय समकित तो आव्युं पाछुं जाय छे ॥ तेनो उत्तर ॥ जे एनी सत्ताये कंइ मिथ्यात्व फरी वल्युं नथी जेम कोइ वीजने घणुं मृतिकानुं दळचडी जाय त्यारे ते वीज जणाय नहि पण जे वारे ते मृतिकानुं दळ धोवाइ जाय ते वारे एज वीज उगीने मोटुं झाड थाय तेम अहिंयां जे ग्रंथीभेद करेलो छे ते गांठय फरीथी रागद्वेषनी बंधाती नथी अने जे प्रदेशे जे मिथ्यात्व फरी वल्युं ते मिथ्यात्व ज्यारे त्यारे पण नाश पामे शा माटे जे अर्धपुद्गल परावर्तन उपर तो रहेवानुं छे नहि अने पूर्वे जे वीज वावेलुं छे समकितरुप ते समकितरुप बीजने करण पण करवा नथी अने ग्रंथी भेद पण करवा नथी तुरत ए वृक्ष थइने मोक्षरुपी फलनी प्राप्ती थाय माटे ए सत्ताये समकिती छे माटे तेथी कंइ समकित गयुं नहि एम समजवुं के निश्चय वस्तु पाम्या ते जाय नहि हवे जे निश्चय जे सम्यक् भाव तेनुं पामवुं तेना वे भेद छे एक तो सम्यक् ज्ञान १ बिजु सम्यक् दर्शन २ ते वंने वानां क्षयोपसमभावमां रह्यां छे अने क्षयोपसमभाव छे ते तो स्वभाविक छे ते क्षयोपसमनाचार भेद थाय छे ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनी ३ अंतराय ४ ए च्यारनो क्षयोपशम थाय छे वाकी च्यार कर्म रह्यां तेतो औदयिक

भावे छे अने ते भवपर्यंत छे पण गुणठाणानी रीतमां नथी अने आ, जे च्यार कर्म छे ते उदिक भाव तो छेज पण गुण स्थानकनी हद प्रमाणे क्षयोपशम थतो जाय ते मध्ये चोथे गुणठाणे दर्शन आश्री उपशम तथा क्षयोपशम तथा क्षायक ए त्रणे भाव लाधे तथा आठमे नवमे दशमे गुणठाणे चारित्र आश्री उपशम भाव तथा क्षायिक भाव बे लाधे छे तथा अगियारमे गुणठाणे चारित्र आश्री एकलो उपशम भावज लाधे छे उपरांत क्षायिक भाव लाधे छे तथा ज्ञान तथा पांच लब्धीने विषे चोथा गुणठाणाथी मांडीने बारमा गुणठाणा सुधी क्षयोपशम लाधे छे, उपरांत आ एक भाव छे माटे अहियां प्रथम गुणनो कर्ता विशेषे करीने क्षयोपशमज छे ते माटे प्रथमज जे ज्ञाननो स्वाभाविक क्षयोपशमभाव थाय तो पोताना आत्म स्वरूपने जाणे अने परभावनो त्याग करे ए भाव पूर्वे न होतो ते भाव अहियां प्रगट करे ते दर्शननुं पण अपूर्व कारण कहिये एज जे वारे पोताना स्वरूपनुं यथार्थ जाणपणुं अंशे थाय ते वारे समकित दर्शन पण प्राप्त थाय एटले अहियां मिथ्यात्व मोहिनी तथा चारित्र मोहिनीनो क्षयोपशम थाय.

हवे ते जे ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमनुं कह्युं तेना विचित्र प्रकार छे परंतु बे भेद अवश्य समजवा जोइये एक क्षयोपशम अज्ञानने भजे छे. बीजो क्षयोपशम ज्ञानने भजे छे जे क्षयोप शम अज्ञानने भजे छे तेना अनेक भेद छे तेना समुदाये त्रण भेद करिये छिये मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ ते मध्येनिगोदथी ते पांच स्थावर सुधी तेने विषे बे अज्ञान छे मति अज्ञानने श्रुतअज्ञान तेना अनंता पर्याय अवक्तव्य भावे छती पर्याये छे अने ते द्रव्यनुं सामर्थ्यपणुं तथा काचित् पर्याय हजु सामर्थ्यपणुं वक्तव्य भावे बादर स्थावरमां जणाय छे पण सूक्ष्मने विषे तो केवल अव-

त्तव्य भावज भासन थाय छे अने जे वंने अज्ञान कह्यां ते तो बादरमां तथा सूक्ष्ममां अवक्तव्य भावेज भासन थाय छे तथा वेरंद्री तेरंद्री चोरंद्री ए त्रणनेज विकलेंद्री कहियेछिये तन विषे वक्तव्यपणुं छे शा माटे के सुखदुःखने वेदे छे तेने विषे पण मती अज्ञानने श्रुत अज्ञाननो क्षयोपशम छे अहिंआं कोइ कहेशे जे माति अज्ञान, ने श्रुत अज्ञान पण सिद्धांतमां कह्यां छे, तेनो उत्तरके ए वात सिद्धांतमां कहि छे ते सत्य छे, शा माटे के एक उपजती वखत अपर्याप्त अवस्थामां लाधे शा माटे के जे कोइक जीव सास्वादन गुणठाणे रह्यो थको मरण पामे छे अने विकलेंद्रीमां उपजे छे ते जीवने उपजती वखते लाधे पण काइ सर्व जीव आश्रयीने कह्युं नथी माटे ए गति आश्रयीने तो मति अज्ञानने श्रुत अज्ञान ए वेनो क्षयोपशम लाधे छे तथा असंनिया पंचेंद्रीने माति अज्ञानने श्रुत अज्ञान ए वेनोज क्षयोपशम लाधे छे तथा संनिया पंचेद्रीने त्रण क्षयोपशम लाधे मतिअज्ञान श्रुत अज्ञानने विभंगअज्ञान ते मध्ये विभंग अज्ञान छे ते नारकीने तथा देवने भवप्रत्ययी छे, अने तिर्यंच तथा मनुष्य पंचेंद्री ए वेने गुणप्रत्ययी छे, ते पण त्रण अज्ञानना अनंता भेद छे अहींआं कोइ कहेशे के अवधीना असंख्याता तथा मतिश्रुतना संख्याता भेद छे तेनो उत्तरके संख्याता तथा असंख्याता भेद कह्या ते तो उपजवा आशरी छे. पण ए ज्ञानना विषेना अनंता भेद छे ए अज्ञानना क्षयोपसमनो संक्षेप विचार कह्यो हवे ज्ञानना क्षयोपशमनो विचार कहुंछुं, पण ते ज्ञाननो विचार तो विस्तारे छे ते कहेतां तो ग्रंथ गौरव थइ जाय ने अहीयां तो अनुभवनो विचार कहेवो छे माटे अनुभव जेटलो संक्षेप कहिशुं हवे जे अनुभव करवो ते तो स्व स्वरूपनो करवो फायदो तो तेमांज छे परस्वरूपना अनुभवमां कंइ फायदो छे नही हवे त्यां स्वस्वरूपनुं जाणवुं

ते परस्वरूपनुं जाण्या विना स्वस्वरूप ओलखाय नहीं अहींयां कोइ कहेशे जे परस्वरूपनुं जाणवानुं शुं काम छे? एक आत्मानो अनुभव करीये तेने कहीये के भाइ तारु बोलवुं काचीं समजनुं थाय छे. शा माटे जे आत्मा छे ते तो अरूपी छे अने रूपीने विषे दबाणो छे हवे तुं अरूपीने शी रीते जाणीश ने तेनो अनुभव शी रीते करीश? माटे द्रव्यनां लक्षण ओलखवां जोइये. लक्षणवडे करीने सर्वे जुदा पडे पछी ते मांहीथी आपणुं द्रव्य छे ते आपणे ग्रही लइये ने बाकीनां द्रव्य छे तेने पडयां मुकीये, अने आपणे आपणा आत्मानो पछे अनुभव करीये ते माटे प्रथम सर्व द्रव्यने जाणवा जोइये, अने तेना लक्षण गुण पर्याय सर्वे जाणवो जोइये त्यारे सत् अनुभव थाय ते माटे प्रथम द्रव्यनां नाम कहुंछुं धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ ने छठ्ठो काल द्रव्य ६ हवे तेनुं लक्षण उत्पात व्यय, ने ध्रुव छे, ते उपजवुं ने विणसवुं ते पर्यायनयनी अपेक्षाये छे अने ध्रुवतापणुं ते द्रव्यर्थिकनयनी अपेक्षाये छे ए जे कंइ उत्पातने व्यय संयुक्त ए सत् लक्षण द्रव्यनां छे.

हवे ते जे पर्यायनो जे समुदाय तेने गुण कहिये छिये एटले एक एक द्रव्यमां अनंतागुण रह्या छे ने एक एक गुणमां अनंता पर्याय रह्या छे इत्यादिक अनेक विचार छे पण गुण पर्यायवंत ते द्रव्य हवे जे अर्थ क्रिया करे तेने द्रव्य कह्या छे, त्यांतो पोत पोतानो अर्थ साधे तेने द्रव्य कहिये, ते मध्ये धर्मास्तिकाय चलण सहाय ते अधर्मास्तिकाय स्थिर सहाय करे. आकाश अवगाहना आपे, अने काल वर्तनापणुं करे, ए सर्वे आप आपणी क्रिया करे छे अने पुद्गलास्तिक छे ते पण मलवुं. ने वीखरवुं पूरण थवुं. ने वेराइ जवुं, ए पण पोत पोतानी शक्तिये पोत पोतानी अर्थ क्रिया करे छे पण

आपणो जे चेतन एज महा अज्ञानमां पड्यो थको पोतानी अर्थ क्रिया छोडीने पर क्रिया करे छे ए मोटुं दुःख थाय छे !!! शामाटे के तुं तो चेतना लक्षण छे ते तुं तारो धर्म छोडीने पर धर्मे केम पेसे छे पण तुं शुं करे, तने अनादि काळनुं अज्ञान संगी छे ए कंइ नवुं नथी ते अवक्तव्य भावमां पण तने हतुं ते वक्तव्य भावमां पण ते अज्ञान रह्युं तेथी परनो कीधो संग, ते वारे तेने मोहे आपु अंग, ते वारे तेने विशेषे वाध्यो रंग, ते वारे थयो स्वधर्मनो भंग, हवे तो तने सद्गुरुये घणी कृपा करीने धर्म मार्ग देखाड्यो अने सर्व अनुभव करवा लायक कर्यो माटे तुं आत्म अनुभव कर आत्म स्वरूप केवुं छे के शुद्ध द्रव्यार्थिक नये जोइये तो शुद्ध चिदानंद मय मूर्त्ति परमानंद मय साक्षात् तुं परमात्मा जे ए निश्चयनयनुं वचन छे, शामाटेके अहींयां अनुभव करवो रहे नहि. केमके उच्चारण करवुं बंध थयुं ते वारे गुण गुणी भेद पण करी शकाय नहि, ते वारे एक जाणवा मात्र अनुभव रह्यो. ए नय तो पूर्णने घेर छे, अने आपणे तो अधुरा छिये केमके सिद्ध थया नथी साधक अवस्था छे माटे आपणने तो व्यवहारनय प्रधान छे केमके जे अनुभव करवो ते गुण गुणीना भेद करवा पडे, गुण पर्यायनो विचार करवो पडे, ते सर्वे व्यवहार नये थाय छे. माटे अधुराने व्यवहार नये थाय छे. माटे अधुराने व्यवहार नय बलवान् छे अंते तो ए व्यवहारनय मिथ्या छे हवे जे अनुभव करवो ते पर्यायने विषे करवानो छे हवे त पर्याय आत्माने विषे केटलाक सामान्य थकी छे केटलाक विशेष थकी छे ते किंचित् नाम थकी जणावुं छुं मूल सामान्य स्वभावना ६ छ भेद अस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सत्यत्व ५ अगुरु लघुत्व ६ ए छये मूल सामान्य स्वभाव कह्या ते मध्ये अस्ति सामान्य स्वभावना उत्तर सामान्य स्वभाव

१३ तेर कह्या छे तेनां नाम अस्ति स्वभाव १ नास्ति स्वभाव २ नित्य स्वभाव ३ अनित्य स्वभाव ४ एक स्वभाव ५ अनेक स्वभाव ६ भेद स्वभाव ७ अभेद स्वभाव ८ भव्य स्वभाव ९ अभव्य स्वभाव १० वक्तव्य स्वभाव ११ अवक्तव्य स्वभाव १२ परम स्वभाव १३ इति उत्तर सामान्य स्वभाव. हवे विशेष स्वभाव कहुं छूं विशेष कहेतां कोइ द्रव्यमां लाधे ने कोइ द्रव्यमां न लाधे तेना २५ भेद छे परिणामिकता १ कर्तृता २ ज्ञायकता ३ ग्राहकता ४ भोक्तृता ५ रक्षणता ६ व्याप्य व्यापकता ७ आधाराधेयता ८ जन्य जनकता ९ अगुरु लघुता १० विभुत कारणता ११ कारकता १२ प्रभुता १३ भावुकता १४ अभावुकता १५ स्वकार्यता १६ सप्रदेशता १७ गति स्वभावता १८ स्थिति स्वभावता १९ अवगाहक स्वभावता २० अखंडता २१ अचलता २२ असंगता २३ अक्रियता २४ सक्रियता २५ ए पचीसे विशेष स्वभाव जाणवां हवे सामान्य पर्याय ते ६ छछे ते द्रव्य पर्याय जाणवा ते द्रव्य व्यंजन पर्याय १ गुण पर्याय २ गुण व्यंजन पर्याय ३ स्वभाव पर्याय ४ अगुरु लघु पर्याय ५ विभाव पर्याय ६ ए छ सामान्य पर्याय कहिये तथा अगियार सामान्य स्वभाव कह्या छे तथा छ विशेष स्वभाव कह्या छे इत्यादिक द्रव्य पर्याय समजवा वास्ते अनेक भेद कह्या छे ते अनुभवमां विचार करतां सर्वे कृत्रिम अनुभव थाय पण स्वभाविक अनुभव एम नथी अने कृत्रिमानुभवनी हद चोथा गुण ठाणाथी मांडीने सातमा गुण ठाणा सुधीनी छे अने स्वभाविक अनुभव छे. ते आठमाथी ते दशमा गुणठाणा सुधीनी छे. ते आठमा गुणठाणाथी हेठलवालाने किंचित् भाग छे ते पण चोथाथी ते सातमा सुधीने तरतमे योग जाणवा एटले ए शुद्ध कृत्रिम अनुभव कह्यो.

हवे शुद्ध अकृत्रिम अनुभव ते स्वभाविक कहिये ते अनुभवनी

वार्ता कहेवाने तो हुं समर्थ नाथि परंतु किंचित् भाग द्रष्टांते समजवा मारी शक्ति प्रमाणे कहु छुं ते स्वभाविक अनुभव तो क्यारे प्रगटे ज्यारे विभाविक अनुभवनो नाश थाय त्यारे स्वभाविक अनुभव प्रगटे छे. द्रष्टांते जेम कोइ भाजनमां दूर्गंध वस्तु भरीने भाजनमां दुर्गंधनी वासना बेठी छे ते दुर्गंधनी वासना गया विना ए भाजनने सुगंध वासीये तो सुगंध वासीत थाय नहि माटे अहियां आत्माने विभावनो संग न छुटे त्यां सुधी स्वभाविक अनुभव केम करीने थाय? अहियां कोइ कहेशे के विभावनो नाश थशे त्यारे तो ए वीतराग थशे त्यारे पछी एने शेनो अनुभव करवो छे तेनो उत्तर जेने ज्ञानावर्णीनो क्षयोपशम थयो छे, अने ज्ञानभाव प्रगट्यो छे ते पुरुषने जेटलो जेटलो विभावना अंशनो नाश थाय तेटलो तेटलो स्वभाविक अनुभव प्रगटे ने संपूर्ण विभावनो नाश थाय तो जाणवा रूप अनुभव प्रगटे करवारूप अनुभव त्यां नहि. हवे जे अंशे प्रगटे तेनो विवरो करीने देखाडु छुं ते प्रथम द्रष्टांत कहु छुं ते समज!!! जो के जेम सुरज छे ते संपूर्णवादलाये करीने घेरी लीधो अने एना ताप तडकानो नाश थइ गयो, अने अजवालुं पण ओछु थइ गयुं अंधकार विशेषे वाप्यो छे ते मध्येथी एक वादलु खसे तेटलो उज्जासवधे अने अंधकारनो नाश थाय तेम अहियां जीवद्रव्यने अनादिकालना मिथ्यात्वथी अज्ञानरूप वादलां फरी वल्यां हतां ते मध्येथी कोइक जीवकाल लब्धि पामी सद्गुरूना समागमथी कोइने स्वस्वभावथी त्रण करण करीने समकितरूप ऋद्धि पाम्यो, त्यां मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधी चोकडीनोक्षयोपशमादि थयो त्यारे ए प्रकृतियोना प्रदेश हता. ते आत्माना प्रदेशथकी अलगाटल्या त्यारे आत्माना प्रदेशनो उज्जास जेटलो खूलो थयो एटली स्वभाविक रमणना थाय एटले जे अंशेखुल्यो

एटलो स्वाभाविक अनुभव ज्ञाननो थयो एम सातमा गुण ठाणा सुधी लइये शामाटे जे अहियां सुधी मोहनुं जोर घणुं छे त्यांसुधी अंशे विभावनो नाश थायज अने श्रेणी गते मोहनुं जोर नरम पडी गयुं, त्यारे विभाव रह्यो ते यावत् दशमाने अंते विभावनोने मोहनो सर्वेनो नाश थाय छे त्यां शुद्ध स्वभाविक अनुभव करवामां आवे छे. पण अहियां कृत्रिम नथी जे आ अथवा द्रव्य गुण पर्याय इत्यादिकनो विचार आहियां करवो नथी, अने स्वभाविक गुण गुणीभेद अथवा गुण पर्यायभेद अथवा संक्रमण ए पोताने स्वभावेज विचारमां चाल्यो आवे पण पोते जाणे नहि, के हुं आ विचारमां छुं एवो तद्रूप एका कारणे पणे मणमेलो ए जे अनुभव तेने स्वभाविक अनुभव कहिये तेना बे प्रकार छे एक समल १ बिजोविमल २ एटले जे क्षपक श्रेणीवालानो जे अनुभव छे ते निर्मल छे. अने उपशम श्रेणीवालानो जे अनुभव छे ते समल छे शामाटे जे उपशम श्रेणीवाला ए सर्वे मोहनी कर्मनी प्रकृतियोने उपशमावता कहेतां दाबतो जाय छे, ते धणी अगीयारमे गुण ठाणे जाय. ए उपशम वीतराग कहेवाय, पण आत्मप्रदेशथी मोहनी कर्मनो नाश थयो नहि अने पोतानी विभावदशा जे अशुद्ध मणती तेनो पण नाश थयो नहि, सत्ताये ए सर्वे रह्यां छे माटे जे स्थानक विषे ए धणीनो काल आवी पहोंच्यो तो ए चोथे गुणठाणे जाय एटले अगियारमानो उठयो चोथे गुणठाणे आवे त्यारे मोहनी कर्मनी प्रकृति ७ सात प्रकृति विना बधी प्राकृतियोनो उदय थइ जाय पण एकावतारी छे सर्वार्थ सिद्ध जाय अने जेनो ए गुणठाणेकाल नजिक नहि होय तो प्रकृति उदयवश थइने पाछो पडे तो ते जीव यावत् निगोद सुधी पण जाय. कोइक जीवतद्भवे मोक्षे पण जाय. कोइक जीव उपशम श्रेणी करे तो एक भवमां बे वार करे अने आखी भवस्थितिमां

पांचवार करे माटे ए स्वाभाविक अनुभव ए उपशम श्रेणीवालानो समल केहतां मल सहित छे.

हवे जेविमल स्वभाविक अनुभव छे ते तो मोहनीय कर्मनो नाश करतो चाल्यो आवे छे. ते दशमाने अंते संपूर्ण मोहनीय कर्मनो नाश करे अहीयां अशुद्ध परिणतीनो तथा विभावनो पण नाश थयो ते वारे शुद्ध स्वभाव जेवो सत्ताये हतो एवोज जाणपणा रूप अनुभव थाय एटले ए बारमे गुणठाणे क्षायिक भावनो वीतराग थयो अहीयां गुण गुणी भेद हतो ते गयोने एक भाव थइने प्रणम्यो अहिं शुद्ध निश्चय नय जाणवा रूप अनुभव थयो एटले ए अनुभव छे तेमनो वांछित दातार छे. अने हवे जन्म मरण करवो पडे नही माटे एवा एवा अनुभवनी खप करो हे भव्य जीवो शा माटे जे ए शुद्ध स्वभाव रूपी दरवाजामां पेछतो ए एक क्षणनी अंदर केवल ज्ञान पामीने मोक्षे जाय कोइकने आयुष वधारे होय तो आयुष भोगवीने मोक्षे जाय पण फरीथी तो हवे कोइने जन्ममरण करवुं नथी, ए सदाये सिद्धमां बीराजमान अनंतु सुख भोगवतां विचरशे ते माटे ए भव्य जीवो शुद्ध स्वभावनो अनुभव करो एज हमारो हेतु उपदेश छे.

दुहा.

शुद्ध स्वभाव ए वर्णव्यो शुद्ध अनुभव जोग ।
अशुद्ध स्वभाव दूर टले, टल्यो मोहनी रोग ॥ १ ॥
शुद्ध अनुभव प्रत्यक्ष छे, शुद्ध ज्ञान ए जाणो ॥
शुद्ध स्वरूपनु देखवुं, निश्चय चित्तज आणो ॥ २ ॥
ए अनुभव सुज चीत्तवस्यो, जेम मधुकरने कमल ॥
एथी सवी सुख पामीये, होय आतमनिरमल ॥ ३ ॥

निरधननै मनेदेवऋध जेम वल्लभ लागे ।
तेम ज्ञानीने अनुभव शुद्ध चित्त लागे ॥ ४ ॥
ए भावमें वर्णव्यो, स्वपर हितकारी ।
ताराचंद्रनी जाचना ते में दीलधारी ॥ ५ ॥
एह ग्रंथ रचना करी बहु न्याय साथे ।
हेतु जुक्ती पणे छे घणी नीज ऋद्धि हाथे ॥ ६ ॥
ज्ञानीकुं ए ग्रंथ छे अनुभवीकुं रसलीन ।
ग्रंथ हाथ शुं छोडे नहीं अमरीत घट घट पीन॥ ७॥
अज्ञानी समजे नही एह शब्द विचार ।
तेमां मुज कोइ दोप नही क्षय उपसम विचार।८।
संवत १९३३ में प्रथम जेष्ट कृष्ण पक्ष ।
चतुर्थी गुरुवार ए पूरण थयो दक्ष॥ ९ ॥
हुकम मुनीनो मानजो बहू श्रुत निस्पृही जोइ ।
ते पासे ग्रंथ देखजो अर्थ पामशो सोइ ॥ १० ॥
एह अर्थ पाम्या थकी पामशो अनुभवसार ।
मुनी हूकम ते प्राप्ति शीव वधु वरधार ॥ ११ ॥
सीव वधुसें सुख भोगवो जो करो अनुभव एह ।
हूकम मुनीनो माथे लइ पामोऋद्धि तेह ।। १२ ॥
मुनी हूकम अनुभव ग्रहे सुधानंद स्वरूप ।
शुद्ध थीरता प्रगटसे पामेशीव स्वरूप ॥ १३ ॥
॥ इति अनुभव प्रकाश ग्रंथ संपूर्णः ॥

श्री सम्यकद्वार.

श्री गुरुभ्यो नमः

॥ दुहा ॥

श्री संखेश्वर साहेबा , प्रणमि पास जिणंद;
तेह तणे पसायथी, करुं शुद्ध प्रबंध ॥ १ ॥
सद्गुरुने चरण नमी, समरीसरस्वति सार;
ग्रंथ रचुं व्यवहारमां, नामे सम्यकद्वार ॥ २ ॥
भव्य जीवना हित भणी, करुं ग्रंथ रसाल;
त्रण तत्व ओलखावशुं, संक्षेपे सुखसार ॥ ३ ॥
मूढ मति समझे नहि, तेमां नहि कोय दोष;
कुगुरु आदिक भरमावियो, करे कर्मको पोष ॥४॥
सुलभ बोधि जीव हशे, ते सद्दहशे एह;
तेह सुखलेशे तुरत, टालि कर्मने तेह ॥ ५ ॥
संप्रति जेहनुं फल छे, देव लोक नर लोक धार;
अनुक्रमे फल ते लहे, परंपर मोक्ष सार ॥ ६ ॥
करुं बालाबोध मय, सोरठ भाषा मोझार;
बाल जीवन कारणे, समझतां नाहिवार ॥ ७ ॥

अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे अहीं समकितने वास्ते त्रण तत्व 'ओलखाव छे' परंतु व्यवहारनी ओलखाण विना समकितनी मालम पडे नहिं ते वास्ते प्रथम व्यवहारनी ओलखाण करावे छे ते श्री जिनमार्गने विषे तो स्याद्वाद मत छे अहीं तो व्यवहारनी पुष्टि थाय छे, त्यारे वादिए तर्क कर्यो जे श्री जिनराजनो मार्ग तो एकांत छे नहि, तमे तो एकांत व्यवहारने पोष्यो छे श्री सुयगडांग मधे तो कह्युं छे जे ॥

" एकांते होइ मिच्छाओ " इतिवचनात् ॥

तेनुं केम तेनो उत्तर जे, तें प्रश्न कर्युं ते खरुं पण निश्चे तो परिणामनी धाराए छे. बाह्य थकि तो व्यवहार जोवामां आवे छे श्री महावीर स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं त्यारे तो एकला हता त्यार पछी इंद्रादिक सुर मलीने समवसरणादिकनी रचना करी त्यारे इंद्रभूति प्रमुखे जाण्युं जे कोइक इंद्रजालीयो आव्यो छे, एवुं जाणीने वाद करवा गया. भगवाने एना संदेह काढया, एणे चारित्र लीधुं, ने सर्व व्यवहार हतो तो बनी आव्युं. एकला होततो कोण जाणत तथा वली जे साधु तथा श्रावकनुं प्रवर्त्तन सर्व व्यवहारमां दिसे छे, केमके जे साधु मानोपेत वस्त्र पात्र राखे छे अने शुद्ध परंपरा गत आचारे वर्त्ते छे तेहने साधु करीने वांदे तो समकित निर्मळ थाय जे ते साधु करी जाणिने साधुने व्यवहारे वांदे छे, जिम श्री प्रसन्नचंद राजऋषि का उसग्ग करीने दुर्ध्यान ध्यातां थकां उभा रह्या हता ते वखते श्रेणिक राजाए तेमने साधुने व्यवहारे वांद्या छे, साधु करीने वांद्या पण मिथ्यात्व कह्युं नथी, ते वास्ते जिन सासनने विषे चतुर्विध संघनी भक्ति

तथा बहु मान करवुं ते व्यवहारने जोइने करवुं. जो व्यवहारने माने नहि तो तीर्थनो उच्छेद थाय ॥

यदुक्तं ॥ श्री आवश्यक निर्युक्ति चौमत्थ समयंचज ॥ व्यवहारनयाणुंसारणिँ सवा ॥ तंजहा ॥ सामायरंजो ॥ सूझई सवो वीसुध मणों ॥ १ ॥ संविवहारो वि बलि ॥ जिन शुध्दं पी गीहियं सुवविहिए ॥ कोवई नसवाणूं ॥ वंदइय कयाइंछउमत्छं ॥ २ ॥ निथ व्यवहारनो ॥ वणिय सिह सासणं ॥ जीणीदाणंए ॥ गयर परीवाओ ॥ मीथ संकाद उजेयया ॥३॥ जई जीणमईयं पवज हंतो ॥ माववहार नयमयं सुयह ॥ विवहार परीवाए ॥ तित्छूछेओजउवसं ॥ ४ ॥

हवे चार गाथानो अर्थ कहीए छीये ॥ छउमथ समयंके० छद्मस्थनो काल ॥ के० पुनः जाके० ज्यां सुधी छे एटले ज्यांसुधी छद्मस्थपणु छे केवलज्ञान उपन्युं नथि त्यां सुधी । व्यवहारनयाणुंसारणी सव्वावाके० ॥ सरवे क्रिया जे व्यवहारनय अनुसारणी कही छे श्री तीर्थंकर देवे. ततह समायरंतोके० ॥ ते आचरतो थको अंगीकार करतो थको जिव सिझिहके० ॥ सिद्धि थाय कर्म रहित थाय सव्वोत्रिके० ॥ सर्व भव्य जीव विसुधमणोके० ॥ जे भव्य जीव कपटपणे रहित व्यवहार नयनी क्रिया करतो थको कर्म रहित थाय ए प्रथम गाथानो अर्थ ॥ १ ॥ एगाथामां विसुधमणो एपदे करीने निश्चय पण कह्यो, हवे बीजी गाथामां निश्चय थकी व्यवहार वलिष्ट छे ते देखाडे छे ॥ संव्यवहारो वीव-

लिके० ।। सम्यक्त्व व्यवहार ते जे जीनोक्तं, शुद्ध व्यवहार छे ते ब- लिष्ट छे ते शामाटे जे सम सुधंग्रीगाहिअंसूपवहिए ज्यंके० ।। एत ए शुद्ध आधा कर्मादि दोष दुष्ट आहाराभिदक गहियंके० ।। पहवो सुरा वहीयंके० ॥ स्तुतंनि विधि करीने एटले छद्मस्थ पोताना जाणपणाथी शुद्धमांन जाणीने वोहोरे अने निश्चे थकी तो केवल आधाकर्मादिक सहित आहार छे तो पण कांई नसपणोके० ॥ ने कोई यति प्रमाण करे पण निषेध न करे. सर्वज्ञयके० ॥ केवलज्ञानी पण आधाकर्मादिक आहार छद्मस्थे सुद्धमान जाणीने आण्यो होय ते आहार केवली पण शुंन करे ? वंदिई कदाच चउमच्छंके० ।। कदाचित् कोईदिने चउमत्छं वंदियके० ।। छद्मस्थ प्रत्ये केवली वांदे एटले शिष्यने केवलज्ञान उपन्युं छे. अने गुरु तो छद्मस्थ छे तो पण जिहां सुधी केवलज्ञान उमन्युं जाण्युं नथी त्यांसुधी शिष्यनो व्यवहार वंदणादिकनो होय ते जालवे. ए गाथा मांहे निश्चय थकी व्यवहारनय बलवान देखाड्यो ए वीजी गाथानो अर्थ कह्यो ।।२।। हवे त्रीजी गाथामां निश्चयनय व्यवहारनय सहित जिनसासन तो हि पण एकनय त्याग करे तो मिथ्यात्व थाय ते कहे छे. नथी व्यवहार न उवांणियमेहसासण जिणंदाणंके० ।। निश्चय व्यवहार सहित छे इहके० ।। इह लोकने विषे जिणंदाणंके० ।। जिनेंद्रनुं सा- सन छे ते निश्चय व्यवहार सहित छे ।। एगयरपरीइओके० ।। एकत्वनयनो परीत्याग करे एटले निश्चयनय तथा व्यवहारनय ए वे मधेथी एकनय न माने ते तो, मीत्छंमांकादियोजे ये के० । ते- हने मिथ्यात्व थाय, शंकादिक उपजे ते पण इहां मिथ्यात्वज छे ए त्रीजी गाथानो अर्थ कह्यो ।। ३ ।। हवे चोथी गाथानो अर्थ कहीये छीयें. जो व्यवहारनयने तजे तो तीर्थनो उच्छेद थाय ।। जीणंइ जणमयं पवजहके० । जो जिनमतने विषे पवजयके० । प्रव्रज्या अं-

गीकारकरवी व्यवहारनयमयं मुइहिके० तो व्यवहारनयना मतने मु कशो नहीं. व्यवहार परिचाओके० जो व्यवहारनयनो परीत्याग करशो अने मानशो नहि तो तिथ्थुत्छेओज उवसंके० ॥ तिर्थनो उच्छेद थाय। अवसके० । ते निश्चय करीने जाणजो. ए चोथी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ ४ ॥ एवी रीते व्यवहार छे ते वलीष्ट छे, वास्ते व्यवहारने विशेप करीने देखाडयो छे, अने निश्चय छे ते तो केवली गम्य छे, व्यवहार छे ते प्रत्यक्ष दीठामां आवे छे, वास्ते व्यवहारनो उपदेश विशेष देतां कोई दूपण नहि। इति उत्तर पूर्णः ॥ इति श्री सम्यकूद्वार ग्रंथो मुनि श्री हुकमचंदजी विरचिते प्रथमो ध्याय समाप्तः

हवे व्यवहार जे धणी आदरे ते धणी प्रथम मिथ्यात्वनो त्याग करे ॥ शामाटे जे मिथ्यात्व थकी समकित होय नहि, मिथ्यात्व गये समकित थाय. हवे इहां मिथ्यात्वनुं स्वरूप संक्षेप थकी देखाडे छे ॥ मिथ्यात्वना पांच भेद छे ॥

यदुक्तं ॥ अभिगहीय ॥ १ ॥ मणाभिगहीया ॥ २ ॥ अभीनिवेसिय ॥ ३ ॥ संसय ॥ ४ ॥ मणाभोग ॥५॥ पण मित्छ बार ॥ १२ ॥ अविराइ ॥ मण १ ॥ करण ॥ ५ ॥ निय मूछजीयवहो ॥ ६ ॥ ए गाथा ॥ ५१ ॥ चोथा कर्म ग्रंथनी, तेहनो अर्थ अभिगहि अके० ॥ अभिग्रहित मिथ्यात्व ॥ १ ॥ जे जीव, कुगुरु, कुदेव कुधर्मने सत्य करीने ग्रह्या ते मूके नहि, ते लोह वाणीयानो दृष्टांत. ए अभिग्रहीत मिथ्यात्वनो पेहेलो भेद ॥ १ ॥ अनभिग्रहीयके० ॥ अनभिग्रहीत मिथ्यात्व जे करे, सर्वे देवा सर्वे गुरु सत्य छे, तथा खरा खोटा देवगुरुनी खबर नथी ते अनभिग्रहित मिथ्यात्व ए वीजो भेद मिथ्यात्वनो ॥ २ ॥ अभिनिवेसियके ० ॥ अभिनिवेसीक

मिथ्यात्व कहिये अभिनिवेसीके ० ॥ खोटो हठ कदाग्रह कहिये, ते जीव एकवार अजाणतां जूटुं बोले, पछी तेहने थापवाने काजे घणा उपाय करे, पछी जाणीने खोटी युक्तिए करीने जूटुं बोले, ते अभिनिवेसि मिथ्यात्व कहिए, तथा पूर्वे श्री महावीर स्वामीना शासनने विषे जमाली प्रमुख निन्हवने आभिनिवेस मिथ्यात्व कहिए, प्रथम तो अजाणतां जूटुं बोल्या, पछी तो जाणीने कदाग्रहने वसे करीने पोतानुं वचन राखवाने काजे जुटुं बोल्या तेने अभिनिवसी मिथ्यात्व कहिए इहां आ चोविसी मध्ये हूंडाअवसर्पिणीने जोरे करीने दस तो अछेरां थयां छे. वर्त्तमान घणा जीव वहूल कर्मी कृष्ण पक्षीदिसे छे. शुक्ल पक्षी लघुकर्मी जीव थोडा दिसे छे, जे एक पुदूगल परावर्त्तन मांहे मोक्ष जइ शके, ते शुक्लपक्षी जीव कहिए, जे कृष्ण पक्षी जीव होय तेने मत कदाग्रह घणो होय, तथा शुक्लपक्षी जीव होय ते मध्ये पण भारेकर्मी जीव होय तेहने मत कदाग्रह घणो होय, हठवाद घणो होय, जे श्री महावीर स्वामिना शासान मध्ये सात निन्हव थया ते श्री ठाणांग सूत्रना ७ मे ठांणे कीधुं छे, ते आलावो लखिए छीए

॥ समण भगवउ महावीर सतथमी सत पवयण ननंपनंता तंजहा जहावहूरीय ॥ १ ॥ जीव पयसिया ॥ २ ॥ अवतव ॥ ३ ॥ समछइय ॥ ४ ॥ दोकरीया ॥ ५ ॥ तेरासीया ॥६॥ अवठियाए ॥ ७॥ एएसणं सत्तनंपवयण निहूगाणं सत्तधम्या अरीयाहोत्छ तंजहा जंमालीजमाल ॥ १ ॥ सीत गूतो असाढ ॥ ३ ॥ आसीमिति ॥ ४ ॥ गंगेय ॥ ५ ॥

छलूण ॥ ६ ६ गुठा माहेले ॥ ७ ॥ एएसिणं सत्तन पवयणनीनिगाणं सत उमत्ति नगरे होथा ॥ सावथि ॥ १ ॥ उसभरं ॥ २ ॥ सियविपा ॥ ३ ॥ महिल ॥ ४ ॥ उलगातिरं ॥ ५ ॥ पुरमंसरंजी ॥ ६ ॥ दसपूरनिनगा उपति नगराइ ॥

हवे एहनो अर्थ लखीए छीये. श्री महावीर स्वामिने केवलज्ञान उपन्या पछी चउद वरस थया पछी बहु मत माति जमाली नामा निन्हव थयो ॥ वहूरतके० ॥ वहू समेयकार्य पूरुं थाय, वहूके ० ॥ घणा समये करीने कार्य पूरुं थाय छे ते केम तं जहा, कूंभार माटी लावीने पाणीमां भीजवीने पछी घडो करे, ते घडो ज्यारे पूरो घडे, त्यारे घडो कहीए, एटले घणे समये कार्य पुरुं थाय, तेहने विषे ॥ रतके ० ॥ आ सकवहूसूसमीये ॥ सूरत आसक्त ॥ इति वहूरत अन समय ॥ पदलो मात्तम व्यध प- द हलोप समास ॥ एवे नामे काढयो, जमालीनामा निन्हव थयो. श्री महावीर स्वामीजी तो करे मांणेकरे जे कारज करवा मांडयुं ते कारज करयुं नहि ॥ ए वचन उथापीने पोतानो मत प्ररूपवा ला- ग्यो. श्री सावथी नगरीमां थयो, इति प्रथम निन्हव थयो ॥ १ ॥ बीजो निन्हव जीव, परदेशिक मनिके० ॥ चरन प्रदेशी जीवनी प्ररुपणानो करनारो तिष्य गुप्तनामाः ॥ श्री भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने केवलज्ञान उपन्या पछी सोले वरसे थयो नि- न्हव ॥ २ ॥ श्री महावीर स्वामी छतां उत्सूत्रनी प्ररुपणा क- रतो हवो श्री महावीर स्वामि तो असंख्यात प्रदेश, लोकाकास प्र- देश समास संपुर्णने जीव कहे छे, ते तो छेल्ला प्रदेशमां जीव माने छे, इति द्वितीय निन्हव ॥ २ ॥ हवे त्रीजो निन्हव असाढ भूति

आचार्य तेमनो सिष्य श्री अव्यक्त नामा मत प्ररुपक थयो, ते केम? श्री महावीर स्वामी निर्वाण थया पछी वर्सेने चौद वरसे थयो ॥ श्री आचार्य पासे घणा शिष्य जोग वहे छे, श्री सिद्धांतना जोग बे प्रकारे छे, एक अगाढ, बीजो अनागाढ, हवे ते अगाढ जोग होय ते मध्येथी कारणे नीकले तो, ते जोग फरी वेहवो पडे ते जोग अगाढ कहिए, ते जोग मांहेथी कारणे नीकले तो जेटलो अधुरो होय तेटलो जोग वहीने पूर्ण करे ते जोगने अनागाढ कहिए. ॥ हवे ते शिष्ये अगाढ जोग वेहवा मांडयो तेज दिवसे कोइक कर्मने उदये करीने आचार्य काल करीने सुधर्म देव लोके नलीनिगुल्म विमाने उपन्या ॥ पछे अवधिज्ञाने करीने जोयुं त्यारे एटला मध्ये कोइ जोग पुरो करावे एहवो आचार्य दीठो नहि त्यारे साधुनी अनुकंपाए करीने तेज पोताना शरीर मध्ये आवीने देवतानी शक्तिए करीने कोइ जाणे नहि तेवी रीते तेज रात्रे उठीने वृत्तिकाल गृहण लेइने जोग क्रिया उद्देश समुद्देस अनुज्ञा नीत्य करावे, अने साधुना व्यवहार आचारने प्रवर्ते छे.

॥ गाथा ॥

आलिय विहार समि मूये ॥ हूतोगूतोत्रियो समणद्धमे ॥ पढम पई मणूंरपे विरीया मोपाइ वायाओ ॥ १ ॥

इत्यादिक व्यवहारे प्रवर्त्तता थका शिष्यने जोग संपूर्ण कराव्यो पछी ते देवता साधुने खमावीने ठेकाणे गयो, ते वारे तेज शिष्यने शंका पडी जे, वली एम कोइके काल कर्यो होय अने बीजो कोइ देवता आवीने तेमना शरीरमां पेठो होय तो कोण जाणे

जे साधु छे के देवता छे ? एवुं विचारी कोइ कोइने वांदे. नहि, कोइने जो वांदिए तो आपणने दोपण लागे. ते जो देवता होय तो अव्रति अपच्चरकाणी होय, तेने साधु करी वांदिए तो मिथ्यात्व थाय, अने मृषावाद पण लागे एटला वास्ते कोइ साधु मांहोमांहि वांदे नहि. श्री आषाढाचार्यना शिष्य अव्यक्त नामा मतनी प्ररूपणा करता थका विचरे. हवे ते काले गीतार्थ बहु श्रुत महापुरुष हता, तेमणे घणी चर्चा करी जे ए कांइ देवता होय अने साधुनो वेष धरी ते साधुने आचारे मूलगुणपंच महाव्रतना ७ आचार पालतो होय तेने साधु करीने वांदे तो मिथ्यात्व न थाय अने मृषावाद पण न लागे. जिन सासनने विषे तो वाह्यथी व्यवहार बलिष्ट छे इत्यादि बीजी पण घणीक युक्तिए करी समजाव्यो पण समजे नहि त्यारे ते आषाढाचार्यना शिष्यने संघ वहार कर्या, तोपण कदाग्रह मुके नहि, एवा अवसरे श्रीराजगृहि नगरीमांहे श्री बलभद्र राजा राज्य करे छे ते सूर्यवंशिने जैनधर्मी छे तिहां ते शिष्य आव्या त्यारे तेने प्रति बोधवाने काजे राजाए पकडी मंगाव्या, तेने मारवा मांड्या, त्यारे ते साधु कहेवा लाग्या हे राजन ! तुं श्रावक थइने अमने केम मारे छे ? त्यारे कहेवा लाग्या जे कोण जाणे जे तमे साधु छो के चोर छो ! के देवता छो अमे पण श्रावक छीए के देवता छीए ते कोण जाणे त्यारे ते प्रतिबोध पाम्या. पछी स्थविर साधुने पगे लाग्या. पोतानो मत कदाग्रह मूक्यो, आलोइने पछे शुद्ध थया ए तृतीय अव्यक्तनामा श्री आषाढा चार्यना शिष्यनो अधिकार पूर्णम् ॥ इति तृतीय निन्हव ॥ ३ ॥

हवे चोथा निन्हवनो अधिकार कहे छे, ते श्री मथुरा नगरीने विषे थयो, श्रीमन् महावीर स्वामिना निर्वाण पछी वर्सने वीस वर्षे श्री आर्यमहागीरीना शिष्य कोडन नामा तेना शिष्य अश्वमित्र-

नामा एकज विग्रातुं परवाद दसमुं पूर्व निपूणनामा वस्तु भणतां थकां एवो आलावो आव्यो.

" जे पडि पून्य समयनो राजासवे " ॥ २ ॥ विच्छि जस्सात एवं जाववामाणां अति ॥ एवं अतिताए ॥ समय सुविच्चव्यं ॥

एहनो अर्थः ॥ पडि पुन्यके० ॥ वर्त्तमानकाल होय एटले वर्त्तमानकाल समयना जे नारकी छे ते बीजे समे ॥ वुछेदके० ॥ विनाश थाय छे एटले प्रथम समये वसष्ट जे नारकी हता, तेहिज नारकी बीजा समयने विषे बीजे समे विसिष्ट थाय तेने ते समजण पडी नहीं मिथ्यात्वना उदय थकी गुरु आदीके घणी परे समजाव्यो तो ए समजे नहि, त्यारे संघ बाहार काढयो तेना मतमां, जे जीव पाप करे छे ते नाश पामे छे जे जीव पून्य करे छे ते पण नाश पामे छे, समये समये ते अश्वमित्र विहार करतो श्री राजग्रही नगरीए आव्यो. तिहांपडरस्यात्विद्वान सांतक छे. ते दरबारनो चाकर छे, मांडवीनो दाणी छे, ते एहने प्रतिबोधवाने काजे पकडीने मारवा लाग्यो, त्यारे तेने कहेवा लाग्यो जे हुं साधु छुं, तमो श्रावक छो, तो मने केम मारो छो ? त्यारे दाणी बोल्यो जे साधु हता ते तो नाश पाम्या हवे तमने कोण जाणे छे जे साधु छो के चोर छो ? त्यारे ते प्रतिबोध पाम्यो, गुरुने आविने पगे लाग्यो, खमाविने शुद्ध थयो, ए चोथो निन्हव कह्यो ॥ ४ ॥ हवे पांचमो निन्हव कहिये छीए. द्विक्रिया वादि गंगनामा आचार्य श्री महाविर स्वामीना निर्वाणथकी बसेंने अठ्यावसि वरसे श्री आचार्य महागिरीना शिष्य श्री धनुपूरपत्य तेहना शिष्य गंगनामा ' एकदा ' उष्ट नादि तीरे पुर्वतटे श्री

धनगुप्त आचार्य चोमासुं रह्या छे, पश्चिम तटने विषे गंगनामा शिष्य चोमासुं रह्या छे, तिहां थकी शरद ऋतुये श्री गुरुने वांदवा आवतां मार्गने विषे नदी उतरतां माथे टाल हती ते उपर तडको घणो लाग्यो, अने पगे नदीनुं पाणी टाढुं घणुं लाग्युं, तेमां मिथ्यात्वनो उदय थयो त्यारे मन मांहे चिंतववा लाग्यो जे, एक समये श्री सिद्धांत मांहे बे क्रियानो उपयोग निषेध कह्यो छे ते खरुं छे, जे हुं साक्षात् एक काले बे क्रियानो उपयोग अनुभवुं छुं आ तो नष्टवेदना अनुभवुं छुं. पछी गुरु आगळ चेष्टा करी, त्यारे गुरु केहेवा लाग्या जे, एक समये एकज क्रियानो उपयोग होय, एक समये मुखेखातो होय, बोलतो होय, अने पगे हिंडतो होय, एटले क्रिया तो एक समे घणी करतो थको पण एकज क्रियानो उपयोग होय. समयनो काल सूक्ष्म छे, एम घणु कह्युं पण मान्युं नहिं, त्यारे गुरुये संघ वहार काढयो. पछी ते गंगाशिष्य श्री राजगृहि नगरीए आव्यो, तिहां मातंमस्तर प्रभावनानुं देहेरुं छे, तिहां मणिनाग नामे जक्षनुं देहरुं छे, ते पासे खोटि प्ररुपणा करतो देखीने ते जक्ष केहेवा लाग्यो, श्री वर्द्धमान स्वामीयें एक समे एकज क्रियानो उपयोग कह्यो छे तो हे पापीष्ट दुष्ट तुं एक समे बे क्रियानो उपयोग केम केहे छे. एवां घणांक कठण वचने करीने कह्युं, ते सांभलिने मनमां भय पामतो थको गुरु पासें आव्यो. मिथ्यात्व मूक्युं गुरुने खमाव्या, इति पांचमो निन्हव कह्यो ॥ ५ ॥ हवे छठ्ठा निन्हव 'त्रिरासिकनो' अधिकार कहे छे श्री वर्द्धमान स्वामीना निर्वाणथकी पांचसे ने चुमालीस वर्षे आनिजका नगरीने विषे वलश्री नामा राजा राज्य करे छे तिहां लोहपटसाल नामा परीव्राजक, लोहपट बांध्युं छे हस्तनें विषे, जंबु-वृक्षनुं डाळुं राखे छे, लोक पुछे त्यारे एम कहे जे मारा पेटमां

विद्या राहि तेणें करीनें पेट फाटे छे वास्ते लोहपट बांध्युं छे कोइ प्रतीवादी जंबूद्वीप मांहि दिठा नहिं ते जणाववाने काजे जंबू वृक्षनुं डाळुं छे ते लेइने फरुं छुं. तिहां ते काले श्रीगुप्ताचार्य वि-चरे छे तेहना शिष्य रोहगुप्त नामा ग्रामांतरे छे. तिहां थकी गु-रुने वांदवा आवतां वाटे राजा चर्चानें काजे पडहो वजडावे छे के कोइ पंडित होय ते ए परिव्राजकनी साथे चर्चा करे. तिहां रोहगुप्त शिष्ये झाल्यो, पछे गुरु पासे आव्यो. गुरुये कहुं जे ए सारुं कर्युं नाहि, आपणे वाद करवानुं शुं काम छे? भले हवे तो सारुं थाय तेम करो. पछी गुरुए ज्ञाने करीने जाण्युं जे तेनी पासे नकुलनी विद्या ॥ १ ॥ सर्पनी विद्या ॥ २ ॥ उंदरनी विद्या ॥ ३ ॥ मृगनी विद्या ॥ ४ ॥ सुयरनी विद्या ॥ ५ ॥ कागनी विद्या ॥ ६ ॥ पंखिनी विद्या ॥ ७ ॥ ए सात विद्या छे ए विद्याने घातनी करनारी बीजी सात विद्या गुरुए आपी. मोरविद्या ॥ १ ॥ नकुलनी विद्या ॥ २ ॥ बिलाडीनी विद्या ॥ ३ ॥ वाघनी विद्या ॥ ४ ॥ सिंहनी विद्या ॥ ५ ॥ घूडनी विद्या ॥ ६॥ बाजपंखीनी विद्या ॥ ७ ॥ ए सात विद्या गुरुए आपी ॥ वलीआठमो बीजा उपद्रव निवारवाने काजे पोतानो ओघो मंत्रीने गुरुए आप्यो. हवे जे रोहगुप्त हता ते गुरुने कहिने राजसभा मांहि आव्या. त्यारे पटसालक परिव्राजके जाण्युं जे ए जैनि छे एनी साथे जो संस्कृत भाषा बोलीशुं तो ते बोलशे नहि ते वास्ते जैनना घरनी वात ल-इने वाद करुं, जे उथापि सके नहि. हवे पटसाल बोल्यो जे संसार मधे बे पदार्थनी राशि छे. एक पून्य ॥ १ ॥ अथवा पाप ॥ २ ॥ रात्रि ॥ ३ ॥ दिवस ॥ ४ ॥ आकास ॥ ५ ॥ धरती ॥ ६ ॥ जीव ॥ १ ॥ अजीव ॥ २ ॥ इत्यादिक बबेनी राशि छे त्यारे रोहगुप्त बोल्यो जे संसार मध्ये राशि त्रणनी छे, काल त्रण छे,

अतीत ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान ॥ ३ ॥ स्वर्ग ॥ १ ॥ मृत्यु ॥ २ ॥ पाताल ॥ ३ ॥ जीव ॥ १ ॥ अजीव ॥ २ ॥ नो जीव ॥ ३ ॥ इत्यादि रासी त्रणनी छे, त्यारे पटसाल कहे नोजीव ते शुं कहीए? त्यारे रोहगुप्त कहे ॥ नोजीवके० ॥ गरोलीनी पूंछडी टुटी पड्या पछी हाले छे, एने जीव पण न कहिये तेम अजीव पण कहीए. ए नोजीव कहीए. पछे तेणे सात विद्या मुकी ते उपर तेणे पण सात विद्या मुकी. विद्याघातीने जीत्यो. पछे तेनी पासे एक पद्वीविद्या हती ते मुकीने विद्याने प्रसादे जयपताका करीने गाजतेवाजते श्रीगुरु पासे आव्या. सघली वात कही. गुरुए कह्युं, हे वत्स सारुं कर्युं जे वादने जीत्यो; पण जीव अजीवने नोजीव कह्यो ते उत्सूत्र भाष्युं, तेह जइने राजसभामां खमावो. पछी अहंकारने वशे आत्मामां अभिनिवेशि मिथ्यात्वने वसे करीने गुरुए कीधुं ते मान्युं नहि, पछी राजसभामां गुरु साथे वाद करतां हार्यो पण माने नहि, त्यारे गुरुए कुंतिआवडने हाटेथकी नोजीव मंगाव्यो पण आव्यो नहि. त्यारे गुरुए संघ बाहर काढयो. पछी तेणे वैशक्रमत प्ररूप्यो. इति त्रिराशिक नामा छट्टो निन्हव कह्यो. ॥ ६ ॥ हवे सातमो निहन्हव गोष्ठमालिनामा, तेनो अधिकार कहे छे. श्रीमहावीर स्वामिना निर्वाणथकी पांचसेंने चोरासी वर्षे श्रीमालव देशने विषे दशपूर कहेतां संप्रति मंदोसरने विषे थयो ॥ ते केम ॥ श्रीआर्यरक्षित आचार्य देश उणा दशपूरवधर श्रुतकेवलि जुगप्रधान छे, सोमदेव ब्राह्मणनो पुत्र, रुद्रसोमा मात जेहनि परमश्राविका हती. ते माता पुत्रप्रत्ये कहे हे पुत्र! माहरो जो पुत्र होय तो दृष्टिवाद पूर्व भणिने आवे तो हुं राजी थाउं. ए वचने करीने तेतली पुत्र आचार्य पासे दिक्षा लिधी. श्रीवयरस्वामि पासे देशेउणा दश पुर्व भण्या, ते श्रीआर्यरक्षितना च्यार शिष्य

मुख्य छे, एक दूरबालिकापुफामित्रजुगप्रधान बीजा आश्रावधयमा-नामासाधु, त्रिजा श्रीफाल्गुराक्षित, चोथा श्रीगोष्टपालि. ॥ ४ ॥ फाल्गुरक्षित श्रीआर्यराक्षितना लघुभाई छे, अने गोष्टमाली मामो छे, श्रीदूरबालिकापूफामित्रनामासाधु नव पूर्व सुधी भण्या. दसमु पूर्वभणे पण विसरी जाय, त्यारे श्रीआर्यराक्षिते जाण्युं हवे आज-थकी दिवसे दिवसे घटती घटती बुद्धि थशे, ते वास्ते श्रीआचारां-गादिक सिद्धांतना जे अनुजोगके० ॥ व्याख्यान टिका निर्युक्ति आदिक जे सिद्धांतथकी जूदी करीने पुस्तकपदे लखी, एटले जे टिकानिर्युक्ति आदि ते आचारंगादिकथकी वेहेली लख्यां छे. आ-चारंगादिक तो नवसेंने एंसि वर्षे लख्यां दिसे छे. जे नैगम ॥ १ ॥ संग्रह ॥ २ ॥ व्यवहार ॥ ३ ॥ ऋजुसूत्र ॥ ४ ॥ शब्द ॥ ५ ॥ समभीरुढ ॥ ६ ॥ एवंभूत ॥ ७ ॥ ए सातनुं व्याख्यान सूत्र मांहे विस्तारे हतुं ते सूत्र मांहे गोपव्युं, अने निर्युक्तियादिकने विषे विस्तारीने कीधां. ते साख त्रण प्रकारे कही छे. ते एक प्रणीत॥१॥ अति प्रणीता ॥ २ ॥ प्रणीता ॥३॥ प्रणीत ते जे निक्षेपा समजे नहि ते अगीतारथ ॥१॥ अति प्रणीत ते एकने सांभालिने एकांतद्वारे स्याद् वादने तुरत जांणे समजे नाहि, एम जाणे जे हुं समजणोछुं, तेने लोकमां दाधारंगो कहे छे तेने प्रणीत शिष्य कहीए ॥ १ ॥ हवे जे प्रणीता शिष्य ते, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवाद मार्ग सर्व समजे ॥ २ ॥ पण बुद्धिना थोडापणा माटे कलिकाले विस्तारीने व्याख्यान करी शके नहि, ते वास्ते सिद्धांत मांहे गोपव्या पछी आ-र्यरक्षित दूबलिकापूफामित्रेन योग्य उत्तम जुगप्रधान जाणीने आचार्य पदवीए थापीने स्वर्गे पधारया. पछे गोष्टमाली सांभली घणो खेद पाम्यो थको, श्री दसपूर नगरीने विषे श्री दूबलिका पूफामित्र थकी जूदे उपाश्रये आवीने उतरे, तिहां श्री वृधनामा

साधुनी पासे कर्मप्रवादनामा आठमुं पूर्व सांभल्युं छे, तेने विषे कह्युं छे जे, आत्माने विषे कर्म रह्यां छे जिम दूधमांहे पाणी नाखीए ते पाणीने दूध एक मेक थाय छे, वलि लोहने अग्नीमांहे तपावीए त्यारे लोढुं लालचोल मय थइ जाय छे, तेम आत्माने कर्म एकमेक परिणमे छे. तेने बदले गोष्ठमाली कहेवा लाग्यो जे आत्माने विषे कर्म छे ते कंचूकने न्याये रह्यां छे जिम पुरुष जामो पेहेरे तेवे आकारे कर्म रह्यां छे, ते वृद्ध साधुए कह्युं जे एहवुं सांभल्युं छे, वली प्रत्याख्यान प्रवाद नवमुं पूर्व सांभलतां थकां पच्चख्खाणनो अधिकार आव्यो, जे साधु दिक्षा ले त्यारे ॥

करेमिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चख्खामि॥ जाव जीवाए ॥ तिवीहं ॥ तीविहेण ॥ मुणेण ॥ वायाए ॥ काएणं ॥ न करेमि ॥ इति.

इहां जावजीव ॥ ए पद. केहवुं नहि ॥ ए पद केहतां ॥ साधुने दोष लागे छे ॥ जे जीवुं त्यां सुधी ॥ सावद्य जोगनुं पच्च ख्खाण साधुने छे ॥ मुवा पछी पच्चख्खाण मोकलुं ॥ त्यारे आसंसा केहतां ॥ वांछानो दोष लागे छे ॥ जे परभवे जइश॥त्यारे भोगवीश ते वास्ते जावजीव ए पदे केहवुं नहि. एवुं सांभलीने श्री वृद्ध साधु ए मान्युं नहि; पछी आवीने श्री दुवालिकाजिने कह्युं जे गोष्टमाली एवी प्ररूपणा करे छे, कर्म आश्री तथा पच्चख्खाण आश्री, ते सांभलीने दुवालिकापुफमित्रे कह्युं जे गोष्टमालि उत्सूत्रनी प्ररुपणा करे छे, ते खोटुं बोले छे, त्यारे संघने संदेह पड्यो, के श्री दुवलीकाचार्य कहे छे ए खरुं के गोष्टमालिक कहे छे ए खरुं छे; त्यारे संघे शासन देवीने स्मरीने श्रीसीमंधर

स्वामी पासे मोकली, ते देवीए त्यां जइने श्रीमंधर स्वामिने पूछ्युं, त्यारे श्रीमंधर स्वामीए कहयुं जे ए गोष्टमाहील सातमो निन्हव छे ते उत्सूत्र भांखे छे, श्रीदूबलिकापूफमित्र तो जुग प्रधान छे सत्यवादी छे, ए वचन सांभलिने शासन देवीए इहां आवीने कहयुं, पण भारेकर्मी जीव हता तेथी कह्युं मान्युं नहि, जे ए देवी खोटुं बोले छे, श्रीमंधर स्वामी पासे जइ शके नहि. अबंधक मतप्ररूपक गोष्टमाली सातमो नीन्हव समाप्त ॥ ७ ॥ ए सात निन्हनव कह्या. ते मध्ये बीजो निन्हव तीष्यगुप्तनामा चरम प्रदेशे जीव मानतो ॥ १ ॥ त्रीजो निन्हव आषाढाचार्यनो शीष्य साधू छे के देवता छे ए अव्यक्तव्यमत ॥ २ ॥ चोथो निन्हव अश्वमित्रनामा वर्त्तमानकालना नारकी देवता उछेद पामे छे ते समुछेदिक क्रिया । ३ । वादी ए गंगनामा निन्हव पांचमो एक समे बे क्रियावादि ॥ ४ ॥ ए च्यारे निन्हव पाछा वल्या अने पेहेलो निन्हव जमाली बहु सतवादी घणे समे कार्य पूरुं थाय ते ॥ १ ॥ तथा छट्ठो निन्हव रोहगुप्तनामा त्रिराशी मतवादी ॥ २ ॥ अने सातमो निन्हव गोष्टमाली अबंधक करमवादी ॥ ३ ॥ ए त्रण निन्हव वल्या नहि. आठमो निन्हव दिगंबर थयो. सरव वस्तवादी ते आवश्यकनिर्युक्ति मध्ये कह्यु छे, अने ए तो श्री महावीर स्वामीथकी छसेंनेनव वरसे सेसमलथकी ते तो प्रसिद्ध छे. अने वे तो श्री महावीरस्वामी थकांज नीकल्या छे. श्री महावीर स्वामी पछी थया. कालानुभावे करीने त्यार पछी मती केहेवाणा ते प्रवचनपरीक्षामां दसमति कहीने बोलाव्या छे, अने श्री आवश्यक निर्युक्ति मध्ये तो निन्हव कहीने बोलाव्या छे, यद्यपि निन्हव ने मती ते एकज छे, पण निन्हव पद ते भारे छे अने मति पद हलकुं छे. जे आगमधर केवलज्ञानी तथा चउद पूरवधरादिक अतिशे ज्ञानी

आगमवाला होय ते जाणे, जे उत्सुत्र जाणीने बोले तेने निन्हव कहीए अने जे मूरख पणाथी तथा स्वछंदपणाथकी पोतानी मतिकल्पनाये करीने उत्सूत्र प्ररूपणा करे, तेने वस्तुगत निन्हव कहिए. जे साक्षात सिद्धांत मध्ये अक्षर देखे अने माने नहि अने वलि जीनमर्यादाविना अने शुद्ध श्री गणधरनी परंपराविना नवीज पोतानी मति प्ररूपणाये करीने प्ररूपे, जे जाणीने प्ररूपे तेने निन्हव कहीए, पण आजना गीतार्थ ते पापथकी डरताथका जाणे छे, जे अमने तेवुं ज्ञान नथी. उत्सूत्र बोले छे ते जाणीने बोले छे के अजाणे बोले छे ? पण मतकदाग्रह मुकता नथी, त्यारे मती कही बोलाव्या, अने प्रवचन परीक्षा धर्मपरीक्षा छे, नमवुं जावुं ए अभिनीवेशिक मिथ्यात्व कहिए ॥ ए त्रीजो भेद मिथ्यात्वनो कह्यो. ॥ ३ ॥

हवे मिथ्यात्वनो चोथो भेद कहीए छीए, ए संसेके० ॥ मिथ्यात्व कहीए ते केमके वासी रोटली, खीचडी, वाशी शीरो, लाबासि, ठोठडी, काल पोतानी सुखडी लेवुं, केरी, केरां, इत्यादिकनो बोलोलुंण पाडया पछी त्रण दिवश उपरांत रहे तो वेरांद्रि जीव असंख्यात उपजे ने मरे, ते माने नहि ते तो जीव अपवेशनारूप मिथ्यात्व थाए अने वली एम जाणे जे एमां जीव हशे के नहि होय ? एवो संदेह होय तेने संसयिक मिथ्यात्व थाए. वली उनुं पाणी कर्या पछी शीयाले च्यार पोहर पछी, उनाले पांच पोहार पछी, काचुं पाणी थाए अने वली काचुं दहिं, काची छास, काचुं दुध, ते संघाते विदल भले ॥ विदल ते मग, चोला, झालर, अडद, चणा, इत्यादिक कठोल जेटलुं धान्य होय ते विदल कहिए, ते काची छासादिकमां भलतां असंख्यात वेरांद्रि जीव उपजे छे, ते पण माने नीह, अथवा संदेह राखे, तेने पूर्ववत् मिथ्यात्व लागे. ए अधिकार

श्री प्रवचनचूर्णी तथा प्रवचन सारोद्धारादिक ग्रंथोने विषे छे. हवे कोइक कहे जे अमे तो ग्रंथ मानता नथी कांइ सिद्धांतमां होय तो कहो तेने कहीए जे सिद्धांतमां घणे ठेकाणे अक्षर दिसे छे पण जे हने मिथ्यात्वनो उदय होय ते सिद्धांतने माने नहि, तोपण भव्य जीवना उपगारने अर्थे सिद्धांतना अक्षर देखाडीये छीए जे त्रस जीवनी आंठ खाण श्री दशवैकालिक सूत्र मध्ये कही छे.

"यदुक्तं" इंडया ॥ १ ॥ पोइया ॥ २ ॥ उटाउवा ॥ ३ ॥ रासिया ॥ ४ ॥ संसमि ॥ ५ ॥ समुछमा ॥ ६ ॥ अजिया ॥ ७॥ वारया ॥ ८ ॥

हवे ए इंडियाइ हजडजा पक्षाताहको कालादि ॥ एटले ए जीव इंडु जणे छे, पछी संपूर्ण शरीर पांख प्रमुख उपजे छे. तेज गर्भ पंचेंद्री जीव ते पंखी तथा गरोलि इंडज जीवने इंडज कहिए ए प्रथम खाण ॥ १ ॥

पोता जाय ते ॥ इति पोता जाके० ॥

जे गर्भ जणे त्यारे ॥ पोता कहेता०॥ चामडीनी चादर पछेडी कहीए ते सहीत गर्भ जणे तेने पोताजा कहिए हाथी प्रमुखए बीजी खाण ॥ २ ॥ जरा उइयाके० ॥

जरा उवेष्टिता जाय ते ॥

इति जराउजां मनुष तथा गाय भेंस जाणवि, ए त्रीजी खाण ॥ ३ ॥

रसीया इतिरस जायते भंतेरज्य

एहनो अर्थ रसियाके पाणी कहीए तेह थकी जे उपन्युं एटले पाणीए रांध्युं धान जेटलुं होय, तथा पाणीनो भाग जेहमां रह्यो होय, ते सुखडी नीली होय, सीरा लापसी तथा पूरी तेमां पाणीनो भाग रहे ते वासी

थाय तेमां बीजे दीने बेरंद्री जीव असंख्याता उपजे तथा उष्णकाले तो दाळ प्रमुख तेज दीने वीणसे, सुखडी तथा रांध्युं धान त्यारे विणसे, के वर्ण, गंध, रस, फरस बदलाय त्यारे जीव उपज्यानुं सद्दहवुं. त्यारे इहां कोइक कहेशे जे घी पण खोरुं दीसे छे तो ते मध्ये तमे जीव सद्दहोछो ? तेने उत्तर देवो जे घृत काचुं तावणनुं होय, तरत तावी मूक्युं होय, पछी एक बे दीनमें वीणसे, ते घृत मध्ये जीव क्यारेक सद्दहीए, ते घृत अल्प जाणवुं. तिहांज घृत अग्नीने योगे उष्ण कर्युं पछी ते घृत खोरुं दीसे तोपण जीव न सद्दहीए. तेज पुद्गलनो स्वभाव छे ।

भगवतीमां ॥ पुदगलतिविहापनंता तंजहा । पयोगसा ॥ १ ॥विशेसा ॥२॥मीश्रसा॥३॥इत्यादिक

पयोगसाके० जीव प्रयोगके० ।।वेपार जीव निमितनो,जीवने वेपारे करीने पूद्गलना गंधादिक फरे, ते प्रयोगसा पुद्गल कहीए, जिम उदारीकादिक व्यवहार तेनीपरे ॥ ६ ॥ हवे विशेसाके०। स्वभावे जे पुद्गलना गंधरसादिक फरे ते पण विशेसा पूद्गल कहीए; पण ते मध्ये जीव सद्दहता नथी ते घृतपाकीतावणीनुं छे ते घणे दिवसे खोरुं थाय छे, ए विशेसा पुद्गल संभवे छे, परंपराए पण एहवुं सांभल्युं छे, तेम भगवती प्रमुख सिद्धांतमां अक्षर पण दीसे छे, ए बीजो भेद ॥ २ ॥ हवे मीश्रसाके० ॥ जीवने वेपारे पुद्गलने स्वभावे वर्ण गंधादिक फरे ते मीश्रसा पुद्गल कहीए. जेम मृत कलेवर फूले छे, मोटुं वधे छे, ते मीश्रसा पुद्गल कहीए ए त्रीजो भेद परीपूर्णम् ॥ ३ ॥ रसिया ए पदनी टीका मांहे कह्युं जे

आलनालदधितिमनादिषू खाटवित्तम्याकृतयोत्य तमूक्षाभतीति ॥

आलनालके० ॥ कांजी कहीए, मारवाड मध्ये कांजी ते अडदनां वडां अने काचूं दधि भेलुं करये थके, विदल कहीए ते मध्ये बेरंद्री जीव पडे, ते केवा पडे ? पेटमांहे सगतगीया. एवे आकारे अत्यंत सूक्ष्म जीव असंख्याता उपजे. इतिरस चोथी खाण ४

संसेइमां सरवे दाजाता संस्वेदजामत्कणउकादय।

संस्वेदके० ॥ परसेवो सरीरना परसेवा प्रसंगे माकण तथा जु लीख तेरंद्री जीव उपजे, संसइमां एइ पांचमी खाण ॥ ५ ॥

समुर्छिमासमूर्छना जाता इतिसमूर्छिनजा सलभपीपीलीकामक्षिकासाल्लरादय ॥

समूर्छिमके० ॥ पोतानी मेले माटी मांही तथा कादव मांहे उपजे ते समूर्छिम कहीए सलभके० ॥ दीवामां पतंगीया पडे छे तेहने कहीए. पिपीलिकाके० ॥ कीडी प्रमुख मंखीकाके० ॥ मांखी प्रमुख सालुरके० ॥ देडका प्रमुख तथा समूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रि ते चौद ठेकाणे उपजे छे, ते श्रीपन्नवणा सूत्रने विषे चोथे उपांगे तेहना प्रथम पदने विषे कह्युं छे.

तंजहा ॥ आलापकश्चायसै ॥ कंतमणूसाहूविहापनंता ॥ तंजहासमुर्छिमामणुसाय ॥ गभंवकंतियमणुसाया ॥ ॥ सेकंतसमूर्छिममणुसा ॥ कहाणंभंतेसमूर्छिममणुसा ॥ ॥ समुर्छितिगोयमाअनोमणुसा ॥ खितेपणयालियाए ॥ जोयणसतसहतेजु ॥ ॥ अढाईजेसुदोसमूदेसू ॥ पनरसकमभोमीसु ॥ तिसाएअकमभोमीसु ॥ पनतंअंतरादिवएसु ॥ गभवकंतियसू ॥

मणूसाणचेव ॥ उचारेसुवा ॥ १ ॥ पासवणेसुवा॥२॥ खेलेसुवा ॥ ३ ॥ सिंघाणंएसुवा ॥४॥ वंतेसुवा ॥५॥ पितेसुवा ॥ ६॥ पुसएसुवा ॥ ७ ॥ सोणियसुवा॥८॥ शुकेसुवा ॥ ९ ॥ शुक्रपुगलपरीसाडेमुवा ॥१०॥ विगयकलेवरेसुवा ॥११ ॥ थिपुरीससंजोएसुवा ॥१२॥ नगरनिधमणेसुवा ॥ १३ ॥ सेवेसुचेव ॥ अशुचेएसुधाणेसुवा ॥ १४ ॥

इत्छणंसमुर्छिममणुसासमुछंति ॥ अंगुलसअसंखिजइभागमेताए ॥ ऊगहणाय ॥ असणीमिछदाधि ॥ सव्वाहिपजताहिअपजतगायतो ॥ मुहुत्ताउयाचेव कालकरंति ॥ सेतंसमुर्छिममणुंसा ॥ इतितद्वाति ॥ अप्रतिमनुष्यानभिधिशुराहसेकितंमित्यादि । अत्रापि समुर्छिममनुष्यममनुष्यावसयोप्रवचनबहुमांनंतं ॥ सिष्याणांसाक्षातदगव्रते । तदमुक्तमिति ॥ बहुमांनो त्यादनार्थं ॥ मतगांतमालापके । पद्धातिकहिणंभंते । इत्यादिसुगमनवरसवे ॥ सुचेवअसूईधाणेसुवी॥ अन्यायपियांनकानिचिन्मनुष्य ॥ संसगावसादसुचिमूतिनिस्थांनानितोषु ॥ सवेवितिउक्ता ॥ समूर्छिम मनुष्या ॥

हवे जे चौद ठेकाणे ॥ समूर्छिममनुष्य उपजे छे ॥ तेह श्री

पन्नवणा सूत्रनो पाठ तेनो अर्थ लखीए छीए ॥ सेकतंके० ॥ अथ-कंके० ॥ शुतकंके० ॥ तेह मनुष्य वे प्रकारे छे, एक गर्भज मनुष्य ॥ १ ॥ वीजो समूछिम मनुष्य ॥ २ ॥ सेकंतं समूछिप मनुंसाके० अथ सपूर्छिम मनुष्यनुं स्वरूप पूछे छे ॥

कहेणंभंते ॥ समूर्छिम मनुष्य

केहणंभंत्तेके० ॥ हे भगवान् कये कये ठेकांणे तमे कह्युं छे ॥ ते तुं सांभळ ॥ अंतोमणू सपित्तके० ॥ मनुष्य क्षेत्रने अंतेके० ॥ मध्ये पीस्तालीसलाख जोजन प्रमाणे मनुष्य क्षेत्र छे, अढी द्विपके० ॥ १ ॥ जंबूद्विप ॥ २ ॥ धातकिखंड० ॥ आधोपुखरद्विप ते अढी द्विप मांहे वे समुद्र, एकलवण समुद्र ॥ १॥ वीजो कालोदधि ॥२॥ पन्नरसकम भोमीसुके० ॥ पांच भरत ॥ पांच ऐरवत ॥ पांच महा विदेह ॥ जंबूद्विप मधे त्रण खेत्र छे, धातकिखंड मध्ये छ क्षेत्र छे, पूखरार्ध मध्ये पण छ छे. एवंपन्नंरातिसए अकमभोमिएशुके० ॥ त्रीस अकर्मभूमि जूगाळियानां क्षेत्र जाणवां, ते कयां ? जंबूद्विप मध्ये दाक्षिण दिशाए एक हेमंत विजु हरिवर्ष, त्रिजु देवकुरु. उत्तर दिशाए त्रणनां नाम, उत्तरकुरु ॥ १ ॥ अर्णकवास ॥ २ ॥ रमणीकवास ॥ ३ ॥ एवं छ क्षेत्र जंबूद्विप मध्ये छे. धातकिखंडेचार, पूखराअर्धेचार. एनां ए छ नाम जाणवा. एवं त्रिस क्षेत्र जुगळीयानां जांणवां. छप्पन अंतरादिवेसुके० ॥ छप्पन अंतराद्विप ते किया ? जंबूद्विपने विषे लघु हेमवंत पर्वतथकी लवण समुद्र मध्ये पूर्वनी दिशाए वे दाढायो नीकली छे, एक दाढा उपर सात क्षेत्र एवं पूर्वे वे दाढायो उपर थइ चौद क्षेत्र, एम पश्चिम दिशाए वे दाढानां चौद क्षेत्र छे, एवं हेमंतनी दाढा ऊपर अठ्ठाविस क्षेत्र थयां. इणिपेरे उत्तर दिशाए सिखरी पर्वतनी चार दाढा उपर अठ्ठाविस क्षेत्र जाणवां. एवं छप्पन अंतरद्विप जाणवां. गभीयके० ॥ मोटा मकतियेमणूसांणचैवके० ॥ निश्चे

करीने जाणवां, एटले तिर्यंचपंचेंद्रिनां छाण तथा मूत्रादिकने विषे समूर्छिम मनुष्य उपजे नहिं. एटले गायना मूत्रनो चोविस पोहोरनो काल कह्यो छे, त्यार पछी बेरेंद्रियादिक जीव उपजे, पण समूर्छिम मनुष्य उपजे नहिं, एम निश्चय जाणवुं हवे गर्भज मनुष्य संबंधि चउद स्थानक देखाडे छे. उचारे सुवाके० ॥ मनुष्य संबंधि विष्टाने विषे समूर्छिम मनुष्य उपजे ॥ वाके०। बीजे पण थानके जाणवाने काजे"वा"शब्द जाणवो॥१॥पासवणे सूवाके० ॥ लघु नित्यने विषे ॥ २ ॥ वतसूवाके० ॥ वमनने विषे ॥ ३ ॥ पते सूवाके० ॥ मुखे करीने पीत नांखे छे तेने विषे॥४ ॥ पूये सूवाके०। परु जे लोहीपाच कहिए तेने विषे ॥ ५॥ श्रोणिये सुवाके०। मनुष्य संबंधि रुधिरने विषे ॥ ६ ॥ शुके सुवाके० ॥ जे मनुष्यने तिर्यंचने विषे ॥ ७ ॥ शुक पुगले परीसाडे सूयाके० ॥ तिर्यंचना पुदूगलने विषेके० ॥ छांटा कहिए परीसाडे सुवाके० ॥ जुदा जुदा पडया तेने विषे ॥ ८ ॥ विगीयेके लेवरे सुवाके० ॥ मनुष्यने विगं,येके० ॥ जीव गया पछी कलेवर मुवुं ते शरीरने विषे ॥ ९ ॥ थिपूरी संजोगेये सुयाके० ॥ स्त्रिपुरुषना संजोगने विषे ॥ १० ॥ वलखाने विषे ॥ ११ ॥ शलेखमने विषे ॥ १२ ॥ नगर निधमणे सुवाके० ॥ नगरनी खालने विषे, जे मनुष्य संबंधि लघु नित्य वडि नित्य एठवांणि प्रमुख वहेतु रहे, तेहने विषे समूर्छिम उपजे ॥ १३ ॥ सत्रे सुचेव अशुये सुधाणे सुयाके० ॥ सर्व सघला मनुष्य संबंधी अशुची थानकने विषे एटले मनुष्यनुं थूंक तथा परशेवो तथा एठवांणी अथवा अंनपाणी जमतां एठुं मुके ते अथवा मुखे मुहपति घणी वांधि राखे तेह मूहपति थूंके करीने भीजी जाए तेहने विषे समूर्छिम मनुष्य असंख्यात उपजे इत्यादिक समूर्छिम उपजवाना थानक घणां

छे ते सतगुरु सेवना थकी मालम पडे, ए चौद स्थानकिया जीव ॥ १४ ॥ अंगुलसअसंखिजे भाग मंतिये ऊगाहणायेके० ॥ एक आंगुलनो असंख्यातमो भाग मात्र ऊगाहणायेके० ॥ शरीरनुं प्रमाण एटले ए पदे करीने असंख्यात जीव कहिए असंनियेके० ॥ असंनिया मिछ्छ दंधियेके० ॥ मिथ्यात्वि न होए अपर्याप्तो, अंतो मुहुताये केहतां अंतर मुहूर्त्तनुं आउखुं पुरुं करीने काल करे. ॥ चय उपचय थाए, पूर्वनी परे नवा ऊपजे. केटला एक थानकने विषे जीव सद्दहता नथी तेने जीवशुयजीवसनारूप मिथ्यात्व थाए. कोइक जीव संदेह करे जे ए मध्ये उपजता हशे के नहि ? उपज्यानो संसय ते संसयक के०॥ तेहने संसायिक मिथ्यात्व कहिए. ए समूर्छिम मनुष्यनी खाण ॥ ६ ॥ नभ्हेदा जन्मयेषतिइति उभ्हेदजा पतंगखंजारी उपरे प्रवादिय उभेदके० ॥ भूमिफोडीने वाहेर नीकले एटले बेरंद्रि आदिक त्रसजीव उपजे छे. भूमिफोडिने वाहेर प्रगट थाए ते उभेदज भेद कहिए. जिमछुकातलाव मध्ये जीवउपजे पछी वाहार नीकले छे, ते पतंग, खंजारी उपर प्लवादिक जीव विशेष जीवनां नाम जाणवां. यद्यपि ए समूर्छिमनी जात छे, तो ए भूमि फोडिने वाहर नीकले ए भेद ग्रहिने जूदो भेद करयो. जेम रसजा पण भेद जूदो कीधो छे, तेम ए पण भेद जाणवा. ए उभेदज जीवनी सातमी खाण. ॥ ७ ॥

उत्पादी इति उत्पादजा उत्पादे भवा इति उत्पातिका देवानारकिश्च उत्पातके० ॥

देवताने उपजवानी सभानुं नाम उत्पात सभा कहिए. त्यां देवता आवीने अंतर्मुहूर्त्तमां बत्रीस वर्षनो जुवान पुरुष उठी बेसे,

उत्पात सभा मध्ये सज्यामां उपजे, एटला वास्ते देवतानी उत्पात योनि कहीये. नारकी पण कुंभिपाक मध्ये आवीने अंतर्मुहूर्त्तमां प्रगट थाए. ते वास्ते नारकी पण उत्पात योनि कहीए. ए आठमी उत्पातजा जीवनी खांण ॥ ८ ॥ अंडया ॥ १ ॥ पोयाए ॥ २ ॥ एह बे खाण गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचनी जाणवी ॥ २ ॥ जरागूजा ए गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचनी खाण जाणवी ॥ ३ ॥ रसीया इति वासी विदल बोळादिकने विषे पाणीना संसर्गन विषे थकी बेरंद्रियाजीवनी खाण ॥ ४ ॥ संसेइमा ॥ १ ॥ उभीया ॥ २ ॥ इति बे विगलेंद्रिनी खाण ॥ ५ ॥ समूर्छिम ए बेरंद्रि, तेरंद्रि, चउरंद्रि, पंचेंद्रि असन्नीया समूर्छिम मनुष्य तिर्यंचनी खाण ॥ ६ ॥ उथाइया ए देवता नारकीनी खाण ॥ ८ ॥ ए आठ खाण त्रस जीवनी जाणवी. रसियाएने चोथी खाणने विषे जे ठेकाणे जे जीव रह्यो छे ते ठेकाणे जीव मानता नथी तेहने विषे जीवसनारूप मिथ्यात्व थाय. जेने संशय छे तेने संशयिक मिथ्यात्व कहिए. ए संशयिक मिथ्यात्वरूप चोथो भेद ॥ ४ ॥ अथ अणाभोगरूप मिथ्यात्वनो पांचमो भेद कहीए छीए. जे अणाभोग ते समजण विना प्रवर्त्तवुं. ते जीव जीवादिकनुं स्वरुप जाणे नहि, समजे पण नहि, संज्ञा पण नहि एकेंद्रियादिक पंचेंद्रिय पर्यंतने अणाभोगीक मिथ्यात्व कहिए ए पांचमो भेद ॥ ५ ॥ एटले पांच मिथ्यात्व कह्यां बार अव्रतके० ॥ बार अविरति ते केइ ? बेमणा ॥ १ ॥ करण ॥ १५ ॥ नीयम छ जीव व होइके० ॥ एकमननी अविरति ॥ १ ॥ पांच इंद्रि छ अव्रत ॥ ६ ॥ छ काय जाणवी । इति गाथानो अर्थ समाप्तः ॥

॥ इति मुनिश्री हूकमचंदजी विरचिते द्वीतियोध्याय परीपूर्णम् ॥ २ ॥

एवुं मिथ्यात्व जाणी टालीने समकितनी प्राप्ति थाय ते समकितना ३ भेद छे. उपशम ॥ १ ॥ क्षय उपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ ते मद्धे प्रथम जे जीव समकित पामे ते उपसमसमकित पांमे तेनुं स्वरूप देखाडे छे. अनादि कालनो जीव मिथ्यात्वि हतो ते काललब्ध पामीने मार्गानुसारी थाय तिहां त्रण करण करे यथा प्रवृत्ति करण ॥ १ ॥ अपूर्व करण ॥ २ ॥ अनिवृत्तिकण ॥ ३ ॥ प्रथम थकी यथा प्रवृत्ति करण करे तेनो विधि कहिए छीए । ज्ञानावर्णी ॥ १ ॥ दर्शनावर्णी ॥ २ ॥ वेदनी ॥ ३ ॥ अंतराय ॥ ४॥ ए च्यार कर्मनी त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे तेमध्येथी २९ ओगणत्रीस कोडाकोडि अने एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली स्थिति खपावे, तथा मोहनि कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे, ते मध्येथी उगणोतर कोडाकोडी सागरोपम तथा पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली खपावे, तथा नामकर्म ॥ ६ ॥ गोत्रकर्म ॥ ७ ॥ ए बे कर्मनी वीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे ते मध्येथकी ओगणीस कोडाकोडि सागरोपम तथा पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली स्थिति खपावे, शेषथाकती एक कोडाकोडी सागरोपम मध्येथी एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ओछी एटली स्थिति आयुवर्जिने साते कर्मनीराखे, एवाज उदासि परिणाम संसारथी उदवेगता पामे, संसारने अनित्य जाणतो थको संसारथी महा भय भ्रांत थातो थको एम परिणामनी धाराये चडतो थको एक अंतर्मुहूर्त्त मांहे साते कर्मनी उत्कृष्टि स्थिति जेम पूर्वे कही तेम खपावे तेने यथाप्रवृत्ति करण कहीए. ते यथा. प्रवृत्ति ज्ञान विना घणा जीव करे छे. एक जीव अनंतीवार करे, अभव्य पण करे माटे ए करण कीधा कांइ सिद्धि थई नहिं. हवे ए करणे रहेतो अंत

मुहूर्त्त रहे, चडे तो अपूर्व करणे जाय, पडेतो पाछो ठेकाणे आवे, मार्गने दृष्टांते. जेम त्रण पुरुष भेला थइने मार्गे चाल्या जाय छे, आगल जातां महा अटवीमां पोहोत्या त्यां भय घणो जाण्यो, त्यारे एक जणो पाछो वल्यो, एक जणो त्यां उभो रह्यो, तेने चोरे पकडयो, एक जणो हिमत करीने आगल गयो ते वंछित पूरे गयो, ते सुख पाम्यो. ए दृष्टांते उपनय जोडीये छीए. त्रण संसारी जीव संसाररूप अटवीमां भमतां यथा प्रवृत्ति करण स्थानके पोत्या, ते मध्येथी एक जीव पाछो वल्यो, तेने रागद्वेष चोरे पकडयो, बीजो जीव त्यां रह्यो ते मिथ्यात्व कर्मने उदये करीने उत्सूत्र प्ररूपवा लाग्यो, अभिनिवेसिक मिथ्यात्वना जोगथी कुदेव कुगुरु कुधर्मने अंगीकार करीने रह्यो, मनथकी खोटुं जाणे पण कदाग्रहने लीधे ते मेले नहि. हवे त्रीजो जीव अपूर्व करण करीने समकित पामे सुखी थाय इति उपनय संपू० ॥ इति प्रथम कर्ण पूर्णः ॥ १ ॥ हवे बीजा अपूर्व करणनुं स्वरूप देखाडे छे ॥ अपूर्वके० ॥ पूर्वे एवा भाव कोइ काले आव्या नथी. विशेष निर्मल भावे होय, श्या माटे जे जे जीवने समकित पामवुं होय ते जीवने एवा भाव होय ते प्रथम यथाप्रवृत्ति करण थकी अपूर्व करण सुधी जतां रस्तामां असंख्याति काष्टियो छे परंतु कर्म पयडी टिका मध्ये त्रीस गवेखी छे, ते काष्टियो के० पावडियो कहीए, तेटलां अध्यवसायनां ठेकाणां छे, इहां विचार घणो छे, परंतु आ ग्रंथने विषे व्यवहार नयनी पुष्टता विशेष छे माटे इहां वात वर्णवी नथी, विशेष जोवी होय तो श्रीकर्मपयडीनी टिका थकी जोजो. हवे जे यथाप्रवृत्ति करणने विषे जे सात कर्मनी स्थिति एक कोडाकोडी सागरोपम ते मध्ये एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ओछी रही हती ते मध्ये थकी एक मुहूर्त्त खपावे त्यारे अपूर्व करण थाय

त्यारे अपूर्व नाम वीर्य उदीरे. पछी इहां थकीऽपूर्व नामा मोघर लेइने अगाडी ग्रंथी उपर जाए त्यां जईने ग्रंथीने विदारे, ग्रंथि भेदे तिहां अनिवृत्ति करण थाय. तिहां पूर्वे रहेलां कर्म तेमांथकी एक मुहूर्त्त स्थितिखपावे, तिहां अनंतानुंबंधि चोकडी तथा मिथ्यात्व मोहनी ए पांच प्रकृति उदय आवीरुंधे, विपाके तथा प्रदेसे. अंत र्मुहूर्त्त मात्र पंच प्रकृति उपसमावे, ते माटे एने उपसम समकित कहिये. ते उपर द्रष्टांत देखाडे छे. जेम कोइ खारी भूमिना दावा-नलनी परेके०॥ जेम कोईक दावानल बलतो बलतो आवे एम करतां आगल खारी भूमि आवी, ते खारी भूमिने विषे त्रखलां प्रमुख कांई छे नहिं जे तेने बाले, तेम इहां खारी भूमि समान समकित भूमि कहीये, अने दावानलसमान मिथ्यात्व कहिये, ते जेम दावानलनी अग्नि खारी भूमि ए आवतां रोकाणो ॥ आपशुं आ-प उपसमी तेम इहां मिथ्यात्व पण समकित भूमिकाये प्रवेश करी शके नहिं, ते पण आपशुं आप उपसमे, ए दृष्टांत जाणवो ॥ १ ॥ एम जीव उपसम समकित पामे, ते उपसम समकितमां शुभ परि-णामे मिथ्यात्व मोहनीना त्रण पूंज करे, एक शुद्ध पूंज ॥ १ ॥ बीजो अर्ध शुद्ध पूंज ॥ २ ॥ त्रीजो अशुद्ध पूंज ॥ ३ ॥ उपसम समकितने अंते शुद्ध पूंजनो उदय थाय तो क्षयोपसमसम्यक्त कहीए, अर्ध शुद्ध पूंजनो उदय थाय तो मिश्रगुणठाणुं त्रीजुं जा-णवुं. अशुद्ध पूंजनो उदय थाय तो मिथ्यात्व कहीए. जेम कोद्रवधा-न्यना त्रण पूंज करीए. एक छोतरां काढीने पूंज करे, बीजो पूंज खांडीने एमनो एम मूक्यो, त्रीजो पूंज अशुद्ध के०॥ कोदरा वण खांडया; एम जलनो दृष्टांत,एक जल निर्मल कर्युं,बीजुं थोडुं निर्मल, त्रीजुं दूर्गंध व्यापी. ए दृष्टांते शुद्ध जल ते समकित मोहनी, अर्ध शुद्ध ते मिश्र मोहनी, अशुद्ध ते मिथ्यात्व मोहनी जाणवी. हवे उप-

सम समकित आदि देइने समकितना घणा भेद छे, पण उपसम अधिकार समाप्त ॥ १ ॥ हवे क्षयोपसम कहे छे. ते क्षयोपसम विचित्र प्रकारनुं छे, कर्मना क्षयोपसमना घणा भेद छे, ज्ञानावर्णि कर्म ॥ १ ॥ दर्शनावर्णि ॥ २ ॥ मोहनी ॥ ३ ॥ अंतराय ॥ ४ ॥ ए च्यार कर्मनो क्षयोपसम थाय छे, पण इहां मोहनी कर्मनो अधिकार छे. जे दर्शन मोहनी कर्मना क्षयोपसमथकी जीव समकित पामे ते माटे विचित्रपणुं छे. बहु विध जनागमेके०॥ जिनना आगम सिद्धांतने विषे बहु विधके०॥ घणा भेद कीधा छे एटले चोथा गुण ठाणानुं समकित जूदुं, अने पांचमा गुणठाणानुं पण समकित जूदुं, तथा छठ्ठा सातमा गुणठाणानुं समकित जूदुं जाणवुं. यद्यपि समकितनी रुची जोतां तो एकज भेद छे. तोपण कर्म मोक्ष उपसमादि भेदे करीने समकितना घणाभेद थाय छे, ते किया? एक प्रकारे समकित, ते श्रीअरिहंत भगवानना वचनपर रुची जे अरिहंत भगवंते कह्युं ते सत्य छे एवुं एकाश्रित, ते तत्त्वरुची कहीए. ए चोथा गुणठाणाथी मांडीने संग्रह नयने मते एक प्रकारे समकित कहीए.

हवे केटले प्रकारे समकीत कहीए ते कहे छे, एक द्रव्य समकित ॥ १ ॥ बीजुं भाव समकित ॥ २ ॥ जे द्रव्य समकित. जे जीवादि नव पदार्थने सम्यक् प्रकारे जाणी जाणीने सद्दहे ते द्रव्य समकित कहीए ॥ ॥ यदुक्तं ॥

जीवाइ नव पयत्थे ॥ जो जाणेइतस्स होइ सम्मत्तं ॥ भावेणसद्दहंतो॥ अयाणमाणेविसम्मत्तं॥१॥

जीवादिक नवतत्वने जाणे तेने समकित कहीए. भावेणके० ॥ भावे करीने सदहतो थको जे जीव अयाणमाणेके० ॥ नव तत्वने नय निक्षेपे करीने न जाणतो, पण समकित छे, ए गाथाऽर्थः ॥

जे भाव समकित ते नव तत्त्वना भेद नयनिक्षेपे करीने सम्यक् प्रकारे जाणीने सद्दहे ॥ ते भाव समकित कहीए ॥ २ ॥ वली निश्चय व्यवहारे करीने बे प्रकारे समकित जाणवुं, ते जीवनुं ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ तेमां शुभ परिणाम ते निश्चय समकित कहीए इत्यादिक समकित केवलि गम्य जाणवुं. छद्मस्थ जाणी शके नही अरुपीपणा माटे. हवे व्यवहार समकित ते संवेगादिकना आचारे करी ओलखाय ते व्यवहार समकित कहिये तेनुं स्वरूप आगल कहिशुं ॥ २ ॥ वली निसर्गने उपदेश ए बे प्रकारे जाणवुं ते नीसर्गके० ॥ स्वभाव कहिये. गुरुना उपदेश विना जे जीव पोतानी मेले उपदेश पामे ॥ ते निसर्ग समकित कहिये, ते उपर मार्गनो दृष्टांत जाणवो. जेम कोइक मार्ग भूल्यो होय, ते पोतानी मेलेज मार्ग जाणे, बीजो पुरुष कोइना कीधाथी मार्ग जाणे । तेम इहां गुरुना उपदेशविना समकित पामे तेने निसर्ग समकित कहिये, बीजो गुरुना उपदेशे समकित पामे तेने उपदेश समकित कहीए, वली त्रण प्रकारे समकित कह्युं छे, एक कारक समकित ॥ १ ॥ बीजुं रोचक समकित ॥ २ ॥ त्रीजुं दिपक समकित ॥ ३ ॥ कारक समकित ते सिद्धांतमां भाव कह्यो छे ते भावने अनुसारे क्रिया करे, जेम सर्व प्राण ॥ १ ॥ सर्व भुत ॥ २ ॥ सर्व जीवं ॥ ३ ॥ सर्व सत्व न हणे ॥ एटले छ कायना जीवने हणे नहि, हणावे नहि, हणताने भलो जाणे नहि ॥ मन वचन कायाये करीने. एहवा नव कोटिना पच्चखाण पालनार साधुने कारक समकित होय ॥ जसुमति पासाहितं मुंणाति इतिवचनात् ॥ १ ॥ हवे बीजुं रोचक समकित ते जीवादि पदार्थ जाणीने निरपराध निरपेक्षपणे संकल्पीने त्रसादिक जीवने हणे नहि, यथा योग्य चोथे पांचमे गुणठाणे रोचक समकित कहीये. ए बीजुं

समकित ॥ २ ॥ हवे त्रीजुं दिपक समकित ते पोते मिथ्या दृष्टि थको पर जीवने जीवादि पदार्थनुं स्वरूप सिद्धांतने अनुसारे समजावे, समकितादि गुण पमाडे, तेहना प्रतिबोध्या मोक्षे पण जाय ते वारे वादी बोल्योके जेने दिपक समकीत तेनें शो गुण थाय ? तेनो उत्तर दे छे, जे दिपक समकितनो पण एटलो गुण छे जे उत्कृष्टि पुन्य प्रकृति बांधे तो नव ग्रैवेयक सुधीनी बांधे शामाटे जे उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करे, पोते मिथ्यादृष्टि होय पण परने मिथ्यात्व पमाडे नहि, अने नव निन्हवादिक पूर्वे एवी क्रिया अनुष्ठान आकरुं करे तो पण किल्विषियो देवता थाय, ए उत्सूत्रनी प्ररुपणा करीने पोताना आत्मा ने तथा परना आत्माने दूर्गतिये घाले. ए उत्सूत्रनी प्ररुपणानो करनारो महापापी जाणवो. तेनी अपेक्षाये दिपकसमकितवालो घणो ज रुडो जाणवो. पोते मिथ्यात्व थको परने मिथ्यात्व पमाडे नहि, तेज गुणे करीने नवग्रैवेयके जाय ॥ यदुक्तं ॥ जइ लगमीरछदिट्ठि ॥ गोविना जाव जंतीमो ॥ कोसंपयमावि असद्दहंतो ॥ सूत्रंतंमिछिदिधिओ ॥ १ ॥ यद्यपिद्वादशांगीसद्दहे ॥ एक पद मात्र न सद्दहेतो सूत्र मांमिथ्या दृष्टि कह्यो छे ॥ साधु मूल गुणे शुद्ध होय एटले साधुनी क्रिया शुद्ध पाले, पण जो उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करे,तो नव ग्रैवेयके जाय ते श्रीभगवति सूत्रमां कह्युं छे. प्रथम सतकेबीजे उद्देसे.

तंजहा ॥ अहंभंत्ते । अहंजय भवि यद वदवाणं । १ । अविराहियसंजमाणं । २ । विराहियसंजमाणं । ३ । अविराहीयसंजमासंजमाणं ॥ ४ ॥ विराहियसंजमासंजमाणं ॥ ५ ॥ असणीणं । ६ । धतावसाणं ॥ ७ ॥ कंदप्पीयाणं ॥ ८ ॥ चरग परी

वायगाणं ॥ ९ ॥ किलविसियाणं ॥ १० ॥ तिरीछी-
याणं ॥ ११ ॥ आजिवीयाणं ॥ १२ ॥ अभीयोगी-
याणं ॥ १३ ॥ सलिंगाणंदंसणवावणगाणं ॥ १४ ॥
एएसिणंदेवलोगेसु ॥ उववजमणाणं ॥ कसकहिउव-
वाएगोयमा ॥ असजणयभवियवदेवाणं ॥ जुहणेणं ॥
भवणवासिसूवोकोसेणं ॥ उवरीमगेदिजयेसू ॥ अवि-
राहियसंजमाणंजेहूणेणं ॥ सुहमेकप्पेउकोसेणं ॥ सव-
थसिद्धेविमाणे ॥ विराहियसंजमाणंजह ०॥ भवन०॥
उकोसेणंसोहमेकप्पे ॥ उकोसेणंअचुएकप्पे ॥ विरा-
हियसंजमासंजमाणं ॥ जहण ०॥ भवणवासिसुउको-
सेणं ॥ जाइसीयेसुअसणाणं ॥ जहणंभवणे ०॥ उ-
कोसेणंवाणवंतरेसुयवसेसासवे ॥ जह०॥ भवणवासि-
सुउकोसेणं ॥ वोत्छिमितावसाणं ॥ जोइसीयेसुदप्पया-
णं ॥ सोहमेकप्पे ॥ चरगपरीवायगाणं ॥ बेलेलोएक
प्पेकिविसियाएणं ॥ लंतएकप्पे ॥ तेरीछियाणं ॥ स-
हसारेकप्पे ॥ अजियाणं ॥ अचुएकप्पे ॥ अभीयो-
गीयाणं ॥ अचुएकप्पे ॥ सलिंगिणंदंसणवावणंगाणं॥
उवरीमगे ॥ विजयेसु ॥ १ ॥

एहनो लेशमात्र अर्थ कहे छे ॥ असंजयके ०॥ चारित्र ममाण
कहित द्रव्यलिंग धारी ॥ भवियके ०॥ देव गति गमन योग्य द्रव्य

देव, जे जीव मनुष्यनी गतिथकी कालकरीने देवता थाय ॥ तेहने द्रव्य देव कहिए ॥ एटले कोइ भव्य जीव चक्रवर्ति प्रमुखनी पूजा-सत्कार बहुमान साधुने करता देखीने ते बहु मानादिकने काजे॥ मिथ्या दृष्टि चारीत्र लेई संपूर्ण समाचारीने अनुसारे क्रिया पाले, ते उत्कृष्टोनवग्रैवेयक सुधी जाय पण उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करेतोजा-एःए श्लोकनो भावार्थ जाणवो.॥१॥अविराहियसंजमाणंके ०॥ अखंड चारीत्रना पालनार साधु जघन्य सुधर्मदेवलोके जाए. उत्कृष्टो सर्वार्थ सिद्धे जाये ॥ २ ॥ विराहिके ० ॥ विराधक चारित्रनो धणीजघन्य भवनपति उत्कृष्टो सौधर्मदेवे ॥ ३ ॥ अविराहियसंजमा संजमाणंके० ॥ अखंड श्रावकनां व्रत पालीने जघन्य सौधर्मदेवे उत्कृष्टो अच्युत ॥ एकप्पेके० ॥ बारमुं देवलोक ॥ ४ ॥ विराहियके० श्रावक व्रतधारीने जघन्य भवनपति ॥ उत्कृष्टो जोतिषी ॥ ५ असंणिके० ॥ असंनियो पंचेंद्रिय कोइक अकाम नि-र्जराए करीने जघन्य भुवनपति ॥ उत्कृष्टो व्यंतर ॥ ६ ॥ धतावसाणंके० भूमिए पडयां पांदडाना खानार तपस्वी जघन्य भुवनपति ॥ उत्कृष्टो जोतिषी ॥ ७ ॥ कंदप्पियाणंके० ॥ कंदर्पके० ॥ पर-हास्य तेहने करीने निर्भे ॥ ते कंदर्पिक कहीए ॥ एटले जे व्यवहार थकी चारित्र पाले ॥ पण परनी हास्य मश्करी विशेषे करे ते जघन्य भवनपति अने उत्कृष्टो सौधर्मदेव लोके ॥ ८ ॥ चरग परीवयगाणंके० । चरक त्रिदंडी परिव्राजकके० कपिल शिष्या जघन्य भु-वनपति उत्कृष्टो ब्रह्म देवलोक पांचमुं तेने पामे कारणके तेत्रस जीवनी दया विशेषे पाले छे । ९ ॥ कावि सियाणंके० किल्विषं पापं उत् सूत्रप्ररुपं जेषांते कुल विषिका ॥ एटले व्यवहार थकी चा-रित्रवंत ज्ञानादिकना अवर्ण वादनो बोलनारो ॥ यदुक्तं ॥ नाण सकेवलिणं ॥ धम्मायरीयं ससंघ साहुणं ॥ माये अवणवाए ॥

किथिसीयं भावणं कुंणइ ॥ ? ॥ जे जघन्य भुवनपति अने उत्कृ- ष्टुं लांतक देवलोक ॥ १० ॥ तिरीरिछयाणंके० ॥ तिर्यंच गाय भेंस प्रमुखे देश विरति आदे देइने अकाम निर्जराना धणी जघन्य भुवनपति उत्कृष्टो सहसार आठमूं देवलोक ॥ ११ ॥ आजिविया- णंके० ॥ पाखंडी वेष धारीणं ॥ गोसाला सिप्याणां मित्यने ॥ कोइक गोसालोयाने पण आजिवकारे छे तथा पाखंडी वेषधारीने आजीवका कहिये ते जघन्य भुवनपति उत्कृष्टुं अच्युत बारमुं दे- वलोक ॥ १२ ॥ अभीयोगीयाणंके० ॥ अभीयोग कहिए ॥ विद्या- मंत्रादीक ॥

॥ यदूक्तं ॥

दूविहापलुयाभियोगे ॥ दव्वे भावेय होइ नाय व्वो ॥ दव्वंमि होइ जोगा ॥ विजामंताय भावमि- ति ॥ १ ॥

जोग चर्णादि तंत्र विद्यामंत्र ॥ विद्या अक्षरानुयोग ॥ एटले व्यवहार थकी चारित्र पाले पण मंत्र जंत्रादिके प्रवर्त्ते ते अभीयोगी- का कहिये ते जघन्य भुवनपति । उत्कृष्टो बारमुं देवलोक ।१३। सलिंगीणं दंसणं वावगाणंके० ॥ सलिंगीणके० ॥ साधुना वेष धरनारा ॥ दंसण वावण गाणंके० दर्शन सम्यक्त व्यापन्न भ्रष्टं ॥ जे खांते दर्शन व्यापना सम्यक्त रहिता ते जघन्य भुवनपति उत्- कृष्टु नव ग्रैवेयक जाय ॥ १४ ॥ एटले दिपक सम्यक्तनो ए गुण जे इंद्रिय जघन्य सुख पांमे उत्सूत्रनी प्ररूपणा न करे ते माटे ए दिपक सम्यक्तनो गुण छे ए त्रीजुं सम्यक्त ॥ एटले क्षय उपशमना अनेक भेद कह्या हवे क्षायक समकितना भेद कहे छे.

एटले अनुतानुबंधियो क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वमोहनि ॥ ५ ॥ समकित मोहनि ॥ ६ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ७ ॥ ए साते प्रकार तिक्षण करीने क्षपक श्रेणि मांडे, त्यारे क्षायक समकित कहिये. आगल कदि सात प्रकृति खपावे पहेलां आयुष्य बांध्युं होय, पछी सात प्रकृति खपावे तेने खंडश्रेणि क्षायक कहिये. एटले उपशम ते सात प्रकृति उपसमावे तेने उपशम कहिए. ॥ १ ॥ अने क्षयोपशमते जे समकित मोहनीरूप पूंजनो उदय थाय अने समकित पामे ते क्षयोपशम समकित कहीये ॥ २ ॥ सात प्रकृति खपावे तेने क्षायक समकित कहिए ॥ ३ ॥ ए त्रण समकित कह्यां वली च्यार भेदे समकित कहिए. त्यारे सास्वादन समकित मेलवीए, ते जेम कोइक पुरुष खीर खांडनुं भोजन करी तुरत वमेते धणिने शोस्वाद आवे ? तेम जीव पण उपशम समकितथकी पडे तो बीजे गुणठाणे आवे, तेहने सास्वादन समकित कहिए, तेहनो काल उत्कृष्टो षट आवलीनो जघन्य एक समयनो जाणवो. ॥ ४ ॥ वली समकित पांच भेदे कहिये. त्यारे वेदक समकित मेलवीये ते वेदक समकित एटले समकित मोहनी क्षय करवानो एक समय बाकी रहे अने क्षायक समकित पामवानो पेहेलो समय ते वेदक समकित जाणवुं ॥ ५ ॥ हवे ए समकित रहेवानी स्थीतिनो काल कहे छे. उपशम समकितनो अंतमुहूर्त्तकाल ॥ १ ॥ सास्वादननो छ आवलीकाल॥२॥वेदकनो एक समयनो काल ॥ ३ ॥ क्षयोपशमनो छासठ सागरोपम झाझेरानो काल ॥ ४ ॥ क्षायक समकितनो एक सागरोपम झाझेरानो काल ॥ ५ ॥ हवे संसारने विषे परिभ्रमण करतां एक जोवने, एवा जे समकितना भेद ते केटलीक वार आवे. ॥ उपशम ॥ १ ॥ तथा सास्वादन ॥ २ ॥ ए बे समकित उत्कृष्ट आवे तो

पांचवार आवे क्षायक ॥ १ ॥ तथा वेदक ॥ २ ॥ ए वे संसारमां एकवार आवे. हवे एनो विरहकाल कहे छे ॥ उपशम ॥ १ ॥ ॥ सास्वादन ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ ए त्रणनो विरहकाल उत्कृष्ट अर्धपूद्गल परावर्तन होय, जघन्यथी अंतर्मुहूर्त जाणवुं, क्षायक तथा वेदक ॥ २ ॥ ए वे समकितनो विरहकाल होय नाहि, शा माटे जे वेदक समकितनी रहेवानी स्थिती एक समयनी छे अने संसारमां भमतां एक जीव एकवार वेदक समकित पामे, बीजी वार पामे नही, त्यारे केनी साथे विरहकाल मेलवीए। माटे एहने विरहकाल होय नाहि, तथा क्षायक समकित आव्या पछी जाय नाहि, अने आव्या विना विरहकाल थाय नाहि, एटला माटे वेदक तथा क्षायक ए बेने विरहकाल होय नाहि एटले समकितना स्वरूपना भेद कीधा पण हे भव्यप्राणी जेने जेवा प्रकारनो क्षयोपसम होय एटले जेवो क्षयोपसम, ते भेद धीरज राखीने अंगीकार करवो. हे भव्य प्राणियो ? पोतानी बुद्धि निर्मळ राखी शुद्ध उपयोगे करीने समकितनी रुचि आचार प्रमाणे पालवी. हवे जे समकित छे ते बीजा जीवने ओलखवामां केम आवे ? तेनुं स्वरूप कहे छे. जे लिंग लक्षण इत्यादिक जोयाथकी मालम पडे ते कहे छे. सद्दहणाचार ॥ ४ ॥ लिंग ॥ ३ ॥ विनय० ॥ १० ॥ शुद्धि ॥ ३ ॥ दोष ॥ ५ ॥ प्रभाविक ॥ ८ ॥ भूषण ॥ ५ ॥ लक्षण ॥ ५ ॥ जत्ना ॥ ६ ॥ आगार ॥ ६ ॥ भावना ॥ ६ ॥ स्थानक ॥ ६ ॥ एवं सडसठ बोल समकितना ॥ हवे एनो अर्थ संक्षेपे देखाडे छे. प्रथम च्यार सद्दहणा कहे छे. जीवादिक नव पदार्थनुं यथार्थपणे नयानिक्षेपादिके करीने अर्थनुं सम्यक् प्रकारे धारवुं. एवा जीवने शुभ परिणाति ते प्रथम सद्दहणा कही. ॥ १ ॥ हवे ज्ञान क्रिया शुद्ध वितराग भाषित करवानी खप विशेष राखे कदापि कोइ कालयोगे

तथा शरीरना योगथकी कोइ दूपण लागे तेनी आलोववानी खप करे तेवा साधुनी भक्ति वहु मान करवुं ते वीजी सद्दहणा ॥ २ ॥ उसन्ना ॥ १ ॥ पासत्था ॥ २ ॥ कुशीलिया ॥ ३ ॥ कुलिंगीया ॥ ४ ॥ सेसदा ॥ ५ ॥ ए पांचनी संगतीत जीव ॥ एनुं स्वरूप आगल कहीशुं. ए त्रीजी सद्दहणा ॥ ३ ॥ कुदर्शनी, योगी, सन्याशि प्रमुखनी संगति तजवी ए चोथी सद्दहणा ॥ ४ ॥

हवे समकितनां त्रण्यलिंग कहे छे जे. सिद्धांतादिक जिनागम ते सांभलवानो अभिलाख, ए प्रथम लिंग ॥ १ ॥ स्त्री भर्तारनां सुख देवतादिकना सुख तेनी रीती ए धर्म सांभलवानो राग ए वीजुं लिंग ॥ २॥ देवगुरुनो विनय वैयावच्च वहु मानता ॥ आलिस मुकिने विशेपे करे ए त्रीजो लिंग ॥ ३ ॥ जेम धुम्रे करीने अग्नीनुं अनुमान थाय ॥ तेम ए त्रण लिंगे करीने अरूचि समकितनुं अनुमान थाय ॥

हवे दश प्रकारे विनय कहे छे

॥ यदुक्त ।

अरिहंतासिद्धचेइय ॥ ३ ॥ सुण्य ॥ ४ ॥ धम्मेय ॥ ५ ॥ साहू ॥ ६ ॥ वगोय ॥ आयरीय ॥ ७ ॥ उवज्झाय ॥८॥ पवयण ॥९ ॥ दंसण ॥ १० ॥ विणउ ॥ १ ॥

अरिहंत ते वर्तमानकाले विचरता लेवे एटले मातानीकुक्षे आवी नेअवतरया त्यांथकी मोक्षे जशे त्यांसुधी वर्त्तमानकाले विचरता कहीए ए आधिकार भगवति सूत्रना वारमा सतकना नवमा उद्देशे पंचदेवने अधिकारे कह्यो छे;

तंजथा ॥ सेकेणठेणंभंते ॥ एवंवुचंतिदेवाधिदेवा गोयमाजेइम ॥ अरिहंताभगवंता ॥ ऊपणणाणदंसणधराजिवसरवदाश ॥

सेकेणठेणं जीव देवाधिदेवा एमां कह्युं जे हे भगवंत ! देवाधिदेव ते केने कहीए त्यारे भगवंते कह्युं जे अरिहंत भगवंतने देवाधि देव कहीए एटले अरिहंतने देवाधिदेव एकज कहिए जेम पोणोसोने पंचोतेर ते एकज कहीए तेम अहिं पण जाणवुं हवे देवाधिदेवनी स्थीति पूछे छे ॥

तंजथा ॥ भवियदवदेवाणं ॥ केवितियकालधीतिपन्नता ॥ गोयमा ॥ जहणेणं ॥ अंतोमूहूत्तं ॥ उकोसेणं ॥ तिणिपलियोवमाइणरे ॥ देवाणं ॥ पुछागोयमा ॥ जहणेणं ॥ संतवासंसताए ॥ उकोसेणं ॥ चउरासितिपुवसयसहसाइं ॥ धर्मदेवाणं ॥ पुछागोयमा ॥ जहणेणं । अंतमूहूत्तों ॥ उकोसेणंदेसुणापुवकोडि देवाधिदेवाणं ॥ पुछागोयमाजहणेणं ॥ बावतरीवासाए ॥ उकोसेणंचउरासितिपुवसयसहसाई ॥ भाव देवाणं ॥ पुछागोयमाजहणेणं ॥ दसाविशसहसाए उकोसेणंतेतिसंसागरोपमइतिभावियदवातिके०

जे मनुष्य ॥ तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ए बे गति मांहिथकी ॥ जे देवता थनार होय तेने द्रव्य देव कहीए, तेनी स्थिति जघन्य अंतर मुहुर्त उतकृष्टि त्रण पल्योपमनी स्थिति, एटले मनुष्य तिर्यंचनुं

त्रण पल्योपमनुं आवखुं, त्यां सुधी द्रव्यदेव कहीए नरदेवते चक्रव-र्ति कहीए ते आवखा पर्यंत नरदेव कहीए. धर्म देवते साधु कहीए ते जघन्य अंतर मुहूर्त ऊत्कृष्टो देशे उणुं पूर्वक्रोडनी स्थिति ज्यांथी चारित्र लीधुं त्यांथकी धर्मदेव कहीए देवाधिदेव अरिहंत भगवंत कहीए तेहनी स्थिति जघन्य ७२ वर्षनी उत्कृष्टि चोरासी लाख पूर्वनी स्थिति एटले आवखा पर्यंत अरिहंत भगवंत कहीए त्यांसुधी पूजनीक कहीए ॥ एटले कोइक कहे छे जे अरिहंत भगवंतने केवल ज्ञान उपजे तथाचारित्र लीधुं त्यारपछी पूजनीक कहीए ॥ ते जुठुं॥ जे दिवसे मातानी कुक्षे अवतरया उपन्या त्यांथकी पूजनीक अरि-हंत भगवंत वीचरता कहीए वली कोइ वादी वोल्यो जे अरिहंत भगवंत गृहस्थावस्थाने विषे होय त्यारे तेमने साधु निर्ग्रंथ पंच महाव्रतना पालनारा वांदे नमस्कार करे के न करे? ए वादी नु व-चन एनो उत्तर जे वांदवुं नमस्कार करवा तेना प्रकार बे छे एक द्रव्य थकी बीजो भाव थकी ए बे प्रकार छे जे द्रव्य थकी वांदवुं ते पंचांग प्रणाम तथा द्वादश वर्त्यादिक वांदवुं । १ । जे भाव थकी वांदवुं ते मनना शुभ परिणाम करीने तथा नमो अरिहंताणं इत्या-दिक नवकार गणवे करीने वांदवुं ते भाव वंदन कहिए, ते ज्यां सुधी अरिहंत भगवंत गृहस्थावस्थामां होय त्यां सुधी साधु भगवंतने वांदे, जेम गुरु शिष्यने नमो लोए सव्व साहुणं इत्यादिक पद गणवे करीने भगवंतने वांदे छे पण खमासमण द्वादश वर्त्यादिक वंदण क-रीने द्रव्य वंदनथी नथी वांदता तथा तेमज व्यवहार जाणवो, नमो-अरिहंताणं ए पदे अतित अनागत अने वर्त्तमान कार्यना सव अ-रिहंत भगवंतने सदा साधु वांदे छे; पण जे दिवसे मातानी कुक्षे आवीने अरिहंत भगवंत अवतरया, त्यां थकी च्यवन कल्याणका-दिके करीने पुजनिक, विशेष प्रकारे चोसठ इंद्र मलीने पुजे छे ते

कारण माटे मातानी कुक्षे अवतरच्या एटले मनुष्यपणा माटे श्री अरिहंत भगवंत विचरता कहीए त्यांथी यथाजोगे विनय करवो घटे, मोक्षनेऽर्थे ॥ १ ॥ सिद्ध कहेतां ॥ आठ कर्मनो क्षय करीने मोक्षे पोहोंच्या ॥ ते सिद्ध कहिए ॥ २ ॥ चेइय ॥ श्री अरिहंत भगवंतनी प्रतिमा ॥ ३ ॥ शुभ कहेतां ॥ सामायकादिक सिद्धांत ॥ तेहनो विनय करवो ॥ ४ ॥ धर्मके. ॥ चारित्र धर्म क्षमादिक जाणवुं ॥ ५ ॥ ते धर्मनो आधि० ॥ १ ॥ साधु वर्ग पंच महाव्रतना पालनार ॥६॥ आचार्य छत्रीस गुणे विराजमान ॥ ७ ॥ उपाध्याय पचवीस गुणे करीने सहित ॥ ८ ॥ प्रवचनके० ॥ संघ कहिए ॥ ॥ ९ ॥ दंसणके० सम्यक्त कहीए ॥ १० ॥ ए दशनों विनय करवो ॥ ते विनय पांच प्रकारे जाणवो ॥ भक्ति ॥ १ ॥ वहुमान ॥ २ ॥ गुण स्तुति ॥३॥ अवर्णवादनों नाश ॥४॥ आशातना परीहार ॥ ४ ॥ भक्ति ते वाह्य द्रव्ये करीने ॥ ते धन खरचवे करीने ॥ पतिके० ॥ सेवा करे ते भक्तिरुपविनय कहीए ॥ जेम उदायनादिके ॥ श्री अरिहंत भगवंतनी वधामणीना साडीवार लाख सोनैयानुं दान आप्युं ते भक्ति ॥ १ ॥ वहुमानते हृदयने विषे घणो प्रेम ॥ ते वहुमान कहीए ॥ २ ॥ गुण स्तुति ते छता गुणनुं प्रगट करवुं ॥ जेम श्री अरिहंतना जे गुण हता ॥ पण श्री अरिहंतनुं क्यां ठेकाणुं होय ॥ तेथी श्री अरिहंत भगवंतनी प्रतिमा तथा देहरां करावीने अरिहंत भगवंतना गुण प्रगट करवा ॥ श्री अरिहंतनी प्रतिमा देखीने वीजा देवनी मूर्त्ति झांखी दीसेछे ॥ वली साधु महापुरुष एकला जता होय, त्यारे कोइक जाणे जे ए महापुरुष छे, अने घणाक जीवतो जाणे नही, घणा श्रावक श्रावीका साथे होय, त्यारे जाणे जे कोइक मोटा पुरुष छे, एम अनेक प्रकारे गुणीना गुण प्रगट करवा ए गुणस्तुतिरूप विचार जाणवो सहि ॥३॥

कोइ अवर्ण वाद बोलतो होय तो तेनुं नीवारण करवुं, ते अवर्णवादनो नाशरूप विनय ॥ ४ ॥ आशातना ते तांबुल मैथुनादिकवर्जवुं ते आशातना परिहाररूप विनय कहीए ॥ ५ ॥ ए आरिहंतादिक दशनो पांच प्रकारे विनय करवो ॥ १० ॥

हवे शुद्धिके०॥ सम्यक्तनी त्रण शुद्धि ॥ एक मननी शुद्धि । १ । बीजी वचननी शुद्धि ॥ २ ॥ त्रिजी कायानी शुद्धि ॥ ३ ॥ जे जिन तथाजिनना सिद्धांतादिक विना बीजुं सर्वे जूठुं एवुं मनमां चिंतववुं ते मन शुद्धि ॥ १ ॥ जे श्रीतीर्थंकरनी भक्ति विनये थाय ॥ बीजानी भक्तिए शुं थाय एवुं मुखे कहेवुं ते वचन शुद्धि ॥२॥ जो छेद्यो भेद्यो शरीर दुःख पामे तो पण बीजा देवने न नमे ते काय शुद्धि ॥ ३ ॥

पंच गयदोसके० ॥ सम्यक्तनां पांच शंकादिक दूषण टालवां अट्ठ प्रभावके० । आठ प्रभाव पुरुष जिनसासनना दीपावनार जाणवा ॥

यदुक्तं ॥ पावयणी ॥ १॥ धम्मकहि ॥२॥ वाई ॥३॥ नेमितिउ ॥ ४ ॥ तवसीय ॥५॥ विद्या ॥ ६ ॥ सिद्धोयं ॥७॥ कइ ॥८॥ अठेव प्रभावग्गभणीय ॥१ ॥

प्रवचनीके० ॥ वर्त्तमानकाले जे सिद्धांतादिकनो यथार्थ अर्थजाणवो ॥ ते प्रवचननो प्रथम प्रभावक ॥ १ ॥ धर्मकथा नंदिषेणनी परे ॥ बीजो प्रभावक ॥ २ ॥ वाद करीने यथार्थपणे जीनसासननी उन्नत्ति थाय ॥ ते वादी त्रीजो प्रभावक ॥ ३ ॥ जीनसासनने निमित्ते निमित्त कहे ॥ ते भद्रबाहूनी परे निमित्तक चोथो प्रभावक ॥ ४ ॥ क्षमासहित तपस्वी पंचमो प्रभावक ॥ ५ ॥ विद्याके ०॥

मंत्रने जोगेजिनसासनने दीपावे जेम वयर स्वामी, एम छठ्ठो विद्या पुरुष प्रभावक ॥६॥ सिद्धके ०॥ अंजनादिक प्रयोगे करीने ॥ जिनसासन दीपावे ॥ कालकाचार्यनी पेरे ते सिद्ध पुरुष प्रभावक सातमा ॥ ७ ॥ कइके ०॥ कविश्वर जे नव नवां काव्य करी राजादिक रीझवे धर्म दीपावे ते आठमा कवि प्रभावक ॥ ८ ॥ ए आठ प्रभावक जाणवा एम तीर्थ जात्रा कल्याण महोच्छव, दिक्षा महोत्सव प्रमुख करीने जिनशासन दीपावे ते पण प्रभावक कहीए.

भूषणके० ॥ सम्यक्तनां पांच भूषण जाणवां ते, वंदन, पच्चख्खाण प्रमुख जैन क्रिया विषे डाह्यापणुं ॥ तथा कुशलपणुं ॥ ते प्रथम भूषण ॥ १ ॥ बहु श्रुत गीतार्थादिकनुं सेववुं ते तीर्थ सेवारूप बीजुं भूषण ॥ २ ॥ जे गुरु देवनी भक्ति करे ते भक्तिरुप त्रीजुं भूषण ॥ ३ ॥ जे देवतादिकनो चलाव्यो चले नहि ए अचलरूप चोथुं भूषण ॥ ४ ॥ जे थकी घणा जीव धर्मनी अनुमोदना करे ते प्रभावनारूप पांचमुं भूषण ॥ ५ ॥

लक्षणके० ॥ सम्यक्तनां पांच लक्षण जेणे करी सम्यक्त ओलखाय ते लक्षण कहीए जेम अग्निनुं लक्षण न्यायशास्त्रने मते ॥ उष्णस्पर्शत्वं ॥ अग्नीत्वं धुम्रलिंगत्वं ॥ अग्नीनुं लक्षण ते उष्णस्पर्श जाणवो अने अग्निनुं लींग ते धूम्र जाणवो, तेम सम्यक्तनुं लक्षण ते समसंवेगादिक पंच जाणवाने कहे छे. उपशम जे पोताना वेरी उपर पण प्रतिकुलपणुं चिंतवे नहि, ते उपशम एवुं लक्षण कहीए कोइक वादी केहेछे के श्री भगवती सूत्रना सातमा शतके ॥ नवमा उद्देसाने विषे ॥ वारुण नामावर्णागनट्ठ ॥ श्रीचेडा महाराजना सेवक कोणिकनी लडाइ मध्ये ॥ आशुरु ते जावमीसी मीसीमांणके०॥

कोप करीने वेरीने हण्यो दिसे छे ॥ सम्यक् दृष्टि श्रावक वारव्रत धारी छठ छठने पारणे करतां पण समरूप लक्षण तो जणातुं नथी; जो अंतरंग उपशम होत तो पंचेंद्रिय मनुष्यने हणता नहि तेने सिद्धांतिक उत्तर देछे जे, तें कह्युं ते साचुं पण सांभलजो. वारुण नामावर्णांग नटुआने अंतरंग उपशम न होत तो एक अवतारीपणे सौधर्म देवलोके उपजत नाहि, जे पंचेंद्रियनो घात कर्यो ते तो अनुतानुवंधि क्रोधादिक पणे नथी कर्यो, जो अनुतानुवंधि क्रोधादिकपणे कर्यो होत तो एकावतारीपणे सौ धर्म देव लोके उपजतनहीं ए काले करीने निश्चय अंतरंगे उपसमरूप लक्षण छे यद्यपि सम्यक्तद्रष्टी तथा मिथ्याद्रष्टी ए वे जणा सरखी क्रिया करे तो पण सम्यक्तद्रष्टी शुभ फल पामे अने मिथ्याद्रष्टी अशुभ फल पामे जुओ ते ठेकाणेवर्णांग नटुओ मनुष्यनो घात करीने एकावतारी सौधर्म देवलोके पहोतो अने तेनो वेरी मनुष्यनो घात करी नरकादिकने विषे पहोतो, इहां परिणामनो भेद जाणवो. जेवो जेवो परिणाम होय तेवो कर्मनो वंध पडे ए सम्यक्तनुंज अंतरंग उपशमरूप लक्षण जाणवुं ॥ १ ॥ हवे वीजुं लक्षण संवेगरूप ॥ संवेगं० ॥ मोक्षनो अभिलाष इच्छा कहीए । संवेगत्व नामकिक्षा आभिलापत्वं ॥ मितिवचनात् ॥ वली श्री उत्तराध्ययन सूत्रना ओगणत्रीसमा अध्ययनने विषे प्रथम ए पूछ्युं ॥

॥संवेगेणं भंते॥ जीवेकिंजणईय इ संवेगेणं॥अणुत्तर ॥धम्मस ॥धंजणायई अणुत्तराए धम्मसधाये॥संवेगह-व्वामागत्छ ॥ इयनंताणं ॥ बंधिकोह मानमायालोभे ॥ षवेईनवत्वकम्मनबंधई ॥ तपवइपंचणमित्छत वि-

सेहिकाउणंदंसणाराहरो॥ भवेदंसणवि सुद्धाए ॥ अत्छेगइएतिणेव भवगाहणेणं सिज्झईबुज्झई दंसणसोहिएअंविसुधाए तंचंपुणो ॥ भवगहणंनाईकम्मे ॥१॥

संवेगेणंके० ॥ संवेग मोक्षा भिलापरूप ॥ सम्यक्तनुं लक्षण ते अंगीकार करीने जीवशुं ॥ किंजणइके० ॥ शो गुण प्रगट करे ॥ ए प्रश्न ॥ एनो उत्तर दे छे ॥ संवेगेणं अणुत्तरं ॥ धम्मसद्धंजणअइके० ॥ जेनी उपमा न होय ॥ अणुत्तरं एहवि धर्मके० ॥ श्रुत धर्म तथा चारित्र धर्मने विषे श्रद्धा ते धर्म करवाने विषे अत्यंत अभिलाष उपजावे, अणुतरा एह धम्मसधाए संवेग हवामां गछइके० ॥ उत्कृष्टि सुत चारित्र धर्मना संवेग हवंके० ॥ सिघ्र आगच्छतीके उत्कृष्टो संवेग मोक्षाभिलाप प्रत्ये पामे, त्यारे उत्कृष्टी दर्शननी आराधना करे. देवगुरुनी भक्ति अत्यंत करे, जे श्री आरिहंत भगवंतनी वधामणी लाव्यो तेने साढीबार लाख सोनइया आप्या, श्री आरिहंत जीनने वण दीठे एटलुं धन खर्च्युं तो श्री अरिहंत जिनने दीठे तो केटलुं धन खर्च्युं हशे ? जेम कोइक देश मुलक जमाडे, ते मध्ये शाकमां १०१ एकसोने एक रुपीयानां मरचांनुं खरच थाय, तो त्यां सुखडीनो शो सुमार रह्यो तेम त्यां साढीबारलाख सोनइमा वधामणी आपी तो बीजा धन खरच्यानी शी वात कहेवी. श्री उदायन प्रमुखे तो श्री आरिहंत भगवंतनी देशना सांभलीने तत्काल चारित्र लीधुं. श्री श्रेणीक तथा श्रीकृष्ण वासुदेव प्रमुख पोताना भोग कर्मने उदये चारित्र लेइ न शक्या, तोपण संवेग गुण वधे थके चारित्रनी बहु मानताए करीने जे कोई चारित्र ले तेनी घणो पेरे साहाय करे. इत्यादिक गुण आवे थके अनुतानुबंधि क्रोध मान माया लोभनो क्षय करे ॥ नवंचक मन बंधिके० । पापानु बं

धी कर्म नवां न बांधे ॥ तप चइयं छणंमित्छ त.विसोहि काउणं दंसणा राह ए भवंतिके० ॥ संवेगप्रतयउसंवेगनीमित्तिउ ॥ मिथ्यात्वनी शुद्धि करीने दर्शननो आराधक थाय ॥ दंसण सोहिए यणंवसुथाई ॥ अछगइए तेणेव ॥ भवगाहणेणं ॥ सीझइ बुझइके० ॥ दर्शननी शुद्धि करीने ॥ विशुधाएके० ॥ अत्यंत निर्मलपणे केटलाक तेज भवने विषे सिद्ध बुद्ध थइने मोक्षे जाय ॥ दंसणसोहिएयण ॥ विशुधाए चपुणो नयमहणंनाइक्रमइए ॥ दर्शन शुद्धि करीने त्रीजो भव उलंघे नहि ॥ १ ॥ ए सम्यक्तनुं संवेगरूप बीजुं लक्षण जाणवुं ॥ २ ॥ त्रीजुं लक्षण सम्यक्तनुं निर्वेदपणुं. निर्वेद ते संसारने बंधीखानारूप जाणे,

नीवेएणं भंत्तेजिवेकिं जणजईनी वेएणंदिवमांणु ॥ सतेरीत्छिए सुकामे भोगेसुनिवेय मागछइ सव्वविस ॥ एसुविरजई ॥ सवविसए ॥ सुविरजमांणे ॥ आरंभ परीचायकरेइ ॥ आरंभ परिचाय करेमांणे ॥ संसार मगावुछुदइ सिद्धेमगोपडीवनेंपभवई ॥

जीवने निर्वेद गुण ते देवादिक भोगनो त्याग करीने, संसार मार्गना उदय वध करीने, सिद्ध मार्गने अंगीकार करे; एह सम्यक्तनुं लक्षण त्रीजुं निर्वेद ॥ ३ ॥ सम्यक्तनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा, द्रव्य थकी भाव थकी आत्मानी अने परनी एम च्यार भेद थाय, ते केम ॥ आत्मानी द्रव्य अनुकंपा ॥ १ ॥ पोताना आत्मानी भाव अनुकंपा ॥ २ ॥ पर आत्मानी द्रव्य अनुकंपा ॥ ३ ॥ पर आत्मानि भाव अनुकंपा ॥ ४ ॥ पोताना आत्माने क्रोधादिके करीने विषयादिकने प्रयोगे करीने आपघाते मरे ते द्रव्य अनुकंपा, पो-

ताना आत्मानी न करी । पण पोताना आत्मानी द्रव्य हिंसा करी वस्तुगते तो क्रोधे करीने मरे, तेणे पोताना आत्मानी; द्रव्य अने भाव अनुकंपा न करी केवल पोताना आत्मानी द्रव्य अने भाव ए बे भेदे हिंसा करी ॥ जे कोइक जीवव्रत पच्चखाण राखवाने काजे आपघात करीने मरे तो व्यवहार नयने मते द्रव्य हिंसा पोताना आत्मानी करी. निश्चय नये तो पोताना आत्मानी द्रव्य भावे अनुकंपाज करी, वली जे कोइ लोक विरुद्ध काम करे ए लोकने विषे अपजश निंद्यादिक तथा ताडनादिक पण पामे तेणे पोतानी द्रव्य अनुकंपा न करी, जे भय पामीने लोक विरुधादिक काम न करे, तेणे पोतानी द्रव्य अनुकंपा करी ए द्रव्य अनुकंपानो प्रथम भेद ॥ १ ॥ पोतानी भाव अनुकंपाते देवगुरु धर्मनी परीक्षा करीने साचो धर्म अंगीकार करे, खोटो धर्म छोडे, जेम शुकदेव परिव्राजक सुदर्शनादीकनी परे वली पोताना व्रत पच्चखाण श्रीआरिहंत भगवंतनी आज्ञाए पाले तथा कष्ट पडे पण मूके नहिं तेने पोतानी भाव अनुकंपा कहिये, ए बीजो भेद ॥ २ ॥ हवे पर जीवनी द्रव्य अनुकंपा कहे छे, जे छ कायना जीवना बाह्य प्राण उगारवा, ते द्रव्य अनुकंपा कहीये ॥ ३ ॥ जे साधु महा पुरुष छे ते तो पोताना आत्मा सरखा छक्कायना जीवने जाणे छे, तेने उगारवानी घणी ज खप करे छे, तेने द्रव्य परदया कहिये, तथा भावपर दया ते जे पर जीवने समकितादिक धर्म पमाडीने मोक्ष पहोचाडुं, एवा जे अध्यवसाय तेने भाव अनुकंपा कहीये ॥ ४ ॥ ए चोथु अनुकंपा लक्षण जाणवुं ॥ ४ ॥ हवे आस्ता लक्षण पांचमुं जे वर्त्तमानकाले पंचांगीभाव सम्यक्त प्रकारे सदहे जे अरिहंत भगवंते भाव प्रकाश्यो ते सर्व प्रमाणे छे, एवुं मन वचन कायाये करीने सद्दहवुं तेहने अनु-

सारे प्रवर्त्तवुं ए पांचमुं लक्षण ॥ ५ ॥ एटले समकितना पांच लक्षण कह्यां, तथा लिंग पग पूर्वे कह्यां छे. अतिशे रागे सिद्धांतनु सांभलवुं तेने लिंग कहीए ए लिंग लक्षणनो भेद जाणवो ॥

छविहाजयणाके० ॥ अरिहंत भगवंतनी प्रतिमा मिथ्यात्वीए ग्रही होय तेने वंदनादिक न करवुं, ए यतना कहीए, तेना छ प्रकार छे, ते क्रिया ॥ वंदन ॥ १ ॥ नमन ॥ २ ॥ दान ॥ ३ ॥ अनुप्रदान ॥ ४ ॥ आलाप ॥ ५ ॥ संलाप ॥ ६ ॥ ए नामे छ यतना जाणवी. वंदन ते बे हाथ जोडवा वंदन कहीए ते न करवुं ॥ १ ॥ नमन ते अन्यतिर्थादिकने ॥ धर्मबुद्धि देखीने मस्तक न नमाववुं ॥ ते नमन ॥ २ ॥ दान ते भक्तिए करीने दान देवुं नही ॥ ३ ॥ वारंवार अन्य तीर्थादिकने धर्म बुद्धि सुपात्र जाणीने दानदेवुं, ते अनुप्रदान कहीए ते न करवुं ॥ ४ ॥ अनुकंपादिकने हेतुये दानदेवुं निषेध नथी ॥ ४ ॥ मिथ्यादृष्टिने कारणविना अण बोलावे बोलाववुं ते एकवार बोलाववुं ते आलाप कहीए ॥ ५ ॥ वारंवार बोलाववुं ते संलाप कहीए ॥ ६ ॥ ए छ यतना कहि ॥

हवे छ आगार कहीए छीए. ए सम्यक्तमां छ आगारे करीने सम्यक्त्व भागे नहि, बाह्य मिथ्यात्व करतां थकां भागे नहि ते ॥

रायाभियोगेणं ॥ १ ॥ गणाभियोगेणं ॥ २ ॥ बलाभियोगेणं ॥ ३ ॥ देवाभियोगेणं ॥ ४ ॥ गुरुनीग्गहेणं ॥ ५ ॥ वीतीकंतारेणं ॥ ६ ॥

राजानगर धणि ॥ १ ॥ गण ते नात प्रमुख लोक समूह ॥२॥

चोरादिकनो हठ ते बल ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि देव इत्यादिकनो अभियोगके० ॥ तेने प्रयोगे करीने मिथ्यात्वनो आचार करे तो सम्यक्त्व भागे नहि. मिथ्या दृष्टि माता पिता कुलाचार्यने, निगहके० पराभवे करीने, व्रत्तिके० आजीवीका, कंतार अटवि रोगादिक ॥ दुःखे पीडाणो थको मिथ्यात्व शेवे ॥ गाथा ॥ आगमतु ॥ इति आख्यो मिथ्या मिति विभेदक ॥ १४ ॥ अनाचार सेवे पण मन थकी न सेवे, ए छ आगारे सम्यक्त भागे नहि, नगरने रखोपाकत्व जे कोट सरखा छ आगार जाणवा ॥ ६ ॥

हवे सम्यक्त्वनी छ भावना केहे छे. मूलभूत ॥ १ ॥ द्वारभूत ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाभूत ॥ ३ ॥ निधिभूत ॥ ४ ॥ आहारभूत ॥५॥ भावभूत ॥ ६ ॥ चारित्ररूप धर्मस्याके० ॥ चारित्र धर्मरूप वृक्षतुं मूल ते सम्यक्त्व छे ॥ १ ॥ धर्मरूप नगरनुं बारणा सरखुं सम्यक्त्व जाणवुं ॥ २ ॥ धर्मरूप मंदिरनुं पाया सरखुं ते सम्यक्त्व जाणवुं ते प्रतिष्ठाभूत्त तृतीय ॥ ३ ॥ जेम चक्रवर्त्तिना निधान मांहे सर्व जातनां रत्न छुटां होय, ते सर्वे रत्ननी जात निधानमां समाय, तेम मूलगुण उत्तरगुणरूप छुटां रत्न सरखा गुण ते सम्यक्त्व निधि सरीखुं मननेविषे भाववुं ॥ ४ ॥ जेम सर्व वस्तुनो आधार पृथ्वी होय, तेम सर्व गुणनो आधार एक सम्यक्त्व छे, ते आधारभूत ॥ ५ ॥ जेम अमृतादिक रसनो आधार ते कलसादिक भाजन होय, ते श्रुताशिलादिकनो रस ते सम्यक्त्वमां रहे एम ए छ भावनाए करीने नित्य सम्यक्त्वनी भावना भावे. ॥ ६॥

हवे आत्मानां स्थानक कहे छे. प्रथम स्थानक जे आत्मा-छे, शरीरथकी भिन्न असंख्यात प्रदेशी, ज्ञान, दर्शन चारित्र वीर्यमय. ॥ आकार अनाकार रूप उपयोगमय, एवो आत्मा प्रत्ये शरीर भिन्न एवा अनंता आत्मा व्यक्ति भेदे तजीए. सि-

द्ध संसारीरूप एकज आत्मा ते कारण माटे श्रीठाणांगे एगे आया ॥ इति वचन प्रमाणात् ए प्रथम स्थानक ॥१ ॥ वीजुं स्थानक नित्यके ०॥ आत्मा नित्य छे ॥ द्रव्यार्थिकनये ॥ अतित अनागत ॥ वर्त्तमानकाले अविनासी छे पर्यायार्थिकनये तो देवता मनुष्यादिक पर्यायनो अनित्यपणे अनित्य छे. ए वीजुं स्थानक ॥ २ ॥ त्रीजुं स्थानक ए आत्मा कर्त्ता छे स्वकृत कर्मणाके ०॥ पोताना सुख दुखरूप कर्मनो कर्त्ता ए आत्मा छे. ॥ ३ ॥ तथा पोताना करथा कर्मनो भोक्ता छेके०॥ भोगवनारो पण एज आत्मा छे ॥ ४ ॥ पांचमुं स्थानक मुक्ति छे, ते जीव आठ कर्मरहित थाय त्यारे मुक्ति कहीए ॥ ५ ॥ वहु स्थानते मुक्तिनुं सार ते ज्ञानदर्शन चारित्र छे, तेने आधारे आठ कर्म क्षय करीने मोक्ष जाय ॥ ६ ॥ ए छ स्थानक मूक्तिनां जाणवां.

हवे समकितना पांच आतिचार कहे छे संकाके ०॥ संशय ते वे प्रकारे एक देशशंका ॥ १ ॥ वीजी सर्वशंका ॥ २ ॥ जे देशशंका ते श्रीअरिहंत भगवंतनी प्रतिमा । मोक्षनुं साधन छे के नथी, ए देशशंका ॥ सर्वशंका ते श्रीवीतरागनो धर्म खरो हशे के खोटो? ए सर्वशका ॥ १ ॥ कांक्षाके ०॥ परमतनो अभिळाष कांक्षा कहिए ॥ वितिगिच्छाके०॥ ए करुं छुं ते आगळ फल हशे के नहि होय । अथवा साधुनुं मलिनगात्र देखीने दुगंच्छा करवी ते विगिच्छा कहीए ॥ अन्यं संशाके०॥ मिथ्यात्वीनी प्रसंशा करवी नहि. ॥ ४ ॥ संस्तवके ०॥ मिथ्यात्वीनो परिचय करवो नहि ॥ ५ ॥ ए पंच अतिचार साहित सम्यक्त्व जाणवुं ॥ हवे समकितनी दश रुची कहे छे ॥ त्यां पहेली निसर्गरुचि केहे छे, निश्चय व्यवहारनये करी जीव अजीव नवतत्व जाणी आश्रव त्यागे, संवरलहे, वीतरागे कह्या जे भाव ॥ ६ ॥ द्रव्य ते द्रव्यक्षेत्र माळना भावशुं

जाणे, नामादि चार निक्षेपा जाणे, सद्दहे, आपणी बुद्धि शुं सद्दहे, वीतरागनी भाषा भावतह्यत्ति छे, एवी सद्दहणा, ते निसर्गरुचि कहीये. ॥ १ ॥ हवे उपदेशरुचि कहे छे, जे एज नवतत्व, छ द्रव्य, गुरु उपदेस शुं जाणीने सद्दहे ते उपदेशरुचि कहीए ॥ २ ॥ हवे आज्ञारुचि कहे छे, रागद्वेषमोह जेना गया होय, अज्ञान मटयुं होय अने जे अरिहंत देवे आज्ञा कहि ते माने ने सद्दहे, ते आज्ञारुचि कहीए ॥ ३ ॥ हवे सूत्ररुचि कहे छे. जे सूत्रनां नाम नंदिसूत्रथी लखीए छीए.

॥ अहवात्तं समासउ ॥ दुविहंपन्नंतं ॥ तंजहा ॥ आवसयंच ॥ आवसय ॥ वयरीतंच ॥ आवसयं ॥ वयरीतंदुविह ॥ आवसयं ॥ वइरीतं ॥ आवस्सय ॥ वयरितं ॥ दूविहंपन्नतं तंजहाकालीयं ॥ उकालीयं सेउकालियं ॥ अणेगावहं ॥ पणतंतं ॥ दसवेयालियं ॥ कप्पिआ ॥ १ ॥ कप्पीयं ॥ २ ॥ चूलकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महाकप्पसूयं ॥ ४ ॥ उवाइयं ॥ ५ ॥ रायप्पसेणियं ॥ ६ ॥ जिवाभिगमो ॥ ७ ॥ पन्नवणा ॥८॥ महापन्नवणा ॥९॥ पमायपमायं ॥१०॥ नंदि ॥११॥ अनुयोगद्धाराइं ॥ १२ ॥ देविंदत्थओ ॥ १३ ॥ तंदुलवेयालीयं ॥ १४ ॥ चंदाविजयं ॥ १५ ॥ सुयभति ॥ १६ ॥ पोरसि मंडलं ॥१७॥ मंडलप्पवेसो ॥१८॥ विद्याचरण विणच्छीओ ॥ १९ ॥ गणि विद्या ॥२०॥ ज्ञाण विभत्ति ॥ २१ ॥ मरणविभत्ती आयवीसोहि

॥ २३ ॥ वियरायसुयं ॥ २४ ॥ सलेहणासुयं ॥ २५ ॥ व्यवहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरणविसोहि ॥ २७ ॥ आउरपचखाणं ॥ २८ ॥ महापचखाणं ॥ २९ ॥ एवमाइशेकिं तंकालिअं ॥ तंजहा ॥ उत्तर झयणाइं ॥ १ ॥ दस्याकंल्पो ॥ २ ॥ व्यवहारो ॥ ३ ॥ नीसिहं ॥४॥ महानीसिहं ॥ ५ ॥ इसिभासियाइं ॥ ६ ॥ जंबुद्विप पन्नति ॥ ७ ॥ दिवसागरपन्नति ॥ ८ ॥ सुरपन्नत्तीचंद पन्नत्ती ॥ ९ ॥ खुडीयावीमाणपवीभत्ती ॥ १० ॥ महलीयाविमाणपवीभत्ती ॥ ११ ॥ अंगचूलिया ॥१२॥ वंगचूलिया ॥१४॥ व्यवहार चूलिया ॥१५॥ अरणोववाए॥१५॥वरणोववाए ॥१६॥गरुलोववाए॥१७॥धरणोववाए ॥ १८ ॥ वेसमणोववाए ॥ १९ ॥ वेलंधरोववाए ॥ २० ॥ देविंदोववाए ॥ २१ ॥ उठाणसूए ॥२२॥ समुठाणसूए ॥ २३ ॥ नागपरीयावलिआणं ॥२४॥ नीरयावलीओ ॥ २५ ॥ कप्पियाओ ॥ २६ ॥ कप्पवडींसियाओ ॥ २७ ॥ पूप्फियाओ ॥ २८ ॥ पुप्फिचूलीयाओ ॥ २९ ॥ वयेहिदेसाओ ॥ ३० ॥ एवमाइतत्छंअंगपवीवं दुवालसवीहं तंजहा आयारो ॥ १ ॥ सुयगडो ॥ २ ॥ ठाणं ॥ ३ ॥ समवाओ ॥ ४ ॥ विबाहपन्नती ॥ ५ ॥ नायाधम्मकहाओ ॥६॥

उपासक दशाओ ॥ ७ ॥ अंतगडदशाओ ॥ ८ अ. णुतरोववाई दशाओ ॥ ९ ॥ वीवागसूय ॥ १० ॥ पन्नावागरणाणं ॥ ११ ॥ दीठीवाओ उआई ॥

तथां ठाणांग मध्ये चार सूत्रना नाम छे, तथा योग विधि मध्ये आठ नाम वधताना जोग छे, नंदी सूत्रे पण एवमाईमए पाठथी उ- पदेशमाला प्रमुख, सर्व तीर्थंकर विराजमान थका जे थया, ते वसु- देव हुंड प्रमुख सर्व आगम मानवा योग्य ॥ हमणां वर्त्तमानकाले ४९ आग्यम छे, तेना नाम कहेछे अगीयार अंगः

॥ आचारांग ॥ १ ॥ सूयगडांग ॥ २ ॥ ठा- णंग ॥ ३ ॥ समवायांग ॥ ४ ॥ भगवती ॥ ५ ॥ ज्ञाता धर्मकथा ॥ ६ ॥ उपासकदशांग ॥ ७ ॥ अंत- गडदशांग ॥ ८ ॥ अनुत्तरोववाइ दशांग ॥ ९ ॥ प्रश्न व्याकरण ॥ १० ॥ विपाकसूत्र ॥ ११ ॥

ए अगीयार अंग जाणवां. वारमुं अंग दृष्टिवाद जेमां चौद पूर्व हतां, पण ते विछेद गयां छे. वार उपांगनां नांम

उववाई ॥ १ ॥ राय पसेणि ॥ २ ॥ जिवाभि- गम ॥ ३ ॥ पन्नवणा ॥ ४ ॥ जंबूदिव पन्नति ॥ ५ ॥ चंद पन्नति ॥ ६ ॥ सुरपन्नति ॥ ७ ॥ कप्पिय ॥ ८ ॥ कप्पवडंसिया ॥ ९ ॥ पुप्फिया ॥ १० ॥ पुप्फ चुलीया ॥ ११ ॥ वन्हि दशाओ ॥ १२ ॥ ए उपांग जांणवां ॥ अथ छ छेदनां नाम कहेछे, व्यवहार ॥ १ ॥ वृह-

त्कल्प ॥ २ ॥ दसा श्रुतस्कंध ॥ ३ ॥ निशीथ ॥ ४ ॥ महा निशीथ ॥ ५ ॥ जित कल्प ॥ ६ ॥ अथ दस पयन्नानां नाम ॥ चौसरण ॥ १ ॥ संथारापयनो ॥ २ ॥ तंडुल वेयालीयं ॥ ३ ॥ चंदाविजय ॥ ४ ॥ गणि विजय ॥ ५ ॥ देविंदत्थुओ ॥ ६ ॥ विरकओ ॥ ७ ॥ गछाचार ॥ ८ ॥ योती करंड ॥ ९ ॥ च्यारमूल सूत्रनां नाम आवस्यक ॥ १ ॥ दश वैकालिक ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन ॥ ३ ॥ ओघ निर्युक्ति ॥ ४ ॥ बे चूलीका सूत्रतेनांदि ॥ १ ॥ अनुयोग द्वार ॥ २ ॥

ए आगम सर्वना जोग छे अने बीजाना जोगनी विधि नथी देखाती. जे एवा जोग मध्ये आव्या छे ते माटे आगम, सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूरणी टिका, ए पंचांगीनां वचन माने, आगम सुणवा भणवानी इछा होय, ते सूत्र रुचि जाणवी ॥ ४ ॥ इहां श्री भगवति नंदि सुत्र मध्ये गाथा छे, जे ॥

सूत्र थोखलो पढिमो बियोनि जुति मिसीओ ॥
तइयोय नीखसेसो ॥ ए सविहि होइ अणुउगो ॥ १ ॥

तथा अनुयोग मध्ये ॥ नियूक्तो अनुगम कह्योछे समवायांगे ॥ सनियूताए ॥ इत्यादिक घणी शाख छे ॥ ते माटे पंचांगीनी श्रद्धा राखे, तेने आराधना छे ॥ ते माटे पंचांगीनी श्रद्धा राखवी, हवे बीज रुचि कहे छे ॥ जे जीव गुरु मुखे ॥ एक पदनो अर्थसुणी अनेक पद सदहे ते बीजरुचि जाणवी ॥ ५ ॥ हवे अभीगम रुचि कहे छे. जे जीव गुरु मुखे सूत्र सिद्धांत अर्थ साथे

जाणे अने अर्थ साथे विचार सुणवानी भणवानी जेने घणी चाहना होय, ते आभिगमरुचि जाणवी. ॥ ६ ॥ हवे विस्तार रुचि कहे छे, छ द्रव्य जाणे, छ द्रव्यना गुणपर्याय, चारे प्रमाण ॥ सर्व नय जाणे ॥ ए नय प्रमाण शुं छ द्रव्य सद्दहे ॥ ते विस्तार रुचि जाणवी ॥ ७ ॥ हवे क्रियारुचि कहे छे. दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, विनय, सुमति, गुप्ति, व्रह्म क्रिया सहित, आत्मधर्म शुं जेने रुचि घणी होय, ते क्रियारुचि जाणवी ॥ ८ ॥ हवे संक्षेपरुचि कहे छे. अर्थमां ज्ञानमां थोडो कहे, घणो जाणे, कुमतमां न पडे, जिनमतमां प्रतित माने, ते संक्षेपरुचि जाणवी ॥ ९ ॥ हवे धर्मरुचि कहे छे. जे पंचास्ति कायनुं स्वरूप जाणे श्रुत ज्ञानने स्वभावे अंतरंग सत्ता सद्दहे ते धर्मरुचि जाणवी ॥ १० ॥ एदसरुचि कही इत्यदि समकितना घणा बोल छे, माटे सडसठ बोले नियम रह्यो नहि. वली समकितना बोल बीजा छे. आगल केटला एक केहेवाशे ॥ इति श्री समकितद्वार ग्रंथो मुनिश्री हूकमचंदजिविरचित्त तृतीयाध्याय परिपूर्णम् ॥ ३ ॥

एटले त्रीजा अधिकारमां समकितनुं स्वरूप देखाडयुं. हवे चोथा अधिकारे देवतत्व ओलखावे छे. शा माटे जे शुद्ध देव ॥ १ ॥ शुद्ध गुरु ॥ २ ॥ शुद्ध धर्म ॥ ३ ॥ ए त्रण तत्वनी सद्दहणा होय तेने समकित कहीए. माटे प्रथम देवतत्व ओलखावे छे. देव ते अरिहंतने कहीए एटले अरिहंत के० ॥ आठ कर्मरूप शत्रुने हण्या ते अरिहंत कहीये, त्यारे शिष्ये प्रश्न कर्युं जे अरिनाम शत्रुने हणे तेने आरिहंत कहोछो, त्यारे राजा प्रमुख घणा लोक शत्रुने हणे छे, तेने आरिहंत कहीए ? एवुं प्रश्न करयुं त्यारे गुरुए कह्युं, हे शिष्य । तें भलुं प्रश्न करयुं. परंतु-तारी सरत स्वजाति विजातिमां पहोची नहि, शामाटे जे ते शत्रुने हणे छे ते कांइ शत्रु नथी, केम जे

शत्रु तो विजाती होय, पण स्वजाति होय नहि, माटे एतो मूर्ख छे जे स्वजातिनो घात करे छे, अरिहंत परमात्माए विजातीनो घात कर्यो छे. त्यारे फरि शिष्य वली बोल्यो. हे स्वामी ? स्वजाति विजातिनी वेंहचण करी पण अमे स्वजाति विजाति जाणता नथी माटे अमारा उपर कृपा करी स्वजाति विजातिनुं स्वरूप ओलखावो. त्यारे गुरु ओलखावे छे. भो शिष्य ! स्वजातिके० ॥ जे पोतानी जातिके० ॥ जेने विषे सरखा गुण छे, सरखां लक्षण छे सरखो स्वभाव छे तेने स्वजाति कहीए, अने विजातिक ॥ द्रव्य पण बीजो, गुण लक्षण स्वभाव पण बीजो, तेने विजाति कहिए. इहां स्वजाति विजातिनी चोभंगी लगावीने देखाडे, स्वजातिने हणे ते पहेलो भांगो ॥ १ ॥ स्वजाति विजातिने हणे ते बीजो विजाति स्वजातिने हणे ते त्रीजो, अने विजाति विजातिने हणे ते चोथो. एनो अर्थः हवे स्वजाति स्वजातिने हणे के० ॥ जेम मोटो मछ नाना मछने गले तेम मछ जोतां तो स्वजाति छे, पण शा थकी हणे छे ? जे क्षुधा वेदनि ते पुद्गलना घरनी छे, ते विजातिने अर्थे स्वजातिने हणे छे, ते केम जे कोइ राजा बीजा राजानुं राज्य लेवा जाय, त्यांहां ते राजाने हणे, ते देशना लोभे राजाने हणे छे, तो जूओ ए प्रत्यक्ष मूर्ख छे, शामाटे जे देश छे ते पुद्गलना भोगमां आवे छे, अने कर्म पोताने भोगववां पडे, अने देश तो विजाति छे, अने राजा स्वजाति छे, ते विजातिने अर्थे स्वजातिनो घात करे छे. ते स्वजातिना बे भेद छे, एक द्रव्य: स्वजाति, बीजो भाव स्वजाति, ते द्रव्य स्वजातिके० ॥ राजाने हण्या ते द्रव्य स्वजाति कहीए, अने राजानी घात कर्याथी लाग्यां जे कर्म ते थकी पोतानो आत्मा संसारने विषे परि भ्रमण करशे ते माटे एने भाव स्वजातिने हण्यो कहीए. ए पेहेलो भांगो. ॥ १ ॥ हवे स्वजाति

विजातिनें हणे तेनो अर्थ कहेछे, स्वजातिके०॥पोतानो आत्मा अनंत गुणे करीने सहित छे, ए जेटला जीव छे ते सर्वे स्वजाति छे, शा माटे जे श्रीऊत्तराध्ययनमां कह्युं छे जे छ लक्षण सर्व जीवमां लाधे ते कीयां ? ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥२॥ चरीत्र ॥३॥ वीर्य ॥४॥ सुख ॥ ५ ॥ उपयोग ॥ ६ ॥ ए छ लक्षण होय तेने जीव कहीए. एटले संग्रह नये सत्ता गवेषतां सर्वे जीव सरखा छे ते ठाणांगमां कह्युं छे ॥ एगे आयाजीवा ॥ एटले सर्वेजीवने एकज गवेख्यो; माटे सर्व जीव सरखा छे, माटे सर्व जीव स्वजाति जाणवा हवे स्वजाति छे ते विजातिने हणे, ते विजाति कयो तेनुं स्वरूप देखाडे छे एटले विजातिके ०॥ बीजी जात छे तेनें विजाति कहीए. ते पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय ॥२॥ अधर्मास्तिकाय ॥३॥ आकाशास्तिकाय ॥४॥ नेकाल ॥५॥ ए पांचमां पुद्गल वर्जित चार, ते तो हणाता नथी. अने पुद्गल विशेषण मिश्रसादिक पुद्गलने हणवानुं काम जरुर नथी. एक मिश्रसापुद्गलने हणवा तेना आठ भेद छे, ते कहे छे, उदारिक वर्गणा ॥ १ ॥ वैक्रिय वर्गणा ॥ २ ॥ आहारक वर्गणा ॥ ३ ॥ तेजस वर्गणा ॥ ४ ॥ भाषा वर्गणा ॥ ५ ॥ उस्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनोवर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए आठ वर्गणानां नाम जाणवां. बे परमाणुं भेला थाए त्यारे द्वणुंक खंध थाय त्रण परमाणुं भेलाथाय त्यारे तणुंक खंध थाय, एम असंख्याते परमाणुंए असंख्यातखंध थाय, अनंतापरमाणुंये अनंताणुंखंध थाय ए सर्व जीवने ग्रहवा योग्य नथी, अने अभव्यथकी अनंतगणा अधिक परमाणुं भेळा थाय, त्यारे एक उदारिकनी वर्गणा लेवा योग्य थाय ॥ एटले एक एकथी अनंतगणी अधिक ॥ एकथकी बीजी, बीजीथकी त्रीजी, एम अनुक्रमे सातमाथकी आठमी वर्गणा

कार्मण नामे वर्गणा अनंतगुणी अधीक मलयाथी जीवने ग्रहवा. योग्य थाय. उदारीक ॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ २ ॥ आहारक ॥ तेजस. ॥ ४ ॥ ए चार वर्गणा वादर छे एमां पांच वर्ण ॥ ५ ॥ वेगंध ॥ २ ॥ पांचरस ॥ ५ ॥ आठफरस ॥ ८ ॥ ए वीस गुण छे ॥ भाषा ॥ १ ॥ स्वास ॥ २ ॥ मन ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए च्यार वर्गणा सूक्ष्म छे, एने विषे सोल गुण छे केमके फरसना एने च्यार होय एटला माटे. तथा एक परमाणुमां पांच गुण होय ॥ वर्ण ॥ १ ॥ एकगंध ॥ २ ॥ एकरस ॥ ३ ॥ वेफरस ॥ ५ ॥ एम पुद्गलना अनेक विचार छे ॥ एमांनो गुण आत्मामां नथी ए पुद्गलमांज छे एटले आत्माथकी भिन्न गुण ठरया छे माटे एने विजाती कहीए. एटले वर्गणानो घात आत्मा करे, ए स्वजाति विजाती घात बीजो भांगो ॥ २ ॥ हवे त्रीजो भांगो विजाति स्वजाति घात नामे, विजातिके० ॥ जे पुद्गल कहेतां जे कर्मदल ते आत्मानी घात करे छे, तेनुं विवरण कहे छे, जे आत्माना आठ गुण छे, जे अनंतज्ञान ॥ १ ॥ अनंतदर्शन ॥ २ ॥ अनंतो अव्यावाध ॥ ३ ॥ अनंतचारित्र ॥ ४ ॥ अटल अवगाहना ॥ ५ ॥ अरूपी गुण ॥ ६ ॥ अगुरुलघु ॥ ७ ॥ अनंतवीर्य ॥ ८ ॥ ए आठ गुण हण्या एटले विजातिये स्वजातिने हण्यो, ए त्रीजो भांगो. ॥ ३ ॥ हवे चोथो भांगो विजाति विजातिने हणे, एटले जेम कोइक पथ्थर प्रमुख भिंतादिक उपरथकी स्वभावे रडी पडयो, नीचे माटीनां वासण प्रमुख पडयां हतां तेनी घात थई एटले पथ्थर पण पुद्गल छे माटीनां भाजन पण पुद्गल छे, एटले विजाती विजातीने हण्यो, ए चोथो भांगो ॥ ४ ॥ ए चोभंगी कही. हवे ए च्यार भांगा मांहथी जे बीजो भांगो छे ते भांगो होय ते अरिहंत परमात्मा कहीए इहां विचार घणो छे, पण ग्रंथ गौरव थाय माटे लख्यो

नथी, हवे एवा जे अरिहंत देव अढारें दूपणे करी रहित तेने जिनेश्वर देव कहीए तथा जिन चैत्याणंके० ॥ श्रीजिनराज रागद्वेष रहीत ते जिन कहीए, तत्सबंधी चैत्यानिके० ॥ प्रतिमा श्रीवीतराग देवनी प्रतिमाने चैत्य कहीए तथानीग्रंथाके० ॥ बाह्य अभ्यंतर गांठ रहित साधु कहीए तेनी थापनाने निग्रंथ कहीए, थापनाचार्यने पण निर्ग्रंथ कहीए, तथा सामायकादिक आगम तथा आदि शब्द थकी संघ साधर्मिकादिकनी भक्ति, बहु मान करवुं. इयूके० ॥ ए जे कह्या अर्हचैत्यादिकने विषे, शंका कांक्षादिक रहित आठ आचार ते सम्यक्त्वनुं साधन जाणवुं. जे जीव भद्रकादिक गुण सहित अरिहंत भगवंतनी प्रतिमाना दर्शन पुजा थकी सम्यक्त्व पामे, तथा साधुना दर्शनादिक थकी तथा तीर्थ जात्रा, ते श्री तीर्थंकर भगवंतना पंच कल्याणक भूमि तथा श्री सिद्धाचल गिरनार प्रमुख माहातीर्थनी जात्रा, तथा साधर्मिकनी भक्ति दिक्षा महोछवादिक, उपधान माळारोपणादिक जिनना महोछव देखीने सम्यक्त्व पामे, जे पाम्या होय ते गुणने वधारे, सम्यक्त निर्मळ करीने चारित्र पामीने यावत् मुक्तिपद पर्यंत साधन थाय, निसंकितके० ॥ देशशंका ॥ १ ॥ सर्व शंका ॥ २ ॥ देशशंका ते वीतरागना मार्गने विषे जे जीवादीक कहेतां० ॥ पदार्थ कह्या ते मध्ये एकदेश ते पाणीने बिंदुए असंख्याता जीव कह्या तथा वासि धानने विषे संख्याता बेरिंद्रिय कह्या, ते शंका न होय तथा जैन मार्गना मतने विषे शंका ते सर्व शंका रहित निःशंकित ॥ वेदाद्योके० ॥ प्रथम आचार ॥ १ ॥ निकांक्षितके० ॥ जे अन्य तीर्थी ते योगी कापडीना धर्मनो अभिलाप, ते रहित ते बीजो आचार ॥ २ ॥ दर्शनस्याके० ॥ धर्मना फळनो संदेह तथा साधुनी दुगंछा निंदा करे ते रहित ॥ ए त्रीजो आचार ॥ ३ ॥

अमूढ दृष्टित्वं कुतिर्थिकना मंत्र चमत्कार देखीने ॥ तथा स्वदर्शनने विषे नय निक्षेपादिक ॥ उत्सर्गापवादादिक अगाध अर्थ देखी मुंझाय नहि ए अमुढ दृष्टि चोथो आचार ॥ ४ ॥ ए चार आचार अंतरंग जाणवा; जो निशंकितादिक बाह्य क्रिया करे तो अनुमान जणाय ॥ ४ ॥ हवे च्यार आचार बाह्य वृत्ति करे ॥ ते कहेछे ॥ जे गुणी ते तिर्थंकरादिक तथा साधु साधवि प्रमुख चतुर्विध संघने गुणी कहीए. तेनी प्रसंशा करवी. जे तीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा भरावत्री, ते गुणी प्रसंशा कहीए. जे श्री तीर्थंकर देव देशांतरने विषे होय तेनी प्रतिमा थापीने ते गुण प्रगट करवा ते ज्यांहां सुधी पोताना आत्माना सम्यक्तादिक गुण वृद्धि पामे यावत् चारित्र गुण अंगीकार करे छे त्यांहां सुधी द्रव्य स्तवनी मुख्यता छे, पछी चारित्र गुण आराधवे करीने विनय वेयावच्चादिक करीने गुणनी प्रसंशा करे, ए प्रवृत्तिरूप पांचमो आचार प्रधान छे. ॥ ५ ॥ जे ज्ञान दर्शन चारित्रना गुण साधतो होय तेने सांहायादिक करवे करीने स्थिर करे श्रीकृष्ण वासुदेव श्रेणीक प्रमुखे, चारित्रनी सहाय करी, एवी उद्घोषणा करावी सांभली छे, ए प्रवृतिरूप छठो आचार ॥ ६ ॥ वाच्छल्यताके० ॥ भक्तिरूप जाणवी. बाह्य प्रति श्री तीर्थंकर भगवंतनी तथा साधर्मीनी यथास्थित पूजा सेवादिक करवी, ते वाच्छल्यतारूप सातमो आचार ॥ ७ ॥ जिनशासननी उन्नत्ति करे, घणा जीव अनुमोदना करे, तथा अमारना पडह वजडावीने जेम दीपावे ते साधु होय, ते उत्कृष्टी तपस्या तथा देशनादिकनी कलाये करीने, अष्ट महा प्रभावक कह्या तेनी पेरे जिनशासन दीपावे, ए प्रभावक नामे आठमो आचार ॥ ८ ॥ समकितना ए आचार कह्या. अष्टो आठ संख्याये सम्यक्तने निर्मलके० ॥ उजलुं करवाने हेते ए

कह्या, ए आठ आचार श्री उत्तराध्ययनना अठावीसमा मोक्ष मार्गाध्ययनने विषे ॥

॥ यदुक्तं ॥

निसंकियनिकंखिय निवितिगित्छा अमूंणआठ १

ए एकत्रीसमी गाथा उववूहके० ॥ गुणवंतनी प्रसंशा करवी, बीजो अर्थ तो लख्यो छे. श्रावकने जिन पूजाके० ॥ श्री वीतरागनी पूजाने विषे, तथा सामायिकने विषे, तथा पोषधे पोसाने विषे, ए आठ आचार यथा योग्ये के० ॥ ज्यां जेवुं घटे त्यां तेवुं जोडवुं, तथा मन वचन कायाना योग करीने श्री वीतरागनी पूजादिकने विषे जोडवा. आदि शब्द थकी प्राणातिपात विरमणादिक बार व्रतने विषे ॥ सकलके० ॥ सर्वे आचार जोडवा जिन पूजायां सम्यक्त्वने विषे तथा बार व्रतने विषे पण यथायोग्ये जोडवुं. एक वीतरागनी पूजाने विषे निःशंकितादिक आठ आचार जोडवा ते केमः ? ॥ श्री वीतराग देवमां ॥ अने श्री वीतरागनी प्रतिमामां कशो अंतरभेद नथी, एवुं शंकादिक रहितपणुं होय ते पुरुष श्री वीतरागदेवनी प्रतिमानी पूजा करे. अहीं शिष्ये प्रश्न कर्युं, जे वीतराग तो अनंत गुणना धणी छे, चोत्रीस अतिशये करीने विराजमान पांत्रीस वाणी गुणना धणी छे, केवलज्ञान भास्कर, इत्यादिक अनेक गुणे करीने सहित छे, अने श्री वीतरागनी प्रतिमामां तो ते मांनो एके गुण दिसतो नथी ? तो तमे कह्युं जे श्री वीतरागनी प्रतिमान श्री वीतरागमां कशो अंतर भेद नथी, तो इहां शंका मनमां ऊपजे छे. इहां शिष्यने उत्तर दे छे, जे हे शिष्य तें साचुं कह्युं, तें भलुं प्रश्न पूछयुं, अभिप्राय जाण्या विना शंका उपजे, ते माटे हुं ए वातना अभिप्रायमां समज्यो नहि, जे अमे कह्युं जे कशो

अंतरभेद नथी ते अभिप्राय सांभळ ॥ जे चोत्रिस अतिशयादि गुण तो भावनिक्षेपामां होय, तेज गुण प्रतिमामां होत तो भावनिक्षेपोज केहेत, प्रतिमा कहेत नहि. कशो अंतरभेद नथी ए जे कह्युं ते जे कोई भव्य जीव भद्रक सम्यक्त्व दृष्टि देवद्रव्य तथा साधु निर्ग्रंथ होय, जे कह्युं ते जे पोताने घरमां उचित्त ॥ मन ॥ वचन ॥ कायानी शक्ति बलवीर्य ॥ १ ॥ बालपंडितवीर्य ॥ २ ॥ पंडित वीर्यरूप शक्ति तथा तेवी पुन्य प्रकृतिने अनुसारे विद्यमान श्रीआरिहंत भगवंतनी प्रतिमानी शेवाभक्ति विनय बहु मान करे, पुन्यानुबंधी पुन्य प्रकृति बांधे तेवीज महा निर्जराए करीने उत्कृष्टपदे वर्त्ते तो जीव सिद्धि पामे, त्यां श्रीवीतरागनी प्रतिमामां कशो अंतर भेद नथी, ए अभिप्राय वचन कह्युं छे. वली जे सरखो गुणने सरखापणुं नहि, एवुं जो एकांते कहे तो मिथ्यात्व थाय, तेतो पूर्वे श्रीसुयगडांगनी साखे कह्युंज छे, तो इहां कशुं कहेवानुं काम रह्युं नथी. वली जो तमे कह्युं जे अतिशयादिक गुण मांहेलो एक गुण दिसतो नथी ते समज्या वगर बोल्यो. श्रीतिर्थंकर भगवंतनी प्रतिमाशं तो निर्विकारने नेत्र प्रमुख संस्थानादिके शैलेसि मोक्ष जावानी अवस्था तेनी मुद्रा, परम उपसम रसनो आकार, श्रीतिर्थंकर भगवंतना शरीरनुं सरखापणुं, तेह प्रतिमा देखीने साक्षात् भगवंतने संभारवानी शक्ति, विषयकषाय त्यागना परिणाम करावबानी कारणता, तथा जाति स्मरण प्रमुख केवल ज्ञानपर्यंत तेने उपजाववानी कारणता, इत्यादिक अनेक गुण श्रीवीतरागनी प्रतिमा मांहे साक्षात् दिसे छे तो केम कहेवाय जे गुण नथी.

॥ यदुक्तं ॥

प्रसमरसनिमग्नं ॥ दृष्टियुग्मं प्रसंनं ॥ वदनकम-

लमंकंकामिनीसंगशून्यं ॥ करयुगमपिधत्ये शस्त्रसंबंध वंध्यं, तदासिजगतिदेवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥

प्रसमके० ॥ उपसमरसने विषे निमग्नके० ॥ व्यापि रह्यां एहवां हे वीतराग ! तारां रुडां नेत्र वलीप्रसन्नके० ॥ निर्विकारी तारुं मुखकमल ताहारो अंकके० ॥ खोलो प्रेमदाना संगेरहित छे, वली तारुं हाथ जोडुं शस्त्रसंबंधे शून्य छे, ते हेतु माटे तारी निर्विकारी प्रतिमा आकारने हेतुए करी त्वंके० ॥ तुं वीतरागके०॥ द्वेष रहित छुं, ते कारण माटे श्रीवीतरागनी प्रतिमा अनेक गुणे करीने सहित छे. जे सम्यग्दृष्टिजीव होय तेने, तथा थोडा भवमां मोक्षे जवुं होय तेने अभेद बुद्धि श्रीतीर्थंकरनी थाय, ते आहार्यारूप कहीए, ए प्रथम आचारनिःसंकितनो ॥ १ ॥ बीजो निकांक्षित परमत अभिलाप रहित पूजामां इत्यादिक आचार, जिनपूजादिक बारव्रतमां जोडवा श्रद्धानके० ॥ श्रावकने प्रथमके० ॥ मनुष्य प्रधान कारण ते जिननी पूजा छे ते द्रव्यभाव स्तवात्मिकके० ॥ द्रव्य स्तवभावरूप पूजा कहीए. द्रव्य स्तव, ते द्रव्य धनादिके, संपदाए करीने स्तवके० श्री वीतरागना छता गुण प्रगट करवा ते द्रव्यस्तव गृहस्थने दान पूजादि दिक्षामहोच्छवादिक सर्व द्रव्यस्तव कहीए. शुद्ध अध्यवसाये करीने क्रिया अनुष्टान करे ते भावस्तव कहीए. वली ते पूजा केवी छे, नव विध धन धान्य वस्तु इत्यादिक तेणे करीने आर्त्तिके० ॥ आर्तध्यान ॥ रौद्रके० ॥ रौद्रध्यान हिंसानुबंधी ॥ १ ॥ मृषानुबंधी ॥ २ ॥ चोरानुबंधी ॥ ३ ॥ परीग्रह रक्षानुबंधी ॥ ४ ॥ इत्यादिक रौद्रध्यानरूपे जे आधी (मननी पीडा) ते रूप बाह्य अभ्यंतररूप, रोगंतके० ॥ हर तिते दूत ॥ एटले परीहरवुं, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान रोगनी टालणहारी पूजा छे.

॥ २९ ॥ भेषजमिवक्के० ॥ जेम रोगने भेषजके० ॥ बहुविधउ औषधनी पेरे सतरभेदि पूजा तथा अष्ट प्रकारी पूजा, सदिष्टाके० ॥ प्रकासि, वीधिवत्के० ॥ विधि सहित दशत्रिकादिके करीने परमेश्वरे प्रकाशी, अनंत तीर्थंकरे पूजा प्रकाशी छे ॥ आभरणोपमात्के० ॥ अलंकारनी उपमा छे.

वली विधि सहित पूजा करवी तेमां दशत्रिकनां नाम कहेछे ॥

तिन्निनिसीहि ॥ तिन्नितिन्नियपयाहिणा ॥ २ ॥ तिन्निचे वयपणामा ॥ ३ ॥ तीविहापूयायतहा ॥ ४ ॥ अवथातिय भावणंचेव ॥ ५ ॥ तिदिसिनिरखणविरइ ॥ ६ ॥ तिविहंभुमिपमज्जणंचेव ॥ ७ ॥ वन्नाइतिअं ॥ ८ ॥ मुद्दातीयंच ॥ ९ ॥ तिविहंचपणीहाणं ॥१०॥

पूजायात्राने विषे पेहेली निसिहिके० ॥ देहराने बारणे घरनो वेपार त्याग करीने पेसे. बीजी निसीहि देहरानो वेपार काजादिकनुं काढवुं, तेनो निषेध. त्रीजी निसीहि पूजाना व्यापारनो त्याग, चैत्य वंदननी वेलाए. ॥ १ ॥ अंजली बंद्धोके० ॥ हाथ जोडवा ॥ १ ॥ अर्ध अंग नमाववुं ॥ २ ॥ पंचांग प्रणाम ॥ ए प्रणामत्रिकं त्रण प्रदक्षणा प्रभुने जमणे पासेथी. ॥ २ ॥ पुष्पादिकने अंगपूजा ॥ १ ॥ निवेदने अंगपूजा ॥ २ ॥ चैत्य वंदनादिक भावपूजा ॥ ३ ॥ चोथोत्रिक ॥ ४ ॥ पींडस्थते छद्मस्थावस्था ॥ १ ॥ पद स्थ ते केवली अवस्था ॥ २ ॥ रुपातित ते सिद्धावस्था ॥ ३ ॥ छद्मस्थावस्थाना त्रणभेद ॥ बाल अवस्था ॥ १ ॥ राज्य अवस्था ॥ २ ॥ सामान्य चारीत्र अवस्था. वचन कल्याणक- मातानी कुक्षे अवतरे ॥ १ ॥ बीजुं जन्म कल्याक ॥ २ ॥ त्रीजुं

दिक्षा कल्याणक ॥ ३ ॥ चोथुं केवल कल्याणक ॥ ४ ॥ पांचमुं निर्वाण कल्याणक ॥ ५ ॥ जे दिवसे मातानी कुक्षे स्वर्गादिक थकी च्यविने अवतर्या, तेज दिवस थकी विशिष्ट पूजनीक थया, त्यां त्रण ज्ञान सहित अवतरे ॥ त्यारे चोसठ इंद्रमलीने अठाइ महोच्छव नंदिश्वर द्विपे जइने पूजा करे, जन्म कल्याणके तो विशिष्ट पूजानो व्यवहार प्रवर्ते, चोसठ इंद्र मलीने मेरु पर्वते एक क्रोड अने साठ लाख कलशे, ते बार जोजनने विस्तारे, एक जोजननुं नालवुं, अढीसेंवार अभिषेक करे, इत्यादिक कारण थकी विशिष्ट पूजनीक थया बाह्य थकी तो लौकिक प्रवर्ते. अत्यंत निर्लेप चारित्रनी प्रवृत्ति होय, त्रिभुवनमां कोइ तीर्थंकर सरीखो न होय ॥ जे लोगुत्तमाणं ॥ इत्यादिक स्तुति लायक एज पुरुष होय एह पुरुषोपुरुषोत्तमना गुणकोणवर्णवीशके ? ते कारण माटे संसारमां पूजनीक छे, ॥ जेनी सेवा भक्ति जन्माभिषेकादिके इंद्रादिक करे छे, पोताना आत्माने उधरवाने वास्ते जाणवुं. तेज भावनाए सम्यग्दृष्टिजीव श्रीतीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमानो अभिषेक करतां बाल्यावस्थाभावे, घरेणुं पेहेरावतां राज्यावस्थाभावे, घरेणुं उतारतां चारीत्रावस्थाभावे, छत्र चामरादिक अष्टमहा प्रतिहार्यनी अपेक्षाए कैवल्यावस्थाभावे, पर्यंकासन काउस्सगान मुद्रानी अपेक्षाए सिद्धावस्थाभावे, ए पांचमुं त्रिक ॥ ५ ॥ श्रीतीर्थंकर भगवंतने देहरे, जात्राए जाय त्यारे उंचुं नीचुं तिच्र्छुं जोवुं नहीं, अथवा पुंठजमणीडाबि दिशे जोवुं नहि, एकज वीतराग उपर दृष्टि थाय, त्रिंदिशा निरखण विरतिरुप छठुंत्रिक. ॥ ६ ॥ प्रभुने खमासमाण देतां त्रणवार भूमि पूजवी ॥ ए सातमुं त्रिक ॥७॥ देव वांदतां सूत्रना अक्षरनुं आलंबन. ॥ १ ॥ अर्थालंबन ॥ २ ॥ वीतरागनी प्रतिमालंबन ॥ ३ ॥ वर्णादियालंबन ॥ ४ ॥ ए आठमुंत्रिक ॥ ८ ॥ चैत्यवंदन करतां योग

मुद्रा ॥ १ ॥ उभा रहीने देववांदतां जिनमुद्रा ॥ १ ॥ जयवीयराय अर्ध केहेतां ॥ निलाड देशे हाथ करीने मुक्तासुक्तिमुद्रा, ॥ ए नवमुंत्रिक. ॥ ९ ॥ जावंती चेइयाइं ॥ १ ॥ जावंति केविसाहू ॥ २ ॥ जयवीयराय ॥ ३ ॥ ए त्रणने प्रणिधान कहीए एकाग्र चित्ते प्रार्थना करे, ए प्रणिधान दशमुं त्रिक । १० ।

॥ वळीबार आधिकारे देववांदवा ते कहे छे. ॥

॥ नमुं ॥ १ ॥ जे अइया ॥ २ ॥ अरीहं ॥ ३ ॥ लोग ॥ ४ ॥ सव्व ॥ ५ ॥ पुखर ॥ ६ ॥ तम ॥ ७ ॥ सिद्धा ॥ ८ ॥ जोदेवा ॥ ९ ॥ उज्जित ॥ १० ॥ चतारि ॥ ११ ॥ वयावचगअधिकार ॥ १२ ॥

नमुथ्थुणं ॥ इति प्रथम अधिकारे भावनिक्षेपोवांद्यो ॥ १ ॥ जेअअइयासिद्धा बीजे ॥ २ ॥ अरिहंत चेइयाणं त्रीजे, एकाजिननी स्थापना ॥ ३ ॥ लोगस्सउज्जोयगरे चोथोनाम जिन ॥ ४ ॥ सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं पांचमे त्रिभूवनना चैत्यवांद्या ॥ ५ ॥ पूख्खरवरदीवड्ढे ॥ छठ्ठे विहरमान जिनवांद्या, ॥ ६ ॥ तमतिमीरपडळ सातमे श्रुतज्ञानने वांद्या ॥ ७ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं आठमे सिद्धनी स्तुति ॥ ८ ॥ जोदेवाणविदेवो ॥ नवमे तीर्थाधिप महावीर स्तुति ॥ ९ ॥ उज्जित स्तुति दशमे ॥ १० ॥ चत्तारि अठ्ठदश दोयवंदिया॥ श्रीअष्टापदना देववांद्या अग्यारमे ॥ ११ ॥ वेयावच्चगराणं ॥ सम्यक् दृष्टिदेवताने स्मरण बारमे अधिकारे ॥ १२ ॥ ए बार अधिकारे देववांदवा ॥ अरिहंत भगवंतनी प्रतिमाना ध्याननुं आलंबन राखवुं ॥ ए बार अधिकार ॥ परंपरागत चाल्या आवे छे जेम श्री आचारांग सिद्धांत परंपरागत चाल्या आवे छे तेमज जाणवुं.

श्री हरिभद्र सूरिश्वर कृत नमुथ्थुणंनी टिका ललित विस्तारनामे छे ते मध्ये नव अधिकार कह्या छे. ॥ जे अइयाजिन चैत्यानि प्रथासमा एकामगमादया सिद्धा ए बीजो अधिकार ॥ २ ॥ उज्जितसियल सिहरे ॥ १० ॥ चतारि अठ्ठदश दोय वंदिया ॥ ११ ॥ ए त्रण परंपरागत जाणवी. एटले ए वार अधिकार कह्या.

वली श्री तीर्थंकर भगवंतने देहेरे चोरासी आसातना टालवी. ते ग्रंथांतर थकी जाणवुं. हवे मूलगभारेदश आसातना टालवी ते कहे छे. ॥

॥ तंजथा ॥ तंबोल ॥ १ ॥ पाण ॥ २ ॥ भो-यण ॥ ३ ॥ वाहण ॥ ४ ॥ मेहूण ॥ ५ ॥ सुयण ॥ ६ ॥ निट्ठुवणं ॥ ७ ॥ मुत्रु ॥ ८ ॥ चार ॥ ९ ॥ जुय ॥ १० ॥ वज्जे जिणनाह जगइए ॥ ६१ ॥

तंबोल ते पानसोपारी देहेरामध्ये खावुं नहि, ॥ १ ॥ पाणी न पीवुं, ॥ २ ॥ भोजन न करवुं, ॥ ३ ॥ पगरखां पेहेरीने देहेरा मध्ये न जवुं ॥ ४ ॥ देहेरा मध्ये मैथुन न सेववुं, ॥ ५ ॥ देहेरा मांहे सुवुं नहि, ॥ ६ ॥ देहेरामांहे थुंकवुं नहिं, ॥ ७ ॥ देहेरामांहे लघुनिति करवुं नहि, ॥ ८ ॥ देहेरामांहे वडिनिति करवी नहिं ॥ ९ ॥ देहेरामांहे जुगटुं प्रमुख रमवुं नहिं ॥ १० ॥ ए दस आ-शातना नित्ये वर्जवी ॥ १ ॥ इत्यादिक पूजानी विधि कहि छे ते ग्रंथांतर थकी जाणवी.

वली इहां शिष्य बोल्यो श्रीतीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा केवे आकारे छे ? ॥ १ ॥ केनी प्रतिष्टीत प्रतिमा वांदवी पूजवी घटीत ? ॥ २ ॥ प्रतिमानुं परिमाण केटलुं होय ? ॥ ३ ॥

प्रतिमाना भरावनार देहेराना करनार कोण अधिकारी होय ? ए चार प्रश्न ॥ ४ ॥ हवे ए चारनो उत्तर कहे छे. प्रतिमा बहु आकारे होय, एक पद्मासन, ॥ १ ॥ बीजी काउस्सगमुद्रा ॥ २ ॥ ए बे आकारे जिननी प्रतिमा होय, एज आकारे श्रीतीर्थंकर भगवंत सैलेसि करणे करीने सकल जोग रुंधि करीने मोक्ष पधार्या, एज स्वरूपने ध्यानमां ध्यावाने. काजे भव्य जीव जिन प्रतिमा भरावे, ए सम्यक् दृष्टिनी करणी छे. वली शिष्ये पुछ्युं जे दिगंवरने गच्छे तो जिनप्रतिमा लिंग सहित नग्न भरावे छे ॥ १ ॥ श्वेतांवर गच्छे तो वस्त्र कछोटो कंदोरो आकाररूप प्रतिमा भरावे छे ते केम ? तेनो उत्तर जे नग्नरूप प्रतिमा करे छे तेने पूछीए, जे तीर्थंकर चारित्र लेइने नग्नपणे विचरता ? तेने नग्नपणे लोक देखता ? जो नग्नपणे देखे तो श्रीतीर्थंकर अतिशय रहित थाय, जो नग्न रहितपणे लोक देखे तो सातिशय तिर्थंकर जाणवा. जेवुं रूप लोक देखे तेवीज प्रतिमा भरावबी घटे छे, ज्यारे साक्षात् तीर्थंकर भगवंत हता, त्यारे तो अपर लोके नग्न दीठा नहोता, ते हवे तो घरघरने विषे नग्नपणे प्रतिमा भरावबा मांडवी, अने लोकोने देखाडवुं ते श्रीतीर्थंकरनी स्तुतिरूप भासतुं नथी. श्रीतीर्थंकरनी फजेतीरूप तथा हांसी सरखुं भासे छे. वली कोइक कहेवा लाग्यो जे प्रतिमा मांहे संपूर्ण अवयवो जोइए. तेने कहीए जे एक लिंगनुं चिन्ह कर्युं एटले संपूर्ण आव्या नहि, बीजा घणा अवयव ओछा रहे छे, ते तो तीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा कहेवाय छे, ते थापना निक्षेपो छे ॥

चतुर्थोमूढ दृष्टित्वं ॥ गुणप्रसंसनवरंयत्स्थी रीणंषष्टो ॥

वाछल्य भक्तिरूपता ते मांहे अवयव आवे नहि, जे कोइ आत्मार्थि डाह्या हो ते विचारी जोजो. इहां मतनुं काम नथी जे प्रतिमा वज्र कछोटासहित देखे छे, नेतो महा शिलवंतनुं चिन्ह महा प्रगट दिसे छे, ते कारण माटे जे वज्र कछोटासहित जे प्रतिमा ते तो तीर्थंकरनी स्तुतिरूप भासे, जो कोइ डाह्या होय ते इहां पण विचारी जोजो, एतो प्रवचन परीक्षाने अनुसारे कह्युं, तत्व तो केवलिगम्य जाणवुं, ए प्रश्ननो उत्तर ॥ १ ॥ बीजुं प्रश्न जे केनी प्रतिष्ठित वांदवी पूजवी घटे ? तेनो उत्तर जे कोइ यति वेषधारी प्रतिमा भरावे, देहरुं करावे, प्रतिष्ठा करावे, पोतानुं द्रव्य खरचीने करावे, ते प्रतिमा वांदवी घटे नहि. जे यतिने त्रिपे द्रव्यस्तव सर्वथा निषेध छे. श्रीमहानिशिथसूत्र मांहे विस्तारीने कह्युं छे, ते माटे निषेध. यद्यपि श्रीतीर्थंकरनी प्रतिमा पूजनीक छे, तो पण वेषधारीनी करावबी ॥

सप्तमस्त्वयमाचारोऽष्टमप्रभावनामय आचारथकीताअष्टौ ॥ सम्यक्तसेव निर्मला

प्रतिमानी पूजादिकनी आज्ञा श्रीतीर्थंकर भगवंत आपे तो बीजा पण साधु जाणे जे साधुने पण द्रव्यस्तवनो जोग छे, ते साधुपणुं मूकीने भ्रष्ट थाय, ते माटे निषेध कर्यो छे. गृहस्थने सम्यक्तनुं कारण छे, बीजुं स्वहस्ते प्रतिष्ठा करी होय, ते प्रतिमानी त्रण नवकार गणीने थापीने पूजादिक घटे, ते कोइ ठेकाणे कयुं संभवे छे, जे दिगंबरनो भरावी प्रतिमा पण श्रीरुषभ देवादिक तीर्थंकरनी थापना छे, ते कारणे साधर्मिपणुं छे, एम सर्वथापणे निषेध करे तो श्रीतीर्थंकर भगवंतनी आशातना थाय. एक वेषधारीनी भरावी प्रतिमा जे होय, ते तो सर्वथा वांदवी

पूजवी निषेध छे, श्रीतीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा पूजनीक अन्य दर्शनीए ग्रहि होय, ते प्रतिमा पण श्रीउपाशक दशांगादिकने विषे निषेध कही छे, बीजा सर्व तीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा पूजनीक कहीए, वली कोइ कहे जे श्रावकनी प्रतिष्ठा करी कही छे, ततो त्रण नवकार गणीने पूजे वांदे ते पण प्रतिष्ठा कहीए. कोइक कारणे विशेषपणुं करे छे, तोपण इत्वर कालनी कहेवाय, गुरुने जोगे यावत्कालिक प्रतिष्ठा करावे ॥

॥ यदुक्तं ॥

जंकिंचि नामतिथ्थं सग्गेपायालिमाणुसेलोए ॥
जाइंजिणबिंबाइं ॥ ताइंसव्वाइंवंदामि ॥ १ ॥

इत्यादिक कह्या थकी जाणवुं. ॥ ए बीजो प्रश्न उत्तर ॥ २ ॥ त्रीजुं प्रश्न ते प्रतिमा केटले प्रमाणे होय ॥ तेनो उत्तर ॥ एक आंगुलथकी मांडीने पांचसें धनुष प्रमाण ॥ प्रतिमा भरावे, जेवी पोतानी शक्ति होय तेवी भरावे, इहां पोतानी कारणशक्ति जाणवी, ए त्रीजुं प्रश्न ॥ ३ ॥ हवे चोथुं प्रश्न ॥ ते कोण अधिकारी पूजवा ने सारसंभाल करवाने ते गृहस्थ अधिकारी द्रव्यस्तवना अधिकारी जाणवा ए चोथो प्रश्न ॥ ४ ॥ वली शिष्ये प्रश्न कर्युं श्री तीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा वांदवी पूजवी योग्य ॥ तेवेज आकारे प्रतिमा बौधना देवनी दीसे छे. एक जनोइने फेरे करीने सर्व फेर जाणवो, ॥

नामनोभेश्रधानां जीन पूजायां समायकेचपोषधे जो जनिया जया जोम्यमाचार सकला अपिद छे ॥

जे ते सोगतादिक नामे सात तीर्थंकर कहे छे, बीजो पण लिंगादिकनो भेद घणो छे ते माटे पूजवा योग्य नहीं. जो साक्षात तीर्थंकर भगवंतनी प्रतिमा होय अने अन्यदर्शनीये गृहि होय तो वांदवी पूजवी निषेध छे, एतो साक्षात अन्यदर्शनानी प्रतिमा छे, भेद जाणवाने काजेज जनोई करी छे, जेम हिंदु मुसलमानने ओ-लखाववाने काजे डावा जमणा जामे बंध करावे छे, तेम इहां पण भेद जाणवाने काजे जनोइ जाणवी ते माटे जैनने बैाधनी प्रतिमा मानवी नहि.

श्री तीर्थंकर भगवंतने देहेरे जात्रादिक जाय, त्यां पंच अभि-गमनसाचवे

॥ यदुक्तं ॥

सचितद्रव्यभूषण सचितपणझाणमाणगतं ॥ ए-
कसाडिउत्तरासण ॥ अंजालिंसिरीभिजिणादिट्ठे ॥ १ ॥

जे सचित्त वस्तु फूल फलादिक पोताने भोगववाने होय तेनो त्याग करवो, जे सचित वस्तुने अभयदान देवानुं होय तथा प्रभुनी भक्तिने काजे लाव्या होय तेने तजवुं नहि, ए प्रथम अभिगमन॥१॥ अचित वस्तु आभर्णादिक सारवस्त्रादिकने तजवुं नहि, ॥ ए बीजुं अभिगमन ॥ २ ॥ मणगतंके० ॥ मननुं एकाग्रपणुं करे ॥ ए त्रीजुं अभिगमन ॥ ३ ॥ एगसाडिके० ॥ एकपटनी पछेडीनुं उत्तरासन करे ए चोथुं अभिगमन ॥ ४ ॥ अंजलिके० ॥ बे हाथ जोडीने माथे चडावे प्रभु जिनराजने दिठे थके, ए पांचमुं अभिगमन. ॥ ५ ॥ ए पांच अभिगमन सर्वने साधारण जाणवां. हवे राजानां पंच अभिगमन कहेछे. एक खड्ग ते तरवार ॥ १ ॥ छत्र ॥ २ ॥

वाहनके० ॥ पगनी पावडी ॥ ३ ॥ सनडंके० ॥ माथानो मुगट ॥ ४ ॥ चामर ॥ ५ ॥ ए पंच चिन्हराजानां मुकीने प्रभु पासे आवे ए अभिगमन ॥ ५ ॥ साधु तथा श्रावकने दिन प्रत्ये उत्कृष्ठुं सात वार चैत्य वंदन करवुं. सम्यक्त निर्मलने काजे, तथा ॥

पडिक्कमणे ॥ १ ॥ चेइय ॥ २ ॥ भोयण ॥३॥ चरीम ॥ ४ ॥ पडिकमण ॥ ५ ॥ सुयण ॥ ६ ॥ पडिबोहे चेइयवंदण साहूण सत्तवारा होइ अहोरत्त ॥१॥

प्रभातकाले विसाल लोचन रुप चैत्य वंदन करवुं ए प्रथम॥१॥ चेईयके० ॥ श्रीतीर्थंकर भगवंतने देहरे जइने नित्ये चैत्य वंदन करवुं, ते जोगवाइ न होय तो इशान खुणे श्री श्रीमंधर स्वामीने सनमुखे चैत्यवंदन करवुं. ॥ २ ॥ भोयणके० पच्चखाण पारती वेलाए चैत्यवंदन करीने सझाय करीने पच्चखाण पारवुं, पछी आहार लेवो. ॥ ३ ॥ चरीमके० ॥ आहार लेइने पछी चैत्यवंदन करीने पाणी पीवुं ॥ ४ ॥ पडिक्कमणके० । संध्याये पडिकमणुं करतां, तथा नमोस्तु वर्द्धमानाय ए बेनुं एक पडिक्कमणानुं चैत्य वंदन गणवुं ॥ ५ ॥ सुयणके० ॥ पोरसी रात्रीनी वेलाए चउकसाय केहेवुं ए छहुं चैत्य वंदन ॥ ६ ॥ पडिबोहेके० ॥ पाछली रात्री ए जागीने कुसुमिणनो काउत्सर्ग करीने चैत्यवंदन जगचिंतामणिनुं करवुं. ॥ ७ ॥ एह चैत्य वंदन साहुणके०॥ यतिने साधुने अहोरात्री मांहे करवुं. जे सम्यक् दृष्टिजीव श्रावक जघन्य त्रण काले पूजा करे त्रणकालेचैत्य वंदन करे, एकवार पडिकमणु करे ते पंचाचार चैत्यवंदन करे, जे बे टंक पडिकमणुं करे तेने सातवार चैत्यवंदन थाय, ए गृहस्थनी विधि. जे देहरे चैत्यवंदन करवुं ते पुरुष होय ते प्रभुजीने जमणी दिसे बाजुये रहीने चैत्यवंदन करे, स्त्री होय ते डावी

बाजुए रहीने चैत्यवंदन करे, श्रीतीर्थंकर भगवंतनो मह्य मोटो प्रसाद होय तो पोताना साठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदन करे, जे साठ हाथथकी ओछो नव हाथथकी अधिक ते सर्व मध्यम अवग्रह मांहि जाणवुं. नानुं देहरुं तथा घरनुं देहरुं होय त्यां उत्कृष्टा एक हाथ वेगलां जघन्य अर्द्धहाथ वेगलां रहीने चैत्यवंदन करे ॥

भेखजमीवंसंदिठा विधिवत्परमेश्वरेप्राज्ञोपधोपवासादेरासरणोपमात्यर ॥

एम अनेक विधि सहित श्रीदेवाधि अने देवनी पूजा श्रावकोने कही छे. ॥

॥ तंजथा ॥ वरपुप्फ ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ अक्खय ॥ ३ ॥ पइवो ॥ ४ ॥ फल ॥ ५ ॥ धुव ॥ ६ ॥ निर पतेहे ॥ ७ ॥ नेवज वीहाणे हिय जिणपुयाअठ्ठहाभीणया. ॥ १ ॥

वरक, उत्तम जातिनां फुल, जाइ जुइ प्रमुखनां फुल ॥ १ ॥ गंधके० ॥ बरास कपूर प्रमुख ॥ २ ॥ अक्खयके० ॥ अक्षत चोखा ॥ ३ ॥ पइवोके० ॥ दीवो ॥ ४ ॥ फलके० ॥ नालिएर प्रमुख ॥ ५ ॥ अगर प्रमुखनो धूप ॥ ६ ॥ निरपतिहके० ॥ जलना भरया कलसे करीने पूजा करे ॥ ७ ॥ नैवजविहाणेहियके० ॥ नैवेद्य सुखडी प्रमुखे पूजा करे ॥ ८ ॥ जिण पूजा अठ्ठहा भणीया ॥ ए अष्ट प्रकारी पूजा ॥ जीनके० ॥ श्री वीतरागनी पूजा आठ प्रकारे ज्ञानवार्णादिक कर्मने क्षय करवाने

काजे श्रावक एवी भावना करे. एम सत्तरभेदे संजम आराधवाने अर्थे सत्तरभेदि पूजा करे ॥

तंजथा ॥ नवणं ॥ १ ॥ विलेपणं ॥ २ ॥ चखुजुअलंच ॥ ३ ॥ पूप्फारोहणं ॥ ४ ॥ मालारोहणं ॥ ५ ॥ वणया, रोहणं ॥ ६ ॥ चूंणारोहणं ॥ ७ ॥ जिण पूगवाणं पूरस्ताधज प्रगट नमित्याध्याहार्य ॥८॥ आहारणा रोहणं ॥ ९ ॥ पूष्पगेहं ॥ १० ॥ पूप्फपगरो ॥ ११ ॥ आर्त्तिमंगल पइवो ॥ दिवो ॥ १२ ॥ धुवरकेवानेवज्फलविहाणं ॥ ढोवणय ॥ १४ ॥ गीयं ॥१५॥ नटं ॥ १६ ॥ वज्ज ॥ १७ ॥ पुयाभयाइमेसेनं ॥ २३ ॥

प्रथम पूजा नवण, ते जले करीन अभीषेक करवो ॥१॥ विलेवण अंगमिके० ॥ अंगने विषे केसरचंदने पूजा करे ए वीजो भेद, ।२। चखूजुअलंके० ॥ त्रीजी पूजा चक्षूनि तथा अंगलूहणा ३ त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ चोथो वास पूजा ॥४ ॥ पूप्फारोहणंके० ॥ वर्णकहणंके० ॥ छूटां फुलनी आरोहणंके० ॥ चढाववुं पूजवुं ॥ ५ ॥ मालारोहणंके० ॥ फुलनी मालानी पूजा ॥ ६॥ वणियारोहणंके० ॥वर्णके० ॥ पंचवर्ण आंगीनी पूजा ॥ ७ ॥ चूणारोहणंके०॥ वरासादिकनी पूजा ॥ ८ ॥ जिणपूगवाणं ॥ श्रीतीर्थंकर भगवंतने आगल ध्वजनी पूजा नवमी ॥ ९ ॥ आहारणी रोहणंके० ॥ आभर्णनी पूजा मूगट प्रमुखनुं चडाववुं ॥ १० ॥ पूप्फगेहके० ॥ फुलनुं घर ॥ ११ ॥ पूप्फपगरोहके० ॥ फुलनो प्रकार समूह जेम श्रीतीर्थंकर-

नो समोवसरणने विषे ॥ देवता पंचवर्ण फुलनो वरसादवरसावे ते-
मज इहां पंचवर्ण फुलना वर्षादनी पूजा ॥ १२ ॥ आरती मंगल
पइवोके० ॥ आरती उतारवी मंगल मदिप मंगल दीवो ॥ तथा मंग-
लके० ॥ अष्टमंगलीकनो स्वस्तिके० ॥ १ ॥ दर्पण ॥ २ ॥ कुंभ
॥ ३ ॥ भद्रासन ॥ ४ ॥ नंदावर्त्त ॥ ५ ॥ श्रीवच्छ ॥ ६ ॥ वर्द्ध-
मान ॥ ७ ॥ मछयुग्म ॥ ८ ॥ ए तेरमी पूजा ॥ १२ ॥ धुवर
केवानेवजंफलंविहांणढोयणंव्यके० ॥ अगर मनुखनो धूप, नै-
वेद्य, सुखडी मनुखनुं चढाववुं, । फल नालियेर मनुखनुं चडाववुं ।
ए चौदमी पूजा ॥ १४ ॥ गितके० ॥ स्तवना ॥ १५ ॥ नटके०॥
नाटक पूजा ॥ १६ ॥ वजंके० ॥ वाजित्रपूजा ॥ १७ ॥ पूयाभेया-
इभे सत्तर ॥ ए सत्तरभेदिपूजा करवी ते सत्तरभेद संजमपालवा-
नी भावना करवी इत्यादिक अनेक मकारे सम्यग्दृष्टि श्रावकनुं
सम्यक्त निर्मल करे, ए श्रावकने भेपज सरखी श्रीवीतरागनी पूजा
करवी, ए सम्यक्तनुं लक्षण व्यवहार नयनी अपेक्षाये जाणवुं. साधु-
ने श्रीतीर्थंकर देवनी आज्ञाए नित्ये दर्शन करवुं चैत्यवंदन करवुं,॥
श्रद्धाना मथम पूजा भेपज मित्रसांदिठा ॥ एटले एवी रीते देवतत्व-
नी परीक्षा करीने देवतत्व सद्दहे ॥ इति मथमतत्व ॥ १ ॥ इतिश्री
सम्यक्तद्वार ग्रंथो मुनिश्री हूकमचंदजी वीराचित्ते चतुर्थोध्याय परी-
पूर्णम् ॥ ४ ॥

हवे गुरुतत्व ओलखावे छे गुरुके० ॥ साधु ते साधु छठे तथा
सातमे गुण ठाणे होय निश्चय तथा व्यवहारथकी होय तेने साधु
करी सद्दहवुं ए छट्ठे तथा सातमे गुण ठाणे होय ते साधु
तेनुं स्वरूप देखाडे छे हवे छट्ठुं गुणठाणु ममत्तनामा तथा सात-
मु गुणठाणुं अममत्त नामे. ए वेनुं स्वरूप भेगुं देखाडे छे. जे मत्या-
ख्याननी चोकडीनो उदय टल्यो, सर्व विरति मगटी; संयम साधन

माटे पुद्गलिक लेवे अवलंबिपणे ग्रहे, पण पुद्गलने भोगीपणे पुद्गलीक ग्रहे नहीं. स्वरूपरमणि आत्मधर्मस्थिरतारूप सर्व विभाव पर अग्राहकतारूप एवो चारित्रधर्म प्रगट्यो छे. ते साधु उछरंग अपवाद मार्गे पंचमहाव्रत पाले त्यां द्रव्य भाव पंचमहाव्रत सहित पांच समिति, त्रण गुप्ति, दश याति धर्मने पात्रथका निरासीस एक आत्मद्रव्यना रसिया एक आत्मा निर्मल करवाना उद्यमीथका विचरे ते पंचमहाव्रत पाले, त्यां पेहेलुं महाव्रत

सव्वाओपाणाएवायाओविरमण

व्यवहारे छकायना जीवना द्रव्य प्राण ॥ १० ॥ हणे नहीं, हणावेनहीं, हणताने अनुमोदे नहीं, मनवचन काया ए करीने निग्रंथ अने निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्र सुख प्रमुख भाव प्राण पोताना-परना कर्म आवर्णपणे हणे नहि, हणावे नहिं, हणता प्रमुखने अनुमोदे नहिं, तथा बीजे महाव्रते

सव्वाओमुसावायाओविरमणं ॥

द्रव्य ते क्रोधे माने॥ मायाये। लोभे सूक्ष्म वादर ॥ लोकिक तथा लोकोत्तर, जुठुं पोते वोले नहिं, वोलावे नहिं, बोलतां अनु-मोदे नहिं, मन वचन कायाए करीने भावथी सर्व द्रव्यपर्याय नय निक्षेपा यथार्थ जाणपणुं, सत्य भाषणरूप ज्ञान यथाशक्ति साधे, ज्ञान सत्यपणे पाले, तथा वीतरागना आगम प्रमाणेऽर्थ भावे छे. तेनी सज्ञाय करे ते तथा पोताना ज्ञानदर्शन चारित्र निर्मल थाय, ते भाषा वोले. हवे त्रीजा महाव्रते

सव्वाओअदत्तादाणाओविरमणं ॥

जे द्रव्य ते ण तुछ मात्र पण अणदिधो लेवे नहिं, लेवरावे-

नहि, लेवा प्रत्ये अनुमोदे नहि, जे लेवे ते सर्वने कही करीने लेवे, एटले मन वचनकयाए करीने लोकिक चोरी जे संसारनी वर्जि वस्तु चोरी लेवे नहि; अने लोकोत्तर चोरी जे तीर्थकर आणामें जे न लेवानुं कह्युं ते लेवे, ते चोरी करीने भावथी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप गृहण कार्यनो कर्त्ता छे ते प्रभाव साहायकता करी रह्यो छे ए निवारी स्वरूप ग्राहकतापणे परिणमावे, ते अदत्तादान विरमण व्रत थयुं. ते अदत्तादानना च्यार भेद छे, तीर्थकर अदत्त जे तीर्थकरनी आणामां न लेवो कह्यो ते सर्व प्रभाव ते लेवा छे. वीजो गुरु अदत्त जे गुरु परंपरा विना सूत्रना अर्थ कहेवा, त्रीजो स्वामि अदत्त, जे वस्तुनो जे धणी होय तेनी अणदीधी वस्तु लेवी. चोथुं अदत्त ते कोई जीव एम कहेतो नथी, जे माहारा प्राण हणो, अने पोतानी इंद्रिना स्वाद माटे परजीवना प्राण हणे ते जीव अदत्त, तथा प्रशस्त काम करतां कोइ जीवना प्राण घात थाय ते श्री भगवंते हिंसामां गण्या नथी, विनय तथा वेयावच्चमां गण्युं छे. ए द्रव्यभाव अदत्तादान त्रिविधिपणे तजे ॥२॥ चोथो महाव्रत

सव्वाओमिहुणाओविरमण

जे द्रव्यथी पांच इंद्रियना ॥ २३ ॥ त्रेविस विषय सेवे नहि, सेवरावे नहि, मन वचन कायाए करीने विषयनी वांछा न करे, न करावे, करताने अनुमोदे नहि, ने भावथी जे आत्मद्रव्य आत्मगुणनो भोगी छे ते परभावनो भोग ग्रहे, ते भाव मैथुन. ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नहि ते आत्मीक कर्म करवा माटे परभाव साधनपणे ग्रहे, पण अभोगी अग्राहकपणे अरमणिक माने जे आत्मानी भूल छे, एम आत्माने निंदतो थको जे माहरो आत्मा चिदानंदनो भोगी, ते परभाव अनंत जीवे अनंतिवार

लेइ भोगव्यो ते मने ग्रहवो भोगववो घटे नहिं, ए अनंत जीवें अनंतवार भोगवीने छांडयो, ए एटुं चक्षु जल तेहने हुं न भोगवुं एम सर्व परभाव भोगीपणे तजी स्वभाव भोक्तापणे रहेवुं, ते द्रव्य मैथुन, ते करणीरूप तथा रूपीखंध मिल्या जीवने आणंद उपजे. हवे क्षेत्रथी मैथुन ते त्रण लोकने विषे इंद्रिना स्वादनी इच्छा. अने कालथी मैथुन ते दिवस तथा रात्री,भावथी मैथुन रागथी तथा द्वेषथी सर्वथी शेववो नहिं, तेनी वाड नवे पाळवी पेहेलीवाडे जे स्थानके स्त्री पशु पंडक रहे ते स्थानके ब्रह्मचारीए सुवुं नहिं, बीजीवाडे स्त्री साथे हांसी तथा कामकथा करवी नहि ॥ २ ॥ त्रीजीवाडे जे पीठ पाटले स्त्री बेठी होय ते पाटले बे घडी लगी ब्रह्मचारी पुरुषने बेसवुं नाहि, स्त्रीने त्रण महर लगी बेसवुं नहि ॥ ३ ॥ चोथीवाडे स्त्रीनोरूप नजर जोडीने जोइ रहेवुं नहि ॥ ४ ॥ पांचमीवाडे ज्यां स्त्री भरथार कामभोग भोगवता होय त्यां भिंतने आंतरे ब्रह्मचारीने रात रहेवुं नहि ते शब्द काने पडवा देवा नहि ॥ ५ ॥ छठीवाडे गृहस्थपणे जे भोगभोगव्या ते संभारवा नहि ॥ ६ ॥ सातमीवाडे सारो आहार जे थकी काम दीपे ते आहार करवो नहि ॥ ७ ॥ आठमीवाडे अति मात्राये आहार करवो नहि ॥ ८ ॥ नवमीवाडे शरीर शणगार लुगडानो तथा घरेणांनो करवो नहि स्नान उवटणां न करवां एकली स्त्री साथे मार्गमां चालवुं नहि, तथा नानुं बालक बालिकाथी एक सज्याए सुवुं नहि. सात वर्ष पछी, ॥ ९ ॥ हवे पांचमुं महाव्रत

सव्वाओ परीगहाओ विरमणं ।

जे द्रव्यथी परीग्रह सूक्ष्म बादर राखे नहि ॥ रखावे नहि ॥ राखे तेने अनुमोदे नहि जे संजम पाळवा माटे सुखे सझाय थाय

ते माटे उपगरण चउद ॥ १४ ॥ राखे कारणे अधिको जोइए तो गृहस्थना थका वावरे ए स्थविर कल्पिनो व्यवहार छे, ने जीनकल्पि कोइ उपगरण न राखे, अपवादे दश उपगरण राखे. बार कषाय उदयटल्या, तेने छठ्ठे गुणठाणे साधु कहिए पण प्रमाद सेवे निद्रा ॥ १ ॥ विकथा ॥ २ ॥ आहार ॥ ३ ॥ अल्प विषय ॥ १ ॥ अनादिक ॥ २ ॥ ए अल्प सेवे ॥ अनाभोग जाणे ॥ भोगीपणे सेवे नहि ॥ ए छठ्ठा गुणठाणानी स्थिति ॥ ६ ॥ जघन्य एक समय उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त ए गुणठाणे तिन चारित्र छे सामायक, छेदोपस्थापनीय ॥ परीहारविशुद्धि, ए तीन चारीत्र छे तेनो स्वरूप परभाव त्यागे स्वरूप एकत्व, ते चारित्र कहीए ते मध्ये जे तजवा योग्य भाव तजे ते द्वेष विना, अने रत्नत्रयी जे आत्म धर्म ते ग्रहे, स्वधर्म माटे, पण लोकिकादिक इष्टता राग विना, एवो सम परिणाम ते सामायक कहीए, तथा जे सामायक मध्ये संज्वना तिव्रोदये जे आकरे अतिचारे अथवा १२ कषायने उदये संजम परिणाम फरसे, ते पूर्व पर्याये छेदीने अभिनव पर्याय निर्मल पर्यायनो अंगीकार करवो, ते छेदोपस्थापनिय कहीए, ते भरत ॥ ५ ॥ तथा ऐरवत ॥ ५ ॥ मध्ये प्रथम चर्मतीर्थंकरना साधुजीने होय ॥ अथवा तीर्थंकर अथवा गणधरजीना शिष्य नव पूर्वथी उपरांत श्रुतवंत ॥ मध्यम वयना ॥ प्रथम संघयणी अढार मासनो उग्रतप तपता अप्रमादी, निंद्रा रहित नव जणा गच्छथकी वाहेर नीकलीने तप करे ते परीहारविशुद्ध चारित्र कहीये, दसमे गुणठाणे शुक्लध्यानी सूक्ष्म लोभनो उदय छे, ते सूक्ष्मसंपराय चारित्र कहीए, तथा सर्वथा कषायनो उदय नथी ते यथाख्यात चारित्र कहीये ते मध्ये ११ मे गुणठाणे उपशांत यथाख्यात छे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मे गुणठाणे क्षायक यथाख्यात छे, हवे सातमुं अप्रमत गुणठाणु लिखीए छीए. छठे गुणठाणे जे भाव साधुजीना कह्या ते सर्वे होय पण पांच प्रमाद न होय, ते माटे अप्रमादिक ए छठे गुणठाणे वर्त्ततो साधु जीन सासनने कामे लब्धि फोरवे, पण सातमे गुणठाणे वर्त्ततो साधु लब्धि न फोरवे, एहनी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्टे अंतर मुहूर्त्तनी छे, छट्ठे तथा सातमे गुणठाणे मलीने देशेउणा पूर्वकोडि रहे, श्रीभगवतिसूत्रे ए वे गुणठाणानी देशेउणी पूर्व कोडिस्थिति जुदी जुदी कही छे ते व्यवहारनय छे, समय तथा वेसमय वच्चे गुणठाणुं पलटे, ते गवेख्यो नथी ते माटे अंतर मुहूर्त्तनी स्थिति कही, छट्ठे सातमे गुण ठाणे समायक तथा छेदोपस्थान तथा परीहार विशुद्ध चारित्र छे तथा सातमे गुणठाणे साधुजी लब्धि फोरवे नहि अने छठा गुणठाणाना साधु जिनसासनने काजे लब्धि फोरवे तेनुं साधुपणुं जाय नहिं, अने उसथ्यादिक पांच प्रकारसेवे तो साधुपणु जाए, केम ? तो के श्री आचारांगादिक मध्ये कह्युं छे, जे हे साधु ! तुं पासथ्थादिकनो संग करीश नहिं एनी साथे श्रेष्टाचार पण करवो नाहि, तथा संसर्ग करवो नहिं तथा तेनी साथे गोचरी तथा विहार पण करवो नहिं एटले सर्वथा प्रकारे एनी संगत करवी नहीं तथा संबोध शित्तरी मध्ये आवश्यक निर्युक्ति मध्ये.

॥ उक्तंच ॥

उसथा ॥ १ ॥ पासथ्था ॥ २ ॥ कुसेलिया ॥ ३ ॥ कुलिंगीया ॥ ४ ॥ सेसदा ॥ ५ ॥ जिनमार्गे अवंदणिजा ॥ १ ॥

एटले ए गाथा मध्ये जिनसासनने विषे वांदवा पूजवा योग्य नहि, तथा श्री उपदेशमालाने विषे कह्युं छे जे एहने वांदे तो समकितनो नाश थाय. मिथ्यात्व लागे, एटले उसथ्थादिक पांच प्रकारना होय तेहने साधु करीने सद्दहवुं नहि तथा वांदवा पूजवा नहि, त्यारे शिष्ये प्रश्न कर्युं. जे स्वामि अमने उसथ्थादिक पांच भेद जे कह्या ते अमे जाणता नथी, ते ओलखावो, ते ओलखावे छे. हवे प्रथम उसथ्थानो भेद कहे छे, जे श्रीतीर्थंकर देवे नव कल्पि वीहार कह्यो छे, ते आठ मासना आठ विहार अने चतुर्मासनो एक विहार एटले त्रीस रात्री उपर एकात्रिसमी रात्र रहे तेने उसथ्थो कहीए. तेवारे वली शिष्य बोल्यो, हे स्वामि! तमे तो त्रीस उपर एकत्रीसमी रात रहे तेने उसत्थो कही बोलावो छो, त्यारे कदापि कोइ ग्लान तथा स्थविर होय ते वारे! तेह थकी विहार केम करीने थाय? तेनो उत्तर दे छे, हे शिष्य! श्री अरिहंत परमात्मा सर्वज्ञ हता तेमनी प्ररुपणामां कोइ वातनो संदेह रहे नहि, सर्वनो मार्ग देखाडयो छे, एटले जे ग्लान तथा स्थविर होय, ने विहार करवानी शक्ति होय नही, यद्यपि एक नगर मध्ये नव उपासरा होय, ते मासे मासे उपासरे उपासरे फरे ॥ एटले पेहेले उपासरे उतर्या होय त्यांहां मास ॥ १ ॥ मास कल्प रहे, उपरांत रहे नहि, बीजे मास कल्पे बीजे उपाश्रये रहे एम अनुक्रमे आठ मास कल्प आठमा उपाश्रये करे, अने नवमो कल्प चार मासनो नवमे उपाश्रये करे ॥ एम नव कल्पी विहार सदाये करे पण कल्प लोपे नहि तथा एटली शक्ति जो न होय ने गाम मध्ये फरवुं ते पण थाय नहि तो एक उपाश्रयना नव भाग कल्पे. एकेके कल्पे अकेको भाग भोगवे, एम नव भाग नव कल्प करीने भोगवे, जेम अरणका आचारजनो अधिकार, संथारापयन्ना मध्ये कह्यो छे तेम इहां जाणवुं.

एटले कल्प लोपे नहि जे कल्प लोपे तेने उसथ्यो कहीए, ॥ ए पेहेलो भेद ॥ १ ॥ हवे बीजो पासथ्थानो भेद देखाडे छे ॥ पासथ्थोके० ॥ जे आचारे ढीलो ॥ जे पांच समिति त्रण गुप्ति इत्यादिक अनेक प्रकारनो आचार छे, ते थकी ढीलो चाले तेने पासथ्थो कहीए ॥ केम ॥ श्री ज्ञातासूत्र मध्ये बीजा स्कंधने विषे श्री पार्श्वनाथजीनी चेलीयो विषे, हाथ पाद कुक्षादिक पखाल्या, ते थकी पासथ्थि केहेवाणी, अने चारित्र विराधीने भुवनपति आदी गतिने विषे गइ, कालि देवि प्रमुख इंद्राणीयो थइ तथा श्री महा निशिथ मध्ये नागिल ने सोमिलनामा वे मित्र छे, एकदिन वे मित्रे विचार कर्यो जे संसार महा अनित्य छे, माटे आपणे चारित्र अंगीकार करीने आपणा आत्मानुं कल्याण करीए, एवुं विचारीने वे जणा घर थकी नीकल्या साधुनो घणी खप करे पण शास्त्रप्रमाणे साधू कोइ हैये वेसे नहि, एम करतां एक साधुनो संघाडो मल्यो ते साधु केवा छे ॥ निरालंबी ॥ निःपरीग्रहि ॥ विषयकषाये करीने रहित, महा शमताना समुद्र इत्यादिक गुणे करीने सहित ॥ तेनी संगते केटलाएक दिन रहीने तेनो आचार विचार सर्व जोयो, ते वारे सोमिल रहीने नागिल प्रत्ये कहे छे, जे हे भाई! आ साधु ठीक छे आपणे एमनी पासे चारित्र लइये, ते वारे नागिल बोल्यो जे ए साधु वांदवा पूजवा जोग्य नथी, तो एनी पासे चारित्र केम लइये ॥ ते वारे सोमिल बोल्यो जे एवा साधु निग्रंथ छे एने विषे एवडो बधो दूषण केम काढो छो ते वारे नागिल बोल्यो ॥ जे एना पंचे महाव्रत भागेलां छे जे पेहेलुं व्रत हरीकायना संघटाथी भाग्युं॥ १ ॥ तेनुं कह्युं त्यारे ना पाडी ॥ २ ॥ त्रीजुं उकरडा थकी राखनी चपटी लीधी ॥३॥ चोथुं गृहस्थना घरनी खाल मध्ये जोयुं ॥ ४ ॥ पांचमे वे मुहपति राखे छे ॥ ५ ॥ एवी रीते व्रत पांच

भाग्यां छे ते वारे सोमिले मान्युं नहि. चारित्र ए साधु पासे लीधुं अने नागिलने साधुनी जोगवाइ मली नहि अने काल पोतानो नजिक आव्यो जाणीने एकांते जइने संथारो कर्यो. ते काल ते समयने विषे भगवंत श्री महावीर स्वामी गामानुग्राम विहार करता त्यां नजीक वन छे तेने विषे समोसर्या. ते वारे भगवंत साधुने कहे छे, हे साधु ! इहां वनने विषे नागिलनामक श्रावके संथारो कर्यो छे एने चारित्र लेवुं हतुं पण साधुनी जोगवाइ मली नहि ने काल नजीक आव्यो जाणीने संथारो कर्यो छे माटे तमे जइने निजमणा करावो.पछी साधुये जइने निजमणा करावी. ते श्रावक काल करीने देवलोके गयो, तो हवे डाह्या होय तो विचारी जो जो जे एवा साधु निग्रंथ हता तेने सूक्ष्म दूषण माटे निषेध्या अने श्रावकनो संथारो भगवंते गणतिमां आण्यो माटे एवुं विचारीने पासथ्थानो संग करवो नहि ए वीजो भेद ॥ २ ॥ हवे त्रीजो कुसिलिया ॥ कुसिलियाके० ॥ सिलनाम जे आचारके० ॥ माठो हिणाचारी तेने कुसिल कहीए. एटले भगवंते परुप्यो जे आचार ते थकी वीपरित तेने हिणाचारी कहीये, एटले भगवाने जे साधुनो आचार परुप्यो छे जे साधु गृहस्थनी संगति करे नहि, तथा मंत्र जंत्र जोतिष्य वैद्यकादि करे नहि, करे तेने पाप श्रमण करीने बोलाव्या छे. गृहस्थादिकनी संगतवर्जि तो वीजुं ते शुं कहेवुं. एटले भगवंते तो नापाडी छे ने पोते एवां काम करे जाय छे तेने कुसिलियो कहीए. ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ हवे चोथो भेद कुलींगीयानो कहे छे. कुलिंगीयाके० ॥ भगवंतनो परुप्यो जे लिंग ते थकी विपरीत तेने कुलिंगीया कहीए एटले भगवंते जे परुप्युं ॥ जे न रंगेजा न धोयेजा ॥ एवो पाठ छे अने जे मीण गली प्रमुखे कपडां रंगे छे तथा मुखे मुहपत्ति बांधे छे ते महा विरूप दिसे छे अने जानवर करतां

पण अवलीरीत दीसे छे. जे घोडा तिर्यंच पंचेद्रि छे तेने खातां तो-वरो चडे छे अने पछी उतरे छे, अने जे दूर्बुद्धि छे तेने खातां उ-तरे छे, पछी चडे छे, एवी अवली चाल छे, तेने कुलिंगिया कही-ए. तेवारे वादि वोल्यो जे ए तो तमे द्वेषे करीने वोलो छो अने ए तो मुखे मुहपत्ति बांधे छे ते वायुकाय न हणाय ते वास्ते वांधी राखे छे, तेनो उत्तर जे तमे द्वेष थकी कहोछो पण साधुने राग-द्वेष होय नही. यद्यपि आज सराग संजम छे वीतराग संजम छे नहि अने सराग संजम छे तेने विषे प्रशस्त रागद्वेष थाय. ते श्रा-वकने तो अप्रशस्त रागद्वेषनी आलोयण कीधी छे पण प्रशस्तनी आलोयण कीधी नथी, एवुं श्रावकोना प्रतिक्रमण मध्ये दिसे छे अने साधु ते अप्रमादि गुण स्थानकने विषे तो रागद्वेष करे नही, प्रमादि गुणठाणे प्रशस्त रागद्वेष करे, ते इरीयावही पडिकम्मे निवारण थवानुं छे. ते श्री भगवती मध्ये जोजो, ने इहां तो य-थार्थ प्ररुपणा करवी तेमां कांइ रागद्वेषनुं कारण नथी, जेम श्री ज्ञाताजी मध्ये नागिला ब्राह्मणीनी अपहेरणा उद्घोषणा करावी तेमां इरियावहिनी आलोयणा आवी नाहि, तो इहां तो एक साधुने कडवुं तुवडुं वोहरावीने मारयो हतो तेनो पण एटलो फजे-तो करयो, तो आतो दुर्बुद्धिपणे संख्याता जीवने धर्मथकी भ्रष्ट करीने मिथ्यात्वने विषे पमाडे छे ते अनंता भवभ्रमण करशे ते माटे जेवुं स्वरूप होय एवुं वर्णवीएतो, वीजा लोक कोइ कुमतमां पडे नहि, ने पडया होय ते पण सुलभवोधि होय ते संत सांभलीने पाछा वले, माटे यथार्थ प्ररूपणा करतां कोइ दूषण छे नहि, जे दूर्लभ वोधि हसे, तेने तो रागद्वेषज भासशे. हवे जे उघाडा मुखे वोलतां वायुकाया जीव हणाय ते कहे छे. शा माटे जे वायुकाया जीवने आठ फरस छे अने भाषावर्गणाना फरस च्यार छे, माटे कांइ च्यार

फरसीयाथी आठ फरसीयो हणाय नहि; किलामणा उपजे पण हणाय नहि, त्यारे वादि बोल्यो जे, भगवतीमां कह्युं छे जे उघाडे मोढे बोले तेने सावद्य भाषा कहीए, तेनो उत्तर जे अमे क्यां कहीये छे जे उघाडा मोढे बोलवुं. पण हणावानुं कहोछो ते खोटुं छे, तथा जे मुहपत्ति बांधी राखे छे, ते क्रिया सूत्रमां कह्युं छे, श्री आचारंगजी मध्ये तो कह्युं छे, जे हे साधु बगासु आवे तथा छिंक आवे तो मोढा आडो हाथ देजे, ते लेखे पण मुहपत्ति बांधवी संभवति नथी, तथा श्रीविपाकसूत्र मध्ये श्रीपूज्य गौतम स्वामि महाराज मृगालोढोने जोवाने गया त्यां मृगावती राणीए कह्युं जे मुखे चोपडो बांधो ते वारे जो मुखे मुहपत्ति बांधी होत तो शा वास्ते कहेत, त्यारे वादि बोल्यो दुर्गंध आवे ते वास्ते नाके देवा वास्ते कह्युं, त्यारे तेनो उत्तर देछे जे विपाकजी मध्ये तो नाक बोलनुं नथी मुखज बोले छे, तमे खोटी जुक्ति शा वास्ते करोछो, कोइ कहेशे जे फलाणानुं मुख तो गोल छे, मोढुं ते होठने कहीए, ते कपाल सुधी कहीए, तो होठनो आकार जोइए तो लांबो होय, पण गोल होय नहि ज्यारे कपाल सुधी ले त्यारे मोढुं गोल बने ॥ ते माटे मुखे चोपडानुं कह्युं त्यारे नाक भेगुं आव्युं ॥ तथा परंपरा पण एमज दीसे छे जे मुहपत्ति मुखे आडी दे, ते वारे नाक उपर चढावे एवुं आजादिन सुधी दिसे छे तो खोटी कल्पना शा वास्ते करोछो ॥ वली जे साधुनुं लिंग छे ते जुदु छे ॥ ते देखाडीए छे॥ एटले जे ओघो बत्रीस आंगुलनो राखे ॥ ते मध्ये चोवीस आंगुलनी डांडी ॥ दश आंगलनी दशी अने अष्ट मंगल आलेख्यो ॥ एवो बनातनो पाटो तेथकी गुंथी दशी ते प्रमाणे वस्त्रनो खंड, ते श्रीनिशिथनी भाष्य मध्ये कह्युं छे, ते उपर कांबलियुं ॥ ते उपर दोरो ॥ दोराना त्रण आंटा बांधवा, एवो बत्रीस आंगुलनो ओघो

अने मुख प्रमाणे मुहपत्ति पोतानी एक वेंत छ आंगुल प्रमाणे चोखूं-
णे सरखी एवी मूहपति, तथा ढिंचण प्रमाणे चोलपटो ते उपर
सूतरनो कंदोरो ॥ ते उपर कपडो जेवो दातारे दीधो होय ते
वो, जे तेने रंगवो नहि तथा धोवो पण नहि, तेना उपर डाबे खभे
कांवली ने डाबे हाथे डांडो तथा डावा हाथे झोली राखवी,
इत्यादिक मानोपेत जे लिंग ते साधुनुं कहीए तेथकी विपरित ते
कुलिंगीया कहीए ते कुलिंगीया जाणीने ए थकी छेटे रहेवुं. कदापि
कुलिंगीयाने साधु जाणी आहार पाणी आपे तो एकांत पापकर्म
बांधे, एवुं श्री भगवतिना आठमा सतके कहुं छे ए अधिकार चो
थो समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सेसदो देखाडे छे एटले सेसदोके०
जहां जेवो तहां तेवो थाय के० ॥ साधु मले तहां साधु जेवो थाय,
ने पासथ्थादीक मले तहां तेवो थाय, तथा आहा छंदो के० ॥ स्वे-
च्छाचारी जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे न चाले केमजे भगवंते कहुं
जे, साधु निमित्त तथा साधवि निमित्त करी विहितिके० ॥ उपा-
श्रय तथा आहार तथा वस्त्र पात्र अथवा उद्देशीने जे कहुं होय ते
साधुने खप लागे नहि, एवी जे भगवंतनी आज्ञा लोपिने पोतानी
इच्छाए चाले पोतानी इच्छाए उपाश्रय प्रमुख करावीने भोगवे ॥ ते
स्वेच्छाचारी जाणीए, इत्यादिक अनेक भेद डाह्या होय ते समजे, ए
पांचमो भेद ॥ ५ ॥ ए उसथ्थादिक पांच भेद जे कह्या ते वांदवा
पूजवा योग्य नहि, त्यारे अजाण रहीने बोल्यो जे रोज साधु क्यां
थकी लावीये, अमने तो धर्मशास्त्रना संभलावनारा एज छे ॥ तेनो
उत्तर ॥ एवुं संभलावेलुं शास्त्र पण खप लागे नहि अने उसत्था-
दिकने वांदतां पूजतां मोक्ष पण मले नहि. जेम कोइक बालकनी मा-
ता मरी गइ अगर परदेश गइ ने बालकने हीजडाने सोंपे ते हीज-
डाने धावण आवे ने बालक जीवतो रहे ? कदापि नहि, पण बाल-

कनी माता मले तो ज जीवतो रहे, के दुधादिक पाय तो जीवतो रहे तेम इहां उपनय मेलवे छे जे बालक माय संसारी जीव अने माता तेम इहां शुद्ध साधु अने हीजडो तेम इहां उसथ्थादिक साधु ॥ जेम दुध तेम इहां धर्म ॥ जे बालकने हीजडाने धवरावे जीवतुं रहे नहि तेम इहां उसत्थादिक पासे धर्म सांभल्या थकी मूक्ति मले नहि वली जो तमे कहुं जे साधुनी जोगवाइ क्यां थकी अमने मले ॥ तेनो उत्तर ॥ साधुनी जोगवाइ चोथे आरे पण घणी दुर्लभ हती ते पासथ्थाना अधिकार मधे नागिलना अधिकारमां कही छे, त्यांहां थकी जाणजो तो जुवो तदा काले पण साधुनी जोगवाइ घणी मुश्केल हती अने सुसाधु पण तदा काले घणा दिसे छे, ते माटे रत्नसाटे कांकरा छेडे बांधे, तेना दाम वटे नही लोकोमां मूर्ख केहेवाय वास्ते जो साधूनी गुरुनी जोगवाइ मले तो वांदवुं, पूजवुं नहीं तो पोताने घेर बेठां शास्त्र सिद्धांतनुं वांचवुं, भणवुं, धर्म ध्याननुं करवुं, तेज श्रेय छे, माटे शास्त्र भणवुं अने उसत्थादिक पांचना मत्तने दुर करीने सुसाधुनी सद्दहणा राखवी ते सुसाधुनुं स्वरूप प्रथम पण कहुं छे, वली संक्षेप मात्र देखाडे छे, एक विध संजम त्यागी के० ॥ एक विध अव्रत ॥ तेनुं लक्षण तेज अग्रानम तेनो त्याग कह्यो छे, द्विविध बंधण राग अने स्नेहनुं लक्षण ॥ द्वेप ते अमितिनुं लक्षण ॥ ते बे बंधण थकी वेगलो छे, त्रिविध डंडेणं ॥ एटले मन थकी डंडाय नहि ॥ वचन थकी डंडाय नहि ॥ काया थकी डंडाय नहि ॥ त्रिविध गुत्तेणंके० ॥ मन ॥ १ ॥ वचन ॥ २ ॥ काया ॥ ३ ॥ ए त्रणने अशुभ माठा वेपारथकी गोपवे छे, तेम सल्लेणंके० ॥ जेम तिरादिकनो घात छातीने विषे साले, तेमज अनाचार हैए साले तेने सल्य कहीए, ते सल्यना त्रण प्रकार एक मायाके० ॥ कपटरूपी सल्य ॥ १ ॥

नियाण सल्यके० ॥ परभवनी इच्छा वांछारूप ॥ २ ॥ अने मिथ्यात्व सल्य अज्ञानपणे ॥ ३ ॥ तेहं गारवेणंके० ॥ गारवके० ॥ अभिमान ॥ एटले ऋद्धि पामीने ॥ ऋद्धिनो गारव करवो ॥ ए ऋद्धि गारव ॥ १ ॥ रसगारव षड्विधरसनुं पामीने अभिमान करवो ए रसगारव ॥ २ । शातागारव मन वचन कायाये शाता पामे ॥ तेम संथारो सज्या सत्कार सन्मान पामीने शातानो गारव करे ॥ तेने शातागर्व कहीए ॥ ॥ ३ ॥ एटले त्रण्ये गर्वथकी विरम्या छे. ॥ तेहं विराणंके० ॥ ज्ञानीनी विराधनाके० ॥ जे ज्ञानी वे अक्षर वंधता भण्यो होय तेनी आशातना करे ॥ तथा कोइ भणतो होय तेने उवेखे ॥ तथा पोथी पांनुं तेनी आशातना करी होय ॥ तेने ज्ञान विराधना कहीये ॥ १ ॥ तथा दर्शन विराधनाके० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका ॥ तथा जिन पडीमाना अवर्णवादादिक प्रकासे ते दर्शन विराधना कहीए ॥ २ ॥ तथा चारित्र विराधनाके० ॥ जे चारित्र लेइने पाले नहि अथवा चारीत्रियाने आशातना करे एने चारित्र विराधना कहीए ॥ ३ ॥ ए त्रणथकी सदाय वेगलो रहे ॥ चउसाएणंके० ॥ जे चार कषाय चारित्रनो घात करवावाला छे, अने साधु केवा छे ॥ ए थकी सावचेत रहे, एना छलथामां आवे नहि, एटले तत् परिणाम रहे तेने क्रोध कहीए ॥ १ ॥ अहंकारीने मान कहीए ॥ २ ॥ कपटीने माया कहीए ॥ ३ ॥ मूर्छा ते लोभ कहीए ॥ ४ ॥ पंचह क्रिया एहंके० ॥ जे व्यापार एना पांच प्रकार जाणवा, कायाथकी जे क्रिया लागे जे अचत्यादिक ते कायक्रिया ॥ १ ॥ दूप्रणिहित कायक्रि ॥ २ ॥ उपतकायक्रि ॥ ३ ॥ मिथ्या दृष्ठि तथा अव्रतसमोर दृष्टनि ॥ १ ॥ प्रमत्तसंयातिने वीजी क्रिया लागे, अने अप्रमत्त संयतिने त्रीजी क्रिया लागे. हवे वीजी क्रिया कहे छे, जे आधिकरणशस्त्र जंत्रतंत्रादिकथ-

की लागे ए अधिकरणकि क्रिया ॥ १ ॥ अने पाउसियाके० ॥ जीव उपर तथा अजीव उपर द्वेषना जे परिणाम तथा मत्सरता ते पाउसियां क्रिया कहीए ॥ ३ ॥ पारितावणीया एके० आपणे तथा परने ताडनातर्जनादिके करीने दुःख उपजावे ॥ ते पारितावणं क्रिया ॥४॥ प्राणातिपातिकी क्रीयाके० ॥ आपणो तथा परनो घात करवो एटले स्वर्गादिक पामवा निमित्ते पर्वतादिक थकी पडीने, आपणा आत्मानी घात करवी, तथा क्रोधादिके करीने परजीवने हणवा ते प्राणातिपातिकि क्रिया ॥ ५ ॥ ए पांच क्रियाथकी बीहीतो रहे जे रखे मने क्रिया लागे ॥ छई जीव नीकायाणांके० ॥ छकाय जीवनी रक्षा करे, सात भय मनमां धारे नहि तेनां नाम कहे छे, आ लोकभय ते मनुष्यादिकथकी ॥ १ ॥ परलोकभय सिंहादिकथकी ॥ २ ॥ आनंदभय धन लोभादिकथी ॥ ३ ॥ अकस्मात्भय अंधकारादिक ॥ ४ ॥ आजीवीकाभय दुर्भिक्षादिक ॥५॥ मरणभय ते मरवानो ॥ ६ ॥ अपितभय उपजवानो ॥ ७ ॥ वली साधु होय ते आठ मद करे नहि ॥ ते किया ॥ जातिमद ॥ १ ॥ कुलमद ॥ २ ॥ रूपमद ॥ ३ ॥ श्रुतमद ॥ ४ ॥ बलमद ॥ ५ ॥ तपमद ॥ ६ ॥ लोभमद ॥ ७ ॥ ऐश्वर्यमद ॥ ८ ॥ वली नवविध ब्रह्मचर्यनो अधिकार आगल पंचमहाव्रतना अधिकारमां कह्यो छे तथा वली दशविध यतिधर्म कहे छे खांति ते क्रोधादिक रहित ॥ १॥ मार्दवते माननो त्याग ॥ २ ॥ आर्जवते मायानो त्याग ॥ ३ ॥ मुक्तिना लोभनो त्याग ॥ ४ ॥ तप ते बारभेदे ॥ ५ ॥ संजम ते आश्रवनो रोध ॥६॥ सत्य ते मृषानो त्याग ॥ ७ ॥ शौच्य ते निर्लेपपणुं ॥८॥ अकिंचन ते धननो त्याग ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्य ते दृढ संजम ॥ १० ॥ नित्ये आराधे ॥ अग्यार श्रावकनी प्रतिमा जाणे; तथा बार साधुनी प्रतिमा तेनां

नाम कहे छे ॥ पेहेली एक मासनी ॥ १ ॥ बे मासनी ॥ २ ॥ त्रण मासनी ॥ ३ ॥ चार मासनी ॥ ४ ॥ पांच मासनी ॥ ५ ॥ छ मासनी ॥ ६ ॥ सात मासनी ॥ ७ सात अहो रात्रिनी ॥ ८ ॥ वली सात अहोरात्रिनी ॥ ९ ॥ सात अहोरात्रीनी ॥ १० ॥ एक अहो रात्रीनी ॥ ११ ॥ एक रात्रिनी॥ १२ ॥ इति साधुनी बार प्रतिमा. हवे पेहेली प्रतिमा वहे त्यारे एक दांति आहारनी, एक दांति पाणीनी. एम सातमी प्रतिमाए सात दांति आहारनी ने सात दांति पाणीनी छे. आठमी पडीमा उतानसेन अथवा पासाभर करे उपसर्ग सहे ॥ ८ ॥ नवमे लुकट, वांका पडेला काष्ठनी परे ॥ ९॥ दशमे गोदोहि आसन अथवा वीरासन करे ॥ १० ॥ अग्यारे छठ्ठ भक्त करी पर्लंवमोजु अहोरात्रि लगे करी काउस्सग्ग करे ॥ ११ ॥ बारमी अठ्ठम भक्त करी एक रात्रि लगे मेषोन्मेष नेत्रे अहोरात्रि रहे ॥ १२ ॥ ए संक्षेप थकी लखी. वली विशेषे जोवुं होय तो दशाश्रुतस्कंध थकी जाणवी. (साधु होय ते सत्तर भेदे संजमना पालक होय. पृथ्विकाय संजम ॥ १ ॥ अप्काय संजम ॥ २ ॥ तेउकाय संजम ॥ ३ ॥ वाउकाय संजम ॥ ४ ॥ वनस्पति काय संजम ॥ ५ ॥ बेरंद्रि संजम ॥ ६ ॥ तेरंद्रि संजम ॥ ७ ॥ चउरंद्रि संजम ॥ ८ ॥ पंचेंद्रि संजम ॥ ९ ॥ अजीव संजम ॥ १० ॥ पेहा संजम ॥ ११ ॥ उवेहा संजम ॥ १२ ॥ पमज्जणा संजम ॥ १३ ॥ पारीठावणीया संजम ॥ १४ ॥ मन संजम ॥ १५ ॥ वचन संजम ॥१६ ॥ काय संजम ॥ १७ ॥ ए सतर भेदे छे. वली वीश असमाधि स्थानक सेवे नहिं ॥ ते कहीए छे ॥ उतावलो चाले नहिं ॥ १ ॥ अप्रमार्जीत ठामे वेसे नहि ॥ २ ॥ दुःप्रमार्जित ठामे वेसे नहि ॥ ३ ॥ धंधसालादिकने विषे रहे नहि ॥ ४ ॥ अधिक आसनादिकने विषे रहे नहि. ॥ ५ ॥ गुरुनो पराभव करे नहि ॥६॥

स्थावर उपघात करे नहि ॥ ७ ॥ भूत उपघात करे नहि ॥ ८ ॥ क्षण मात्र मांहे कोपे नहि ॥ ९ ॥ कदापि कोपे तो घणो काल राखे नहि ॥ १० ॥ पुंठे अवर्णवाद बोले नहि ॥ ११ ॥ जुठो आल आपे नहि ॥ १२ ॥ समीया अधिकर्ण उदिरे नहि ॥१३॥ अकाले सज्झाय करे नहि ॥१४॥ रजखड्यां हाथ पग राखे नहि ॥१५॥ पोहोर रात्रि पछे ताणीने बोले नहि ॥१६॥ मांहोमांहे कलह करावे नहिं ॥ १७ ॥ मांहोमांहे भेद पडावे नहिं ॥ १८ ॥ आथमता लगे जमे नहिं ॥ १९ ॥ दोष टाली आहार लेवो ॥ २० ॥ मुनिराज एवी रीते निर्दोषपणे विचरे. ए थकी वीपरित विचरे तेने असमाधिस्थान सेव्युं कहीए. हवे सवल कर्म ॥२१॥ ते कहे छे ॥ हस्त कर्म करे ॥१॥ मैथुन सेवे ॥२॥ रात्रि भोजन करे ॥३॥ आधा कर्मिक ले ॥४॥ राजपिंड ले ॥५॥ क्रित ले ॥६॥ पामित उछीनो ॥७॥ अभ्याहृत ॥८॥ आछेद्य ले ॥ ९ ॥ पच्चखाण भागे ॥ १० ॥ गण थकी बीजे गच्छे जाय ॥११॥ मास मांहे वेलेप ॥ १२ ॥ मास मांहे मातृस्थान ॥ १३ ॥ आकुदि हिंसा करे ॥ १४ ॥ आकुदि मृषा भांखे ॥ १५ ॥ आकुदि चोरी करे ॥ १६॥ आकुदि कंदमूल खाय ॥ १७ ॥ फूलफल बहुबीज खाय ॥ १८ ॥ वर्ष मांहे गदलेप ॥ १९ ॥ वर्ष मांहे मातृस्थान ॥ २ ॥ सचित संघट सहित हस्तभाजन आहार ले ॥ २१ ॥ (हवे बावीस परीसह कहे छे. खुहा ते भूख ॥१॥ पिवासा ते तरस॥२॥ सित ते टाढनुं सेहेवुं॥३॥उष्ण ते तापनुं सेहवुं॥४॥दंस ते मछरादिकनो॥५॥ अचेलक ॥६॥ अरति ॥७॥ स्त्री ॥८॥ चरिया ते विहार ॥९॥ निसीहीया ॥१०॥सज्जा ॥११॥ आक्रोश ॥१२॥ वध ॥१३॥ याचना ॥१४॥ अलाभ ॥१५॥ रोग ॥१६॥ तृणस्पर्श ॥१७॥ मल ॥ १८॥ सत्कार ॥ १९॥ प्रज्ञा ॥२०॥ अज्ञान ॥२१॥ सम्यक्त्व ॥२२॥ अथ

सुयगडांगाध्ययन श्रुतस्कंध ॥ १६ ॥ पुंडरीकाध्ययन आहारपरिज्ञा ॥ क्रियास्थान प्रत्याख्यान क्रिया ॥ अनाचारश्रुत आर्द्रकुमारना लंदीयाध्ययन ॥ बिश्रुतस्कंधे ॥ ७ ॥ एवं सुयगडांगना ध्यायन ॥ २३ ॥ देव ॥ २४ ॥ तिर्थंकर ॥ अथवा पक्षांतरे ॥ भुवनपति॥१०॥व्यंतर॥८॥ज्योतिषी॥५॥ वैमानिक १ एवं ॥२४॥५॥ हास्य त्याग आलोचि बोले ॥४॥ लोभ त्याग । क्रोध त्याग ॥ २ ॥ व्रत भावना एवं ॥१०॥ धणि कह्या अनुग्रह मागवो ॥ १ ॥ तृणादिकनो अनुग्रह मागे ॥ २ ॥ अवग्रहनी मर्यादा करी रहे ॥३॥ गुरुनो अनुग्रह मागी भात पाणी भोगवे ॥ ४ ॥ साहम्मिकना अनुग्रह मागी रहे ॥ ५ ॥ एवं ॥१॥ पनरे अति सरस आहार न ले ॥१॥ विभुषा न करे ॥२॥ स्त्री सह वस्ती न रहे ॥३॥ एकली स्त्री कने स्थानके न रहे ॥४॥ स्त्रीनां अंगोपांग न जोवां ॥५॥ ए चार व्रतभावना ॥ ५ ॥ एवं वीस, ए चोथो व्रतभावना एवं ॥२०॥ रुडो पाडवो शब्द सांभली रागद्वेष न करे ॥१॥ एवं रूप ॥ २ ॥ गंध ॥ ३ ॥ रस ॥४॥ स्पर्श आश्री रागद्वेष न करे ॥५॥ ए पांचमे व्रत भावना ॥५॥ एवं मली ॥२५॥ भावना, दश श्रुतस्कंध, दशकाल कल्पना छे ॥१०॥ क्षहकाल ॥ ५ ॥ व्यवहारसूत्र दशकाल ॥१०॥ एवं त्रिहुं सुत्र ॥२६॥ काल जाणवा. अथ अणगार गुण ॥ २७ ॥ कहे छे ॥व्रत ॥६॥ पांच इंद्रि जीतवी ॥११॥ भावशूद्ध ॥१२॥पडिलेहणाविशुद्ध ॥ १४ ॥ क्षमा ॥ १४ ॥ वैराग्य ॥ १५ ॥ अकुसल मन वचन कायाने रुंधवो ॥ १ ॥ छकायनी रक्षा ॥ २४ ॥ संजम योगयुक्त ॥ २५ ॥ शितादिक वेदना सहन ॥ २६ ॥ मरणांत उपसर्ग सहन ॥ २७ ॥ इत्यादिक साधुना अनंत गुण छे. श्री उत्तराध्ययन थकी जो जो, एटले एवा गुणे करीने सहित होय तेने गुरु कहीने, सद्दहे ॥ कदापि आ काल तो

दूषम छे, माटे एवा गुरुनी जोगवइ मलवी घणी मुश्केल छे पण कदापि आजने काले पण मुल गुणे करीने सहित जोइए, एटले शुद्ध लिंग आगल कह्या ते प्रमाण होय, अने पंच महाव्रत मूल गुण करीन सहित होय ॥ अने उत्तर गुण सामान्य विशेषे होय तेनुं कांइ जोवानो विचार नहि, शा माटे जे श्री भगवतीजी मध्ये कह्युं छे जे पांचमे आरे वकुश चारित्रिया होशे। एटले वकुश चारित्रके०॥ चारित्र छे ते निर्मल छे पण उत्तर गुणमां दूषण लागे एटले दोष-रूप पडी जे भात ते थकी चारित्र रूप वस्त्र कावरुं थयुं, एने वकुश चारित्र कहीए. एटला माटे आ काले मूलगुणे उत्तरगुणे करीने सहित एवुं चारित्र संभवे नहि, ते माटे मूल गुणे करी सहित होय, वली बेतालीस दोषरहित आहार ले तेने साधुकरी सद्दहवा ॥ ते बेतालीस दोष देखाडे छे ॥ एनी गाथा ६ कहे छे ॥

आहाकम्मु ॥ १ ॥ देसिय ॥ २ ॥ पुइकम्मेय ॥ ॥ ३ ॥ मिसजाएअ ॥ ४ ॥ ठवणा ॥ ५ ॥ पाहूडी-याए ॥ ६ ॥ पाओयर ॥ ७ ॥ किय ॥ ८ ॥ पांमीच्चे ॥ ९ ॥ परीअट्टिये ॥ १० ॥ अभिहडु ॥ ११ ॥ भिन्ने ॥ १२ ॥ मालोहडे ॥ १३ ॥ अछिज्जो ॥१४॥ अणसिठे ॥ १५ ॥ अझोयर ॥ १६ ॥ सोलस पिंडू-ग्गमे दोसा ॥ २ ॥ धाइ ॥ १ ॥ दुई ॥ २ ॥ नि-मित्तं ॥ ३ ॥ आजीव ॥ ४ ॥ वणिमगे ॥ ५ ॥ ति-गीत्छाय ॥ ६ ॥ कोहे ॥ ७ ॥ माणे ॥ ८ ॥ माया ॥ ९ ॥ लोभेय ॥ १० ॥ हवंति दशएण ॥ ३ ॥ पु-व्विंपत्छा संथव ॥ ११ ॥ विझा ॥१२॥ च्छातेय ॥

॥ १३ ॥ बुन्न ॥ १४ ॥ जोगेय ॥ १५ ॥ उप्पायणाय ॥ १६ ॥ दोसा सोलसये मूल कम्मेय ॥ १६ । ४ । संकिय ॥ १ ॥ मखिय ॥ २ ॥ निखित ॥ ३ ॥ पिहीय ॥ ४ ॥ साहरीय ॥ ५ ॥ दायग ॥ ६ ॥ मिस्से ॥ ७ ॥ अपरीणय ॥ ८ ॥ लित ॥ ९ ॥ छड्डिअ ॥ ॥ १० ॥ एसण दोसा दसहवंति ॥ ५ ॥ संजोअणा ॥ १ ॥ पमाणे ॥ २ ॥ इगाले ॥ ३ ॥ धुम ॥ ४ ॥ कारणे ॥ ५ ॥ पढमावसहि बहिरंतरेवा सहे उदव संजोगा ॥ ६ ॥

एनो अर्थ सोल उद्गम दोष लखीए छीए आधाकर्मी ते अतिथीने अर्थे मूल थकी छकायनो आरंभ करी निपायुं आहारादिक ते आधाकर्मि दोष कहीए ॥ १ ॥ उद्देशिक ते मागणहार आवशे एम जाणी ते अर्थे कीधुं ते ॥ उद्देशिक दोष कहीए ॥ २ ॥ पूति कर्म ते आधाकर्मने कारण सहित कीधुं, ते पूति कर्म कहीए ॥ ३ ॥ मिश्रजाति ते कांइ यतिने अर्थे कांइ पोताने अर्थे कीधुं ते मिश्रजाति दोष कहीए. ॥ ४ ॥ स्थापना ते साधुने अर्थे इछा राखे ते स्थापना दोष कहीए ॥ ५ ॥ प्राहुआ ते सुख डीके० ॥ जमणवार आघी पाछी करे ते प्राभृतदोष कहीए. ॥६॥ प्राडुःकरण ते साधु निमिते, अंधारे कांइ छानुं प्रगट करवाने छिद्रादिके करी प्रकाश करे तेने प्राडुःकरण दोष कहीए ॥७॥ करण ते साधु नीमित्ते वेचातु लेइ आपे ते करणदोष कहीए ॥ ८ ॥ प्रामित्य ते उछिनुं साधुने अर्थे लेइ आपे ते प्रामित्य दोष कहीए ॥ ९ ॥ परावर्त्त ते नखर सखर वस्तु कांइ पाळटो

साधुने आपीए ते परावर्त्तदोष कहीए ॥ १० ॥ अभ्याहृत ते अने- रां आमपाडि घरथकी सामुं आणी आपे ते अभ्याहृत दोष कहीए. ॥११॥ उद्भिन ते साधु नीमित्ते कमाड तथा तालुं उघाडी आपे ते उद्भिन दोष कहीए. ॥१२ ॥ मालापहृत ते उंचुं नीचुं तिर्छुं ते थकी लेइने दे ते मालापहृत दोष कहीए ॥ १३ ॥ आछेद ते कुमारादिकनुं खुंचावी लेइ साधुने दिए, ते आछेद्य दोष कहीए ॥ १४ ॥ अनिसृष्ट बेहू त्रिहूंनि वस्तु साधारण मांहे एक दिए ते अनिसृष्ट दोष कहीए ॥ १५ ॥ अध्यवपुरक ते मूल आधणथकी आधिकुं नांखे अमारे साधुजी आवनार छे ते निमित्त ते अध्यवपूर- क ॥ १६ ॥ एटला दोष गृहस्थ कर्त्ता. हवे उत्पादन दोष साधु कर्त्ताना केहे छे ॥ १६ ॥ ए सोले दोष आहारना उत्पादन दोष ते कहिए के जे साधुथकी उपजे. धात्रि ते गृहस्थना वालक रमाडी आपजिं दान ले ते धात्रि दोष कहीए. ॥ १ ॥ दूति ते गामादि संदेशा कह्या दान ले ते दूति दोष ॥ २ ॥ निमित्त ते अतित अनागत कही दान ले ते निमित्त दोष कहीए ॥ ३ ॥ आजिवि- का ते जाति कुलादिक कही दान ले ते आजिविका दोष कहीए ॥ ४ ॥ वनिपक० ॥ आहार निमित्त ब्राह्मणादिकने घेर हुं पण ब्राह्मणादिकनो भक्त छुं एवो थई ले, ते वनिपक दोष कहीए ॥ ५ ॥ चिकित्सा ते वैद्यक कही ले ते चिकित्सा दोष कहीए ॥ ६ ॥ क्रोध पिंड ते विद्यावंत नृप मंत्रादिक वालेदान ले ते क्रोध पिंड दोष कहीए ॥ ७ ॥ मान पिंड ते गृहस्थने अहंकार चडावी- दान ले ते मानपिंड दोष कहीए ॥ ८ ॥ मायापिंड ते मायाये अनेक रूप करी दान ले ते मायापिंड दोष कहीए ॥ ९ ॥ लोभ- पिंड ते सरस आहारने अर्थे सई, घई, फरई, केसरीया मोद- मोदकने अर्थे ते लोभपिंड दोष कहीए ॥ १० ॥ पूर्व पश्चात्

संस्तव ते, पहेलुं तथा पछी गृहस्थनी स्तुति करे तो पूर्व पश्चात् संस्तव दोष कहीए ॥ ११ ॥ विद्यापिंड ते देवतानुं आराधन करे करावे, आहारादिकने अर्थे विद्यापिंड दोष ॥ एवी देवी अदृष्टांतता होय ॥ १२ ॥ मंत्रपिंड ते अदृष्टांत करणादि मंत्र साधे सधावे आहारादिकनेऽर्थे मंत्रपिंड दोष कहीए ॥ १३ ॥ चूर्णपिंड ते आंखनुं अंजनादिक आपी दान ले ते चूर्णपिंड दोष कहीए ॥१४ योगपिंड ते शौभाग्य दौर्भाग्यादिके करी दान लिए ते योगपिंड दोष कहीए ॥ १५ ॥ मूलकर्म ते गर्भ उत्पातादिक करे करावे अने दान लिए ते मूलकर्म कहीए ॥१६॥ ए उत्पादन दोष कहीए ॥ ते साधु थकी नीपजे ॥ ए सोल दोष एवं बत्रीस ॥ ३२ ॥ दोष सर्व मली जाणवा. हवे एषणादोष लिखीए छीए. संकित ते आधा कर्मादिक दोष तणी शंकाए गृहण करे ते संकित दोष कहीए ॥ १ ॥ मखितदोष ते सचित अचित्ते करी खरड्यां ले ते मखीत दोष कहीए ॥२॥ निक्षिप्त ते सचित्त पृढविकायादिक उपर मेलेली वस्तु साधु ले तेने निक्षिप्त दोष कहीए ॥ ३ ॥ पिहितदोष ते सचित्ते करी ढांकि अचित्त वस्तु लिए दिए ते पिहितदोष कहीए ॥ ४ ॥ संहृत ते मोटा भाजनथी नाना भाजने अथवा असुजते लिए दिए ते संहृतदोष कहीए ॥ ५ ॥ दायक ते खंडण पीसणादिक छकायनी विराधना करतां तथा बाल धवरावती उठी अथवा गर्भवती स्त्री लिए दिए ते दायक दोष कहीए ॥ ६ ॥ उन्मिश्र ते सचित फलादिक अचित्त खांडादिक एकठां भेलि लिए दिए ते उन्मिश्रदोष कहीए ॥ ७ ॥ अपरीणित ते कांइक काचुं कांइक पाकुं दान लिए दिए ते अपरीणित कहीए ॥ ८ ॥ लिप्त ते सचित्त अथवा मिश्र वस्तु भीने हाथे तथा लेपवाला हाथे लिए दिए ते लिप्त दोष ॥ ९ ॥ छर्दित ते घृतादिक छांटो पडे लिये

दिये ते छर्दित दोष कहिये ॥ १० ॥ एषणादोष दश होय ते साधुथी तथा ग्रहस्थथी लागे ॥ हवे पांच दोष मालाना केहे छे सं-योजना ते खीर खांड घृत स्वादने अर्थे, एकठा मलि पोशाला मांही अथवा बाहिर ते संयोजनाना दोष कहीए, अप्रमाण ते प्र-माण जेटली ले, तेटलाथी अधिक ले ते अप्रमाण दोष कहीए ॥ २ ॥ इंगाल ते मन मांहे दातारने प्रशस्त रागे जमतो करे ते इंगाल दोष चारित्र वालीलाहाला करे ॥ ३ ॥ धूम्र ते सामान्य अन्न माटे दातारने निंदतो द्वेषे जमतो करे ते धूम्रदोष कहीए ॥ ४ ॥ कारणने क्षुधा वेदनी, अहिं आसन केतां ॥ कारणे आ-हार करे ॥ १ ॥ अथवा आचार्यादिकनुं वेयावच करवाने कारणे आहार करे ॥ २ ॥ अथवा इर्यासमिति पालवाने कारणे आहार करे ॥ ३ ॥ अथवा संजम पालवाने अर्थे आहार करे ॥ ४ ॥ अथवा धर्म ध्यान धारवाने कारणे आहार करे ॥ ६ ॥ ए छ कारण विना आहार करे ते साकर्ण दोष कहीए. उपाश्रय बारणे अथवा मांही रस वधारवा हेतु ए बे एकठां करवां ते संजना जा-णवा ॥ ६ ॥ इत्यादिक एषणा दोषने टाले. मूल गुणे करीने स-हित होय तेने साधु करीने सद्दहे ते बीजो तत्त्व कह्यो ॥ इतिश्री सम्यक्त्व द्वार ग्रंथे मुनिश्री हूकमचंद्जी विराचित्ते पंचमोऽध्याय परीपूर्णम् ॥ ५ ॥

पांचमा अध्यायमां गुरुतत्व ओलखाव्यो, हवे छठा अध्या-यमां धर्मतत्व ओलखावे छे, धर्मतत्व केवो छे अतितकाले पण धर्म-तत्वने आराधीने मुक्ति रूप लक्ष्मीने वर्या, वर्त्तमानकाले पण धर्मतत्वने आराधीने घणा जीव मुक्तिरूप लक्ष्मीने वरेछे, अनागत काले वरशे, ते माटे हे भव्य जीवो प्रथम जे सद्-गुरु देखाडया, तेवा गुरुनी सेवा उपासना करो ॥ पछी तेमनी

पासेथी धर्मतत्व सांभळो, शामाटे के सद्गुरुविना वीजा गुरु धर्मतत्वने यथार्थ ओलखाववा समर्थ नथी, ते माटे जे सद्गुरु होय अने वहू श्रुत होय तेनुं वहूमान भक्ति करवी, अने धर्म तेमनी पासेथी सांभलीने ओलखवो, सद्दहीने आराधवो, आराध्याथकी मुक्तिरुप लक्ष्मी मले, ते माटे हे भव्य जीवो धर्मतत्वनी खप विशेष करीने करजो, ते धर्मना वे भेद एक अणगार धर्म ॥ १ ॥ वीजो आगार धर्म ॥ २ ॥ अणगारके० ॥ साधुनो धर्म तो पांचमा अधिकारमां कह्यो छे अने आगारके० ॥ श्रावकनो धर्म ते कहे छे. ते श्रावकने देशविरति कहीए देशके० ॥ योडुं छे व्रत तेने देशविरति कहीए, तेना वार भेद छे, ते निश्चयने व्यवहारथकी ओलखावे छे, ते प्रथम प्राणातिपात व्रत ॥ १ ॥ प्राणातिपातके० ॥ जीवनी हंसा न करवी, ते जीवना भेद देखाडे छे. हवे जीवके० ॥ चेतना लक्षणो जीवः एटले चेतना लक्षण छे तेने जीव कहीए ते जीवना वे भेद ॥ त्रस ॥ १ ॥ थावर ॥ २ ॥ ते थावरना पांच भेद ॥ पृथ्विकाय ॥ १ ॥ अप्काय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ हवे ते पृथ्वीकायना च्यार भेद सूक्ष्म पृथ्विकाय पर्यासो ॥ १ ॥ अपर्यासो ॥ २ ॥ हवे सूक्ष्मके० ॥ जेनी काया अतिसे नानी छे एटले चर्म दृष्टिगोचर आवे नहीं ए ते केवलीगम्य छे तेना प्राण पर्यासि तथा शरीर वादरमां कहीशुं. हवे सूक्ष्म पृथ्विकायने त्रण लेश्या होय ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ ए प्रमाणे सूक्ष्म पृथ्विकाय अपर्यासा जाणवा ॥ ते चौदराज लोक व्यापि छे. हवे वादर पृथ्विकायना वे भेद ॥ एक पर्यासो ॥ १ ॥ वीजो अपर्यासो ॥ २ ॥ हवे पर्यासि तथा प्राण एनी ओळखाण बतावे छे ॥ फरसेंद्रि ॥ १ ॥ रसेंद्रि ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रि ॥ ३ ॥ चक्षु इंद्रि ॥ ४ ॥

श्रोतेंद्रि ॥ ५ ॥ मनबल ॥ ६ ॥ वचनबल ॥ ७ ॥ कायबल ॥८॥ श्वासोश्वास ॥ ९ ॥ आवखूं ॥ १० ॥ तथा पर्याप्ति छ ॥ आहार पर्याप्ति ॥ १ ॥ शरीरपर्याप्ति ॥ २ ॥ इंद्रियपर्याप्ति ॥ ३ ॥ श्वासोश्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥ ५ ॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ ॥ ए छ पर्याप्ति. हवे पृथ्विकायना जीवने ए दश प्राण मांहेला चार प्राण होय ते कहे छे फरसेंद्रि ॥ १ ॥ कायवळ ॥ २ ॥ श्वासोश्वास ॥ ३ ॥ आवखूं ॥ ४ ॥ ए च्यार प्राण होय तथा छ पर्याप्ति मांहेली च्यार पर्याप्ति होय ते कहे छे, आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ शरीर पर्याप्ति ॥ २ ॥इंद्रियपर्याप्ति ॥ ३ ॥ श्वासोश्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ ए च्यार मांहेथी त्रीजी जे इंद्रियपर्याप्ति वांधे, तेने करणपर्याप्तो कहीए. एटले कोइ जीव करण अपर्याप्तो मरे नहीं करणपर्याप्ति वांध्या पछी मरे, अने जे जीव अपर्याप्तो मरे ते लब्धि अपर्याप्तो मरे, एटले पृथ्विकायनो जीव च्यार पर्याप्तियकी उणो होय त्यां सुधी अपर्याप्तो कहीए. अने च्यार पर्याप्ति पूरी वांधे एने पर्याप्तो कहीये. ॥ हवे वादर पृथ्विकायने च्यार लेश्या होय कृष्ण ॥ १ ॥ नीळ ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ तेजो ॥ ४ ॥ तथा पृथ्विकायने त्रण शरीर होय ॥ औदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥ तथा पृथ्विकायनी अवगाहना आंगुलने असंख्यातमे भागे होय ॥ तथा पृथ्विकायनुं आवखुं ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त ॥ उत्कृष्ट २२ हजार वर्षनुं ॥ हवे अप्कायना पण च्यार भेद सर्वे पृथ्विकायनी परे, एटलो विशेष के उत्कृष्टुं आवखुं ७ हजार वर्षनुं होय ॥ २ ॥ हवे तेउकाय पृथ्विकायवत् एटलो विशेष जे लेश्या त्रण होय क्रश्न ॥ १ ॥ नीळ ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ तथा आउखुं उत्कृष्टुं त्रण अहोरात्रिनुं होय ॥ ३ ॥ हवे वाउकाय पण पृथ्वि कायनी परे, एटलो विशेष के शरीर च्यार होय औदारीक ॥ १ ॥

वैक्रिय ॥ २ ॥ तेजस ॥ ३ ॥ अने कार्मण ॥४॥ तथा लेश्या तेउ-
कायवत् ने आउखुं उत्कृष्टुं त्रण हजार वर्षनुं ॥ ४ ॥ हवे वनस्प-
तिकायना वे भेद, प्रत्येकने साधारण ॥ प्रत्येकना वे भेद पर्याप्तोने
अपर्याप्तो प्रत्येक वनस्पति पृथ्विकायवत् एटलो विशेष के आउखुं
उत्कृष्टुं दस हजार वर्षनुं साधारण वनस्पतिना च्यार भेद सूक्ष्मने
वादर ॥ सूक्ष्मने निगोद कहीए. तेनो विचार लेश मात्र वतावे छे.
एटले चौद राजलोक छे, ते लोकके० ॥ आकाश, ते आकाश एक
आंगुलने असंख्यातमे भागे आकाशना असंख्यात प्रदेश छे ते ए-
केका आकाश प्रदेशे एकेको गोलो छे ते एकेक गोलामां असंख्या-
ति निगोदो छे. एकेक निगोदमां अनंता जीव छे ते केटला ॥ अ-
तित कालना गया समय तथा अनागत कालना जेटला समय ते
थकी अनंत गुणा एक निगोदमां जीव छे हवे ते निगोदिया जी-
वनुं आवखुं ॥ एक श्वासोश्वास जुवान पुरुष निरोगी कायानो
धणी एक सास उंचो लेइने नीचो मूके एटलामां साडा सत्तर भव
करे एटले सत्तरवार जन्मीने मरे, अढारमी वारनो जन्मे वली बीजे
प्रकारे आउखुं वसेंने छप्पन आवलिनो क्षुल्लक भव जाणवो, ते मां-
होमांहे धणी भिडथी दुख भोगवीने मरे छे ते दुखनी वेदना केट-
ली छे ? के सातमी नर्के तेत्रिस सागरोपमनुं आउखुं छे ते तेत्रिस
सागरोपमनां जेटला समय एटलीवार सातमी नर्के उपजे ते तेत्रिस
सागरोपमनुं दुख एकठुं करीये ए थकी अनंत गुणी वेदना एक स-
मये निगोदियो जीव भोगवे छे, ते सूक्ष्म निगोदने अव्यवहार रा-
शि कहिये. अव्यवहार राशिके० ॥ जे जीव वादरमां नथी आव्यो
त्यां सुधी अव्यवहार राशिनो जाणवो, जे जीव वादर राशिमां
एकवार आव्यो तेने व्यवहार राशियो कहीए. तेवारे शिष्य वोल्यो
हे स्वामि व्यवहार राशि तथा अव्यवहार राशिनुं शुं कारण छे,

तेनो उत्तर जे व्यवहार राशिमां आवेलो जीव, ते फरी सूक्ष्म नि-
गोदमां जाय तो जघन्य थकी अंतर्मुहूर्त्त रहे, उत्कृष्टो रहेतो अढी
पुद्गल परावर्त्तन रहे ते उपरांत रहे नहि. अने अव्यवहार राशि-
मां जे जीव सूक्ष्म निगोदमांथी नीकल्या नथी ते जीव अनंता पुद्-
गल परावर्त्तन वहि जशे, तो पण नीकलशे नहि, ते माटे व्यवहार
राशिने अव्यवहार राशि जुदी कहेवी पडे. हवे जेटला जीव इहां
थकी मोक्षे जाय, एटला जीव अव्यवहार राशिमांथी व्यवहार
राशिमां आवे, पण व्यवहार राशि घटे वधे नहि, हवे सूक्ष्म
निगोदना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता तथा बादर निगोदजे कंद मूला-
दिक तेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सर्व पृथ्वि कायवत्
एटलो विशेष के लेश्या त्रण होय; अने बादर निगोदनुं
आउखुं प्रत्येक वनस्पतिवत् अने बादर निगोदनी अवगाहना
एक शरीरे अनंता जीव होय, एटले वनस्पतिनुं स्वरूप
कह्युं एटले पांच थावरना बाविश भेद करी देखाड्या
॥ १ ॥ त्रसना चार भेद ॥ बेरेंद्रि ॥ १ ॥ तेरेंद्रि ॥ २ ॥
चउरेंद्रि ॥ ३ ॥ पंचेंद्रि ॥ ४ ॥ हवे बेरेंद्रिना बे भेद ॥ पर्याप्तो॥१॥
अपर्याप्तो ॥ २ ॥ अलशिया प्रमुख जीव तेने प्राण ॥ ६ ॥ होय ॥
फरसेंद्रि ॥ १ ॥ रसेंद्रि ॥ २ ॥ वचनबल ॥ ३ ॥ कायबल ॥४॥
श्वासोश्वास ॥ ५ ॥ आउखुं ॥६॥ ए छ प्राण तथा पर्याप्ति पांच
होय ॥ आहार, शरीर, इंद्री, श्वासोश्वास अने भाषा पर्याप्ति ॥६॥
तथा लेश्या त्रण होय ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥३॥
तथा शरीर त्रण होय औदारिक ॥ १ ॥ तेजस ॥२॥ कार्मण ॥३॥
अवगाहना बार जोजन, आउखुं जघन्य अंतरमुहुर्त्त, उत्कृष्टु
बार वर्षनुं ॥ १ ॥ हवे तेरेंद्रिनुं कीडी मकोडी प्रमुख बेरेंद्रिवत्
एटलो विशेष जे सात प्राण, एक घ्राणेंद्रि वधे तथा अवगाहना त्रण

गाउनी, आउखुं उत्कृष्ट ओगण पचास दिवसनुं ॥ २ ॥ तथा चउरेंद्रि बेरिंद्रिवत् एटलो विशेष जे प्राण आठ होय, घ्राणेंद्रिने चक्षु इंद्रि वधे, तथा अवगाहना च्यार गाउनी, तथा आउखुं छ मासनुं ॥ ३ ॥ ए त्रणने विगलेंद्रि कहीए, ए त्रणना पर्याप्ता अपर्याप्ता थइने छ भेद थाय हवे पंचेंद्रिना च्यार भेद, नारकी ॥ १ ॥ देवता ॥ २ ॥ तिर्यंच ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ ते नारकीनां नाम ॥ घमा ॥ १ ॥ वंसा ॥ २ ॥ सेला ॥ ३ ॥ अंजण ॥ ४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवति ॥ ७ ॥ ए सातनो पर्याप्ता अपर्याप्ता थइने चउद भेद थाय, हवे देवताना च्यार भेद भवनपति ॥ १ ॥ व्यंतर ॥ २ जोतिषि ॥ ३ ॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ दस भवनपति पंनर परमधामि, सोल व्यंतर, दस तिर्यंच जृंभक दश जोतिषि ते पांचचर अने पांच स्थिर ॥ वैमानिकमां वार देवलोक त्रण किल्विषिया, नव लोकांतिक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, ए सर्व मलीने च्यार निकायना देवना नवाणुं भेद थया, ते नवाणुं पर्याप्ताने ने नवाणुं अपर्याप्ता, सर्व थइने एकसोने अठाणुं भेद थया, ए देवता तथा नारकीनो भावार्थ जीवाभिगमथकी जाणवो. हवे तिर्यंचना पांच भेद, जलचर ॥ १ ॥ थलचर ॥ २ ॥ खेचर ॥ ३ ॥ उरपरि ॥ ४ ॥ भुजपरि ॥ ५ ॥ ए पांच गर्भज पांच सम्मुर्छिम, ए दसना पर्याप्ताने अपर्याप्ता थइने वीस भेद थया. हवे मनुष्यना पांच भरतना, पांच ऐरवतना, पांच महाविदेहना, ए पंनर कर्मभूमिना पंनर भेद; हवे अकर्मभूमिना त्रीस भेद लिखीए छे, पांच हेमवंत क्षेत्रना, पांच हरीवर्ष क्षेत्रना, पांच देव कुरुक्षेत्रना पांच उत्तर कुरुक्षेत्रना, पांच रमणकवास, पांच अरणकवास ए त्रीस अकर्मभूमिना मनुष्य, छप्पन अंतरद्विपना मनुष्य, पंनर कर्मभूमि, त्रीस अकर्मभूमि, छपन अंतरद्विप ए एकसोने एक क्षेत्रना

पर्याप्ताने अपर्याप्ता ए बसेंने बे भेद अने एकसोएक असंनीयाके० ॥ चउद स्थानके उपजे ए पर्याप्ताज मरे, ए त्रणसेंने त्रण भेद. बसेंनेसाठ त्रण गतिना पूर्वे कह्या ते मळी जीवना पांचसेंने त्रेसठ ॥ ५६३ ॥ सहु भेद जीवना, मनुष्यना ने तीर्यंचना तेनो विचार पन्नवणाथकी विशेष जाणवो. इहां तो ग्रंथगौरव थाय ते माटे नाम मात्र लिख्यां ए जीवनुं स्वरूप अजीवने ओलख्या विना जीवनुं स्वरूप बराबर जाणे नहि, माटे अजीवनुं स्वरूप संक्षेपथकी देखाडीए छीए. हवे अजीवना बे भेद, एक रूपी, एक अरूपी, ते अरूपी अजीवना च्यारभेद धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ काल ॥ ४ ॥ धर्मास्तिकाय खंधते चउद राजलोक प्रमाण ॥ १ ॥ देश ते कल्पना मात्र ॥ २ ॥ धर्मास्तिकायनो प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकाय खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ आकाशास्तिकाय खंध ॥ १ ॥ लोकालोक प्रमाण ॥ २ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ लोकाकाश प्रमाण ॥ कालनो एक समय ॥ १ ॥ एनो खंध देश होय नही शामाटे जे एक समयथी बीजो समय मलतो नथी माटे कालनो एकज भेद ॥ ए दश भेद थया ॥ १० ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्य थकी नित्य छे ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय क्षेत्र थकी चउदराज लोक प्रमाण ॥२॥ धर्मास्तिकाय काल थकी अनादि अनंत ॥३॥ धर्मास्तिकाय भाव थकी॥४॥वर्ण, गंध,रस, फरस नथी॥५॥धर्मास्तिकाय गुण थकी ॥२॥ चलण सहाय गुण॥५॥ अधर्मास्तिकाय॥१॥ द्रव्यथी॥२॥ खेत्रथी ॥३॥ कालथी भावथी पुर्ववत् ॥४॥ गुण थकी स्थिर सहाय गुण ॥ ५ ॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकी एक क्षेत्रथकी लोकालोक प्रमाण ॥२॥ कालथकी ॥ ३ ॥ भावथकी ॥ ४ ॥ गुणथकी आवगाहना गुण ॥ ५ ॥ काल द्रव्यथकी ॥ १ ॥ क्षेत्रथी कालथी

॥ २ ॥ भावथी ॥ ३ ॥ गुणथकी ॥ ४ ॥ नवापुराणावर्त्तना गुण ॥ ५ ॥ ए अरूपि अजीवना २० भेद थया, दश भेद पेहेलाकह्या छे ते मली ३० भेद थाय. हवे रूपी अजीवना पांचसें त्रीश भेद कहे छे. वर्ण पांच ॥ ५ ॥ कालो ॥ निलो ॥ २ ॥ पीलो ॥ ३ ॥ रातो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ गंध ॥ २ ॥ सुभिंगंध ॥ १ ॥ दुर्भिगंध ॥ २ ॥ रस ॥ ५ ॥ खाटो ॥ १ ॥ खारो ॥ २ ॥ तिखो ॥ ३ ॥ तमतमो ॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ फरस ॥ ८ ॥ खरखलो ॥ १ ॥ सुंवालो ॥२॥ टाढो ॥ ३ ॥ उनो ॥ ४ ॥ भारे ॥ ५ ॥ हलुओ ॥ ६ । लुखो ॥ ७ ॥ चोपडो ॥ ८ ॥ संस्थान ॥ ५ ॥ ए पचवीश भेद ॥ एक वर्णमां वीस भेद लाधे ॥ वेगंध ॥ २ ॥ पांच रस ॥ ५ ॥ आठ फरस ॥ ८ ॥ पांच संस्थान ॥ ए वीश ॥ २० ॥ ए पांच वर्णना ॥ १०० ॥ भेद ॥ एम पांच रसना पण सो ॥ १०० ॥ भेद ॥ पांच संस्थानना पण ॥ १०० ॥ भेद, आठ गंध अने वे फरसं ए दशना वसेने त्रीश ॥२३०॥ भेद थया एम रूपी अजीवना पांचसेंने त्रीश भेद थया ॥ ५३० ॥ अरूपी अजीवना ॥ ३० ॥ भेद मांहे भेगा करीये एटले अजीव द्रव्यना पांचसेंने साठ भेद ॥ ५६० ॥ थया एनो विस्तार जोवो होय तो श्री पन्नवणाजी मध्ये छे, एवी रीते जीव अजीवनुं स्वरूप जाणीने पछी श्रावकनां व्रत ले, तेने थावर जीवनां पच्चखाण तो छे नहि, अने त्रसजीवना अपराधनी जयणा छे, विण अपराधि रह्या तेमां आरंभे जयणा, अणारंभि रह्या तेमां सउ उपग्रहितनी जयणा ॥ एटले अणापराधि अणारंभे अने अण उपग्राहित ॥ एवा जीवने हणवानां श्रावकने पच्चखाण छे ॥ ते पण छ कोटीना पच्चखाण छे ॥ एटलो मन ॥ १ ॥ वचन ॥ २ ॥ काया ॥ ३ ॥ थकी अनुमोदवानी जयणा छे माटे श्रा-

वकनुं व्रत छे ऋ थोडुं तेथी देश विरति कहीए. ते पेहेलुं व्रत ते प्राणातिपात, जे परजीवने आपणा सरखा जाणी सर्व जीवने रखवाले ते दया ॥ ए व्यवहार प्राणातिपात विरमण जाणवुं हवे निश्चय दया कहे छे. जे आपणो जीवकर्म वशे दुखी थाय छे, ते आपणा जीवने कर्मथी छोडाववो, आत्मगुण रखवालवा गुणविचारवो ते चार प्रकारे बंध हेतु पणाथी निवारे, स्वरूप गुणनो प्रगटपणो करवो, प्रगट थयो गुण ते राखवो, एम आत्मस्वरूपने विषे विश्राम ते तत्वानुभव. ते चारित्र कहीए ते निश्चय दया, एटले ज्ञानथी मिथ्यात्वने खपावे आपणा जीवने निर्मल करे ते निश्चय दया, ते जीव प्राणातिपातथकी विरम्यो छे ते प्राणातिपात कह्यो. हवे मृषावाद कहे छे, कुडो वचन बोलवो, ते व्यवहार मृषावाद विरमण कहिये, हवे निश्चय कहे छे, जे परवस्तु पुद्गलादिने आपणी कहेवी, ते मृषा वचन छे, अने जीवने अजीव कहे अने अजीवने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान ते भाव मृषावाद छे, अथवा सिद्धांतनो अर्थ खोटो कहे ते मृषावादमां छे, ए मृषावाद जेणे छांड्यो ते निश्चय मृषावादथी विरम्यो एटले बीजा अदत्तादानादिक जो भाजे तो चारित्र भाजे, पण ज्ञान दर्सन चारित्र अने निश्चय जेणे मृषावाद भांज्यो तेणे समकित ज्ञानचारित्र भांज्यां तथा आगममां एम क७ छे जे एक साधु ए चोथो व्रत भांज्यो अने एक साधुए बीजो मृषावाद भांज्यो, एटले इहां जेणे चोथो व्रत भांज्यो ते आलोयणलिये शुद्ध थाए, पण जे सिद्धांतादिकनो मृषा उपदेशदेवे ते आलोयणलीधे पण शुद्ध होवे नहि ॥ हवे अदत्तादान कहे छे. जे पारकुं धन वस्तु छुपावीने चोरीने ठगीने लीये ते चोरी छे, एटले अणदीठी पारकी वस्तु लेवे ते अदत्तादान व्यवहार नयथी जाणवो. निश्चयनय अदत्तादान कहे छे ते पांच इंद्रिनात्रेवीस विषयने आठ कर्मनी वर्गणा

इत्यादिक परवस्तु ते आत्माने अग्राह्य छे, पर छे, ते लेवानी वांछा करे ते निश्चयनय अदत्तादान कहीए. तथा कोइक कहेशे जे विषयनी अने कर्मनी वांछा करे छे ते वांछा कोण करे छे ? तेनो उत्तर जे पून्यनेभेदु लेवा जोग्य कहे छे, ते जीव कर्मनी वांछा करे छे, ते पुन्यना बेतालीस भेद छे ते चार कर्मनी शुभ प्रकृति छे एटले जे व्यवहार अदत्तादान नहि लेवो पण अंतरंग पुन्यादिकनी वांछा छे तेने निश्चय अदत्तादान लागे छे. हवे मैथुन विरमण व्रत कहे छे, तिहां जे कोइ पुरुष पर स्त्रीनो परिहार करे ते मैथुन विरमण व्यवहार कह्यो तथा स्त्री पुरुषनो परिहार करे, ते मैथुन विरमण व्यवहार कहीये इहां साधुने स्त्रीनो सर्वथा त्याग छे, अने गृहस्थने हाथ पराणि स्त्री मोकळी छे अने परस्त्रीनां पच्चखाण छे, ते व्यवहार. हवे निश्चय कहे छे जे विषया भिलापनो त्याग अने ममता तृष्णा ए परभाव अने वरणादिक परद्रव्य स्वामित्वादिक तेनुं अभोगिपणुं आत्माना स्वगुण ज्ञानादिकनो भोगी ते पुद्गलखंध अनंताजीवनी एंठ ते ॥ मने भोगववी घटे नही, ए रीते त्याग ते निश्चय मैथुन विरमण कहीये. जेणे बाह्य विषय छोडयो छे, अने अंतरंग लालच नहिं छूटि तो तेने मैथुननां कर्म लागे, हवे परिग्रह परिमाण व्रत कहे छे. परिग्रह धन, धान्य, दास, दासि, चौपद, घर धराति, वस्त्र आभर्णनो त्याग ते परिग्रह त्यागव्रत व्यवहारथी जाणवो ए साधुने सर्व परीग्रहनो त्याग छे, श्रावकने इच्छा परिमाण छे, जेटली इच्छा होय तेटलो मोकलो राखे, बीजानी विरति करे, ए व्यवहार पांचमो व्रत कह्यो. निश्चय भावकर्म रागद्वेष अज्ञान द्रव्य कर्म ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्म शरीर इंद्रिनो परिहार एटले कर्मने पर जाणी छोडवां ते निश्चय परिग्रहनो त्याग एटले परवस्तुनी

मूर्छा छोडवी, तेणे परिग्रह छांडयो छे, एटले परिग्रह त्यागव्रत कह्यो, ए पांच व्रत कह्यां, छठुं दिशि परिमाण व्रत कहे छे, च्यार दिशि अने उर्ध्व तथा अधो ॥ ए छ दिशाना क्षेत्रनुं मान करी मोकलुं राखे, ते व्यवहार दिशिपरिमाण व्रत कहीये, अने गति च्यार कर्म गुण जाणी तेथी उदाशपणुं अने सिद्धावस्था शुं उपादेयपणुं ते निश्चयादिशि परिमाण कहीए. हवे भोगोपभोग परिमाण व्रत कहे छे. ते भोग कहेतां एकवार भोगविये अने उपभोग जे वारंवार भोगविये तेनुं परिमाण करे ते व्यवहार भोगोपभोग व्रत कहीये, अने निश्चय भोगोपभोग व्रत तो जे व्यवहारनये कर्मनो कर्त्ता ने भोक्ता ते जीव छे, निश्चयनये कर्मनो कर्त्ता कर्म छे ए आत्मा अनादिनो परभावभोगी थयो त्यारे परभाव ग्राहक थयो परभाव रक्षक थयो, एटले आत्माना ज्ञेयकता ॥ १ ॥ ग्राहकता ॥ २ ॥ भोग्यता ॥ ३ ॥ रक्षकता ॥ ४ ॥ बीगडे कर्त्तापणो वीगडयो तेथी परभाव कर्त्ता थयो, तेणे करी परभावरंगीपणे आठ कर्मनो कर्त्ता थयो छे पण सत्ताये तो स्वभावनो कर्त्ता छे, पण उपगरण अवराणाथी स्वकार्य करी शकतो नथी विभावने करे छे, ने अज्ञानपणे जीवनो उपयोग भल्यो छे पण न्यारो छे, अने जीव तो आपणा ज्ञानादि गुणनो कर्त्ता भोक्ता छे एवा परिणाम ते स्वरूपानुंयाइरूप, ते निश्चय भोगोपभोग व्रत जाणवो ॥ हवे अनर्थ दंड विरमण व्रत कहे छे. अनर्थ कामे जीवने पाप आरंभे लगाववो ते अनर्थ दंड. त्यांहां जे पारके वास्ते आज्ञा प्रमुख देवी ते व्यवहार अनर्थ दंड, अने जे शुभ अशुभ कर्म मिथ्यात्व अविरति कषायजोग शुं कर्म बंधाय छे ते जीव आपणा करी जाणे ए निश्चय अनर्थ दंड जाणवो. हवे समायक कहे छे. जे मनवचन कायाना आरंभथी टाले, निरारंभपणे वर्तावे, ते व्यवहार समायक जाणवो; अने जे जीव ज्ञान दर्शन चारित्र

गुण विचारे ते सर्व जीव सत्वगुणे एक समान जाणी सर्व सम-
ता परिणाम ते निश्चय समतारूप समायक कहीए. हवे देशाव-
गासिक व्रत कहे छे. जे मन वचन कायाना जोग एकठा करी
एक स्थानके वेसी धर्मध्यान करवो ते व्यवहार देसावगासिक
कहीए अने श्रुतज्ञानशुं छ द्रव्य ओलखीने पांच द्रव्य त्याग
करे, अने ज्ञानवंत जीवने ध्यावे, तेहमां रमे, परभावमां वसे नहि
ते निश्चय देशावगाशिक जाणवो. हवे पोसह कहे छे. जे च्यार प-
होर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामे निरारंभ सावद्य
छोडी सज्झाय, ध्यानमां प्रवर्त्ते, ते व्यवहारपोसह कहीए अने आ-
पणा जीवने ज्ञान ध्यान शुं पोषीने पुष्ट करे ते निश्चयपोसह क-
हीये, जीवने आपणे स्वगुणे करी पोषीये ते पोषह कहीये, हवे अति
थिसंविभागव्रत कहे छे. जे पोसहने पारणे अथवा सदा साधुने जिन
धर्मि श्रावके पोतानी भक्ति सारु दान देवो ते व्यवहार अतिथि
संविभाग कहीए, अने जीवने अथवा शिष्यने ज्ञान भणवो भणाववो
संभलाववो सांभलवो ते निश्चय अतिथि संविभाग कहीए, ए बार
व्रत कह्यां:–हवे एवा जे बार व्रतधारी श्रावक छे, ते करणि शी
करे ? ते देखाडे छे, श्रावक पाछली चार घडी रात लेइ उठे, त्रण
मनोरथने विचारे तेनां नाम. हुं आश्रव थकी के दहाडे मूकाइश
॥ १ ॥ सर्व विरति चारित्र के दहाडे अंगीकार करीश ॥ २ ॥
समाधि संथारो के दिन आवशे ॥ ३ ॥ एवा त्रण मनोरथ श्रावक
विचारे, एनो विस्तार मनोरथ भावना थकी जाणवो. तेवार पछि
श्रावक प्रतिक्रमण करे तेवार पछी उठीने श्री जीन मंदिरे दरशन
करवाने जाय, ते पूर्वे कह्युं छे. तेमज पंच अभिगमन तथा दसत्रिक
साचवतो थको दर्शन करे जो कदापि छती जोगवईये प्रमादने वशे
दर्शन करवा न जाय तो एक छठनी आलोयण आवे तथा मनमां

शंका राखीने न जाय तो पांच उपवासनी आलोयण आवे एवुं पंच महा कल्प भाष्य मध्ये कह्युं छे ते माटे जिनराजनां दर्शन अवश्यमेव करवां, दर्शन कऱ्या पछी गुरुने वांदे, वांदीने नमस्कार करे पछी धर्मदेशना सांभळे, पछी सांभळीने जिनमंदिरे जीनपूजा करवा जाय ते पूजानी विधि श्राद्ध विधि थकी जाणजो, त्यांहां सांजना प्रतिक्रमण करे, इत्यादिक श्रावकनी विधि श्राद्ध दिनकर थकी जोज्यो, तथा श्रावक होय ते पर्व तिथिये पोसा समायक तप इत्यादिक करे, तथा श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे ते सात क्षेत्रनां नाम कहे छे. साधु ॥ १ ॥ साधवि ॥ २ ॥ श्रावक ॥ ३ ॥ श्राविका ॥ ४ ॥ देहरुं ॥ ५ ॥ जिन पडिमा ॥ ६ ॥ ज्ञान ॥ ७ ॥ ए सात क्षेत्रनो अर्थ संक्षेप थकी देखाडे छे. हवे साधु साधवि ए बेनी एक रीत छे, माटे भेगो कहे छे, साधुने श्रावक होय ते सात पिंड आपे अशनके० ॥ आहार ॥ २ ॥ पाणके० ॥ पाणी ॥ २ ॥ खादिमके० ॥ मेवा प्रमुख ॥ ३ ॥ स्वादिम के० ॥ मुखवास ॥ ४ ॥ लेनके० ॥ वस्ति ॥ ५ ॥ सेनके० ॥ सज्या पाट पाटला प्रमुख ॥ ६ ॥ वथके० ॥ वस्त्र पात्र प्रमुख ॥ ७ ॥ ए सात पिंड साधु साधविने देवा निमित्त धन वावरे तथा श्रावक श्राविका ए बे क्षेत्रना काजे पण धन वावरे, शी रीते ते कहे छे. जे श्रावक होय ते संघ काढे, स्वामि वत्सल करे तथा स्वामिभाइनी भक्ति बहुमान करे. त्यारे वादि बोल्यो जे संघ काढ्या थकी शुं धर्म छे ? ए तो हिंशानां काम छे, एनो उत्तर जे तें कीधुं संघ काढे शुं थाय ते संघ काढ्याथकी अनंता कर्मनी निकाचितगांठि तोडे, शा माटे जे तीर्थे जइने वांदवानां मोटां फल कीधां छे, केमके श्री भगवतिजीमां तीर्थंकरनी वंदणा अधिकारे त्यांहां जइने वांदवानो महा लाभ कीधो छे ॥ ते वारे वादि बोल्यो जे एतो

शास्वता तीर्थंकर हता, आतो प्रतिमा छे तेनुं केम ? एनो उत्तर जे प्रतिमाने जीनपडीमा कहीने बोलावी छे ॥ ते वारे तमे केहेशो जे एतो जिनपडिमा कही छे पण जिनवर तो कह्या नथी, ए मां ने एमां तो फरक घणो. तेनो उत्तर जे जगाए धूपनो अधिकार चाल्यो ते जगाए एवो पाठ छे.

॥ दाहंधुवंजिनवराणं ॥

एवो पाठ ज्ञाता प्रमुख घणा सूत्रमां छे एटले इहां जिनपडिमाने जिनवर कहीने बोलाव्या, एटले ए पाठ जोतां जिनवरमां ने जिनपडिमामां फरक कांइ दिसतो नथी माटे तिर्थे जइने वांदवानुं घणुं फल छे, तथा तमे कह्युं जे हिंसाना काम छे ॥ तेनो उत्तर ॥ जे गाडां गडेरां इत्यादिक जोडवां ॥ जोडाववां ॥ ते कारण थकी तमे हिंसा गणो छो, ते एम छे नहिं ॥ शामाटे जे श्री दसाश्रुत स्कंधमां श्रेणीक राजा भगवानने वांदवा गया ते समे वेसवाने वास्ते रथ मंगाव्यो छे ॥ ते रथने धर्म रथ कहीने बोलाव्यो, हवे ते रथ ज्यां चाले त्यां हिंसाज थाय, केम जे त्यां कह्युं छे के वलधने आर घोचता दोडावता थका गया ते जगाए हिंशा केम न थाए पण इहां तो धर्म रथ कह्यो छे ॥ तथा गाम मध्येथी उकरडा कढाव्या, पाणी छंटाव्यां, तथा चउरंगी शेना सजीने गया ते लेखे तो महा आरंभनुं काम दीसे छे पण भगवंते तो कांइ पाप कह्युं छे नहि, भगवंते तो एनुं फल मोक्षनुं कह्युं छे, ते माटे धर्म काम ने अर्थे नीकल्या, ते कामने विषे जेटलुं काम थाय तेटलुं धर्म खातामां गणाय, एम जो न गणाए तो साधुनो विहार गोचरी अटकी जाय, ते माटे डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, तथा तीर्थे जइने वांदवुं तेनुं कारण के्‌ छे, जे ठेकाणे तीर्थंकरादि मोक्षे पो

हता तेज आपणे पूजनिक छे, शा माटे जे श्री भगवतीजीमां उदायन राजाने अधिकारे कह्युं छे ॥ धन ते नगरी ॥ धन ते गाम आगल इत्यादिकने धन कही बोलाव्या छे शा माटे जे श्रीभगवान विचरता होय ते माटे ॥ एटले ज्यां तीर्थंकर विचरता होय ते नगरीयादिकने पण धन केहेवाणुं तो ते नगरीने विषे तो कोइ जीव सुलभबोधि हशे, कोइ दूलभबोधि हशे, अथवा पापि पण कोइक हशे, कोइक धर्मी हशे, अथवा गामनी मांहेली कोर कोइ शुध अशुध वस्तु पण हशे, ते पण सर्वेने धन कह्युं तो जे जगाए तिर्थंकरनुं निर्वाण कल्याणक थयुं ते जगाए फरसना कल्याणक केम न थाय ? वंदण नमन करे तो कर्म निर्जरे, डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, माटे संघ-तीर्थ जात्रा निमित्त श्रावकने धन वावरवुं. तेनो विशेष अर्थ सेत्रुंजामाहात्म्य थकी जाणजो तथा स्वामिवत्सल निमित्ते धन वावरे ॥ एटले स्वामिके० ॥ सरखा धर्मनाओने जमवुं जमाडवुं करे ॥ शामाटे जे श्री भगवतिजीमां संखजी पुष्कलीजीने अधिकारे पण स्वामिवत्सलनो अधिकार दीशे छे, तथा स्वामिभाईनी भक्ति बहूमान करवुं, एनो पण पाठ श्री भगवतीजीमां सनत्कुमार इंद्रने अधिकारे जोज्यो, अग्यारमा तथा बारमा शतकमां श्रावक श्रावकने वंदण नमस्कार करे ॥ एवो पाठ छे ॥ ते माटे श्रावक होय ते श्रावक श्राविकाना विषे वावरे. हवे वली श्रावक पांचमा क्षेत्रे देहरुं करावे, तथा छट्ठे क्षेत्रे जिन पडिमानुं भरावबुं ॥ तथा देहरानुं रंगाववुं ॥ तथा आंगी रचाववी ॥ तथा अट्ठाइ महोत्सव करावे ते वारे वादि बोल्यो ॥ जे देहरुं करावे प्रतिमा भरावे शुं थाय ॥ तेनो उत्तर ॥ जे देहरुं कराववुं ॥ प्रतिमा भराववी ॥ ए काम श्रावकने श्रेय दीशे छे शामाटे जे देहरुं ॥ तथा जिन प्रतिमा आज पांचमा आरामां आ-

धारभूत छे केमके केवलीनो तो आज विरहकाल छे. शुद्ध आलंबन तो आज ए छे, तथा श्री अनुयोग द्वारमां पण कह्युं छे जे भावनिक्षेपो, नाम थापना द्रव्य विना थाय नहिं तथा च्यार निक्षेपामां एके निक्षेपो उथापे ॥ तेने मिथ्यात्वी कहीए. ॥ ते वास्ते थापनानिक्षेपो अवश्य मानवो ॥

॥ यदूक्तं ॥

नाम जिणाजिणणामा ॥ ठवण जणा जिणंद पडिमाओ ॥ दव जिणाजिण जिवा ॥ भाव जिणा समवास रणाथ्था ॥ १ ॥

ए गाथामां पण थापनानिक्षेपामां तो जिनपडिमाज कही छे ॥ अथवा अनुजोग द्वार मध्ये आवश्यकने अधिकारे दश प्रकारनी थापना कही छे, ते तो सदूबोध अने असदूबोध कही छे, तथा ए तो गुरुनी थापना छे, आ तो तीर्थंकरनी थापना, अने वली सदूबोध छे तो एने करावतां नफो केम न होय? डाह्या होय ए विचारी जोज्यो; तथा देहरानो करावनारो तथा प्रतिमानो भरावनारो बारमे देवलोके उपजे. एवुं श्री महानिशिथजीमां कह्युं छे, ते माटे श्रावक होय ते देहरां करावे, प्रतिमा भरावे, आंगी रचावे, अठाइ महोत्सवादिक करे ॥ एवा मारगे धन वावरे. हवे सातमुं क्षेत्र जे ज्ञान ते मारगे पण धन वावरे, एटले ज्ञान लखावे, तथा ज्ञान भणतो होय, तेने साहाय आपे, तथा ज्ञानीनां बहुमान करावे शा माटे जे श्रुत ज्ञान छे ते मोटुं छे, यद्यपि केवल ज्ञान मोटुं छे, पण स्वअनुयायी छे अने श्रुतज्ञान छे ते स्वपर प्रकाशे दिसे छे माटे ज्ञानीना बहु मान करवां, केम जे श्री नंदि

सूत्रमां ज्ञानिने सूर्यनी, चंद्रमानी, कल्प वृक्षनी, स्वयंभूरमण समुद्रनी इत्यादिक घणी उपमाओ आपी छे ॥ माटे ज्ञानीनुं बहूमान विशेषे करवुं, ज्ञान भणतो होय तेनी पण साहाय करवी ॥ शा माटे जे ज्ञानना भणनारा पासे पइसो होय नहिं, अने व्याकरणादिक भणवाने पइसो पण जोइये, पुस्तक पानुं पण जोइये, माटे ए वातनी साहाय गृहस्थ आपे त्यारे भणाय, त्यां वादिए तर्क करी जे साधु तो साहाय वंछे नहिं, अने तमे कहोछो के साहाय आपे तो साधु भणे तेनुं केम? तेनो उत्तर दे छे. जे साधु होय ते साहाय न वंछे पण ते दहाडे तो सूत्र पाठ उपाध्यायजी भणावता अने अर्थ आचार्य आपता, अने मारुं तारुं हतुं नहिं ॥ जे जतुं तेने भणावता ॥ आज तेमांना आचार्य उपाध्याय किया तमारी सरते आवे छे जे तेनी पासे जइने भणे? अथवा ज्ञान आश्री साहाय वंछे तो दूषण जणातुं नथी, शा माटे जे पोताने शरीरे सुख वंछतो नथी, ए तो आत्म हेते ज्ञान भणे, अने ज्ञान काजे साहाय वंछेछे, तथा श्री पंच महाकल्प भाष्य मध्ये पण कह्युं छे, जे ज्ञाननो साधु अभ्यास करतो होय ते ठामने विषे कदापि आहारने विषे आधा कर्मादि दोष लागतो होय तो ज्ञान अभ्यास करवाने साधु रहे के न रहे? त्यां कह्युं छे जे ज्ञाननो अभ्यास करतां कदापि आधा कर्मादि दोष लागे तेनो विचार करे नहिं, पण ज्ञाननो अभ्यास करवो. शा माटे जे ज्ञान न होय तो दोष अदोष कोण जाणे, मांटे ज्ञान मोटो पदार्थ छे, ते माटे ज्ञानने वास्ते साहाय वंछतां दूषण जणातुं नथी, तथा जो शरीरादिकने अर्थे साहाय वंछे तो दूषण लागे, जोयामां तो एवुं आवे छे, पछी केवली गम्य तथा जे गृहस्थ श्रावक होय, ते सूत्र सिद्धांतादिक लखी राखे, शा माटे जे साधु साधवि आव्या गया ने वांचवा भणवाने खप लागे, तथा

गाममां पण बीजा श्रावकोने भणवा गणवा खप लागे,-ए सातमुं-क्षेत्र. एम श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे. वलि एने अनुसारे बीजा पण उचित स्थानक जोइने वावरे. एम श्रावकनुं स्वरूप कह्युं. ते श्रावक त्रण प्रकारना छे ॥ जघन्य ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ उत्कृष्ट ॥ ३ ॥ ते जघन्य श्रावक केने कहीएके प्रभाते नोकारसि, रात्रे दूविहार, अने बावीस अभक्ष्यनो त्याग करे तेने जघन्य श्रावक कहीए ॥ १ ॥ अने बार व्रत श्रावकनां अंगीकार कर्यां होय तेने मध्यम श्रावक कहीए ॥ २ ॥ अने बारव्रत उचर्यां होय अने अग्यार पडिमा वही होय तेने उत्कृष्टो श्रावक कहीए ॥ ३ ॥ एवी रीते श्रावकनो धर्म तथा साधुनो सर्वविरति पंचमहाव्रत धर्म एवुं श्री वीतराग परमात्माए प्ररूप्यो जे धर्म तेने धर्म करी सद्दहे, तेने धर्म तत्व सद्दह्यो कहीए. एटले धर्मतत्व के० ॥ साधु श्रावकनुं जे धर्म तथा खट द्रव्य नव तत्व नयानिक्षेपा पक्ष प्रमाण स्याद्वाद खटकारकादिक सर्व सद्दहजो. हे भव्य जीवो ! समजमां आवे तो समजवुं, कदापि समझमां न आवे तो एम धारवुं जे मारी बुद्धि ओछी छे अने केवलीनुं ज्ञान अनंतुं छे तेथी मारी समजमां आवतुं नथी, पण जे आगममां भाव प्ररूप्या ते सर्व सत्य छे एवो विचार राखवो पण पोतानी मति. कल्पनाथी कशो नवो. मार्ग थापशोमां. एवी रीते हे भव्य जीवो धर्म तत्वने सद्दहजो ॥ इति धर्म तत्व तृतीयः ॥

इति श्री सम्यक्तद्वार ग्रंथो मुनी श्री हूकमचंदजी विरचीते षष्टमो अध्याय पूर्ण ॥ ६ ॥

ए छठा अधिकारने विषे धर्म तत्व ओलखाव्यो, हवे सातमे अधिकारे ए तत्वनी सद्दहणानुं फल देखाडे छे. हे भव्य जीवो आर्य क्षेत्र, मनुष्य भव, देवगुरुनी जोगवाइ ते पामवी घणी दु-

लैभ छे अनंता पून्यनी राशीना थोकडा वध्या त्यारे तमे पाम्या छो, पामीने जो प्रमाद करशो तो फरीने च्यार गति संसारने विषे परिभ्रमण करशो फरीथी आ जोगवाइ मलवी घणी दूर्लभ छे तुं जे आ संसाररूप मोह जालमां गुंथाणो छुं अने पूत्र कलत्र धन धान्यादिक माहरुं माहरुं करे छे ते तारी भूल छे ते कोइ तारुं छे नहि, केम जे मोहजालने विषे गुंथायाथकी नर्क तिर्यंचनां दुःख भोगववां पडे, ते नर्कनुं स्वरूप लेश मात्र कहे छे. ते नर्कना क्षेत्रनो फरस केवो छे ते कहे छे. जेवी तरवारनी धार, जेवी बरछीनी अणी, जेवी कटारीनी धार, जेवी भालोडनी अणी, जेवी अस्त्रानी धार, जेवो नगरनो दाह, जेवो गामनो दाह, एवो तो उष्ण फरस छे, वली जीहां गोखरुं घणां तिखी अणीनां पथरायेलां पड्यां छे, तथा डाभ तीखी अणीना उगेलानुं वन छे, वली ज्यांहां वैतरणी नामा नदियो छे, ज्यांहां असिपत्र वृक्षनां वन छे ज्यांहां घणा कुंभीपाक छे, ते कुंभीपाकनो खरखरो फरस पूर्वे कह्यो तेवोज छे, वली जेवी पोष माघनी महा हिमाजल टाढ, जेम हिमाला क्षेत्रनी टाढ ज्यांहां माणसनां माणस शिजी जाय छे तो ढोरनुं ने झाडनुं शुं कहेवुं एवा क्षेत्र फरसनादिकथी ते टाढ अनंतगुणी वधती छे, ए कुंभीपाक उपरथी चोखूणी छे अने मांहे थकी कुंडाना आकारे छे, ते कुंभीपाकने विषे नारकी आवी उपजे, ते प्रथम समये नारकीनी आंगलने असंख्यातमे भागे अवगाहना होय, पछी एक अंतरमूहूर्त्तमां जेटली नारकीना शरीरनी अवगाहना होय एटली वांधे, ते वारे कुंभीपाक पेटेथकी पहोली, अद्धो उर्द्ध संकिर्ण एनो फरस महा तिखो ने वली टाढो तेथकी थइ जे वेदना तेथी महा रीव पोकारे अने मुखथी कहे जे मुने इहांथकी काढो काढो, ते वारे नर्क क्षेत्रने विषे रह्या जे परमाधामि ते पनर जातना

छे तेना नाम कहे छे. अंब ॥ १ ॥ अंबरिख ॥ २ ॥ श्याम ॥३॥ संबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ महारुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥ धनुष्य ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालुक ॥ १२ ॥ वेत्रणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥ एवा जे पंनर जातना परमाधामि ते त्यां पासे होय ते दोडीने आवे ते आवीने नारकीने कहे जे मांहेलिकोर तो हजी तने सुख छे अने बाहेर तो महा दुःख छे, अने कुंभीपाकनुं मोढुं सांकडुं छे माटे तने तोडी तोडीने काढवो पडशे, त्यारे तुं ना पाडीश तो पण अमे तने छोडीशुं नाहि, वास्ते तु पेहेलांज मांहि रहे पण ते नारकी महा दुःखे पीडयो थको दिनवचने कहीने बोले जे हुं महा दुःखीछुं महाराथी नरकनुं दुःख भोगवातुं नथी, माटे मने कांइ करतां इहां थकी काढो. हुं ना नाहि पाडुं, ते वारे परमाधामि साणशिथी तोडि तोडिने काढे त्यारे, महा रीव पोकारे ने कहे जे मुने रेहेवा द्यो पण ते कांइ छोडे नाहि इत्यादिक. वली बाहेर निकल्या पछी पण महा छेदन भेदन ताडना तर्जनादिक वेदना घणी भोगवे. ज्ञानी विना आपणथी कही जाय नाहि, तेनो विशेष अधिकार श्रीजीवाभिगम तथा पन्नवणा प्रमुख सूत्रथकी जाणजो एवां नरकादिकनां महा दुःख भोगववां पडे, ते वास्ते हे भव्यजीवो मोह जालने विषे मुझावुं नाहि, जे मोहने विषे मुंझाय तेने एवां दुःख भोगववां पडे ॥ जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति मोहने विषे मुंझाणो अने साधुनो उपदेश न मान्यो त्यारे मरीने सातमी नर्केगयो तेम हे भव्य जीवो ! एवुं जाणीने जोगवाइ मलेथके प्रमाद करशो नहिं, धर्मसाधन करजो, जे थकी देवलोकनां सुख भोगवो, परंपराए मोक्षनां सुख पण भोगवशो, वली जे पुत्रकलत्र धनधान्यादिक माहारुं माहारुं करो छो, ते कांइ छे नहिं ते तो सर्वे स्वार्थनां सगां छे,

तेनुं स्वरूप देखाडे छे, जेम श्रेणिक राजाए कोणीकनो अंगुठो छ-मास सुधी मुख मध्ये राख्यो, अने लोहिपरु चुश्यां, शामाटे जे मारो पुत्र रखे मरी जशे, के रखे दुःखी थशे, एम जे मोहना वश-थकी एवी रीते पुत्रने वास्ते पोते दुख भोगव्युं, तो तेज पुत्रे पोताने काष्ट पिंजरमां घाल्यो अने नित्य प्रत्ये पांचसें कोरडा मरावे, अने जीवथी पण गया, तो जोयुं पुत्रनुं सगपण, एक राज्यने वास्ते पि-तानुं मृत्यु कर्युं अने महादुःख दीधुं, तो हे भव्य जीवो संसारने विषे पुत्रनुं सगपण अनित्य छे ए सर्व स्वार्थनुं सगुं छे, तथा कल-त्रके० ॥ जे स्त्री तेने तो माहारी करी जाणे छे तेतो संसारने विषे महादुःख दाइ छे केमके स्त्री ना मोहना मार्याथका नंदिषेणे नि-याणुं कर्युं तो अंते नर्क मील, तो जुओ स्त्रीनो मोहराख्यो तो पर भवे महानर्कमळी, अने आभवने विषे पण स्त्री सुख दे नहिं, जेम यसोधरने स्त्री ए झेर देइने मार्यो, तेनो अधिकार समरादि-त्य चरित्र थकी जोजो. तथा परदेशी राजा प्रमुख घणा जीवो स्त्री-ए मार्या छे, माटे हे भव्यो स्त्रीयो कोइनी सगीयो नथी ए तो स्वार्थनी सगी छे एवुं खोटुं सगपण तेने विषे तमे केम मुझाइ र-ह्या छो ? ए स्त्री तो आ भव पण दुःख दाई अने परभव पण दुःख दाइ छे स्त्रीना सगपणमां पण राचवुं नहिं, तथा जे संसारने विषे माता छे ते पण स्वार्थनी सगी छे, जेम ब्रह्मदत्तने चुलणी राणीए मारवानो उपाय कर्यो. जुओ सगो दीकरो छे, पण कांइ दया आवी नहिं, तथा चेलणा राणीए कोणीकने जनम्यो तेज वखते उकरडे नखाव्यो तो जुओ मातानां सगपण पण संसारने विषे एवां छे, इ-त्यादि अनेक दृष्टांत छे ते ग्रंथो थकी जाणजो. वळी संसारने विषे जे सगपण छे ते सगपणनो कांइ नियम नथी, जे एनुं एज सगपण रेहेशे. जे पूत्र होय ते पुत्रपणे थाय एवो कांइ नियम नथी, जे पुत्र

होय ते पितापणे थाय अने पुत्री होय ते स्त्रीपणे थाय, केम जे शुक्र राजानां मातापिता तेओ पाछले भव पोतानी स्त्रीओ हती, तेनी कथा श्राद्धविधिमां छे तथा श्रेयांस कुमारनो जीव तथा श्रीऋषभ देवस्वामीनो जीव केटलाएक भवने विषे स्त्री भरतारनुं सगपण थयुं, केटलाएक भवने विषे मित्रपणुं थयुं, आ भवने विषे दादोने पडपोतरो थया, तथा यसोधर पोताना पुत्रनो पुत्र थयो तथा यसोधरनी माता हती ते आ भवने विषे स्त्री थइ इत्यादिक विचारतां सगपणनो नियम रहेतो नथी तथा सिद्धांतमां पण कह्युं छे जे एक एक जीवने मांहामांहे अनंतां सगपण थयां, एवुं जे खोटुं सगपण तेने विषे कोण राचे, केमजे कियो जीव आपणो सगो छे अने कियो जीव सगो नथी एटलुं विचारीने जोइए तो सर्वे जीव साथे आपणां अनंतां सगपण थयां माटे एमां मातापिता कोने कहीए तथा भ्रात कलत्र पुत्र कोने कहीए ? जे सर्व जीव साथे अनंतां सगपण थयां, माटे एवां सगपणने विषे राची रहेवुं नहि, एवां सगपण करतां अनंतो काल गयो पण कांइ आत्मानुं कल्याण थयुं नहि, जे दहाडे संसार थकी वैराग्य पामीने धर्मकरणी करशो, ते दिन आत्मानुं कल्याण थशे. वली कायानुं स्वरूप देखाडे छे. हे भव्य जीवो ! तमे शरीरना वर्ण गंध फरस देखीने घणा लोभाइ रह्या छो, जे रखे मारी काया सुकाये, रखे दुःख पामे, रखे वीगडे, एवुं विचारो छो, ते सर्व खोटुं छे, शामाटे के, हे देवाणु प्रिय ! तमने कायाना स्वरूपनी खबर नथी, ए काया तो पुद्गल दल छे, ए कायाने विषे तो रुधिर छे, तथा मांस छे, तथा मेद्य छे, तथा नस जाल छे, वीर्य छे, पेसि छे, लघुनित्य छे, वडि नित्य छे, एवा शरीरने विषे तमे शुं राचि रह्या छो, ए शरीरने गमे एटलुं पालो पोषो साचवो, पण अंते कांइ रहेवानुं नथी, शामाटे जे पुद्-

गलनो स्वभाव तो सडण पडण विध्वंसण छे, ते माटे एने विषे मूर्छा शा वास्ते लाववी पडे. तुं तारा स्वरूपनी गवेषणा करे तो ठीक, माटे एहवी काया उपर मूर्छा राखवी नहीं, केमके काया छे, ए तो अशास्वती छे, अथीर छे, एनो तो धर्मज, मलवा विखरवानो छे, एटले संजोगे मले अने विजोगे जाय, एवा शरीरउपर ममता राखवी नहीं. हवे आवखानुं अनित्यपणुं देखाडे छे, हे भव्य जीवो संसारने विषे जे आवखुं छे एतो अनित्य छे, अने तमे तो तृष्णा घणी लांबी राखो छो अने जीवितनी घडीनी खबर छे/ नहि केमके आवखुं तो अथीर जेम डाभबिंदुके० ॥ जेम डाभनी अणी उपर पाणीना बिंदु केटलीवार ठरे तेम आवखुं पण अथिर जाणवुं तथा जेम हाथीनो कान चपल छे तेम आवखुं पण अथिर छे. तथा जेम पाणीनो परपोटो, जेम संध्यानो रंग/ इत्यादिक अनेक द्रष्टांते करीने आवखुं तो अनित्य छे एवुं आवखुं अनित्य छे तेने विषे तुं माहारुं माहारुं करी माची रह्यो छुं, अतिशय तृष्णानो वायो थको अनेक आरंभ करे छे, अने कालतो अचानक आवी पुगशे पछी बांध्यां जे कर्म ते हारे आवशे, अने धन धान्यादिक मेलव्युं ते तो इहां रहेशे, अने एनो तो भोगदारी कोइक थशे, अने नरकादिक दुःख तो तारे भोगववां पडशे, जेम सुभूम नामा चक्रवर्ति छ खंडनो भोगदारी हतो, पण अतिशय तृष्णानो वायो थको समुद्र मध्ये बुडीमुओ, ए राजपाट ऋद्धि तो इहां रही अने पोताने मरीने नरके जवु पड्युं, तेम हे भव्य जीवो ! एवुं आवखुं अथिर जाणीने मोह ममता निवारीने धर्म साधन करो ते धर्म साधवानुं मूल ते समकित छे, ते प्रथम कह्युं छे. अने देवतत्व ॥१॥ गुरु तत्व ॥ २ ॥ धर्मतत्व ॥४॥ ए त्रण तत्वने सद्दहे तेने समकिती कहीए एटले समकित आव्युं, ए समकितनुं फल शुं ? समकितनुं

फला व्रतिके० जे सर्व विरति देश विरति तेने व्रति कहीए. व्रतिनुं फळ ते संवर, संवरके० आवतां कर्मनुं रुंधवुं, तेहने संवर कहीए, ते संवरनुं फळ ते तप, ते तपना बार भेद, अणसणके० नवकारसिथी मांडीने छ मासी पर्यंत ते अणसण तप कहिये ॥ १ ॥ उणोदरीके० ॥ पुरुषने बत्रीस कवलनुं प्रमाण छे, स्त्रीने अठयाविस कवलनुं प्रमाण छे, तेमां थकी बे तथा च्यार कवल भुख्या उठे, तेने उणोदरी तप कहीये ॥ २ ॥ अने वृत्तिसंक्षेपके० ॥ आगे वृत्ति होय तेमां संकोचविके० ॥ सांकडी करवी तेने वृत्तिसंक्षेप कहिये ॥ ३ ॥ रस चाओके० ॥ षटरसमांथी ॥१॥२॥ ४ ॥ त्याग करवा ॥ ४ ॥ कायक्लेशके० ॥ उष्णकाले तापनी आतापना लेवी, सीतकाले सीतनी आतापना लेवी ॥ ५ ॥ संलिनताके० ॥ अंग उपांगनुं संकोचवुं ॥ ६ ॥ ए षड्विध बाह्यतप ॥ ६ ॥ एथकी काया बलवानी ॥ लोकमां तपसि जणाय ॥ अने केम बलवानी भजना ॥ हवे षड्विध अभ्यंतर तप कहे छे ॥ पायच्छितके० ॥ लाग्यां जे पाप तेने वारंवार संभालीने आलोवे ॥ १ ॥ अने अरिहंतादिकनो विनय बहुमान करवुं ॥ २ ॥ वेयावच्चकुलक प्रमुख दसनो तथा बहु विधिके० ॥ घणानो ॥ ३ ॥ सझाय जे भणवुं भणाववुं तेने सझाय कहीये ॥ ४ ॥

ध्याननुं स्वरूप लखीए छीए ॥ ध्यानके० ॥ धर्मध्यान ॥ हवे च्यार ध्यान कहीए छीए ॥ त्यां च्यार भेद ध्यानना छे ॥ आर्त्तध्यान ॥ १ ॥ रौद्रध्यान ॥ २ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ पेहेलां बे ध्यान अशुभ छे, ए परिहरवां अने २ शुद्ध ध्यान ए आदरवां, एक ध्यान विषे अंतर मुहुर्त्त चित्तनो उपयोग तन्मय एकाग्रपणे स्थिर रहेवो ते ध्यान कहीए, अने केवलिने योगनुं रोकवुं तेज ध्यान कहीए.

॥ यदुक्तं ॥

अंतोमुहूत्तोमित्तं ॥ चित्तावस्थाणमेगवत्थु ॥
मित्थोमत्थाणझाणं ॥ जोगनिरोहोजिणाणंतु ॥ १ ॥

हवे आर्त्तध्यान कहे छे. मनमां कांइक पीडाए आर्त्त थाय जे आहट दोहट परिणाम ते आर्त्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ ते आर्त्तध्यान-ना पाया च्यार छे ॥ पेहेलो इष्टवियोग ॥ इष्टके० ॥ वल्लभ ते भाइ मित्र सज्जन माता, पिता, स्त्री, पुत्र, धन प्रमुखनो वियोग, एकत्व आर्त्तनुं करवुं ते इष्टविजोगआर्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ बीजो अ-निष्ट संजोगके० ॥ अणगमती वस्तुनुं आवीने मलवुं, तेनी चिंता, आ केवारे टले एवो जे एकत्व परिणाम ते अनिष्ट संजोग ॥२॥ त्रीजो रोग चिंता आर्त्त ध्यानके० ॥ शरीरमां रोग उपन्या तेनी चिंता करे, ते रोग चिंताआर्तध्यान ॥ ३ ॥ चोथो अग्रशोचआर्त्त ध्यान ते आवता काळनी चिंता करवी, जे आवता काळमां आम करीशुं के आम करीशुं ए अग्रशोच आर्त्त ध्यान कहीए. ॥४॥ हवे रौद्र ध्यान कहेछे. रौद्र ध्यानना पाया च्यार, पेहेलो हिंसानुबंधि रौद्र ध्यानके०॥ जीव हिंसा करतो करावतो अथवा संग्राम संबंधी वात करतो सांभ-ळतो तेनी अनुमोदना करतो ते पेहेलुं ध्यान ॥ १ ॥ बीजुं मृषानुं-बंधि रौद्रध्यान ॥ जे मृषा बोलीने राजी थावुं ॥ ते बीजो पायो ॥ २ ॥ त्रीजुं चोरानुबंधि रौद्रध्यानके० ॥ चोरी ठगाइ करवाना परिणाम ॥ ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ चोथो परिग्रहरक्षानुबंधि रौद्र-ध्यानके० ॥ नवविध परिग्रह वधारवाना परिणाम ॥ अथवा होय तेने रखवाळवाना परिणाम ॥ ए चोथो पायो ॥ ४ ॥ ए रौद्र-ध्याननो पेहेलो पायो छठ्ठा गुणठाणा सुधी छे. ॥ ए आर्त्त रौद्र-ध्यान बे अशुभ माठी गतिनां करणहार छे ते छोडवां.

हवे धर्मध्यान कहे छे. धर्म ते व्यवहार क्रियारूप कारण ते धर्म, तथा श्रुतज्ञान तथा चारित्र ए उपादानपणे ते साधन धर्म, तथा रत्नत्रयी भेदपणे ते उपादान शुद्ध व्यवहार एटले उत्सर्ग मार्गानुयायीपणे ते अपवाद धर्म, तथा अभेद रत्नत्रयी ते साधन एटले शुद्ध निश्चयनये उत्सर्ग धर्मनुं कारण

॥ धम्मोवत्थोसहावो ॥

जे वस्तुनो सत्तागत शुद्ध परिणामिक स्वगुण प्रवृत्ति कर्त्तादिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थाये रह्यो, एवंभूत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्मनुं भासनरमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयनो उपयोग एकत्वनो चिंतवणो ते धर्मध्यान कहीये, ते धर्मध्याननना पाया चार छे. आज्ञाविचय ॥ १ ॥ अपायविचय ॥ २ ॥ विपाकविचय ॥ ३ ॥ संस्थान विचय ॥ ४ ॥ त्यांहां पेहेलो आज्ञाविचय कहे छे. जे वीतराग देवनी आज्ञा ते हेत करी माने एटले भगवंते कहेलुं जे द्रव्य छनुं स्वरूप तथा सिद्धनुं स्वरूप, निगोदनुं स्वरूप, स्याद्वाद, निश्चय, व्यवहार सद्दहे तेने विषे भासनरमण करे ते आज्ञाविचय धर्मध्यान न कहीए. ॥ १ ॥ हवे बीजो अपायविचय धर्मध्यान कहे छे. जे जीवमां अशुद्धपणुं रह्युं छे जे अज्ञान, राग, द्वेष, कषाय, आश्रव ए माहारा नहि, हुं एथी न्यारोछुं, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमां शुद्ध बुद्ध अवीनाशी छुं, अज अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम, अनामि, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदिरक, अजोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदि, अवेदि, अछेदि, अखेदि, अकषायी, असखायीं, अलेशि, अशरीरी, अभासीय, अनाहारी, अव्याबाध, अनअवगाहि, अगुरुलघु, परिणामि, अणोंद्रि, अप्राणि, अजोंनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपर, अव्यापि,

अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी, असंगी, अलोक लोकालोक, ज्ञायक शुद्ध चिदानंद माहरो जीव छे, एवो जे एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचय धर्मध्यान जाणवो ॥ २ ॥ हवे विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे, जे एवो जीव छे तोय पण कर्मवशे दुःखी छे. जे ज्ञानगुण ज्ञानावर्णि कर्मे दबाव्यो छे एटले आठ कर्मे जीवना आठ गुण दबाव्या छे, एटले संसार भमतां जे सुखदुःख उपजे ए सर्व कर्मनां कीधां छे, एटले इहां कर्म स्वरूपनुं विचारवुं ॥ ते विपाकविचय धर्मध्यान कहीए. ॥ ३ ॥ हवे चोथो पायो संस्थानविचय धर्मध्यान कहे छे ॥ त्यांहां चौदराज लोक छे तेमां उर्ध्व अधो तिर्च्छो लोक. ते उर्ध्व लोकमां वैमानिक देवता वसे छे ते उपर सिद्ध क्षेत्र छे एम लोकनुं मान छे, ए लोक छे ते संस्थान छे, आपणो जीव सर्व लोक संसारमां भमतो जन्म मरण करी फरस्यो छे, एवुं जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पंचास्ति कायनुं अवस्थान तेनो विचार ते संस्थान विचय धर्मध्यान कहीए. ॥ ४ ॥ ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या ॥ ३ ॥ ते ध्यान सातमा गुण ठाणा सुधी छे. हवे शुक्ल ध्यान कहे छे, शुक्ल के०॥ निर्मल शुद्ध पर आलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मय पणे धारे ॥ ते शुक्ल ध्यानना पाया चार छे पृथक्त्ववितर्क सप्रविच्चार ॥ १ ॥ एकत्व वितर्क अप्रविच्चार ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ॥ ३ ॥ उच्छिन्न क्रिया निवृत्ति ॥ ४ ॥ तिहां पेहेलो पृथक्त्व वितर्कसप्र विच्चार ते जीवथी अजीव जुदा करवा, स्वभाव विभाव जुदा पृथक्पणे वेंचवा स्वरूपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक्पणे ध्यान करवो, पर्यायते गुणमां संक्रमावे, गुण ते पर्यायमां संक्रमण करे, एवी रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेदते पृथक्त्व कहीए, तेहनो वितर्कजे श्रुतज्ञाने स्थित उपयो-

ग ते समविच्चार, ते सविकल्प उपयोग एक चिंतव्या पछी बीजो चिंतववो ते विच्यार कहीए. निर्मल विकल्प सहित पोतानी सत्ताने ध्यावे ए पृथक्त्व वितर्क समविचार, ए प्रथम शुक्ल ध्यान जाणवुं, ए पायो आठमा गुण ठाणाथी मांडीने अगियारमा सुधी छे ॥१॥ एकत्व वितर्क अप्रविचार कहे छे जे जीव आपणा गुण पर्यायनी ऐक्यता करी ध्यावे, जीवना गुण पर्याय अने जीव ते एकज छे, अने माहारो जीव सिद्ध स्वरूप एकज छे, एहवुं ध्यान ते एकत्वपणे स्वरूप तन्मयपणे आत्म धर्म अनंतानो एकत्वपणे ध्यान, पण वितर्कपणे केहेतां श्रुत ज्ञानावलंबीपणे, अप्रविचार केहेतां विकल्प रहित दर्शन ज्ञाननो समयांतरे कारणता विना ए रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ए एकत्व वितर्क अप्रविचार जाणवो. ए पायो बारमे गुण ठाणे ध्यावे ए बे पायामां श्रुत ज्ञानावलंबीपणो छे, पण अवधि, मनः पर्यव ज्ञानना उपयोगे वर्त्ततो जीव कोइ ध्यान करी सके नहि. ए बे ज्ञानपरानुयायी छे ते माटे ए ध्यानथी घनघाति चार कर्म खपावे, निर्मल केवलज्ञान पामे; पछी तेरमे गुण ठाणे ध्यान अंतरीकापणे वर्त्ते छे, पछी तेरमाने अंते अने चउदमे गुण ठाणे ए बे पाया ध्यावे, त्यांहां त्रीजो सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति कहे छे. ते सूक्ष्म मन वचन कायाना जोग रुंधे शैलेशीकरण करी अजोगी थाय ते जे अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अचलतारूप परिणाम ते, सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ध्यान जाणवुं. इहां सत्ताये पंचाशी प्रकृति हती, ते मांहेथी बहोतेर खपावे. हवे चोथो उछिन्न क्रिया निवृत्ति कहे छे. जे जोगनी रुंध कीधा पछी तेर प्रकृति खपावे ने अकर्मी थाय; सर्व कर्मथी रहित थाय ॥ ते समुछिन्न क्रिया निवृत्ति शुक्ल ध्यान कहीये ॥ ए ध्यान चार कह्यां ॥ ४ ॥

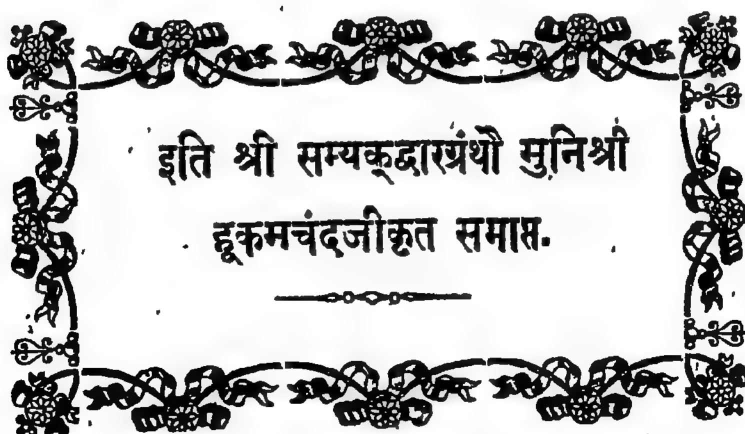
एने ध्यान कहीये ॥ ५ ॥ कायोत्सर्गके० ॥ आत्मायकी कायाने वोसराववी तेने काउस्सग कहीए ॥ ६ ॥ ए षड्विध अभ्यंतर तप ते थकी काया पण बलवानी भजना तथा लोक तपसी जाण्यानी पण भजना पण कर्म बलवानी,—एहवो जे बाह्य अभ्यंतर थईने बार भेदे जे तप ते तपनुं फल ते निर्जरा ॥ निर्जराके० ॥ आत्माने सर्व कर्मथी मुकीने लोकने अंते सिद्ध क्षेत्रने विषे सिद्धपणे जइने वसवुं एने मोक्ष कहीये, ते माटे हे भव्य जीवो ! जुओ अनुक्रमे समकित-नुं फल मोक्ष थाय एवुं श्री भगवतीजीमां पण कह्युं छे माटे श्रद्धा शुद्ध राखजो. श्रद्धा हशे तो सर्व काम बनी आवशे.

इतिश्री सम्यक्द्वार ग्रंथो मुनीश्वर श्री हुकमचंदजी विरचिते सप्तमोऽध्याय परिपूर्ण ॥ ७ ॥

दुहा.

सप्तद्वारे करी वर्णव्यो, पूरण हुओ प्रमाण ॥
ते अनुक्रमे वर्णवुं, सुणजो चतुर सुजाण ॥ १ ॥
प्रथम व्यवहार पुष्टि करयो, बीजो मिथ्या निखेद ॥
त्रिजुं सम्यक् वर्णव्युं, जिहां कह्या बहु भेद ॥ २ ॥
देवतत्व चोथो कह्यो, जिहां जिनपडिमा विचार ॥
तत्व कह्यो गुरु पांचमो, छट्ठो धर्म ते धार ॥ ३ ॥
सातमो साधारण कह्यो, बहु उपदेश विचार ॥
एम सप्तद्वारे करी, रच्यो ग्रंथ निरधार ॥ ४ ॥
ग्रंथ संखेप केहवा भणी, हतो एह विचार ॥
कारण जोगे अधिक थयो, तेह कहुं अधिकार ॥ ५ ॥

उत्तमविजय शिष्यए, जसविजय गुणजाण ॥
तेह तणा आग्रह थकी, विशेष कह्यो विनाण ॥ ६ ॥
शशिग्रहखगबाणमां (१९०५) ॥
ज्येष्टत्रीज शुक्लपक्ष ॥
वार भृगुथे वर्णव्यो, बजाणा गाम प्रत्यक्ष ॥ ७ ॥
स्वयंबुध ते वर्णव्यो ॥ मुनि हूकम जसनाम ॥
भविकजीवना हितभणि, पठतां अविचल ठाम ॥ ८ ॥
जब लगे रविसशि रहो, तब लगे रहो एग्रंथ ॥
नामे सम्यक्द्वार ते ॥ पसरो पूहविसथ ॥ ९ ॥


इति श्री सम्यक्द्वारग्रंथो मुनिश्री
हूकमचंदजीकृत समाप्त.

चार अभाव प्रकरण लक्षण.

श्रीगुरुभ्योनमः

प्रणमुं सुधानंदने, भाखुं अभावते चार ॥
अवला थईने परिणम्या, सवला परिणमे सुखकार ॥१॥

हवे जे चार अभाव अन्यमत विशेषक दर्शनवालाए कह्या छे ते पूर्वे जैन पंडितोए पण केटलाएक विचारने विषे ग्रहण कर्या छे, ते चार अभावनुं स्वरूप किंचित्मात्र हुं कहुंछुं ते चार अभावना नाम, प्रागभाव १ प्रध्वंसभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योअन्यभाव ४ हवे अभाव केहेतां शुं ? जे नाहि छे वस्तु तेने अभाव कहीए छीए. परंतु चेतनस्वरूप साथे चारे अभावनो विचार करवाथी घणो फायदो छे, ते माटे एनुं स्वरूप किंचित्मात्र इहां देखाडुं छुं. हवे प्रागभाव केहेतां पूर्वे जे भावनो अभाव हतो ते भाव प्रगट थयो तेने प्रागभाव कहीये, तेनो विचार कहुंछुं. आ संसारनी मांहेली कोरे भावरूप वस्तु बे प्रकारनी छे, एक शुद्धभाव १ बीजो अशुद्धभाव २ हवे ते अशुद्धभावना अनेक भेद छे अने शुद्धभावनो तो एकज भेद छे, एटले शुद्धभाव केहेतां शुद्ध चिदानंद संकल्प विकल्परहित, सम परिणामी निजानंद उपयोग स्वस्वरूपमां स्थिरतापणुं तेने शुद्धभाव कहीये. हवे जे अशुद्धभाव छे तेना अनेक भेद छे ते कहीये छीए. प्रथम सम परिणाम जे कह्यो तेना बे भेद छे एक तो शुद्ध परिणतिरूप सम परिणाम ते तो सर्वथी जीवने कल्याणकारी छे. अने शुद्ध परिणति साथे जे

सम परिणाम छे, तेना अनेक भेद छे ते मध्ये जे श्रेणिप्रतिपन्न छे ते सविकल्प परिणाम छे, शामाटे जे ए ठेकाणे स्वपरनो विचार अथवा गुण पर्यायनो विचार ए सर्वे विकल्प सहित छे, परंतु घणोज भाग एनो निर्मल छे, अने थोडोज भाग मलिनपणुं छे, एक समकितीथी मांडीने सातमा गुणठाणा सुधी जे समभाव थाय छे ते द्रव्य गुण पर्यायनुं स्वरूप जाणी स्वस्वरूपने ओलखी परभावनो त्याग करीने सम परिणामे रमे छे, ते मध्ये पोते पोताना गुणठाणानी हद्दे जे सम परिणाम छे ते स्वभाविक छे, अने ते उपरांत जेटलुं रमण तथा समभाव एटलो आरोपित उपचारि छे, अहिंयां निर्मलपणुं कथंचित् छे ते मध्ये पण तरतम जोग रह्यो छे ते विना समभाव छे, ते एक एवी जातनो पण छे, के द्रव्य गुण पर्यायना भेद जाणीने पर स्वभाव प्रगटयो नथी अने स्वस्वरूपनुं ग्रहण नथी अने समभाव थाय छे ते मलिन छे, ते मिथ्याद्रष्टि छे, वली एक एवी जातनो पण समभाव छे जे स्वस्वरूप तो जाणता नथी, तथा द्रव्य गुण पर्यायनुं पण जाणपणुं नथी अने मटक वैरागादिक पामीने संसार थकी विरक्तभाव रहेछे, ते सर्वे पण मलिन छे, मिथ्याद्रष्टि छे, तेनो आत्मा अंशे पण निर्मल थयो नथी, तथा एक एवी जातनो पण समभाव छे, संसार छोडी अथवा न छोडी कर्त्तारिभावमां रच्या पच्या छे. कर्त्तारि केहेतां जे कर्म जे जे दर्शनवाला पोतपोताना क्रिया कर्म वेहेवार मार्गना बांधेला तेने धर्म माने छे, तेने कर्त्तारि कर्म कहीए.

॥ उक्तंच ॥

विहित कर्म जन्यो धर्म निषिध कर्म जनो-
स्त्वधर्म ॥

एटले विहित कर्म केहेतां जे कर्मनुं करवुं, एटले क्रिया प्रमुख करवाथी धर्म माने छे, एवुं पण एक लोकमां धर्म छे, पण ते कंई धर्म नथी, शामाटे जे निषेध कर्म केहेतां जे क्रिया प्रमुखनो नाश करीने स्वभावमां जे रमवुं ते सत्यधर्म छे, तथा एवुं श्री विशेषावश्यकमां नयअधिकार निगमनय आरोपित कह्यो छे, ते मध्ये कारणने विषे कार्यनुं आरोपवुं, एटले कारण जे बाह्य वेहेवारनी जे जे करणि प्रमुख छे तेने धर्म माने छे, ते करताने धर्मी कहे छे, ते कंई धर्मी थयो नहि अने करणी ते कंई धर्म थाय नही.

॥ उक्तंच ॥

वाह्य क्रियाया धर्मत्वः धर्म कारणस्य धर्मत्वेन कथनं ॥

एवुं नयचक्रमां पण कह्युं छे, इहां कोई कहेशे के भाव कारणमां तो कंई आरोप नथी, तेनो उत्तर जे भाव कारणने विषे तो आपआपणा कार्यनो स्वभाव छे, त्यां कंइ कर्त्तारि नथी, अने निगमनय छे ते कंइ भावमां नथी ए तो द्रव्यनय छे. अहियां पण अकृत्रिम भावनी वात छे, अकृत्रिमनी वात होत तो स्वभाव ग्रहण थाय, तथा चेतन मात्र वर्णवी ते तो चेतनाना बे भेद छे एटले शुद्ध चेतना १ तथा अशुद्ध चेतना २ अशुद्ध चेतना केहेतां नर नरकादिक चारे गतिनी वात जाणे, द्विप समुद्र आदे देईने सर्व परभावनी वात जाणे तेने अशुद्ध चेतना कहीए, तेमध्ये जे स्वस्वरूपना गुणपर्यायादिक जाणे ते अशुद्ध चेतना छे, पण महाशुभ छे, जे पोताना स्वरूपने जाणे, अने शुद्ध स्वभावने विषे रमणता तेने विषे स्थिरपरिणाम,एवुं जे जाणपणु छे तेने शुद्ध चेतन कहीए. तेनंज धर्म कहीए. अने ते धर्म केवो छे, अविच्छिन्न केहेता कोई

काले पोताना स्वस्वरूपथी ए धर्म जुदुं नहि पडे ए एक आत्म स्वरूपनी वृत्ति मात्र एनेज कही छे.

॥ उक्तंच ॥

चेतन मात्र वृत्ति धर्मविछिन्न ॥

एवी रीते परभावमां जे रमणता अने धर्मनुं मापवुं एवुं पण एक स्वभावे छे. इत्यादिक अशुद्ध परिणतिरूपे शुभा शुभ कार्य कारणना समभाव चेतन वलगेला छे ते सर्वे परभावना घरना समभाव छे, पण शुद्ध परिणतिरूप समभाव न थयो तेथी ए समभावने पुद्गलिक ऋद्धिमां गण्यो छे, ते परभावनो नाश थाय त्यारे शुद्ध रूपनी प्राप्ति थाय, ते शुद्ध स्वरूपने विषे तो उपादान कारण कार्य समये समये अनंतु नीपजी रह्युं छे, ए भाव जेने प्रगट थयो, तेने प्राग्भाव कहीये. शामाटे जे पूर्वे एवी शुद्ध स्वभावनी प्राप्ति नहिं हती ते प्राप्ति थइ एटले पूर्वे शुद्ध स्वस्वरूपनो अभाव ज हतो एटले प्राग्भाव कहीये तथा समकितनी आदे देई जे जे नवा गुण प्रगट थाय ते सर्वे ने प्राग्भाव कहीए.

॥ उक्तंच ॥

अनादि सांत प्राग्भाव इतिवचनात् ॥

एटले पूर्वना भावनो नाश थयो तेने प्राग्भाव कहीए ॥ इति प्रथम ॥ १ ॥

हवे बीजो परध्वंशाभाव केहेतां जे कार्यनी उत्पत्ति थया पहेलां अथवा थया पछी ध्वंश कहेतां नाश करवो तेने प्रध्वंशाभाव कहीए, एटले आपणो आत्मा अनादिकालनो संसारने विषे रखडे छे, अने अनंत गुणनो धणी छे ने कंइ रुप आव्युं नहि अने रखडवुं पडे छे, तेनुं कारण ए छे जे मोहादिक शत्रुओ उत्पत्ति

थया पेहेलां एटले समकित पाम्यां पहेलांथी आत्माना गुणनो नाश करता रह्या, एटले गुण प्रगट थावा दीधो नहि, अने परभावमां रमाड्या, परपंतानुं करी मान्युं, शुभाशुभने धर्म करी मान्युं, अज्ञानने ज्ञान जाण्युं, ज्ञानने अज्ञान जाण्युं, वस्तुधर्मने अधर्म जाण्युं, शुद्ध परिणतिने अशुद्ध परिणति जाणी, अशुद्ध परिणतिने शुद्ध परिणति जाणी, आरोपिता उपचरित असद्भूत तेने धर्म करी मान्युं, अण-आरोपित अणउपचरित सद्भूत तेने अधर्म जाण्युं, ए सर्वे समकित पाम्या पेहेलांनां लक्षण छे, शा माटे जे केटलाएकतो आजिविकाने अर्थे करता फरे छे, केटलाएक पूजाना मनावाने अर्थे, केटलाएक पोताना मतादिकनी खेंचे करीने, ते सर्वे मिथ्यात्वी छे, तथा समकित पामीने वम्युं ते पण मोहादि शत्रु भमावे छे, शा माटे के समकित पामीने बे अक्षरनुं जाणपणुं थयुं, अथवा बाह्यथकी करणी आदिक सारी रीते करे ते वारे मिथ्यात्वरूपभूत एना हृदयमां पेसे ते वारे मत फरी जाए अने गुरु आदिकने माने नहि अने स्वमति कल्पनाए धर्म उपदेश करे. जथारोहगुप्त निन्हव. एटले पछो शास्त्र सिद्धांत माने नहि पोतानी मति कल्पनाए करी एनुं युक्तिए करीने समजावे ते मध्ये साधुने उपदेश करवानो अधिकार, अथवा सूत्र भणवानो अधिकार, जेम व्यवहारसूत्रमां कह्यो छे तेटले तेटले वर्षे थाय ते विना करे ते पण सूत्रना उत्थापक छे, तथा श्रावक थइने जे उपदेश करे ते पण सूत्रसिद्धांतना तथा गुरुना पण उ-त्थापक छे तथा भगवाननी आज्ञाना पण उत्थापक छे ए संपूर्ण सर्वे प्रकारेथी निन्हवज छे, अने जमालि प्रमुख जे निन्हव थया ते तो देशथकी छे, अने ग्रहस्थ थइने देशना दे ते सर्वथकी निन्हव छे, शा माटे जे श्रीवीर परमात्माए तो ग्रहस्थने श्रोता कह्या छे अर्थनी प्राप्ति गुरुने प्रश्न पुछवाथी कही छे. पण वांचवा भणवा लोकोमां

संभलावा तेथकी नथी. ए अधिकार श्रीभगवतीजीथी जाणजो. तथा श्रीप्रश्न व्याकरणने विषे संवरद्वारे ग्रहस्थ तथा देवताने सांभलवानो अधिकार कह्यो छे, पण कंइ सभा भेगी करवी, देशनाओदेवी, ते अधिकार तो साधुनो कह्यो छे, तथा श्रीनिशिथसूत्रने विषे जे साधु ग्रहस्थने भणावे तथा ग्रहस्थने भण्या वखाणे, तो तेनुं चार महिनानुं चारित्र जाय तथा ग्रहस्थ जो भण्यो वखाणे तो तेने चार महिनाना चउविहारा उपवासनुं आलवण आवे, इत्यादिक घणां शास्त्रने विषे ग्रहस्थनी देशना अथवा ग्रहस्थनुं भणवानुं निषेध कर्युं छे ते कारणथी जे करे तेने निन्हवज कहीये. ते घणी अनंताभव रखडे, तथा एनी देशनाना सांभलनार पण अनंताभव रखडे, ए श्रीवीर परमात्मानुं भाखेलुं छे ते सर्वे शास्त्रमां छे ए पण एने मोहादिक शत्रुए एना धर्मनो नाश कर्यो. हवे जे मोहादिक शत्रु समकित पाम्या पछी जे शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो हतो तेनो नाश करे छे, तेनो विचार किंचित् मात्र देखाडुं छउं. एनां निमित्तकारण तो पांच इंद्रिने मन छे अने उपादान कारण रागद्वेष परिणति छे ते मध्ये रागना वे भेद छे, एक शुभ राग छे १ बीजो अशुभ राग छे २ शुभ रागना वे भेद छे एक प्रशस्त राग १ बीजो अप्रशस्त राग २ ते मध्ये समकितादिक पामवानो जे राग ते पण स्वपरिणति छे तथापि पामवानो राग छे अथवा पाम्या ते गुण साचववानो राग छे अथवा आत्माना केवलादिक गुण प्रगट करवानो राग छे अथवा मारा आत्मानी मुक्ति थाये इत्यादिक सर्वे राग छे ते स्वपरिणति नेलीधे छे माटे एने प्रशस्त कहीये. अने राग छे ते कर्मबंध हेतु छे, माटे एने शुभ राग कहीये. तथा अप्रशस्त शुभ राग ते ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता नथी, अने देवगुरु धर्म उपर ए राग राखे छे अने गुरु

आदिकनी भक्तिने विषे लयलिन रहे ते धर्णीने अप्रशस्त शुभ राग छे, शा माटे जे स्वपरिणति राहित छे प्रशस्तपणुं नथी, तथा अशुभ राग तेना बे भेद छे, एक प्रशस्त ॥ १ ॥ बीजो अप्रशस्त ॥ २ ॥ ते मध्ये प्रशस्त जे धर्म एवो शब्द नाम ग्रहण करीने जे क्रिया कष्ट तप जप करे छे ए सर्व अशुभ छे अहींआं कोई केहशे जे धर्मनां एवां कारण तेने तमो अशुभ केम कहोछो, तेनो उत्तर के ए सर्वे कारण विप क्रिया ॥ १ ॥ गरल कीरिआ ॥ २ ॥ अनुष्टान अन्योअन्य किरीआ ॥ ३ ॥ ए त्रण क्रियाने विषे थाय छे, अने ए त्रण क्रिया ते अशुभज छे, ए क्रियाने कोई शुभ लखता नथी. एनो विशेष विचार शास्त्र थकी जाणजो, तथा अप्रशस्त अशुभ राग ते वणसमजणे अथवा उपयोगरहित परजीवने बचाववा अथवा दानादिक देवुं अथवा संसारना सर्वे कारण ए सर्वे अप्रशस्त अशुभ राग छे, माहावीर स्वामि ए गोसालाने बचाव्यो तद्वत् समजी लेजो. हवे जे द्वेष छे, ते पण बे प्रकारनो छे एक स्वपरिणति थकी कर्मादिक भिन्न द्रव्यने काहाडवानो विचार एक एवो पण द्वेष छे ए सर्व धर्मद्वेष एक प्रकारनो केहवाय, बीजो जे अधर्मद्वेष ते संसारादि सर्वे कारणमां समजवो, एवां जे कारण मलवाथी, जे पोतानी शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो, ते धर्म थकी भ्रष्ट करीने संसारमां रोले, एटले ए आत्मगुणनो नाश करे ते मोहादि शत्रु आत्मगुणनो प्रध्वंसभाव छे तेज आत्मा पोते प्रध्वंस स्वभाव जाणे जे आ मोहादिक शत्रु कर्त्ता छे, माटे हुं एनोज नाश करुं ते शावडे थाय तेनो हेतु बतावुंछुं, के सद्गुरु बहुश्रुत निस्पृहभाव स्वस्वभावना भोगी परस्वभावना त्यागी, तेवा गुरुनी हुं शेवा भक्ति करुं तेमने शरणे जइने रहुं एटले एवा मोहोटा पुरुषनुं वलावुं लीधे थके मारां कर्मादिनो नाश

मोहादिक चोर करी शके नहि, माटे हुं एवा सद्गुरुने आधिन थइने रहुं. पुष्ट आलंबन ए वगर बीजो कोइ नहि, हवे उपादान कारणने विषे स्वपरिणति परभावमां जावा न देउं, ते स्थिर भाव थाउं, शुभाशुभ कारण कारज थकी माहारा आत्माने उगारुं, अने शुद्ध भावने विषे माहारा आत्माने जोडुं, तो ए मोहादिक शत्रुओनो नाश थाय, ए रीते पूर्वे पण जे सिद्धि वरया ए धणी ए भावथीज सिद्धि वर्या छे, वर्त्तमान काले पण जेनी सिद्धि थाय छे, ते पण एज भावथी थाय छे, अनागत काले पण कार्यसिद्धि ए भावथीज थाशे, ए विना बीजा प्रकारथी कार्यसिद्धि छे नहि, ए वात निःसंदेह छे. एटले आत्मा पर भावमां रमतो हतो ते वारे स्वस्वभावनो ध्वंशमात्र हतो, तेज आत्मा स्वस्वभावमां परिणम्यो तेवारे सर्व परभावनो ध्वंश थयो. हवे कोइ वस्तुनो एने ध्वंश करवो नथी, एटले ए सत्य प्रध्वंशाभाव कही देखाड्यो. एटले ए बीजो भाव कह्यो.

हवे त्रीजो अत्यंताभाव कहेतां अत्यंत अभाव छे, ते कहीए छीये, ते आत्माने विषे परभावनो अभाव छे, शुद्ध निश्चयनये करीने जोईये तो कर्त्तारिपणे छे नहि, अने शुभाशुभ पण छे नहि, ए मूल वस्तु धर्ममां अत्यंत कहेतां घणो घणो करीने ए धर्म आत्माने विषे छेज नहि, एटले ए त्रीजो अभाव कह्यो.

हवे चोथो अन्योअन्य अभाव कहेतां जे प्रगट पण घटने विषे पटनो अभाव छे ने पटने विषे घटनो अभाव छे तेम चेतनने विषे परधर्मनो अभाव छे, ने परधर्मने विषे चेतननो अभाव छे ते किंचित् विवरीने कहुं छउं. अहियां प्रथम छ द्रव्य छे तेनां नाम ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय

॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥६॥ ए छए द्रव्य जे छे ते एक एक द्रव्यने विषे अन्योअन्य अभाव छे एटले धर्मास्तिकायना द्रव्य ॥ १ ॥ खेत्र ॥ २ ॥ काल ॥ ३ ॥ भाव ॥ ४ ॥ तथा गुण पर्यायादि ते जीवने विषे एनो अभाव छे एम जीवना द्रव्य खेत्र, काल, भाव, गुण, पर्यायादि तेनो धर्मास्तिकायने विषे अभाव छे, एम अन्य द्रव्य जे चार रह्यां ते जीवनी साथे त्यारे जोडी लेवां, ते पण एक एकने अन्योअन्य अभावज छे, तथा स्वजाति आश्रीने जीव एक एवा अनंता छे, ते स्वजाति कहेवाय शामाटे जे सरखो द्रव्य, सरखा गुण, सरखा पर्यायादिक लाधे तेने स्वजाति कहीये. परंतु आपणा आत्मा थकी तो सर्वे जीव भिन्न छे ते माटे आपणा ज्ञानादिक गुण, आपणा अगुरु लघु आदिक पर्याय ए थकी तेना गुण पर्याय पण भिन्न छे माटे आपणा चेतनने विषे अन्य जे बीजा जीव अनंता रह्या, तेना द्रव्यनो पण आपणे विषे अभावज छे, तेम एना पर्यायादिकनो पण आपणे विषे अभावज छे एम अन्योअन्य अभावधर्म प्रवर्त्ते छे.

तथा जेम जीवने विषे अजीवनो अभाव, तथा जेम अजीवने विषे जीवनो अभाव, तथा धर्मने विषे अधर्मनो अभाव, तथा अधर्मने विषे धर्मनो अभाव, तथा संवरने विषे आश्रवनो अभाव, तथा आश्रवने विषे संवरनो अभाव, तथा निर्जराने विषे बंधनो अभाव, तथा बंधने विषे निर्जरानो अभाव, ने पुन्यने विषे धर्मनो अभाव, अहियां कोई प्रश्न करशे जे दानादिक कारण छे तेने शुं धर्ममां गणीए के पुन्यमां गणीए? तेनो उत्तर. जे दान शील तप ३ ते त्रण पुन्यमां गणाय छे, ते मध्ये केटलाएके दान पुन्यमां गणे छे, केटलाएक पापमांज गणे छे, शा माटे जे दान पांच

प्रकारनां कह्यां छे अभयदान ॥ १ ॥ सुपात्रदान ॥ २ ॥ अनुकंपादान ॥ ३ ॥ कीर्तिदान ॥ ४ ॥ उचित्तदान ॥ ५ ॥ ए पांच दान मध्ये कीर्तिदान तथा उचित्तदान ए बे तो पुन्यहेतु छेज नहि, अने अनुकंपादान छे ते किंचित् भाग पापनुबंधि पुन्यनो हेतु छे, अने अभयदान स्वगुण रखोपुं करतां धर्मनुं छे, अने परप्राणनुं रखोपुं करतां पापानुबंधी पुन्यहेतु किंचित् भाग छे. अने परगुणनुं रखोपु करतां पुन्यहेतु छे. ज्ञानादिक गुणहेतुनुं करे तो, नहितो पाप हेतुमां जाय. हवे जे सुपात्रदान छे ते तो एक साधु मुनिराजने छे, ते विना बीजा कोईने सुपात्र कह्या नथी. अहिंयां कोई कहेशे के साधुने अभावे श्रावकने पण जमाडवा तेनो उत्तर, जे साधु विना सुपात्र थाय नहि, अने पुन्यबंधनां थानक ॥ ९ ॥ नव कह्यां छे ते श्रीसुयगडांगजी मध्ये छे ते तो साधुने आश्रिने कह्या छे, तेनां नाम

॥ अन्नपुन्ये ॥ १ ॥ पानपुन्ये ॥ २ ॥ वथ्थपुन्ये ॥ ३ ॥ शेनपुन्ये ॥ ४ ॥ लेनपुन्ये ॥ ५ ॥ मनपुन्ये ॥ ६ ॥ वचनपुन्ये ॥ ७ ॥ कायपुन्ये ॥ ८ ॥ नमस्कारपुन्ये ॥ ९ ॥

ए नव प्रकारे छे. ते तो साधुने आश्री कह्यां छे, तथा उपाशक दशांगमां साधु विना बीजाने आप्युं नहि, एवुं आणंदजी बोल्या छे, अहिंयां कोई प्रश्न करशे जे संखजी आदे देइने, तेनो उत्तर, जे ए जमतां कंई कह्युं नथी, स्वामिवत्सल कह्युं नथी, पोसाति कह्या तीहां तो एवुं कह्युं छे जे आपणे एक ठेकाणे एकठा जमीए, त्यां तो एक उजाणीरूप च्यार दोसदार मळीने कर तेम

छे, आहिंयां कोई कहेशे जे स्वामिवत्सल एतुं नाम ते शुं छे ? तेनो उत्तर. जे सरखा धर्मना साधु साधुनी वेआवच्च करे, तेनुं नाम स्वामिवत्सल छे, अथवा श्रावक कोई धर्मथी भ्रष्ट थतो होय अथवा आजीविकाए दुखियो होय तेने स्थिर करवो, तेनुं नाम वत्सलता कहीए, अहिंयां कोई कहेशे जे, सात खेत्र धन खरचवुं कह्युं छे. ते खरुं छे पण कंई श्रावकने धन आपि देवुं एम तो कह्युं नथी ? तथा आ कालने विषे आजिविका अर्थी पेटभरा घणा लोको कमाइ खाय छे, तथा केटलाएक मुवानां धन लावी मिष्टान भोजन जमे छे धाम धूमादिक करी तेने ओठे खाय छे, तो ए मुवानो काढेलो द्रव्य ते गडका दान कहीए. ते महा अशुभ द्रव्य छे ते तो भाट, भोजक, ब्राह्मण, कूतरां खोडां ढोर पारेवा प्रमुख अपुन्निया जीव छे ते खाय छे पण उत्तम जीवने तो ए भक्षण करवा लायक नथी, तथा हाथ ग्रहवा लायक नथी, अने साधु तथा श्रावक नाम धरावीने एवा अशुभ माठा द्रव्यने भोगवे छे, ने ते धणीने धर्म बतावे छे, ते धणी महा हिण पुन्नियाने बहुल संसारी संभवे छे, अनंतोकाल संसारमां रखडशे, अने सात खेत्र जे वावरवुं, ते तो गृहस्थने घेर निरंतर वपराय छे, अने जे मानत मानीने खरचवुं, ते कल्पित द्रव्य छे, ते अशुभज कहेवाय ते उत्तम जीवने वापरवा लायक नथी, ए सर्वे पाप हेतुज कहेवाय. हवे जे साधुने दान देवुं ते शुभ हेतु छे, आहिंयां कोई कहेशे जे भगवतिजीने विषे एकांत निर्जरा कही छे. अने तमे शुभ हेतु केम कहो छो ? तेनो उत्तर. तेना गुणठाणानी हद्द प्रमाणे निर्जरा करे, पण सर्वथी निर्जरा एने होय नहि, शामाटे के एने शुभ आवखुं लांबुं बांधवानुं कह्युं छे,माटे एने घेर पुन्य बंध हेतुज छे, तथा शियलव्रत छे ते जगतमां शोभा लायक छे तथा तप जे छे ते बाह्य तप शोभा लायक छे, ने अभ्यं-

तर तप कर्म निर्जरे ते पण सर्वे शुभ हेतु छे, अने भाव छे तेना अनेक भेद छे, ते मध्ये शुद्ध भाव ते मुक्ति दाता छे, बाकी भाव छे ते शुभाशुभ हेतु छे.

॥ उक्तंच ॥ १ ॥ दानंदुर्गति नाशाय ॥ शीलंसोभाग्य कारण ॥ तपःकर्म विनाशाय ॥ भावनाभवनासिनि ॥ २ ॥

// ते माटे धर्म त्यां पुन्य नहि ने पुन्य त्यां धर्म नहि, शामाटे जे बन्नेनां कारण कार्य भिन्न छे, पुन्य छे ते कर्म बंध हेतु छे, धर्म छे ते मुक्ति हेतु छे अहियां कोई पुन्यने धर्म माने छे, ते धणीने आत्मस्वरूप स्वगुणनो अत्यंत अभाव छे अने हजु परभावनो अत्यंताभाव नथी करचो ए रीते स्वधर्मने विषे, परधर्म अने परधर्मने विषे स्वधर्मनो अन्योअन्य अभाव छे, ए अन्योअन्याभाव चोथो भेद समजवो ए आत्मस्वरूपने विषे त्रणे भाव प्रध्वंशादिक अंगीकार करो, तो प्रथमनो प्राग्भाव प्रगट थयो, अने ए प्राग्भाव प्रगट एज आत्मानी सिद्धि थाय. एटले शुद्ध भाव तेज प्राग्भाव छे.

॥ दुहा ॥

अभाव चार वर्णव्या, प्राग्भावादि जेह ॥
बालजीवने कारणे, तत्व प्राप्ति तेह ॥ १ ॥
आत्मस्वभाव अशुद्ध जे, काल अनादि लाध्यो ॥
तेथी अभाव चारे हुता, अवलि परिणति साध्यो ॥२॥
हवे शुद्ध स्वभाव ए, ज्ञान द्रष्टिए जाग्यो ॥
त्यारे स्वभाव हवे साधिया, शुद्ध स्वरूपमें लाग्यो ॥३॥
ए रीते समजी करी, निजस्वभावमां रेशे ॥

अबला ते सबला करी, निजस्वरूपमां लेशे ॥ ४ ॥
अनुभव ज्ञानथी ए रच्यो, चउ अभाव प्रकरण ॥
शुद्ध स्वरूपनी खोजथी, शुधो अनुभववर्ण ॥ ५ ॥
ए रीते अनुभव सहित, वांचशे भणशे जेह ॥
कारज तेनुं सिद्ध होशे, तेमां नहि संदेह ॥ ६ ॥
ओगणिसें बतरीसमे, संवछरे अवधार ॥
श्रावण उत्तम मासए, शुक्लद्वादशिसार ॥ ७ ॥
भोमिपतिवार भलो, सुरत शेहेर मोझार ॥
श्रोता उत्तम जोगथी, चोमासु रह्या उदार ॥ ८ ॥
सेहेज अनुभव रमतां थकां, ए अनुभव चित्तआयो ॥
ते तुरत प्रगट कर्यो, भव्य जीवहित लायो ॥ ९ ॥
हुकम जे मुनिवर तणो, माथे चडावी सार ॥
शास्त्र अनुसारे भाखियो,अध्यात्म गुण उदार ॥१०॥
शुद्ध स्वरूप प्रकाशियो, कीधो अशुद्धनो नाश ॥
परपरिणति परभावनो, आहियां नहि रेहेवास ॥ ११ ॥
शुद्ध भावशुद्ध भेदथी, शुद्धपरिणति विशाल ॥
अभाव च्यारे त्यांहां प्रगटया,उत्तम लक्षण निहाल१२
ए प्रबंध ए रचनासवि, जाणे भाव बहु श्रुत ॥
अल्प बुद्धि समजे नाहि, गुरुगमथी एकंत ॥ १३ ॥
ते माटे बहु श्रुत जोई, निस्पृहि निजानंद ॥

शेवा करजो तेहनी, भेद पामशो आणंद ॥ १४ ॥
आणंदरूप एक आतमा, बाकी सर्व असत्य ॥
ते ध्याने मुक्ति लहे, आगे पाम्या अनंत ॥ १५ ॥
वलि अनंता पामशे, पामे छे वर्त्तमान ॥
निश्चित उपादान शुद्ध ग्रहि,ए भाखुं शुधमान ॥१६॥
मुनि हुकम रचना करी, स्वअनुभवधारि ॥
परअनुभव अलगो टल्यो, शुद्ध भाव निहालि॥१७॥
श्रोता पण तेवा तिहां, अनुभव गुणना रशिया ॥
शुद्ध भावना लालचु, ते मुज पासे वशिया ॥१८॥
पुद्गलना भिखारि जेह, तेनुं नहि अहिंयां काम ॥
ते अहिंयां आवे नहि, ते चउगति भटकण ठाम॥१९॥
रागद्वेष रहित ए, कीधो ग्रंथ विनाण ॥
भावे करि जे वाचशे, सांभलतां प्रगटे नाण ॥२०॥
बहू श्रुत तर्कवाद सहित, स्वपर स्वरूपने जाणे ॥
निस्पृहि भाव सदा रहे, ते पासे भेद ठांणे ॥ २१ ॥
न्याय विना समजे नहि, शुद्धा शुद्ध स्वरूप ॥
ते माटे गुरुगम कही, लेवी शुद्ध अनुप ॥ २२ ॥
ए उपदेश हृदय धरी, जे करशे अभ्यास ॥
मुनी हुकम ते पामशे, शीवसुंदरी घर वास ॥ २३ ॥

॥ इति चउअभाव प्रकरण संपूर्ण ॥

श्रीमिथ्यात्व विध्वंसन.

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहो ॥

वंदू सिद्ध स्वरूपने, निजानंद विलाश ॥
आपस्वरूपी आपमां, वधे गुणकी राश ॥ १ ॥

संसारमां सर्वे जीव सिद्ध सरखा छे, असंख्यात प्रदेशे करी निर्मल छे, एवी सत्ता घणी छे, परंतु पोतानी सत्ताने देखी शकता नथी, शा माटे के मिथ्यात्वे करीने आत्मा छवराइ गयो छे तेथी करीने स्वस्वभावने छोडीने परभावमां रमे छे. शिष्यवाक्य–स्वामी मिथ्यात्व ते शाने कहोछो? ने मिथ्यात्व शाथकी जाय? गुरुवाक्य–हे भद्र! मिथ्यात्वनो विस्तार घणो छे, परंतु किंचित् कही देखाडुंछुं, ते मिथ्यात्वना बे भेद छे, तेनो विवरो करतां केटला एक बीजा पण भेद केहेवाशे, हवे ते मिथ्यात्वना बे भेद करीये छीये, तेनां नाम, द्रव्य मिथ्यात्व ॥ १ ॥ भाव मिथ्यात्व २ द्रव्य मिथ्यात्वना बे भेद, एक व्यवहार मिथ्यात्व १ बीजो निश्चय मिथ्यात्व २ हवे ते मिथ्यात्वनो स्वरूप संक्षेपथी देखाडीये छीये, एटले मिथ्या केहेतां जुठी वस्तुने साची करीने माने, तथा साची वस्तुने जुठी करीने माने तेने मिथ्यात्व कहीये, ते मध्ये लौकिक देव केहेतां हरिहरादिक तेने देव करीने माने, अथवा पोतानी मतलबे तेनी बाधा आखडी राखे

तथा लौकिक गुरु कहेतां ब्राह्मण, जोगी, सन्याशी, प्रमुखने गुरु करी जाणे तेना चमत्कार देखीने तेने माने. २ लौकिकधर्म जे सदाव्रत देवुं तथा होली भुख्यां रेहेवुं, इत्यादिक मिथ्यात्वीना पर्व तथा व्रत करे तेने लौकिकधर्म कहीए. ३ लोकोत्तर देव जे रिखवादिक जे तीर्थंकर तेनां जे तीर्थं प्रतिमा तेने पोताना संसार हेतुए मानवा, बाधा आखडी राखवी ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहीये ४. तथा लोकोत्तर गुरु मिथ्यात्व कहेतां जे साधु मुनिराजनी शेवा भक्ति आहारपाणी प्रमुखनी सुश्रुपा राखे, मनमां एवुं विचारे के, महाराज वचन आशिर्वाद कहे तो आपणुं सारुं थाय. तथा मंत्र जंत्र प्रमुखनी आशाए करे. ५ तथा लोकोत्तर धर्म कहेतां श्रीपाळने आंबिलनी ओलीथकी सारुं थयुं, तथा गुणमंजरी वरदत्तने पांचम करवाथकी सारुं थयुं, इत्यादिक वहु जणने तपजप धर्मकरणी थकी सारुं थयुं, तो आपणे पण अमुक तप प्रमुख करवा थकी सारुं थाय ॥ ६ ॥ ए छ मिथ्यात्व ते मध्ये त्रण लौकिक मिथ्यात्व तथा त्रण लोकोत्तर मिथ्यात्व छे, ए मिथ्यात्व ते वेहेवार थकी छे तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरना छे, तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरनो निश्चय मिथ्यात्व तेना दश भेद छे, देव मिथ्यात्व केहेतां जे देववीतराग जेनो रागद्वेष गयो, सर्व कर्म थकी रहित थया स्वरूप रमणी लोकालोक भास्कर, एवा जे अरिहंत परमात्मा तेने देव करी न जाणे ए प्रथम मिथ्यात्व./१ तथा जे देवपणुं नथी पाम्या, रागद्वेष विषय कषायना भरेला एवा जे हरिहरादिक तेने देव करीने माने ते बीजुं मिथ्यात्व. २ तथा जे साधु आत्मरमणीक स्वरुपानुंयायी परभाव त्यागी, स्वभाव भोगी. मंद कषायी, करुणासागर, ज्ञान उपयोगी, एवा जे मुनिराज तेने साधु करी न

माने, ए त्रीजुं मिथ्यात्व. ३ जे असाधु रागद्वेष विषय कषायना भरेला, आत्म स्वरूपना अजाण, शुभाशुभ करणीना रागी, जड भावमां रच्या पच्या रहे, तेने साधु करीने माने, ए चोथुं मिथ्यात्व. ४ धर्म जे वस्तुनो स्वभाव तथा जीवदया, स्वपरनो जड चेतननो विभाग, इत्यादिक जे केवली भाख्यो धर्म तेने अधर्म माने, ए पांचमुं मिथ्यात्व ॥५॥ जे अधर्म जीवदया प्रमुख नहीं तथा वस्तु स्वरूप जाण्या विना क्रिया कष्ट तपजप प्रमुखने धर्म माने ते छट्ठुं मिथ्यात्व. ॥ ६ ॥ जे जीव स्वरूप चेतना लक्षण चार संज्ञा सहित तथा एकेंद्रिथी ते पंचेद्री पर्यंत अनेक थानक उपजवानां तथा वीणसवानां शास्त्रादिक न जाणे, ने इत्यादिक स्वरूपने जीव न माने ए सातमुं मिथ्यात्व. ७ जे अजीव पदार्थ जड छे तेने वण समजणथी केटला एकठामने विषे जीव करीने माने छे ते आठमुं मिथ्यात्व. ८ मुक्ति केहेतां सरव जड भागनो त्यागी सर्व कर्म रहित शुद्ध स्वरूप जेवुं सत्ताए हतुं तेवुंज निर्मल प्रगट थयुं, ने लोकने अंते सिद्ध स्वरूप थइने वीराजमान थया तेने मुक्ति न माने ते नवमुं मिथ्यात्व. ९ जे अमुक्ति केहेतां जे संसारना वैभव थकी छुट्या नथी, चाकर ठाकरपणुं ज्यां रह्युं छे जन्म मरण जेनां गयां नथी, एवा जे वैकुंठ गौलोक यावत् जीव पर्यंतने जे मुक्ति माने छे ते दशमुं मिथ्यात्व. १० ते दश मिथ्यात्व पांच प्रकारे करीने मानवामां आवे. जे पुर्वे ए दश कह्या ते मांहेला जे बोल जे कुगुरुना झलावेला ते प्रत्ये छांडे नहि, सुगुरु मले समजावे तोयेपण हठवाद छोडे नहि, तेने अभिग्रहित मिथ्यात्व पेहेलुं कहीए. १

हवे ते मध्ये केटलाएक जीव एम जाणे जे सुगुरु केहेछे ते पण ठीकज छे, तथा पूर्वे कुगुरुए समजावेलुं छे, ते पण ठीकज छे,

आपणे ए कुटमां पेसवुं नहि, आपणे तो सर्वे मानवा जोग छे, एवुं जे विचारे छे तेने सुगुरु कुगुरुनी परीक्षा न थइ, तथा सत्यासत्य वचननी परीक्षा न थइ, तेने एक वातनो निरधार पण न थयो तेने मन दूध अथवा छाश बंन्ने एके पाडे जाय तेने अनाभिग्रहित मिथ्यात्व कहीए. २

जे पूर्वे सुगुरुए बताव्या, एवा जे दश बोल ते सारी रीते समजेलो ते कोइ कर्मना उदयथकी अणस्मृतिथी वचन नीकल्युं, पछी पोते समज्यो के आ वचन तो हुं बोलतां बोल्यो परंतु हुं बोल्यो ते वचन पाछुं न फरे, एवुं धारीने खोटी युक्तिओ करी, ते वचनने साबित करे तथा कोइ वात उपर ममत थतां ते धर्मने खोटुं करवा चाहे ते धर्मने तोडवा चाहे,ए सर्वे जाणीने करवुं रह्युं अथवा कल्प व्यवहारनी मर्यादा वास्ते आत्मस्वरूपने जाणतो थको शुद्ध मार्गनी खबर वालो जीव जडनी पुष्टि करे, एटले शुभाशुभ क्रियानी पुष्टि करे तेने जडनी पुष्टि करी कहीए. शामाटे के क्रिया त्यां कर्म छे माटे ए सर्व जडनुं पोषण थयुं, शा माटे के इहां कर्मनुं वधारवुं थाय छे, एवी रीते जाणीने एवा काममां प्रवर्ते तेने अभिनिवेशिक मिथ्यात्व कहीए. ३

एज पूर्वे दश बोल कह्या इत्यादिक बोलोने विषे शंका पडे जे कोणे जीव दीठो, तथा मुक्ति अरिहंत ए कोणे दीठां छे, इत्यादिक सर्वे परंपराथी केहेता आव्या ते मानीए छीए. शुं जाणीए के ए वस्तु साची छे के जूठी छे, अने शास्त्रनो कांइ भरोंसो पडे नहि, केमके जेम आ स्वामीनारायण काल नजरे थयो तेणे महा दुःख महा कष्टे करी घणो द्रव्य राजा तथा ब्राह्मणने खवरावीने पोतानो धर्म चलाव्यो, ते सर्वे आपणे प्रत्यक्ष नजरे दीठेलुं छे, तेने लोक एना मतवाला भगवान करीने माने छे, तथा कुबेर भक्त

हाल वर्त्तमान बेठोज छे, तेने पण तेना मतवाला भगवान केहे वानी इच्छा राखे छे, ते जाणीए छीए के चारे दहाडे एने मुवा पछी भगवान ठरावशे, तेनां कर्तव्य सर्व आपणे प्रत्यक्ष नजरे देखीए छीए, एम आगलना कोइ ढोंगीथी आ धर्म चलाव्यो होय तो केम खबर पडे ? अने शास्त्र उपर जो जोवा जइए तो हाल जे उपरना कह्या ते धर्मवालाए शास्त्र नवां बांधेलां छे ते धणीए पण घणी जुक्ति अने हलाहल खोटी वार्त्ताओ मांहेली कोरे नांखी छे, ते धणीना विद्यमानना देखवावाला नहि होय त्यारे केटला लोको एवुं जाणशे के अहो भगवाने आवां आवां काम करेलां छे, ने ते प्रत्यक्षपणे आपणे जोइए छीए के खोटां शास्त्र बनाव्यां छे एम आगलनाए तेवां शास्त्र बनाव्यां होय तो तेनो शो भरोंसो रहे ? एम मनमां शंका कंखा जेने रेहेती होय तेने संशयिक मिथ्यात्व कहीए. ४

शिष्यवाक्यः–स्वामी तमे संशयिक मिथ्यात्व कह्युं ते ठीक पण प्रत्यक्ष आ लोकोनां जे शास्त्र अने आ लोकोना भगवान् आपणे देखिये छीये, तेमज आ धर्म सामाने भासन थाय. सत्धर्म शा थकी भासन थाय एतो कांइ इहां वेसतुं नथी, पछी तमे जोरावरीथी मनावो तो मोटा छो, कोण जोइ आव्युं के एटली वस्तु पूर्वे बनेली छे के एवा ढोंगी पुरुषे पोताने पूजावा वास्ते अथवा पोतानी पंडीताइ देखाडवा वास्ते उभुं कर्युं छे, जेम आ डाकोरनी मूर्ति गुगली लोको द्वारकांथकी चोरीने लइ आव्या छे अने ते डंक नामा पुराण जे आमोदना दीनानाथ नामे ब्राह्मणे बनाव्युं छे, ते धणीये डाकोरनुं देहेरुं तथा गामनां झाड प्रमुख सर्वे सोनानां कह्यां छे, ते दीनानाथ भटने मुवाने वरस दशने आशरे थवा आव्यां ते धणीए एवां गप्पां प्रत्यक्ष मारेलां छे तेम बीजा शास्त्रवालाए पण

गप्पां मारयां होय तो, शी मालुम पडे माटे ए ठेकाणे तो, शंका मोहोटीज रहे, ते वातमां संदेह नही. गुरु वाक्यः–हे भद्र, एवी तने महामोटी शंका उत्पन्न थइ तो ताहारो समकितादिक गुण क्यां रह्यो, प्रत्यक्ष नास्तिक पणु भासन थाय छे माटे एवी शंका न जोइये हवे हुं तने ए शंकानो उत्तर आपुं ते तुं स्थिर चित्त करीने सांभल अने तारा मननी शंका कंखा होय अथवा आ उत्तरमां शंका उत्पन्न थाय ते पूछीने निश्चल था. जे तने सर्व थकी धर्मनी शंका पडी तथा शास्त्रनी पण शंका पडी, माटे तने शास्त्रनो उत्तर तो हाल अम थकी देवाय नहि, परंतु न्यायवादे करीने जे उत्तर तने आपीये ते तुं धार. प्रत्यक्षपणे जीव छे ते खरो के नहि ? वादी कहे जीव कांइ दीसतो नथी, गुरुवाक्यः–जीव विना बोलवुं चालवुं ते कोण करे छे ? वादी कहेः बोलवानुं स्वरूप ते आकाशमां रह्युं छे, अने चालवुं ते जडनो स्वभाव छे. गुरु वाक्य–के जे बोलवानुं स्वरूप तें आकाशने विषे कह्युं, ते आकाशने विषे तो शब्दनो गुण छे, पण अक्षरादीक उच्चारण नथी, तथा चालवानो गुण जे ते पुद्गलनो स्वभाव कह्यो ते तो सूक्ष्म पुद्गलमां छे, परंतु बादर जे स्थुल पुद्गल तेमां कांइ चालवानो स्वभाव प्रत्यक्षपणे दीसतो नथी, तेमां प्रत्यक्ष चालवानो स्वभाव होय तो घट पटादीक चाल्यां जोइये, ए माटे चेतननोज गुण इहां लेवो. वादी उक्त–के जो चेतनमांहि होय ते थकी चालतुं होय तो तमारा केहेण थकी वनस्पतिमां जीव छे तो ते पण चाली जोइए. गुरुवाक्यः–वनस्पतिने विषे इंद्रि एकज छे तथा ए चाली शके नहि, वादी उक्त. एकेंद्रि जे काया छे तेथी चाली न शके तो बीजी चार इंद्रिमां तो चालवानो स्वभाव छेज नहि, तो जीवनुं चालवुं शानुं रह्युं माटे अमे कहीये छीए के चालवुं ते जडमांज छे, जेम घडीआल प्रत्यक्ष

जड छे ते एनी मेले चाल्या करे छे तेम ए काया पण पुद्गल चाले छे, इहां कांइ जीवनुं कारण छे नहीं, गुरु वाक्य-जे कांइ घडीयाल चाले छे ते जीवनी बनावेली कल ते उपरथी चाले छे, ते पण जीवने आठेने आठे दहाडे संभाल लेवी पडे छे, कुंची फेरवे छे चक्कर प्रमुख लुंछी पुंजी पाछां चढावे छे, त्यारे चाले छे पण कांइ तेनी मेले चालती नथी, तथा तें जे कह्युं के चार इंद्रि बीजांमां चालवानो गुण छे नहि ते खरुं छे, परंतु बीजी इंद्रिओ आव्या विना फरश इंद्रि थकी चलाय नहि, केनी गोडे के जे दूध छे तेमांथी कोइ घी-काहाडवा चाहाशे, तो पण सर्वथा नीकली शके नहीं, पण जो पैसा भार मेळवण पडे तो पछी घी नीकळे तेम एकेंद्रिमां बीजी इंद्रिनी प्राप्ति थाय तोज चालवानी गति आवे पण ते विना चालवानी गति आवे नही. वादी उक्तः-जेम बीजी इंद्रिना मळवा थकी तमे चालवुं कह्युं, ते वारे एवुं भासन थाय छे के इंद्रिओमांज चालवानो गुण रह्यो छे पण कांइ जीव पण जो दीसतु नथी.

गुरुवाक्यः-जीवपणा विना इंद्रिओनुं बांधवुं कोण करे माटे जे इंद्रिओ बांधे छे तेज जीव छे, वादी उक्तः—जे तेम इंद्रिओना बांधनाराने जीव ठरावो छो ते तो कंइ संभवतो नथी जे त्रसरेणु प्रमुख उडी उडीने घर प्रमुख अवावर जगाने विषे पडे छे ते रज पाछी स्थूल थाय छे तेमां तो कोइ शास्त्रवाला जीव केहेता नथी, तो ए इंद्रि एक कोणे बांधी माटे जडनो कर्त्ता जड छे. गुरु वाक्यः ते त्रसरेणु प्रमुख जे खंध ते सरवे पृथ्वी काय वनस्पतिकायना छे ते प्रथम जीवना बांधेला एकेंद्रिनाकायना पुद्गल छे जीव विना वनस्पतिकाय प्रमुख थाय नहीं. वादीयुक्तः-वनस्पति प्रमुखनुं जे थवुं छे ते माटी पाणीना जोगथी उत्पत्ति थाय छे एमां कंइ जीवनुं कारण दीसतुं नथी. गुरुवाक्यः-जीव विना उगे

नहीं, के जुवो प्रत्यक्ष जे कंइ झाड छे, ते जेना मांहे जीव होय ते पाणीना जोगथी नव पल्लव थाय, परंतु तेज व्रक्षनी डाली जीवरहित थइ होय तेने कांइ पल्लव आवे नहि माटे जीव छे ते सत्य छे. वादीयुक्तः–के ते डालीना पुद्गल घणा खरी गया हशे तेथी तेने पल्लव आवतुं नथी जेम वृद्ध पुरुषने छोकरां न थाय तेम एने पण पल्लव नथी आवतुं. गुरुवाक्यः–तेहीज वृद्ध पुरुष वीर्यहिण थयो तेथी तेने छोकरां न थाय परंतु आहार तो ते पुरुष करे तेम ए डाली प्रमुखने विषे पल्लवतो ना आवे परंतु पाणी तो खेंच्युं जोइए, तो तारी वात खरी थाय परंतु पाणीनो रस खेंचवानी एनी शक्ति नथी. शक्ति तो जीव होय त्यारेज पामीए. वादीयुक्त–जो पाणीनो रस खेंचवाथकी जीव मानो तो मृतिकाना हाथी प्रमुख अनेक जनावर आवे छे, तेने जेटलुं पाणी मुकीये तेटलुं पीधे जाय छे, माटे तेने पण जीव मान्यो जोइये गुरुवाक्य–एतो पाणी पीए छे तेम मूतरतुं जाय छे. तेनी कायामां कांइ रेहेतु नथी माटे ए जडरूपज छे, वादीयुक्त–कायामां जे रसनो संग्रह तेने तमो जीव मानो छो, त तो जठराग्निनुं जोर होय ते रसपाचन घणुं करे, जेने जठराग्निनुं जोरमंद होय ते रसपाचन ओछुं करे, माटे रसना ग्रहण अग्रहणथकी जीवनो निर्णय न थाय शा माटे के पांच भूत मलीने एक स्थूल बंधाय छे ते पांचे भूत पोतपोतानां काम करे छे तेमां कांइ जीवपणुं न मनाय. गुरुवाक्य–जो पांच भूत पोतपोतानुं काम करे छे, तो पृथ्वि आदिक चार थावरने विषे वायुतत्व शुं काम करे छे ? वायुतत्व इहां कांइ काम करतो दिसतो नथी, शा माटे के पृथ्वि आदिक थावरने विषे एक एक तत्वनी मुख्यता छे एटले पृथ्विकायने विषे पृथ्वी तत्वनी मुख्यता छे अपकायने विषे जल तत्वनी मुख्यता छे, अग्निकायने विषे अग्नितत्वनी मुख्यता छे

वायुकायने विषे वायुतत्वनी मुख्यता छे, अने वनस्पतिकायने विषे पृथ्वीतत्वनी मुख्यता छे, ए पांच थावर मध्ये अग्निकायने विषे अग्नितत्व तथा पृथ्वीतत्व बेनी मुख्यता दीसे छे, तथा वनस्पतिकायने विषे चार तत्वनी मुख्यता दीसे छे. पृथ्वीतत्व तथा जलतत्व तथा अग्नितत्व तथा आकाशतत्व ए चार तत्वनी मुख्यता जोवामां आवे छे तथा बेरंद्रियादिक जे त्रस जीव रह्या तेने विषे पांचे भूत मालुम पडे छे, परंतु ए पांचे भूत कांइ जीव नथी ने ए पांचे भूत जीव विना रसपाचन करवा समर्थ नहि, तथा चालवा पण समर्थ नहि तथा अक्षर उच्चारण करवा कांइ समर्थ नहि, ए कारण सर्वे जीव होय त्यारेज बने. वादीयुक्त–चालवुं हालवुं सर्वे वायुतत्वना बलथकी थाय छे, ज्यांसुधी वायुतत्व होय त्यां सुधी ए रसपाचनादिक सर्वे कार्य करे ने वायुतत्व गयाथी ए सर्वे तत्व जुदां पडे छे ते प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे इहां कोइ जीव स्वरूप दीसतुं नथी. गुरुवाक्य–तुं वायुतत्वने जीव सरखो माने छे. ए तारी मोटी भूल छे केमके अक्षर उच्चारण करवानी शक्ति, वायुनी होय नहि तथा शुभाशुभ वेदवुं, ते पण वायुतत्व जाणे नहि, केमके वायु तत्वथकी श्वासोश्वास लेवाय छे, परंतु–शुभाशुभमां ए जड शुं समजे, तमे तमारा मनमां विचारी जुओ. वादीउक्त–शुभाशुभनुं जाणवावालुं तो मन छे अथवा नवा विचार उठाववावालुं पण मन छे पण कांइ जीव तो दीसतो नथी.

गुरुवाक्यः—एज जीव गया पछी जे कलेवर पडेलुं छे ते केम कंइ शुभाशुभ वेदतुं नथी, इंद्रिओ तो पांचे साबुत छे, एक वायु तत्व मांहेथी गयो छे, परंतु तेने कांइ शुभाशुभ कारण छे नहि. वादीयुक्तः—मननो नाश थइ गयो माटे कोण वेदे ? गुरुवाक्यः वायुतत्व गयो छे पण मन तो तमारा कीधाथी गयुं नथी. वादी

युक्तः—मन ते वायु छे के नहि. जगतमां मन पवन केहेवाय छे माटे मन तो वायु मेगुंज गयुं. गुरुवाक्यः—जो मनथकी शुभाशुभ वेदे छे तो पृथ्वी आदिक थावरने विषे वेधुं जोइए, परंतु पृथ्वी, वनस्पति इत्यादिक जे छे ते कंइ शुभाशुभ ने वेदता नथी तो शुं एने तमे एक भूत मानो छो के पांचभूत मानो छो कदापि तमे केहेशो के पृथ्वी आदिकने एक एक भूत मानीएछीए तो वनस्पति काय भूतमां छे नहि. वादीयुक्तः—वनस्पति पृथ्वीतत्वमां गणीएछीए. गुरुवाक्यः—पृथ्वी तत्व छे तो ए रसशाथकी पाचन करे छे ? तो प्रत्यक्ष इहां अग्नि तत्व दीसे छे, तथा तेनां पान प्रमुखने मरदीए तो रसनीकळे छे, तो जलतत्वपण दीसे छे तथा खीली प्रमुख एनेविषे मारीए तो मांहेली कोरे समाय छे तो आकाशतत्व पण दीसे छे, ए चार तत्व वनस्पतिने विषे दीठामां आवे छे, ने वायुतत्व दीठामां आवतो नथी अने रसनुं पाचन वायुतत्वविना इहां थाय छे, तो इहां जीव खरो के नहि ? अने जो जीव न मानो तो पांचभूत इहां मेळवी आपो, पांचभूतविना पुतळुं बंधाय नहि, एवी तारी बोली छे. वादीयुक्तः—तमारा शास्त्रमां श्वासोश्वास पर्याप्ति तथा श्वासोश्वास प्राण कह्यो छे ते वायुतत्व ज छे. गुरुवाक्यः—तुं शास्त्रतो प्रथम मानतो नथी तथा परोक्ष वस्तु पण मानतो नथी अने हवे तने उत्तर देवानी जगो न मळी त्यारे तें शास्त्र देखाडवा मांड्यु तो एम परोक्षने वाछे छे त्यारे जीवज कबुल करनी अने शास्त्रमां पण जीव कहेलो छे एम शास्त्रथी पूछीश तो अमारे जवाब देवानुं घणुं सुलभ छे माटे जीव छे ते सत्य छे खोटी कल्पना शाने करे छे वादीयुक्तः—एम जोतांतो जीव भासन थाय छे परंतु जीव ते केवो हशे अने जीव कांइ दीठामां आवतो नथी तेथी मनमां शंका रहे खरी माटे अमने जीवनुं स्वरूप बराबर गळे उतारो तो अमारी

शंका मटे. गुरुवाक्यः—जीव केवो हशे ते जीव तो अरुपी छे ते कंइ देखाय नही, परंतु एनां लक्षण स्वभावे करीने जाणवामां आवे ते जीवनेविषे आठ सामान्य लक्षण छे तेनां नाम कहीएछीए अस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ अगुरुलघुत्व ५ परदेशत्व ६ चेतनत्व ७ अमूर्तीत्व ८ ए आठ जीवना सामान्य गुणछे, तथा छ विशेष गुण छे, तेनां नाम ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४ चेतनत्व ५ अमूर्तीत्व ६ हवे तेनो अर्थ संक्षेपथी देखाडीए, छीए, जीव द्रव्यना गुण ते द्रव्यने वळगीने रह्या छे तेनो कोइ काले नाश न थाय तेने अस्ति स्वभाव कहीए. वादीयुक्तः—जीव द्रव्य तेशुं ? एटले जीव केहेतां शुं ? द्रव्य केहेतां शुं ? ने गुण केहेतां शुं ? तेनी अमने समज पडी नथी ते अमने प्रथम समजण पाडीने पछी आगळ चालो.

गुरुवाक्यः—जीव तो जे पूर्वे कह्यो ते चेतना लक्षणे करीने सहित होय तेने जीव कहीये. अने खंध जे एक आखो होय कोइ काले खंडन न थाय तेने द्रव्य कहीए. अने गुण जे द्रव्यने ओलखावे तेने गुण कहिये, जेम पट छे ते ओढवा पेहेरवा खप लागे तेथकी ओलखीएके ए पट छे, तथा घट छे ते जल भरवा खप लागे ते गुणवडे करीने घट ओलखाय, एटले एक द्रव्यनो गुण बीजा द्रव्यमां मळे नहि जेम घट ओढवा खप न लागे, पट छे ते जल भरवा खप न लागे एटले ते पोते पोतानो गुण पोताना द्रव्यने मळीने रह्यो छे तेथकी द्रव्यनी ओलखाण थाय छे हवे ते द्रव्य छ प्रकारना छे तेनां नाम धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ काल ६ ए छ द्रव्य छे ते मध्ये धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ४ एच्यार द्रव्य एक एकज अनेजीव द्रव्य एक एवा अनंता छे,

ने पुद्गल द्रव्य परमाणुरूप अनंता छे, तथा द्वीप्रदेशीनी आदे देइने अनंत प्रदेशी खंध एवा द्रव्य उपचारे करीने अनंता छे हवे जे जीवस्वरूप छे ते कहीए छीए, एटले एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अनंता गुण छे, ने अनंता पर्याय छे, ते स्वरुपसर्वे प्रमाण-नयथी जाणवामां आवे, तेप्रमाण नयना बेभेदछे, एक प्रत्यक्षप्रमाण बीजो परोक्ष प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाणना बे भेद, केवलज्ञानसर्व प्रत्यक्ष प्रमाण छे, ए प्रथम भेद १ अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान ए देश प्रत्यक्ष प्रमाण २ हवे परोक्ष प्रमाण केहेतां मति श्रुतज्ञान ते परोक्ष प्रमाण छे. तेना बे भेद एक द्रव्यथकी १ बीजो पर्यायथकी २ ते द्रव्यार्थिकना १० भेद छे, तथा पर्यायार्थिकना छ भेद छे, तथा ए द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक ए बे नय मलीने सात नय पण थाय छे, तेनां नाम, निगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ ऋजु-सूत्र ४ शब्द ५ संभीरुढ ६ एवंभूत ७ तथा व्यवहारनयना पक्षथकी उपचारे त्रण उपनय पण थाय छे, तेनां नाम सद्भूत व्यवहार १, असद्भूत व्यवहार २, सद्भूतासद्भूत व्यवहार ३, तेनुं स्वरूप आगल कहीशुं. हवे द्रव्यार्थिकना दश भेद देखाडीए छीए. हवे शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेतां कर्म उपाधिरहित सत्ता स्वरूप जोइए तो सर्वे संसारी जीव सिद्धरूप छे. ए ते शुद्ध आत्माज केहेवाय १, नित्य द्रव्यार्थिक केहेतां उत्पाद व्ययने न विचारीए तो शुद्ध द्रव्य सत्ताने विषे जोतां ते नित्य छे २, तथा अति शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेतां भेद कल्पनानी अपेक्षा न करवी जेथी गुण पर्यायरूप द्रव्यनुं इहां अभिन्नपणुं थयुं ३, कर्म उपाधि सापेक्ष स्वरूपनुं विचारवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक कहीए. जेम क्रोधी आत्मा, इत्यादिक नाम धरावे ते ४, उत्पाद व्ययनी अपेक्षा सहित स्वरूपनुं जोवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक, जेम एक समयमां उत्पाद व्यय ध्रुव आत्मा छे ५ भेद कल्पनानी

अपेक्षा लेइने स्वरूपनुं जोवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक छे, जेम आत्माना ज्ञानदर्शनादिक गुण छे एवुं बोलवुं ६, अन्वय द्रव्यार्थिक कहेतां गुण पर्याय स्वाभाविक द्रव्य, ७, स्वद्रव्यादि ग्राहिक द्रव्यार्थिक जेम स्वद्रव्यादि चतुष्टयीक अपेक्षा द्रव्यास्ति ८, परद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक यथा परद्रव्यचतुष्टिय अपेक्षाए द्रव्यनास्ति ९. परमभाव ग्राहिक द्रव्यार्थिक यथाज्ञान स्वरूप आत्मा एटले अनेक स्वभाव चेतनना छे ते मध्ये ज्ञान मुख्यपणे छे, शामाटे के ते स्वपरप्रकाशक छे ते वास्ते १०, एटले द्रव्यार्थिकना दशभेद कह्या.

हवे पर्यायार्थिकना छ भेद कहीए छीए. अनादि नित्यपर्याय कहेतां पुद्गलपर्याय नित्य छे. १ सादि नित्यपर्याय कहेतां सिद्धपर्याय नित्य छे. २ शुद्धपर्याय कहेतां सत्तानी गुणताए उत्पात व्ययनुं ग्रहण स्वभाव ते सदा अनित्य छे, एम समये समये पर्याय विणसे. ३ सत्तासापेक्षभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. ४ हवे कर्म उपाधि निरपेक्ष स्वभाव अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. जेम सिद्धना पर्याय तादृशरूप अथवा संसारीना पर्याय अशुद्धज कहीए. ५ कर्म उपाधि सापेक्ष स्वभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. जेम संसारी जीवनी उत्पत्ति मरण खरुं छे. ६ एटले पर्यायार्थिकना छ भेद कह्या.

हवे सातनयनां नाम मात्र संक्षेपे देखाडीए छीए. निगमनय अतित अनागतादिक आरोपणने माने छे १, संग्रहनय छे ते परस्पर अविरोधी छे २, व्यवहारनय देखता भेदने वेहेंचे छे३, ऋजु सूत्र वर्त्तमानग्राही छे. ४ शब्दनय शब्दादिकग्राही छे. ५ संभी रुढदेश उणाने वस्तु माने छे. ६, एवं भूत संपूर्णने माने छे. हवे उपनयना भेद देखाडीए छीए. शुद्ध सद्भूत व्यवहार केहेतां शुद्ध

गुणगुणीना तथा शुद्ध पर्यायना केहेवा, ए पेहेलो भेद १, अशुद्ध सद्भूत व्यवहार अशुद्धगुण अशुद्ध गुणीना अशुद्ध पर्यायना भेद केहेवा ते बीजो भेद २, स्वजाति सद्भूत व्यवहार कहेतां बहु परदेशनुं केहेवुं १ विजाति सद्भूत व्यवहार यथा मूर्तिमान, ज्ञान दर्शन तथा द्रव्य तथा आत्मा कहेवो २, स्वजाति विजाति सद्भूत व्यवहार एटले जीवअजीव ज्ञाननुं कथन भेगुं करवुं, जेम अमुक पुरुष ज्ञानी छे ३, हवे असद्भूत व्यवहारना त्रणभेद स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार केहेतां पुत्रकलत्र इत्यादिक ए मारुं छे १ विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार कहेतां वस्त्रआभरण प्रमुख माहारुं छे२, स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार एटले देश नगर राज्य माहारुं छे ३, हवे जे पुत्र प्रमुख पोताना कहे ते जीवजीव स्वजाति छे ने तेनुं जे शरीर प्रमुख ते विजाति छे; परंतु जीव आश्रीने स्वजाति कहीए. पण जीव कोइ कोइनो छे नहि, पण उपचारे करीने पोतानो माने छे, ए पेहेला भेदनो अर्थ थयो. हवे विजाति कहेतां जे वस्त्र आभरण तेने विषे कांइ जीव छे नहि, माटे ए अपरजाति तेने विजाति कहीए ते पण वस्तुना भोगदारी अनेक थइ गया ते पण कांइ पोतानी छे नहि, परंतु उपचारे करीने पोतानी मानी छे, ए बीजानो अर्थ, तथा स्वजाति विजाति केहेतां जे देश नगर प्रमुखने विषे जीव छे ते स्वजाति छे, ने देशादिक ऋद्धि छे ते विजाति छे एटले ए बे मलीने स्वजाति विजाति त्रीजो भेद थयो, ते पण कांइ आपणुं छे नहि, आपणाथकी तो भिन्न छे परंतु उपनये करीने आपणुं माने ए त्रीजा भेदनो अर्थ; एटले नय अधिकार पुरो थयो.

एवी रीते विचारे तो जीवनुं स्वरूप हाथ आवे, पण कांइ रूपी नथी के देखाडवामां आवे, माटे एना जे कोइ आस्तित्वादिक

गुण ते थकी वस्तु हाथमां आवे, ते अस्तित्व स्वभाव प्रथम कह्यो छे. हवे तेना सात गुण बाकी रह्या तेनुं स्वरूप कहुं ते सांभळ. बीजो स्वभाव वस्तुत्व एवे नामे एटले वस्तुनो जे स्वभाव ते फीटीने बीजी वस्तु न थाय, एटले घट फीटीने पट न थाय, ने पट फीटीने घट न थाय, यद्यपि सामान्य विशेष वस्तुनो स्वभाव दिसे, जेम एक जीव मुक्तिने विषे प्राप्त थयो ने एक जीव संसारमां छे अथवा जेम एक घटने विषे घी भराय ते घीनो घट कहेवाय, एक घट अशुची प्रमुखनो ते अशुचीनो कहेवाय, एम सामान्य विशेष जणाय, परंतु वस्तु धर्म पोतानुं छोडीने बीजुं धर्म ना आदरे,ए बीजो गुण द्रव्य स्वभाव केहेतां निज निज पोत पोताना प्रदेशना समुदाये करी अखंड वर्त्त-तो स्वभाव छे एटले जीव संख्यात प्रदेशी द्रव्य छे. धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय असंख्यातप्रदेशी द्रव्य छे आकाश अनंतप्र-देशी द्रव्य छे. ए चारे अखंड द्रव्य छे. ए चारे द्रव्य कोइ काळे खंडीत थाय नहि, ए द्रव्यत्वस्वभाव कहिये. शिष्य वाक्य—स्वामि पूर्वे छ द्रव्य कह्यां छे अने इहां चार द्रव्य केम बताव्यां. गुरुवाक्य —जो पुद्गल द्रव्य परमाणुने कहिये छीये तो प्रदेशादिक लाधता नथी अने जो खंधने द्रव्य कहिये छीये तो ए स्वाभाविक द्रव्य छे नहि ए विभाविक द्रव्य छे, माटे एना द्रव्यना विचारनी चरचा घणी छे ते इहां जो करवा बेसीये तो ग्रंथ गौरव थइ जाय माटे ए द्रव्य इहां गणाव्यो नहि तथा काळद्रव्य छे ते उपचारे छे. ए कांइ वस्तु कशी छे नहि माटे ए पण इहां गण्यो नथी ते माटे चार द्रव्य अखंडीत छे एने विषे द्रव्यत्वस्वभाव रह्यो छे, एने विषे सत् द्रव्यपणानुं लक्षण तादृश्य रूप दीसे छे. पोताना गुणपर्यायने विषे व्यापी रह्यो, उत्पादव्यय ध्रुव संयुक्त तेने द्रव्य कहिये, एटले ए द्रव्यनुं लक्षण कहुं ए त्रीजो गुण. ॥ ३ ॥ प्रमेयत्व कहेतां जे स्व-

परनी वहेंचण तेनुं जे प्रमाण तेने प्रमेयत्व कहिये, तथा पोत पोताना स्वभावने विषे परिणमवुं, परभावनो त्याग करवो, तेने प्रणम्यत्व कहिये ए चोथो गुण. ४ अगुरु लघुत्व कहेतां सूक्ष्म भाव वचन गोचर नहि प्रत्यक्ष नहि, आगमप्रमाण छे ते पन्नवणा थकी जाणजो ५ प्रदेशत्व कहेतां सुक्ष्म जे भाव परमात्मा भाषित तत्वनुं जे हेतुपणु जेहने न होय ते, आज्ञा सिद्ध करवुं केमके द्रव्य अन्यथा न होय, प्रदेश स्वभाव कहेतां खेत्रनो अविभाग तेने प्रदेशत्व कहिये. ६ चेतनत्व कहेतां चेतनपणुं एटले चेतननुं अनुभववुं यदुक्तं—

॥ श्लोक ॥

चैतन्य मनु भुति स्यात् सक्रिया रुप मेवच
क्रिया मनोवचःकायेष्व चिंतावर्तते ध्रुवं. ॥ ७ ॥

एटले चेतनत्वपणुं कह्युं. ७ अमूर्तित्व एटले रूपादिके करी राहित. ८ ए आठगुणे करीने सहीत तेने जीव कहिये, इत्यादिक बीजा पण जीवनी ओलखाणना स्वभावादिक छे ते आगल प्रसंगे आवशे त्यां केटलाएक कहेवाशे. एटले एवी रीते जीवनुं स्वरूप ओलखवुं, शंका कंखा होय ते काढी नांखवी.

तथा जे शास्त्रनी शंका ते पण समजवुं के सर्वज्ञनां वचन अने छद्मस्थनां वचन कांइ छानां रहे नहि एटले सर्वज्ञनां वचनने आत्मस्वरूपनी रमणता तथा जीवादिक नव तत्व षट् द्रव्य ते पक्ष प्रमाणादिके करीने जाणवा तथा जे नय निक्षेपा प्रमाण प्रमुखे भेद वहेंचवा ते नय शुद्ध व्यवहार कह्यो छे शामाटे जे विकल्पे करीने ए सर्व भंग जाल थाय छे, मूल स्वभावे जोतां तो कांइ ते स्याद्-

वाद पक्षनी खप छे नहि इहां तो अभेदज्ञान मुख्यपणे खप लागे छे. शिष्य वाक्य–स्वामी स्याद्वादनी खप नथी त्यारे तो एकांत वचन थइ जाय–गुरुवाक्य–जे स्याद्वाद वर्णव्युं तेज व्यवहार छे–तथा खटदर्शन समुच्चय ग्रंथनी टीकामां एमज कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥ वाद इति विकल्प ॥

ते माटे एक आत्मस्वरूपनुं रमण तथा आत्मानी वार्त्ता तेज सत्य छे–शिष्यवाक्य–त्यारे एटला बधा भेद करवानुं शुं कारण–गुरुवाक्य–जे ए भेदादिक वहेंचवा थकी सामाने घणो खुलासो थाय एटला वास्ते करीने भेदनुं वहेंचवुं थाय छे माटे एवां शास्त्र जे छे ते सर्व जाणवां–शिष्यवाक्य–स्वामि जे गणिताणुजोग प्रमुख शास्त्र छे ते शा कारणे कह्यां हशे–गुरुवाक्य–जे गणिताणुजोग छे ते जाणवारूप छे तथा धर्म कथानुजोग छे ते पण जाणवारूप छे अने जे चरणकरणानुजोग छे–ते एक आदरवा जोग छे. शिष्यवाक्य–स्वामि ए तो पुद्गलनी करणी छे तेने आदरवानु शुं कारण ? गुरुवाक्य–जो ए चरण करणानुजोग नहि आंदरे तो शासननी ओलखाण रहेशे नहि अने ओलखाण नहि रहेतो शासननो उच्छेद थइ जशे एटला वास्ते ए चरणकरणानुजोग बांधेलो छे.

॥ गाथा ॥

जइजिणभइयंपवजहंतो ॥ माववहारनयमयंमयह ॥
विवहारपरीवाये ॥ तिथुछेओजउवशं ॥ १ ॥

इत्यादिक वचन भद्रबाहु स्वामिनां पण छे माटे ए शासननी ओलखाण तथा शासनने राखवा माटे ए अनुजोग छे.

हवे पांचमुं अणाभोग मिथ्यात्व कहिये छीये. एटले अणाभोग कहेतां अजाणपणुं एटले तेने धर्मनी तथा वस्तुनी कशी मालम नथी. तेने अणाभोग मिथ्यात्व कहिये ५, एटले द्रव्य मिथ्यात्वना घरनुं ए निश्चयमिथ्यात्व थयुं. शिष्यवाक्यः—स्वामि, व्यवहारमिथ्यात्वना छ भेद कह्या, तथा निश्चयमिथ्यात्वना पंदर भेद कह्या तेमां फेर शो छे.

गुरुवाक्यः—व्यवहार मिथ्यात्वना छ भेद कह्या ते करणीरूप लोकना जोवामां आवे माटे एने व्यवहार कहीए अने निश्चय मिथ्यात्वना १५ भेद ते मनमां धारवा समजवाना छे, ए बाह्य लोकना जोयामां थोडा आवे माटे एने निश्चय मिथ्यात्व कह्युं, एटले द्रव्यमिथ्यात्वनुं स्वरूप कह्युं. हवे भावमिथ्यात्वनुं स्वरूप कहिये छीये. एटले भाव केहतां आत्मानो स्वभाव जे धर्म धर्म करे ने परभावमां रमे तेने भावमिथ्यात्व कहीये. शिष्यवाक्यः—स्वामि अमने खुलासो करीने समज पाडो, संक्षेपथकी अमारी नजर पहोंचे नहि. गुरुवाक्यः—जे परभाव कहेतां जे जडनी दशा तेने परभाव कहीए एटले जडनां जे जे काम छे तेने धर्म करीने माने छे, कहेतां मन वचन कायाथकी जे करणी करवी ते सर्वे आश्रव छे, तेने संवर करी माने कहेतां जे जडनी क्रियाना बे भेद छे, शुभ तथा अशुभ, एटले संसारादिक करणी ते अशुभकरणी, तथा शुभना अनेक भेद छे एकेंद्रियादिकनी दया, तेनुं पालण पोषण, ए सर्वे पापानुबंधीया पुन्यने विषे छे, यथायोग तरतम योग छे, तथा जे बीजी शुभकरणी संघ तीर्थ यात्रा प्रमुख करवां कराववां ते पण सर्वे शुभकरणी छे, तथा जस विजयजी उपाध्याये समकितना सडसठ बोलनी सझायने विषे एवुं कहयुं छे, जे आठ प्रभावक साधु न होय तो तीर्थयात्रा प्रमुखवाला छेक प्रभावक छे, एटले

ए कंइ आठ प्रभावकमां छे नहि. तथा तेने समकितनो पण नियम छे नहि, तथा करणी पण शुभनीज छे,पछी तत्व तो केवलीगम्य.तथा जे व्रत नियम प्रमुख ते पण शुभकरणी छे, परंतु देशविरति सर्व विरति छठ्ठा सातमा गुणठाणाना यावत् अगियारमा सुधीना छे, तथा तप छे ते सर्व पुण्यानुबंधी पुण्यमां पण छे तथा निर्जरामां पण छे तेनो विवरो कहिये छीये. एटले पांचमा छठ्ठा गुणठाणा सुधी प्रमादभाव छें, तीहां सुधी क्रिया आचार पण छे, सातमे गुणठाणे अप्रमादी छे, तेमां कांइ क्रिया आचार छे नहि, ते छठ्ठा सातमा सुधी जेने आत्मउपयोग छे, तेने निर्जरा पण छे तथा शुभाश्रव पण छे अने जेने आत्मउपयोग नथी, तेने एकलो शुभाश्रव छे, अने जे सातमा उपर अगियारमा सुधी आत्मउपयोग विना होय नहि, तेने तो निर्जरा होय, तथा पुण्यानुबंधी पुन्य होय ए बंने वाना लाधे, माटे एम विचारी जोवुं, ए आश्रवने धर्म करी माने, तेने भाव मिथ्यात्व लागे, माटे जे धर्मने धर्म करी जाणे अने आश्रवने आश्रव करी जाणे, एवा जीव तो अल्प छे अने शुभाश्रवने धर्म करी मानवावाला जीव घणा दिसे छे, तेने भावमिथ्यात्व कहिए, तथा अनादि मिथ्यात्वादिक भेद गुण स्थानक क्रमारोहनी टीकाथकी जाणजो, ते कारण माटे ए जे द्रव्यभाव मिथ्यात्व गया विना समभाव थाय नहि ने समभाव थया विना श्रद्धा स्थिर थाय नहि, श्रद्धा विना समकित होय नहि,समकित विना तप जप क्रिया भण्युं कशुंये लेखामां गणाय नहि, अने ज्ञान विना तो धर्म तथा मुक्ति छेज नहि, शा माटे के आत्मस्वरूपना उपयोग विना तो समकित कहेवातुं नथी, उपयोग छे ते तो ज्ञानमां छे, ते कारण माटे ज्ञाननो खप करवो, शा माटे के ज्ञान छे, तेहिज समकित तथा चारित्र तथा मुक्ति कहीए, ते श्री जसविजयजी उपाध्याये

सवासो गाथाना स्तवनमां कह्युं छे जे ज्ञाननो तिक्ष्ण उपयोग तेने चारित्र कहीए. ते माटे ज्ञान छे तेज चारित्र तेज मुक्ति छे.

॥ उक्तंच सवैया एकतीसा ॥

कोइक्रूरकष्टसहै तपसों शरीर दहै धुम्रपान करै अधोमुख व्हैके झुले हैः केइ महाव्रत गहै क्रियामें मगन रहै वहे मुनिभारमें पयारकेसे पुले है इत्यादिक जीवनकों सर्वथा मुगति नांहि फिरे जगमाहि ज्योंवयार के बधु लहै जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहिकोनिरवान करमके करतार भरममें भुले है. १

ते कारण माटे ज्ञान छे, एहिज मुख्य छे, माटे ज्ञानवडे करीने सर्व द्रव्यनुं जाणपणुं करीने पांच द्रव्य हेय जाणीने छांडवा, एक चेतना ज्ञानरूप उपादेय जाणीने आदरवो, तेथकीज आत्मानिःकर्म थाय, माटे आत्मानुं भासन करीने मांहे व्यापकपणुं करवुं ने रमण करवुं. त्यां भेदपणुं न लाववुं, एटले आत्मा तेज परमात्मा छे, एवी रीते तद्रूप स्वसत्तागवेषी अने शक्तिभावे गुण छे ते व्यक्तिभावमां रमण करे तेने जीवनमुक्त कहिए. तेनो आत्मा कर्म रूप रज थकी निर्मल थाय, तेना असंख्याता प्रदेश निर्मल करीने सिद्धक्षेत्रमां जइने सिद्धपणे रहे, तेने फरीथी जन्म मरण करवां न पडे, अनंता काल सदाए सुखमां रहे, ते विना कोइ मुक्ति चाहे छे, जे केटलाएक तो एम जाणे छे, के तपथकी मुक्ति लेइशुं, केटलाएक जाणे छे के क्रियाथकी मुक्ति लेइशुं, केटलाएक जाणे छे के प्रभु पूजावाथकी मुक्ति लेइशुं. पण ते वात मिथ्या छे, इहां कोइ

कहेशो के प्रभु पूजवामां मुक्ति ठाम ठाम कही छे, अने तमे ना केम कहोछो ! तेनो उत्तर—के मुक्ति तो आत्म स्वरूपमां छे, तथा जसविजयीकृत साडि त्रणसें गाथाना स्तवनमां वादीनुं एवुं वचन छे के अमे प्रभु पासे मुक्ति मागी लेइशुं, ते ना उत्तरमां एवुं कह्युं छे जे कोण मूले करीने प्रभु पासेथी मुक्ति वेचाथी लेशो. एटले बोध बीज कांइ दीधुं आवनुं नथी तथा श्री हरिभद्र सूरिजिकृत षट दर्शन समुच्चय ग्रंथने विषे एवुं कह्युं छे के रागद्वेषना तजवाथकी, तथा ज्ञानदर्शन चारित्रना आराधन थकी मुक्ति मले.

॥ उक्तंच ॥

जिनेंद्रो देवता तत्र ॥ रागद्वेषविवर्जितः ॥ हत मोह महामल्लः ॥ केवल ज्ञान दर्शनः ॥ ४७ ॥ सुरा सुरेंद्र संपूज्यः ॥ सद्भूतार्थ प्रकाशकः ॥ कृष्ण कर्म क्षयं कृत्वा ॥ संप्राप्तः परमं पदं ॥ ४८ ॥ जीवा १ जीवौ २ तथा पुण्य ३ ॥ पाप ४ माश्रव ५ संवरौ ६ ॥ बंधो ७ विनिर्जरा ८ मोक्षौ ९ ॥ नवतत्वानि तन्मते ॥ ४९ ॥ तत्र ज्ञानादि धर्मेभ्यो ॥ भिन्नाभिन्नो विवर्त्तिमान् ॥ शुभाशुभ कर्म कर्त्ता ॥ भोक्ता कर्म फलस्यच ॥ ५० ॥ चैतन्य लक्षणो जीवो १ ॥ यश्चै तद्विपरीतवान् ॥ अजीवः २ ससमाख्यातः ॥ पुण्यं ३ सत्कर्म पुद्गलाः ॥ ५१ ॥ पापं ४ तद्विपरीतंतु ॥ मिथ्यात्वाद्यास्तु हेतवः ॥ यस्तैर्बंधः सविज्ञेय ॥ आ-

श्रवोसौ ५ जिनशासने ॥ ५२ ॥ संवर ६ स्तान्निरोधस्तु ॥ बंधो ७ जीवस्य कर्मणः ॥ अन्योन्यानु गमात्माच ॥ यः संबंधो द्वयोरपि ॥ ५३ ॥ बद्धस्य कर्मणः साढो ॥ यस्तुसा निर्जरा मता ८ ॥ आत्यंतिकोवियोगस्तु ॥ देहादेर्मोक्ष ९ उच्यते ॥ ५४ ॥ एतानि नव तत्वानि ॥ यः श्रद्धत्ते स्थिराशयः ॥ सम्यक्त ज्ञान योगेन ॥ तस्य चारित्र योग्यता ॥५५॥ तथा भव्यत्व पाकेन ॥ यस्यैतत्त्रितयं भवेत् सम्यग् ज्ञान क्रिया योगा ज्जायते मोक्ष भाजनं ॥ ५६ ॥ प्रत्यक्षंच परोक्षंच ॥ द्वे प्रमाणे तथा मते ॥ अनंत धर्मकं वस्तु ॥ प्रमाण विषयस्त्विह ॥ ५७ ॥ अपरोक्ष तयाऽर्थस्य ॥ ग्राहकं ज्ञान मीदृशं प्रत्यक्ष मितरंज्ञेयं ॥ परोक्षं ग्रहणे क्षया ॥ ६८ ॥

एटले जीनशासनुं मूल कह्युं, एटले जैननादेव केवा छे ? जिनेंद्रो केहेतां जीननाम सामान्य केवली ते मांहे इंद्र समान एवी तीर्थंकर परमात्माते देव छे ते रागद्वेषे करीने वर्जित छे, महामोहमल्ल केहेतां मोहराजाने हणीने केवलज्ञान केवल दर्शन पाम्या छे, माटे मोह तथा रागद्वेषने जीते तेनी मुक्ति थाय पण ते विना कांइ मुक्ति होय नहि, तथा सुरासुर इंद्रे पूजित ते शामाटे के सद्भूतार्थ केहेतां यथार्थ प्ररूपक छे, तथा कृत कर्म केहेतां पूर्वे शुभाशुभ कर्म करेलां तेनो क्षय करीने संप्राप्त केहेतां पाम्या छे, परमपद केहेतां

मुक्ति प्रत्ये एटले कर्यां कर्म भोगव्या विना छूटे नहि. अने शुभाशुभ कर्म क्षय कर्या विना मोक्षे जाय नहि माटे कोइनाथी कोइनी मुक्ति थती नथी, तथा मुक्ति तो ज्ञानने विषे छे, तत्रज्ञानादि धर्मभ्यो कहेतां ज्ञानदर्शन चारित्र आदे धर्म कह्युं ते धर्म भिन्नाभिन्न कहेतां भेद तथा अभेद एटले जीवादिनव तत्वनुं वर्णववुं ते भेद धर्म कहिये तथा आत्मद्रव्यनुं जे गुण पर्याय सहित कहेवुं ते अभेद धर्म कहिये, तथा वचला श्लोकोमां ए नव तत्वनो विवरो छे ते नवे तत्वजीन शासनने मते कह्यां छे, एटले नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने समकिती कहिये, ते मध्ये पांच तत्व तजवां कह्यां छे अजीव. १ पुन्य. २ पाप. ३ आश्रव. ४ बंध. ५ कोइ कहेशे के पुन्य ने तजवुं केम कहो छो तेने कहिये के अमे कहेता नथी ते उपर लखेला श्लोकने विषेज पुन्य ने पुद्गल कहीने बोलाव्युं छे.

॥ उक्तंच ॥ पुण्यं सत्कर्म पुद्गलाइति वचनात् ॥

एटले पुन्य छे ते सत कहेतां शुभ कर्मना पुद्गल छे, पुद्गल तज्याविना तो मुक्ति थायज नहि, शामाटे के एज उपर कहेला, श्लोकने विषे कह्युं छे.

॥ उक्तंच. ॥

आत्यंतिको वियोगस्तु ॥ देहादे मोक्ष उच्यते ॥ श्लोक ५४ मो टीकाः ॥ तथेत्युपदर्शने ॥ परिपक्क भव्यत्वेन तद भावात् ॥ अवश्यक मोक्ष गंतव्येन ॥ पुंसस्त्रियो वाज्ञानदर्शन चारित्रत्रयं सपुमान् मोक्ष भाजनं ॥ मुक्तिश्रियं भुंक्ते सम्यगिति ॥ सम्यक्त ज्ञा-

नमागमा ऽवबोधः क्रिया चरण करण चरणात्मिका ॥ तासांयोग संबंधः नकेवल ज्ञान दर्शन चारित्रं वामोक्षहेतु किंतु समुदितं त्रयं ॥

एटले ए चोपनमा श्लोकनी टीका छे तेने विषे पुरुषादि वेदने विषे मुक्तिनी ना पाडी छे, तथा चरण सित्तरी करण सित्तरी थकी पण केवलज्ञान केवल दर्शननी ना पाडी छे. माटे परमेश्वर पूजवामां तो मुक्ति क्यां थकीज होय. मुक्ति तो ज्ञानदर्शन चारित्रने विषे कहि छे. ते टीका थकी जाणजो इहां कोइ केहेशेके चारित्र तो पंच महाव्रतादिक व्यवहारज छे के नहि, तथा ए पुन्य बंधाय खरुंके नहि ? तेनो उत्तर ए उपरना श्लोकने विषे पंचावनमो श्लोक छे तेने विषेज ए नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने समकिती कहीयें, तेज सम्यक्त ज्ञान, तेने जोगे रमणता तेने चारित्र कह्युं छे अने साध्यसाधन जोग जे व्यवहार चारित्र तेनुं प्रयोजन, तथा फल आकाश कुसुमवत कह्युं छे, ते श्लोकनी टिका थकी जाणजो. जे समकित, ज्ञान, चारित्र, तेज मोक्ष छे शामाटेके

सम्यक्त ज्ञान क्रियायोगा

केहेतां तत्वनीजे श्रद्धा कहेतां जे द्रव्य गुण पर्याय ज्ञानादि रत्नत्रयीनुं सद् भासन प्रत्यक्ष वस्तुनु विचारवुं तेने ज्ञान कहीए. ने सद् वस्तुनी श्रद्धा करवी तेने सम्यक्त कहीए एटले श्रद्धा ते समकित जाणवुं, ते ज्ञान विचारवुं ते क्रिया एटले

सम्यक्त ज्ञान क्रिया योगा जायते मोक्ष भाजन

एटले एवुं समकित ज्ञान क्रिया होय ते मोक्षनुं भाजन थाय, तथा

प्रत्यक्षंच परोक्षंत्र द्वे प्रमाणे तथा मते

ते प्रमाणनुं स्वरूप टिका थकी जाणजो, तथा

अनंत धर्मकं वस्तु प्रमाण विषय स्त्विह ५७

यस्य टिकायेन कारणेन यदूत्पादव्यय ध्रौव्यात्मकं तत्सत् सत्वरूप मिष्यते तेने कारणेन अनंत धर्मात्मकं वस्तु प्रमाण गोचर सर्व वस्तुषु उत्पत्यादित्रय युक्तास्यैवा अनंत धर्मता ते नैव पुनरनंत धर्मात्मकत्व मुक्तंन पौनरुक्त्यं ५७

ए टिकाने विषे उत्पाद व्यय ध्रुव्यात्मीकं ते सत तेने सत स्वरुप कहिए तेनी जेने इच्छा छे तेने अनंत धर्म आत्मिक वस्तु प्रमाण जाणीने सर्वे वस्तुनुं उत्पादादिक त्रिय युक्त सेवे तेने अनंत धर्व आत्मक कहीए तेनीज मुक्ति कहीए, ते विना मुक्ति छे नहि, ए जिन शासननुं सार छे, माटे ए आत्म स्वरूपने विषे भेद अभेद ज्ञाननुं विचारवुं एटले शुद्ध व्यवहार ते भेद ज्ञान छे, अने शुद्ध निश्चय कहेतां अभेद ज्ञान छे, हवे भेद ज्ञान कहेतां जे ज्ञान दर्शन चारित्र आत्माना घरनुं छे, एम जे बोलवुं ते व्यवहार थयो एवुं जे ध्यान तेने भेद भाव रह्यो पोते ने पोताना गुणमां जुदापणुं रह्यु आत्मा एक हतो तेना त्रण भेद थया एटले व्यवहार नय कह्यो, जो अभेद ज्ञान विचारीने जोइये त्यारे तो आत्मा एकज देखाय छे एकज जाणीए छीए तेनेज विषे रमण करीए, इहां ज्ञानादिक गुण जुदा नथी. आत्मा ते ज्ञानादिक गुण तथा ज्ञानादिक गुण ते आत्मा यथा दृष्टांते सुवर्णनुं भारेपणुं स्निग्धपणुं पिलाशपणुं, ते

काइ सूवर्ण थकी नोखुं नथी, तेज सुवर्ण छे, एवी रीते आत्म स्वरूपनी श्रद्धा करवी तेने समकित दर्शन कहीए, ते जाणवुं तेने ज्ञान कहीए एनेज विषे स्थिर थइने रमण करवुं, तेने चारित्र कहीए, एज स्वरूपने उपयोग देइने जुए तो सिद्ध परमात्मा रूपज छे एवी रीतेज ध्यान करतां मुक्ति थाय पण बीजी रीते सर्वथा मुक्ति थाय नहि. उक्तंच

दुहाः—एक देखीये जानिये ॥ रमिरहिये एक ठौर ॥ समल विमल न विचारीये ॥ यह सिद्धि नहि और. १

सवैया. एकतिसा ॥ जाके पद सोहत सुलच्छन अनंत ज्ञान विमल विकास वंत ज्योती लह लही है ॥ यद्यपि त्रिविधरूपववीहारमें तथापि एकतान जैयोंनियस अंग कही है ॥ सोंहे जीव कैसी हु जुगतीके सदावताके ध्यान करी बेकों मेरी मनसा उमही है ॥ जाते अवीचल ऋद्धि हो तु ओर भांति सिद्ध नांहि नांहि नांहि यामें धोखो नांही सही है. १

अर्थः—हवे ए स्वरूपनो अनुभव स्थिर रेहेवो दुर्लभ छे, परंतु ज्ञाता पुरुष छे ते मनोरथ तो करे ते प्रमाणे अनुभव करे तेतुं कारज सिद्ध थाय ते कहीए छीए, जाके पद कहेतां जे पोताना पदने विषे अनंत ज्ञान स्वरूप स्वलक्षण कहेतां वस्तुनुं लक्षण एहीज छे तथा विमल विकाश वंत जोती कहेतां आपणो तथा परनो स्वरूप

जाणवो, तेज जोती जेने विषे देदिप्यमान थइ रही छे तथा व्यवहारमां यद्यपि कहेतां जे त्रिविधरूप छे बहीर आत्मा अंतर आत्मा तथा परमात्मा एवी रीते त्रिविधरूप छे, तथापि कहेतां तोहे पण नियत अंग कहेतां निश्चय नयनी अपेक्षाये तो ऐक्यता तजे नही तथा एकरूपज कह्यो ते तो एवो पदार्थ एक जीव कह्यो हवे केशे हू जुक्ति कर कहेतां ते जुक्ति आगल कहीये छीये ते सदीव कहेतां निरंतर मारा मननी उमेद थइ रही छे वली जाहींके ध्यान ते अपनी रिद्धि कहेतां ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अविचल थाय एवी रीते करीने सिद्ध थाय पण बीजी कोइ रीते करीने सिद्ध थाय नहि, एवुं त्रणवार कह्युं छे ए छाती ठोकीने निश्चय वचन कह्युं छे वली कह्युं छे के ए वातमां धोखो नहि एटले ए वात जुठी नथी, एटले ए वात सत्य छे माटे हे भव्य जीवो जो तमारा आत्माने सुख वांछो तो भेद ज्ञान विचारो ने विभावनो त्याग करो, स्वभावनो ध्यान करो पछी अभेदज्ञाने करीने ध्यान करो एटले आत्मा एज परमात्मा थशे. ते थकी सर्व कर्मनो नाश थाशे; ते थकी अनंती ऋद्धि सत्ताए छे ते प्रगट थशे जन्म जरामरणना फेरा टलशे अक्षय अव्याबाधसुखनो विभागी थइने शीवपुरमां जइ रहेशे, माटे एज अभ्यास करो एज अमारो उपदेश छे, तथा सर्व ज्ञानी पुरुषोनो एज उपदेश छे.

॥ दुहा ॥

एह ग्रंथ पूरण हुवो, पूर्ण हुइ अब आश ॥
श्रोता सूणजो कान देइ, ग्रंथ गुणकी राश ॥ १ ॥
मिथ्याविध्वंसननाम ए, भाख्युं ते सुखकार ॥

तेह मांहि जे भाव छे, सुण ल्यो तास विचार ॥ २ ॥
बहु भेद मिथ्यात्वना, तेम जीव स्वरूप ॥
द्रव्य गुण पर्यायनो, भाख्यो रूप अनूप ॥ ३ ॥
नय भेद बहु भाखीआ, तेम अध्यात्म वात ॥
बहू ग्रंथनी साख्यथी, कीधी एहनी ख्यात ॥ ४ ॥
ग्रंथ गुण समुद्र छे, झीले मांहे मतिवंत ॥
पाप मेल सब धोयके, होवे उत्तम संत ॥ ५ ॥
रयण चिंतामण सारीखो, ग्रंथ रच्यो गुण भाण ॥
पंडीतजन तो सुख लहे, वांचतां प्रगटे नाण ॥६॥
मुरख जन समजे नहि, तामे नहि मुज दोष ॥
क्षय उपशम तीनकु नहि तामें किनपररोष ॥ ७ ॥
जाको अनुभवथी रहे, आत्म अनुभव लक्ष ॥
ताकु तो बहु गुण करे, जाको उपयोग दक्ष ॥ ८ ॥
वसुधामें विस्तरो, जीउं जल मांही तेल ॥
मुख मुख एही प्रगट होवो, ग्रंथ गुणकी रेल ॥ ९ ॥
अक्षयथीती मेरु तणी, तेम ए ग्रंथ नीवास ॥
रविशशि पेरे अविचल रहो, उत्तम मुखमें वास॥१०॥
संवत ओगणीश ओगणीशमां, सुंदर आसो मास ॥
कृष्णपक्ष तिथि सप्तमी, पूरण थयो उल्लास ॥ ११ ॥

शीतलकारी सोमवार, आमोद गाम मोजार ॥
वांचजो भणजो भविजना, ते लेशे भवपार ॥ १२ ॥
एह ग्रंथ ह्रदिये धरी, ध्यान करशे जेह ॥
मुनि हुकम सुख संपदा, पामशे शिववधू गेह. ॥१३॥

इतिश्री मिथ्यात्वविध्वंसननामा
ग्रंथ संपूर्ण.

॥ मित्रपरीक्षा ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

नत्वा चिदानंद सत्य स्वपरानुग्रहानिच ॥
वक्ष्यामी मित्र परीक्षायं सुधासुध तथैवच ॥ १ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे जे आसंसारनी मांहिलीकोरे जीवमात्र मित्र करे छे॥पण ते मित्र बे प्रकारना छे ॥ एक शुद्ध ने बीजो अशुद्ध, ते बे प्रकारना मित्रने चार प्रकारे करी जीवमात्र सेवे छे तेथी ते जीव पण चार प्रकारनाज कहेवाय ते उपर चौभंगी लखीए छीए ॥ अनादी अनंत ॥ १ ॥ अनादि सांत २ ॥ सादि सांत ३ ॥ सादि अनंत ४ ॥ ए चार भांगानो प्रथम विचार कहुं छुं ॥ अशुद्ध मित्र साथे मित्राई संसारी जीवने सर्वेने छे ॥ ते मध्ये अभवी जीवने ॥ अनादि अनंत ॥ पेहेलो भांगो छे ॥ भवी जीवने अनादि सांत बीजो भांगो छे ॥ परावर्त्तन काले मित्र साथे संसारी जीवने सादि सांत भांगो छे ॥ चोथो भांगो संसारी जीवने अथवा कोई जीवने आवे नहीं ॥ हवे जे शुद्ध मित्र छे ते सिद्ध परमात्मा अनादि अनंत भांगे छे ॥ अने अनादि सांत भांगो शुद्धमां आवे नहीं ॥ अने सादि सांतभांगो उपशमादिक समकिती जीवने ॥ शुद्ध मित्र सादि सांतभांगो छे ॥ अने जे जीव संसार छोडी मोक्षे गया तेने सादि अनंत भांगो शुद्ध मित्र साथे छे, हवे ते भांगानो विवरो करीने कहुं छुं ॥ हवे मित्र कहेतां कोण छे तथा शुद्ध अशुद्ध ते शुं छे ते

कहुंछुं ॥ मित्र कहेतां पोतानो आत्म उपयोग ॥ ते शुद्ध भावमां प्रवर्त्तवुं ते शुद्ध उपयोग कहीए ॥ अशुद्ध भावमां परिणमवुं ॥ ते अशुद्ध उपयोग कहीए ॥ ते अशुद्ध उपयोगनो विचार कहुंछुं ॥ अशुद्ध कहेतां आत्म स्वरूपना रमण विना पर परिणतिमां प्रवर्त्तवुं ॥ तेने अशुद्ध उपयोग कहीये ते उपयोग निगोदथी मांडी ॥ गर्भज पंचेंद्रि जीव सुधी ॥ अशुद्ध उपयोग छे ॥ शिष्य वाक्यः—स्वामी निगोदादिक ॥ स्थावरने विषे शुं रमणता परपरिणतिमां करे छे ॥ एतो अव्यक्तव्यभाव छे ॥ गुरुवाक्य ॥ प्रथम तें जे कह्युं ते निगोदमां पर परिणतिमां शुं रमे छे ॥ ते ए जीवतो अनादि मिथ्यात्वी छे अने स्वस्वभावतो तेने शेनो होय ॥ आ माटे जे स्वस्वभावतो गर्भज पंचेंद्रिने पण घणो दुर्लभ छे ॥ कोइक जीवने प्राप्ति थाय छे ॥ माटे ए सदाए अशुद्ध परिणतिमांज छे ॥ ते माटे एने सदाए अशुद्ध उपयोग कहेवाय ॥ ए वातमां कांइ संदेह नहीं ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एतो अव्यक्तव्य छे एने उपयोग शी रीतथी कहोछो ॥ गुरुवाक्य ॥ भाई अव्यक्तव्य छे पण पोत पोतानी क्रिया करे छे, पण छद्मस्थना समजवामां न आवे जेम कोई पुरुषने शोषो आवे ने असाध्य थई जाय छे ॥ ते वखत ते पुरुषने ॥ अथवा जोडे होय ॥ ते माणसने एनी वेदना कांइ देखाती नथी ॥ तो शुं ए पुरुषने वेदना छे के नहीं ॥ आपितु वेदना छेज ॥ तेमज ते निगोदादिक ॥ जीव आप आपणी क्रिया शुद्ध अशुद्ध जे जे थानकने विषे ते करे छे तेथी ते जीवने ॥ अशुद्ध उपयोग लागु छे पण समजवामां न आवे ॥ एम जाणवुं ॥ हवे ते अशुद्ध क्रियाना बे भेद छे ॥ एक शुभ ने बीजो अशुभ ते मध्ये निगोदादिक स्थावरने विषे अशुभ क्रिया छे आमाटे जे ए जीवोने कायिकी प्रमुख पांचे क्रिया लागे छे ॥ तेथी ए सदाए

अशुभ क्रियामांज छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सर्व जीवने सरखी पांच क्रिया लागे के वत्ती ओछी लागे अने सदाए अशुभ उपयोगे ए जीव सर्वे छे ॥ तो मांहेथी ए जे जीव उंचा आवे छे ते शा वले आवे छे ॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ते जीवोने सदाए सरखी क्रिया न होय ॥ ते हुं विवरो करीने कहुं छुं ते सांभळ ॥ पांचे स्थावरना सूक्ष्मनी क्रिया छद्मस्थना जोवामां आवे नहीं. ॥ ए तो केवलीगम्य छे. हवे जे पांच स्थावर बादर रह्या ॥ तेनी क्रिया छद्मस्थना जोवामां आवे, ते हुं कहुं छुं के कायिकी क्रियाके कायाए करीने जे करवुं ॥ तेने कायिकी क्रिया कहीए ॥ ते मृतिकादिक पांचे स्थावर कायाए करीने करे छे ॥ ए थकी अनेक जीवनी हानि पण थाय छे ॥ शामाटे जे ॥ भेखड प्रमुख पडवाथी अनेक जीव मरे छे ॥ एम जलथकी पण अनेक जीव, तथा अग्नि थकी ॥ तथा वायु थकी ॥ तथा ॥ वनस्पति थकी अनेक जीव मरे छे ॥ एम पांचे क्रिया समजी लेवी तथा तें जे कह्युं के ॥ ए जीव उंचा केम आवे छे. ॥ ते अकाम निर्जरा वडे आवे छे जेम पाहाडमांथी नदीमां पथ्थर पड्या ॥ तेमांथी कोइक पथर घाटबंध तथा गोळ तथा तोलमां आवे छे ॥ बीजा सर्वे अथडाय छे तेमज कोइक जीव उंचो आवे छे ॥ हवे जे बेरिंद्रिथी असन्नि पंचेंद्रि सुधी पण अशुभ क्रिया तथा ॥ अशुभ उपयोग प्रवर्त्ते छे ॥ जे संन्नि पंचेंद्रि ते मध्ये तिर्यंच पंचेंद्रि ॥ तथा नारकी पंचेंद्रि ते बोलतां ए अशुभ उपयोगी तथा अशुभ क्रिया करे छे ॥ तथा मनुष्य॥ पंचेंद्रि तथा देव ए मध्ये पण अशुभ उपयोगने अशुभ क्रिया प्रवर्त्ते॥तथा शुभ क्रिया तथा शुभ उपयोगमां कोइक जीव प्रवर्त्ते छे॥ ते मध्ये केटलाएक तो आप आपणा दर्शननी रीते प्रवर्त्ते छे ॥ केटलाएक लोकनी देखादेख प्रवर्त्ते छे ॥ केटलाएक सेहेज स्वभावे

पण प्रवर्त्ते छे ।। ते मध्ये कोईक जीवने समकितादिक ।। गुणनी प्राप्ति थइ होय ते जीव किंचित् ।। शुद्ध उपयोगे प्रवर्त्ते ।। हवे जे अनादि अनंत भांगो ।। अशुद्ध मित्र साथे अभवी जीवने लाधे छे ।। ए जीव कोइ काले शुद्ध मित्रनो संग पामवानो नथी ।। माटे ए सदाए ।। अशुद्ध मित्रनो संगी छे ए पेहेलो भांगो ।। बीजो भांगो अनादि सांत नामे भव्य जीवने छे ।। ते जीव ज्यारे त्यारे अशुद्ध उपयोगने टाळीने शुद्ध उपयोग पामशे ।। ए फरीथी अशुद्ध उपयोग पामवानो नथी ।। त्रीजो सादि सांत भांगो जे संसारी जीव ।। समकितादिक गुण पाम्या पछी पाछा पडे ।। तेने अशुद्ध उपयोग थाय तेने त्रीजो भांगो कहीए ।। अशुद्ध उपयोगनो चोथो भांगो जीवनी साथे लागु नथी ।। माटे ए अशुद्ध मित्र आ जीवने अनादिकाळनो दुःखदाई छे ।। ते मित्रने छोडे थकेज सुख आवे ।। हवे शुद्ध मित्रमां ए भांगो कहुं छुं ।। जे प्रथम अनादि अनंत भांगो सिद्ध भगवानने कह्यो ।। ते सिद्ध भगवानने आदि पण नथी ने अंत पण नथी ।। अने त्यां उपयोग पण शुद्धज छे ।। माटे ते पण अनादि अनंत मित्र ठरयो ।। हवे जे बीजो भांगो सादि सांत शुद्ध मित्रनो संसारी जीवने लागे छे ।। शामाटे जे उपशमादिक समकितादिक पामे थके किंचित् शुद्ध उपयोग होय ते समकितनुं जवुं आववुं थाय ।। तेवारे आद्य अंत पण लाधे ।। ते वारे सादि सांत भांगो थयो ।। हवे सादि अनंत भांगो त्रीजो ।। जे जीव करम खपावी केवळज्ञान पाम्यो ।। अथवा मोक्षे गयो ते जीवनो अशुद्ध उपयोग रूपी मित्र हतो ।। तेनोखो थइ गयो ते वारे शुद्ध उपयोग मित्र ।। तेनी प्राप्ति थइ ।। ते कोई काळे मटवानी नथी पण मित्राई थई तेनी आदि छे ।। माटे सादि अनंत कहीए ।। हवे चोथो भांगो अनादि सांत नामे

शुद्ध उपयोगमां होय नहीं ॥ माटे ए शुद्ध उपयोग तथा ॥ अशुद्ध उपयोग ॥ ए बंनेमां त्रण भांगा लाधे, एम समजवुं ॥ हे मित्र तुं मारो परम हेतु छे मारुं कोई काले पण तुं अशुभचिंतक नथी ॥ एवो तुं मारो परम हेतु थइने घडी घडी रीसामण करे छे ॥ ए वातनुं दुःख मने घणुं थाय छे माटे तारे ॥ सदाए काल स्थिरपणे मारी पासेज रहेवुं ॥ ए विजोग माराथी खमाशे नहीं ॥ मित्रोवाचः–॥ हे मित्र तुं कहे छे के सदाए मारी पासे रहेजे पण तुं प्रतिपक्षी साथे वात विचार करे ते वारे॥ माराथी तिहां केम बेशी रहेवाय ॥ त्यारे मारे जवुं पडे छे ॥ लौकिकमां पण एम कहे छे के बे जण वात करे त्यां त्रीजाने उभुं रहेवुं नहि ॥ तो हुं उत्तम कहेवाउं ॥ ने माराथी तीहां केम बेशी रहेवाय ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र हुं तने रात दीन समरुं छुं ॥ अने तारी आजीजी करुं छुं ॥ ने हुं कोण प्रतिपक्षी साथे वात करुं छुं के ॥ उलटो मारे माथे दोष मुके छे ॥ मित्रोवाच ॥ हे मित्र ! तुं अशुद्ध परिणतिने छोडतो नथी ॥ तथा एना पक्षना परिवारने पण छोडतो नथी ॥ अने मारुं वचन पण यथार्थ अंगीकार करतो नथी ॥ तेथी मने बहु दुःख लागे छे॥ त्यारे हुं उठीने जाउं छुं पण कांइ मने तारी पासेथी ॥ जवुं सारुं लागतुं नथी ॥ चेतनोवाच ॥ हे मित्र तारे वास्तेतोमें ॥ बाह्यथकी संसार छोडथो छे ॥ सचित अचित्तमां परिग्रह छांडयो ॥ तथा अभ्यंतर थकी मदनसेनने घणो दुभव्यो ॥ तथा मान संगजीने पण विशेषे करी परिताप उपजाव्यो ॥ अने राग केसरी ॥ तथा द्वेष गजेंद्र ॥ रूप मोटा जे राजा ॥ तेने पण में बहु तिरस्कार करयो ॥ अने तेनो में मारा देशमांथी ॥ हक घणो काहाडयो तथा जे ॥ सर्व लोकाधीश मोह राजा तेनो पण केटलोएक हक उठाडी दीधो ॥ तोए पण हे मित्र ! तारुं

मन मान्युं नहीं ॥ अने हे मित्र ! ए लोको साथें में मोहोटो दावो बांध्यो छे माटे जे वारे तारुं जवुं थाय छे ते वारे ए लोको मने बहु दुःख दे छे ॥ ने तें जे कह्युं के ॥ अशुद्ध परिणतिना परिवार साथे वातचित करोछो ॥ ए वात साची छे पण शुं करुं जे अनादि कालनी ॥ अशुद्ध परिणति वलगी छे ॥ तेनी साथे प्रीति पण अनादिकालनी लागेली ॥ ते प्रीति तो हवे मने जेहेर जेवी थइ छे ॥ ते तो तारा समज्यामां छे ॥ पण घणा कालनो स्नेह तेथी करीने ए आवे ते वखत ॥ माराथी सनस तुटती नथी ॥ तेथी तेनी साथे तथा तेना परिवार साथे वात करुंछुं ॥ तो पण मारा मनमां तो हेत तारा उपर ज छे ने मारा मनमां तो तुंज वशी रह्यो छे ॥ अने तुं सेज सेज ॥ एवा दोष शोधीने वेगलो खसे छे ॥ ए तने कांइ योग्य नथी ॥ शा माटे जे तुं जो ॥ खडांधरां स्वतंत्रपणे रेहेतो ॥ ए अशुद्ध परिणति तथा एनो परिवार कोई आवी शके नहि ॥ पण एने आवतां देखीने खशी जाय छे ॥ त्यारे ए लोकोनुं जोर फावे छे ॥ माटे हे मित्र ! तारे मारी पासेथी खसवुं न जोइए ॥ उत्तम मित्रनी तो एज रीत छे ॥ जे पोताना मित्रने कष्ट आवतुं देखीने आडो उभो रहे पण उपद्रव थवा न दे अने तुं तो उपद्रव थतो देखीने पेहेलेथीज सामो खशी जाय छे ए तने घटतुं नथी ॥ मित्रोवाच॥ हवे मित्र कहे छे के हे मित्र ! आवते उपद्रवे उभुं रहेवुं ते तो बरोबरीआ होय तांहां उभा रहीए ॥ नहीं तो उभा रहेवाय नहीं ॥ जेम कोई राजा प्रमुख लडवा उभा थाय ते पण कांइ चंडाल साथे ॥ लडवा उभा रेहता नथी ते लडाइथी पाछाज खशी जाय छे ॥ तेम ए अशुद्ध परिणति प्रथम तो स्त्रीज छे ने बीजो एनो परिवार पण सर्वे स्त्रीज कहेवाय ॥ अने ते सर्वे ॥ महा दुर्गंधनाज भरेला छे ॥ अने महा अपवित्र छे ते-

हेनी साथे माराथी उभा रहेवाए नहीं ॥ अने तुं तो अनादिनो अपवित्र साथे रंगाणो अने तारी जात कूल वधुंए तें लजव्युं ॥ अने हजी सुधी तने एनी संगत मटती नथी ॥ हजी एना उपर प्रीतिभाव राखे छे ॥ अने मने ठपको दे छे पण हे मित्र ! भूलतो तारी छे ॥ जे तुं अशुची अपवित्र वालानी संगत छोडतो नथी ॥ ने ए दुर्गंधमां तुं जईने बेसे छे ॥ ए माराथी तो उभुं रहेवाय नहि माटे हे मित्र ! जो मारी ॥ मित्राई स्वतंत्रपणे जो चाहे ॥ तो तुं ए दुर्गंधानो संग छोड अने तुं कहेछे के ॥ एनी सनस नथी छूटती ॥ तो हजी पण तुं कांइ विचार करतो नथी जे ए दुर्गंधाए अनंतो काल थयां ॥ अनेक रीतनां दुख दीधां ॥ अने अनंतुं धन ए खाई गई ॥ ते पण तुं सर्व जाणे छे ॥ अने तो पण तुं एनी सनस छोडतो नथी ॥ तो तारा जेवो मूरखो कोइ दीसतो नथी माटे जो मारुं कीधुं माने तो ए दुर्गंधानो संग छोड ॥ अने मारी मित्राइ स्वतंत्र थशे ॥ एक समय मात्र पण अलगो नहीं खसुं ॥ ए वात में तने ॥ सत्य कही छे, फरी फरीने कहेवुं ए कांइ ठीक नथी ॥ उत्तम तो एक अक्षरमांज समजे ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र तें जे वात कही ते मारा हृदयमां सत्य भासन थइ छे ॥ हवे हुं ए वचन भूलवानो नथीज । पण हे मित्र । हुं शुं करुं, अनादिनी दुर्गंध पेशी गइ छे ते कहाडतां बहु मुश्केल पडे छे; तारा उपदेशथी एने कहाडवाना उपायमां अहोनिश रहीश ॥ पण तुं मारी पासेथी खशीश नही ॥ इति सविकल्प विचार ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी शुद्ध उपयोग ते शुं हशे ? ॥ अने शुद्ध उपयोग शा थकी थाय ॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणु प्रिय ॥ जे वस्तुनो मूल स्वभाव ॥ चिदानंदरूप छे ॥ ते स्वभावमांजे उपयोग स्थिर थइने रहे ॥ तेने शुद्ध उपयोग कहीए ते

शुद्ध उपयोगना बे भेद छे ॥ संपूर्ण शुद्धं उपयोग ते प्रगट पणे ॥ सिद्ध परमात्माने छे ॥ एवंभूत नये छे ॥ अने संसारी जीवने संपूर्ण शुद्ध उपयोग सत्ताए शक्ति पणे छे ॥ ए संग्रह नये छे ॥ अने केवली जे ॥ तेरमे गुण ठाणे छे ॥ तेने संपूर्ण ॥ शुद्ध उपयोग कहेवाय नहीं ॥ शामाटे जे वेदनी आदिकर्म चार बाकी छे ॥ तथा उपयोग अस्थिर पण कहेवाय ॥ जेम ॥ श्री वर्द्धमान स्वामीने लोही खंडवाडो थयो ते वातथी ॥ श्रीया अणगारने बहु दुःख लाग्युं ॥ ते श्रीया अणगारने पोते तेडावीने ॥ पाक वहोरवा मोकल्या इत्यादिक विचारी जोजो ॥ तेथी संपूर्ण स्थिर उपयोग संभवतो नथी ॥ पछी तत्व तो केवली गम्य छे हवे जे चोथा गुण-ठाणाथी मांडीने बारमा गुणठाणा सुधी ॥ शुद्ध उपयोग देशे देशे छे ते हाणी वृद्धि गुणठाणानी ॥ परिणति प्रमाणे समजी लेवी ॥ ते शुद्ध उपयोग तो ॥ स्व स्वभावनुं नामज छे ॥ हवे शुद्ध उपयोग शा वडे थाय ते कहुं ते सांभल ॥ प्रथम तो सुगुरु स्व उपयोगी ज्ञाना नंदी ॥ सत्य भाषी बहु श्रुत अनुभवी होय ॥ तेनी संगत थकी शुद्ध उपयोगनुं ॥ जाणपणुं थाय ॥ ते वारे बे द्रव्य जीव तथा अजीव जूदा जाणे अने पछी ते ॥ जूदा करवाने ॥ अनुभव करे ॥ लक्षण गुण स्वभाव ॥ ओलखीने पोतानो द्रव्य पोतामां राखे ॥ पर द्रव्य दूर करे ॥ ते वारे जे अंश उपयोग ॥ स्व द्रव्यने स्वभाव आवी जाय ॥ तो शुद्ध उपयोग किंचित् ॥ प्रगट थाय पछी अनुक्रमे वृद्धि थतो संपूर्ण थाय ॥ तो ए परमात्मा पण थइने बेसे ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी अशुद्ध परिणाति शुं छे ॥ अने शावडे थाय छे ॥ गुरुवाक्य ॥ अशुद्ध परिणाति शुं हशे ॥ ते तो राग द्वेष परिणाति मूल छे ॥ ते अनादिनी छे ॥ अने शाथकी थाय छे ते कहुं ते सांभल ॥ के असंज्ञि ॥ पंचेंद्रि सुधी तो मूल परिणाति

ए चाल्यो आवे छे ॥ अने संज्ञा अहींआं प्रत्यक्षपणामां जोवामां पण आवे छे ॥ हवे संज्ञी पंचेंद्रि जे रह्या ॥ ते चारे गतिने विषे ॥ विषयकषायना भरेला छे तेथी अशुद्ध परिणतिज छे ॥ मनुष्य तथा देवगतिमां जेने जेवी संगत तेने तेवो उपयोग प्रवर्त्ते छे ॥ ते पण अशुद्ध उपयोगज छे तथा मनुष्यगतिने विषे जे धर्म करे छे ने ते ॥ मार्गे प्रवर्त्ते छे ॥ ते पण सर्वे अशुद्ध उपयोगज छे ॥ ते खटदर्शन ॥ आ हिंदुस्थानमां कहेवाय छे. अन्यशास्त्रे पण ॥ ए छ दर्शननुं प्रवर्त्तन बांधेलुं छे ॥ ए छए दर्शननुं किंचित् मात्र ॥ ओलखाण करावुंछुं ॥ ॥ तेनां नाम ॥ जिन ॥ सांख्य ॥ जैमिनीय ॥ योग ॥ सोगत ॥ विशेषशक ॥ ए छ दर्शन जाणवां ॥ ते मध्ये प्रथम जिन दर्शन ॥ तेना बे भेद जाणवा ॥ श्वेतांबर ॥ दिगंबर ॥ हवे श्वेतांबरना मतनुं ओलखाण कहुंछुं ॥ रजोहरण राखे ॥ मुखवस्त्र राखे तथा चोलपट्टादिक लिंग होय ॥ ऋषभादिक चोवीस तिर्थंकरने माने ॥ निग्रंथ होय तेने गुरु करी माने ॥ अने सर्वे कर्म क्षय करे तेने मुक्ति माने ॥ अने भोजन विधान विषे शुद्ध मान मधुकर वृत्तिए लेवो कह्यो तेने माने ॥ तथा प्रमाण पण बे माने ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण ॥ ने परोक्ष प्रमाण ॥ स्याद्वाद शैलिए सहित सर्व धर्मने माने तथा खट द्रव्य माने ॥ धर्मास्तिकाय ॥१॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ अने काल ॥ ६ ॥ ए छ द्रव्य माने, तथा बीजो दिगंबर मत ॥ तेनो विचार कहुंछुं ॥ एटले दिगंबरना चार भेद छे ॥ कास्तासंगी ॥ १ ॥ मूलसंगी ॥ २ ॥ मथुरासंगी ॥ ३ ॥ अने गोप्य ॥ ते मध्ये कास्तासंगी ॥ चमरी गायना पूछडाना केशनी पीछी राखे ॥ अने मूलसंगी मोरनी पीछी राखे ॥ अने मथुरासंगी ॥ कोइ पीछी माने छे ने कोई नथी

मानता ॥ अने गोप्य ॥ मोरपीछी माने अने गोप्य विनाना त्रण रह्या ॥ ते स्त्रीने मुक्ति न माने अने गोप्य स्त्रीने मुक्ति माने अने भिक्षाए बत्रीसे अंतराय टाले शेष सर्वे आचार ॥ श्वेतांबरनी पेठे जाणवा इति जिन दर्शनविचार ॥ अथ सांख्य दर्शन विचार त्रिदंडी धारण करे कोपिन धारण करे, धातु रक्त वस्त्र धारण करे, खुरमुंडन करावे अने मृगचर्म धारण करे ॥ अने भिक्षा द्विजग्रहे करे, पंचग्रासी भिक्षा ले ॥ परमात्माने देव माने ॥ कपिलादिने गुरु माने ॥ आत्माने सर्वव्यापी नित्य अक्रीयमाण माने छे ॥ अने प्रकृतिने वीर्य मोक्ष माने ॥ प्रमाण त्रण माने छे ॥ प्रत्यक्ष ॥ १ ॥ अनुमान ॥ २ ॥ शब्द ॥ ३ ॥ इति सांख्य दर्शन विचार ॥ मिमांसक ॥ तथा जैमिनीअ ॥ ए नाम छे ॥ पण दर्शन ॥ एकज छे तेनो विचार कहुंछुं ॥ एक दंड धारण करे ॥ अथवा त्रण दंड पण धारण करे ॥ सांख्यनी पेरे धातु रक्त वस्त्र धारण करे ॥ मृगचर्म उपर बेसे, कमंडल धारक होए भादरां परभाकरां ॥ प्रमुख अनेक भेद छे ॥ वेदने गुरु करी माने ॥ तथा वेदांतवादी ॥ सर्व ज्ञानादिक देव कोई न माने ॥ विद्या आविद्या ॥ ए बे तत्वने माने ॥ तथा प्रमाण छने माने ॥ ते कहीये छीए ॥ प्रत्यक्ष ॥ अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ अर्थापती ॥ अभाव ॥ ए छ प्रकारना प्रमाणने माने छे ॥ मुक्ति सांख्यनी पेरे माने ॥ इति मिमांसक दर्शन विचार ॥ अथ जोग दर्शन कहीए छीए ॥ अईएनिआ ॥ एक एवुं बीजुं पण नाम छे ॥ तेनो आचार कहुंछुं ॥ गोपीनवंत होय ॥ कंदमूल फलादि भक्षी होय ॥ जटाधारी होय ॥ प्राए वनवासी होय ॥ शिवना ध्यानवंत होय ॥ असृष्टिसंहारकारक होय शंकर देवताने माने ॥ अक्षपटां गुरुने माने ॥ प्रमाण चार प्राए माने ॥ तेनां नाम ॥ प्रत्यक्ष ॥

अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ ए चार प्रमाण माने ॥ तथा प्र-
माण प्रेमी आदिक सोल पदार्थने माने सकल दुःख क्षय मोक्ष
माने ॥ ए छना पण अनेक भेद छे ॥ इति जोग दर्शन विचार ॥
अथ बौद्ध दर्शन विचार ॥ सुगत नामे देव माने ॥ धर्मकीर्ति ॥
प्रमुख गुरु माने ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण ॥ अनुमान प्रमाण ए वे माने ॥
पंच संबंध माने पंचेंद्री रूपादिक इतिरूप संबंध ॥ अहमति विज्ञान
संबंध ॥ दुख धर्मादी वेदना ॥ शब्दो लेखां संज्ञा संबंध ॥ राग
द्वेष धर्म संस्कार संबंध ॥ एम पांच संबंध जाणवा ॥ ज्ञाननी नि-
र्मलताए मुक्ति माने छे ॥ ए क्षणेक वादीनो मत छे ॥ इति सो-
गत दर्शन विचार ॥ अथ विशेपक दर्शन विचार लखीए छीए ॥
परमात्मा अने ईश्वर देवने माने छे ॥ काश्यप गुरुने माने छे ॥ खट
पदार्थ माने छे ॥ द्रव्य १ ॥ गुण २ ॥ कर्म ३ ॥ सामान्य ४ ॥
विशेप ५ ॥ समवाय ६ ॥ ए खट पदार्थ जाणवा ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण
तथा अनुमान ॥ ए वे प्रमाणने माने ॥ सकल दुःख क्षय मोक्ष
माने ॥ ईत्यादिक छ दर्शनना ॥ लोको धर्म धर्म पोकारी रह्या छे
पण ते सर्वे अशुद्ध उपयोगी छे ॥ अहीआं कोइ कहेशे के मुसल-
माननुं ॥ तथा ख्रिस्तिनुं धर्म कांइ लखायुं नहीं ॥ तेनो उत्तर के ॥
तदा काले ते धर्म हता नहीं ॥ तेथी पूर्वना आचार्योए एनो विचार
लख्यो नथी ॥ तो आपणे लखवानी कांइ जरुर नथी ॥ इत्यादिक
सरवे ॥ अशुद्ध उपयोगनां कारण छे ॥ अहीआं कोई कहेशे जे
कोईक मांहे पण ॥ शुद्ध उपयोगी हशे तेनो उत्तर जे ॥ वाडानी
वृत्ति ॥ ए वधी परभाव भणी छे माटे ए छए दर्शन ॥ परभावने
झालीने वेठा छे ॥ एने विषे स्वभाव ग्रहण छे नही जे वाडानो ॥
विचार परभाव जाणीने चार गति रखडावे ॥ कर्मबंध करावे एवुं
जाणी एथी ॥ अलगो खसे तेमां कोइक जीवने ॥ शुद्ध उपयोग आवे

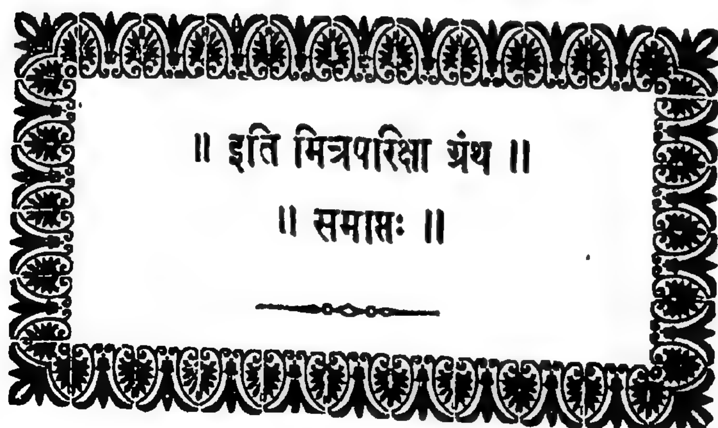
अहींआं कोइ कहेशेके ॥ वाडामां रहीए ने पोत पोतानुं साचीए ॥ ए पण वात मिथ्या छे शामाटे के ॥ चारेकोर अग्नि लागे अने वचे बेसे ॥ अने कहेशेके टाढी हवा मने आवे ॥ ते कोइ काले आवे नही ॥ शा माटे जे वाडाना ॥ अधिकारीओ तथा ते वाडाने विषे प्रवर्त्तन करवावाला लोको प्राये मिथ्याद्रष्टी महा अज्ञानी छे शामाटे के ॥ एना प्रवर्त्तन प्रमाणे न चाले तो जीवथी मारी नांखतां पण डरे नहीं ॥ पूर्वे एवा सत् पुरुष होय ॥ तेने पण मारी नाखतां डरे नहीं ॥ माटे ए वाडाना धर्म तो एवा छे ॥ अहींआं तमे शुद्ध उपयोगने खोळशो तो क्यांथी लावशो ॥ एटले ए अशुद्ध उपयोगनांज लक्षण तथा कारण कह्यां ॥ हे मित्र- तुं छे ए सत्य छे ॥ बाकी सर्वे असत्य छे ॥ शामाटे के ए अशुद्ध मित्रनी मित्राई थकी हुं अनादिकाळनो आ संसारमां भटकुं छुं ॥ अने क्षण एक सुख न पाम्यो ॥ जे दहाडेथी तारी मित्राई थई ॥ ते दहाडेथी कांईक टाढी हवा मने आवे छे ॥ जे अवसरे तुं माहारी पासे होय छे ते वखत मने शीतलता वले छे ॥ अने ज्यारे तुं मा- री पासेथी कोरे खसे छे ते वखत हुं ॥ बळुं बळुं थई रहुं छुं माटे तुं माहारी पासेथी खशीश नहीं ॥ एज मित्राईनो हक छे हवे हुं मारा अशुद्ध चेतनने समजावुं छुं ॥ हे चेतन तुं घणो निर्मळ छे पण अशुद्धनो संग करवाथी तुं मलीन केहेवाणो ॥ एथी ए पदने पामीने तारुं जाणपणुं कांइ पुरुं थयुं नहीं ॥ तथा तुं पण दुःखी थयो ने मने पण दुःखी कर्यो ॥ माटे तुं अशुद्धनुं जाणवुं छोडी दे ने आपणा शुद्ध स्वरूपनुं जाणवुं कर ॥ अने तेमां रमणता कर तेथी तारुं जाणपणुं वधशे ॥ शुद्ध केहेवाशे अने सुखी थईश ने मने पण तुं सुखी करीश ॥ ते माटे तने जो लाज होय ॥ तो परस्वभावमां पेसीश नहीं ॥ ए मारो हेत उपदेश हैए धरीने तुं पोताना शुद्ध

स्वभावमां रहेजे ॥ तो ताहारी ने मारी अनादिकालनी प्रीति सरवे लेखे आवशे ॥ नहीं तो ताहारी प्रीति बधी अलेखे छे ॥ एम सं मजीने पोताना घरमां पेसजे एज मारो हेतु उपदेश छे ॥ इति मित्रपरिक्षा संपूर्ण.

॥ दुहा ॥

मित्र परिक्षा ग्रंथ ए, शुद्धा शुद्ध विचार ।
स्वआत्म उपगार ए, रचना अनुभवसार ॥ १ ॥
परने पण हितकारण, एज होवे भव्यजीव ।
मारगानुसारी जे थयो, तेने उपगार सदीव ॥ २ ॥
शुध मित्र ते स्वस्वभाव छे, अशुध मित्र परजाण ।
परस्वभावे जे फरे, तेनां अशुध वखाण ॥ ३ ॥
जे माने हुकम अरिहंतनो, अथवा मुनीनोसार ।
तेने तो बहु उपगार छे, तुटशे करम प्रचार ॥ ४ ॥
अशुध उपयोगने टाळीने, आदरजो शुद्ध उपयोग ॥
कारज थशे आतम तणुं, नही रहे रोग ने शोक॥५॥
आगे अनंत मोक्षे गया, वर्त्तमान जे जाय ॥
आगे पण मोक्षे जावशे, ते अशुध उपयोग पाय॥६॥
ते कारण भव्य जीवतमे, तजी अशुद्ध उपयोग ।
शुद्ध उपयोगनो खप करो, जेथी जाय भवरोग ॥७॥
हुकममुनीने एह छे, ते ध्यावो सदा काल ।
तेथी सुख संपति लहो, शीव वहु घर वरमाल ॥८॥

संवत ओगणीसें संवत्सरे, साडत्रीस अश्विनमास ।
सुद सातमे ते रच्यो, वार भृगुए आश ॥ ९ ॥
जांहां लगे रवीशशी रहो, त्यां लगी रहो ए ग्रंथ ।
ज्ञानीने मुख मुख होवो, उत्तम ए निर्ग्रंथ ॥ १० ॥
मुनी हुकम रचना करी, स्वपरने हितकार ।
चोमासुं अहींआं रह्या, सुरत शेहेर मोझार ॥ ११ ॥
ते कारण भव्य प्राणीया, आदरजो ग्रंथ एह ।
जो चाहो निज सुखने, क्षणु न तजसो तेह ॥१२॥
ए ग्रंथ पूरण थयो, पूरण संघ आणंद ।
मुनी हुकम एम भाखीआ, एहीज सुखने कंद॥१३॥



अथ सिद्धांतसारोद्धार.



॥ दुहा ॥

प्रणमुं परमानंदमय, सिद्धस्वरूप भगवंत ॥
तासपसाय कविता करुं, रीझे देखी संत ॥ १ ॥
सेहेज स्वरुपी साहेबो, चिदानंद भगवन ॥
वास वसे पुदगळ विषे, छे जुदो ए तंन ॥ २ ॥
आप स्वरुपी आपमां, वरते सदा एक तान ॥
काम करे ते जडतणा, जूदुं छे तसध्यान ॥ ३ ॥
ध्यान गोचर देखतां, भासे वस्तु अनुप ॥
वेहेवारी लख दोडतां, कांइ न बांधे रूप ॥ ४ ॥
अरूपीने रूपी करी, माने छे जे जीव ॥
बोध तेहनो निष्फळ कह्यो,क्यम होशे ते शीव ॥५॥
शीव स्वरूपी आतमा, ध्यावो गावो सार ॥
जेम चेतन प्रगट होवे, होए अक्षयभंडार ॥ ६ ॥
अक्षय पदवी जो चाहीए, तो तजजे मिथ्यात ॥
नीराकारने रुपी कहो, ए खोटी तजजे वात ॥ ७ ॥
नीराकार अरुपी छे, रुपी कह्यो साकार ॥
चेतन जेम एम जाणीए, भीन उपयोगी धार ॥ ८ ॥

उपयोगवंत ते चेतना, साकारने नीराकार ॥
बेहु चेतनना कह्या, समजो हृदय मोझार ॥ ९ ॥
जडनो उपयोग जड छे, तेमां नहि चेतनरुप ॥
अज्ञानदशा वरते सदा, तेतो कहीए अघभुप ॥१०॥
इत्यादिक बहु वारता, कहीशुं ग्रंथ मोझार ॥
श्रोता सुणजो कान दइ, तजी वीकथा वीचार ॥११॥
चींतामणी रत्न समो, ग्रंथ ए गुणभाण ॥
उद्योत करे भव्य जीवने, कल्पवेल सम नाण ॥१२॥
ग्रंथ एह भणतां थकां, टळे मिथ्यात्व दूर ॥
समकित सहज आवे सही, वरते आणंदपूर ॥ १३ ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नाम एनुं मनोहार ॥
सर्व सिद्धांतनुं सार ए, भवी सुणजो अधिकार॥१४॥
निद्रा वीकथा परीहरो, परहरो विषयकषाय ॥
एकण चित्तथी सांभळो, सेहेजे सिद्धि थाय ॥ १५ ॥

॥ हवे भाषा लखी छे ॥

॥ हवे श्री वीतराग परमात्माना मार्गने विषे द्वादश अंगी सिद्धांत छे, ने आकाळे तो पीस्ताळीस छे, परंतु सर्वनुं सार ए के अनुयोग चार कह्या छे ते मध्ये त्रण तो व्यवहार कह्या छे. अने एक निश्चय कह्यो छे, तेनां नाम. धर्म कथानुयोग, ते ज्ञाता प्रमुख जाणवा ॥ १ ॥ गणिताणुयोग ते चंदपन्नति सुरपन्नति प्रमुख जाणवा ॥ २ ॥ चरण करणानुं योग ते आचारांग दश

कालिक प्रमुख जाणवा ॥३॥ ए त्रणे अनुयोग व्यवहारमां जाणवा. हवे चोथो अनुयोगते द्रव्याणुयोग ते सुयडांग तथा अनुयोग द्वार प्रमुख जाणवा ते निश्चय अनुयोग छे परंतु जेने आत्मानो उपयोग नथी, अने ए सूत्र द्रव्यानुयोगनां वांचें छे भणे छे अने अर्थ करे छे ते सर्व व्यवहारमां जाणवा, अने जे पुरुषने आत्मरूपनी ओळखाण छे, ते धणी वांचे भणे अर्थ करे ते सर्व निश्चयमां छे ॥ ॥ शीष्यवाक्य ॥ हे भगवान् तमे ए व्यवहार तथा निश्चय कह्यो, तेमां शो फेर हशे ते अमे कंइ समजता नथी माटे अमने समज पाडो ॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवानु प्रिय जे व्यवहार छे ते आश्रयग्राही छे. निश्चय छे ते आत्मग्राही छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी केटला एकने मोहोडे एवुं सांभळीए छीए तथा केटलाक शास्त्रमां पण एवुं जोवामां आवे छे के तेरमा गुणठाणा सुधी व्यवहार छे अने तमे तो व्यवहारने अहियां आश्रव गणोछो ते केम हशे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे महानुभाव! अमे जे आश्रवमां गणीए छे ते खरुं छे, ने शास्त्रवाळा कहे छे ते पण साचुं छे, शा माटे के कोइ शास्त्रवाळा एवुं तो कहेता नथी के व्यवहारथकी मुक्ति थाय, त्यां एवुं कह्युं के तेरमा गुणठाणा लगी व्यवहार छे, तेनुं कारण सांभळ. जे आठमा गुणठाणाथी मांडीने बारमा गुणठाणा सुधी व्यवहार छेज नहि, अने अंतगड केवली थइने मोक्षे जाय तो व्यवहार छेज नहि, परंतु जेनें केवळ पर्याय घणा काळ होय ते धणीने देहनुं भरणपोषण करवुं जोइए, माटे अहियां व्यवहार जडना भागनो छे, शा माटे जे देशना देतां शरीरने थाक लागे तथा वखते भूख तरश पण लागे, तथा जे आहारपाणी तेनो निहार पण होय, इत्यादिक व्यवहार ते सर्व जडनो धर्म छे पण ते कांइ आत्मानो धर्म नथी, अने ज्यांहां सुधी ए व्यवहार छे त्यांहां सुधी कर्मबंध छे, ज्यांहां

व्यवहार गयो त्यां कर्मबंधन पण गयां, शा माटे ; जे केवलीने पण तेरमे गुणठाणे शातावेदनी कर्मनो बंध छे, तथा चोथा : गुणठाणा थकी सातमा गुणठाणा सुधी जे व्यवहार क्रिया आचार ते सर्वे आप आपणा गच्छनी समाचारी कल्प छे, ते कांइ निश्चयथकी जोतां धर्मकरणी नथी, आप आपणा मतनी खेंचाताण छे, तथा सूत्रने विषे पण एवुं कह्युं छे के जेटला गणधर तेटला गच्छ कहेवाय अने सर्वनी समाचारी नोखी नोखी छे, तो त्यांहां पण एकेनी समाचारी मळती नथी, तेथी गणधरना वचनमां पण समाचारी आश्रीने कांइ धर्म मालम पडतो नथी, त्यांहां पण आप आपणा गच्छना कल्प वांधेला जणाय छे. कदापि कोइ कहेशे के तमे गण-धरना वचननी समाचारी तेने पण तमे धर्म मानता नथी. तेनो उत्तर के, अमे कहीए छीए ते वात सत्य छे, शा माटे के श्रीरीख-वदेव स्वामीना चोराशी गणधर थया अने गच्छ पण चोराशी थया अने समाचारी पण चोराशीनी जुदी जुदी हती, एम यावत् श्रीवीर स्वामी थया तेमना पण अगीयार गणधर हता, तेमना गच्छ नव थया तेमनी पण समाचारी नव जुदी जुदी थइ, तो एमां खरी समाचारी कोनी, तथा खोटी कोनी ए वात विचारवा जेवी छे, शा माटे के आ काळने विषे श्रावकना प्रतिक्रमण विषे पारतां इरी-आवही नथी पडिकमता एवा जे आणंदसुर तथा सागर तथा विमळ, गच्छ तेमने देवसुरवाळा मतीया कहे छे, तथा प्रथम इरीआवही पडिकम्या विना सामायक ले छे एवा जे खडतरवाळा तेने तपावा-ळा मतीआ कहे छे, तथा इरीआवही पडिक्कमीने सामायक ले छे एवा जे तपावाळा तेने खडतरवाळा निन्हव कहे छे, एम सेज सेज समाचारीमां एकएकने विरोध घणो भासे छे, तो ते दहाडे तो ते गणधरोनी समाचारी जुदीज हती, माटे जाणीए छीए के ए कल्प

व्यवहार छे, अने ज्यांहां सुधी व्यवहार त्यांहां सुधी विवाद छे केमके व्यवहारना कर्तव्यमां एक एकनुं निसंदेह करवुं रह्युं अने आपणा पक्षने वास्ते सामानी साची जे वात होय ते पण जूठी ठराववी. प्रगट सिद्धांतमां अक्षर देखीए अने आंधळा थइने चालीए अने खोटी युक्तियो करीने सामाने जुठा पाडीए अने मुख थकी एवुं कहीए के सूत्रनो कानो मात्र उथापशे तो अनंतसंसारी थशे, अने आपणी मतलब आवे त्यारे सर्वे सूत्र उथापीने कोरे मूकीए. अने आपणी मतलबने मळतुं स्तवन तथा सझाय होय तो ते लेइने आडुं धरीए इत्यादिक विचारीने जोतां ए व्यवहार महा रागद्वेषनुं घर विखवादे भरेलो अने ते मार्गना चलावनारा प्राये बहुल संसारी मालुम पडे छे माटे ए व्यवहार थकी वेगळो रहीने आत्मानुं साधन करे तेहनुं कल्याण थाय. पण ज्यांहां सुधी ए व्यवहारने वळगी रहे त्यांहां सुधी विखवाद मटे नहि, अने सिद्धांतने विषे तो एवुं कह्युं छे के आत्माने भावतां विचरवुं. ज्यांहां श्री भगवतीजीना पेहेला सतकने नवमे उद्देशे स्थविर मुनिने पार्श्वनाथजीना संतानीया काळे सवी पुत्र अणगार मळ्या ते वारे स्थविर मुनिने सामायक आदे लेइने प्रश्न पूछया. ते वारे स्थविर मुनिए प्रश्ननो उत्तर आप्यो के सामायक पण आत्मा छे तथा संवर ते पण आत्मा छे तथा तप चारित्र निर्जरा ते सर्वे आत्मानुं नाम छे तेनो विस्तार अर्थ सहित त्यां जोजो, तथा श्री उत्तराध्ययनजीमां तेज चारे कारण मुक्तिनां कह्यां छे, ते ज्ञान तथा दर्शन तथा चारित्र तथा तप ते आत्माज छे, एमां कांइ फेर छेज नहि, ते अठावीशमा अध्ययनमां जोजो, तथा त्यांहांज वस्तुनो स्वभाव तेने धर्म कह्यो छे, तथा त्यांहांज पांच ज्ञान तथा खटद्रव्य तथा खटद्रव्यना गुण पर्याय जाणे तेने समकिती कह्या छे, तथा तेमां सत्तावीशमा अध्ययनमां

पण कह्या छे तथा छत्रीशमा अध्ययनमां पण आत्मस्वरूपमां रमे तेने मुनि कह्या छे, तथा त्रेवीशमा अध्ययनमां गौतम स्वामीने केशी श्रमण मल्या त्यां पण मनने जीतवुं, रागद्वेषने जीतवुं, तेमां मुनिपणुं दाख्युं छे इत्यादिक ए उत्तराध्ययनमां अध्ययन अध्ययन-प्रत्ये जोशो तो आत्मानी मुख्यता छे तथा दश वैकालिक सूत्रना चोथा अध्ययनमां प्रथम ज्ञान छे पछी दया कही छे तथा आचारांगजीमां पण एमज कह्युं छे, तथा सुयगडांगजीमां तो ज्ञाननी मुख्यता प्रथमज छे, तेमज सुयगडांगजीना एकवीशमा अध्ययनमां पण कल्पने लोपवा थकी कर्म बंधाय एवो निश्चय थयो नहि, ते जोतां ज्ञानीने कर्म लागतां नथी एवुं भासन थाय छे, तथा भगवतीजीना आठमा शतकमां ज्ञानीने आराधक कह्या छे पण क्रियानुं बहू मान त्यां कंइ दीसतुं नथी, तेमज भगवतीजीना पेहेला शतकमां भव स्थिति पाक्या विना कोइ मोक्षे जाय नहि एवुं कह्युं छे ए जोतां पण व्यवहार क्रिया शा खप लागे छे. तथा श्री पन्नवणासूत्रमां आत्माना आठ गुण आठ कर्मे दाब्या छे ते आठ कर्ममां व्यवहार कर्म कियुं छे के ते व्यवहारथकी दूर थाय अने कर्म तो आत्माथकी निश्चय बंधाएलां छे, तो आत्मा निश्चयमां रमे तोज छुटे, कांइ व्यवहारथकी छुटे नहि, तथा तेज पन्नवणाने विषे पंदर भेदे सिद्ध कह्या छे, ते मध्ये अन्य लिंगी सिद्ध, तथा ग्रहस्थलिंगे सिद्ध इत्यादिक बोले छे, तो त्यां आ कल्पनो व्यवहार क्रिया कशुं दीसतुं नथी, अने ते घणी मोक्षे गया ने वळी जाशे. ए जोतां पण कंइ व्यवहार क्रियामां धर्म दीसतुं नथी, तथा श्री भगवतीजीमां आठ आत्मा गणाव्या छे, तेनां नाम द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषाय आत्मा २ ॥ जोग आत्मा ३ ॥ उपयोग आत्मा ४ ॥ ज्ञान आत्मा ५ ॥ दर्शन आत्मा ६ ॥ चारित्र आत्मा ७ ॥ वीर्य आत्मा ८ ॥ ते मध्ये प्रथम

चार आत्माने अशुद्ध कह्या छे अने पाछळना चार आत्माने शुद्ध कह्या छे, तो जुवो के द्रव्य आत्मा तथा उपयोग आत्मा ए बंने अशुद्धमां गण्या छे, अने व्यवहार क्रिया जेटली करवी, तेटली द्रव्य आत्मामां थाय, अने व्यवहार क्रियानो जे उपयोग तेने उपयोग आत्मा कहीए, पण ते कांइ भाव आत्मामां छे नहि भाव आत्मा तो पोताना स्वरूपमां रमे ते अधिकार श्री अनुजोगद्वारमां जो जो, के भाव आत्मा शी करणी करे ? एटले तमारी समजमां आवशे, तथा पंच कल्पभासने विषे आधाकर्मादिक आहारनुं दूषण ज्ञानीने कह्युं नथी तथा उपदेशमाळाने विषे जे कंइ पंडितजन स्व-आत्मानी रमणतामां होय अने पोताना तथा परना शास्त्रनो जाण होय अने चरणसित्तरि ने करणसित्तरिथी हीण होय तो पण दुक्कर करणीनो कर्त्ता कीधेलो छे, तथा प्रवचनसारोद्धारमां जे द्रव्यगुण पर्याय जाणे ने आत्मानो स्वरूप जाणे तेने अरिहंत जाण्या कहीए, पण कांइ बाहेरथकी व्यवहार क्रिया तप तीर्थ जात्रा प्रमुख करे तेणे कंइ अरिहंतने ओळख्या कहीए नहि, इत्यादिक बहु शास्त्रने विषे दृष्टी देइने जोतां व्यवहारक्रियाने विषे आश्रवनुज भासन थाय छे, पण कांइ धर्मभासन थतुं नथी ॥ शिष्य वाक्य॥ स्वामी तमे एवुं कोहो छो के व्यवहारमां धरमभासन थतुं नथी, तो परमात्माए तो निश्चय तथा व्यवहार बे नयप्ररुप्या छे तेनुं केम ? गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! परमात्माए जे बे नय प्ररुप्या तेना सात भेद छे ते मध्ये चार नय व्यवहारनयमां छे अने त्रण निश्चयमां छे ते मध्ये प्रथम नैगमनय छे ते अणहूती वस्तुने हूती वस्तु माने छे जेम वइशाख शुद १० नो दाहाडो थाय ते वारे एवुं बोले जे, आज भगवान वीरस्वामी केवळज्ञान पाम्या. ने केवळ महोच्छव आज कर्यो ते मांहे शुं? कांइ आज भगवान छे नहीं, केवळज्ञान पण आज

छे नहीं, अने ते केवळी आपणने देशना दे ने आपणे सांभळीए ते मांहेलुं कांइ छे नहीं, अने लोक तेना ओच्छव महोच्छव करे छे ते सर्वे अतितकाळनुं वर्त्तमान आरोपण करीने करे, तथा अनागत काळनुं आरोपण करीने करे. जे आज श्री पद्मनाभ स्वामी जन्म्या तथा केवळज्ञान पाम्या, इत्यादिक आरोपण करे ते हाल वर्त्तमानमां वस्तु कांइ छे नहीं. अणहूतीवस्तुने वस्तु करी मानवी ए सर्वे निगमनयनों मत छे, तथा संग्रहनय सत्ताग्राही छे ते वस्तु कांइ प्रगटमां दीसती नथी तेने वस्तु माने छे तथा आत्माना आठ रुचक प्रदेश छे ते थकी सिद्ध करीने माने छे, परंतु ते जीव तो निगोदमां रखडे छे तो ए काम केवुं थयुं के जेम कोइ पुरुषे मदिरा पीधो होय अने तेनो छाक चढयो तेथी आवतां रस्तामां केफमां गडयळ जाणीने पासेथी वस्त्र प्रमुख सर्वे लोको लेइ गया अने पोते अशुची अपवित्र जगाने विषे पडयो छे अने मनमां घणो आनंद माने छे के आज मुज सरखो कोइ छे नाहि पण जे वारे केफ उतरे ते वारे ए महा दुखी थाय, तेम ए संग्रहनयवाळानो ए केफ जेवो दृष्टांत छे. तथा बीजो दृष्टांत कोइक पुरुष पथ्थरनी कांकरीओ लेइने बजारमां वेचवा गयो लोकने एवुं कहे के आ कंचन छे परंतु एनुं कांइ नाणुं आवे नहीं एनुं नाणुं क्यारे थाय के आगळगरा जे कंचन पथ्थरथकी जुदो करे एवा पुरुषने त्यां लेइ जाय ने ते पुरुष जुए जे एने विषे कंचन नीकळशे, अथवा नाहि नीकळे एवुं भासन थाय तो कोडी पण नहीं आवे, अगर जो कंचन नीकळ एवुं भासन थाय तो मण १ भारनो रु. ०॥ अथवा रु० १ आवे पण इहां कंचननुं मूल न उपजे तथा कथीरनुं पण न उपजे. एक मजुरीआनी मजुरी उपजे. तेम इहां जे जीव अभवी तथा भवाभवी ते तो कांइ सिद्धि वरवाना नथी तेने जे सिद्धि माने ते

तो सर्व मिथ्या छे, ने जे जीव भवी रह्या तेमां सिद्धपणुं मानवुं ते तो विचार जे समकितीथी मांडीने चउदमा गुणठाणा सुधीना जीव तद्भव मोक्षे जाय. कोइ बे भवे, कोइ त्रण भवे, कोइ अनंत भवे, मोक्षे जाय परंतु तेनी वांसे सद्गुरु मेहेनत करे तो जेम पेले कांकरी वाळे थोडी किंमत आपीने पण कांकरी लीधी तेम तथा मिथ्यादृष्टी होय अने अल्प संसारी होय तेनी वांसे पण सद्गुरु मेहेनत करे पण कांइ सिद्ध केहेवाय नहीं शा माटे जे जेम ते कांकरीओ मांहेथी कंचन काढतां आगळगळाने बहु मेहेनत रही, तेम इहां संसारी जीवने विभाव थकी छुटवुं ने सिद्धि वरवुं. ते घणी मेहेनते थाय तथा बीजा जे जीव रह्या ते तो विचारा हजु पंचेंद्रिपणुं पाम्या नथी तथा केटलाएक बादरपणुं पाम्या नथी तथा केटलाएक व्यवहारराशीमां आव्याज नथी, तेने सिद्ध मानीए तेमां शुं वळ्युं. ते पण ए कल्पना खोटी दीसे छे. एटले ए बीजा नयनो पक्ष कह्यो. २ हवे त्रीजो व्यवहारनय तेमां बाह्य जे व्यवहारक्रिया आचार देखीतुं तेने धर्म माने छे तेना त्रण भेद छे, उपचरित व्यवहार ॥ १ ॥ अणउपचरित व्ययहार ॥ २ ॥ उपचरिताउपचरित व्यवहार ॥ ३ ॥ हवे उपचरित व्यवहार ते अणहुती वस्तुने वस्तु करी माने. जेम पथ्थरनी गाय तथा घोडा प्रमुख अनेक घाट एत्रो थाय छे तेने ते वस्तु करीने माने परंतु तेमां ते वस्तुपणुं छे नहि, उपचारे करीने मानवानुं छे, तथा अणउपचरित व्यवहार देखीता गुण होय तेने माने तथा उपचारिता उपचरित व्यवहार कंइक वस्तुता छे कंइक नथी तेने वस्तु करी माने, तथा बीजे प्रकारे पण त्रण भेद छे सदभूत व्यवहार १ ॥ असद्भूत व्यवहार २ ॥ सद्भूता सद्भूत व्यवहार ३ ॥ सद्भूत व्यवहार ते आकार सहित वस्तु होय तेने माने जेम

परमेश्वरनी मूर्तिने परमेश्वर माने तथा असद्भूत व्यवहार ते आकार रहितने माने जेम थापनाचार्यने माने तेमां कशो आकार छे नहीं तथा अन्य मतने विषे जेम शारंगरामने माने छे, तेमां पण कांइ आकार छे नही तथा सद्भूतासद्भूत व्यवहार ते कांइक आकार छे ने कांइक नथी तेवाने माने तेवां रूप देवी प्रमुखनां घणां दीसे छे ते सर्वे व्यवहार नय जाणजो, एटले ए व्यवहार नय देखीती वस्तुने मानवावाळो छे तेने विषे देखवामां तो पुद्गळ दृष्टिगोचर तथा प्रत्यक्ष प्रमाण इंद्रिए करीने थाय तथा ए नव पुद्गल ग्राही छे शामाटे जे बाह्य थकी जोगी सन्यासी प्रमुख, मंत्रजंत्र वादी प्रमुख चमत्कारीपुरुषो तथा तपस्वी क्रिया कर्त्तव्य प्रमुख देखीने तेने सिद्ध करी माने तो ए नय इंद्रि प्रत्यक्ष ग्राही मानवावाळो छे माटे एने विषे कांइ आत्मिक भाव दीसतो नथी शा माटे जे आत्म अरूपी छे तथा आत्माना गुण जे ज्ञानादिक तथा आत्माना पर्याय जे स्व पर्यायादिक ते सर्वे अरूपी छे ते कांइ व्यवहारनयना दीठामां आवे नहीं

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एवुं सांभळ्युं छे के वेहेचे ते व्यवहार तेनुं केम ? ते समज पाडो ॥ गुरुवाक्य॥ हे महानुभाव व्यवहार जे वेंचवानुं पूछ्युं ते खरुं छे ते जे पूर्वे उपचरितादि भेद वेहेंची देखाडया ते सर्वे अशुद्ध छे तथापि शुद्ध व्यवहार जे छे ते ग्रहण करवा योग छे अने आत्माने बहु गुणकारी छे, परंतु अंते ते तो छोडवानोज छे, तोय पण ज्यांसुधी यथाख्यात चारित्र नथी पाम्यो अने मोहनीय कर्म क्षय नथी गयुं त्यां सुधी शुद्ध व्यवहार अंगीकार करवा जोग छे, ने जो शुद्ध व्यवहार अंगीकार न करे तो मोहनी कर्मक्षय थायज नहीं अने मोहनी कर्मक्षय थयाविना यथाख्यात चारित्र आवे नहीं, अने ए चारित्र विना केवळ

ज्ञान कोइ जीव पामे नहीं. अने केवळ विना मुक्ति कोइ काळे थाय नहीं, ते माटे शुद्ध व्यवहार अवश्य आदरवो, ए वातमां शंका राखवी नहीं.

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी शुद्ध व्यवहार ते शीरीते अमे समजीए, अने शीरीते थाय ते कृपा करीने अमने समजावो.

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र निश्चय थकी द्रव्य एवो शब्द छे ते सामान्य वचन छे ते विशेषे करीने समजवुं तेने शुद्ध व्यवहार कहीए ते तुं सांभळ, हवे हुं विवरीने कहुंछुं. द्रव्यना ६ छभेद छे धर्मास्तिकाय १॥ अधर्मास्तिकाय २॥ आकाशास्तिकाय ३ ॥ काळ ४ ॥ पुद्गलास्तिकाय ५ ॥ जीवास्तिकाय ६॥ ए खट द्रव्य छे. द्रव्य ते शुं कहीए के जेने विषे उत्पाद ॥ १ ॥ व्यय ॥ २ ॥ ध्रुव ॥ ३ ॥ ए लक्षण लाधे तेने द्रव्य कहीए ते ध्रुवपणाथकी द्रव्यने साधीए तथा उत्पाद व्यय तेथकी पर्यायने साधीए, त्रणे लक्षण एक समे जेने विषे लाधे तेने द्रव्य कहीए हवे ते मध्ये जे जीवास्तिकाय छे तेने चेतन कहीए, ते चेतन एक एवा अनंता छे परंतु सत्ता स्वभाव जोतां एकज छे, केमके असंख्यात प्रदेश लोकाकाश प्रमाणे सर्वना सरखा छे तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग. ए छ लक्षण सर्वे जीवमां सरखां लाधे, ते आत्माना गुण पण कहीए तथा अव्याबाधपणुं, अणअवगाहपणुं इत्यादिक आत्माना पर्याय एम आत्माना गुण पर्यायनो विचार करवो ते भेदज्ञान कहीए. अने तेनेज शुद्ध व्यवहार कहीए आहियां विचार घणो छे परंतु ग्रंथ वोहोळो थाय माटे लख्यो नथी एटले ए त्रीजो नय कह्यो ॥ ३ ॥ हवे चोथो नय कहीए छीए तेनुं नाम ऋजुसूत्र ते परिणाम ग्राही छे जे समे जेवा जेना परिणाम वर्त्तता होय तेने तेवो करी माने, जेम कोइक साधु छे तेना परिणाम विषयमां कोइ समे वर्त्तता होय तेवा समयमां ए

नयने पूछीए के ए कोण छे त्यारे ए नयवाळो एवुं बोले जे संसारी छे, अथवा कोइ संसारी पुरुषने कांइ कारणथकी संसार उपर वैराग आव्यो छे परंतु कांइ ज्ञानथकी वैराग नथी कारणथकी वैराग छे ते कांइ संसारने छोडवानो नथी संसारमां ज रेहेवानो छे तो पण ते नयवाळाने तेवे समे पूछ्युं होय तो तेने साधु कहे एवुं ए नयने विषे छे. परंतु एना कीधाथकी कांइ पेलानुं साधुपणुं जाय नहि ने संसारी साधु थाय नहि, शामाटे जे श्री भगवतीजीनां पंदरमा शतकने विषे सुमंगळा साधु आवती चोवीशीमां थशे तथा गोशाळानो जीव विमळवाहनराजा थशे ते विमळवाहन राजा तथा राजानो सारथी तथा राजाना घोडा सर्वने तेजो लेस्या मुकी बाळीने राख करशे तोपण ते साधु सर्वार्थ सिद्धे जशे अने ए नयनो मत तो ए साधु हिंसक ते वखत छे परंतु ए नयना मानवाथकी ए साधु कांइ हिंसक थया नहि ने नरके गया नहि. इत्यादिक घणीक वात विचारीने जोतां ए नय पुद्गळग्राही छे केमके मनना परिणामने ग्रहे छे, ते मन तो पुद्गळ छे अने मनना परिणाम जे शुभाशुभ उठे ते पण पुद्गळीक छे माटे ए नय पण व्यवहारनयमां भेळीए एटले ए चोथो नय कह्यो एटले पूर्वोक्त चारे नय व्यवहारना घरना छे अने चारे पुद्गळग्राही छे पण आत्मा ग्राही कांइ छे नहि ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, शुद्ध व्यवहार तो आत्माग्राही छे तेने तमे पुद्गळीक केम कोहोछो ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! शुद्ध व्यवहार छे ते कांइ नयनी गवेषणामां छे नहि ते तो ज्ञाननयना वे भेद करीए त्यारे ते गणत्रीमां आवे शामाटे के समकित गुणठाणाथी दशमा गुणठाणा सुधी शुद्ध व्यवहार छे माटे ते ज्ञाननयमां गणाय अने आतो व्यवहार कल्प

आश्रित समजवानो छे ते तो अंते विचारीने जोतां पेहेला गुणठाणामां छे माटे आहियां शुद्ध व्यवहारनयमां गवेल्यो नथी, एटले एं व्यवहारनयनी ओलखाण करावी.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, व्यवहारनयतो ओळखाव्यो, ते तो छोडवायोग्य छे पण आदरवायोग्य निश्चयनय छे ते ओळखावो.

॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणुप्रिय ! निश्चय दृष्टि विचारी जोतां शुद्ध निरंजन आत्मा एकज छे, कांइ आत्मामां आत्माना गुण पर्याय जूदा नथी. जेम सुवर्णने सुवर्ण ना घाट जे मुगट, कुंडळ प्रमुख ते कांइ सुवर्णथकी नोखा नथी, तेम ज्ञानादिक जे गुण ते कांइ आत्माथकी नोखा नथी.

॥ गुण पर्यायभ्यं आत्मा इति वचनात् ॥

माटे आत्माने एकज स्वरूप ध्यायुं.

॥ शिष्यवाक्य ॥ परमात्मानी वाणी एवी छे के ज्ञान दर्शनादिक आत्माना गुण कह्या छे अने तमे तो आत्मा एकज कहो छो गुण जूदा कहेता नथी तथा सिद्धांतमां एवा पाठ दीसे छे के.

तपसंजम अपाणभावे माणे विहरं.

इत्यादिक पाठ श्रावक साधुना अधिकारे घणा छे अने तमे तो एकज कहो छो.

॥ गुरुवाक्य ॥ जे ज्ञानादिक गुण तें जे कह्या ते सत्य छे. परंतु ए भेद ज्ञानने न्याये छे पण मूळ स्वरूपने विचारीने जुओ तो ज्ञान दर्शनादिक गुण तेज आत्मा छे जेम दूध अने दूधनी धारा तथा दूधनुं श्वेतपणुं तथा दूधनुं मधुरतापणुं इत्यादिक दूधना गुण ते कंइ दूधथकी जूदा नथी, दूध ने दूधनी धारा ते कंइ जूदी नथी एकज छे तेम ज्ञान दर्शन तेज आत्मा छे. कदापि आत्मानुं ज्ञानदर्शन कहीए

ते वारे ज्ञान दर्शन जूदुं ठरे ने आत्मा जूदो ठरे तो ए मोटो विरोध आवे. शामाटे जे ज्ञान दर्शन विनानो जे आत्मा रह्यो तेने पछी शुं कहीए ते वस्तुता रहे नहि. जेम कंचन छे तेने वीषे पीळाशपणुं तथा भारेपणुं तथा चीकाशपणुं ए जो कंचनथकी ज्यारे जूदां गणाय ते वारे कंचन क्यां रहे माटे भारे पीळो, चीकणो, तेनेज कंचन कहीए. पण जूदु कहेवुं बने नहि, तेमज ज्ञानदर्शन चारित्र, तेहीज आत्मा तथा जे तें संजमतप आत्माने भाववानुं कह्युं ते पण कांइ जूदुं नथी तपसंजम ते पण आत्माज छे, जेम मृतीकानां कोठी, कुंडां, घट इत्यादि जे छे ते कांइ मृतिकाथकी भिन्न नथी एटले ए सर्वे घाट छे, ते सर्वे मृतिकाने भजे छे, परंतु मृतीकाविना घाट होवे नहि तेम अहियां तपसंजम ते आत्माने भजे छे पण आत्माविना तपसंजम होय नहि.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, तपसंयम गुणतो अधीको ओछो दीसे छे अने तेम तो आत्मरूप कहो छो त्यारे तो सरखो जोइए.

॥ गुरुवाक्य ॥ जे तपसंजम गुण अधिको ओछो छे तेनुं कारण सांभळ. जेम ते मृतिकाना घाट नाहाना मोटा छे जेमां मृतिका विशेष छे ते घाट मोहोटो छे जेमां मृतिका ओछी छे ते घाट नाहानो छे तमे अहियां जे आत्मानां आवरण वधतां खसी गयां तेनो तपसंजम गुण विशेष मालुम पडे छे. जेनां आवरण थोडां खस्यां छे तेना गुण ओछा मालुम पडे छे. परंतु आत्मस्वरूप ते एकज छे, शामाटे जे शुद्ध व्यवहारथकी नयनो पक्ष छे तेहीज आत्मा एवा स्वरूपने परमात्मापणुं प्रगट करवाने वास्ते आरोपण करीए. एटले आपणा आत्माने परमात्मरूप करीने ध्याइए तो आपण परमात्मा थइए.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी आपणो आत्मा हजु परमात्म स्व-

रूपे प्रगट थयो नथी अने तेने परमात्मरूप करीने ध्याइए ते तो असत्य कल्पना थाय छे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! आपणो आत्मा परमात्मा तो छेज परंतु आवरणना जोरथी आत्मा कहेवाय छे पण मूळ सत्ता जोइए तो आत्माने कंइ कर्म लागतां नथी. आत्माने कर्म केवी रीतनां रह्यां छे के जेम सूरजनी आडां वादळां, तेम आत्माने कर्म रह्यां छे माटे आत्माने कर्म वळगतां नथी ए अधिकार पन्नवणासूत्र थकी जोजो.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी. तमे तो सूरज वादळांनो दृष्टांत बतावोछो अने अमारा सांभळ्यामां कर्म खीर नीरने द्रष्टांते छे

॥ गुरुवाक्य ॥ महानुभाव ! ए पण एज छे जे दूधनी मांहेलीकोरे पाणी नांखीए तो कांइ दूधना प्रदेश मटीने पाणीना प्रदेश थाय नहि आप आपणी सत्तामां सर्वे रहे छे

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, दूध पाणी कांइ जूदुं तो पछी जणातुं नथी अने तमे तो कहोछो के आप आपणी सत्तामां रहेछे ते केम समजवामां आवे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! ए दूध लेइने अग्नि उपर मूकीए ते वारे पाणी होय ते बळे अने दूधनो मावो नरवो रहे त्यारे समजवुं के बेउनी सत्ता जूदी छे जो बेउनी सत्ता एक थइ होय तो बेउ बळतां, माटे सौ सौनी सत्तामां छे. तथा बीजे द्रष्टांते जे जूवारना डोकाने छोलीने मांहेलुं जे बोयुं ते दूध मांहे नांखीए.तो ते पाणी होय ते पीए अने बहार काढी नीचोवीए एटले पाणी होय ते नीकळी जाय, फरीथी नाखीए तो पाणी होय ते पीए वळी काढीने नीचोवीए, एम ज्यां सुधी पाणी होय त्यां सुधी पीए. एकलुं दूध रहे एटले पीए नहि तेम अहियां आत्मा तथा कर्म ते बे एक

मेक दीसे परंतु एक मेक थाय नहि. आत्मा आत्मानी सत्तामां रहे, पुद्गळ पुद्गळनी सत्तामां रहे माटे ए कर्म ने आत्मा बे जुदां छे. हवे आत्मा छे तेना असंख्यात प्रदेश छे एकेक प्रदेशे अनंतु ज्ञान छे तथा अनंतु दर्शन छे तथा अनंतु चारित्र छे तथा अनंतु वीर्य छे तेम अनंत गुण छे ते जेम एक प्रदेशे कह्या तेम असंख्याता प्रदेश जाणवा, ते माटे ए आत्मा अनंत गुणनो धणी छे, तथा अलिप्त छे एटले कर्म साथे लीपाणो नथी तथा अरागी छे तथा अद्वेषी छे एटले रागद्वेष ते पुद्गळना घरना छे ते कांइ आत्माना नथी ते सदाए सत्तामां एवोज छे. आत्मा सत्ताए निर्मळ रह्यो छे माटे जेवुं परमात्मानुं स्वरूप तेवुंज आत्मानुं स्वरूप छे माटे एने परमात्मा करीने ध्याइए तेमां असत् कल्पना नथी ए तो सत्यज छे

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी पूर्वे संग्रह नयना अधिकारमां तमोए सत्तानुं स्वरूप निषेधी नांख्युं हतुं अने अहियां सत्तानुं स्वरूप तमे देखाडयुं ते केम ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! संग्रहनयने विषे जे सत्तानुं स्वरूप निषेध्युं ते त्यां कांइ प्रगट दीसतुं नथी, अने अहियां तो घणुं प्रगट दीसे छे जेम घासने विषे घी मानीए पण तेथी कांइ हाल दीसतुं नथी एतो एक ओघशक्ति छे शुं जाणीए के ए घास बळी जशे अथवा उभी सडी जशे अथवा सहज वनना जनावर छे ते खाशे अथवा हाथी घोडा प्रमुख जनावर खाइ जशे ? तो एटली जातमां तो कांइ घी थवानुं नथी, जे वारे गाय तथा भेंश तथा बकरी तथा गाडर ए चार जनावरना खाधामां आवे तो घीनी आशा थाय ते मध्ये पण वाखडां जनावर खाइ जाय ते तो कांइ लेखामां आवे नहि दुझणुं खाय त्यारे लेखामां आवे एटले घासनुं घी तें कीधुं ते प्रमाण न थयुं तेम संग्रहनय नाम ते पण निगोद प्रमुख सर्वेने

परमात्मपदे माने छे तेना व्याघात पूर्वे कह्या छे, तथा दूधमां जे घी कहीए ते कोइथी ना न कहेवाय अने तरत दूधमांथी घी नीकळे पण खरुं, तेम आहियां अंतर आत्मा तेने परमात्म स्वरूप करीने ध्याइए तेने कोइ वातनुं दूषण छे नहि, एटले दूध जेम कह्युं तेम अंतरआत्मा छे ते समुचित्त शक्ति पामेलो छे ते अधिकार विस्तारथी जोवो होय तो सुमतिग्रंथमां जोजो. एवी रीते आत्माने परमात्मरूप करीने ध्याताथका पोतानो आत्मा प्रगट थाय ते वातमां संदेह राखवो नहि.

॥ दुहा ॥

निश्चय व्यवहार रचना कही, संक्षेपे सुखकार ॥
सारसार वचन उधरी, सिद्धांतना आधार ॥ १ ॥
निश्चय स्वरुप वखाणीउं, सिद्धांतमांही जेह ॥
तेमांथी प्रगट करुं, किंचित् मात्र एह ॥ २ ॥
व्यवहारमां विखवाद घणो, ते देखाडयो आज ॥
ते समजीने छोडजो, जेम सरे आतमकाज ॥ ३ ॥
पापकर्म दूरे करी, भजे आतमराम ॥
द्रव्यगुण पर्यायने, समजवानुं काम ॥ ४ ॥
अमरीत रस एह छे, आपे अमर अवतार ॥
जन्ममरण टळे सही, साचो ग्रंथ विचार ॥ ५ ॥
भणशे गणशे जे नर, सांभळशे धरी प्रेम ॥
संवरधारी ते सही, साचो तेहनो नेम ॥ ६ ॥

देवलोक नरलोकनी सही, ऋधितस आगळ दास ॥
ते नर कर्म दूरे करी, वेगे ले शीववास ॥ ७ ॥
एह वात खोटी नहि, मत कोइ धरो संदेह ॥
शास्त्र अनुमाने कहुं, साचो गुणनो गेह ॥ ८ ॥
संवत ओगणी ओगणीसमें श्रावण परथम मास ॥
तीथी अष्टमी जाणीए शुकल पक्ष नीवास ॥ ९ ॥
बुधवारे बुद्धि वधे रचनाए सुखकार ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नामे जे जे कार ॥ १० ॥
शुद्धाशुद्ध वचन जे साधजो चतुर सुजाण ॥
अपमान कोइ करशो नहि ग्रंथ तणुं ते जाण ॥११॥
रचना छद्मस्थ भावथी तेथी दूषण कोइ ॥
देखे ते शोधे सही पंडित ज्ञाने जोइ ॥ १२ ॥
ए ग्रंथ अविचळ रहो, नभभु पेरे सोय ॥
विस्तरजो पृथ्वी विषे सुख सुख ग्रंथ ए होय ॥१३॥
एहमां ज्ञान अगाध छे गुण पण एहना अगाध ॥
स्वयंभूरमण पेरे गंभीर छे, सुगुरु संगे साध ॥१४॥
मुनि हुकम अनुभव करी, चिदानंद महाराज ॥
आळ पंपाळ दुरे करी, सारयुं नीज आतमकाज ॥१५॥

आत्म रमण एह छे, ग्रंथ एह विनाण ॥
रमतां सुख संपति लहे निज स्वरूप सुख मान ॥१६॥
शीव रमणी आवे तेडवा केवळ श्री ले साथ ॥
ग्रंथ ए जेह रुदीए धरे तेनो झाले हाथ ॥ १७ ॥



तत्वसारोद्धार.

श्री गुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥

अविनाशी अकलंकतुं, नीरंजन नीराकार ।
हुं वंदु ते आत्मा, निज अनुभव उदार ॥ १ ॥
तत्व तत्व ग्रहण करी, ठवुं वचन मनोहार ।
श्रोता सुणजो कान देइ, जेथी भवनो पार ॥ २ ॥
तत्व सारोद्धार ए, ग्रंथ ज्ञान उद्योत ।
भणतां नीपजे, नीज आतम गुण श्वेत ॥ ३ ॥

हवे भाषा लखीये छीये–हवे जगतने विषे अनेक पदार्थ छे ते सर्वनुसार बीचारीने काढीये त्यारे तत्व बे छे, जीवतत्व. १ अजीव तत्व. २ ए बेज तत्व छे ए बे विना बीजो कोइ पदार्थ दीसतो नथी. शिष्यवाक्य–स्वामी पुर्वे अमे तत्व सात तथा नव सांभल्यां छे तेनुं केम ? गुरुवाक्य–हे भद्र ए बे तत्वना सात पण थाय, तथा नव पण थाय. ते कल्पना छे, परंतु तेने भेद करीने देखाडुं ते सांभल. हवे जीव द्रव्यनां चार तत्व छे. जीवतत्व १ संवरतत्व २ निर्जरातत्व ३ मोक्षतत्व ४. तथा अजीवतत्वना पांचतत्व छे. अजीवतत्व १ पुन्यतत्व २ पापतत्व ३ आश्रवतत्व ४ बंधतत्व५ एटले ए जीव अजीव मलीने नव तत्व थयां तथा पुन्य पाप न गणीये तो सात तत्व थाय.

शिष्य–स्वामी पुन्य पाप गणीये, तेने शावास्ते ना गणीये ? ए तत्व छे के नथी ते समजावो.

गुरु–जे पुन्य पाप बे तत्व छे, ए आश्रव छे त्यारे ए बे तत्व जुदा गणीये तो आश्रव शेने कहीये ? जे पुन्य पापनां दलियां आवे छे तेनेज आश्रव कहिये, एटले सातज तत्व छे. तथा जे आवे छे तेने आश्रव गणीने भेद पाडीये त्यारे उदय आवेलां जे दलीयां ते भोगवीने खेरवीये तेने पुन्य पाप कहिये, एटले तेथी नव तत्व थाय.

शिष्य–स्वामी ए नवेतत्वनो विवरो करीने बतावो.

गुरु–प्रथम अजीवतत्वनी ओलखाण करावुं छुं. अजीव ते केने कहिये के जेने विषे चेतना रूप लक्षण नथी ते अजीवना जघन्य थकी पांच भेद छे, ने उत्कृष्टा १६० भेद छे ते प्रथम जघन्यना पांच भेद ओलखावीये छीये तेनी वीगतः—धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ४ पुद्गलास्तिकाय ५ हवे धर्मास्तिकाय ते शुं कहिये–धर्मास्तिकाय एक द्रव्य छे ते अरूपी छे, चउद राज्य लोकना प्रमाण ए द्रव्य एक छे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश तेटला प्रदेश छे पण निराकार छे आकारे करी रहित छे तेमां कशी क्रियानो गुण नथी पण जे जीव पुद्गल चाले छे तेने साहाय आपे छे.

शिष्य—स्वामी, जो एनामां क्रिया नथी तो चालतां ने साहाय केम आपे छे.

गुरुवाक्य—हे भद्र, साहाय आपवी ते स्वभाविक छे अने क्रिया छे, ते विभावीक छे, ते वीभावदशा एने विषे नथी ते पोत पोताना स्वभावमां सदाय रहेछे जेम जलनो स्वभाव छे ते तरवानो छे तथा तेलनो स्वभाव डुबाडवानो छे ए ते स्वभाविक केहेवाय

विभावीक नहीं. विभाविक ते केनुं नाम के जेम अग्नि छे ते काष्टादिकना संजोग थकी सामी वस्तुनो नाश करे ते विभाविक कहीये.

शिष्य—स्वामी अग्निमां तो दाहक स्वभाव छे एने विभाविक केम कहो छो?

गुरु—दाहक स्वभाव छे ते काष्टादिक वस्तुजोग छे तेने बाळे, परंतु पथ्थरने कंइ बालवानो स्वभाव छे नहीं. पण विभावना जोरथी पथ्थरने पण बाले, तथा पाणी छे ते अग्निनुं शत्रु छे शा माटे के पाणीथकी अग्निनो नाश थाय, परंतु विभावना जोरथी अग्नि पाणीने पण बाले. एटले विभाव ते शुं. जे पोताथकी बीजा अपरनुं मलवुं, बे मलीने जे कार्य करवुं तेनुं नाम विभाव कहीये अने विभाव तेनेज क्रिया कहीये. एटले ते विभाव दशा ते धर्मास्तिकायमां नथी. शा माटे जे एकथी बीजो मले नहीं. एटला वास्ते अमे क्रियानी ना पाडी, तथा जे चेतनने चालतां साहाय आपे छे ते शा दृष्टांते के जेम माछलां जलने विषे चाल्यां जाय छे ते जलना साहायथकी चाले छे तेम जड चेतन धर्मास्तिकायनी साहायथकी चाले छे १. तथा अधर्मास्तिकाय बीजो द्रव्य ते पण अरूपी छे तेने विषे आकार नथी, तथा क्रिया पण नथी ते जड चेतनने थीर रहेवुं होय तेने साहाय आपे छे कया द्रष्टांते के जेम कोइ पुरुष पंथे चाल्यो जाय छे अने ते धरती एवी छे जे ज्यांहां झाड झाखुं छे नहीं. अने ग्रिष्मरुतु छे एटले जेठ महीनाना दाहाडा छे अने लू पण घणी वाय छे ताप पण घणो आकरो छे तेवी वखते ते चालता पुरुषने मारगमां चालतां कोइक झाड आव्युं, ते झाड केवुं छे के महा विस्तारवंत जेनी छाया छे एवुं झाड देखीने ते पंथी लू तथा तापमांथी हींडयो आवतो थको ते झाड हेठल

वेसे के न बेसे आपि तुं वेसे. ए झाडनी साहायथकी ते पंथी वेठो तेम जीव अजीवने थीर रेहेवुं ते अधर्मास्तिकायनी साहायथकी रहे २. हवे त्रीजो आकाशास्तिकाय द्रव्य एक लोकालोक प्रमाण छे, ते पण अरूपी छे तेने विषे पण कशो आकार नथी तथा क्रिया पण कशी छे नहीं, परंतु जड चेतनने अवकाश आपे शा दृष्टांते के जेम कोइए चुने करीने इंटो चणी होय पछी ते भींतमां माग कइयो ए होय नहीं एवी साफ करेली छे तो पण तेने विषे खीली मारीए तो मांही पेसे तथा जेम काष्टना मोभ प्रमुखने विषे जेटली खीलीओ मारीये तेटली मांहे समाय परंतु ते काष्टनुं डगलुं ते खीलीना भागनुं वधारे थतुं नथी ते जेम ए काष्ट तथा भींतना स्वभाव छे ते जेम खीलीने मारग आपे तेम आकाश द्रव्य जीव पुद्गलने मारग आपे. ३ हवे चोथो द्रव्य जे काल.

शिष्य---स्वामी, पूर्वे धर्मास्तिकाय प्रमुख द्रव्यने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने अस्तिकाय केम न कह्यो ! एकलो काल कहिने बोलाव्यो तेनुं शुं कारण. ?

गुरु--हे देवाणु प्रीय! धर्मास्तिकाय प्रमुख जे द्रव्य छे ते बहु प्रदेशी छे शामाटे के धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय तथा जीवास्तिकाय ए त्रण द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे तथा आकाशास्तिकाय अनंत प्रदेशी छे अने पुद्गलास्तिकायना खंध अनंता छे ते कोइ द्वी प्रदेशी छे कोइ त्रण प्रदेशी छे यावत् संख्यात प्रदेशी छे तथा असंख्यात प्रदेशी तथा अनंत प्रदेशी छे, तथा अनंता परमाणुं जूदा छे, तेमां पण खंध मलवानी शक्ति रही छे माटे एने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने विषे एक समयथी बीजो समय मले नही. माटे तेने अस्तिकाय कह्यो नही.

शिष्य—स्वामी ! एक समयथी बीजो समय मले नहीं त्यारे एने द्रव्य केम कहो छो.

गुरु—हे भद्र ! सर्वे शास्त्रने विषे पंचास्तिकायनी व्याख्या छे अने द्रव्य छनी व्याख्या छे, पण छट्ठो द्रव्य जे काल ते कांइ पदार्थ नथी पण सर्वे द्रव्यने नवानुं जुनुं करे एटला माटे तेने द्रव्य कह्यो. परंतु प्रथम समयनो नाश थाय अने बीजो समय आवे माटे काल द्रव्यने उपचारे करीने द्रव्य कहीये छीये ते द्रव्य अरूपी छे, आकार पण कश्यो ए छे नहि क्रिया पण छे नहि, नवी वस्तुने जुनी करे एवुं परावर्त्तन धर्म छे ४ हवे पुद्गलास्तिकाय तेने विषे रूपीपणुं छे, आकार पण छे तथा क्रिया पण छे, मलण वीखरण स्वभाव छे ५ एटले ए अजीवना पांचे भेद ते मध्ये चार भेद अरूपी अने एक रूपी ए सर्वे मलीने पांचनी ओलखाण करावीए. सर्वे व्यवहार नयना पक्ष छे. हवे जे ५६० भेद एना कहीशुं ते अशुद्ध व्यवहार नयना पक्ष छे, शामाटे के कल्पना करीने भेद उठाववा तेनुं नाम अशुद्ध कहिये. अने वेंहेंचवुं ते व्यवहार एटले अशुद्ध व्यवहार थया.

शिष्य—एवा अशुद्ध भेद वेंहेंचवानी शी जरुर छे ? एवा कल्पीत भेद करवाने वस्तुता कंइ जूदी पडती नथी ते तो ते पांचमांने पांचमां छे, तो शा वास्ते कल्पीत भेद करोछो.

गुरु—हे भद्र ! ए तें कह्युं ते खरुं, परंतु बाल जीवने भेद वेंहेंच्याविना समजण आवे नहि ते वास्ते ए भेद वेंहेचवा पडे छे. जेम कोइ पुरुष पोताना घरना माणसने केहे जे दातण लाव ते वारे ते पुरुष डाह्यो समजु होय तो दातण, पाणीनो लोटो, रुमाल, तमाकु प्रमुख जे घस्तो होय ते सर्वे लावे, एटले ते जाणे के वधुंए जोइशे

पण अणसमजु होय अथवा बालक छोकरुं होय तो तेने जेटली वस्तु कहिये तेटली लावे माटे तेने सर्वे विवरीने कहुं जोइये, तेमज समजु पुरुष होय ते संक्षेपथी कीधां थकी समजे एवा विस्तार बुद्धि-वाला जीव थोडा होय अने थोडी बुद्धिवाला जीव घणा होय तेने विस्तारे करीने समजावीये त्यारे समजे, ते माटे भेद विवरीने कहिये छीये हवे धर्मास्तिकायना आठ भेद छे तेनो खंध लोकाकाश प्रमाण एकज छे १ धर्मास्तिकायना देश जे अधो लोक उर्ध्व लोक तिर्च्छो लोक इत्यादिक जे कल्पीये ते देश कहेवाय २. तेना प्रदेश असंख्यात छे, जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला एना छे ३ ते द्रव्यथकी एकज द्रव्य छे ४ खेत्रथकी लोकाकाश प्रमाण छे ५ अने कालथकी अनादिअनंत छे, एटले आदिअंत नथी ६ भाव-थकी वर्ण, गंध, रस, फरस, तथा स्वस्थान नथी ७ गुणथकी जीव पुद्गलने चालतां साहाय आपे ८ तेमज अधर्मास्तिकायने विषे जाणवा, परंतु एटलो विशेष के धर्मास्तिकाय चालताने साहाय आपे, ते नहि अने थीर रहेते ने साहाय करे ते गुण आठमो लेवो २ आकाशास्तिकायने विषे खंध जे छे ते लोकालोक प्रमाण १ देश ते चउद राज्यलोक प्रमाण, तेने देश कहिये कदापि ओछो अधिको कल्पिये तो पण तेने देश कहिये २ प्रदेश अनंता छे, ३ द्रव्यथकी एक द्रव्य छे, ४ खेत्रथकी लोकालोक प्रमाण छे, ५ काल ६ तथा भावथकी पूर्ववत् ७ गुणथकी अवगाहना गुण जड चेतनने मार्ग आपे ८—३ चोथो काल द्रव्यना ६ भेद ते मध्ये काल द्रव्य विषे खंध देश छेज नहिं, शा माटे जे अछतो पदार्थ छे सदाये एक समय लाधे, १ द्रव्यथकी काल द्रव्य एक छे २ खेत्रथकी अढी द्वीप प्रमाण ३ काल ४ तथा भावथकी पूर्ववत् ५ गुणथकी नवा पुराणावर्त्तना लक्षण ३ ए काल द्रव्य उपचारथकी छे एटले अजीव

अरूपी द्रव्यना चार भेद धर्मास्तिकाय आदे दइने कह्या ते सर्व अरूपी छे ते ज्ञानीना दीठामां आवे परंतु चर्म द्रष्टिवालाथी देखाय नहिं एम सद्दहवुं. हवे रूपी द्रव्य काहिये छीये, पुद्गल द्रव्य जे रुपी तेना भेद काहिये छीये. वर्ण ५, रातो १, पीलो २, लीलो ३, धोलो ४, कालो ५; गंध २, सुरभी तथा दुरभी. रस ५, कडवो कसायलो, खाटो, तीखो, मधुरो. फरस ८, टाहाडो १, उनो २, लुखो ३, चोपडो ४, भारे ५, हलवो ६, बरसट ७, सुकोमल ८; संस्थान ५, लांबु १, गोल २, त्रिखुण ३, चोखुण ४, वलोयाने आकारे ५, हवे पांच वर्णना १०० भेद थाय ते कहिये छीये. प्रथम जे रातो वर्ण छे तेने विषे सुरभी तथा दूरभी बे गंध होय, रस पांचे लाधे, फरस आठे लाधे, संस्थान पांचे लाधे, तेना स्वामी कहिये छीये. राते वर्णे कुसुम, गुलाब, तथा कमल प्रमुख छे; तेने विषे गंध सुरभी छे, फरस सुकोमल हलको तथा शीतल छे, तथा स्निग्धपणुं छे संस्थान गोल छे. रस मधुरो छे, एम एक एक वर्णमां गंध प्रमुख ज्यांहां यथा योग जोइये तेवा गणी लेवा. एटले ए राता वर्णना वीश भेद थया, तेम लीला वर्णना वीश, पीला वर्णना वीश, श्याम वर्णना वीश धोला वर्णना वीश एटले ए पांच वर्णना मलीने १०० थया, एटले ए एक वर्णमां बीजो वर्ण नहिं आवे केमके तेनो ते प्रति पक्षी छे, माटे वर्णना न गणीये त्यारे एक एक वर्णे वीस वीस आवी रहे, तेमज रसना पण गणवा, परंतु ज्यां मधुर अथवा हरेक कोइ रस होय त्यां बीजा प्रतिपक्षी चार रसना होय ते वारे एक रसमांहे वीस भेद लाधे. तेनी विगत वर्ण ५, गंध २, फरस ८, स्वस्थान ५, एटले वीश थया, एम पांच रसना थइने सो थाय तेमज स्वस्थानना विषे पण २० भेद लाधे तेनी विगत उपर प्रमाणे पांच स्वस्थानना थइने सो भेद थया तेमज

गंधने वीशे ते वीस भेद लाधे, तेनी विगत, वरण ५, रस ५, फरस ८, संस्थान ५, ए २३ सुरभी गंधना अने दूरभी गंधना २३ मलिने ४६ थाय हवे फरसना प्रथम ७, फरसने विशे प्रति पक्षी उष्ण फरस न होय, बाकीना ६ ए फरस लाधे. वरण ५, रस ५ गंध २, संस्थान ५ एटले ते वीस थया ए एक फरसना तेविस तेम आठे फरसना तेवीस तेवीस गणतां १८४ भेद थया. एटले वर्णना १००, रसना १००, संस्थानना १००, गंधना ४६, ने फरसना १८४, सर्वे मलीने ५३० थया. एटले रूपी अजीव द्रव्यना ५३०, भेद थया अने अरुपि द्रव्यना ३० भेद एटले सर्वे अजीव मलीने ५६०, भेद थया ए सर्वे अशुद्ध व्यवहार नयना पक्ष छे. एटले अजीव तत्व कह्यो, हवे आश्रव तत्व ओलखावीये छिये. एटले आश्रव कहेतां जे कर्मनुं आववुं थाय छे तेने आश्रव कहिये अने ते आश्रव शा थकी आवे छे अने तेनो हेतु कोण छे तेनुं कारण देखाडिये छिये हवे ए आश्रवने आववाने मूल हेतु च्यार छे. उत्तर हेतु ५७ छे ते मूल हेतुनां नाम, मिथ्यात्व १ अव्रत २ कषाय ३ जोग ४ तेमां मिथ्यात्वना ५ भेद छे, तेमां पहेलुं आभिग्रहि मिथ्यात्व ते केने कहीए जे पूर्वे अज्ञानपणाने विषे कोइ अज्ञानी संगे अथवा अज्ञानी गुरुना उपदेश थकी जे सांभल्युं छे, अने जे वस्तु ग्रहण करी छे, ते छोडे नहि. कदापि कोइ सुगुरु मले ने घणी रीते करीने समजावे तो ए पण पोतानी हठ छोडे नहि. लोह वाणियानी पेठे आहियां लोह वाणिआनो द्रष्टांत लखीये छीये.

वसंतपुर नगरीने विषे धनदत्त १ धनसार २ धनवल्लभ ३ वसुहिण ४ एवे नामे चार वाणीया वसे छे ते चारे ने दोस्तदारीनो हक घणो छे, परंतु चारे निर्धन छे, एक समे चारे भेगा थइ विचार कर्यो के आपणी पासे धन नथी, धनविना मान पा-

मीये नहि ने सुख पण होय नहि. माटे परदेश धन कमावा जइ-
ये एम विचारीने चारे जण परदेश गया. आगल जतां एक दी-
वसना समाजोगे एक अटवीमां जतां रस्तो भूल्या ने आडा
मार्गे जाय छे, त्यां आगल जतां एक लोढानी खाण आवी ते
वारे चारे जणे विचार कर्यो के लोढुं ल्यो, आपणने खरची
मां खप लागशे एम विचारी चारे जणे लोढुं लीधुं, त्यां थकी
आगल चाल्या, त्यां कलाइनी खाण आवी ते वारे मांहो मांहे
केहवा लाग्या के कलाइ ल्यो अने लोढुं पडयुं मुको, ते वारे त्रण
जणे लोढुं पडयुं मुकी कलाइ बांधी पण चोथो जे वस्तुहिण तेणे
कलाइ न लीधी, त्यारे त्रणे जणा कहेवा लाग्या के तुं कलाइ ले
एटले आपणे जइये तोपण ते बोल्यो नहि एम घणीवार क-
हुं त्यारे ते बोल्यो के तमारी रीत जोइने हुं तो भेचक थयो छुं
त्यारे त्रणे जणे पुछयुं के तुं शा माटे एवडुं बोले छे ? ते बोल्यो
के तमे दगाखोर आदमी छो तेओ कहे तारी साथे शो दगो कर्यो ?
तेणे कहुं के तमे लोढाना सगा न थया तेने त्यांथी लावीने अध-
वच नांखी दीधुं तो तमे तेना भला न थया तो बीजाना शुं भला
थशो ? ते वारे तेओ कहे के एमां कांइ जीव नथी, के दगो कर्यो.
एम घणी रीते कहुं के तुं कलाइ बांध पण कोइनो समजाव्यो स-
मज्यो नहि. त्यांथकी आगल चाल्या एटले त्रांबानी खाण आवी
त्यां पण ते समज्यो नहि, पूर्वनी पेरे लोढुं राखी रह्यो ने त्रांबु
लीधुं नहि. तेमज आगल जतां रुपानी तथा सोनानी तथा सोले
जातना रत्ननी खाण आवी त्यां पण एणे कोइनुं कह्युं मान्युं नहि
त्यारे सोलमी जे मणी रत्ननी खाण छे त्यां बेशीने धनसार प्रमुखे
कह्युं जे अमारे हवे आगल कमावा जवुं नथी, केमके जे जोइये
ते धन इहां मल्युं छे माटे अवे पाछा घेर जइशुं, वास्ते समजीने

मणीरत्न ले ने लोढुं नाखी दे. एटले आपणे घेर जइये तो सर्वे सुखीया थइये परंतु ते वसुहिणे कोइनुं कहुं मान्युं नहीं उलटा अवगुण बोल्या करयो, वली तेमणे कहुं के घेर गया पछी तुं मागीश तो अमथी अपाशे नहीं. इत्यादिक घणी तरेहथी समजाव्यो पण ते समज्यो नहीं. पछी चारे जण घेर आव्या तेमां त्रण जणे मणीरत्न वेचीने करोडो सोनइयानो व्यवसाय करवा मांड्यो. पालखी, मेना, घोडा, गाडी, चाकर वीगेरे मोटी ठकरात करीने वेठा ने वसुहिण तो हता तेवाने तेवा रह्या. ते वारे गामना लोक तेने पूछे जे तमे चारे मित्र साथे गया हता ने त्रण धनवान थया ने तुं कंइ न लाव्यो ते शुं ? त्यारे मोघम उत्तर आपे के ए त्रण दगाखोर छे कुटील माणस छे, विश्वास करवाजोग नथी एवो उत्तर करे तेथी गाममां एवी वार्त्ता प्रसिद्ध थइ के केटलाक कहे छे के एनो भाग त्रणे जणे आप्यो नहीं, केटलाक कहे छे के एज कमायो हतो ते त्रणे जणे मलीने वसुहीणनुं पाडी लीधुं, एम मुखे मुखे नोखी नोखी वार्ता प्रवर्त्ते, त्यारे गामना बे डाह्या समजु हता तेणे वसुहीणना सगा वाहालाने ठपको दीधो जे तम जेवा सगा अने ते विचारा गरीबनुं पेला त्रण जण खाइ गया तेनी तमे मदद करता नथी ए ठीक नहीं सारा सगा शा कामना छे ते वारे ते सगा वाहाला बोल्या जे शेठजी तमे अमने ठपको आप्यो ते ठीक छे पण अमने कह्या वगर शी मालम पडे त्यारे तेमणे कहुं के ए गरीब शुं केहेवा आवे तमारे बोलावीने पुछवुं जोइये ते वारे ते सगावाहाला भेगा थइने वसुहिणने बोलावीने पुछवा लाग्या के ताहारे शी हकीकत थइ तेणे जवाब दीधो के ए लुच्या, दगाखोर. एवा आदमीनी वात करवामां कांइ माल नथी सगाए कहुं के लुच्या प्रमुख जेवा हशे तेवाने अमे पोंहोंचीशुं पण तुं अमने वात

कहे पण ते वात केहे नहि. घणो आग्रह करीने तेनी पासे वात कहेवडावी. त्यारे मांहेथी सार एवो नीकल्यो के एणे जे पूर्वे लोढुं झाल्युं हतुं ते छोडयुं नहीं अने पेलाओए जे सार वस्तु दीठी ते लीधी. असार दीठी ते नाखी दीधी. एवुं सांभलीने जे सगा मल्या हता ते बोल्या के भाइ तारा कर्मनो वांक छे एमनो वांक नथी नाहक एमनो वांक शा वास्ते काहाडे छे जे तें लोढुं झालीने हठ न मुकी तो तुं दुखीयो थयो एमणे तो तने घणुं समजाव्यो पण तें ना मान्युं एमां एमनो कांइ वांक नथी एटले जेम ते लोहवाणियो दुखियो थयो तेम प्रथम अज्ञानपणामां जे वस्तु झाली ते कोइ सुगुरु मलेथी ना छोडे तो ते चार गती संसारमां अनंताकाल रखडे तेने आभिग्रही मिथ्यात्व कहिये. १

बीजुं अणाभिग्रहि मिथ्यात्व कहेतां तेने विषे हठवाद नहि तेम श्रद्धा पण स्थिर नहि, सर्वेने देव जाणे कोण सरागीने कोण वीतरागी तथा कोण देवी देवलां तथा सर्वेने गुरु जाणे कोण निर्ग्रंथने कोण सग्रंथ कोण आरंभी, कोण अणारंभी ए सर्वेने वांदे पूजे पण एने विषे सारा नरसानी खबर नहि गुणं अवगुणनी परीक्षा नहि मुक्ति दायक सुगुरु तेने पण सरखा गणे सआरंभि कुगुरु कुगतिना दातार तेने पण सरखा जाणे एटले तेने विषे जाणपणुं कशुं ए नहि एज मोटुं अज्ञान ए बीजो भेद मिथ्यात्वनो जाणवो२ त्रीजो अभिनीवेशि मिथ्यात्व तेने विषे जाणीने खोटी हठ करवी केमके कांइ प्रथम अज्ञानपणामां मृषा वचन नीकली गयुं पछी समज्यामां आव्युं के आपणे वचन बोल्या ते मिथ्या छे परंतु आपणे बोल्या ते कांइ पाछुं फरे नहि एम विचारीने वचन उपर अनेक युक्ति लगावीने तेने साचुं करे कोनी पेठे के जेम आ गच्छ समाचारियो वाला नोखी नोखी समाचारियो बांधीने बेठा छे अने शास्त्रमां प्र-

त्यक्ष अक्षर देखे छे ने मानता नथी, अने पोताना गच्छनी समाचारीनो ममत मुकता नथी अने मुखथकी एवुं कहे छे के एककानो मात्र उथापशे तो अनंत संसारी थशे ने काम पडे त्यारे एके माने नहि पोतानी मतलबमां आवे ते माने ने पोतपोताना घरडा आगल मरी गया होय तेने आडा धरे के ते थकी तमे कांइ विशेष जाणो छो एमणे करयुं हशे ते समजीनेज करयुं हशे तथा सिद्धांतने विषे आरंभ परिग्रह जेम ओछो थाय तेम धर्म कह्यो छे, पण आ काले तो जेम आरंभ परिग्रह वधारे तेम धर्म माने छे, वली मुखथकी एवुं कहे छे के कानो मात्र उथापवाथी जमाली प्रमुख सात नीन्हव थया एम कहीने देखाडे अने पोते आखां सूत्र उथापे, पोते मनमां न विचारे के आपणे मोहोटा नीन्हव छीये तथा परमात्माना मार्गने विषे तो समकीत १ ज्ञान २ चारित्र ३ ए वस्तुओ आत्मस्वरूपमां छे अने आत्मस्वरूपथी प्रगट थाय तोज तेनी मुक्ति थाय, शामाटे के केवल ज्ञान तथा मुक्ति ए सर्वे शुकल ध्यानमां छे तथा समकित प्रमुख ए सर्वे आत्मस्वभावमां छे एवुं सर्व सिद्धांतमां दिसे छे परंतु एवा पाठ कोइ सिद्धांतमां जोवामां आवता नथी जे फलाणा तिर्थे गया थकी मुक्ति थाय, तथा फलाणी फलाणी तिथीनो उपवास करवो तेथकी मुक्ति थाय, तथा ते तपनुं उजमणुं करवुं तथा गुरुनां नव अंग पूजवां, तथा पोथी पूजवी तथा वास नखाववो, तथा जोग उपधान वहेवां, तथा तेनी विधी कराववी, तेना रुपैया गुरुने देवा, इत्यादिक हालमां ए व्यवहार घणो दिसे छे. ने सूत्रमां पाठ नथी तेनी प्ररुपणा करवी ने जे सूत्रने विषे आत्म स्वरूपथीज मुक्ति कही ते न प्ररुपे तेने अभिनिवेशी मिथ्यात्व कहिये, केमके ते जाणीने सिद्धांतनी रीते प्ररुपता नथी पोतानी मतलबनुं प्ररूपे छे, तेने अभिनिवेशी मिथ्यात्व

कहिये ३ चोथुं संशयिक मिथ्यात्व कहेतां जे केवली परमात्माना वचनने विषे शंका उत्पन्न थाय, जेम ओछी बुद्धिना धणी जे बालजीव छे तेणे प्रथम अज्ञानी तथा कुगुरुना वचनथी सांभलेली वातो तथा शास्त्र पछी सुगुरु तेने बतावे छे के भाइओ ए तो आश्रवनां तथा आरंभनां काम तमे करोछो ते थकी तमारे संसार वधशे, माटे तमे संवर निर्जरानुं काम करो अने उपाधि छे ते टालो, जेम तमारा आत्मानुं कारज सिद्ध थाय. ते वारे तेना मनमां शंका पडेके आ वचन साचुं के पूर्वे सांभल्युं ते वचन साचुं एम शंका रहे पण शास्त्र जोइने निश्चय न करे तेने संशयिक मिथ्यात्व कहिये ४

पांचमुं अणाभोग मिथ्यात्व केहेतां अजाणपणुं जेने धर्म कर्मनी कशी ओलखाण नथी संसारमां रच्यो पच्यो रेहेछे आत्म स्वरूप जाण्युं न होय त्यांहां सुधी अजाण कहीये शा माटे के सिद्धांतमां कह्युं छे के

अभे गया जिवाजीवा

इत्यादिक पाठ छे माटे जीव अजीवनो आदे देइने स्वरूप जाणे पछी जीव स्वरूप सद्दहे. अजीव सत्ताने दूर करे इत्यादिक आत्म स्वरूपनुं जाणपणुं छे तेने जाण कहिये ए विनाना बीजा जे रह्या तेने अणाभोग मिथ्यात्व कहिये ५ ए मिथ्यात्वनो अधिकार कह्यो ते चोथाकर्मग्रंथथकी जाणजो. ए मिथ्यात्व ज्यां सुधी गयुं नथी त्यां सुधी कोइ जीव समकित पामे नहि. ए मिथ्यात्वना कारणथी अनंतां नवां कर्म उपार्जे अने आत्माने भारे करे एथकी आत्मा अनंताकाल संसारमां परिभ्रमण करे एटले आश्रवनो प्रथम हेतु कह्यो. मूल १ उत्तर ५ हवे बीजो हेतु अव्रत छे तेना १२ भेद तेनी विगत. पृथ्वीकाय

१ अप्काय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय, ६ फरसेंद्रि ७ रसेंद्रि ८ घ्राणेंद्रि ९ चक्षु इंद्रि १० श्रोतेंद्रि ११ मन १२ ए वारने जेणे संवरयां नथी ने नियम करयो नथी ते धणीने ए वारे कारण थकी अनंता कर्मनुं आववुं थाय छे, केमके जेम घरने विषे चार छींडां छे ते छींडां पुरे नहि त्यां सुधी चोर चखार सर्वे आवे अने ते घरमां कांइ माल जणस रहे नांहि, तेम इहां आत्मारूपी जे घर तेने ज्ञान दर्शनरूपी धनने चार अव्रतरुपी छिंडां, ते मध्ये राग द्वेष रूपि चोरनुं आववुं थाय. ज्ञानदर्शनरुपि धन छे ते चोरी जाय. पण ए चार छिंडां छे ते पूरे तो सुखे रहेवाय ए आश्रवनो बीजो हेतु कह्यो. मूळ २ उत्तर १७ हवे त्रीजो हेतु कषाय १ बीजो नोकषाय २, हवे ते कषायना चार भेद छे क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ते एक एकना चार चार भेद छे, ते मध्ये पहेलो अनंतानुं बंधियो क्रोध केवो छे के जेम पथ्थरनी सल्ला फाटी पडी ते फरीथी भेगी न थाय तेम अनंतानुबंधिया क्रोध वालोजीव आवखापर्यंत क्रोधे धमधम्यो रहे १, तथा अनंतानुबंधियोमान केवो छे के जेवो पथ्थरथंभ अनेक उपाय करिये तो पण नमे नहि, कडका कडका थाय पण ते नमे नहि तेम अनंतानुबंधियामान वालाजीव, राज, पाट, देश, धन, सर्वखूटे अनेक लोक समजावे पण कोइने नम्युं पासुं आपे नहि २, अनंतानुबंधिमाया केवी छे के जेवां वांसनां मूराडां छिन्न छिन्न थइ जाय पण पांशरा थाय नहि, तेम अनंतानुबंधिमायावाला जीवजीवे त्यां सुधी कपटतजे नहि ३, तथा अनंतानु बंधिलोभ केवो छ के जेवुं करमजनारंगनुं लुगडुं बालीने राख करीये तो पण लाल रहे पण रंग छोडे नहि, तेम अनंतानु बंधि लोभ वाळो जीव जीवित पर्यंत लोभ न तजे ४ तथा बीजी चोकडी अप्रत्याखानीया कषायनी कहीये छीये.

अप्रत्याख्यानी क्रोध केवो छे के कोइ काळी भूमीकाने विषे फाट पडे छे ते बार महिने वरसाद पाणी नवां थाय ने घणां ढोर ढांखर उपर फरे तेथी गुंदाइने एक थाय तेम ए क्रोधवाला जीवने बार महिने क्रोध उतरे. १ तथा अप्रत्याख्यानी मान केवो छे के जेवो अस्थिनो थंभ घणी मेहेनते घणे कष्टे करीने कोईक वालवासमर्थ थाय तेम ए मानवालाने कोइक घणी तरेहथी समजावतां मान छोडे. २ अप्रत्याख्यानी माया केवी छे के जेवां घेटानां शींगडां पांशरां करवां ते कोई पुरुष कलावालो होय ने घणीक तरेहथी मेहेनत करे त्यारे पांसरां थाय तेम ए मायावालाने कोइ बहू रीतथी समजावे तो माया तजे. ३ अप्रत्याख्यानी लोभ केवो छेके अज्ञानी लोकना खाळ कुवा छे ते मध्ये घरनी अशुची अपवित्र एठवाड प्रमुख मांहे जाय छे ते सदाय कोही गएलुं रहे छे तेनो डाघ जे वस्त्रने लागे तो ते धोवीथी पण जाय नहीं कोइ खरो कसवी मले तो ए डाघने काहाडे तेम ते लोभवालाने कोइ खरी मेहेनत करीने तेने समजावे तो ते लोभ छोडे ते विना कांइ छोडे नहि. ४ हवे त्रीजी चोकडी प्रत्याख्यानी कषाय ते मध्ये प्रत्याख्याननो क्रोध केवो छे ? के जेवी वेलुने विषे वे भाग करीये ते कंइ एनी मेले भेगा थाय नहि. परंतु बे ऋतु गए थके त्रीजी ऋतु आवे त्यारे. ते वारे सामो पवन आवे ते रेत उडीने खाड पुरे ते वारे ते रेती एकमेक थाय, तेम ए क्रोधवाला पुरुषने कोइ समजावे तो मुकी दे यावत् चार मास उपर रहे नहि १ तथा प्रत्याख्यानी मान केवो छे के जेवो लाकडानो थंभ कोइ पुरुष तेल तापथी मेहेनत करे तो थोडी मेहेनतथी वले तेम ते मानवाला जीवने कोइ सारी रीते समजावीने कहे तो मान मूकीदे अथवा केटलेक दाहाडे स्वभावे पण मुकीदे. २ तथा प्रत्याख्यानी माया केवी छे, के जेवी गौमूत्रीका जेम वांकी

वांकी मुतरती चाले तेने कोइ पुरुष झालीने उभी राखे तो वांकाइ न रहे, तेम ते मायावाला जीवने केटलीक तरेहथी समजावीने कहेतो ते पुरुष कपट छोडीदे. ३ तथा प्रत्याख्यानी लोभ केवो छे? जेवुं गाडीनुं उंजण तेनो डाघ जो वस्त्रने लाग्यो होय तो धोवीने त्यांहां गये थके डाघ जाय तेम ते लोभवाला जीवने कांइ थोडी मेहेनत करीने समजावे तो लोभ तजे. ४ तथा चोथी चोकडी संज्वलनी कहीये छीये ते मध्ये प्रथम संज्वलनो क्रोध केवो होय? जेम पाणीमां आगळ लीटा ताणता जइये ने पाछल लीटी मलती जाय तेम ए संज्वलन वाला क्रोधना जीवने क्रोधनो धमधमाट थाय पण तुरत ते क्रोध उतरी जाय तेनो पंदर दाहाडानो नियम छे, ए नियम चार कषायना प्राये समजवा १ तथा संज्वलननो मान केवो होय जेवो नेतरनो थंभ जेम वालीये तेम वळे तेम ते मानी पुरुष ते मान आवेने तुरत वळी जाय. २ संज्वलनी माया केवी छे के जेम वेला उगे छे ते वांका वांका चाले छे परंतु एक छेडो झालीने ताणीये एटले पांशरो तीर थाय तेम ते मायावाला जीव मनमां कपट करे पण क्षण एकमां काहाडी नांखे. ३ संज्वलनो लोभ केवो छे के जेवो हलदीनो रंग तडको लागे ने उडी जाय तेम ते लोभवाला जीवने लोभनो उदय थाय परंतु क्षण एकमां वली जाय. ४ एटले ए कषाय चारे चोकडीना सोल भेद सहित कहीने देखाडया हवे नोकषायनुं स्वरूप कहीय छीए, एनोकषायना नव भेद छे,

शिष्य—स्वामि नोकषाय एवो शब्द शाथकी मुकवो पडयो

गुरु—हे भद्र एने विषे कषायपणुं नथी परंतु ए थकी कषाय उत्पन्न थाय माटे एने कषाय तो ना कहेवाय तेथी नोकषाय कह्या परंतु ए कषाय नहि पण कषायना भाइ छे. हवे प्रथम हास्य, ए

नामे नोकषाय छे. एटले हांशी एवुं तो विनोदनुं नाम. छे प-रंतु हांशी थकी विखवाद थाय, एम सर्वे भेदमां समजी जवुं १ रति कहेतां शाता मानवी ते थकी पण सामाने अथवा पोताने द्वे-षादि कारण उत्पन्न थाय. २ अरति एटले अशाता ते थकी प्रत्यक्ष द्वेषभाव दीसे छे ३ भय एटले भय थकी पण द्वेषादि कारण उत्पन्न थाय छे ४ सोग ते थकी पण द्वेष उत्पन्न थाय ५ दुगंछा ते थकी पण द्वेष थाय ६ पुरुष वेद ए तो महा विखवादनुं कारण दीसे छे ७ स्त्रीवेद ८ तथा नपुंशक वेद ९ ए त्रण वेदना उदय थकी प्रत्यक्ष कंकास भासन थाय छे एटले नव नोकषाय कह्या, एटले कषाय तथा नोकषाय मलीने २५ भेद थया ए कषा-यना कारण थकी अनंतां कर्म आवे छे जाय छे एटले कषाय कह्यो मूल ३ उत्तर ४२. हवे जोगनुं स्वरूप कहिये छिये तेना त्रण भेद छे मनजोग १ वचनजोग २ कायजोग ३ ते मध्ये मनजोगना चार भेद सत्य मनजोग १ सत्यासत्य मनजोग २ असत्य मनजोग ३ असत्यासत्य मनजोग ४ तथा वचनना पण चार भेद सत्य वचन जोग १ सत्यासत्यवचन जोग २ असत्यवचन जोग ३ असत्यासत्य वचनजोग ४ तथा कायजोगना सातभेद. उदारिक कायजोग १ उदारिक मिश्रकायजोग २ वैक्रियकायजोग ३ वैक्रियमिश्रकायजोग ४ आहारक कायजोग ५ आहारकमिश्रकायजोग ६ तेजसकार्मण कायजोग ७ एटले ए जोगना पंदरभेद कह्या ए जोगथकी पण अनंतां कर्म आवे छे एटले मुल हेतु ४ अने उत्तर हेतु ५७. ए नवां कर्म आववानां कारण कह्यां. एटले हेतु कहेतां ए कर्म आववाना वालेशरी दलाल छे ए मांहेलो एक होय त्यां सुधी कर्म आवे जे ए चारनो नाश करे तेनी पासे कर्म ना आवे. कोनी पेठे के एक सरो-वर छे ते सरोवरनी चारे दिशाथकी पाणी आवे छे तेमां पूर्वनी

इत्यादिक परवस्तु ते आत्माने अग्राह्य छे, पर छे, ते लेवानी वांछा करे ते निश्चयनय अदत्तादान कहीए. तथा कोइक कहेशे जे विषयनी अने कर्मनी वांछा करे छे ते वांछा कोण करे छे ? तेनो उत्तर जे पून्यनेभेलु लेवा जोग्य कहे छे, ते जीव कर्मनी वांछा करे छे, ते पुन्यना बेतालीस भेद छे ते चार कर्मनी शुभ प्रकृति छे एटले जे व्यवहार अदत्तादान नहि लेवो पण अंतरंग पुन्यादिकनी वांछा छे तेने निश्चय अदत्तादान लागे छे. हवे मैथुन विरमण व्रत कहे छे, तिहां जे कोइ पुरुष पर स्त्रीनो परिहार करे ते मैथुन विरमण व्यवहार कह्यो तथा स्त्री पुरुपनो परिहार करे, ते मैथुन विरमण व्यवहार कहीये इहां साधुने स्त्रीनो सर्वथा त्याग छे, अने गृहस्थने हाथ परणि स्त्री मोकळी छे अने परस्त्री नां पच्चखाण छे, ते व्यवहार. हवे निश्चय कहे छे जे विषया भिलापनो त्याग अने ममता तृष्णा ए परभाव अने वरणादिक परद्रव्य स्वामित्वादिक तेनुं अभोगिपणुं आत्माना स्वगुण ज्ञानादिकनो भोगी ते पुद्गलखंध अनंताजीवनी एंठ ते ॥ मने भोगववी घटे नही, ए रीते त्याग ते निश्चय मैथुन विरमण कहीये. जेणे बाह्य विषय छोडयो छे, अने अंतरंग लालच नहिं छूटि तो तेने मैथुननां कर्म लागे, हवे परिग्रह परिमाण व्रत कहे छे. परिग्रह धन, धान्य, दास, दासि, चौपद, घर धराति, वस्त्र आभर्णनो त्याग ते परिग्रह त्यागव्रत व्यवहारथी जाणवो ए साधुने सर्व परीग्रहनो त्याग छे, श्रावकने इच्छा परिमाण छे, जेटली इच्छा होय तेटलो मोकलो राखे, बीजानी विरति करे, ए व्यवहार पांचमो व्रत कह्यो. निश्चय भावकर्म रागद्वेष अज्ञान द्रव्य कर्म ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्म शरीर इंद्रिनो परिहार एटले कर्मने पर जाणी छोडवां ते निश्चय परिग्रहनो त्याग एटले परवस्तुनी

मूर्छा छोडवी, तेणे परिग्रह छांडयो छे, एटले परिग्रह त्यागव्रत कह्यो, ए पांच व्रत कह्यां, छट्ठुं दिशि परिमाण व्रत कहे छे, च्यार दिशि अने उर्ध्व तथा अधो ॥ ए छ दिशाना क्षेत्रनुं मान करी मोकळुं राखे, ते व्यवहार दिशिपरिमाण व्रत कहीये, अने गति च्यार कर्म गुण जाणी तेथी उदाशपणुं अने सिद्धावस्था शुं उपादेयपणुं ते निश्चयादिशि परिमाण कहीए. हवे भोगोपभोग परिमाण व्रत कहे छे. ते भोग कहेतां एकवार भोगविये अने उपभोग जे वारंवार भोगविये तेनुं परिमाण करे ते व्यवहार भोगोपभोग व्रत कहीये, अने निश्चय भोगोपभोग व्रत तो जे व्यवहारनये कर्मनो कर्त्ता ने भोक्ता ते जीव छे, निश्चयनये कर्मनो कर्त्ता कर्म छे ए आत्मा अनादिनो परभावभोगी थयो त्यारे परभाव ग्राहक थयो परभाव रक्षक थयो, एटले आत्माना ज्ञेयकता ॥ १ ॥ ग्राहकता ॥ २ ॥ भोग्यता ॥ ३ ॥ रक्षकता ॥ ४ ॥ बीगडे कर्त्तापणो बीगडयो तेथी परभाव कर्त्ता थयो, तेणे करी परभावरंगीपणे आठ कर्मनो कर्त्ता थयो छे पण सत्ताये तो स्वभावनो कर्त्ता छे, पण उपगरण अवराणाथी स्वकार्य करी शकतो नथी विभावने करे छे, ने अज्ञानपणे जीवनो उपयोग भल्यो छे पण न्यारो छे, अने जीव तो आपणा ज्ञानादि गुणनो कर्त्ता भोक्ता छे एवा परिणाम ते स्वरूपानुंयाइरूप, ते निश्चय भोगोपभोग व्रत जाणवो ॥ हवे अनर्थ दंड विरमण व्रत कहे छे. अनर्थ कामे जीवने पाप आरंभे लगाववो ते अनर्थ दंड. त्यांहां जे पारके वास्ते आज्ञा प्रमुख देवी ते व्यवहार अनर्थ दंड, अने जे शुभ अशुभ कर्म मिथ्यात्व अविराति कषायजोग शुं कर्म बंधाय छे ते जीव आपणा करी जाणे ए निश्चय अनर्थ दंड जाणवो. हवे समायक कहे छे. जे मनवचन कायाना आरंभथी टाले, निरारंभपणे वर्तावे, ते व्यवहार समायक जाणवो; अने जे जीव ज्ञान दर्शन चारित्र

गुण विचारे ते सर्व जीव सत्वगुणे एक समान जाणी सर्व समता परिणाम ते निश्चय समतारूप समायक कहीए. हवे देशावगासिक व्रत कहे छे. जे मन वचन कायाना जोग एकठा करी एक स्थानके वेसी धर्मध्यान करवो ते व्यवहार देसावगासिक कहीए अने श्रुतज्ञानशुं छ द्रव्य ओलखीने पांच द्रव्य त्याग करे, अने ज्ञानवंत जीवने ध्यावे, तेहमां रमे, परभावमां वसे नहि ते निश्चय देशावगाशिक जाणवो. हवे पोसह कहे छे. जे च्यार पहोर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामे निरारंभ सावद्य छोडी सज्झाय, ध्यानमां प्रवर्त्ते, ते व्यवहारपोसह कहीए अने आपणा जीवने ज्ञान ध्यान शुं पोषीने पुष्ट करे ते निश्चयपोसह कहीये, जीवने आपणे स्वगुणे करी पोषीये ते पोषह कहीये, हवे अतिथिसंविभागव्रत कहे छे. जे पोसहने पारणे अथवा सदा साधुने जिन धर्मि श्रावके पोतानी भक्ति सारु दान देवो ते व्यवहार अतिथि संविभाग कहीए, अने जीवने अथवा शिष्यने ज्ञान भणवो भणाववो संभळाववो सांभळवो ते निश्चय अतिथि संविभाग कहीए, ए वार व्रत कह्यां:—हवे एवा जे वार व्रतधारी श्रावक छे, ते करणि शी करे ? ते देखाडे छे, श्रावक पाछली चार घडी रात लेइ उठे, त्रण मनोरथने विचारे तेनां नाम. हुं आश्रव थकी के दहाडे मूकाइश ॥ १ ॥ सर्व विरति चारित्र के दहाडे अंगीकार करीश ॥ २ ॥ समाधि संथारो के दिन आवशे ॥ ३ ॥ एवा त्रण मनोरथ श्रावक विचारे, एनो विस्तार मनोरथ भावना थकी जाणवो. तेवार पछि श्रावक प्रतिक्रमण करे तेवार पछी उठीने श्री जीन मंदिरे दरशन करवाने जाय, ते पूर्वे कह्युं छे. तेमज पंच अभिगमन तथा दसत्रिक साचवतो थको दर्शन करे जो कदापि छती जोगवईये प्रमादने वशे दर्शन करवा न जाय तो एक छठनी आलोयण आवे तथा मनमां

शंका राखीने न जाय तो पांच उपवासनी आलोयण आवे एवुं पंच महा कल्प भाष्य मध्ये कह्युं छे ते माटे जिनराजनां दर्शन अवश्यमेव करवां, दर्शन कर्या पछी गुरुने वांदे, वांदीने नमस्कार करे पछी धर्मदेशना सांभळे, पछी सांभळीने जिनमंदिरे जीनपूजा करवा जाय ते पूजानी विधि श्राद्ध विधिथकी जाणजो, त्यांहां सांजना प्रतिक्रमण करे, इत्यादिक श्रावकनी विधि श्राद्ध दिनकर थकी जोज्यो, तथा श्रावक होय ते पर्व तिथिये पोसा समायक तप इत्यादिक करे, तथा श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे ते सात क्षेत्रनां नाम कहे छे. साधु ॥ १ ॥ साधवि ॥ २ ॥ श्रावक ॥ ३ ॥ श्राविका ॥ ४ ॥ देहरुं ॥ ५ ॥ जिन पडिमा ॥ ६ ॥ ज्ञान ॥ ७ ॥ ए सात क्षेत्रनो अर्थ संक्षेप थकी देखाडे छे. हवे साधु साधवि ए बेनी एक रीत छे, माटे भेगो कहे छे, साधुने श्रावक होय ते सात पिंड आपे अशनके० ॥ आहार ॥ २ ॥ पाणके० ॥ पाणी ॥ २ ॥ खादिमके० ॥ मेवा प्रमुख ॥ ३ ॥ स्वादिम के० ॥ मुखवास ॥ ४ ॥ लेनके० ॥ वस्ति ॥ ५ ॥ सेनके० ॥ सज्या पाट पाटला प्रमुख ॥ ६ ॥ वथके० ॥ वस्त्र पात्र प्रमुख ॥ ७ ॥ ए सात पिंड साधु साधविने देवा निमित्त धन वावरे तथा श्रावक श्राविका ए बे क्षेत्रना काजे पण धन वावरे, शी रीते ते कहे छे. जे श्रावक होय ते संघ काढे, स्वामि वत्सल करे तथा स्वामिभाइनी भक्ति बहुमान करे. त्यारे वादि बोल्यो जे संघ काढ्या थकी शुं धर्म छे ? ए तो हिंसानां काम छे, एनो उत्तर जे तें कीधुं संघ काढे शुं थाय ते संघ काढ्याथकी अनंता कर्मनी निकाचितगांठि तोडे, शा माटे जे तीर्थे जइने वांदवानां मोटां फल कीधां छे, केमके श्री भगवतिजीमां तीर्थंकरनी वंदणा आधिकारे त्यांहां जइने वांदवानो महा लाभ कीधो छे ॥ ते वारे वादि बोल्यो जे एतो

शास्वता तीर्थंकर हता, आतो प्रतिमा छे तेनुं केम ? एनो उत्तर जे प्रतिमाने जीनपडीमा कहीने बोलावी छे ॥ ते वारे तमे केहे· शो जे एतो जिनपडिमा कही छे पण जिनवर तो कह्या नथी, ए मां ने एमां तो फरक घणो. तेनो उत्तर जे जगाए धूपनो अधिकार चाल्यो ते जगाए एवो पाठ छे.

॥ दाहंधुवंजिनवराणं ॥

एवो पाठ ज्ञाता प्रमुख ६णा सूत्रमां छे एटले इहां जिनपडिमाने जिनवर कहीने बोलाव्या, एटले ए पाठ जो- तां जिनवरमां ने जिनपडिमामां फरक कांइ दिसतो नथी माटे तिर्थे जइने वांदवानुं घणुं फल छे, तथा तमे कह्युं जे हिंसाना काम छे ॥ तेनो उत्तर ॥ जे गाडां गडेरां इ- त्यादिक जोडवां ॥ जोडाववां ॥ ते कारण थकी तमे हिंसा गणो छो, ते एम छे नहिं ॥ शामाटे जे श्री दसाश्रुत स्कंधमां श्रेणीक राजा भगवानने वांदवा गया ते समे बेसवाने वास्ते रथ मंगाव्यो छे ॥ ते रथने धर्म रथ कहीने बोलाव्यो, हवे ते रथ ज्यां चाले त्यां हिंसाज थाय, केम जे त्यां कह्युं छे के बलधने आर घोचता दोडावता थका गया ते जगाए हिंशा केम न थाए पण इहां तो धर्म रथ कह्यो छे ॥ तथा गाम मध्येथी उकरडा क- ढाव्या, पाणी छंटाव्यां, तथा चउरंगी शेना सजीने गया ते लेखे तो महा आरंभनुं काम दीसे छे पण भगवंते तो कांइ पाप कह्युं छे नहि, भगवंते तो एनुं फल मोक्षनुं कह्यं छे, ते माटे धर्म काम ने अर्थे नीकल्या, ते कामने विषे जेटलुं काम थाय तेटलुं धर्म खातामां गणाय, एम जो न गणाए तो साधुनो विहार गोचरी अटकी जाय, ते माटे डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, तथा तीर्थे जइने वांदवुं तेनुं कारण केर छे, जे ठेकाणे तीर्थंकरादि मोक्षे पो

हता तेज आपणे पूजनिक छे, शा माटे जे श्री भगवतीजीमां उदायन राजाने अधिकारे कह्युं छे ॥ धन ते नगरी ॥ धन ते गाम आगल इत्यादिकने धन कही बोलाव्या छे शा माटे जे श्रीभगवान विचरता होय ते माटे ॥ एटले ज्यां तीर्थंकर विचरता होय ते नगरीयादिकने पण धन केहेवाणुं तो ते नगरीने विषे तो कोइ जीव सुल्लभबोधि हशे, कोइ दूल्लभबोधि हशे, अथवा पापि पण कोइक हशे, कोइक धर्मि हशे, अथवा गामनी मांहेली कोर कोइ शुध अशुध वस्तु पण हशे, ते पण सर्वेने धन कह्युं तो जे जगाए तिर्थंकरनुं निर्वाण कल्याणक थयुं ते जगाए फरसना कल्याणक केम न थाय ? वंदण नमन करे तो कर्म निर्जरे, डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, माटे संघ तीर्थ जात्रा निमित्त श्रावकने धन वावरवुं. तेनो विशेष अर्थ सेत्रुंजामाहात्म्य थकी जाणजो तथा स्वामिवत्सल निमित्ते धन वावरे ॥ एटले स्वामिके० ॥ सरखा धर्मनाओने जमनुं जमाडवुं करे ॥ शामाटे जे श्री भगवतिजीमां संखजी पुष्कलीजीने अधिकारे पण स्वामिवत्सलनो अधिकार दीशे छे, तथा स्वामिभाईनी भक्ति बहूमान करवुं, एनो पण पाठ श्री भगवतीजीमां सनतकुमार इंद्रने अधिकारे जोज्यो, अग्यारमा तथा बारमा शतकमां श्रावक श्रावकने वंदण नमस्कार करे ॥ एवो पाठ छे ॥ ते माटे श्रावक होय ते श्रावक श्राविकाना विषे वावरे. हवे वली श्रावक पांचमा क्षेत्रे देहरुं करावे, तथा छट्ठे क्षेत्रे जिन पडिमानुं भरावबुं ॥ तथा देहरानुं रंगाववुं ॥ तथा आंगी रचाववी ॥ तथा अट्ठाइ महोत्सव करावे ते बारे वादि बोल्यो ॥ जे देहरुं करावे प्रतिमा भरावे शुं थाय ॥ तेनो उत्तर ॥ जे देहरुं कराववुं ॥ प्रतिमा भराववी ॥ ए काम श्रावकने श्रेय दीशे छे शामाटे जे देहरुं ॥ तथा जिन प्रतिमा आज पांचमा आरामां आ-

धारभूत छे केमके केवलीनो तो आज विरहकाल छे. शुद्ध आलंबन तो आज ए छे, तथा श्री अनुयोग द्वारमां पण कह्युं छे जे भावनिक्षेपो, नाम थापना द्रव्य विना थाय नहिं तथा च्यार निक्षेपामां एके निक्षेपो उथापे ॥ तेने मिथ्यात्वी कहीए. ॥ ते वास्ते थापनानिक्षेपो अवश्य मानवो ॥

॥ यदूक्तं ॥

नाम जिणाजिणणामा ॥ ठवण जणा जिणंद पडिमाओ ॥ दव जिणाजिण जिवा ॥ भाव जिणा समवास रणाथ्था ॥ १ ॥

ए गाथामां पण थापनानिक्षेपामां तो जिनपडिमाज कही छे ॥ अथवा अनुजोग द्वार मध्ये आवश्यकने अधिकारे दश प्रकारनी थापना कही छे, ते तो सद्बोध अने असद्बोध कही छे, तथा ए तो गुरुनी थापना छे, आ तो तीर्थंकरनी थापना, अने वली सद्बोध छे तो एने करावतां नफो केम न होय? डाह्या होय ए विचारी जोज्यो; तथा देहरानो करावनारो तथा प्रतिमानो भरावनारो बारमे देवलोके उपजे. एवुं श्री महानिशिथजीमां कह्युं छे, ते माटे श्रावक होय ते देहरां करावे, प्रतिमा भरावे, आंगी रचावे, अट्ठाइ महोत्सवादिक करे ॥ एवा मारगे धन वावरे. हवे सातमुं क्षेत्र जे ज्ञान ते मारगे पण धन वावरे, एटले ज्ञान लखावे, तथा ज्ञान भणतो होय, तेने साहाय आपे, तथा ज्ञानीनां बहुमान करावे शा माटे जे श्रुत ज्ञान छे ते मोटुं छे, यद्यपि केवल ज्ञान मोटुं छे, पण स्वअनुयायी छे अने श्रुतज्ञान छे ते स्वपर प्रकाशे दिसे छे माटे ज्ञानीना बहु मान करवां, केम जे श्री नंदि

सूत्रमां ज्ञानिने सूर्यनी, चंद्रमानी, कल्प वृक्षनी, स्वयंभूरमण समुद्रनी इत्यादिक घणी उपमाओ आपी छे ॥ माटे ज्ञानीनुं बहूमान विशेषे करवुं, ज्ञान भणतो होय तेनी पण साहाय करवी ॥ शा माटे जे ज्ञानना भणनारा पासे पइसो होय नहिं, अने व्याकरणादिक भणवाने पइसो पण जोइये, पुस्तक पानुं पण जोइये, माटे ए वातनी साहाय गृहस्थ आपे त्यारे भणाय, त्यां वादिए तर्क करी जे साधु तो साहाय वंछे नहिं, अने तमे कहोछो के साहाय आपे तो साधु भणे तेनुं केम ? तेनो उत्तर दे छे. जे साधु होय ते साहाय न वंछे पण ते दहाडे तो सूत्र पाठ उपाध्यायजी भणावता अने अर्थ आचार्य आपता, अने मारुं तारुं हतुं नहिं ॥ जे जतुं तेने भणावता ॥ आज तेमांना आचार्य उपाध्याय किया तमारी सरते आवे छे जे तेनी पासे जइने भणे ? अथवा ज्ञान आश्री साहाय वंछे तो दूषण जणातुं नथी, शा माटे जे पोताने शरीरे सुख वंछतो नथी, ए तो आत्म हेते ज्ञान भणे, अने ज्ञान काजे साहाय वंछेछे, तथा श्री पंच महाकल्प भाष्य मध्ये पण कह्युं छे, जे ज्ञाननो साधु अभ्यास करतो होय ते ठामने विषे कदापि आहारने विषे आधा कर्मादि दोष लागतो होय तो ज्ञान अभ्यास करवाने साधु रहे के न रहे ? त्यां कह्युं छे जे ज्ञाननो अभ्यास करतां कदापि आधा कर्मादि दोष लागे तेनो विचार करे नहि, पण ज्ञाननो अभ्यास करवो. शा माटे जे ज्ञान न होय तो दोष अदोष कोण जाणे, मांटे ज्ञान मोटो पदार्थ छे, ते माटे ज्ञानने वास्ते साहाय वंछतां दूषण जणातुं नथी, तथा जो शरीरादिकने अर्थे साहाय वंछे तो दूषण लागे, जोयामां तो एवुं आवे छे, पछी केवली गम्य तथा जे गृहस्थ श्रावक होय, ते सूत्र सिद्धांतादिक लखी राखे, शा माटे जे साधु साधवि आव्या गया ने वांचवा भणवाने खप लागे, तथा

गाममां पण बीजा श्रावकोने भणवा गणवा खप लागे,-ए सातमुं-क्षेत्र. एम श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे. वलि एने अनुसारे बीजा पण उचित स्थानक जोडने वावरे. एम श्रावकनुं स्वरूप कह्युं. ते श्रावक त्रण प्रकारना छे ॥ जघन्य ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ उत्कृष्ट ॥ ३ ॥ ते जघन्य श्रावक केने कहीएके प्रभाते नोकारसि, रात्रे दूविहार, अने दावीस अभक्ष्यनो त्याग करे तेने.जघन्य श्रावक कहीए ॥ १ ॥ अने बार व्रत श्रावकनां अंगीकार कर्यां होय तेने मध्यम श्रावक कहीए ॥ २ ॥ अने बारव्रत उचर्यां होय अने अग्यार पडिमा वही होय तेने उत्कृष्टो श्रावक कहीए ॥ ३ ॥ एवी रीते श्रावकनो धर्म तथा साधुनो सर्वविरति पंचमहाव्रत धर्म एवुं श्री वीतराग परमात्माए प्ररूप्यो जे धर्म तेने धर्म करी सद्दहे, तेने धर्म तत्व सद्दह्यो कहीए. एटले धर्मतत्व के० ॥ साधु श्रावकनुं जे धर्म तथा खट द्रव्य नव तत्व नयानिक्षेपा पक्ष प्रमाण स्याद्वाद खटकारकादिक सर्व सद्दहजो. हे भव्य जीवो! समजमां आवे तो समजवुं, कदापि समझमां न आवे तो एम धारवुं जे मारी बुद्धि ओछी छे अने केवलीनुं ज्ञान अनंतुं छे तेथी मारी समजमां आवतुं नथी, पण जे आगममां भाव प्ररूप्या ते सर्व सत्य छे एवो विचार राखवो पण पोतानी मति. कल्पनाथी कशो नवो . मार्ग थापशोमां. एवी रीते हे भव्य जीवो धर्म तत्वने सद्दहजो ॥ इति धर्म तत्व तृतीयः ॥

इति श्री सम्यक्तद्वार ग्रंथों मुनी श्री हूकमचंदजी विरचीते षष्ठमो अध्याय पूर्ण ॥ ६ ॥

ए छठा अधिकारने विषे धर्म तत्व ओलखाव्यो, हवे सातमे अधिकारे ए तत्वनी सद्दहणानुं फल देखाडे छे. हे भव्य जीवो आर्य क्षेत्र, मनुष्य भव, देवगुरुनी जोगवाइ ते पामवी घणी दु-

लॅभ छे अनंता पून्यनी राशीना थोकडा वध्या त्यारे तमे पाम्या छो, पामीने जो प्रमाद करशो तो फरीने च्यार गति संसारने विषे परिभ्रमण करशो फरीथी आ जोगवाइ मलवी घणी दूर्लभ छे तुं जे आ संसाररूप मोह जालमां गुंथाणो छुं अने पूत्र कलत्र धन धान्यादिक माहरुं माहरुं करे छे ते तारी भूल छे ते कोइ तारुं छे नहि, केम जे मोहजालने विषे गुंथायाथकी नर्क तिर्यंचनां दुःख भोगववां पडे, ते नर्कनुं स्वरूप लेश मात्र कहे छे. ते नर्कना क्षेत्रनो फरस केवो छे ते कहे छे. जेवी तरवारनी धार, जेवी बरछीनी अणी, जेवी कटारीनी धार, जेवी भालोडनी अणी, जेवी अस्त्रानी धार, जेवो नगरनो दाह, जेवो गामनो दाह, एवो तो उष्ण फरस छे, वली जीहां गोखरुं घणां तिखी अणीनां पथरायेलां पड्यां छे, तथा डाभ तीखी अणीना उगेलानुं वन छे, वली ज्यांहां वैतरणी नामा नदियो छे, ज्यांहां असिपत्र वृक्षनां वन छे ज्यांहां घणा कुंभीपाक छे, ते कुंभीपाकनो खरखरो फरस पूर्वे कह्यो तेवोज छे, वली जेवी पोष माघनी महा हिमाजल टाढ, जेम हिमाला क्षेत्रनी टाढ ज्यांहां माणसनां माणस शिजी जाय छे तो ढोरनुं ने झाडनुं शुं कहेवुं एवा क्षेत्र फरसनादिकथी ते टाढ अनंतगुणी वधती छे, ए कुंभीपाक उपरथी चोखूणी छे अने मांहे थकी कुंडाना आकारे छे, ते कुंभीपाकने विषे नारकी आवी उपजे, ते प्रथम समये नारकीनी आंगलने असंख्यातमे भागे अवगाहना होय, पछी एक अंतरमूहूर्त्तमां जेटली नारकीना शरीरनी अवगाहना होय एटली वांधे, ते वारे कुंभीपाक पेटेथकी पहोली, अद्धो उर्द्ध संकिर्ण एनो फरस महा तिखो ने वली टाढो तेथकी थइ जे वेदना तेथी महा रीव पोकारे अने मुखथी कहे जे मुने इहांथकी काढो काढो, ते वारे नर्क क्षेत्रने विषे रह्या जे परमाधामि ते पनर जातना

छे तेना नाम कहे छे. अंब ॥ १ ॥ अंबरिख ॥ २ ॥ श्याम ॥३॥ संबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ महारुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥ धनुष्य ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालुक ॥ १२ ॥ वैत्रणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥ एवा जे पंनर जातना परमाधामि ते त्यां पासे होय ते दोडीने आवे ते आवीने नारकीने कहे जे मांहेलिकोर तो हजी तने सुख छे अने बाहेर तो महा दुःख छे, अने कुंभीपाकनुं मोढुं सांकडुं छे माटे तने तोडी तोडीने काढवो पडशे, त्यारे तुं ना पाडीश तो पण अमे तने छोडीशुं नहि, वास्ते तुं पेहेलांज मांहि रहे पण ते नारकी महा दुःखे पीडयो थको दिनवचने कहीने बोले जे हुं महा दुःखीछुं महाराथी नरकनुं दुःख भोगवातुं नथी, माटे मने कांइ करतां इहां थकी काढो. हुं ना नहि पाडुं, ते वारे परमाधामि साणशिथी तोडि तोडिने काढे त्यारे, महा रीव पोकारे ने कहे जे मुने रेहेवा द्यो पण ते कांइ छोडे नहि इत्यादिक. वली बाहेर निकल्या पछी पण महा छेदन भेदन ताडना तर्जनादिक वेदना घणी भोगवे. ज्ञानी विना आपणथी कही जाय नहि, तेनो विशेष अधिकार श्रीजीवाभिगम तथा पन्नवणा प्रमुख सूत्रथकी जाणजो एवां नरकादिकनां महा दुःख भोगववां पडे, ते वास्ते हे भव्यजीवो मोह जालने विषे मुझावुं नहि, जे मोहने विषे मुंझाय तेने एवां दुःख भोगववां पडे ॥ जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति मोहने विषे मुंझाणो अने साधुनो उपदेश न मान्यो त्यारे मरीने सातमी नर्केगयो तेम हे भव्य जीवो ! एवुं जाणीने जोगवाइ मलेथके प्रमाद करशो नहिं, धर्मसाधन करजो, जे थकी देवलोकनां सुख भोगवो, परंपराए मोक्षनां सुख पण भोगवशो, वली जे पुत्रकलत्र धनधान्यादिक माहारुं माहारुं करो छो, ते कांइ छे नहिं ते तो सर्वे स्वार्थनां सगां छे,

तेनुं स्वरूप देखाडे छे, जेम श्रेणिक राजाए कोणीकनो अंगुठो छ-
मास सुधी मुख मध्ये राख्यो, अने लोहिपरु चुश्यां, शामाटे जे
मारो पुत्र रखे मरी जशे, के रखे दुःखी थशे, एम जे मोहना वश-
थकी एवी रीते पुत्रने वास्ते पोते दुख भोगव्युं, तो तेज पुत्रे पोताने
काष्ट पिंजरमां घाल्यो अने नित्य प्रत्ये पांचसें कोरडा मरावे, अने
जीवथी पण गया, तो जोयुं पुत्रनुं सगपण, एक राज्यने वास्ते पि-
तानुं मृत्यु कर्युं अने महादुःख दीधुं, तो हे भव्य जीवो संसारने
विषे पुत्रनुं सगपण अनित्य छे ए सर्व स्वार्थनुं सगुं छे, तथा कल-
त्रके० ॥ जे स्त्री तेने तो माहारी करी जाणे छे तेतो संसारने विषे
महादुःख दाइ छे केमके स्त्री ना मोहना मारयाथका नंदिषेणे नि-
याणुं करयुं तो अंते नर्क मलि, तो जुओ स्त्रीनो मोहराख्यो तो पर
भवे महानर्कमली, अने आभवने विषे पण स्त्री सुख दे नहिं, जेम
यसोधरने स्त्री ए झेर देइने मारयो, तेनो अधिकार समरादि-
त्य चरित्र थकी जोजो. तथा परदेशी राजा प्रमुख घणा जीवो स्त्री-
ए मार्या छे, माटे हे भव्यो स्त्रीयो कोइनी सगीयो नथी ए तो
स्वार्थनी सगी छे एवुं खोटुं सगपण तेने विषे तमे केम मुझाइ र-
ह्या छो ? ए स्त्री तो आ भव पण दुःख दाई अने परभव पण दुःख
दाइ छे स्त्रीना सगपणमां पण राचवुं नहिं, तथा जे संसारने विषे
माता छे ते पण स्वार्थनी सगी छे, जेम ब्रह्मदत्तने चुलणी राणीए
मारवानो उपाय करयो. जुओ सगो दीकरो छे, पण कांइ दया आवी
नहिं, तथा चेलणा राणीए कोणीकने जनम्यो तेज वखते उकरडे
नखाव्यो तो जुओ मातानां सगपण पण संसारने विषे एवां छे, इ-
त्यादि अनेक दृष्टांत छे ते ग्रंथो थकी जाणजो. वली संसारने विषे
जे सगपण छे ते सगपणनो कांइ नियम नथी, जे एवुं एज सगपण
रेहेशे. जे पूत्र होय ते पुत्रपणे थाय एवो कांइ नियम नथी, जे पुत्र

होय ते पितापणे थाय अने पुत्री होय ते स्त्रीपणे थाय, केम जे शुक राजानां मातापिता तेओ पाछले भव पोतानी स्त्रीओ हती, तेनी कथा श्राद्धविधिमां छे तथा श्रेयांस कुमारनो जीव तथा श्रीऋषभ देवस्वामीनो जीव केटलाएक भवने विषे स्त्री भरतारनुं सगपण थयुं, केटलाएक भवने विषे मित्रपणुं थयुं, आ भवने विषे दादोने पडपोतरो थया, तथा यसोधर पोताना पुत्रनो पुत्र थयो तथा यसोधरनी माता हती ते आ भवने विषे स्त्री थइ इत्यादिक विचारतां सगपणनो नियम रहेतो नथी तथा सिद्धांतमां पण कह्युं छे जे एक एक जीवने मांहामांहे अनंतां सगपण थयां, एवुं जे खोटुं सगपण तेने विषे कोण राचे, केमजे कियो जीव आपणो सगो छे अने कियो जीव सगो नथी एटलुं विचारीने जोइए तो सर्वे जीव साथे आपणां अनंतां सगपण थयां माटे एमां मातापिता कोने कहीए तथा भ्रात कलत्र पुत्र कोने कहीए ? जे सर्व जीव साथे अनंतां सगपण थयां, माटे एवां सगपणने विषे राची रहेवुं नहि, एवां सगपण करतां अनंतो काल गयो पण कांइ आत्मानुं कल्याण थयुं नहि, जे दहाडे संसार थकी वैराग्य पामीने धर्मकरणी करशो, ते दिन आत्मानुं कल्याण थशे. वली कायानुं स्वरूप देखाडे छे. हे भव्य जीवो ! तमे शरीरना वर्ण गंध फरस देखीने घणा लोभाइ रह्या छो, जे रखे मारी काया मुकाये, रखे दुःख पामे, रखे बीगडे, एवुं विचारो छो, ते सर्व खोटुं छे, शामाटे के, हे देवाणु प्रिय ! तमने कायाना स्वरूपनी खबर नथी, ए काया तो पुद्गल दल छे, ए कायाने विषे तो रुधिर छे, तथा मांस छे, तथा मेद्य छे, तथा नस जाल छे, वीर्य छे, पेसि छे, लघुनित्य छे, वडि नित्य छे, एवा शरीरने विषे तमे शुं राचि रह्या छो, ए शरीरने गमे एटलुं पालो पोषो साचवो, पण अंते कांइ रेहेवानुं नथी, शामाटे जे पुद्-

गलनो स्वभाव तो सडण पडण विध्वंसण छे, ते मांटे एने विषे मूर्छा शा वास्ते लाववी पडे. तुं तारा स्वरूपनी गवेषणा करे तो ठीक, माटे एहवी काया उपर मूर्छा राखवी नही, केमके काया छे, ए तो अशास्वती छे, अथीर छे, एनो तो धर्मज, मलवा विखरवानो छे, एटले संजोगे मले अने विजोगे जाय, एवा शरीरउपर ममता राखवी नही. हवे आवखानुं अनित्यपणुं देखाडे छे, हे भव्य जीवो संसारने विषे जे आवखुं छे एतो अनित्य छे, अने तमे तो तृष्णा घणी लांबी राखो छो अने जीवितनी घडीनी खबर छे/ नहि केमके आवखुं तो अथीर जेम डाभविंदुके० ॥ जेम डाभनी अणी उपर पाणीना विंदु केटलीवार ठरे तेम आवखुं पण अथिर जाणवुं तथा जेम हाथीनो कान चपल छे तेम आवखुं पण अथिर छे. तथा जेम पाणीनो परपोटो, जेम संध्यानो रंग,/ इत्यादिक अनेक द्रष्टांते करीने आवखुं तो अनित्य छे एवुं आवखुं अनित्य छे तेने विषे तुं माहारुं माहारुं करी माची रह्यो छुं, अतिशय तृष्णानो वायो थको अनेक आरंभ करे छे, अने कालतो अचानक आवी पुगशे पछी बांध्यां जे कर्म ते हारे आवशे, अने धन धान्यादिक मेलव्युं ते तो इहां रहेशे, अने एनो तो भोगदारी कोइक थशे, अने नरकादिक दुःख तो तारे भोगववां पडशे, जेम सुभूम नामा चक्रवर्ति छ खंडनो भोगदारी हतो, पण अतिशय तृष्णानो वायो थको समुद्र मध्ये बुडीमुओ, ए राजपाट ऋद्धि तो इहां रही अने पोताने मरीने नरके जवु पड्युं, तेम हे भव्य जीवो ! एवुं आवखुं अथिर जाणीने मोह ममता निवारीने धर्म साधन करो ते धर्म साधवानुं मूल ते समकित छे, ते प्रथम कह्युं छे. अने देवतत्व ॥१॥ गुरु तत्व ॥ २ ॥ धर्मतत्व ॥४॥ ए त्रण तत्वने सद्दहे तेने समकिती कहीए एटले समकित आव्युं, ए समकितनुं फल शुं ? समकितनुं

फला व्रतिके० जे सर्व विरति देश विरति तेने व्रति कहीए. व्रतिनुं फल ते संवर, संवरके० आवतां कर्मनुं रुंधवुं, तेहने संवर कहीए, ते संवरनुं फल ते तप, ते तपना बार भेद, अणसणके० नवकारसिथी मांडीने छ मासी पर्यंत ते अणसण तप कहिये ॥ १ ॥ उणोदरीके० ॥ पुरुषने बत्रीस कवलनुं प्रमाण छे, स्त्रीने अठयाविस कवलनुं प्रमाण छे, तेमां थकी बे तथा च्यार कवल भुख्या उठे, तेने उणोदरी तप कहीये ॥ २ ॥ अने वृत्तिसंक्षेपके० ॥ आगे वृत्ति होय तेमां संकोचविके० ॥ सांकडी करवी तेने वृत्तिसंक्षेप कहिये ॥ ३ ॥ रस त्याओके० ॥ षटरसमांथी ॥१॥२॥ ४ ॥ त्याग करवा ॥ ४ ॥ कायक्लेशके० ॥ उष्णकाले तापनी आतापना लेवी, सीतकाले सीतनी आतापना लेवी ॥ ५ ॥ संलिनताके० ॥ अंग उपांगनुं संकोचवुं ॥ ६ ॥ ए षड्विध बाह्यतप ॥ ६ ॥ एथकी काया बलवानी ॥ लोकमां तपसि जणाय ॥ अने केम बलवानी भजना ॥ हवे षड्विध अभ्यंतर तप कहे छे ॥ पायच्छितके० ॥ लाग्यां जे पाप तेने वारंवार संभालीने आलोवे ॥ १ ॥ अने अरिहंतादिकनो विनय बहुमान करवुं ॥ २ ॥ वेयावच्चक्षुलक प्रमुख दसनो तथा बहु विधिके० ॥ घणानो ॥ ३ ॥ सज्झाय जे भणवुं भणाववुं तेने सज्झाय कहीये ॥ ४ ॥

ध्याननुं स्वरूप लखीए छीए ॥ ध्यानके० ॥ धर्मध्यान ॥ हवे च्यार ध्यान कहीए छीए ॥ त्यां च्यार भेद ध्यानना छे ॥ आर्त्त-ध्यान ॥ १ ॥ रौद्रध्यान ॥ २ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ पेहेलां बे ध्यान अशुभ छे, ए परिहरवां अने २ शुद्ध ध्यान ए आदरवां, एक ध्यान विषे अंतर मुहुर्त्त चित्तनो उपयोग तन्मय एकाग्रपणे स्थिर रहेवो ते ध्यान कहीए, अने केवलिने योगनुं रोकवुं तेज ध्यान कहीए.

॥ यदुक्तं ॥

अंतोमुहूत्तोमित्तं ॥ चित्तावस्थाणमेगवत्थु ॥
मिच्छोमत्छाणझाणं ॥ जोगनिरोहोजिणाणंतु ॥ १ ॥

हवे आर्त्तध्यान कहे छे. मनमां कांइक पीडाए आर्त्त थाय जे आहट दोहट परिणाम ते आर्त्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ ते आर्त्तध्यानना पाया च्यार छे ॥ पेहेलो इष्टवियोग ॥ इष्टके० ॥ वल्लभ ते भाइ मित्र सज्जन माता, पिता, स्त्री, पुत्र, धन प्रमुखनो वियोग, एकत्व आर्त्तनुं करवुं ते इष्टविजोगआर्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ बीजो अनिष्ट संजोगके० ॥ अणगमती वस्तुनुं आवीने मलवुं, तेनी चिंता, आ केवारे टले एवो जे एकत्व परिणाम ते अनिष्ट संजोग ॥२॥ त्रीजो रोग चिंता आर्त्त ध्यानके० ॥ शरीरमां रोग उपन्या तेनी चिंता करे, ते रोग चिंताआर्त्तध्यान ॥ ३ ॥ चोथो अग्रशोचआर्त्त ध्यान ते आवता कालनी चिंता करवी, जे आवता कालमां आम करीशुं के आम करीशुं ए अग्रशोच आर्त्त ध्यान कहीए. ॥४॥ हवे रौद्र ध्यान कहेछे. रौद्र ध्यानना पाया च्यार, पेहेलो हिंसानुबंधि रौद्र ध्यानके०॥ जीव हिंसा करतो करावतो अथवा संग्राम संबंधी वात करतो सांभलतो तेनी अनुमोदना करतो ते पेहेलुं ध्यान ॥ १ ॥ बीजुं मृषानुंबंधि रौद्रध्यान ॥ जे मृषा बोलीने राजी थावुं ॥ ते बीजो पायो ॥ २ ॥ त्रीजुं चोरानुबंधि रौद्रध्यानके० ॥ चोरी ठगाइ करवाना परिणाम ॥ ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ चोथो परिग्रहरक्षानुबंधि रौद्रध्यानके० ॥ नवविध परिग्रह वधारवाना परिणाम ॥ अथवा होय तेने रखवालवाना परिणाम ॥ ए चोथो पायो ॥ ४ ॥ ए रौद्रध्याननो पेहेलो पायो छट्ठा गुणठाणा सुधी छे. ॥ ए आर्त्त रौद्रध्यान बे अशुभ माठी गतिनां करणहार छे ते छोडवां.

हवे धर्मध्यान कहे छे. धर्म ते व्यवहार क्रियारूप कारण ते धर्म, तथा श्रुतज्ञान तथा चारित्र ए उपादानपणे ते साधन धर्म, तथा रत्नत्रयी भेदपणे ते उपादान शुद्ध व्यवहार एटले उत्सर्ग मार्गानुयायीपणे ते अपवाद धर्म, तथा अभेद रत्नत्रयी ते साधन एटले शुद्ध निश्चयनये उत्सर्ग धर्मनुं कारण

॥ धम्मोवत्थोसहावो ॥

जे वस्तुनो सत्तागत शुद्ध परिणामिक स्वगुण प्रवृत्ति कर्त्तादिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थाये रह्यो, एवंभूत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्मनुं भासनरमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयनो उपयोग एकत्वनो चिंतवणो ते धर्मध्यान कहीये, ते धर्मध्याननना पाया चार छे. आज्ञाविचय ॥ १ ॥ अपायविचय ॥ २ ॥ विपाकविचय ॥ ३ ॥ संस्थान विचय ॥ ४ ॥ त्यांहां पेहेलो आज्ञाविचय कहे छे. जे वीतराग देवनी आज्ञा ते हेत करी माने एटले भगवंते कहेलुं जे द्रव्य छनुं स्वरूप तथा सिद्धनुं स्वरूप, निगोदनुं स्वरूप, स्याद्वाद, निश्चय, व्यवहार सद्दहे तेने विषे भासनरमण करे ते आज्ञाविचय धर्मध्यान न कहीए. ॥ १ ॥ हवे बीजो अपायविचय धर्मध्यान कहे छे. जे जीवमां अशुद्धपणुं रह्युं छे जे अज्ञान, राग, द्वेष, कषाय, आश्रव ए माहारा नहि, हुं एथी न्यारोछुं, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमां शुद्ध बुद्ध अवीनाशी छुं, अज अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम, अनामि, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदिरक, अजोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदि, अवेदि, अछेदि, अखेदि, अकषायी, असखायी, अलेशि, अशरीरी, अभासीय, अनाहारी, अव्याबाध, अनअवगाहि, अगुरुलघु, परिणामि, अणेंद्रि, अमाणि, अजोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपर, अव्यापि,

अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी, असंगी, अलोक्य लोकालोक, ज्ञायक शुद्ध चिदानंद माहरो जीव छे, एवो जे एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचय धर्मध्यान जाणवो ॥ २ ॥ हवे विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे, जे एवो जीव छे तोय पण कर्मवशे दुःखी छे. जे ज्ञानगुण ज्ञानावर्णि कर्मे दबाव्यो छे एटले आठ कर्मे जीवना आठ गुण दबाव्या छे, एटले संसार भमतां जे सुखदुःख उपजे ए सर्व कर्मनां कीधां छे, एटले इहां कर्म स्वरूपनुं विचारवुं ॥ ते विपाकविचय धर्मध्यान कहीए. ॥ ३ ॥ हवे चोथो पायो संस्थानविचय धर्मध्यान कहे छे ॥ त्यांहां चौदराज लोक छे तेमां उर्ध्व अधो तिर्छो लोक. ते उर्ध्व लोकमां वैमानिक देवता वसे छे ते उपर सिद्ध क्षेत्र छे एम लोकनुं मान छे, ए लोक छे ते संस्थान छे, आपणो जीव सर्व लोक संसारमां भमतो जन्म मरण करी फरस्यो छे, एवुं जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पंचास्ति कायनुं अवस्थान तेनो विचार ते संस्थान विचय धर्मध्यान कहीए. ॥ ४ ॥ ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या ॥ ४ ॥ ते ध्यान सातमा गुण ठाणा सुधी छे. हवे शुक्ल ध्यान कहे छे, शुक्ल के०॥ निर्मल सुद्ध पर आलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मय पणे धारे ॥ ते शुक्ल ध्यानना पाया चार छे पृथक्त्ववितर्क समाविच्यार ॥ १ ॥ एकत्व वितर्क अप्रविच्यार ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ॥ ३ ॥ उछिन्न क्रिया निवृति ॥ ४ ॥ तिहां पेहेलो पृथक्त्व वितर्कसम विच्यार ते जीवथी अजीव जुदा करवा, स्वभाव विभाव जुदा पृथक्पणे वेंचवा स्वरूपनें विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक्पणे ध्यान करवो, पर्यायते गुणमां संक्रमावे, गुण ते पर्यायमां संक्रमण करे, एवी रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेदते पृथक्त्व कहीए, तेहनो वितर्कजे श्रुतज्ञाने स्थित उपयो-

ग ते समविच्यार, ते सविकल्प उपयोग एक चिंतव्या पछी बीजो चिंतववो ते विच्यार कहीए. निर्मल विकल्प सहित पोतानी सत्ताने ध्यावे ए पृथक्त्व वितर्क समविचार, ए प्रथम शुक्ल ध्यान जाणवुं, ए पायो आठमा गुण ठाणाथी मांडीने अगियारमा सुधी छे ॥१॥ एकत्व वितर्क अप्रविचार कहे छे जे जीव आपणा गुण पर्यायनी ऐक्यता करी ध्यावे, जीवना गुण पर्याय अने जीव ते एकज छे, अने माहारो जीव सिद्ध स्वरूप एकज छे, एहवुं ध्यान ते एकत्वपणे स्वरूप तन्मयपणे आत्म धर्म अनंतानो एकत्वपणे ध्यान, पण वितर्कपणे केहेतां श्रुत ज्ञानावलंबीपणे, अप्रविचार केहेतां विकल्प रहित दर्शन ज्ञाननो समयांतरे कारणता विना ए रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ए एकत्व वितर्क अप्रविचार जाणवो. ए पायो बारमे गुण ठाणे ध्यावे ए बे पायामां श्रुत ज्ञानावलंबीपणो छे, पण अवधि, मनः पर्यव ज्ञानना उपयोगे वर्त्ततो जीव कोइ ध्यान करी सके नहि. ए बे ज्ञानपरानुयायी छे ते माटे ए ध्यानथी घनघाति चार कर्म खपावे, निर्मल केवलज्ञान पामे; पछी तेरमे गुण ठाणे ध्यान अंतरीकापणे वर्त्ते छे, पछी तेरमाने अंते अने चउदमे गुण ठाणे ए बे पाया ध्यावे, त्यांहां त्रीजो सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति कहे छे. ते सूक्ष्म मन वचन कायाना जोग रुंधे शैलेशीकरण करी अजोगी थाय ते जे अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अचलतारूप परिणाम ते, सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ध्यान जाणवुं. इहां सत्ताये पंचाशी प्रकृति हती, ते मांहेथी बहोतेर खपावे. हवे चोथो उछिन्न क्रिया निवृत्ति कहे छे. जे जोगनी रुंध कीधा पछी तेर प्रकृति खपावे ने अकर्मा थाय; सर्व कर्मथी रहित थाय ॥ ते समुछिन्न क्रिया निवृत्ति शुक्ल ध्यान कहीये ॥ ए ध्यान चार कह्यां ॥ ४ ॥

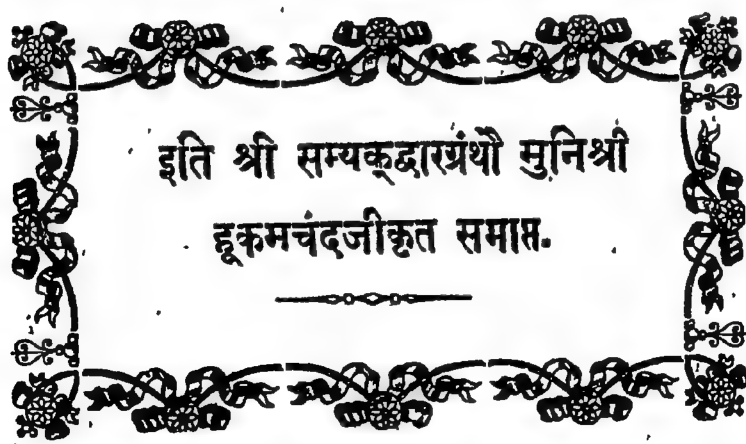
एने ध्यान कहीये ॥ ५ ॥ कायोत्सर्गके० ॥ आत्मायकी कायाने वोसराववी तेने काउस्सग कहीए ॥ ६ ॥ ए षड्विध अभ्यंतर तप ते थकी काया पण बलवानी भजना तथा लोक तपसी जाण्यानी पण भजना पण कर्म बलवानी,—एहवो जे बाह्य अभ्यंतर थईने बार भेदे जे तप ते तपनुं फल ते निर्जरा ॥ निर्जराके० ॥ आत्माने सर्व कर्मथी मुकीने लोकने अंते सिद्ध क्षेत्रने विषे सिद्धपणे जइने वसवुं एने मोक्ष कहीये, ते माटे हे भव्य जीवो ! जुओ अनुक्रमे समकित-नुं फल मोक्ष थाय एवुं श्री भगवतीजीमां पण कह्युं छे माटे श्रद्धा शुद्ध राखजो. श्रद्धा हशे तो सर्व काम बनी आवशे.

इतिश्री सम्यक्द्वार ग्रंथो मुनीश्वर श्री हुकमचंदजी विरचिते सप्तमोऽध्याय परिपूर्ण ॥ ७ ॥

दुहा.

सप्तद्वारे करी वर्णव्यो, पूरण हुओ प्रमाण ॥
ते अनुक्रमे वर्णवुं, सुणजो चतुर सुजाण ॥ १ ॥
प्रथम व्यवहार पुष्टि करचो, बीजो मिथ्या निखेद ॥
त्रिजुं सम्यक् वर्णव्युं, जिहां कह्या बहु भेद ॥ २ ॥
देवतत्व चोथो कह्यो, जिहां जिनपडिमा विचार ॥
तत्व कह्यो गुरु पांचमो, छठो धर्म ते धार ॥ ३ ॥
सातमो साधारण कह्यो, बहु उपदेश विचार ॥
एम सप्तद्वारे करी, रच्यो ग्रंथ निरधार ॥ ४ ॥
ग्रंथ संखेप केहेवा भणी, हतो एह विचार ॥
कारण जोगे अधिक थयो, तेह कहुं अधिकार ॥ ५ ॥

उत्तमविजय शिष्यए, जसविजय गुणजाण ॥
तेह तणा आग्रह थकी, विशेष कह्यो विनाण ॥ ६ ॥
शशिग्रहखगबाणमां (१९०५) ॥
ज्येष्टत्रीज शुक्लपक्ष ॥
वार भृगुये वर्णव्यो, बजाणा गाम प्रत्यक्ष ॥ ७ ॥
स्वयंबुध ते वर्णव्यो ॥ मुनि हूकम जसनाम ॥
भविकजीवना हितभणि, पठतां अविचल ठाम॥ ८ ॥
जब लगे रविसशि रहो, तब लगे रहो एग्रंथ ॥
नामे सम्यक्द्वार ते ॥ पसरो पूहविसथ ॥ ९ ॥


इति श्री सम्यक्द्वारग्रंथो मुनिश्री
हूकमचंदजीकृत समाप्त.

चार अभाव प्रकरण लक्षण.

श्रीगुरुभ्योनमः

प्रणमुं सुधानंदने, भाखुं अभावते चार ॥
अवला थईने परिणम्या, सवला परिणमे सुखकार ॥१॥

हवे जे चार अभाव अन्यमत विशेपक दर्शनवालाए कह्या छे ते पूर्वे जैन पंडितोए पण केटलाएक विचारने विपे ग्रहण कर्या छे, ते चार अभावनुं स्वरूप किंचित्मात्र हुं कहुंछुं ते चार अभावना नाम, प्रागभाव १ प्रध्वंशभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योअन्यभाव ४ हवे अभाव केहेतां शुं ? जे नाहि छे वस्तु तेने अभाव कहीए छीए. परंतु चेतनस्वरूप साथे चारे अभावनो विचार करवाथी घणो फायदो छे, ते माटे एनुं स्वरूप किंचित्मात्र इहां देखाडुं छुं. हवे प्रागभाव केहेतां पूर्वे जे भावनो अभाव हतो ते भाव प्रगट थयो तेने प्रागभाव कहीये, तेनो विचार कहुंछुं. आ संसारनी मांहेली कोरे भावरूप वस्तु बे प्रकारनी छे, एक शुद्धभाव १ बीजो अशुद्धभाव २ हवे ते अशुद्धभावना अनेक भेद छे अने शुद्धभावनो तो एकज भेद छे, एटले शुद्धभाव केहेतां शुद्ध चिदानंद संकल्प विकल्परहित, सम परिणामी निजानंद उपयोग स्वस्वरूपमां स्थिरतापणुं तेने शुद्धभाव कहीये. हवे जे अशुद्धभाव छे तेना अनेक भेद छे ते कहीये छीए. प्रथम सम परिणाम जे कह्यो तेना बे भेद छे एक तो शुद्ध परिणतिरूप सम परिणाम ते तो सर्वथी जीवने कल्याणकारी छे. अने शुद्ध परिणति साथे जे

सम परिणाम छे, तेना अनेक भेद छे ते मध्ये जे श्रेणिप्रतिपन्न छे ते सविकल्प परिणाम छे, शामाटे जे ए ठेकाणे स्वपरनो विचार अथवा गुण पर्यायनो विचार ए सर्वे विकल्प सहित छे, परंतु घणोज भाग एनो निर्मल छे, अने थोडोज भाग मलिनपणुं छे, एक समकितीथी मांडीने सातमा गुणठाणा सुधी जे समभाव थाय छे ते द्रव्य गुण पर्यायनुं स्वरूप जाणी स्वस्वरूपने ओलखी परभावनो त्याग करीने सम परिणामे रमे छे, ते मध्ये पोते पोताना गुणठाणानी हद्दे जे सम परिणाम छे ते स्वभाविक छे, अने ते उपरांत जेटलुं रमण तथा समभाव एटलो आरोपित उपचारि छे, अहिंयां निर्मलपणुं कथंचित् छे ते मध्ये पण तरतम जोग रह्यो छे ते विना समभाव छे, ते एक एवी जातनो पण छे, के द्रव्य गुण पर्यायना भेद जाणीने पर स्वभाव प्रगटयो नथी अने स्वस्वरूपनुं ग्रहण नथी अने समभाव थाय छे ते मलिन छे, ते मिथ्याद्रष्टि छे, वली एक एवी जातनो पण समभाव छे जे स्वस्वरूप तो जाणता नथी, तथा द्रव्य गुण पर्यायनुं पण जाणपणुं नथी अने मटक वैरागादिक पामीने संसार थकी विरक्तभाव रेहेछे, ते सर्वे पण मलिन छे, मिथ्याद्रष्टि छे, तेनो आत्मा अंशे पण निर्मल थयो नथी, तथा एक एवी जातनो पण समभाव छे, संसार छोडी अथवा न छोडी कर्त्तारिभावमां रच्या पच्या छे. कर्त्तारि केहेतां जे कर्म जे जे दर्शनवाला पोतपोतानां क्रिया कर्म वेहवार मार्गनां बांधेलां तेने धर्म माने छे, तेने कर्त्तारि कर्म कहीए.

॥ उक्तंच ॥

विहित कर्म जन्यो धर्म निषिध कर्म जनो-स्त्वधर्म ॥

एटले विहित कर्म केहेतां जे कर्मनुं करवुं, एटले क्रिया प्रमुख करवाथी धर्म माने छे, एवुं पण एक लोकमां धर्म छे, पण ते कंई धर्म नथी, शामाटे जे निषेध कर्म केहेतां जे क्रिया प्रमुखनो नाश करीने स्वभावमां जे रमवुं ते सत्यधर्म छे, तथा एवुं श्री विशेषावश्यकमां नयअधिकार निगमनय आरोपित कह्यो छे, ते मध्ये कारणने विषे कार्यनुं आरोपवुं, एटले कारण जे बाह्य वेहेवारनी जे जे करणि प्रमुख छे तेने धर्म माने छे, ते करताने धर्मी कहे छे, ते कंई धर्मी थयो नहि अने करणी ते कंई धर्म थाय नही.

॥ उक्तंच ॥

बाह्य क्रियाया धर्मत्वः धर्म कारणस्य धर्मत्वेन कथनं ॥

एवुं नयचक्रमां पण कह्युं छे, इहां कोई कहेशे के भाव कारणमां तो कंई आरोप नथी, तेनो उत्तर जे भाव कारणने विषे तो आपआपणा कार्यनो स्वभाव छे, त्यां कंइ कर्त्तारि नथी, अने निगमनय छे ते कंइ भावमां नथी ए तो द्रव्यनय छे. अहिंयां पण आकृत्रिम भावनी वात छे, अकृत्रिमनी वात होत तो स्वभाव ग्रहण थाय, तथा चेतन मात्र वर्णवी ते तो चेतनाना बे भेद छे एटले शुद्ध चेतना १ तथा अशुद्ध चेतना २ अशुद्ध चेतना केहेतां नर नरकादिक चारे गतिनी वात जाणे, द्विप समुद्र आदे देईने सर्व परभावनी वात जाणे तने अशुद्ध चेतना कहीए, तेमध्ये जे स्वस्वरूपना गुणपर्यायादिक जाणे ते अशुद्ध चेतना छे, पण महाशुभ छे, जे पोताना स्वरूपने जाणे, अने शुद्ध स्वभावने विषे रमणता तेने विषे स्थिरपरिणाम,एवुं जे जाणपणु छे तेने शुद्ध चेतन कहीए. तेनेज धर्म कहीए. अने ते धर्म केवो छे, अविच्छिन्न केहेता कोई

काले पोताना स्वस्वरूपथी ए धर्म जुदुं नहि पडे ए एक आत्म स्वरूपनी वृत्ति मात्र एनेज कही छे.

॥ उक्तंच ॥

चेतन मात्र वृत्ति धर्मविछिन्न ॥

एवी रीते परभावमां जे रमणता अने धर्मनुं मापवुं एवुं पण एक स्वभावे छे. इत्यादिक अशुद्ध परिणतिरूपे शुभा शुभ कार्य कारणना समभाव चेतन वलगेला छे ते सर्वे परभावना घरना समभाव छे, पण शुद्ध परिणतिरूप समभाव न थयो तेथी ए समभावने पुद्गलिक ऋद्धिमां गण्यो छे, ते परभावनो नाश थाय त्यारे शुद्ध रूपनी प्राप्ति थाय, ते शुद्ध स्वरूपने विषे तो उपादान कारण कार्य समये समये अनंतु नीपजी रह्युं छे, ए भाव जेने प्रगट थयो, तेने प्राग्भाव कहीये. शामाटे जे पूर्वे एवी शुद्ध स्वभावनी प्राप्ति नहिं हती ते प्राप्ति थइ एटले पूर्वे शुद्ध स्वस्वरूपनो अभाव ज हतो एटले प्राग्भाव कहीये तथा समकितनी आदे देई जे जे नवा गुण प्रगट थाय ते सर्वे ने प्राग्भाव कहीए.

॥ उक्तंच ॥

अनादि सांत प्राग्भाव इतिवचनात् ॥

एटले पूर्वना भावनो नाश थयो तेने प्राग्भाव कहीए ॥ इति प्रथम ॥ १ ॥

हवे बीजो परध्वंशाभाव केहेतां जे कार्यनी उत्पत्ति थया पहेलां अथवा थया पछी ध्वंश कहेतां नाश करवो तेने प्रध्वंशाभाव कहीए, एटले आपणो आत्मा अनादिकालनो संसारने विषे रखडे छे, अने अनंत गुणनो धणी छे ने कंइ खप आव्युं नहि अने रखडवुं पडे छे, तेनुं कारण ए छे जे मोहादिक शत्रुओ उत्पत्ति

थया पेहेलां एटले समकित पाम्यां पहेलांथी आत्माना गुणनो नाश करता रह्या, एटले गुण प्रगट थावा दीधो नहि, अने परभावमां रमाड्या, परपोतानुं करी मान्युं, शुभाशुभने धर्म करी मान्युं, अज्ञानने ज्ञान जाण्युं, ज्ञानने अज्ञान जाण्युं, वस्तुधर्मने अधर्म जाण्युं, शुद्ध परिणतिने अशुद्ध परिणति जाणी, अशुद्ध परिणतिने शुद्ध परिणति जाणी, आरोपिता उपचरित असद्भूत तेने धर्म करी मान्युं, अण-आरोपित अणउपचारित सद्भूत तेने अधर्म जाण्युं, ए सर्वे समकित पाम्या पेहेलांनां लक्षण छे, शा माटे जे केटलाएकतो आजिविकाने अर्थे करता फरे छे, केटलाएक पूजात्रा मनावाने अर्थे, केटलाएक पोताना मतादिकनी खेंचे करीने, ते सर्वे मिथ्यात्वी छे, तथा समकित पामीने वम्युं ते पण मोहादि शत्रु भमावे छे, शा माटे के समकित पामीने वे अक्षरनुं जाणपणुं थयुं, अथवा बाह्यथकी करणी आदिक सारी रीते करे ते वारे मिथ्यात्वरूपभूत एना हृदयमां पेसे ते वारे मत फरी जाए अने गुरु आदिकने माने नहि अने स्वमति कल्पनाए धर्म उपदेश करे. जथारोहगुप्त निन्हव. एटले पछी शास्त्र सिद्धांत माने नहि पोतानी मति कल्पनाए करी एनुं युक्तिए करीने समजावे ते मध्ये साधुने उपदेश करवानो अधिकार, अथवा सूत्र भणवानो अधिकार, जेम व्यवहारसूत्रमां कह्यो छे तेटले तेटले वर्षे थाय ते विना करे ते पण सूत्रना उत्थापक छे, तथा श्रावक थइने जे उपदेश करे ते पण सूत्रसिद्धांतना तथा गुरुना पण उ-त्थापक छे तथा भगवाननी आज्ञाना पण उथ्थापक छे ए संपूर्ण सर्वे प्रकारेथी निन्हवज छे, अने जमालि प्रमुख जे निन्हव थया ते तो देशथकी छे, अने ग्रहस्थ थइने देशना दे ते सर्वथकी निन्हव छे, शा माटे जे श्रीवीर परमात्माए तो ग्रहस्थने श्रोता कह्या छे अर्थनी प्राप्ति गुरुने प्रश्न पुछवाथी कही छे. पण वांचवा भणवा [illegible]

संभलावा तेथकी नथी. ए अधिकार श्रीभगवतीजीथी जाणजो. तथा श्रीप्रश्न व्याकरणने विषे संवरद्वारे ग्रहस्थ तथा देवताने सांभलवानो अधिकार कह्यो छे, पण कंइ सभा भेगी करवी, देशनाओदेवी, ते अधिकार तो साधुनो कह्यो छे, तथा श्रीनिशिथसूत्रने विषे जे साधु ग्रहस्थने भणावे तथा ग्रहस्थने भण्या वखाणे, तो तेनुं चार महिनानुं चारित्र जाय तथा ग्रहस्थ जो भण्यो वखाणे तो तेने चार महिनाना चउविहारा उपवासनुं आलवण आवे, इत्यादिक घणां शास्त्रने विषे ग्रहस्थनी देशना अथवा ग्रहस्थनुं भणवानुं निषेध कर्युं छे ते कारणथी जे करे तेने निन्हवज कहीये. ते घणी अनंताभव रखडे, तथा एनी देशनाना सांभलनार पण अनंताभव रखडे, ए श्रीवीर परमात्मानुं भाखेलुं छे ते सर्वे शास्त्रमां छे ए पण एने मोहादिक शत्रुए एना धर्मनो नाश कर्यो. हवे जे मोहादिक शत्रु समकित पाम्या पछी जे शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो हतो तेनो नाश करे छे, तेनो विचार किंचित् मात्र देखाडुं छउं. एनां निमित्तकारण तो पांच इंद्रिने मन छे अने उपादान कारण रागद्वेष परिणति छे ते मध्ये रागना वे भेद छे, एक शुभ राग छे १ बीजो अशुभ राग छे २ शुभ रागना वे भेद छे एक प्रशस्त राग १ बीजो अप्रशस्त राग २ ते मध्ये समकितादिक पामवानो जे राग ते पण स्वपरिणति छे तथापि पामवानो राग छे अथवा पाम्या ते गुण साचववानो राग छे अथवा आत्माना केवलादिक गुण प्रगट करवानो राग छे अथवा मारा आत्मानी मुक्ति थाये इत्यादिक सर्वे राग छे ते स्वपरिणति नेलीधे छे माटे एनें प्रशस्त कहीये. अने राग छे ते कर्मबंध हेतु छे, माटे एने शुभ राग कहीये. तथा अप्रशस्त शुभ राग ते ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता नथी, अने देवगुरु धर्म उपर ए राग राखे छे अने गुरु

आदिकनी भक्तिने विषे लयलिन रहे ते धणीने अप्रशस्त शुभ राग छे, शा माटे जे स्वपरिणति रहित छे प्रशस्तपणुं नथी, तथा अशुभ राग तेना बे भेद छे, एक प्रशस्त ॥ १ ॥ बीजो अप्रशस्त ॥ २ ॥ ते मध्ये प्रशस्त जे धर्म एवो शब्द नाम ग्रहण करीने जे क्रिया कष्ट तप जप करे छे ए सर्व अशुभ छे अहींआं कोई केहशे जे धर्मनां एवां कारण तेने तमो अशुभ केम कहोछो, तेनो उत्तर के ए सर्वे कारण विष क्रिया ॥ १ ॥ गरल कीरिआ ॥ २ ॥ अनुष्टान अन्योअन्य किरीआ ॥ ३ ॥ ए त्रण क्रियाने विषे थाय छे, अने ए त्रण क्रिया ते अशुभज छे, ए क्रियाने कोई शुभ लखता नथी. एनो विशेष विचार शास्त्र थकी जाणजो, तथा अप्रशस्त अशुभ राग ते वणसमजणे अथवा उपयोगरहित परजीवने बचाववा अथवा दानादिक देवुं अथवा संसारना सर्वे कारण ए सर्वे अप्रशस्त अशुभ राग छे, माहावीर स्वामि ए गोसालाने बचाव्यो तद्वत् समजी लेजो. हवे जे द्वेष छे, ते पण बे प्रकारनो छे एक स्वपरिणति थकी कर्मादिक भिन्न द्रव्यने काहाडवानो विचार एक एवो पण द्वेष छे ए सर्व धर्मद्वेष एक प्रकारनो केहवाय, बीजो जे अधर्मद्वेष ते संसारादि सर्वे कारणमां समजवो, एवां जे कारण मलवाथी, जे पोतानी शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो, ते धर्म थकी भ्रष्ट करीने संसारमां रोले, एटले ए आत्मगुणनो नाश करे ते मोहादि शत्रु आत्मगुणनो प्रध्वंसभाव छे तेज आत्मा पोते प्रध्वंस स्वभाव जाणे जे आ मोहादिक शत्रु कर्त्ता छे, माटे हुं एनोज नाश करुं ते शावडे थाय तेनो हेतु बतावुंछुं, के सद्गुरु बहुश्रुत निस्पृहभाव स्वस्वभावना भोगी परस्वभावना त्यागी, तेवा गुरुनी हुं शेवा भक्ति करुं तेमने शरणे जइने रहुं एटले एवा मोहोटा पुरुषनुं वलावुं लीधे थके मारी ऋद्धिनो नाश

मोहादिक चोर करी शके नहि, माटे हुं एवा सद्गुरुने आधिन थइने रहुं, पुष्ट आलंबन ए वगर बीजो कोइ नहि, हवे उपादान कारणने विषे स्वपरिणति परभावमां जावा न देउं, ते स्थिर भाव थाउं, शुभाशुभ कारण कारज थकी माहारा आत्माने उगारुं, अने शुद्ध भावने विषे माहारा आत्माने जोडुं, तो ए मोहादिक शत्रुओनो नाश थाय, ए रीते पूर्वे पण जे सिद्धि वरया ए घणी ए भावथीज सिद्धि वर्या छे, वर्त्तमान काले पण जेनी सिद्धि थाय छे, ते पण एज भावथी थाय छे, अनागत काले पण कार्यसिद्धि ए भावथीज थाशे, ए विना बीजा प्रकारथी कार्यसिद्धि छे नहि, ए वात निःसंदेह छे. एटले आत्मा पर भावमां रमतो हतो तवारे स्वस्वभावनो ध्वंशभाव हतो, तेज आत्मा स्वस्वभावमां परिणम्यो तेवारे सर्व परभावनो ध्वंश थयो. हवे कोइ वस्तुनो एने ध्वंश करवो नथी, एटले ए सत्य प्रध्वंशाभाव कही देखाडयो. एटले ए बीजो भाव कह्यो.

हवे त्रीजो अत्यंताभाव कहेतां अत्यंत अभाव छे, ते कहीए छीये, ते आत्माने विषे परभावनो अभाव छे, शुद्ध निश्चयनये करीने जोईये तो कर्तारपणे छे नहि, अने शुभाशुभ पण छे नहि, ए मूल वस्तु धर्ममां अत्यंत कहेतां घणो घणो करीने ए धर्म आत्माने विषे छेज नहि, एटले ए त्रीजो अभाव कह्यो.

हवे चोथो अन्योअन्य अभाव कहेतां जे प्रगट पण घटने विषे पटनो अभाव छे ने पटने विषे घटनो अभाव छे तेम चेतनने विषे परधर्मनो अभाव छे, ने परधर्मने विषे चेतननो अभाव छे ते किंचित् विवरीने कहुं छउं. अहियां प्रथम छ द्रव्य छे तेनां नाम ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय

॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥६॥ ए छए द्रव्य जे छे ते एक एक द्रव्यने विषे अन्योअन्य अभाव छे एटले धर्मास्तिकायना द्रव्य ॥ १ ॥ खेत्र ॥ २ ॥ काल ॥ ३ ॥ भाव ॥ ४ ॥ तथा गुण पर्यायादि ते जीवने विषे एनो अभाव छे एम जीवना द्रव्य खेत्र, काल, भाव, गुण, पर्यायायादि तेनो धर्मास्तिकायने विषे अभाव छे. एम अन्य द्रव्य जे चार रह्यां ते जीवनी साथे च्यारे जोडी लेवां, ते पण एक एकने अन्योअन्य अभावज छे, तथा स्वजाति आश्रीने जीव एक पण अनंता छे, ते स्वजाति कहेवाय शामाटे जे सरखो द्रव्य, सरखा गुण, सरखा पर्यायादिक लाधे तेने स्वजाति कहीये. परंतु आपणा आत्मा थकी तो सर्वे जीव भिन्न छे ते माटे आपणा ज्ञानादिक गुण, आपणा अगुरु लघु आदिक पर्याय ए थकी तेना गुण पर्याय पण भिन्न छे माटे आपणा चेतनने विषे अन्य जे बीजा जीव अनंता रह्या, तेना द्रव्यनो पण आपणे विषे अभावज छे, तेम एना पर्यायादिकनो पण आपणे विषे अभावज छे एम अन्योअन्य अभावधर्म मवर्त्ते छे.

तथा जेम जीवने विषे अजीवनो अभाव, तथा जेम अजीवने विषे जीवनो अभाव, तथा धर्मने विषे अधर्मनो अभाव, तथा अधर्मने विषे धर्मनो अभाव, तथा संवरने विषे आश्रवनो अभाव, तथा आश्रवने विषे संवरनो अभाव, तथा निर्जराने विषे बंधनो अभाव, तथा बंधने विषे निर्जरानो अभाव, ने पुन्यने विषे धर्मनो अभाव, आहियां कोई प्रश्न करशे जे दानादिक कारण छे तेने शुं धर्ममां गणीए के पुन्यमां गणीए ? तेनो उत्तर. जे दान शील तप ३ ते त्रण पुन्यमां गणाय छे, ते मध्ये केटलाएके दान पुन्यमां गणे छे, केटलाएक पापमांज गणे छे, शा माटे जे दान पांच

प्रकारनां कह्यां छे अभयदान ॥ १ ॥ सुपात्रदान ॥ २ ॥ अनुकंपादान ॥ ३ ॥ कीर्तिदान ॥ ४ ॥ उचितदान ॥ ५ ॥ ए पांच दान मध्ये कीर्तिदान तथा उचितदान ए बे तो पुन्यहेतु छेज नहि, अने अनुकंपादान छे ते किंचित् भाग पापनुबंधि पुन्यनो हेतु छे, अने अभयदान स्वगुण रखोपुं करतां धर्मनुं छे, अने परप्राणनुं रखोपुं करतां पापानुबंधी पुन्यहेतु किंचित्भाग छे. अने परगुणनुं रखोपु करतां पुन्यहेतु छे. ज्ञानादिक गुणहेतुनुं करे तो, नहितो पाप हेतुमां जाय. हवे जे सुपात्रदान छे ते तो एक साधु मुनिराजने छे, ते विना बीजा कोईने सुपात्र कह्या नथी. अहिंयां कोई कहेशे के साधुने अभावे श्रावकने पण जमाडवा तेनो उत्तर, जे साधु विना सुपात्र थाय नहि, अने पुन्यबंधनां थानक ॥ ९ ॥ नव कह्यां छे ते श्रीसुयगडांगजी मध्ये छे ते तो साधुने आश्रिने कह्या छे, तेनां नाम

॥ अन्नपुन्ये ॥ १ ॥ पानपुन्ये ॥२ ॥ वथ्थपुन्ये ॥ ३ ॥ शेनपुन्ये ॥ ४ ॥ लेनपुन्ये ॥ ५ ॥ मनपुन्ये ॥ ६ ॥ वचनपुन्ये ॥ ७ ॥ कायपुन्ये ॥ ८ ॥ नमस्कारपुन्ये ॥ ९ ॥

ए नव प्रकारे छे. ते तो साधुने आश्री कह्यां छे, तथा उपाशक दशांगमां साधु विना बीजाने आप्युं नहि, एवुं आणंदजी बोल्या छे, अहिंयां कोई प्रश्न करशे जे संखजी आदे देइने, तेनो उत्तर, जे ए जमतां कंई कह्युं नथी, स्वामिवत्सल कह्युं नथी, पोसाति कह्या तीहां तो एवुं कह्युं छे जे आपणे एक ठेकाणे एकठा जमीए, त्यां तो एक उजाणीरूप च्यार दोसदार मलीने कर तेम

छे, अहिंयां कोई कहेशे जे स्वामिवत्सल एनुं नाम ते शुं छे ? तेनो उत्तर. जे सरखा धर्मना साधु साधुनी वेआवच्च करे, तेनुं नाम स्वामिवत्सल छे, अथवा श्रावक कोई धर्मथी भ्रष्ट थतो होय अथवा आजीविकाए दुखियो होय तेने स्थिर करवो, तेनुं नाम वत्सलता कहीए, अहिंयां कोई कहेशे जे, सात खेत्रे धन खरचवुं कह्युं छे. ते खरुं छे पण कंई श्रावकने धन आपि देवुं एम तो कह्युं नथी ? तथा आ कालने विषे आजिविका अर्थी पेटभरा घणा लोको कमाइ खाय छे, तथा केटलाएक मुवानां धन लावी मिष्टान भोजन जमे छे धाम धूमादिक करी तेने ओठे खाय छे, तो ए मुवानो काढेलो द्रव्य ते गडका दान कहीए. ते महा अशुभ द्रव्य छे ते तो भाट, भोजक, ब्राह्मण, कूतरां खोडां ढोर पारेवा प्रमुख अपुन्निया जीव छे ते खाय छे पण उत्तम जीवने तो ए भक्षण करवा लायक नथी, तथा हाथ ग्रहवा लायक नथी, अने साधु तथा श्रावक नाम धरावीने एवा अशुभ माठा द्रव्यने भोगवे छे, ने ते धणीने धर्म बतावे छे, ते धणी महा हिण पुन्नियाने बहुल संसारी संभवे छे, अनंतोकाळ संसारमां रखडशे, अने सात खेत्र जे वावरवुं, ते तो गृहस्थने घेर निरंतर वपराय छे, अने जे मानत मानीने खरचवुं, ते कल्पित द्रव्य छे, ते अशुभज कहेवाय ते उत्तम जीवने वापरवा लायक नथी, ए सर्वे पाप हेतुज कहेवाय. हवे जे साधुने दान देवुं ते शुभ हेतु छे, अहिंयां कोई कहेशे जे भगवतिजीने विषे एकांत निर्जरा कही छे. अने तमे शुभ हेतु केम कहो छो ? तेनो उत्तर. तेना गुणठाणानी हद प्रमाणे निर्जरा करे, पण सर्वथी निर्जरा एने होय नहि, शामाटे के एने शुभ आवखुं लांबुं बांधवानुं कह्युं छे,माटे एने घेर पुन्य बंध हेतुज छे, तथा शियलव्रत छे ते जगतमां शोभा लायक छे तथा तप जे छे ते बाह्य तप शोभा लायक छे, ने अभ्यं-

तर तप कर्म निर्जरे ते पण सर्वे शुभ हेतु छे, अने भाव छे तेना अनेक भेद छे, ते मध्ये शुद्ध भाव ते मुक्ति दाता छे, बाकी भाव छे ते शुभाशुभ हेतु छे.

॥ उक्तंच ॥ १ ॥ दानंदुर्गति नाशाय॥ शीलंसोभाग्य कारण ॥ तपःकर्म विनाशाय॥ भावनाभवनासिनि ॥ २ ॥

// ते माटे धर्म त्यां पुन्य नहि ने पुन्य त्यां धर्म नहि, शामाटे जे बन्नेनां कारण कार्य भिन्न छे, पुन्य छे ते कर्म बंध हेतु छे, धर्म छे ते मुक्ति हेतु छे अहियां कोई पुन्यने धर्म माने छे, ते धर्णीने आत्मस्वरूप स्वगुणनो अत्यंत अभाव छे अने हजु परभावनो अत्यंताभाव नथी करयो ए रीते स्वधर्मने विषे, परधर्म अने परधर्मने विषे स्वधर्मनो अन्योअन्य अभाव छे, ए अन्योअन्याभाव चोथो भेद समजवो ए आत्मस्वरूपने विषे त्रणे भाव प्रध्वंशादिक अंगीकार करो, तो प्रथमनो प्रागभाव प्रगट थयो, अने ए प्रागभाव प्रगट एज आत्मानी सिद्धि थाय. एटले शुद्ध भाव तेज प्रागभाव छे. //

॥ दुहा ॥

अभाव चार वर्णव्या, प्रागभावादि जेह ॥
बालजीवने कारणे, तत्व प्राप्ति तेह ॥ १ ॥
आत्मस्वभाव अशुद्ध जे, काल अनादि लाध्यो ॥
तेथी अभाव चारे हुता, अवलि परिणति साध्यो ॥२॥
हवे शुद्ध स्वभाव ए, ज्ञान द्रष्टिए जाग्यो ॥
च्यारे स्वभाव हवे साधिया, शुद्ध स्वरूपमें लाग्यो ॥३॥
ए रीते समजी करी, निजस्वभावमां रेशे ॥

अवला ते सवला करी, निजस्वरूपमां लेशे ॥ ४ ॥
अनुभव ज्ञानथी ए रच्यो, चउ अभाव प्रकरण ॥
शुद्ध स्वरूपनी खोजथी, शुधो अनुभववर्ण ॥ ५ ॥
ए रीते अनुभव सहित, वांचशे भणशे जेह ॥
कारज तेनुं सिद्ध होशे, तेमां नहि संदेह ॥ ६ ॥
ओगणिसें बतरीसमे, संवछरे अवधार ॥
श्रावण उत्तम मासए, शुक्लद्वादशिसार ॥ ७ ॥
भोमिपतिवार भलो, सुरत शेहेर मोझार ॥
श्रोता उत्तम जोगथी, चोमासु रह्या उदार ॥ ८ ॥
सेहेज अनुभव रमतां थकां, ए अनुभव चित्त आयो ॥
ते तुरत प्रगट कर्यो, भव्य जीवहित लायो ॥ ९ ॥
हुकम जे मुनिवर तणो, माथे चडावी सार ॥
शास्त्र अनुसारे भाखियो,अध्यात्म गुण उदार ॥१०॥
शुद्ध स्वरूप प्रकाशियो, कीधो अशुद्धनो नाश ॥
परपरिणति परभावनो, अहिंयां नहि रेहेवास ॥ ११ ॥
शुद्ध भावशुद्ध भेदथी, शुद्धपरिणति विशाल ॥
अभांव च्यारे त्यांहां प्रगटया,उत्तम लक्षण निहाल१२
ए प्रबंध ए रचनासवि, जाणे भाव बहु श्रुत ॥
अल्प बुद्धि समजे नहि, गुरुगमथी एकंत ॥ १३ ॥
ते माटे बहु श्रुत जोई, निस्पृहि निजानंद ॥

शेवा करजो तेहनी, भेद पामशो आणंद ॥ १४ ॥
आणंदरूप एक आतमा, बाकी सर्व असत्य ॥
ते ध्याने मुक्ति लहे, आगे पाम्या अनंत ॥ १५ ॥
वलि अनंता पामशे, पामे छे वर्त्तमान ॥
निश्चित उपादान शुद्ध ग्रहि,ए भाखुं शुधमान ॥१६॥
मुनि हुकम रचना करी, स्वअनुभवधारि ॥
परअनुभव अलगो टल्यो, शुद्ध भाव निहालि॥१७॥
श्रोता पण तेवा तिहां, अनुभव गुणना रशिया ॥
शुद्ध भावना लालचु, ते मुज पासे वशिया ॥१८॥
पुद्गलना भिखारि जेह, तेनुं नाहि अहिंयां काम ॥
ते अहिंयां आवे नहि, ते चउगति भटकण ठाम॥१९॥
रागद्वेष रहित ए, कीधो ग्रंथ विनाण ॥
भावे करि जे वाचशे, सांभलतां प्रगटे नाण ॥२०॥
बहू श्रुत तर्कवाद सहित, स्वपर स्वरूपने जाणे ॥
निस्पृहि भाव सदा रहे, ते पासे भेद ठांणे ॥ २१ ॥
न्याय विना समजे नहि, शुद्धा शुद्ध स्वरूप ॥
ते माटे गुरुगम कही, लेवी शुद्ध अनुप ॥ २२ ॥
ए उपदेश हृदय धरी, जे करशे अभ्यास ॥
मुनी हुकम ते पामशे, शीवसुंदरी घर वास ॥ २३ ॥

॥ इति चउअभाव प्रकरण संपूर्ण ॥

श्रीमिथ्यात्व विध्वंसन.

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहो ॥

वंदू सिद्ध स्वरूपने, निजानंद विलाश ॥
आपस्वरूपी आपमां, वधे गुणकी राश ॥ १ ॥

संसारमां सर्वे जीव सिद्ध सरखा छे, असंख्यात प्रदेशे करी निर्मळ छे, एवी सत्ता घणी छे, परंतु पोतानी सत्ताने देखी शकता नथी, शा माटे के मिथ्यात्वे करीने आत्मा छवराइ गयो छे तेथी करीने स्वस्वभावने छोडीने परभावमां रमे छे. शिष्यवाक्य–स्वामी मिथ्यात्व ते शाने कहोछो ? ने मिथ्यात्व शाथकी जाय ? गुरुवाक्य–हे भद्र ! मिथ्यात्वनो विस्तार घणो छे, परंतु किंचित् कही देखाडुंछुं, ते मिथ्यात्वना बे भेद छे, तेनो विवरो करतां केटला एक बीजा पण भेद केहेवाशे, हवे ते मिथ्यात्वना बे भेद करीये छीये, तेनां नाम, द्रव्य मिथ्यात्व ॥ १ ॥ भाव मिथ्यात्व २ द्रव्य मिथ्यात्वना बे भेद, एक व्यवहार मिथ्यात्व १ बीजो निश्चय मिथ्यात्व २ हवे ते मिथ्यात्वनो स्वरूप संक्षेपथी देखाडीये छीये, एटले मिथ्या केहेतां जुठी वस्तुने साची करीने माने, तथा साची वस्तुने जुठी करीने माने तेने मिथ्यात्व कहीये, ते मध्ये लौकिक देव केहेतां हरिहरादिक तेने देव करीने माने, अथवा पोतानी मतलबे तेनी बाधा आखडी राखे

तथा लौकिक गुरु कहेतां ब्राह्मण, जोगी, सन्याशी, प्रमुखने गुरु करी जाणे तेना चमत्कार देखीने तेने माने. २ लौकिकधर्म जे सदाव्रत देवुं तथा होली भुख्यां रेहेवुं, इत्यादिक मिथ्यात्वीना पर्व तथा व्रत करे तेने लौकिकधर्म कहीए. ३ लोकोत्तर देव जे रिखवादिक जे तीर्थंकर तेनां जे तीर्थ प्रतिमा तेने पोताना संसार हेतुए मानवा, बाधा आखडी राखवी ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहीये ४. तथा लोकोत्तर गुरु मिथ्यात्व कहेतां जे साधु मुनिराजनी शेवा भक्ति आहारपाणी प्रमुखनी सुश्रुषा राखे, मनमां एवुं विचारे के, महाराज वचन आशिर्वाद कहे तो आपणुं सारुं थाय. तथा मंत्र जंत्र प्रमुखनी आशाए करे. ५ तथा लोकोत्तर धर्म कहेतां श्रीपाळने आंबिलनी ओलीथकी सारुं थयुं, तथा गुणमंजरी वरदत्तने पांचम करवाथकी सारुं थयुं, इत्यादिक बहु जणने तपजप धर्मकरणी थकी सारुं थयुं, तो आपणे पण अमुक तप प्रमुख करवा थकी सारुं थाय ॥ ६ ॥ ए छ मिथ्यात्व ते मध्ये त्रण लौकिक मिथ्यात्व तथा त्रण लोकोत्तर मिथ्यात्व छे, ए मिथ्यात्व ते वेहेवार थकी छे तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरना छे, तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरनो निश्चय मिथ्यात्व तेना दश भेद छे, देव मिथ्यात्व केहेतां जे देववीतराग जेनो रागद्वेष गयो, सर्व कर्म थकी रहित थया स्वरूप रमणी लोकालोक भास्कर, एवा जे अरिहंत परमात्मा तेने देव करी न जाणे ए प्रथम मिथ्यात्व./१ तथा जे देवपणुं नथी पाम्या, रागद्वेष विषय कषायना भरेला एवा जे हरिहरादिक तेने देव करीने माने ते वीजुं मिथ्यात्व. २ तथा जे साधु आत्मरमणीक स्वरुपानुंयायी परभाव त्यागी, स्वभाव भोगी. मंद कषायी, करुणासागर, ज्ञान-उपयोगी, एवा जे मुनिराज तेने साधु करी न

माने, ए त्रीजुं मिथ्यात्व. ३ जे असाधु रागद्वेष विषय कषायना भरेला, आत्म स्वरूपना अजाण, शुभाशुभ करणीना रागी, जड भावमां रच्या पच्या रहे, तेने साधु करीने माने, ए चोथुं मिथ्यात्व. ४ धर्म जे वस्तुनो स्वभाव तथा जीवदया, स्वपरनो जड चेतननो विभाग, इत्यादिक जे केवली भाख्यो धर्म तेने अधर्म माने, ए पांचमुं मिथ्यात्व ॥५॥ जे अधर्म जीवदया प्रमुख नहीं तथा वस्तु स्वरूप जाण्या विना क्रिया कष्ट तपजप प्रमुखने धर्म माने ते छठुं मिथ्यात्व. ॥ ६ ॥ जे जीव स्वरूप चेतना लक्षण चार संज्ञा सहित तथा एकेंद्रिथी ते पंचेद्री पर्यंत अनेक थानक उपजवानां तथा वीणसवानां शास्त्रादिक न जाणे, ने इत्यादिक स्वरूपने जीव न माने ए सातमुं मिथ्यात्व. ७ जे अजीव पदार्थ जड छे तेने वण समजणथी केटला एकठामने विषे जीव करीने माने छे ते आठमुं मिथ्यात्व. ८ मुक्ति केहेतां सरव जड भागनो त्यागी सर्व कर्म रहित शुद्ध स्वरूप जेवुं सत्ताए हतुं तेवुंज निर्मल प्रगट थयुं, ने लोकने अंते सिद्ध स्वरूप थइने वीराजमान थया तेने मुक्ति न माने ते नवमुं मिथ्यात्व. ९ जे अमुक्ति केहेतां जे संसारना वैभव थकी छुटया नथी, चाकर ठाकरपणुं ज्यां रह्युं छे जन्म मरण जेनां गयां नथी, एवा जे वैकुंठ गोलोक यावत् जीव पर्यंतने जे मुक्ति माने छे ते दशमुं मिथ्यात्व. १० ते दश मिथ्यात्व पांच प्रकारे करीने मानवामां आवे. जे पुर्वे ए दश कह्या ते मांहेला जे बोल जे कुगुरुना झलावेला ते प्रत्ये छांडे नहि, सुगुरु मळे समजावे तोयेपण हठवाद छोडे नहि, तेने अभिग्रहित मिथ्यात्व पेहेलुं कहीए. १

हवे ते मध्ये केटलाएक जीव एम जाणे जे सुगुरु केहेछे ते पण ठीकज छे, तथा पूर्वे कुगुरुए समजावेलुं छे, ते पण ठीकज छे,

आपणे ए कुटमां पेसवुं नहि, आपणे तो सर्वे मानवा जोग छे, एवुं जे विचारे छे तेने सुगुरु कुगुरुनी परीक्षा न थइ, तथा सत्यासत्य वचननी परीक्षा न थइ, तेने एक वातनो निरधार पण न थयो तेने मन दूध अथवा छाश बंन्ने एके पाडे जाय तेने अनाभिग्रहित मिथ्यात्व कहीए. २

जे पूर्वे सुगुरुए बताव्या, एवा जे दश बोल ते सारी रीते समजेलो ते कोइ कर्मना उदयथकी अणस्मृतिथी वचन नीकल्युं, पछी पोते समज्यो के आ वचन तो हुं बोलतां बोल्यो परंतु हुं बोल्यो ते वचन पाछुं न फरे, एवुं धारीने खोटी युक्तिओ करी, ते वचनने साबित करे तथा कोइ वात उपर ममत थतां ते धर्मने खोटुं करवा चाहे ते धर्मने तोडवा चाहे,ए सर्वे जाणीने करवुं रह्युं अथवा कल्प व्यवहारनी मर्यादा वास्ते आत्मस्वरूपने जाणतो थको शुद्ध मार्गनी खबर वालो जीव जडनी पुष्टि करे, एटले शुभाशुभ क्रियानी पुष्टि करे तेने जडनी पुष्टि करी कहीए. शामाटे के क्रिया त्यां कर्म छे माटे ए सर्व जडनुं पोषण थयुं, शा माटे के इहां कर्मनुं वधारवुं थाय छे, एवी रीते जाणीने एवा काममां प्रवर्ते तेने अभिनिवेशिक मिथ्यात्व कहीए. ३

एज पूर्वे दश बोल कह्या इत्यादिक बोलोने विषे शंका पडे जे कोणे जीव दीठो, तथा मुक्ति अरिहंत ए कोणे दीठां छे, इत्यादिक सर्वे परंपराथी केहेता आव्या ते मानीए छीए. शुं जाणीए के ए वस्तु साची छे के जूठी छे, अने शास्त्रनो कांइ भरोंसो पडे नहि, केमके जेम आ स्वामीनारायण काल नजरे थयो तेणे महा दुःख महा कष्ट करी घणो द्रव्य राजा तथा ब्राह्मणने खवरावीने पोतानो धर्म चलाव्यो, ते सर्वे आपणे प्रत्यक्ष नजरे दीठेलुं छे, तेने लोक एना मतवालो भगवान करीने माने छे, तथा कुबेर भक्त

हाल वर्त्तमान बेठोज छे, तेने पण तेना मतवाला भगवान केहे वानी इच्छा राखे छे, ते जाणीए छीए के चारे दहाडे एने मुवा पछी भगवान ठरावशे, तेनां कर्तव्य सर्व आपणे प्रत्यक्ष नजरे देखीए छीए, एम आगलना कोइ ढोंगीथी आ धर्म चलाव्यो होय तो केम खबर पडे ? अने शास्त्र उपर जो जोवा जइए तो हाल जे उपरना कह्या ते धर्मवालाए शास्त्र नवां बांधेलां छे ते धणीए पण घणी जुक्ति अने हलाहल खोटी वार्त्ताओ मांहेली कोरे नांखी छे, ते धणीना विद्यमानना देखवावाला नहि होय त्यारे केटला लोको एवुं जाणशे के अहो भगवाने आवां आवां काम करेलां छे, ने ते प्रत्यक्षपणे आपणे जोइए छीए के खोटां शास्त्र बनाव्यां छे एम आगलनाए तेवां शास्त्र बनाव्यां होय तो तेनो शो भरोंसो रहे ? एम मनमां शंका कंखा जेने रेहेती होय तेने संशयिक मिथ्यात्व कहीए. ४

शिष्यवाक्यः—स्वामी तमे संशयिक मिथ्यात्व कह्युं ते ठीक पण प्रत्यक्ष आ लोकोनां जे शास्त्र अने आ लोकोना भगवान् आपणे देखिये छीये, तेमज आ धर्म सामाने भासन थाय. सत्यधर्म शा थकी भासन थाय एतो कांइ इहां बेसतुं नथी, पछी तमे जोरावरीथी मनावो तो मोटा छो, कोण जोइ आव्युं के एटली वस्तु पूर्वे बनेली छे के एवा ढोंगी पुरुषे पोताने पूजावा वास्ते अथवा पोतानी पंडीताइ देखाडवा वास्ते उभुं कर्युं छे, जेम आ डाकोरनी मूर्ति गुगली लोको द्वारकांथकी चोरीने लइ आव्या छे अने ते डंक नामा पुराण जे आमोदना दीनानाथ नामे ब्राह्मणे बनाव्युं छे, ते धणीये डाकोरनुं देहेरुं तथा गामनां झाड प्रमुख सर्वे सोनानां कह्यां छे, ते दीनानाथ भटने मुवाने वरस दशने आशरे थवा आव्यां ते धणीए एवां गप्पां प्रत्यक्ष मारेलां छे तेम बीजा शास्त्रवालाए पण

गण्यां मारयां होय तो, शी मालुम पडे माटे ए ठेकाणे तो, शंका मोहोटीज रहे, ते वातमां संदेह नही. गुरु वाक्यः—हे भद्र, एवी तने महामोटी शंका उत्पन्न थइ तो ताहारो समकितादिक गुण क्यां रह्यो, प्रत्यक्ष नास्तिक पणु भासन थाय छे माटे एवी शंका न जोइये हवे हुं तने ए शंकानो उत्तर आपुं ते तुं स्थिर चित्त करीने सांभल अने तारा मननी शंका कंखा होय अथवा आ उत्तरमां शंका उत्पन्न थाय ते पूछीने निश्चल था. जे तने सर्व थकी धर्मनी शंका पडी तथा शास्त्रनी पण शंका पडी, माटे तने शास्त्रनो उत्तर तो हाल अम थकी देवाय नहि, परंतु न्यायवादे करीने जे उत्तर तने आपीये ते तुं धार. प्रत्यक्षपणे जीव छे ते खरो के नहि ? वादी कहे जीव कांइ दीसतो नथी, गुरुवाक्यः—जीव विना बोलवुं चालवुं ते कोण करे छे ? वादी कहेः बोलवानुं स्वरूप ते आकाशमां रह्युं छे, अने चालवुं ते जडनो स्वभाव छे. गुरु वाक्य—के जे बोलवानुं स्वरूप तें आकाशने विषे कह्युं, ते आकाशने विषे तो शब्दनो गुण छे, पण अक्षरादीक उच्चारण नथी, तथा चालवानो गुण जे ते पुद्गलनो स्वभाव कह्यो ते तो सूक्ष्म पुद्गलमां छे, परंतु बादर जे स्थुल पुद्गल तेमां कांइ चालवानो स्वभाव प्रत्यक्षपणे दीसतो नथी, तेमां प्रत्यक्ष चालवानो स्वभाव होय तो घट पटादीक चाल्यां जोइये, ए माटे चेतननोज गुण इहां लेवो. वादी उक्त—के जो चेतनमांहे होय ते थकी चालतुं होय तो तमारा केहेण थकी वनस्पतिमां जीव छे तो ते पण चाली जोइए. गुरुवाक्यः—वनस्पतिने विषे इंद्रि एकज छे तथा ए चाली शके नहि, वादी उक्त. एकेंद्रि जे काया छे तेथी चाली न शके तो बीजी चार इंद्रिमां तो चालवानो स्वभाव छेज नहि, तो जीवनुं चालवुं शानुं रह्युं माटे अमे कहीये छीए के चालवुं ते जडमांज छे, जेम घडीआल प्रत्यक्ष

जड छे ते एनी मेळे चाल्या करे छे तेम ए काया पण पुद्गल चाले छे, इहां कांइ जीवनुं कारण छे नहीं, गुरु वाक्य—जे कांइ घडीयाळ चाले छे ते जीवनी बनावेली कल ते उपरथी चाले छे, ते पण जीवने आठेने आठे दहाडे संभाल लेवी पडे छे, कुंची फेरवे छे चक्कर प्रमुख लुंछी पुंजी पाछां चढावे छे, त्यारे चाले छे पण कांइ तेनी मेळे चालती नथी, तथा तें जे कह्युं के चार इंद्रि बीजामां चालवानो गुण छे नहि ते खरुं छे, परंतु बीजी इंद्रिओ आव्या विना फरश इंद्रि थकी चलाय नहि, केनी गोडे के जे दूध छे तेमांथी कोइ घीकाहाडवा चाहाशे, तो पण सर्वथा नीकळी शके नही, पण जो पैसा भार मेळवण पडे तो पछी घी नीकले तेम एकेंद्रिमां बीजी इंद्रिनी प्राप्ति थाय तोज चालवानी गति आवे पण ते विना चालवानी गति आवे नही. वादी उक्तः—जेम बीजी इंद्रिना मळवा थकी तमे चालवुं कह्युं, ते वारे एवुं भासन थाय छे के इंद्रिओमांज चालवानो गुण रह्यो छे पण कांइ जीव पण जो दीसतु नथी.

गुरुवाक्यः—जीवपणा विना इंद्रिओनुं बांधवुं कोण करे माटे जे इंद्रिओ बांधे छे तेज जीव छे, वादी उक्तः—जे तेम इंद्रिओना बांधनाराने जीव ठरावो छो ते तो कंइ संभवतो नथी जे त्रसरेणु प्रमुख उडी उडीने घर प्रमुख अवावर जगाने विषे पडे छे ते रज पाछी स्थूल थाय छे तेमां तो कोइ शास्त्रवाला जीव केहेता नथी, तो ए इंद्रि एक कोणे बांधी माटे जडनो कर्त्ता जड छे. गुरु वाक्यः ते त्रसरेणु प्रमुख जे खंध ते सरवे पृथ्वी काय वनस्पतिकायना छे ते प्रथम जीवना बांधेला एकेंद्रिनाकायना पुद्गल छे जीव विना वनस्पतिकाय प्रमुख थाय नहीं. वादीयुक्तः—वनस्पति प्रमुखनुं जे थवुं छे ते माटी पाणीना जोगथी उत्पत्ति थाय छे एमां कंइ जीवनुं कारण दीसतुं नथी. गुरुवाक्यः—जीव विना उगे

नहीं, के जुवो प्रत्यक्ष जे कंइ झाड छे, ते जेना मांहे जीव होय ते पाणीना जोगथी नव पल्लव थाय, परंतु तेज व्रक्षनी डाली जीवरहित थइ होय तेने कांइ पल्लव आवे नहि माटे जीव छे ते सत्य छे. वादीयुक्तः—के ते डालीना पुद्गल घणा खरी गया हशे तेथी तेने पल्लव आवतुं नथी जेम वृद्ध पुरुषने छोकरां न थाय तेम एने पण पल्लव नथी आवतुं. गुरुवाक्यः—तेहीज वृद्ध पुरुष वीर्यहिण थयो तेथी तेने छोकरां न थाय परंतु आहार तो ते पुरुष करे तेम ए डाली प्रमुखने विषे पल्लवतो ना आवे परंतु पाणी तो खेंच्युं जोइए, तो तारी वात खरी थाय परंतु पाणीनो रस खेंचवानी एनी शक्ति नथी. शक्ति तो जीव होय त्यारेज पामीए. वादीयुक्त—जो पाणीनो रस खेंचवाथकी जीव मानो तो मृतिकाना हाथी प्रमुख अनेक जनावर आवे छे, तेने जेटलुं पाणी मुकीये तेटलुं पीधे जाय छे, माटे तेने पण जीव मान्यो जोइये गुरुवाक्य—एतो पाणी पीए छे तेम मूतरतुं जाय छे. तेनी कायामां कांइ रेहेतु नथी माटे ए जडरूपज छे, वादीयुक्त—कायामां जे रसनो संग्रह तेने तमो जीव मानो छो, ते तो जठराग्निनुं जोर होय ते रसपाचन घणुं करे, जेने जठराग्निनुं जोरमंद होय ते रसपाचन ओछुं करे, माटे रसना ग्रहण अग्रहणथकी जीवनो निर्णय न थाय शा माटे के पांच भूत मलीने एक स्थूल बंधाय छे ते पांचे भूत पोतपोतानां काम करे छे तेमां कांइ जीवपणुं न मनाय. गुरुवाक्य—जो पांच भूत पोतपोतानुं काम करे छे, तो पृथ्वि आदिक चार थावरने विषे वायुतत्व शुं काम करे छे ? वायुतत्व इहां कांइ काम करतो दिसतो नथी, शा माटे के पृथ्वि आदिक थावरने विषे एक एक तत्वनी मुख्यता छे एटले पृथ्विकायने विषे पृथ्वी तत्वनी मुख्यता छे अपकायने विषे जल तत्वनी मुख्यता छे, अग्निकायने विषे अग्नितत्वनी मुख्यता छे

वायुकायने विषे वायुतत्वनी मुख्यता छे, अने वनस्पतिकायने विषे पृथ्वीतत्वनी मुख्यता छे, ए पांच थावर मध्ये अग्निकायने विषे अग्नितत्व तथा पृथ्वीतत्व बेनी मुख्यता दीसे छे, तथा वनस्पतिकायने विषे चार तत्वनी मुख्यता दीसे छे. पृथ्वीतत्व तथा जलतत्व तथा अग्नितत्व तथा आकाशतत्व ए चार तत्वनी मुख्यता जोवामां आवे छे तथा बेरेंद्रियादिक जे त्रस जीव रह्या तेने विषे पांचे भूत मालुम पडे छे, परंतु ए पांचे भूत कांइ जीव नथी ने ए पांचे भूत जीव विना रसपाचन करवा समर्थ नाहि, तथा चालवा पण समर्थ नाहि तथा अक्षर उच्चारण करवा कांइ समर्थ नाहि, ए कारण सर्वे जीव होय त्यारेज बने. वादीयुक्त–चालवुं हालवुं सर्वे वायुतत्वना बलथकी थाय छे, ज्यांसुधी वायुतत्व होय त्यां सुधी ए रसपाचनादिक सर्वे कार्य करे ने वायुतत्व गयाथी ए सर्वे तत्व जुदां पडे छे ते प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे इहां कोइ जीव स्वरूप दीसतुं नथी. गुरुवाक्य–तुं वायुतत्वने जीव सरखो माने छे. ए तारी मोटी भूल छे केमके अक्षर उच्चारण करवानी शक्ति, वायुनी होय नाहि तथा शुभाशुभ वेदवुं, ते पण वायुतत्व जाणे नाहि, केमके वायु तत्वथकी श्वासोश्वास लेवाय छे, परंतु–शुभाशुभमां ए जड शुं समजे, तमे तमारा मनमां विचारी जुओ. वादीउक्त–शुभाशुभनुं जाणवावालुं तो मन छे अथवा नवा विचार उठाववावालुं पण मन छे पण कांइ जीव तो दीसतो नथी.

गुरुवाक्यः—एज जीव गया पछी जे कलेवर पडेलुं छे ते केम कंइ शुभाशुभ वेदतुं नथी, इंद्रिओ तो पांचे साबुत छे, एक वायु तत्व मांहेथी गयो छे, परंतु तेने कांइ शुभाशुभ कारण छे नहि. वादीयुक्तः—मननो नाश थइ गयो माटे. कोण वेदे ? गुरुवाक्यः वायुतत्व गयो छे पण मन तो तमारा कीधाथी गयुं नथी. वादी

युक्तः—मन ते वायु छे के नहि. जगतमां मन पवन केहेवाय छे माटे मन तो वायु मेगुंज गयुं. गुरुवाक्यः—जो मनथकी शुभाशुभ वेदे छे तो पृथ्वी आदिक थावरने विषे वेद्युं जोइए, परंतु पृथ्वी, वनस्पति इत्यादिक जे छे ते कंइ शुभाशुभ ने वेदता नथी तो शुं एने तमे एक भूत मानो छो के पांचभूत मानो छो कदापि तमे केहेशो के पृथ्वी आदिकने एक एक भूत मानीएछीए तो वनस्पति काय भूतमां छे नहि. वादीयुक्तः—वनस्पाति पृथ्वीतत्वमां गणीएछीए. गुरुवाक्यः—पृथ्वी तत्व छे तो ए रसशाथकी पाचन करे छे ? तो प्रत्यक्ष इहां अग्नि तत्व दीसे छे, तथा तेनां पान प्रमुखने मरदीए तो रसनीकले छे, तो जलतत्वपण दीसे छे तथा खीली प्रमुख एनेविषे मारीए तो मांहेली कोरे समाय छे तो आकाशतत्व पण दीसे छे, ए चार तत्व वनस्पतिने विषे दीठामां आवे छे, ने वायुतत्व दीठामां आवतो नथी अने रसनुं पाचन वायुतत्वविना इहां थाय छे, तो इहां जीव खरो के नहि ? अने जो जीव न मानो तो पांचभूत इहां मेळवी आपो, पांचभूतविना पुतळुं बंधाय नहि, एवी तारी बोली छे. वादीयुक्तः—तमारा शास्त्रमां श्वासोश्वास पर्याप्ति तथा श्वासोश्वास प्राण कह्यो छे ते वायुतत्व ज छे. गुरुवाक्यः—तुं शास्त्रतो प्रथम मानतो नथी तथा परोक्ष वस्तु पण मानतो नथी अने हवे तने उत्तर देवानी जगो न मळी त्यारे तें शास्त्र देखाडवा मांड्यु तो एम परोक्षने वाञ्छे छे त्यारे जीवज कबुल करनी अने शास्त्रमां पण जीव कहेलो छे एम शास्त्रथी पूछीश तो अमारे जवाब देवानुं घणुं सुलभ छे माटे जीव छे ते सत्य छे खोटी कल्पना शाने करे छे वादीयुक्तः—एम जोतांतो जीव भासन थाय छे परंतु जीव ते केवो हशे अने जीव कांइ दीठामां आवतो नथी तेथी मनमां शंका रहे खरी माटे अमने जीवनुं स्वरूप बराबर गळे उतारो तो अमारी

शंका मटे. गुरुवाक्यः–जीव केवो हशे ते जीव तो अरुपी छे ते कंइ देखाय नही, परंतु एनां लक्षण स्वभावे करीने जाणवामां आवे ते जीवनेविषे आठ सामान्य लक्षण छे तेनां नाम कहीएछीए अस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ अगुरुलघुत्व ५ परदेशत्व ६ चेतनत्व ७ अमूर्तत्व ८ ए आठ जीवना सामान्य गुणछे, तथा छ विशेष गुण छे, तेनां नाम ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४ चेतनत्व ५ अमूर्तत्व ६ हवे तेनो अर्थ संक्षेपथी देखाडीऐ, छीए, जीव द्रव्यना गुण ते द्रव्यने वळगीने रह्या छे तेनो कोइ काले नाश न थाय तेने अस्ति स्वभाव कहीए. वादीयुक्तः–जीव द्रव्य तेशुं ? एटले जीव केहेतां शुं ? द्रव्य केहेतां शुं ? ने गुण केहेतां शुं ? तेनी अमने समज पडी नथी ते अमने प्रथम समजण पाडीने पछी आगळ चालो.

गुरुवाक्यः–जीव तो जे पूर्वे कह्यो ते चेतना लक्षणे करीने सहित होय तेने जीव कहीये. अने खंध जे एक आखो होय कोइ काले खंडन न थाय तेने द्रव्य कहीए. अने गुण जे द्रव्यने ओलखावे तेने गुण कहिये, जेम पट छे ते ओढवा पेहेरवा खप लागे तेथकी ओलखीएके ए पट छे, तथा घट छे ते जल भरवा खप लागे ते गुणवडे करीने घट ओलखाय, एटले एक द्रव्यनो गुण बीजा द्रव्यमां मळे नाहि जेम घट ओढवा खप न लागे, पट छे ते जल भरवा खप न लागे एटले ते पोते पोतानो गुण पोताना द्रव्यने मळीने रह्यो छे तेथकी द्रव्यनी ओलखाण थाय छे हवे ते द्रव्य छ प्रकारना छे तेनां नाम धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ काल ६ ए छ द्रव्य छे ते मध्ये धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ४ एच्यार द्रव्य एक एकज अनेजीव द्रव्य एक एवा अनंता छे,

ने पुद्गल द्रव्य परमाणुरूप अनंता छे, तथा द्वीप्रदेशीनी आदे देइने अनंत प्रदेशी खंध एवा द्रव्य उपचारे करीने अनंता छे हवे जे जीवस्वरूप छे ते कहीए छीए, एटले एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अनंता गुण छे, ने अनंता पर्याय छे, ते स्वरुपसर्वे प्रमाण-नयथी जाणवामां आवे, तेप्रमाण नयना बेभेदछे, एक प्रत्यक्षप्रमाण बीजो परोक्ष प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाणना बे भेद, केवलज्ञानसर्व प्रत्यक्ष प्रमाण छे, ए प्रथम भेद १ अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान ए देश प्रत्यक्ष प्रमाण २ हवे परोक्ष प्रमाण केहेतां मति श्रुतज्ञान ते परोक्ष प्रमाण छे. तेना बे भेद एक द्रव्यथकी १ बीजो पर्यायथकी २ ते द्रव्यार्थिकना १० भेद छे, तथा पर्यायार्थिकना छ भेद छे, तथा ए द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक ए बे नय मलीने सात नय पण थाय छे, तेनां नाम, निगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ ऋजु-सूत्र ४ शब्द ५ संभीरुढ ६ एवंभूत ७ तथा व्यवहारनयना पक्षथकी उपचारे त्रण उपनय पण थाय छे, तेनां नाम सद्भूत व्यवहार १, असद्भूत व्यवहार २, सद्भूतासद्भूत व्यवहार ३, तेनुं स्वरूप आगल कहीशुं. हवे द्रव्यार्थिकना दश भेद देखाडीए छीए. हवे शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेतां कर्म उपाधिरहित सत्ता स्वरूप जोइए तो सर्वे संसारी जीव सिद्धरूप छे. ए ते शुद्ध आत्माज केहेवाय १, नित्य द्रव्यार्थिक केहेतां उत्पाद व्ययने न विचारीए तो शुद्ध द्रव्य सत्ताने विषे जोतां ते नित्य छे २, तथा अति शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेतां भेद कल्पनानी अपेक्षा न करवी जेथी गुण पर्यायरूप द्रव्यनुं इहां अभिन्नपणुं थयुं ३, कर्म उपाधि सापेक्ष स्वरूपनुं विचारवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक कहीए. जेम क्रोधी आत्मा, इत्यादिक नाम धरावे ते ४, उत्पाद व्ययनी अपेक्षा सहित स्वरूपनुं जोवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक, जेम एक समयमां उत्पाद व्यय ध्रुव आत्मा छे ५ भेद कल्पनानी

अपेक्षा लेइने स्वरूपनुं जोवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक छे, जेम आत्माना ज्ञानदर्शनादिक गुण छे एवुं बोलवुं ६, अन्वय द्रव्यार्थिक कहेतां गुण पर्याय स्वाभाविक द्रव्य, ७, स्वद्रव्यादि ग्राहिक द्रव्यार्थिक जेम स्वद्रव्यादि चतुष्टयीक अपेक्षा द्रव्यास्ति ८, परद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक यथा परद्रव्यचतुष्टिय अपेक्षाए द्रव्यनास्ति ९. परमभाव ग्राहिक द्रव्यार्थिक यथाज्ञान स्वरूप आत्मा एटले अनेक स्वभाव चेतनना छे ते मध्ये ज्ञान मुख्यपणे छे, शामाटे के ते स्वपरप्रकाशक छे ते वास्ते १०, एटले द्रव्यार्थिकना दशभेद कह्या.

हवे पर्यायार्थिकना छ भेद कहीए छीए. अनादि नित्यपर्याय कहेतां पुद्गलपर्याय नित्य छे. १ सादि नित्यपर्याय कहेतां सिद्धपर्याय नित्य छे. २ शुद्धपर्याय कहेतां सत्तानी गुणताए उत्पात व्ययनुं ग्रहण स्वभाव ते सदा अनित्य छे, एम समये समये पर्याय विणसे. ३ सत्तासापेक्षभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. ४ हवे कर्म उपाधि निरपेक्ष स्वभाव अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. जेम सिद्धना पर्याय तादृशरूप अथवा संसारीना पर्याय अशुद्धज कहीए. ५ कर्म उपाधि सापेक्ष स्वभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. जेम संसारी जीवनी उत्पत्ति मरण खरुं छे. ६ एटले पर्यायार्थिकना छ भेद कह्या.

हवे सातनयनां नाम मात्र संक्षेपे देखाडीए छीए. निगमनय अतित अनागतादिक आरोपणने माने छे १, संग्रहनय छे ते परस्पर अविरोधी छे २, व्यवहारनय देखता भेदने वेहेंचे छे३, ऋजुसूत्र वर्त्तमानग्राही छे. ४ शब्दनय शब्दादिकग्राही छे. ५ संभीरुढदेश उणाने वस्तु माने छे. ६, एवं भूत संपूर्णने माने छे. हवे उपनयना भेद देखाडीए छीए. शुद्ध सद्भूत व्यवहार केहेतां शुद्ध

गुणगुणीना तथा शुद्ध पर्यायना केहेवा, ए पेहेलो भेद १, अशुद्ध सद्भूत व्यवहार अशुद्धगुण अशुद्ध गुणीना अशुद्ध पर्यायना भेद केहेवा ते बीजो भेद २, स्वजाति सद्भूत व्यवहार केहेतां बहु परदेशनुं केहेवुं १ विजाति सद्भूत व्यवहार यथा मूर्तिमान, ज्ञान दर्शन तथा द्रव्य तथा आत्मा कहेवो २, स्वजाति विजाति सद्भूत व्यवहार एटले जीवअजीव ज्ञाननुं कथन भेगुं करवुं, जेम अमुक पुरुष ज्ञानी छे ३, हवे असद्भूत व्यवहारना त्रणभेद स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार केहेतां पुत्रकलत्र इत्यादिक ए मारुं छे १ विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार कहेतां वस्त्रआभरण प्रमुख माहारुं छे२, स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार एटले देश नगर राज्य माहारुं छे ३, हवे जे पुत्र प्रमुख पोताना कहे ते जीवजीव स्वजाति छे ने तेनुं जे शरीर प्रमुख ते विजाति छे; परंतु जीव आश्रीने स्वजाति कहीए. पण जीव कोइ कोइनो छे नहि, पण उपचारे करीने पोतानो माने छे, ए पेहेला भेदनो अर्थ थयो. हवे विजाति कहेतां जे वस्त्र आभरण तेने विषे कांइ जीव छे नहि, माटे ए अपरजाति तेने विजाति कहीए ते पण वस्तुना भोगदारी अनेक थइ गया ते पण कांइ पोतानी छे नाहि, परंतु उपचारे करीने पोतानी मानी छे, ए बीजानो अर्थ, तथा स्वजाति विजाति केहेतां जे देश नगर प्रमुखने विषे जीव छे ते स्वजाति छे, ने देशादिक ऋद्धि छे ते विजाति छे एटले ए बे मलीने स्वजाति विजाति त्रीजो भेद थयो, ते पण कांइ आपणुं छे नाहि, आपणाथकी तो भिन्न छे परंतु उपनये करीने आपणुं माने ए त्रीजा भेदनो अर्थ; एटले नय अधिकार पुरो थयो.

एवी रीते विचारे तो जीवनुं स्वरूप हाथ आवे, पण कांइ रूपी नथी के देखाडवामां आवे, माटे एना जे कोइ अस्तित्वादिक

गुण ते थकी वस्तु हाथमां आवे, ते अस्तित्व स्वभाव प्रथम कह्यो छे. हवे तेना सात गुण बाकी रह्या तेनुं स्वरूप कहुं ते सांभळ. बीजो स्वभाव वस्तुत्व एवे नामे एटले वस्तुनो जे स्वभाव ते फीटीने बीजी वस्तु न थाय, एटले घट फीटीने पट न थाय, ने पट फीटीने घट न थाय, यद्यपि सामान्य विशेष वस्तुनो स्वभाव दिसे, जेम एक जीव मुक्तिने विषे प्राप्त थयो ने एक जीव संसारमां छे अथवा जेम एक घटने विषे घी भराय ते घीनो घट कहेवाय, एक घट अशुची प्रमुखनो ते अशुचीनो कहेवाय, एम सामान्य विशेष जणाय, परंतु वस्तु धर्म पोतानुं छोडीने बीजुं धर्म ना आदरे,ए बीजो गुण द्रव्य स्वभाव केहेतां निज निज पोत पोताना प्रदेशना समुदाये करी अखंड वर्त्तता स्वभाव छे एटले जीव संख्यात प्रदेशी द्रव्य छे. धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय असंख्यातप्रदेशी द्रव्य छे आकाश अनंतप्रदेशी द्रव्य छे. ए चारे अखंड द्रव्य छे. ए चारे द्रव्य कोइ काळे खंडीत थाय नहि, ए द्रव्यत्वस्वभाव कहिये. शिष्य वाक्य—स्वामि पूर्वे छ द्रव्य कह्यां छे अने इहां चार द्रव्य केम बताव्यां. गुरुवाक्य —जो पुद्गल द्रव्य परमाणुने कहिये छीये तो प्रदेशादिक लाधता नथी अने जो खंधने द्रव्य कहिये छीये तो ए स्वाभाविक द्रव्य छे नहि ए विभाविक द्रव्य छे, माटे एना द्रव्यना विचारनी चरचा घणी छे ते इहां जो करवा बेसीये तो ग्रंथ गौरव थइ जाय माटे ए द्रव्य इहां गणाव्यो नहि तथा काळद्रव्य छे ते उपचारे छे. ए कांइ वस्तु कशी छे नहि माटे ए पण इहां गण्यो नथी ते माटे चार द्रव्य अखंडीत छे एने विषे द्रव्यत्वस्वभाव रह्यो छे, एने विषे सत् द्रव्यपणानुं लक्षण तादृश्य रूप दीसे छे. पोताना गुणपर्यायने विषे व्यापी रह्यो, उत्पादव्यय ध्रुव संयुक्त तेने द्रव्य कहिये, एटले ए द्रव्यनुं लक्षण कह्युं ए त्रीजो गुण. ॥ ३ ॥ प्रमेयत्व कहेतां जे स्व-

परनी वहेंचण तेनुं जे प्रमाण तेने प्रमेयत्व कहिये, तथा पोत पोताना स्वभावने विषे परिणमवुं, परभावनो त्याग करवो, तेने प्रणम्यत्व कहिये ए चोथो गुण. ४ अगुरु लघुत्व कहेतां सूक्ष्म भाव वचन गोचर नहि प्रत्यक्ष नहि, आगमप्रमाण छे ते पन्नवणा थकी जाणजो ५ प्रदेशत्व कहेतां सुक्ष्म जे भाव परमात्मा भाषित तत्वनुं जे हेतुपणु जेहने न होय ते, आज्ञा सिद्ध करवुं केमके द्रव्य अन्यथा न होय, प्रदेश स्वभाव कहेतां खेत्रनो अविभाग तेने प्रदेशत्व कहिये. ६ चेतनत्व कहेतां चेतनपणुं एटले चेतननुं अनुभववुं यदुक्तं—

॥ श्लोक ॥

चैतन्य मनु भुति स्यात् सक्रिया रुप मेवच
क्रिया मनोवचःकायेष्व चिंतावर्तते ध्रुवं. ॥ ७ ॥

एटले चेतनत्वपणुं कह्युं. ७ अमूर्तित्व एटले रूपादिके करी रहित. ८ ए आठगुणे करीने सहीत तेने जीव कहिये, इत्यादिक वीजा पण जीवनी ओलखाणना स्वभावादिक छे ते आगल प्रसंगे आवशे त्यां केटलाएक कहेवाशे. एटले एवी रीते जीवनुं स्वरूप ओलखवुं, शंका कंखा होय ते काढी नांखवी.

तथा जे शास्त्रनी शंका ते पण समजवुं के सर्वज्ञनां वचन अने छद्मस्थनां वचन कांइ छानां रहे नहि एटले सर्वज्ञनां वचनने आत्मस्वरूपनी रमणता तथा जीवादिक नव तत्व षट् द्रव्य ते पक्ष प्रमाणादिके करीने जाणवा तथा जे नय निक्षेपा प्रमाण प्रमुखे भेद वहेंचवा ते नय शुद्ध व्यवहार कह्यो छे शामाटे जे विकल्पे करीने ए सर्व भंग जाल थाय छे, मूल स्वभावे जोतां तो कांइ ते स्याद्-

वाद पक्षनी खप छे नहि इहां तो अभेदज्ञान मुख्यपणे खप लागे छे. शिष्य वाक्य–स्वामी स्याद्वादनी खप नथी त्यारे तो एकांत वचन थइ जाय–गुरुवाक्य–जे स्याद्वाद वर्णवनुं तेज व्यवहार छे–तथा खटदर्शन समुच्चय ग्रंथनी टीकामां एमज कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥ वाद इति विकल्प ॥

ते माटे एक आत्मस्वरूपनुं रमण तथा आत्मानी वार्त्ता तेज सत्य छे–शिष्यवाक्य–त्यारे एटला बधा भेद करवानुं शुं कारण–गुरुवाक्य–जे ए भेदादिक वहेंचवा थकी सामाने घणो खुलासो थाय एटला वास्ते करीने भेदनुं वहेंचवुं थाय छे माटे एवां शास्त्र जे छे ते सर्व जाणवां–शिष्यवाक्य–स्वामि जे गणिताणुजोग प्रमुख शास्त्र छे ते शा कारणे कह्यां हशे–गुरुवाक्य–जे गणिताणुं जोग छे ते जाणवारूप छे तथा धर्म कथानुजोग छे ते पण जाणवारूप छे अने जे चरणकरणानुजोग छे–ते एक आदरवा जोग छे. शिष्यवाक्य–स्वामि ए तो पुद्गलनी करणी छे तेने आदरवानु शुं कारण ? गुरुवाक्य–जो ए चरण करणानुजोग नहि आंदरे तो शासननी ओलखाण रहेशे नहि अने ओलखाण नहि रहेतो शासननो उच्छेद थइ जशे एटला वास्ते ए चरणकरणानुजोग बांधेलो छे.

॥ गाथा ॥

जइजिणभइयंपवजहंतो ॥ माववहारनयमयंमयह ॥
विवहारपरीवाये ॥ तिथुछेओजउवशं ॥ १ ॥

इत्यादिक वचन भद्रबाहु स्वामिनां पण छे माटे ए शासननी ओलखाण तथा शासनने राखवा माटे ए अनुजोग छे.

हवे पांचमुं अणाभोग मिथ्यात्व कहिये छीये. एटले अणाभोग कहेतां अजाणपणुं एटले तेने धर्मनी तथा वस्तुनी कशी मालम नथी. तेने अणाभोग मिथ्यात्व कहिये ५, एटले द्रव्य मिथ्यात्वना घरनुं ए निश्चयमिथ्यात्व थयुं. शिष्यवाक्यः–स्वामि, व्यवहारमिथ्यात्वना छ भेद कह्या, तथा निश्चयमिथ्यात्वना पंदर भेद कह्या तेमां फेर शो छे.

गुरुवाक्यः–व्यवहार मिथ्यात्वना छ भेद कह्या ते करणीरूप लोकना जोवामां आवे माटे एने व्यवहार कहीए अने निश्चय मिथ्यात्वना १५ भेद ते मनमां धारवा समजवाना छे, ए बाह्य लोकना जोयामां थोडा आवे माटे एने निश्चय मिथ्यात्व कह्युं, एटले द्रव्यमिथ्यात्वनुं स्वरूप कह्युं. हवे भावमिथ्यात्वनुं स्वरूप कहिये छीये. एटले भाव केहेतां आत्मानो स्वभाव जे धर्म धर्म करे ने परभावमां रमे तेने भावमिथ्यात्व कहीये. शिष्यवाक्यः–स्वामि अमने खुलासो करीने समज पाडो, संक्षेपथकी अमारी नजर पहोंचे नहि. गुरुवाक्यः–जे परभाव कहेतां जे जडनी दशा तेने परभाव कहीए एटले जडनां जे जे काम छे तेने धर्म करीने माने छे, कहेतां मन वचन कायाथकी जे करणी करवी ते सर्वे आश्रव छे, तेने संवर करी माने कहेतां जे जडनी क्रियाना वे भेद छे, शुभ तथा अशुभ, एटले संसारादिक करणी ते अशुभकरणी, तथा शुभना अनेक भेद छे एकेंद्रियादिकनी दया, तेनुं पालण पोषण, ए सर्वे पापानुबंधीया पुन्यने विषे छे, यथायोग तरतम योग छे, तथा जे बीजी शुभकरणी संघ तीर्थ यात्रा प्रमुख करवां कराववां ते पण सर्वे शुभकरणी छे, तथा जस विजयजी उपाध्याये समकितनां सडसठ बोलनी सझायने विषे एवुं कहयुं छे, जे आठ प्रभावक साधु न होय तो तीर्थयात्रा प्रमुखवाला छेक प्रभावक छे, एटले

ए कांइ आठ प्रभावकपणां छे नहि. तथा तेने समकितनो पण नियम छे नहि, तथा करणी पण शुभनीज छे,पछी तत्व तो केवलीगम्य.तथा जे व्रत नियम प्रमुख ते पण शुभकरणी छे, परंतु देशविरति सर्व विरति छट्टा सातमा गुणठाणाना यावत् अगियारमा सुधीना छे, तथा तप छे ते सर्व पुण्यानुबंधी पुण्यमां पण छे तथा निर्जरामां पण छे तेनो विवरो कहिये छीये. एटले पांचमा छट्टा गुणठाणा सुधी प्रमादभाव छें, तीहां सुधी क्रिया आचार पण छे, सातमे गुणठाणे अप्रमादी छे, तेमां कांइ क्रिया आचार छे नहि, ते छट्टा सातमा सुधी जेने आत्मउपयोग छे, तेने निर्जरा पण छे तथा शुभाश्रव पण छे अने जेने आत्मउपयोग नथी, तेने एकलो शुभाश्रव छे, अने जे सातमा उपर अगियारमा सुधी आत्मउपयोग विना होय नहि, तेने तो निर्जरा होय, तथा पुण्यानुबंधी पुन्य होय ए बंने वाना लाधे, माटे एम विचारी जोवुं, ए आश्रवने धर्म करी माने, तेने भाव मिथ्यात्व लागे, माटे जे धर्मने धर्म करी जाणे अने आश्रवने आश्रव करी जाणे, एवा जीव तो अल्प छे अने शुभाश्रवने धर्म करी मानवावाला जीव घणा दिसे छे, तेने भावमिथ्यात्व कहिए, तथा अनादि मिथ्यात्वादिक भेद गुण स्थानक क्रमारोहनी टीकायकी जाणजो, ते कारण माटे ए जे द्रव्यभाव मिथ्यात्व गया विना समभाव थाय नहि ने समभाव थया विना श्रद्धा स्थिर थाय नहि, श्रद्धा विना समकित होय नहि,समकित विना तप जप क्रिया प्रमुं कशुंये लेखामां गणाय नहि, अने ज्ञान विना तो धर्म तथा मुक्ति छेज नहि, शा माटे के आत्मस्वरूपना उपयोग विना तो समकित कहेवातुं नथी, उपयोग छे ते तो ज्ञानमां छे, ते कारण माटे ज्ञाननो खप करवो, शा माटे के ज्ञान छे, तेहिज समकित तथा चारित्र तथा मुक्ति कहीए, ते श्री जसाविजयजी उपाध्याये

सवासो गाथाना स्तवनमां कह्युं छे जे ज्ञाननो तिक्ष्ण उपयोग तेने चारित्र कहीए. ते माटे ज्ञान छे तेज चारित्र तेज मुक्ति छे.

॥ उक्तंच सवैया एकतीसा ॥

कोइक्रूरकष्टसहै तपसों शरीर दहै धुम्रपान करै अधोमुख व्हैके झुले हैः केइ महाव्रत गहै क्रियामें मगन रहै वहे मुनिभारमें पयारकेसे पुले है इत्यादिक जीवनकों सर्वथा मुगति नांहि फिरे जगमाहि ज्योंवयार के बधु लहै जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहिकोनिरवान करमके करतार भरममें भुले है. १

ते कारण माटे ज्ञान छे, एहिज मुख्य छे, माटे ज्ञानवडे करीने सर्व द्रव्यनुं जाणपणुं करीने पांच द्रव्य हेय जाणीने छांडवा, एक चेतना ज्ञानरूप उपादेय जाणीने आदरवो, तेथकीज आत्मानिःकर्म थाय, माटे आत्मानुं भासन करीने मांहे व्यापकपणुं करवुं ने रमण करवुं. त्यां भेदपणुं न लाववुं, एटले आत्मा तेज परमात्मा छे, एवी रीते तद्रूप स्वसत्तागवेषी अने शक्तिभावे गुण छे ते व्यक्तिभावमां रमण करे तेने जीवनमुक्त कहिए. तेनो आत्मा कर्म रूप रज थकी निर्मल थाय, तेना असंख्याता प्रदेश निर्मल करीने सिद्धक्षेत्रमां जइने सिद्धपणे रहे, तेने फरीथी जन्म मरण करवां न पडे, अनंता काल सदाए सुखमां रहे, ते विना कोइ मुक्ति चाहे छे, जे केटलाएक तो एम जाणे छे, के तपथकी मुक्ति लेइशुं, केटलाएक जाणे छे के क्रियाथकी मुक्ति लेइशुं, केटलाएक जाणे छे के प्रभु पूजावाथकी मुक्ति लेइशुं. पण ते वात मिथ्या छे, इहां कोइ

कहेशे के प्रभु पूजवामां मुक्ति ठाम ठाम कही छे, अने तमे ना केम कहोछो ! तेनो उत्तर—के मुक्ति तो आत्म स्वरूपमां छे, तथा जसविजयीकृत साडि त्रणसें गाथाना स्तवनमां वादीनुं एवुं वचन छे के अमे प्रभु पासे मुक्ति मागी लेइशुं, ते ना उत्तरमां एवुं कह्युं छे जे कोण मूले कर्ताने प्रभु पासेथी मुक्ति वेचाथी लेशो. एटले बोध वीन कांइ दीधुं आवनुं नथी तथा श्री हरिभद्र सूरिजिकृत पट दर्शन समुच्चय ग्रंथने विषे एवुं कह्युं छे के रागद्वेषना तजवाथकी, तथा ज्ञानदर्शन चारित्रना आराधन थकी मुक्ति मळे.

॥ उक्तंच ॥

जिनेंद्रो देवता तत्र ॥ रागद्वेषविवर्जितः ॥ हत मोह महामल्लः ॥ केवल ज्ञान दर्शनः ॥ ४७ ॥ सुरा सुरेंद्र संपूज्यः ॥ सद्भूतार्थ प्रकाशकः ॥ कृत्स्न कर्म क्षयं कृत्वा ॥ संप्राप्तः परमं पदं ॥ ४८ ॥ जीवा १ जीवौ २ तथा पुण्य ३ ॥ पाप ४ माश्रव ५ संवरौ ६ ॥ बंधो ७ विनिर्जरा ८ मोक्षौ ९ ॥ नवतत्त्वानि तन्मते ॥ ४९ ॥ तत्र ज्ञानादि धर्मेभ्यो ॥ भिन्नाभिन्नो विवर्त्तिमान् ॥ शुभाशुभ कर्म कर्त्ता ॥ भोक्ता कर्म फलस्यच ॥ ५० ॥ चैतन्य लक्षणो जीवो १ ॥ यश्चै तद्विपरीतवान् ॥ अजीवः २ ससमाख्यातः ॥ पुण्यं ३ सत्कर्म पुद्गलाः ॥ ५१ ॥ पापं ४ तद्विपरीतंतु ॥ मिथ्यात्वाद्यास्तु हेतवः ॥ यस्तैर्बंधः सविज्ञेय ॥ आ-

श्रवोसौ ५ जिनशासने ॥ ५२ ॥ संवर ६ स्तान्निरोधस्तु ॥ बंधो ७ जीवस्य कर्मणः ॥ अन्योन्यानु गमात्माच ॥ यः संबंधो द्वयोरपि ॥ ५३ ॥ बद्धस्य कर्मणः साढो ॥ यस्तुसा निर्जरा मता ८ ॥ आत्यंतिकोवियोगस्तु ॥ देहादेर्मोक्ष ९ उच्यते ॥ ५४ ॥ एतानि नव तत्वानि ॥ यः श्रद्धत्ते स्थिराशयः ॥ सम्यक्त ज्ञान योगेन ॥ तस्य चारित्र योग्यता ॥५५॥ तथा भव्यत्व पाकेन ॥ यस्यैतत्त्त्रितयं भवेत् सम्यग् ज्ञान क्रिया योगा ज्जायते मोक्ष भाजनं ॥ ५६ ॥ प्रत्यक्षंच परोक्षंच ॥ द्वे प्रमाणे तथा मते ॥ अनंत धर्मकं वस्तु ॥ प्रमाण विषयस्त्विह ॥ ५७ ॥ अपरोक्ष तयाऽर्थस्य ॥ ग्राहकं ज्ञान मीदृशं प्रत्यक्ष मितरंज्ञेयं ॥ परोक्षं ग्रहणे क्षया ॥ ६८ ॥

एटले जीनशासनुं मूल कह्युं, एटले जैननादेव केवा छे ? जिनेंद्रो केहेतां जीननाम सामान्य केवली ते मांहे इंद्र समान एवी तीर्थंकर परमात्माते देव छे ते रागद्वेषे करीने वर्जित छे, महामोहमल्ल केहेतां मोहराजाने हणीने केवलज्ञान केवल दर्शन पाम्या छे, माटे मोह तथा रागद्वेषने जीते तेनी मुक्ति थाय पण ते विना कांइ मुक्ति होय नहि, तथा सुरासुर इंद्रे पूजित ते शामाटे के सद्भूतार्थ केहेतां यथार्थ प्ररूपक छे, तथा कृत कर्म केहेतां पूर्वे शुभाशुभ कर्म करेलां तेनो क्षय करीने संप्राप्त केहेतां पाम्या छे, परमपद केहेतां

मुक्ति मत्ये एटले कर्या कर्म भोगव्या विना छूटे नहि. अने शुभाशुभ कर्म क्षय कर्या विना मोक्षे जाय नहि माटे कोइनाथी कोइनी मुक्ति थती नथी, तथा मुक्ति तो ज्ञानने विषे छे, तत्रज्ञानादि धर्मभ्यो कहेतां ज्ञानदर्शन चारित्र आदे धर्म कह्युं ते धर्म भिन्नाभिन्न कहेतां भेद तथा अभेद एटले जीवादिनव तत्वनुं वर्णववुं ते भेद धर्म कहिये तथा आत्मद्रव्यनुं जे गुण पर्याय सहित कहेवुं ते अभेद धर्म कहिये, तथा वचला श्लोकोमां ए नव तत्वनो विवरो छे ते नवे तत्वजीन शासनने मते कह्यां छे, एटले नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने समकिती कहिये, ते मध्ये पांच तत्व तजवां कह्यां छे अजीव. १ पुन्य. २ पाप. ३ आश्रव. ४ बंध. ५ कोइ कहेशे के पुन्य ने तजवुं केम कहो छो तेने कहिये के अमे कहेता नथी ते उपर लखेला श्लोकने विषेज पुन्य ने पुद्गल कहीने बोलाव्युं छे.

॥ उक्तंच ॥ पुण्यं सत्कर्म पुद्गलाइति वचनात् ॥

एटले पुन्य छे ते सत कहेतां शुभ कर्मना पुद्गल छे, पुद्गल तज्याविना तो मुक्ति थायज नहि, शामाटे के एज उपर कहेला, श्लोकने विषे कह्युं छे.

॥ उक्तंच. ॥

आत्यंतिको वियोगस्तु ॥ देहादे मोक्ष उच्यते ॥ श्लोक ५४ मो टीकाः ॥ तथेत्युपदर्शने ॥ परिपक्क भव्यत्वेन तद भावात् ॥ अवस्यक मोक्ष गंतव्येन ॥ पुंसस्त्रियो वाज्ञानदर्शन चारित्रत्रयं सपुमान् मोक्ष भाजनं ॥ मुक्तिश्रियं भुंक्ते सम्यगिति ॥ सम्यक्त ज्ञा-

नमागमा ऽवबोधः क्रिया चरण करण चरणात्मिका ॥ तासांयोग संबंधः नकेवल ज्ञान दर्शन चारित्रं वामोक्षहेतु किंतु समुदितं त्रयं ॥

एटले ए चोपनमा श्लोकनी टीका छे तेने विषे पुरुषादि वेदने विषे मुक्तिनी ना पाडी छे, तथा चरण सित्तरी करण सित्तरी थकी पण केवलज्ञान केवल दर्शननी ना पाडी छे. माटे परमेश्वर पूजवामां तो मुक्ति क्यां थकीज होय. मुक्ति तो ज्ञानदर्शन चारित्रने विषे कहि छे. ते टीका थकी जाणजो इहां कोइ कहेशेके चारित्र तो पंच महाव्रतादिक व्यवहारज छे के नहि, तथा ए पुन्य बंधाय खरुंके नहि ? तेनो उत्तर ए उपरना श्लोकने विषे पंचावनमो श्लोक छे तेने विषेज ए नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने समकिती कहीये, तेज सम्यक्त ज्ञान, तेने जोगे रमणता तेने चारित्र कह्युं छे अने साध्यसाधन जोग जे व्यवहार चारित्र तेनुं प्रयोजन, तथा फल आकाश कुसुमवत कह्युं छे, ते श्लोकनी टिका थकी जाणजो. जे समकित, ज्ञान, चारित्र, तेज मोक्ष छे शामाटेके

सम्यक्त ज्ञान क्रियायोगा

केहेतां तत्वनीजे श्रद्धा कहेतां जे द्रव्य गुण पर्याय ज्ञानादि रत्नत्रयीनुं सद् भासन प्रत्यक्ष वस्तुनु विचारवुं तेने ज्ञान कहीए. ने सद् वस्तुनी श्रद्धा करवी तेने सम्यक्त कहीए एटले श्रद्धा ते समकित जाणवुं, ते ज्ञान विचारवुं ते क्रिया एटले

सम्यक्त ज्ञान क्रिया योगा जायते मोक्ष भाजन

एटले एवुं समकित ज्ञान क्रिया होय ते मोक्षनुं भाजन

प्रत्यक्षंच परोक्षंत्र द्वे प्रमाणे तथा मते

ते प्रमाणनुं स्वरूप टिका थकी जाणजो, तथा

अनंत धर्मकं वस्तु प्रमाण त्रिषय स्त्विह ५७

यस्य टिकायेन कारणेन यदूत्पादव्यय ध्रौव्यात्मकं ततसत् सत्वरूप मिष्यते तेने कारणेन अनंत धर्मात्मकं वस्तु प्रमाण गोचर सर्व वस्तुषु उत्पत्यादित्रय युक्तास्यैवा अनंत धर्मता ते नैव पुनरनंत धर्मात्मकत्व मुक्तंन पौनरुक्त्यं ५७

ए टिकाने विषे उत्पाद व्यय ध्रुव्यात्मीकं ते सत तेने सत स्वरुप कहिए तेनी जेने इच्छा छे तेने अनंत धर्म आत्मिक वस्तु प्रमाण जाणीने सर्वे वस्तुनुं उत्पादादिक त्रिय युक्त सेवे तेने अनंत धर्व आत्मक कहीए तेनीज मुक्ति कहीए, ते विना मुक्ति छे नहि, ए जिन शासननुं सार छे, माटे ए आत्म स्वरूपने विषे भेद अभेद ज्ञाननुं विचारवुं एटले शुद्ध व्यवहार ते भेद ज्ञान छे, अने शुद्ध निश्चय कहेतां अभेद ज्ञान छे, हवे भेद ज्ञान कहेतां जे ज्ञान दर्शन चारित्र आत्माना घरनुं छे, एम जे बोलवुं ते व्यवहार थयो एवुं जे ध्यान तेने भेद भाव रह्यो पोते ने पोताना गुणमां जुदापणुं रह्युं आत्मा एक हतो तेना त्रण भेद थया एटले व्यवहार नय कह्यो, जो अभेद ज्ञान विचारीने जोइये त्यारे तो आत्मा एकज देखाय छे एकज जाणीए छीए तेनेज विषे रमण करीए, इहां ज्ञानादिक गुण जुदा नथी. आत्मा ते ज्ञानादिक गुण तथा ज्ञानादिक गुण ते आत्मा यथा दृष्टांते सुवर्णनुं भारेपणुं स्निग्धपणुं पिलाशपणुं, ते

कांइ सूवर्ण थकी नोखुं नथी, तेज सुवर्ण छे, एवी रीते आत्म स्वरूपनी श्रद्धा करवी तेने समकित दर्शन कहीए, ते जाणवुं तेने ज्ञान कहीए एनेज विषे स्थिर थइने रमण करवुं, तेने चारित्र कहीए, एज स्वरूपने उपयोग देइने जुए तो सिद्ध परमात्मा रूपज छे एवी रीतेज ध्यान करतां मुक्ति थाय पण वीजी रीते सर्वथा मुक्ति थाय नहि. उक्तंच

दुहाः—एक देखीये जानिये ॥ रमिरहिये एक ठौर ॥ समल विमल न विचारीये ॥ यह सिद्धि नहि और. १

सवैया. एकतिसा ॥ जाके पद सोहत सुलच्छन अनंत ज्ञान विमल विकास वंत ज्योती लह लही है ॥ यद्यपि त्रिविधरूपववीहारमें तथापि एकतान जैयोंनियस अंग कही है ॥ सोंहे जीव कैसी हु जुगतीके सदवितावके ध्यान करी बेकों मेरी मनसा उमही है ॥ जाते अवीचल ऋद्धि हो तु ओर भांति सिद्ध नांहि नांहि नांहि यामें धोखो नांही सही है. १

अर्थः—हवे ए स्वरूपनो अनुभव स्थिर रहेवो दुर्लभ छे, परंतु ज्ञाता पुरुष छे ते मनोरथ तो करे ते प्रमाणे अनुभव करे तेनुं कारज सिद्ध थाय ते कहीए छीए, जाके पद कहेतां जे पोताना पदने विषे अनंत ज्ञान स्वरूप स्वलक्षण कहेतां वस्तुनुं लक्षण एहीज छे तथा विमल विकाश वंत जोती कहेतां आपणो तथा परनो स्वरूप

जाणवो, तेज जोती जेने विषे देदिप्यमान थइ रही छे तथा व्यवहारमां यद्यपि कहेतां जे त्रिविधरूप छे बहीर आतमा अंतर आत्मा तथा परमात्मा एवी रीते त्रिविधरूप छे, तथापि कहेतां तोहे पण नियत अंग कहेतां निश्चय नयनी अपेक्षाये तो ऐक्यता तजे नही तथा एकरूपज कह्यो ते तो एवो पदार्थ एक जीव कह्यो हवे केसे हू जुक्ति कर कहेतां ते जुक्ति आगळ कहीये छीये ते सदीव कहेतां निरंतर मारा मननी उमेद थइ रही छे वली जाहींके ध्यान ते अपनी रिद्धि कहेतां ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अविचल थाय एवी रीते करीने सिद्ध थाय पण बीजी कोइ रीते करीने सिद्ध थाय नहि, एवुं त्रणवार कह्युं छे ए छाती ठोकीने निश्चय वचन कह्युं छे वली कह्युं छे के ए वातमां धोखो नहि एटले ए वात जुठी नथी, एटले ए वात सत्य छे माटे हे भव्य जीवो जो तमारा आत्माने सुख वांछो तो भेद ज्ञान विचारो ने विभावनो त्याग करो, स्वभावनो ध्यान करो पछी अभेदज्ञाने करीने ध्यान करो एटले आत्मा एज परमात्मा थशे. ते थकी सर्व कर्मनो नाश थाशे; ते थकी अनंती ऋद्धि सत्ताए छे ते प्रगट थशे जन्म जरामरणना फेरा टलशे अक्षय अव्याबाधसुखनो विभागी थइने शीवपुरमां जइ रहेशे, माटे एज अभ्यास करो एज अमारो उपदेश छे, तथा सर्व ज्ञानी पुरुषोनो एज उपदेश छे.

॥ दुहा ॥

एह ग्रंथ पूरण हुवो, पूर्ण हुइ अब आश ॥
श्रोता सूणजो कान देइ, ग्रंथ गुणकी राश ॥ १ ॥
मिथ्याविध्वंसननाम ए, भाख्युं ते सुखकार ॥

तेह मांहि जे भाव छे, सुण ल्यो तास विचार ॥ २ ॥
बहु भेद मिथ्यात्वना, तेम जीव स्वरूप ॥
द्रव्य गुण पर्यायनो, भाख्यो रूप अनूप ॥ ३ ॥
नय भेद बहु भाखीआ, तेम अध्यात्म वात ॥
बहू ग्रंथनी साख्यथी, कीधी एहनी ख्यात ॥ ४ ॥
ग्रंथ गुण समुद्र छे, झीले मांहे मतिवंत ॥
पाप मेल सब धोयके, होवे उत्तम संत ॥ ५ ॥
रयण चिंतामण सारीखो, ग्रंथ रच्यो गुण भाण ॥
पंडीतजन तो सुख लहे, वांचतां प्रगटे नाण ॥६॥
मुरख जन समजे नहि, तामे नहि मुज दोष ॥
क्षय उपशम तीनकु नहि तामें किनपररोष ॥ ७ ॥
जाको अनुभवथी रहे, आत्म अनुभव लक्ष ॥
ताकु तो बहु गुण करे, जाको उपयोग दक्ष ॥ ८ ॥
वसुधामें विस्तरो, जीउं जल मांही तेल ॥
सुख सुख एही प्रगट होवो, ग्रंथ गुणकी रेल ॥ ९ ॥
अक्षयथीती मेरु तणी, तेम ए ग्रंथ नीवास ॥
रविशशि पेरे अविचल रहो, उत्तम सुखमें वास॥१०॥
संवत ओगणीश ओगणीशमां, सुंदर आसो मास ॥
कृष्णपक्ष तिथि सप्तमी, पूरण थयो उल्लास ॥ ११ ॥

शीतलकारी सोमवार, आमोद गाम मोजार ॥
वांचजो भणजो भविजना, ते लेशे भवपार ॥ १२ ॥
एह ग्रंथ हृदिये धरी, ध्यान करशे जेह ॥
मुनि हुकम सुख संपदा, पामशे शिववधू गेह. ॥१३॥

इतिश्री मिथ्यात्वविध्वंसननामा
ग्रंथ संपूर्ण.

॥ मित्रपरीक्षा ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

नत्वा चिदानंद सत्य स्वपरानुग्रहानिच ॥
वक्ष्यामी मित्र परीक्षायं सुधासुध तथैवच ॥ १ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे जे आसंसारनी मांहेलीकोरे जीवमात्र मित्र करे छे॥पण ते मित्र बे प्रकारना छे ॥ एक शुद्ध ने बीजो अशुद्ध, ते बे प्रकारना मित्रने चार प्रकारे करी जीवमात्र सेवे छे तेथी ते जीव पण चार प्रकारनाज कहेवाय ते उपर चौभंगी लखीए छीए ॥ अनादी अनंत ॥ १ ॥ अनादि सांत २ ॥ सादि सांत ३ ॥ सादि अनंत ४ ॥ ए चार भांगानो प्रथम विचार कहुं छुं ॥ अशुद्ध मित्र साथे मित्राई संसारी जीवने सर्वेने छे ॥ ते मध्ये अभवी जीवने ॥ अनादि अनंत ॥ पेहेलो भांगो छे ॥ भवी जीवने अनादि सांत बीजो भांगो छे ॥ परावर्त्तन काले मित्र साथे संसारी जीवने सादि सांत भांगो छे ॥ चोथो भांगो संसारी जीवने अथवा कोई जीवने आवे नहीं ॥ हवे जे शुद्ध मित्र छे ते सिद्ध परमात्मा अनादि अनंत भांगे छे ॥ अने अनादि सांत भांगो शुद्धमां आवे नहीं ॥ अने सादि सांतभांगो उपशमादिक समकिती जीवने ॥ शुद्ध मित्र सादि सांतभांगो छे ॥ अने जे जीव संसार छोडी मोक्षे गया तेने सादि अनंत भांगो शुद्ध मित्र साथे छे, हवे ते भांगानो विवरो करीने कहुं छुं ॥ हवे मित्र कहेतां कोण छे तथा शुद्ध अशुद्ध ते शुं छे ते

कहुंछुं ॥ मित्र कहेतां पोतानो आत्म उपयोग ॥ ते शुद्ध भावमां प्रवर्त्तवुं ते शुद्ध उपयोग कहीए ॥ अशुद्ध भावमां परिणमवुं ॥ ते अशुद्ध उपयोग कहीए ॥ ते अशुद्ध उपयोगनो विचार कहुंछुं ॥ अशुद्ध कहेतां आत्म स्वरूपना रमण विना पर परिणतिमां प्रवर्त्तवुं ॥ तेने अशुद्ध उपयोग कहीये ते उपयोग निगोदथी मांडी ॥ गर्भज पंचेंद्रि जीव सुधी ॥ अशुद्ध उपयोग छे ॥ शिष्य वाक्यः—स्वामी निगोदादिक ॥ स्थावरने विषे शुं रमणता परपरिणतिमां करे छे ॥ एतो अव्यक्तव्यभाव छे ॥ गुरुवाक्य ॥ प्रथम तें जे कहुं ते निगोदमां पर परिणतिमां शुं रमे छे ॥ ते ए जीवतो अनादि मिथ्यात्वी छे अने स्वस्वभावतो तेने शेनो होय ॥ आ माटे जे स्वस्वभावतो गर्भज पंचेंद्रिने पण घणो दुर्लभ छे ॥ कोइक जीवने प्राप्त थाय छे ॥ माटे ए सदाए अशुद्ध परिणतिमांज छे ॥ ते माटे एने सदाए अशुद्ध उपयोग कहेवाय ॥ ए वातमां कांइ संदेह नहीं ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एतो अव्यक्तव्य छे एने उपयोग शी रीतथी कहोछो ॥ गुरुवाक्य ॥ भाई अव्यक्तव्य छे पण पोत पोतानी क्रिया करे छे, पण छद्मस्थना समजवामां न आवे जेम कोई पुरुषने शोषो आवे ने असाध्य थई जाय छे ॥ ते वखत ते पुरुषने ॥ अथवा जोडे होय ॥ ते माणसने एनी वेदना कांइ देखाती नथी ॥ तो शुं ए पुरुषने वेदना छे के नहीं ॥ अपितु वेदना छेज ॥ तेमज ते निगोदादिक ॥ जीव आप आपणी क्रिया शुद्ध अशुद्ध जे जे थानकने विषे ते करे छे तेथी ते जीवने ॥ अशुद्ध उपयोग लागु छे पण समजवामां न आवे ॥ एम जाणवुं ॥ हवे ते अशुद्ध क्रियाना बे भेद छे ॥ एक शुभ ने बीजो अशुभ ते मध्ये निगोदादिक स्थावरने विषे अशुभ क्रिया छे आमाटे जे ए जीवोने कायिकी प्रमुख पांचे क्रिया लागे छे ॥ तेथी ए सदाए

अशुभ क्रियामांज छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सर्व जीवने सरखी पांच क्रिया लागे के वत्ती ओछी लागे अने सदाए अशुभ उपयोगे ए जीव सर्वे छे ॥ तो मांहेथी ए जे जीव उंचा आवे छे ते शा वडे आवे छे ॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ते जीवोने सदाए सरखी क्रिया न होय ॥ ते हुं विवरो करीने कहुं छुं ते सांभळ ॥ पांचे स्थावरना सूक्ष्मनी क्रिया छद्मस्थना जोवामां आवे नहीं. ॥ ए तो केवलीगम्य छे. हवे जे पांच स्थावर बादर रह्या ॥ तेनी क्रिया छद्मस्थना जोवामां आवे, ते हुं कहुं छुं के कायिकी क्रियाके कायाए करीने जे करवुं ॥ तेने कायिकी क्रिया कहीए ॥ ते मृतिकादिक पांचे स्थावर कायाए करीने करे छे ॥ ए थकी अनेक जीवनी हानि पण थाय छे ॥ शामाटे जे ॥ भेखड प्रमुख पडवाथी अनेक जीव मरे छे ॥ एम जलथकी पण अनेक जीव, तथा अग्नि थकी ॥ तथा वायु थकी ॥ तथा ॥ वनस्पति थकी अनेक जीव मरे छे ॥ एम पांचे क्रिया समजी लेवी तथा तें जे कह्युं के ॥ ए जीव उंचा केम आवे छे. ॥ ते अकाम निर्जरा वडे आवे छे जेम पाहाडमांथी नदीमां पथ्थर पड्या ॥ तेमांथी कोइक पथर घाटबंध तथा गोळ तथा तोलमां आवे छे ॥ बीजा सर्वे अथडाय छे तेमज कोइक जीव उंचो आवे छे ॥ हवे जे बेरंद्रियी असन्नि पंचेंद्रि सुधी पण अशुभ क्रिया तथा ॥ अशुभ उपयोग प्रवर्त्ते छे ॥ जे संन्नि पंचेंद्रि ते मध्ये तिर्यंच पंचेंद्रि ॥ तथा नारकी पंचेंद्रि ते बोलतां ए अशुभ उपयोगी तथा अशुभ क्रिया करे छे ॥ तथा मनुष्य॥ पंचेंद्रि तथा देव ए मध्ये पण अशुभ उपयोगने अशुभ क्रिया प्रवर्त्ते॥ तथा शुभ क्रिया तथा शुभ उपयोगमां कोइक जीव प्रवर्त्ते छे॥ ते मध्ये केटलाएक तो आप आपणा दर्शननी रीते प्रवर्त्ते छे ॥ केटलाएक लोकनी देखादेख प्रवर्त्ते छे ॥ केटलाएक सेहेज स्वभावे

पण प्रवर्त्ते छे ।। ते मध्ये कोईक जीवने समकितादिक ॥ गुणनी प्राप्ति थइ होय ते जीव किंचित् ।। शुद्ध उपयोगे प्रवर्त्ते ।। हवे जे अनादि अनंत भांगो ।। अशुद्ध मित्र साथे अभवी जीवने लाधे छे ।। ए जीव कोइ काले शुद्ध मित्रनो संग पामवानो नथी ।। माटे ए सदाए ।। अशुद्ध मित्रनो संगी छे ए पेहेलो भांगो ॥ बीजो भांगो अनादि सांत नामे भव्य जीवने छे ।। ते जीव ज्यारे त्यारे अशुद्ध उपयोगने टाळीने शुद्ध उपयोग पामशे ।। ए फरीथी अशुद्ध उपयोग पामवानो नथी ।। त्रीजो सादि सांत भांगो जे संसारी जीव ।। समकितादिक गुण पाम्या पछी पाछा पडे ॥ तेने अशुद्ध उपयोग थाय तेने त्रीजो भांगो कहीए ।। अशुद्ध उपयोगनो चोथो भांगो जीवनी साथे लागु नथी ।। माटे ए अशुद्ध मित्र आ जीवने अनादिकाळनो दुःखदाई छे ।। ते मित्रने छोडे थकेज सुख आवे ।। हवे शुद्ध मित्रमां ए भांगो कहुं छुं ।। जे प्रथम अनादि अनंत भांगो सिद्ध भगवानने कह्यो ।। ते सिद्ध भगवानने आदि पण नथी ने अंत पण नथी ।। अने त्यां उपयोग पण शुद्धज छे ।। माटे ते पण अनादि अनंत मित्र ठर्यो ।। हवे जे बीजो भांगो सादि सांत शुद्ध मित्रनो संसारी जीवने लागे छे ॥ शामाटे जे उपशमादिक समकितादिक पामे थके किंचित् शुद्ध उपयोग होय ते समकितनुं जवुं आववुं थाय ॥ तेवारे आद्य अंत पण लाधे ।। ते वारे सादि सांत भांगो थयो ।। हवे सादि अनंत भांगो त्रीजो ।। जे जीव करम खपावी केवळज्ञान पाम्यो ॥ अथवा मोक्षे गयो ते जीवनो अशुद्ध उपयोग रूपी मित्र हतो ।। तेनोखो थइ गयो ते वारे शुद्ध उपयोग मित्र ।। तेनी प्राप्ति थइ ।। ते कोई काळे मटवानी नथी पण मित्राई थई तेनी आदि छे ।। माटे सादि अनंत कहीए ।। हवे चोथो भांगो अनादि सांत नामे

शुद्ध उपयोगमां होय नहीं ॥ माटे ए शुद्ध उपयोग तथा ॥ अशुद्ध उपयोग ॥ ए बंनेमां त्रण भांगा लाधे, एम समजवुं ॥ हे मित्र तुं मारो परम हेतु छे मारुं कोई काले पण तुं अशुभचिंतक नथी ॥ एवो तुं मारो परम हेतु थइने घडी घडी रीसामण करे छे ॥ ए वातनुं दुःख मने घणुं थाय छे माटे तारे ॥ सदाए काल स्थिरपणे मारी पासेज रहेवुं ॥ ए विजोग माराथी खमाशे नहीं ॥ मित्रो वाचः—॥ हे मित्र तुं कहे छे के सदाए मारी पासे रहेजे पण तुं प्रतिपक्षी साथे वात विचार करे ते वारे॥ माराथी तिहां केम वेशी रहेवाय ॥ त्यारे मारे जवुं पडे छे ॥ लौकिकमां पण एम कहे छे के बे जण वात करे त्यां त्रीजाने उभुं रहेवुं नहि ॥ तो हुं उत्तम कहेवाउं ॥ ने माराथी तीहां केम वेशी रहेवाय ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र हुं तने रात दीन समरुं छुं ॥ अने तारी आजीजी करुं छुं ॥ ने हुं कोण प्रतिपक्षी साथे वात करुं छुं के ॥ उलटो मारे माथे दोष मुके छे ॥ मित्रोवाच ॥ हे मित्र ! तुं अशुद्ध परिणतिने छोडतो नथी ॥ तथा एना पक्षना परिवारने पण छोडतो नथी ॥ अने मारुं वचन पण यथार्थ अंगीकार करतो नथी ॥ तेथी मने बहु दुःख लागे छे॥ त्यारे हुं उठीने जाउं छुं पण कांइ मने तारी पासेथी ॥ जवुं सारुं लागतुं नथी ॥ चेतनोवाच ॥ हे मित्र तारे वास्तेतोमें ॥ बाह्यथकी संसार छोड्यो छे ॥ सचित अचित्तमां परिग्रह छांड्यो ॥ तथा अभ्यंतर थकी मदनसेनने घणो दुभव्यो ॥ तथा मान संगजीने पण विशेषे करी परिताप उपजाव्यो ॥ अने राग केसरी ॥ तथा द्वेष गजेंद्र ॥ रूप मोटा जे राजा ॥ तेने पण में बहू तिरस्कार कर्यो ॥ अने तेनो में मारा देशमांथी ॥ हक घणो काहाड्यो तथा जे ॥ सर्व लोकाधीश मोह राजा तेनो पण केटलोएक हक उठाडी दीधो॥ तोए पण हे मित्र ! तारुं

मन मान्युं नहीं ॥ अने हे मित्र ! ए लोको साथें में मोहोटो दावो बांध्यो छे माटे जे वारे तारुं जवुं थाय छे ते वारे ए लोको मने बहु दुःख दे छे ॥ ने तें जे कह्युं के ॥ अशुद्ध परिणतिना परिवार साथे वातचित करोछो ॥ ए वात साची छे पण शुं करुं जे अनादि कालनी ॥ अशुद्ध परिणति वलगी छे ॥ तेनी साथे प्रीति पण अनादिकालनी लागेली ॥ ते प्रीति तो हवे मने जेहेर जेवी थइ छे ॥ ते तो तारा समज्यामां छे ॥ पण घणा कालनो स्नेह तेथी करीने ए आवे ते वखत ॥ माराथी सनस तुटती नथी ॥ तेथी तेनी साथे तथा तेना परिवार साथे वात करुंछुं ॥ तो पण मारा मनमां तो हेत तारा उपर ज छे ने मारा मनमां तो तुंज वशी रह्यो छे ॥ अने तुं सेज सेज ॥ एवा दोष शोधीने वेगलो खसे छे ॥ ए तने कांइ योग्य नथी ॥ शा माटे जे तुं जो ॥ खडांधरो स्वतंत्रपणे रेहेतो ॥ ए अशुद्ध परिणति तथा एनो परिवार कोई आवी शके नहि ॥ पण एने आवतां देखीने खशी जाय छे ॥ त्यारे ए लोकोनुं जोर फावे छे ॥ माटे हे मित्र ! तारे मारी पासेथी खसवुं न जोइए ॥ उत्तम मित्रनी तो एज रीत छे ॥ जे पोताना मित्रने कष्ट आवतुं देखीने आडो उभो रहे पण उपद्रव थवा न दे अने तुं तो उपद्रव थतो देखीने पेहेलेथीज सामो खशी जाय छे ए तने घटतुं नथी ॥ मित्रोवाच॥ हवे मित्र कहे छे के हे मित्र ! आवते उपद्रवे उभुं रहेवुं ते तो बरोबरीआ होय तांहां उभा रहीए ॥ नहीं तो उभा रहेवाय नहीं ॥ जेम कोई राजा प्रमुख लडवा उभा थाय ते पण कांइ चंडाल साथे ॥ लडवा उभा रेहेता नथी ते लडाइथी पाछाज खशी जाय छे ॥ तेम ए अशुद्ध परिणति प्रथम तो स्त्रीज छे ने बीजो एनो परिवार पण सर्वे स्त्रीज कहेवाय ॥ अने ते सर्वे ॥ महा दुर्गंधनाज भरेला छे ॥ अने महा अपवित्र छे ते-

हेनी साथे माराथी उभा रहेवाए नहीं ॥ अने तुं तो अनादिनो अपवित्र साथे रंगाणो अने तारी जात- कूल वधुंए तें लजव्युं ॥ अने हजी सुधी तने एनी संगत मटती नथी ॥ हजी एना उपर प्रीतिभाव राखे छे ॥ अने मने ठपको दे छे पण हे मित्र ! भूलतो तारी छे ॥ जे तुं अशुची अपवित्र वालानी संगत छोडतो नथी ॥ ने ए दुर्गंधमां तुं जईने बेसे छे ॥ ए माराथी तो उभुं रहेवाय नहि माटे हे मित्र ! जो मारी ॥ मित्राई स्वतंत्रपणे जो चाहे ॥ तो तुं ए दुर्गंधानो संग छोड अने तुं कहेछे के ॥ एनी सनस नथी छूटती ॥ तो हजी पण तुं कांइ विचार करतो नथी जे ए दुर्गंधाए अनंतो काल थयां ॥ अनेक रीतनां दुख दीधां ॥ अने अनंतुं धन ए खाई गई ॥ ते पण तुं सर्वे जाणे छे ॥ अने तो पण तुं एनी सनस छोडतो नथी ॥ तो तारा जेवो मूरखो कोइ दीसतो नथी माटे जो मारुं कीधुं माने तो ए दुर्गंधानो संग छोड ॥ अने मारी मित्राइ स्वतंत्र थशे ॥ एक समय मात्र पण अलगो नहीं खसुं ॥ ए वात में तने ॥ सत्य कही छे. फरी फरीने कहेवुं ए कांइ ठीक नथी ॥ उत्तम तो एक अक्षरमांज समजे ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र तें जे वात कही ते मारा हृदयमां सत्य भासन थइ छे ॥ हवे हुं ए वचन भूलवानो नथीज । पण हे मित्र । हुं शुं करुं, अनादिनी दुर्गंध पेशी गइ छे ते कहाडतां बहु मुश्केल पडे छे; तारा उपदेशथी एने कहाडवाना उपायमां अहोनिश रहीश ॥ पण तुं मारी पांसेथी खशीश नही ॥ इति सविकल्प विचार ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी शुद्ध उपयोग ते शुं हशे ? ॥ अने शुद्ध उपयोग शा थकी थाय ॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणु प्रिय ॥ जे वस्तुनो मूल स्वभाव ॥ चिदानंदरूप छे ॥ ते स्वभावमांजे उपयोग स्थिर थइने रहे ॥ तेने शुद्ध उपयोग कहीए ते

शुद्ध उपयोगना बे भेद छे ॥ संपूर्ण शुद्ध उपयोग ते प्रगट पणे ॥ सिद्ध परमात्माने छे ॥ एवंभूत नये छे ॥ अने संसारी जीवने संपूर्ण शुद्ध उपयोग सत्ताए शक्ति पणे छे ॥ ए संग्रह नये छे ॥ अने केवली जे ॥ तेरमे गुण ठाणे छे ॥ तेने संपूर्ण ॥ शुद्ध उपयोग कहेवाय नहीं ॥ शामाटे जे वेदनी आदिकर्म चार वाकी छे ॥ तथा उपयोग अस्थिर पण कहेवाय ॥ जेम ॥ श्री वर्द्धमान स्वामीने लोही खंडवाडो थयो ते वातथी ॥ श्रीया अणगारने वहु दुःख लाग्युं ॥ ते श्रीया अणगारने पोते तेडावीने ॥ पाक वहोरवा मोकलया इत्यादिक विचारी जोज्यो ॥ तेथी संपूर्ण स्थिर उपयोग संभवतो नथी ॥ पछी तत्व तो केवली गम्य छे हवे जे चोथा गुण-ठाणाथी मांडीने वारमा गुणठाणा सुधी ॥ शुद्ध उपयोग देशे देशे छे ते हाणी वृद्धि गुणठाणानी ॥ परिणति प्रमाणे समजी लेवी ॥ ते शुद्ध उपयोग तो ॥ स्व स्वभावनुं नामज छे ॥ हवे शुद्ध उपयोग शा वडे थाय ते कहुं ते सांभल ॥ प्रथम तो सुगुरु स्व उपयोगी ज्ञाना नंदी ॥ सत्य भापी वहु श्रुत अनुभवी होय ॥ तेनी संगत थकी शुद्ध उपयोगनुं ॥ जाणपणुं थाय ॥ ते वारे वे द्रव्य जीव तथा अजीव जूदा जाणे अने पछी ते ॥ जूदा करवाने ॥ अनुभव करे ॥ लक्षण गुण स्वभाव ॥ ओलखीने पोतानो द्रव्य पोतामां राखे ॥ पर द्रव्य दूर करे ॥ ते वारे जे अंश उपयोग ॥ स्व द्रव्यने स्वभाव आवी जाय ॥ तो शुद्ध उपयोग किंचित् ॥ प्रगट थाय पछी अनुक्रमे वृद्धि थतो संपूर्ण थाय ॥ तो ए परमात्मा पण थइने बेसे ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी अशुद्ध परिणाति शुं छे॥ अने शावडे थाय छे ॥ गुरुवाक्य ॥ अशुद्ध परिणाति शुं हशे ॥ ते तो राग द्वेष परिणाति मूल छे ॥ ते अनादिनी छे ॥ अने शाथकी थाय छे ते कहुं ते सांभल ॥ के असंज्ञि ॥ पंचेंद्रि सुधी तो मूल परिणाति

ए चाल्यो आवे छे ॥ अने संज्ञा अहींआं प्रत्यक्षपणामां जोवामां पण आवे छ ॥ हवे संज्ञी पंचेंद्रि जे रह्या ॥ ते चारे गतिने विषे ॥ विषयकषायना भरेला छे तेथी अशुद्ध परिणतिज छे ॥ मनुष्य तथा देवगतिमां जेने जेवी संगत तेने तेवो उपयोग प्रवर्त्ते छे ॥ ते पण अशुद्ध उपयोगज छे तथा मनुष्यगतिने विषे जे धर्म करे छे ने ते ॥ मार्गे प्रवर्त्ते छे ॥ ते पण सर्वे अशुद्ध उपयोगज छे ॥ ते खटदर्शन ॥ आ हिंदुस्थानमां कहेवाय छे. अन्यशास्त्रे पण ॥ ए छ दर्शननुं प्रवर्त्तन वांधेलुं छे ॥ ए छए दर्शननुं किंचित् मात्र ॥ ओलखाण करावुंछुं ॥ ॥ तेनां नाम ॥ जिन ॥ सांख्य ॥ जैमिनीय ॥ योग ॥ सोगत ॥ विशेषशक ॥ ए छ दर्शन जाणवां ॥ ते मध्ये प्रथम जिन दर्शन ॥ तेना वे भेद जाणवा ॥ श्वेतांबर ॥ दिगंबर ॥ हवे श्वेतांबरना मतनुं ओलखाण कहुंछुं ॥ रजोहरण राखे ॥ मुखवस्त्र राखे तथा चोलपट्टादिक लिंग होय ॥ रूषभादिक चोवीस तिर्थंकरने माने ॥ निग्रंथ होय तेने गुरु करी माने ॥ अने सर्वे कर्म क्षय करे तेने मुक्ति माने ॥ अने भोजन विधान विषे शुद्ध मान मधुकर दृत्तिए लेवो कह्यो तेने माने ॥ तथा प्रमाण पण वे माने ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण ॥ ने परोक्ष प्रमाण ॥ स्यादूवाद शैलिए सहित सर्व धर्मने माने तथा खट द्रव्य माने ॥ धर्मास्तिकाय ॥१॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ अने काळ ॥ ६ ॥ ए छ द्रव्य माने, तथा वीजो दिगंबर मत ॥ तेनो विचार कहुंछुं ॥ एटले दिगंबरना चार भेद छे ॥ कास्तासंगी ॥ १ ॥ मूळसंगी ॥ २ ॥ मथुरासंगी ॥ ३ ॥ अने गोप्य ॥ ते मध्ये कास्तासंगी ॥ चमरी गायना पूछडना केशनी पींछी राखे ॥ अने मूळसंगी मोरनी पींछी राखे ॥ अने मथुरासंगी ॥ कोइ पीछी माने छे ने कोई नथी

मानता ॥ अने गोप्य ॥ मोरपीछी माने अने गोप्य विनाना त्रण रह्या ॥ ते स्त्रीने मुक्ति न माने अने गोप्य स्त्रीने मुक्ति माने अने भिक्षाए बत्रीसे अंतराय टाले शेष सर्वे आचार ॥ श्वेतांबरनी पेठे जाणवा इति जिन दर्शनाविचार ॥ अथ सांख्य दर्शन विचार त्रिदंडी धारण करे कोपिन धारण करे, धातु रक्त वस्त्र धारण करे, खुरमुंडन करावे अने मृगचर्म धारण करे ॥ अने भिक्षा द्विजग्रहे करे, पंचग्रासी भिक्षा छे ॥ परमात्माने देव माने ॥ कपिलादिने गुरु माने ॥ आत्माने सर्वव्यापी नित्य अक्रीयमाण माने छे ॥ अने प्रकृतिने वीर्य मोक्ष माने ॥ प्रमाण त्रण माने छे ॥ प्रत्यक्ष ॥ १ ॥ अनुमान ॥ २ ॥ शब्द ॥ ३ ॥ इति सांख्य दर्शन विचार ॥ मिमांसक ॥ तथा जैमिनीअ ॥ ए नाम छे ॥ पण दर्शन ॥ एकज छे तेनो विचार कहुंछुं ॥ एक दंड धारण करे ॥ अथवा त्रण दंड पण धारण करे ॥ सांख्यनी पेरे धातु रक्त वस्त्र धारण करे ॥ मृगचर्म उपर बेसे, कमंडल धारक होए भाद्रा परभाकरा ॥ प्रमुख अनेक भेद छे ॥ वेदने गुरु करी माने ॥ तथा वेदांतवादी ॥ सर्व ज्ञानादिक देव कोई न माने ॥ विद्या अविद्या ॥ ए बे तत्वने माने ॥ तथा प्रमाण छने माने ॥ ते कहीये छीए ॥ प्रत्यक्ष ॥ अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ अर्थापती ॥ अभाव ॥ ए छ प्रकारना प्रमाणने माने छे ॥ मुक्ति सांख्यनी पेरे माने ॥ इति मिमांसक दर्शन विचार ॥ अथ जोग दर्शन कहीए छीए ॥ अईएनिआ ॥ एक एवुं बीजुं पण नाम छे ॥ तेनो आचार कहुंछुं ॥ गोपीनवंत होय ॥ कंदमूल फलादि भक्षी होय ॥ जटाधारी होय ॥ प्राए वनवासी होय ॥ शिवना ध्यानवंत होय ॥ अस्रष्टिसंहारकारक होय शंकर देवताने माने ॥ अक्षपटा गुरुने माने ॥ प्रमाण चार प्राए माने ॥ तेनां नाम ॥ प्रत्यक्ष ॥

अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ ए चार प्रमाण माने ॥ तथा प्रमाण प्रेमी आदिक सोल पदार्थने माने सकल दुःख क्षय मोक्ष माने ॥ ए छना पण अनेक भेद छे ॥ इति जोग दर्शन विचार ॥ अथ बौद्ध दर्शन विचार ॥ सुगत नामे देव माने ॥ धर्मकीर्ति ॥ प्रमुख गुरु माने ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण ॥ अनुमान प्रमाण ए बे माने ॥ पंच संबंध माने पंचेंद्री रूपादिक इतिरूप संबंध ॥ अहमति विज्ञान संबंध ॥ दुख धर्मादी वेदना ॥ शब्दो लेखां संज्ञा संबंध ॥ राग द्वेष धर्म संस्कार संबंध ॥ एम पांच संबंध जाणवा ॥ ज्ञाननी निर्मलताए मुक्ति माने छे ॥ ए क्षणेक वादीनो मत छे ॥ इति सोगत दर्शन विचार ॥ अथ विशेषक दर्शन विचार लखीए छीए ॥ परमात्मा अने ईश्वर देवने माने छे ॥ काश्यप गुरुने माने छे ॥ खट पदार्थ माने छे ॥ द्रव्य १ ॥ गुण २ ॥ कर्म ३ ॥ सामान्य ४ ॥ विशेष ५ ॥ समवाय ६ ॥ ए खट पदार्थ जाणवा ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण तथा अनुमान ॥ ए बे प्रमाणने माने ॥ सकल दुःख क्षय मोक्ष माने ॥ ईत्यादिक छ दर्शनना ॥ लोको धर्म धर्म पोकारी रह्या छे पण ते सर्वे अशुद्ध उपयोगी छे ॥ अहीआं कोइ कहेशे के मुसलमाननुं ॥ तथा ख्रिस्तिनुं धर्म कांइ लखायुं नहीं ॥ तेनो उत्तर के ॥ तदा काले ते धर्म हता नहीं ॥ तेथी पूर्वना आचार्योए एनो विचार लख्यो नथी ॥ तो आपणे लखवानी कांइ जरुर नथी ॥ इत्यादिक सरवे ॥ अशुद्ध उपयोगनां कारण छे ॥ अहीआं कोई कहेशे जे कोईक मांहे पण ॥ शुद्ध उपयोगी हशे तेनो उत्तर जे ॥ वाडानी वृत्ति ॥ ए वधी परभाव भणी छे माटे ए छए दर्शन ॥ परभावने झालीने वेठा छे ॥ एने विषे स्वभाव ग्रहण छे नही जे वाडानो ॥ विचार परभाव जाणीने चार गति रखडावे ॥ कर्मबंध करावे एवुं जाणी एथी ॥ अलगो खसे तेमां कोइक जीवने ॥ शुद्ध उपयोग आवे

अहींआं कोइ कहेशेके ॥ वाडामां रहीए ने पोत पोतानुं साचीए ॥ ए पण वात मिथ्या छे शामाटे के ॥ चारेकोर अग्नि लागे अने वचे बेसे ॥ अने कहेशेके टाढी हवा मने आवे ॥ ते कोइ काले आवे नही ॥ शा माटे जे वाडाना ॥ अधिकारीओ तथा ते वाडाने विषे प्रवर्त्तन करवावाला लोको प्राये मिथ्याद्रष्टी महा अज्ञानी छे शामाटे के ॥ एना प्रवर्त्तन प्रमाणे न चाले तो जीवथी मारी नांखतां पण डरे नहीं ॥ पूर्वे एवा सत् पुरुष होय ॥ तेने पण मारी नाखतां डरे नहीं ॥ माटे ए वाडाना धर्म तो एवा छे ॥ अहींआं तमे शुद्ध उपयोगने खोळशो तो क्यांथी लावशो ॥ एटले ए अशुद्ध उपयोगनांज लक्षण तथा कारण कह्यां ॥ हे मित्र- तुं छे ए सत्य छे ॥ बाकी सर्वे असत्य छे ॥ शामाटे के ए अशुद्ध मित्रनी मित्राई थकी हुं अनादिकाळनो आ संसारमां भटकुं छुं ॥ अने क्षण एक सुख न पाम्यो ॥ जे दहाडेथी तारी मित्राई थई ॥ ते दहाडेथी कांईक टाढी हवा मने आवे छे ॥ जे अवसरे तुं माहारी पासे होय छे ते वखत मने शीतलता वले छे ॥ अने ज्यारे तुं मा- री पासेथी कोरे खसे छे ते वखत हुं ॥ बळुं बळुं थई रहुं छुं माटे तुं माहारी पासेथी खशीश नहीं ॥ एज मित्राईनो हक छे हवे हुं मारा अशुद्ध चेतनने समजावुं छुं ॥ हे चेतन तुं घणो निर्मळ छे पण अशुद्धनो संग करवाथी तुं मलीन केहेवाणो ॥ एथी ए पदने पामीने तारुं जाणपणुं कांइ पुरुं थयुं नहीं ॥ तथा तुं पण दुःखी थयो ने मने पण दुःखी कर्यो ॥ माटे तुं अशुद्धनुं जाणवुं छोडी दे ने आपणा शुद्ध स्वरूपनुं जाणवुं कर ॥ अने तेमां रमणता कर तेथी तारुं जाणपणुं वधशे ॥ शुद्ध केहेवाशे अने सुखी थइश ने मने पण तुं सुखी करीश ॥ ते माटे तने जो लाज होय ॥ तो परस्वभावमां पेशीश नहीं ॥ ए मारो हेतु उपदेश हैए धरीने तुं पोताना शुद्ध

स्वभावमां रहेजे ॥ तो ताहारी ने मारी अनादिकालनी प्रीति सरवे लेखे आवशे ॥ नहीं तो ताहारी प्रीति बधी अलेखे छे ॥ एम समजीने पोताना घरमां पेसजे एज मारो हेतु उपदेश छे ॥ इति मित्रपरिक्षा संपूर्ण.

॥ दुहा ॥

मित्र परिक्षा ग्रंथ ए, शुद्धा शुद्ध विचार ।
स्वआतम उपगार ए, रचना अनुभवसार ॥ १ ॥
परने पण हितकारण, एज होवे भव्यजीव ।
मारगानुसारी जे थयो, तेने उपगार सदीव ॥ २ ॥
शुध मित्र ते स्वस्वभाव छे, अशुध मित्र परजाण ।
परस्वभावे जे फरे, तेनां अशुध वखाण ॥ ३ ॥
जे माने हुकम अरिहंतनो, अथवा मुनीनोसार ।
तेने तो बहु उपगार छे, तुटशे करम प्रचार ॥ ४ ॥
अशुध उपयोगने टाळीने, आदरजो शुद्ध उपयोग ॥
कारज थशे आतम तणुं, नही रहे रोग ने शोक॥५॥
आगे अनंत मोक्षे गया, वर्त्तमान जे जाय ॥
आगे पण मोक्षे जावशे, ते अशुध उपयोग पाय॥६॥
ते कारण भव्य जीवतमे, तजो अशुद्ध उपयोग ।
शुद्ध उपयोगनो खप करो, जेथी जाय भवरोग ॥७॥
हुकममुनीने एह छे, ते ध्यावो सदा काल ।
तेथी सुख संपति लहो, शीव वहु घर वरमाल ॥८॥

संवत ओगणीसें संवत्सरे, साडत्रीस अश्विनमास ।
सुद सातमे ते रच्यो, वार भृगुए आश ॥ ९ ॥
जांहां लगे रवीशशी रहो, त्यां लगी रहो ए ग्रंथ ।
ज्ञानीने सुख सुख होवो, उत्तम ए निग्रंथ ॥ १० ॥
मुनी हुकम रचना करी, स्वपरने हितकार ।
चोमासुं अहींआं रह्या, सुरत शेहेर मोझार ॥ ११ ॥
ते कारण भव्य प्राणीया, आदरजो ग्रंथ एह ।
जो चाहो निज सुखने, क्षणु न तजसो तेह ॥१२॥
ए ग्रंथ पूरण थयो, पूरण संघ आणंद ।
मुनी हुकम एम भाखीआ, एहीज सुखने कंद॥१३॥

॥ इति मित्रपरिक्षा ग्रंथ ॥

॥ समाप्तः ॥

अथ सिद्धांतसारोद्धार.



॥ दुहा ॥

प्रणमुं परमानंदमय, सिद्धस्वरूप भगवंत ॥
तांसपसाय कविता करुं, रीझे देखी संत ॥ १ ॥
सेहेज स्वरुपी साहेबो, चिदानंद भगवन ॥
वास वसे पुदगळ विषे, छे जुदो ए तंन ॥ २ ॥
आप स्वरुपी आपमां, वरते सदा एक तान ॥
कांम करे ते जडतणा, जूदुं छे तसध्यान ॥ ३ ॥
ध्यान गोचर देखतां, भासे वस्तु अनुप ॥
वेहेवारी लख दोडतां, कांइ न बांधे रूप ॥ ४ ॥
अरूपीने रूपी करी, माने छे जे जीव ॥
बोध तेहनो निष्फळ कह्यो,क्यम होशे ते शीव ॥५॥
शीव स्वरूपी आतमा, ध्यावो गावो सार ॥
जेम चेतन प्रगट होवे, होए अक्षयभंडार ॥ ६ ॥
अक्षय पदवी जो चाहीए, तो तजजे मिथ्यात ॥
नीराकारने रुपी कहो, ए खोटी तजजे वात ॥ ७ ॥
नीराकार अरुपी छे, रुपी कह्यो साकार ॥
चेतन जेम एम जाणीए, भीन उपयोगी धार ॥ ८ ॥

उपयोगवंत ते चेतना, साकारने नीराकार ॥
बेहु चेतनना कह्या, समजो हृदय मोझार ॥ ९ ॥
जडनो उपयोग जड छे, तेमां नहि चेतनरुप ॥
अज्ञानदशा वरते सदा, तेतो कहीए अघभुप ॥१०॥
इत्यादिक बहु वारता, कहीशुं ग्रंथ मोझार ॥
श्रोता सुणजो कान दइ, तजी वीकथा वीचार ॥११॥
चींतामणी रत्न समो, ग्रंथ ए गुणभाण ॥
उद्योत करे भव्य जीवने, कल्पवेल सम नाण ॥१२॥
ग्रंथ एह भणतां थकां, टळे मिथ्यात्व दूर ॥
समकित सहज आवे सही, वरते आणंदपूर॥ १३ ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नाम एनुं मनोहार ॥
सर्व सिद्धांतनुं सार ए, भवी सुणजो अधिकार॥१४॥
निद्रा वीकथा परीहरो, परहरो विषयकषाय ॥
एकण चित्तथी सांभळो, सेहेजे सिद्धि थाय ॥ १५ ॥

॥ हवे भाषा लखी छे ॥

॥ हवे श्री वीतराग परमात्माना मार्गने विषे द्वादश अंगी सिद्धांत छे, ने आकाळे तो पीस्ताळीस छे, परंतु सर्वनुं सार ए के अनुयोग चार कह्या छे ते मध्ये त्रण तो व्यवहार कह्या छे. अने एक निश्चय कह्यो छे, तेनां नाम. धर्म कथानुयोग, ते ज्ञाता प्रमुख जाणवा ॥ १ ॥ गणिताणुयोग ते चंदपन्नति सुरपन्नति प्रमुख जाणवा ॥ २ ॥ चरण करणानुं योग ते आचारांग दश

कालिक प्रमुख जाणवा ॥३॥ ए त्रणे अनुयोग व्यवहारमां जाणवा. हवे चोथो अनुयोगते द्रव्याणुयोग ते सुयडांग तथा अनुयोग द्वार प्रमुख जाणवा ते निश्चय अनुयोग छे परंतु जेने आत्मानो उपयोग नथी, अने ए सूत्र द्रव्यानुयोगनां वांचे छे भणे छे अने अर्थ करे छे ते सर्व व्यवहारमां जाणवा, अने जे पुरुषने आत्मस्वरूपनी ओ-ळखाण छे, ते धणी वांचे भणे अर्थ करे ते सर्व निश्चयमां छे ॥ ॥ शीष्यवाक्य ॥ हे भगवान् तमे ए व्यवहार तथा निश्चय कह्यो, तेमां शो फेर हशे ते अमे कंइ समजता नथी माटे अमने समज पाडो ॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवानु प्रिय जे व्यवहार छे ते आश्रय-ग्राही छे. निश्चय छे ते आत्मग्राही छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी केटला एकने मोहोडे एवुं सांभळीए छीए तथा केटलाक शास्त्रमां पण एवुं जोवामां आवे छे के तेरमा गुणठाणा सुधी व्यवहार छे अने तमे तो व्यवहारने अहियां आश्रव गणोछो ते केम हशे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे महानुभाव! अमे जे आश्रवमां गणीए छे ते खरुं छे, ने शास्त्रवाळा कहे छे ते पण साचुं छे, शा माटे के कोइ शास्त्रवाळा एवुं तो कहेता नथी के व्यवहारथकी मुक्ति थाय, त्यां एवुं कह्युं के तेरमा गुणठाणा लगी व्यवहार छे, तेनुं कारण सांभ-ळ. जे आठमा गुणठाणाथी मांडीने बारमा गुणठाणा सुधी व्यवहार छेज नहि, अने अंतगड केवली थइने मोक्षे जाय तो व्यवहार छेज नहि, परंतु जेने केवळ पर्याय घणा काळ होय ते धणीने देहनुं भरणपोषण करवुं जोइए, माटे अहियां व्यवहार जडना भागनो छे, शा माटे जे देशना देतां शरीरने थाक लागे तथा वखते भूख तरश पण लागे, तथा जे आहारपाणी तेनो निहार पण होय, इत्यादिक व्यवहार ते सर्व जडनो धर्म छे पण ते कांइ आत्मानो धर्म नथी, अने ज्यांहां सुधी ए व्यवहार छे त्यांहां सुधी कर्मबंध छे, ज्यांहां

व्यवहार गयो त्यां कर्मबंधन पण गयां, शा माटे ; जे केवलीने पण तेरमे गुणठाणे शातावेदनी कर्मनो बंध छे, तथा चोथा गुणठाणा थकी सातमा गुणठाणा सुधी जे व्यवहार क्रिया आचार ते सर्वे आप आपणा गच्छनी समाचारी कल्प छे, ते कांइ निश्चयथकी जोतां धर्मकरणी नथी, आप आपणा मतनी खेंचाताण छे, तथा सूत्रने विषे पण एवुं कह्युं छे के जेटला गणधर तेटला गच्छ कहेवाय अने सर्वनी समाचारी नोखी नोखी छे, तो त्यांहां पण एकेनी समाचारी मळती नथी, तेथी गणधरना वचनमां पण समाचारी आश्रीने कांइ धर्म मालम पडतो नथी, त्यांहां पण आप आपणा गच्छना कल्प बांधेला जणाय छे. कदापि कोइ कहेशे के तमे गणधरना वचननी समाचारी तेने पण तमे धर्म मानता नथी. तेनो उत्तर के, अमे कहीए छीए ते वात सत्य छे, शा माटे के श्रीरीखवदेव स्वामीना चोराशी गणधर थया अने गच्छ पण चोराशी थया अने समाचारी पण चोराशीनी जुदी जुदी हती, एम यावत् श्रीवीर स्वामी थया तेमना पण अगीयार गणधर हता, तेमना गच्छ नव थया तेमनी पण समाचारी नव जुदी जुदी थइ, तो एमां खरी समाचारी कोनी, तथा खोटी कोनी ए वात विचारवा जेवी छे, शा माटे के आ काळने विषे श्रावकना प्रतिक्रमण विषे पारतां इरीआवही नथी पडिकमता एवा जे आणंदसुर तथा सागर तथा विमळ, गच्छ तेमने देवसुरवाळा मतीया कहे छे, तथा प्रथम इरीआवही पडिकम्या विना सामायक ले छे एवा जे खडतरवाळा तेने तपावाळा मतीआ कहे छे, तथा इरीआवही पडिक्कमीने सामायक ले छे एवा जे तपावाळा तेने खडतरवाळा निन्हव कहे छे, एम सेज सेज समाचारीमां एकएकने विरोध घणो भासे छे, तो ते दहाडे तो ते गणधरोनी समाचारी जुदीज हती, माटे जाणीए छीए के ए कल्प

व्यवहार छे, अने ज्यांहां सुधी व्यवहार त्यांहां सुधी विवाद छे केमके व्यवहारना कर्तव्यमां एक एकनुं निसंदेह करवुं रह्युं अने आपणा पक्षने वास्ते सामानी साची जे वात होय ते पण जूठी ठरावबी. प्रगट सिद्धांतमां अक्षर देखीए अने आंधळा थइने चालीए अने खोटी युक्तियो करीने सामाने जुठा पाडीए अने मुख थकी एवुं कहीए के सूत्रनो कानो मात्र उथापशे तो अनंतसंसारी थशे, अने आपणी मतलब आवे त्यारे सर्वे सूत्र उथापीने कोरे मूकीए. अने आपणी मतलबने मळतुं स्तवन तथा सझाय होय तो ते लेइने आडुं धरीए इत्यादिक विचारीने जोतां ए व्यवहार महा रागद्वेषनुं घर विखवाद भरेलो अने ते मार्गना चलावनारा प्रायें बहुल संसारी मालुम पडे छे माटे ए व्यवहार थकी वेगळो रहीने आत्मानुं साधन करे तेहनुं कल्याण थाय. पण ज्यांहां सुधी ए व्यवहारने वळगी रहे त्यांहां सुधी विखवाद मटे नहि, अने सिद्धांतने विषे तो एवुं कह्युं छे के आत्माने भावतां विचरवुं. ज्यांहां श्री भगवतीजीना पेहेला सतकने नवमे उद्देशे स्थविर मुनिने पार्श्वनाथजीना संतानीया काळे सवी पुत्र अणगार मळ्या ते वारे स्थविर मुनिने सामायक आदे लेइने प्रश्न पूछया. ते वारे स्थविर मुनिए प्रश्ननो उत्तर आप्यो के सामायक पण आत्मा छे तथा संवर ते पण आत्मा छे तथा तप चारित्र निर्जरा ते सर्वे आत्मानुं नाम छे तेनो विस्तार अर्थ सहित त्यां जोजो, तथा श्री उत्तराध्ययनजीमां तेज चारे कारण मुक्तिनां कह्यां छे, ते ज्ञान तथा दर्शन तथा चारित्र तथा तप ते आत्माज छे, एमां कांइ फेर छेज नहि, ते अट्ठावीशमा अध्ययनमां जोजो, तथा त्यांहांज वस्तुनो स्वभाव तेने धर्म कह्यो छे, तथा त्यांहांज पांच ज्ञान तथा खटद्रव्य तथा खटद्रव्यना गुण पर्याय जाणे तेने समकिती कह्या छे, तथा तेमां सत्तावीशमा अध्ययनमां

पण कह्या छे तथा छत्रीशमा अध्ययनमां पण आत्मस्वरूपमां रमे तेने मुनि कह्या छे, तथा त्रेवीशमा अध्ययनमां गौतम स्वामीने केशी श्रमण मल्या त्यां पण मनने जीतवुं, रागद्वेषने जीतवुं, तेमां मुनिपणुं दाख्युं छे इत्यादिक ए उत्तराध्ययनमां अध्ययन अध्ययन-प्रत्ये जोशो तो आत्मानी मुख्यता छे तथा दश वैकालिक सूत्रना चोथा अध्ययनमां प्रथम ज्ञान छे पछी दया कही छे तथा आचा-रांगजीमां पण एमज कह्युं छे, तथा सुयगडांगजीमां तो ज्ञाननी मुख्यता प्रथमज छे, तेमज सुयगडांगजीना एकवीशमा अध्ययनमां पण कल्पने लोपवा थकी कर्म बंधाय एवो निश्चय थयो नहि, ते जोतां ज्ञानीने कर्म लागतां नथी एवुं भासन थाय छे, तथा भगवतीजीना आठमा शतकमां ज्ञानीने आराधक कह्या छे पण क्रियानुं बहु मान त्यां कंइ दीसतुं नथी, तेमज भगवतीजीना पेहेला शतकमां भव स्थिति पाक्या विना कोइ मोक्षे जाय नहि एवुं कह्युं छे ए जो-तां पण व्यवहार क्रिया शा खप लागे छे. तथा श्री पन्नवणासूत्रमां आत्माना आठ गुण आठ कर्मे दाब्या छे ते आठ कर्ममां व्यवहार कर्म कियुं छे के ते व्यवहारथकी दूर थाय अने कर्म तो आत्माथकी निश्चय बंधाएलां छे, तो आत्मा निश्चयमां रमे तोज छुटे, कांइ व्य-वहारथकी छुटे नहि, तथा तेज पन्नवणाने विषे पंदर भेदे सिद्ध क-ह्या छे, ते मध्ये अन्य लिंगी सिद्ध, तथा ग्रहस्थलिंगे सिद्ध इत्यादि-क बोले छे, तो त्यां आ कल्पनो व्यवहार क्रिया कशुं दीसतुं नथी, अने ते घणी मोक्षे गया ने वळी जाशे. ए जोतां पण कंइ व्यवहार क्रियामां धर्म दीसतुं नथी, तथा श्री भगवतीजीमां आठ आत्मा गणाव्या छे, तेनां नाम द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषाय आत्मा २ ॥ जोग आत्मा ३ ॥ उपयोग आत्मा ४ ॥ ज्ञान आत्मा ५ ॥ दर्शन आत्मा ६ ॥ चारित्र आत्मा ७ ॥ वीर्य आत्मा ८ ॥ ते मध्ये प्रथम

चार आत्माने अशुद्ध कह्या छे अने पाछळना चार आत्माने शुद्ध कह्या छे, तो जुवो के द्रव्य आत्मा तथा उपयोग आत्मा ए बंने अशुद्धमां गण्या छे, अने व्यवहार क्रिया जेटली करवी, तेटली द्रव्य आत्मामां थाय, अने व्यवहार क्रियानो जे उपयोग तेने उपयोग आत्मा कहीए, पण ते कांइ भाव आत्मामां छे नहि भाव आत्मा तो पोताना स्वरूपमां रमे ते अधिकार श्री अनुजोगद्वारमां जो जो, के भाव आत्मा शी करणी करे ? एटले तमारी समजमां आवशे, तथा पंच कल्पभासने विषे आधाकर्मादिक आहारनुं दूषण ज्ञानीने कह्युं नथी तथा उपदेशमाळाने विषे जे कंइ पंडितजन स्व आत्मानी रमणतामां होय अने पोताना तथा परना शास्त्रनो जाण होय अने चरणसित्तरि ने करणसित्तरिथी हीण होय तो पण दुक्कर करणीनो कर्त्ता कीधेलो छे, तथा प्रवचनसारोद्धारमां जे द्रव्यगुण पर्याय जाणे ने आत्मानो स्वरूप जाणे तेने अरिहंत जाण्या कहीए, पण कांइ बाहेरथकी व्यवहार क्रिया तप तीर्थ जात्रा प्रमुख करे तेणे कंइ अरिहंतने ओळख्या कहीए नहि, इत्यादिक बहु शास्त्रने विषे दृष्टी देइने जोतां व्यवहारक्रियाने विषे आश्रवतुज भासन थाय छे, पण कांइ धर्मभासन थतुं नथी ॥ शिष्य वाक्य॥ स्वामी तमे एवुं कोहो छो के व्यवहारमां धरमभासन थतुं नथी, तो परमात्माए तो निश्चय तथा व्यवहार बे नयप्ररुप्या छे तेनुं केम ? गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! परमात्माए जे बे नय प्ररुप्या तेना सात भेद छे ते मध्ये चार नय व्यवहारनयमां छे अने त्रण निश्चयमां छे ते मध्ये प्रथम नैगमनय छे ते अणहूती वस्तुने हूती वस्तु माने छे जेम वइशाख शुद १० नो दाहाडो थाय ते वारे एवुं बोले जे, आज भगवान वीरस्वामी केवळज्ञान पाम्या. ने केवळ महोच्छव आज कर्यो ते मांहे शुं? कांइ आज भगवान छे नहीं, केवळज्ञान पण आज

छे नहीं, अने ते केवळी आपणने देशना दे ने आपणे सांभळीए ते मां-
हेलुं कांइ छे नहीं, अने लोक तेना ओच्छव महोच्छव करे छे ते
सर्वे अतितकाळनुं वर्त्तमान आरोपण करीने करे, तथा अनागत
काळनुं आरोपण करीने करे. जे आज श्री पद्मनाभ स्वामी जन्म्या
तथा केवळज्ञान पाम्या, इत्यादिक आरोपण करे ते हाल वर्त्तमा-
नमां वस्तुं कांइ छे नहीं. अणहूतीवंस्तुने वस्तु करी मानवी ए सर्वे
निगमनयनों मत छे, तथा संग्रहनय सत्ताग्राही छे ते वस्तु कांइ
प्रगटमां दीसती नथी तेने वस्तु माने छे तथा आत्माना आठ रुचक
प्रदेश छे ते थकी सिद्ध करीने माने छे, परंतु ते जीव तो निगो-
दमां रखडे छे तो ए काम केवुं थयुं के जेम कोइ पुरुपे मदिरा
पीधो होय अने तेनो छाक चड्यो तेथी आवतां रस्तामां केफमां
गडयळ जाणीने पासेथी वस्त्र प्रमुख सर्वे लोको लेइ गया अने
पोते अशुची अपवित्र जगाने विपे पड्यो छे अने मनमां घणो आ-
नंद माने छे के आज मुज सरखो कोइ छे नाहि पण जे वारे केफ
उतरे ते वारे ए महा दुखी थाय, तेम ए संग्रहनयवाळानो ए केफ
जेवो दृष्टांत छे. तथा बीजो दृष्टांत कोइक पुरुप पथ्थरनी कांकरीओ
लेइने वजारमां वेचवा गयो लोकने एवुं कहे के आकंचन छे परंतु
एतुं कांइ नाणुं आवे नहीं एनुं नाणुं क्यारे थाय के आगळगरा
जे कंचन पथ्थरथकी जुदो करे एवा पुरुपने त्यां लेइ जाय ने ते
पुरुष जुए जे एने विपे कंचन नीकळशे, अथवा नाहि नीकळे एवुं
भासन थाय तो कोडी पण नहीं आवे, अगर जो कंचन नीकळ
एवुं भासन थाय तो मण १ भारनो रु. ०॥ अथवा रु० १ आवे
पण इहां कंचननुं मूल न उपजे तथा कथीरनुं पण न उपजे.
एक मजुरीआनी मजुरी उपजे. तेम इहां जे जीव अभवी तथा
भवाभवी ते तो कांइ सिद्धि वरवाना नथी तेने जे सिद्धि माने ते

तो सर्व मिथ्या छे, ने जे जीव भवी रह्या तेमां सिद्धपणुं मानवुं ते तो विचार जे समकितीथी मांडीने चउदमा गुणठाणा सुधीना जीव तद्भव मोक्षे जाय. कोइ वे भवे, कोइ त्रण भवे, कोइ अनंत भवे, मोक्षे जाय परंतु तेनी वांसे सद्गुरु मेहेनत करे तो जेम पेले कांकरी वाळे थोडी किंमत आपीने पण कांकरी लीधी तेम तथा मिथ्यादृष्टी होय अने अल्प संसारी होय तेनी वांसे पण सद्गुरु मेहेनत करे पण कांइ सिद्ध केहेवाय नहीं शा माटे जे जेम ते कांकरीओ मांहेथी कंचन काढतां आगळगळाने वहु मेहेनत रही, तेम इहां संसारी जीवने विभाव थकी छुटवुं ने सिद्धि वरवुं. ते घणी मेहेनते थाय तथा बीजा जे जीव रह्या ते तो विचारा हजु पंचेंद्रिपणुं पाम्या नथी तथा केटलाएक बादरपणुं पाम्या नथी तथा केटलाएक व्यवहारराशीमां आव्याज नथी, तेने सिद्ध मानीए तेमां शुं वळ्युं. ते पण ए कल्पना खोटी दीसे छे. एटले ए बीजा नयनो पक्ष कह्यो. २ हवे त्रीजो व्यवहारनय तेमां बाह्य जे व्यवहारक्रिया आचार देखीतुं तेने धर्म माने छे तेना त्रण भेद छे, उपचरित व्यवहार ॥ १ ॥ अणउपचरित व्यवहार ॥ २ ॥ उपचरिताउपचरित व्यवहार ॥ ३ ॥ हवे उपचरित व्यवहार ते अणहुती वस्तुने वस्तु करी माने. जेम पथ्थरनी गाय तथा घोडा प्रमुख अनेक घाट एवो थाय छे तेने ते वस्तु करीने माने परंतु तेमां ते वस्तुपणुं छे नहि, उपचारे करीने मानवानुं छे, तथा अणउपचरित व्यवहार देखीता गुण होय तेने माने तथा उपचरिता उपचरित व्यवहार कंइक वस्तुता छे कंइक नथी तेने वस्तु करी माने, तथा बीजे प्रकारे पण त्रण भेद छे सदभूत व्यवहार १ ॥ असद्भूत व्यवहार २ ॥ सद्भूता सद्भूत व्यवहार ३ ॥ सद्भूत व्यवहार ते आकार सहित वस्तु होय तेने माने जेम

परमेश्वरनी मूर्तिने परमेश्वर माने तथा असद्‌भूत व्यवहार ते आकार रहितने माने जेम थापनाचार्यने माने तेमां कशो आकार छे नहीं तथा अन्य मतने विषे जेम शारंगरामने माने छे, तेमां पण कांइ आकार छे नही तथा सद्‌भूतासद्‌भूत व्यवहार ते कांइक आकार छे ने कांइक नथी तेवाने माने तेवां रूप देवी प्रमुखनां घणां दीसे छे ते सर्वे व्यवहार नय जाणजो, एटले ए व्यवहार नय देखीती वस्तुने मानवावाळो छे तेने विषे देखवामां तो पुद्‌गळ दृष्टिगोचर तथा प्रत्यक्ष प्रमाण इंद्रिए करीने थाय तथा ए नय पुद्गळ ग्राही छे शामाटे जे बाह्य थकी जोगी सन्यासी प्रमुख, मंत्रजंत्र वादी प्रमुख चमत्कारीपुरुषो तथा तपस्वी क्रिया कर्त्तव्य प्रमुख देखीने तेने सिद्ध करी माने तो ए नय इंद्रि प्रत्यक्ष ग्राही मानवावाळो छे माटे एने विषे कांइ आत्मिक भाव दीसतो नथी शा माटे जे आत्म अरूपी छे तथा आत्माना गुण जे ज्ञानादिक तथा आत्माना पर्याय जे स्व पर्यायादिक ते सर्वे अरूपी छे ते कांइ व्यवहारनयना दीठामां आवे नहीं

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एवुं सांभळ्युं छे के वेंहेचे ते व्यवहार तेनुं केम ? ते समज पाडो ॥ गुरुवाक्य ॥ हे महानुभाव व्यवहार जे वेंचवानुं पूछ्युं ते खरुं छे ते जे पूर्वे उपचरितादि भेद वेहेंची देखाडया ते सर्वे अशुद्ध छे तथापि शुद्ध व्यवहार जे छे ते ग्रहण करवा योग छे अने आत्माने बहु गुणकारी छे, परंतु अंते ते तो छोडवानोज छे, तोय पण ज्यांसुधी यथाख्यात चारित्र नथी पाम्यो अने मोहनीय कर्म क्षय नथी गयुं त्यां सुधी शुद्ध व्यवहार अंगीकार करवा जोग छे, ने जो शुद्ध व्यवहार अंगीकार न करे तो मोहनी कर्मक्षय थायज नहीं अने मोहनी कर्मक्षय थयाविना यथाख्यात चारित्र आवे नहीं, अने ए चारित्र विना केवळ

ज्ञान कोइ जीव पामे नहीं. अने केवळ विना मुक्ति कोइ काळे थाय नहीं, ते माटे शुद्ध व्यवहार अवश्य आदरवो, ए वातमां शंका राखवी नहीं.

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी शुद्ध व्यवहार ते शीरीते अमे समजीए, अने शीरीते थाय ते कृपा करीने अमने समजावो.

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र निश्चय थकी द्रव्य एवो शब्द छे ते सामान्य वचन छे ते विशेषे करीने समजवुं तेने शुद्ध व्यवहार कहीए ते तुं सांभळ, हवे हुं विवरीने कहुंछुं. द्रव्यना ६ छभेद छे धर्मास्तिकाय १॥ अधर्मास्तिकाय२॥ आकाशास्तिकाय ३ ॥ काळ४ ॥ पुद्गलास्तिकाय ५ ॥ जीवास्तिकाय ६॥ ए खट द्रव्य छे. द्रव्य ते शुं कहीए के जेने विषे उत्पाद ॥ १ ॥ व्यय ॥ २ ॥ ध्रुव ॥ ३ ॥ ए लक्षण लाधे तेने द्रव्य कहीए ते ध्रुवपणाथकी द्रव्यने साधीए तथा उत्पाद व्यय तेथकी पर्यायने साधीए, त्रणे लक्षण एक समे जेने विषे लाधे तेने द्रव्य कहीए हवे ते मध्ये जे जीवास्तिकाय छे तेने चेतन कहीए, ते चेतन एक एवा अनंता छे परंतु सत्ता स्वभाव जोतां एकज छे, केमके असंख्यात प्रदेश लोकाकाश प्रमाणे सर्वना सरखा छे तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग. ए छ लक्षण सर्वे जीवमां सरखां लाधे, ते आत्माना गुण पण कहीए तथा अव्याबाधपणुं, अणअवगाहपणुं इत्यादिक आत्माना पर्याय एम आत्माना गुण पर्यायनो विचार करवो ते भेदज्ञान कहीए. अने तेनेज शुद्ध व्यवहार कहीए आहियां विचार घणो छे परंतु ग्रंथ बोहोळो थाय माटे लख्यो नथी एटले ए त्रीजो नय कह्यो ॥ ३ ॥ हवे चोथो नय कहीए छीए तेनुं नाम ऋजुसूत्र ते परिणाम ग्राही छे जे समे जेवा जेना परिणाम वर्त्तता होय तेने तेवो करी माने, जेम कोइक साधु छे तेना परिणाम विषयमां कोइ समे वर्त्तता होय तेवा समयमां ए

नयने पूछीए के ए कोण छे त्यारे ए नयवाळो एवुं बोले जे संसारी छे, अथवा कोइ संसारी पुरुषने कांइ कारणथकी संसार उपर वैराग आव्यो छे परंतु कांइ ज्ञानथकी वैराग नथी कारणथकी वैराग छे ते कांइ संसारने छोडवानो नथी संसारमां ज रेहेवानो छे तो पण ते नयवाळाने तेवे समे पूछयुं होय तो तेने साधु कहे एवुं ए नयने विषे छे. परंतु एना कीधाथकी कांइ पेलानुं साधुपणुं जाय नहि ने संसारी साधु थाय नहि, शामाटे जे श्री भगवतीजीनां पंदरमा शतकने विषे सुमंगळा साधु आवती चोवीशीमां थशे तथा गोशाळानो जीव विमळवाहनराजा थशे ते विमळवाहन राजा तथा राजानो सारथी तथा राजाना घोडा सर्वने तेजो लेस्या मुकी बाळीने राख करशे तोपण ते साधु सर्वार्थ सिद्धे जशे अने ए नयनो मत तो ए साधु हिंसक ते वखत छे परंतु ए नयना मानवाथकी ए साधु कांइ हिंसक थया नहि ने नरके गया नहि. इत्यादिक घणीक वात विचारीने जोतां ए नय पुदूगळग्राही छे केमके मनना परिणामने ग्रहे छे, ते मन तो पुदूगळ छे अने मनना परिणाम जे शुभाशुभ उठे ते पण पुदूगळीक छे माटे ए नय पण व्यवहारनयमां भेळीए एटले ए चोथो नय कह्यो एटले पूर्वोक्त चारे नय व्यवहारना घरना छे अने चारे पुदूगळग्राही छे पण आत्मा ग्राही कांइ छे नहि ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, शुद्ध व्यवहार तो आत्माग्राही छे तेने तमे पुदूगळीक केम कोहोछो ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! शुद्ध व्यवहार छे ते कांइ नयनी गवेषणामां छे नहि ते तो ज्ञाननयना बे भेद करीए त्यारे ते गणत्रीमां आवे शामाटे के समकित गुणठाणाथी दशमा गुणठाणा सुधी शुद्ध व्यवहार छे माटे ते ज्ञाननयमां गणाय अने आतो व्यवहार कल्प

आश्रित समजवानो छे ते तो अंते विचारीने जोतां पेहेला गुण-ठाणामां छे माटे आहियां शुद्ध व्यवहारनयमां गवेल्यो नथी, एटले ए व्यवहारनयनी ओलखाण करावी.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, व्यवहारनयतो ओळखाव्यो, ते तो छोडवायोग्य छे पण आदरवायोग्य निश्चयनय छे ते ओळखावो.

॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणुप्रिय ! निश्चय दृष्टि विचारी जोतां शुद्ध निरंजन आत्मा एकज छे, कांइ आत्मामां आत्माना गुण पर्याय जूदा नथी. जेम सुवर्णने सुवर्ण ना घाट जे मुगट, कुंडळ प्रमुख ते कांइ सुवर्णथकी नोखा नथी, तेम ज्ञानादिक जे गुण ते कांइ आत्माथकी नोखा नथी.

॥ गुण पर्यायभ्यं आत्मा इति वचनात् ॥

माटे आत्माने एकज स्वरूप ध्यायुं.

॥ शिष्यवाक्य ॥ परमात्मानी वाणी एवी छे के ज्ञान दर्शनादिक आत्माना गुण कह्या छे अने तमे तो आत्मा एकज कहो छो गुण जूदा कहेता नथी तथा सिद्धांतमां एवा पाठ दीसे छे के.

तपसंजम अपाणभावे माणे विहरं.

इत्यादिक पाठ श्रावक साधुना अधिकारे घणा छे अने तमे तो एकज कहो छो.

॥ गुरुवाक्य ॥ जे ज्ञानादिक गुण तें जे कह्या ते सत्य छे, परंतु ए भेद ज्ञानने न्याये छे पण मूळ स्वरूपने विचारीने जुओ तो ज्ञान दर्शनादिक गुण तेज आत्मा छे जेम दूध अने दूधनी धारा तथा दूधनुं श्वेतपणुं तथा दूधनुं मधुरतापणुं इत्यादिक दूधना गुण ते कंइ दूधथकी जूदा नथी, दूध ने दूधनी धारा ते कंइ जूदी नथी एकज छे तेम ज्ञान दर्शन तेज आत्मा छे. कदापि आत्मानुं ज्ञानदर्शन कहीए

ते वारे ज्ञान दर्शन जूदुं ठरे ने आत्मा जूदो ठरे तो ए मोटो विरोध आवे. शामाटे जे ज्ञान दर्शन विनानो जे आत्मा रह्यो तेने पछी शुं कहीए ते वस्तुता रहे नहि. जेम कंचन छे तेने वीषे पीळाशपणुं तथा भारेपणुं तथा चीकाशपणुं ए जो कंचनथकी ज्यारे जूदां गणाय ते वारे कंचन क्यां रहे माटे भारे पीळो, चीकणो, तेनेज कंचन कहीए. पण जूदु कहेवुं बने नहि, तेमज ज्ञानदर्शन चारित्र, तेहीज आत्मा तथा जे तें संजमतप आत्माने भाववानुं कह्युं ते पण कांइ जूदुं नथी तपसंजम ते पण आत्माज छे, जेम मृतीकानां कोठी, कुंडां, घट इत्यादि जे छे ते कांइ मृतिकाथकी भिन्न नथी एटले ए सर्वे घाट छे, ते सर्वे मृतिकाने भजे छे, परंतु मृतीकाविना घाट होवे नहि तेम अहियां तपसंजम ते आत्माने भजे छे पण आत्माविना तपसंजम होय नहि.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, तपसंयम गुणनो अधीको ओछो दीसे छे अने तेम तो आत्मरूप कहो छो त्यारे तो सरखो जोइए.

॥ गुरुवाक्य ॥ जे तपसंजम गुण अधिको ओछो छे तेनुं कारण सांभळ. जेम ते मृतिकाना घाट नाहाना मोटा छे जेमां मृतिका विशेष छे ते घाट मोहोटो छे जेमां मृतिका ओछी छे ते घाट नाहानो छे तमे अहिंयां जे आत्मानां आवरण घणां खसी गयां तेनो तपसंजम गुण विशेष मालुम पडे छे. जेनां आवरण थोडां खस्यां छे तेना गुण ओछा मालुम पडे छे. परंतु आत्मस्वरूप ते एकज छे, शामाटे जे शुद्ध व्यवहारथकी नयनो पक्ष छे तेहीज आत्मा एवा स्वरूपने परमात्मापणुं प्रगट करवाने वास्ते आरोपण करीए. एटले आपणा आत्माने परमात्मरूप करीने ध्याइए तो आपण परमात्मा थइए.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी आपणो आत्मा हजु परमात्म स्व-

रूपे प्रगट थयो नथी अने तेने परमात्मरूप करीने ध्याइए ते तो असत्य कल्पना थाय छे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! आपणो आत्मा परमात्मा तो छेज परंतु आवरणना जोरथी आत्मा कहेवाय छे पण मूळ सत्ता जोइए तो आत्माने कंइ कर्म लागतां नथी. आत्माने कर्म केवी रीतनां रह्यां छे के जेम सूरजनी आडां वादळां, तेम आत्माने कर्म रह्यां छे माटे आत्माने कर्म वळगतां नथी ए अधिकार पन्नवणासूत्र थकी जोजो.

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी. तमे तो सूरज वादळांनो दृष्टांत बतावोछो अने अमारा सांभळ्यामां कर्म खीर नीरने द्रष्टांते छे

॥ गुरुवाक्य ॥ महानुभाव! ए पण एज छे जे दूधनी मांहेली-कोरे पाणी नांखीए तो कांइ दूधना प्रदेश मटीने पाणीना प्रदेश थाय नहि आप आपणी सत्तामां सर्वे रहे छे

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, दूध पाणी कांइ जूदुं तो पछी जणातुं नथी अने तमे तो कहोछो के आप आपणी सत्तामां रहेछे ते केम समजवामां आवे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र! ए दूध लेइने अग्नि उपर मूकीए ते वारे पाणी होय ते बळे अने दूधनो मावो नरवो रहे त्यारे समजवुं के बेउनी सत्ता जूदी छे जो बेउनी सत्ता एक थइ होय तो बेउ बळतां, माटे सौ सौनी सत्तामां छे. तथा बीजे द्रष्टांते जे जूवारना डोकाने छोलीने मांहेलुं जे बोयुं ते दूध मांहे नांखीए. तो ते पाणी होय ते पीए अने बहार काढी नीचोवीए एटले पाणी होय ते नीकळी जाय, फरीथी नाखीए तो पाणी होय ते पीए वळी काढीने नीचोवीए, एम ज्यां सुधी पाणी होय त्यां सुधी पीए. एकलुं दूध रहे एटले पीए नहि तेम अहियां आत्मा तथा कर्म ते बे एक

मेक दीसे परंतु एक मेक थाय नहि. आत्मा आत्मानी सत्तामां रहे, पुद्गळ पुद्गळनी सत्तामां रहे माटे ए कर्म ने आत्मा बे जुदां छे. हवे आत्मा छे तेना असंख्यात प्रदेश छे एकेक प्रदेशे अनंतु ज्ञान छे तथा अनंतु दर्शन छे तथा अनंतु चारित्र छे तथा अनंतु वीर्य छे तेम अनंत गुण छे ते जेम एक प्रदेशे कह्या तेम असंख्याता प्रदेश जाणवा, ते माटे ए आत्मा अनंत गुणनो धणी छे, तथा अलिप्त छे एटले कर्म साथे लीपाणो नथी तथा अरागी छे तथा अद्वेषी छे एटले रागद्वेष ते पुद्गळना घरना छे ते कांइ आत्माना नथी ते सदाए सत्तामां एवोज छे. आत्मा सत्ताए निर्मळ रह्यो छे माटे जेवुं परमात्मातुं स्वरूप तेवुंज आत्मातुं स्वरूप छे माटे एने परमात्मा करीने ध्याइए तेमां असत् कल्पना नथी ए तो सत्यज छे

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी पूर्वे संग्रह नयना अधिकारमां तमोए सत्तातुं स्वरूप निषेधी नांख्युं हतुं अने अहियां सत्तानुं स्वरूप तमे देखाड्युं ते केम ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! संग्रहनयने विषे जे सत्तातुं स्वरूप निषेध्युं ते त्यां कांइ प्रगट दीसतुं नथी, अने अहियां तो घणुं प्रगट दीसे छे जेम घासने विषे घी मानीए पण तेथी कांइ हाल दीसतुं नथी एतो एक ओघशक्ति छे शुं जाणीए के ए घास बळी जशे अथवा ऊभी सडी जशे अथवा सहज वनना जनावर छे ते खाशे अथवा हाथी घोडा प्रमुख जनावर खाइ जशे ? तो एटली जातमां तो कांइ घी थवातुं नथी, जे वारे गाय तथा भेंश तथा बकरी तथा गाडर ए चार जनावरना खाधामां आवे तो घीनी आशा थाय ते मध्ये पण वाखडां जनावर खाइ जाय ते तो कांइ लेखामां आवे नहि दुझणुं खाय त्यारे लेखामां आवे एटले घासनुं घी तें कीधुं ते प्रमाण न थयुं तेम संग्रहनय नाम ते पण निगोद प्रमुख सर्वने

परमात्मपदे माने छे तेना व्याघात पूर्वे कह्या छे, तथा दूधमां जे घी कहीए ते कोइथी ना न कहेवाय अने तरत दूधमांथी घी नीकळे पण खरुं, तेम आहियां अंतर आत्मा तेने परमात्म स्वरूप करीने ध्याइए तेने कोइ वातनुं दूषण छे नहि, एटले दूध जेम कह्युं तेम अंतरआत्मा छे ते समुचित्त शक्ति पामेलो छे ते अधिकार विस्तारथी जोवो होय तो सुमतिग्रंथमां जोजो. एवी रीते आत्माने परमात्मस्वरूप करीने ध्यातायका पोतानो आत्मा प्रगट थाय ते वातमां संदेह राखवो नहि.

॥ दुहा ॥

निश्चय व्यवहार रचना कही, संक्षेपे सुखकार ॥
सारसार वचन उधरी, सिद्धांतना आधार ॥ १ ॥
निश्चय स्वरुप वखाणीउं, सिद्धांतमांही जेह ॥
तेमांथी प्रगट करुं, किंचित् मात्र एह ॥ २ ॥
व्यवहारमां विखवाद घणो, ते देखाडयो आज ॥
ते समजीने छोडजो, जेम सरे आतमकाज ॥ ३ ॥
पापकर्म दूरे करी, भजे आतमराम ॥
द्रव्यगुण पर्यायने, समजवानुं काम ॥ ४ ॥
अमरीत रस एह छे, आपे अमर अवतार ॥
जन्ममरण टळे सही, साचो ग्रंथ विचार ॥ ५ ॥
भणशे गणशे जे नर, सांभळशे धरी प्रेम ॥
संवरधारी ते सही, साचो तेहनो नेम ॥ ६ ॥

देवलोक नरलोकनी सही, ऋधितस आगळ दास ॥
ते नर कर्म दूरे करी, वेगे ले शीववास ॥ ७ ॥
एह वात खोटी नहि, मत कोइ धरो संदेह ॥
शास्त्र अनुमाने कहुं, साचो गुणनो गेह ॥ ८ ॥
संवत ओगणी ओगणीसमें श्रावण परथम मास ॥
तीथी अष्टमी जाणीए शुक्ल पक्ष नीवास ॥ ९ ॥
बुधवारे बुद्धि वधे रचनाए सुखकार ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नामे जे जे कार ॥ १० ॥
शुद्धाशुद्ध वचन जे साधजो चतुर सुजाण ॥
अपमान कोइ करशो नहि ग्रंथ तणुं ते जाण ॥११॥
रचना छद्मस्थ भावथी तेथी दूषण कोइ ॥
देखे ते शोधे सही पंडित ज्ञाने जोइ ॥ १२ ॥
ए ग्रंथ अविचळ रहो, नभभु पेरे सोय ॥
विस्तरजो पृथ्वी विषे मुख मुख ग्रंथ ए होय ॥१३॥
एहमां ज्ञान अगाध छे गुण पण एहना अगाध ॥
स्वयंभूरमण पेरे गंभीर छे, सुगुरु संगे साध ॥१४॥
मुनि हुकम अनुभव करी, चिदानंद महाराज ॥
आळ पंपाळ दुरे करी, सारयुं नीज आतमकाज ॥१५॥

आत्म रमण एह छे, ग्रंथ एह विनाण ॥
रमतां सुख संपति लहे निज स्वरूप सुख मान ॥१६॥
शीव रमणी आवे तेडवा केवळ श्री ले साथ ॥
ग्रंथ ए जेह रुदीए धरे तेनो झाले हाथ ॥ १७ ॥



इती श्री सिद्धांतसारोद्धार ग्रंथ
संपुर्ण ॥

तत्वसारोद्धार.

श्री गुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥

अविनाशी अकलंकतुं, नीरंजन नीराकार ।
हुं वंदु ते आत्मा, निज अनुभव उदार ॥ १ ॥
तत्व तत्व ग्रहण करी, ठवुं वचन मनोहार ।
श्रोता सुणजो कान देइ, जेथी भवनो पार ॥ २ ॥
तत्व सारोद्धार ए, ग्रंथ ज्ञान उद्योत ।
भणतां नीपजे, नीज आतम गुण श्वेत ॥ ३ ॥

हवे भाषा लखीये छीये–हवे जगतने विषे अनेक पदार्थ छे ते सर्वनुंसार वीचारीने काढीये त्यारे तत्व बे छे, जीवतत्व. १ अजीव तत्व. २ ए बेज तत्व छे ए बे विना बीजो कोइ पदार्थ दीसतो नथी. शिष्यवाक्य–स्वामी पुर्वे अमे तत्व सात तथा नव सांभल्यां छे तेनुं केम ? गुरुवाक्य–हे भद्र ए बे तत्वना सात पण थाय, तथा नव पण थाय. ते कल्पना छे, परंतु तेने भेद करीने देखाडुं ते सांभल. हवे जीव द्रव्यनां चार तत्व छे. जीवतत्व १ संवरतत्व २ निर्जरातत्व ३ मोक्षतत्व ४. तथा अजीवतत्वना पांचतत्व छे. अजीवतत्व १ पुन्यतत्व २ पापतत्व ३ आश्रवतत्व ४ बंधतत्व ५ एटले ए जीव अजीव मलीने नव तत्व थयां तथा पुन्य पाप न गणीये तो सात तत्व थाय.

शिष्य–स्वामी पुन्य पाप गणीये, तेने शावास्ते ना गणीये ? ए तत्व छे के नथी ते समजावो.

गुरु–जे पुन्य पाप बे तत्व छे, ए आश्रव छे त्यारे ए बे तत्व जुदा गणीये तो आश्रव शेने कहीये ? जे पुन्य पापनां दालियां आवे छे तेनेज आश्रव कहिये, एटले सातज तत्व छे. तथा जे आवे छे तेने आश्रव गणीने भेद पाडीये त्यारे उदय आवेलां जे दलीयां ते भोगवीने खेरवीये तेने पुन्य पाप कहिये, एटले तेथी नव तत्व थाय.

शिष्य–स्वामी ए नवेतत्वनो विवरो करीने बतावो.

गुरु–प्रथम अजीवतत्वनी ओलखाण करावुं छुं. अजीव ते केने कहिये के जेने विषे चेतना रूप लक्षण नथी ते अजीवना जघन्य थकी पांच भेद छे, ने उतकृष्टा १६० भेद छे ते प्रथम जघन्यना पांच भेद ओलखावीये छीये तेनी वीगतः—धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काळ ४ पुद्गलास्तिकाय ५ हवे धर्मास्तिकाय ते शुं कहिये–धर्मास्तिकाय एक द्रव्य छे ते अरूपी छे, चउद राज्य लोकना प्रमाण ए द्रव्य एक छे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश तेटला प्रदेश छे पण निराकार छे आकार करी रहित छे तेमां कशी क्रियानो गुण नथी पण जे जीव पुद्गल चाले छे तेने साहाय आपे छे.

शिष्य—स्वामी, जो एनामां क्रिया नथी तो चालतां ने साहाय केम आपे छे.

गुरुवाक्य—हे भद्र, साहाय आपवी ते स्वभाविक छे अने क्रिया छे, ते विभावीक छे, ते वीभावदशा एने विषे नथी ते पोत पोताना स्वभावमां सदाय रहेछे जेम जलनो स्वभाव छे ते तरवानो छे तथा तेलनो स्वभाव डुवाडवानो छे ए ते स्वभाविक केहेवाय

विभावीक नहीं. विभाविक ते केनुं नाम के जेम अग्नि छे ते काष्टादिकना संजोग थकी सामी वस्तुनो नाश करे ते विभाविक कहीये.

शिष्य—स्वामी अग्निमां तो दाहक स्वभाव छे एने विभाविक केम कहो छो ?

गुरु—दाहक स्वभाव छे ते काष्टादिक वस्तुजोग छे तेने बाळे, परंतु पथ्थरने कंइ बालवानो स्वभाव छे नहीं. पण विभावना जोरथी पथ्थरने पण बाले, तथा पाणी छे ते अग्निनुं शस्त्र छे शा माटे के पाणीथकी अग्निनो नाश थाय, परंतु विभावना जोरथी अग्नि पाणीने पण बाले. एटले विभाव ते शुं. जे पोताथकी बीजा अपरनुं मलवुं, बे मलीने जे कार्य करवुं तेनुं नाम विभाव कहीये अने विभाव तेनेज क्रिया कहीये. एटले ते विभाव दशा ते धर्मास्तिकायमां नथी. शा माटे जे एकथी बीजो मले नहीं. एटला वास्ते अमे क्रियानी ना पाडी, तथा जे चेतनने चालतां साहाय आपे छे ते शा दृष्टांते के जेम माछलां जलने विषे चाल्यां जाय छे ते जलना साहायथकी चाले छे तेम जड चेतन धर्मास्तिकायनी साहायथकी चाले छे १. तथा अधर्मास्तिकाय बीजो द्रव्य ते पण अरूपी छे तेने विषे आकार नथी, तथा क्रिया पण नथी ते जड चेतनने थीर रहेवुं होय तेने साहाय आपे छे कया द्रष्टांते के जेम कोइ पुरुष पंथे चाल्यो जाय छे अने ते धरती एवी छे जे ज्यांहां झाड झाझुं छे नहीं. अने ग्रिष्मरुतु छे एटले जेठ महीनाना दाहाडा छे अने लू पण घणी वाय छे ताप पण घणो आकरो छे तेवी वखते ते चालता पुरुषने मारगमां चालतां कोइक झाड आव्युं, ते झाड केवुं छे के महा विस्तारवंत जेनी छाया छे एवुं झाड देखीने ते पंथी लू तथा तापमांथी हींड्यो आवतो थको ते झाड हेठल

वेसे के न वेसे आपे तुं वेसे. ए झाडनी साहायथकी ते पंथी वेठो तेम जीव अजीवने थीर रेहेवुं ते अधर्मास्तिकायनी साहायथकी रहे २. हवे त्रीजो आकाशास्तिकाय द्रव्य एक लोकालोक प्रमाण छे, ते पण अरूपी छे तेने विषे पण कशो आकार नथी तथा क्रिया पण कशी छे नहीं, परंतु जड चेतनने अवकाश आपे शा द्रष्टांते के जेम कोइए चुने करीने इंटो चणी होय पछी ते भींतमां माग कश्यो ए होय नहीं एवी साफ करेली छे तो पण तेने विषे खीली मारीए तो मांही पेसे तथा जेम काष्टना मोभ प्रमुखने विषे जेटली खीलीओ मारीये तेटली मांहे समाय परंतु ते काष्टनुं डगलुं ते खीलीना भागनुं वधारे थतुं नथी ते जेम ए काष्ट तथा भींतना स्वभाव छे ते जेम खीलीने मारग आपे तेम आकाश द्रव्य जीव पुद्गलने मारग आपे. ३ हवे चोथो द्रव्य जे काल.

शिष्य—स्वामी, पूर्वे धर्मास्तिकाय प्रमुख द्रव्यने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने अस्तिकाय केम न कह्यो ! एकलो काल कहिने बोलाव्यो तेनुं शुं कारण. ?

गुरु—हे देवाणु प्रीय! धर्मास्तिकाय प्रमुख जे द्रव्य छे ते बहु प्रदेशी छे शामाटे के धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय तथा जीवास्तिकाय ए त्रण द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे तथा आकाशास्तिकाय अनंत प्रदेशी छे अने पुद्गलास्तिकायना खंध अनंता छे ते कोइ द्वी प्रदेशी छे कोइ त्रण प्रदेशी छे यावत् संख्यात प्रदेशी छे तथा असंख्यात प्रदेशी तथा अनंत प्रदेशी छे, तथा अनंता परमाणुं जूदा छे, तेमां पण खंध मलवानी शक्ति रही छे माटे एने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने विषे एक समयथी वीजो समय मळे नहीं. माटे तेने अस्तिकाय कह्यो नहीं.

शिष्य–स्वामी ! एक समयथी बीजो समय मले नहीं त्यारे एने द्रव्य केम कहो छो.

गुरु–हे भद्र ! सर्वे शास्त्रने विषे पंचास्तिकायनी व्याख्या छे अने द्रव्य छनी व्याख्या छे, पण छट्ठो द्रव्य जे काल ते कांइ पदार्थ नथी पण सर्वे द्रव्यने नवानुं जुनुं करे एटला माटे तेने द्रव्य कह्यो. परंतु प्रथम समयनो नाश थाय अने बीजो समय आवे माटे काल द्रव्यने उपचारे करीने द्रव्य कहीये छीये ते द्रव्य अरूपी छे, आकार पण कश्यो ए छे नहि क्रिया पण छे नहि, नवी वस्तुने जुनी करे एवुं परावर्त्तन धर्म छे ४ हवे पुद्गलास्तिकाय तेने विषे रूपीपणुं छे, आकार पण छे तथा क्रिया पण छे, मलण वीखरण स्वभाव छे ५ एटले ए अजीवना पांच भेद ते मध्ये चार भेद अरूपी अने एक रूपी ए सर्वे मलीने पांचनी ओलखाण करावीए. सर्वे व्यवहार नयना पक्ष छे. हवे जे ५६० भेद एना कहीशुं ते अशुद्ध व्यवहार नयना पक्ष छे, शामाटे के कल्पना करीने भेद उठाववा तेनुं नाम अशुद्ध कहिये. अने वेहेंचवुं ते व्यवहार एटले अशुद्ध व्यवहार थया.

शिष्य–एवा अशुद्ध भेद वेहेंचवानी शी जरुर छे ? एवा कल्पीत भेद करवाने वस्तुता कंइ जूदी पडती नथी ते तो ते पांचमांने पांचमां छे, तो शा वास्ते कल्पीत भेद करोछो.

गुरु—हे भद्र ! ए तें कह्युं ते खरुं, परंतु बाल जीवने भेद वेहेंच्याविना समजण आवे नहि ते वास्ते ए भेद वेहेचवा पडे छे. जेम कोइ पुरुष पोताना घरना माणसने केहे जे दातण लाव ते वारे ते पुरुष डाह्यो समजु होय तो दातण, पाणीनो लोटो, रुमाल, तमाकु प्रमुख जे घस्तो होय ते सर्वे लावे, एटले ते जाणे के वधुंए जोइशे

पण अणसमजु होय अथवा बालक छोकरुं होय तो तेने जेटली वस्तु कहिये तेटली लावे माटे तेने सर्वे विवरीने कहुं जोइये, तेमज समजु पुरुष होय ते संक्षेपथी कीधां थकी समजे एवा विस्तार बुद्धि-वाला जीव थोडा होय अने थोडी बुद्धिवाला जीव घणा होय तेने विस्तारे करीने समजावीये त्यारे समजे, ते माटे भेद विवरीने कहिये छीये हवे धर्मास्तिकायना आठ भेद छे तेनो खंध लोकाकाश प्रमाण एकज छे १ धर्मास्तिकायना देश जे अधो लोक उर्ध्व लोक तिर्च्छो लोक इत्यादिक जे कल्पीये ते देश कहेवाय २. तेना प्रदेश असंख्यात छे, जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला एना छे ३ ते द्रव्यथकी एकज द्रव्य छे ४ खेत्रथकी लोकाकाश प्रमाण छे ५ अने कालथकी अनादिअनंत छे, एटले आदिअंत नथी ६ भाव-थकी वर्ण, गंध, रस, फरस, तथा स्वस्थान नथी ७ गुणथकी जीव पुद्गलने चालतां साहाय आपे ८ तेमज अधर्मास्तिकायने विषे जाणवा, परंतु एटलो विशेष के धर्मास्तिकाय चालताने साहाय आपे, ते नहि अने थीर रहेते ने साहाय करे ते गुण आठमो लेवो २ आकाशास्तिकायने विषे खंध जे छे ते लोकालोक प्रमाण १ देश ते चउद राज्यलोक प्रमाण, तेने देश कहिये कदापि ओछो अधिको कल्पिये तो पण तेने देश कहिये २ प्रदेश अनंता छे, ३ द्रव्यथकी एक द्रव्य छे, ४ खेत्रथकी लोकालोक प्रमाण छे, ५ काल ६ तथा भावथकी पूर्ववत् ७ गुणथकी अवगाहना गुण जड चेतनने मार्ग आपे ८–३ चोथो काल द्रव्यना ६ भेद ते मध्ये काल द्रव्य विषे खंध देश छेज नहिं, शा माटे जे अछतो पदार्थ छे सदाये एक समय लाधे, १ द्रव्यथकी काल द्रव्य एक छे २ खेत्रथकी अढी द्वीप प्रमाण ३ काल ४ तथा भावथकी पूर्ववत् ५ गुणथकी नवा पुराणावर्त्तना लक्षण ६ ए काल द्रव्य उपचारथकी छे एटले अजीव

अरूपी द्रव्यना चार भेद धर्मास्तिकाय आदे दइने कह्या ते सर्वे अरूपी छे ते ज्ञानीना दीठामां आवे परंतु चर्म द्रष्टिवालाथी देखाय नहिं एम सद्दहवुं. हवे रूपी द्रव्य कहिये छीये, पुद्गल द्रव्य जे रूपी तेना भेद कहिये छीये. वर्ण ५, रातो १, पीलो २, लीलो ३, धोलो ४, कालो ५; गंध २, सुरभी तथा दुरभी. रस ५, कडवो कशायलो, खाटो, तीखो, मधुरो. फरस ८, टाहाडो १, उनो २, लुखो ३, चोपडो ४, भारे ५, हलवो ६, बरसट ७, सुकोमल ८; संस्थान ५, लांबु १, गोल २, त्रिखुण ३, चोखुण ४, वलोयाने आकारे ५, हवे पांच वर्णना १०० भेद थाय ते कहिये छीये. प्रथम जे रातो वर्ण छे तेने विषे सुरभी तथा दूरभी बे गंध होय, रस पांचे लाधे, फरस आठे लाधे, संस्थान पांचे लाधे, तेना स्वामी कहिये छीये. राते वर्णे कुसुम, गुलाब, तथा कमल प्रमुख छे; तेने विषे गंध सुरभी छे, फरस सुकोमल हलको तथा शीतल छे, तथा स्निग्धपणुं छे संस्थान गोल छे. रस मधुरो छे, एम एक एक वर्णमां गंध प्रमुख ज्यांहां यथा योग जोइये तेवा गणी लेवा. एटले ए राता वर्णना वीश भेद थया, तेम लीला वर्णना वीश, पीला वर्णना वीश, श्याम वर्णना वीश धोला वर्णना वीश एटले ए पांच वर्णना मलीने १०० थया, एटले ए एक वर्णमां बीजो वर्ण नहिं आवे केमके तेनो ते प्रति पक्षी छे, माटे वर्णना न गणीये त्यारे एक एक वर्णे वीस वीस आवी रहे, तेमज रसना पण गणवा, परंतु ज्यां मधुर अथवा हरेक कोइ रस होय त्यां बीजा प्रतिपक्षी चार रसना होय ते वारे एक रसमांहे वीस भेद लाधे. तेनी विगत वर्ण ५, गंध २, फरस ८, स्वस्थान ५, एटले वीश थया, एम पांच रसना थइने सो थाय तेमज स्वस्थानना विषे पण २० भेद लाधे तेनी विगत उपर प्रमाणे पांच स्वस्थानना थइने सो भेद थया तेमज

गंधने वीशें ते वीस भेद लाधे, तेनी विगत, वरण ५, रस ५, फरस ८, स्वस्थान ५, ए २३ सुरभी गंधना अने दूरभी गंधना २३ मलिने ४६ थाय हवे फरसना प्रथम ७, फरसने विशे प्रति पक्षी उष्ण फरस न होय, बाकीना ६ ए फरस लाधे. वरण ५, रस ५ गंध २, स्वस्थान ५ एटले ते वीस थया ए एक फरसना तेविस तेम आठे फरसना तेवीस तेवीस गणतां १८४ भेद थया. एटले वर्णना १००, रसना १००, संस्थानना १००, गंधना ४६, ने फरसना १८४, सर्वे मलीने ५३० थया. एटले रूपी अजीव द्रव्यना ५३०, भेद थया अने अरुपि द्रव्यना ३० भेद एटले सर्वे अजीव मलीने ५६०, भेद थया ए सर्वे अशुद्ध व्यवहार नयना पक्ष छे. एटले अजीव तत्व कह्यो, हवे आश्रव तत्व ओलखावीये छिये. एटले आश्रव कहेतां जे कर्मनुं आववुं थाय छे तेने आश्रव कहिये अने ते आश्रव शा थकी आवे छे अने तेनो हेतु कोण छे तेनुं कारण देखाडिये छिये हवे ए आश्रवने आववाने मूल हेतु च्यार छे. उत्तर हेतु ५७ छे ते मूल हेतुनां नाम, मिथ्यात्व १ अव्रत २ कषाय ३ जोग ४ तेमां मिथ्यात्वना ५ भेद छे, तेमां पहेलुं अभिग्रहि मिथ्यात्व ते केने कहीए जे पूर्वे अज्ञानपणाने विषे कोइ अज्ञानी संगे अथवा अज्ञानी गुरुना उपदेश थकी जे सांभल्युं छे, अने जे वस्तु ग्रहण करी छे, ते छोडे नाहि. कदापि कोइ सुगुरु मले ने घणी रीते करीने समजावे तो ए पण पोतानी हठ छोडे नहि. लोह वाणियानी पठे आहियां लोह वाणिआनो द्रष्टांत लखीये छीये.

वसंतपुर नगरीने विषे धनदत्त १ धनसार २ धनवल्लभ ३ वसुहिण ४ एवे नामे चार वाणीया वसे छे ते चारे ने दोस्त दारीनो हक घणो छे, परंतु चारे निर्धन छे, एक समे चारे भेगा थइ विचार कर्यो के आपणी पासे धन नथी, धनविना मान पा-

मीये नहिं ने सुख पण होय नहि. माटे परदेश धन कमावा जइ-
ये एम विचारीने चारे जण परदेश गया. आगल जतां एक दी-
वसना समाजोगे एक अटवीमां जतां रस्तो भूल्या ने आडा
मार्गे जाय छे, त्यां आगल जतां एक लोढानी खाण आवी ते
वारे चारे जणे विचार करयो के लोढुं ल्यो, आपणने खरची
मां खप लागशे एम विचारी चारे जणे लोढुं लीधुं, त्यां थकी
आगल चाल्या, त्यां कलाइनी खाण आवी ते वारे मांहो मांहे
कहेवा लाग्या के कलाइ ल्यो अने लोढुं पडयुं मुको, ते वारे त्रण
जणे लोढुं पडयुं मुकी कलाइ बांधी पण चोथो जे वसुहिण तेणे
कलाइ न लीधी, त्यारे त्रणे जणा कहेवा लाग्या के तुं कलाइ ले
एटले आपणे जइये तोपण ते बोल्यो नहि एम घणीवार क-
ह्युं त्यारे ते बोल्यो के तमारी रीत जोइने हुं तो भेचक थयो छुं
त्यारे त्रणे जणे पुछ्युं के तुं शा माटे एवडुं बोले छे ? ते बोल्यो
के तमे दगाखोर आदमी छो तेओ कहे तारी साथे शो दगो करयो ?
तेणे कह्युं के तमे लोढाना सगा न थया तेने त्यांथी लावीने अध-
वच नांखी दीधुं तो तमे तेना भला न थया तो बीजाना शुं भला
थशो ? ते वारे तेओ कहे के एमां कांइ जीव नथी, के दगो करयो.
एम घणी रीते कह्युं के तुं कलाइ बांध पण कोइनो समजाव्यो स-
मज्यो नहि. त्यांथकी आगल चाल्या एटले त्रांबानी खाण आवी
त्यां पण ते समज्यो नहि, पूर्वनी पेरे लोढुं राखी रह्यो ने त्रांबु
लीधुं नहि. तेमज आगल जतां रुपानी तथा सोनानी तथा सोले
जातना रत्ननी खाण आवी त्यां पण एणे कोइनुं कह्युं मान्युं नहि
त्यारे सोलमी जे मणी रत्ननी खाण छे त्यां बेशीने धनसार प्रमुखे
कह्युं जे अमारे हवे आगल कमावा जवुं नथी, केमके जे जोइये
ते धन इहां मल्युं छे माटे अमे पाछा घेर जइशुं, वास्ते समजीने

मणीरत्न लें ने लोढुं नाखी दे. एटले आपणे घेर जइये तो सर्वे सुखीया थइये परंतु ते वसुहिणे कोइनुं कह्युं मान्युं नहीं उलटा अवगुण बोल्या करयो, वली तेमणे कह्युं के घेर गया पछी तुं मागीश तो अमथी अपाशे नहीं. इत्यादिक घणी तरेहथी समजाव्यो पण ते समज्यो नहीं. पछी चारे जण घेर आव्या तेमां त्रण जणे मणीरत्न वेचीने करोडो सोनइयानो व्यवसाय करवा मांडयो. पालखी, मेना, घोडा, गाडी, चाकर वीगेरे मोटी ठकरात करीने बेठा ने वसुहिण तो हता तेवाने तेवा रह्या. ते वारे गामना लोक तेने पूछे जे तमे चारे मित्र साथे गया हता ने त्रण धनवान थया ने तुं कंइ न लाव्यो ते शुं? त्यारे मोघम उत्तर आपे के ए त्रण दगाखोर छे कुटील माणस छे, विश्वास करवाजोग नथी एवो उत्तर करे तेथी गाममां एवी वार्त्ता प्रसिद्ध थइ के केटलाक कहे छे के एनो भाग त्रणे जणे आप्यो नहीं, केटलाक कहे छे के एज कमायो हतो ते त्रणे जणे मलीने वसुहीणनुं पाडी लीधुं, एम मुखे मुखे नोखी नोखी वार्त्ता प्रवर्त्ते, त्यारे गामना बे डाह्या समजु हता तेणे वसुहीणना सगा वाहालाने ठपको दीधो जे तम जेवा सगा अने ते बिचारा गरीबनुं पेला त्रण जण खाइ गया तेनी तमे मदद करता नथी ए ठीक नहीं सारा सगा शा कामना छे ते वारे ते सगा वाहाला बोल्या जे शेठजी तमे अमने ठपको आप्यो ते ठीक छे पण अमने कह्या वगर शी मालम पडे त्यारे तेमणे कह्युं के ए गरीब शुं केहेवा आवे तमारे बोलावीने पुछवुं जोइये ते वारे ते सगावाहाला भेगा थइने वसुहिणने बोलावीने पुछवा लाग्या के ताहारे शी हकीकत थइ तेणे जवाब दीधो के ए लुच्या, दगाखोर. एवा आदमीनी वात करवामां कांइ माल नथी सगाए कह्युं के लुच्या प्रमुख जेवा हशे तेवाने अमे पोहोंचीशुं पण तुं अमने वात

कहे पण ते वात केइ नहि. घणो आग्रह करीने तेनी पासे वात कहेवडावी. त्यारे मांहेथी सार एवो नीकल्यो के एणे जे पूर्वे लोढुं झाल्युं हतुं ते छोडयुं नहीं अने पेलाओए जे सार वस्तु दीठी ते लीधी. असार दीठी ते नाखी दीधी. एवुं सांभलीने जे सगा मल्या हता ते बोल्या के भाइ तारा कर्मनो वांक छे एमनो वांक नथी नाहक एमनो वांक शा वास्ते काढाडे छे जे तें लोढुं झालीने हठ न मुकी तो तुं दुखीयो थयो एमणे तो तने घणुं समजाव्यो पण तें ना मान्युं एमां एमनो कांइ वांक नथी एटले जेम ते लोहवाणियो दुखियो थयो तेम प्रथम अज्ञानपणामां जे वस्तु झाली ते कोइ सुगुरु मलेथी ना छोडे तो ते चार गती संसारमां अनंताकाल रखडे तेने आभिग्रही मिथ्यात्व कहिये. १

बीजुं अणाभिग्रहि मिथ्यात्व कहेतां तेने विषे हठवाद नहि तेम श्रद्धा पण स्थिर नहि, सर्वेने देव जाणे कोण सरागीने कोण वीतरागी तथा कोण देवी देवलां तथा सर्वेने गुरु जाणे कोण निर्ग्रंथने कोण सग्रंथ कोण आरंभी, कोण अणारंभी ए सर्वेने वांदे पूजे पण एने विषे सारा नरसानी खबर नहि गुण अवगुणनी परीक्षा नहि मुक्ति दायक सुगुरु तेने पण सरखा गणे सआरंभि कुगुरु कुगतिना दातार तेने पण सरखा जाणे एटले तेने विषे जाणपणुं कशुं ए नहि एज मोटुं अज्ञान ए बीजो भेद मिथ्यात्वनो जाणवो२ त्रीजो अभिनीवेशि मिथ्यात्व तेने विषे जाणीने खोटी हठ करवी केमके कांइ प्रथम अज्ञानपणामां मृषा वचन नीकली गयुं पछी समज्यामां आव्युं के आपणे वचन बोल्या ते मिथ्या छे परंतु आपणे बोल्या ते कांइ पाछुं फरे नहि एम विचारीने वचन उपर अनेक युक्ति लगावीने तेने साचुं करे कोनी पेठे के जेम आ गच्छ समाचारियो वाला नोखी नोखी समाचारियो बांधीने बेठा छे अने शास्त्रमां प्र-

त्यक्ष अक्षर देखे छे ने मानता नथी, अने पोताना गच्छनी समाचारीनो ममत मुकता नथी अने मुखथकी एवुं कहे छे के एककानो मात्र उथापशे तो अनंत संसारी थशे ने काम पडे त्यारे एके माने नहि पोतानी मतलबमां आवे ते माने ने पोतपोताना घरडा आगल मरी गया होय तेने आडा धरे के ते थकी तमे कांइ विशेष जाणो छो एमणे करयुं हशे ते समजीनेज करयुं हशे तथा सिद्धांतने विषे आरंभ परिग्रह जेम ओछो थाय तेम धर्म कह्यो छे, पण आ काले तो जेम आरंभ परिग्रह वधारे तेम धर्म माने छे, वली मुखथकी एवुं कहे छे के कानो मात्र उथापवाथी जमाली प्रमुख सात नीन्हव थया एम कहीने देखाडे अने पोते आखां सूत्र उथापे, पोते मनमां न विचारे के आपणे मोहोटा नीन्हव छीये तथा परमात्माना मार्गने विषे तो समकीत १ ज्ञान २ चारित्र ३ ए वस्तुओ आत्मस्वरूपमां छे अने आत्मस्वरूपथी प्रगट थाय तोज तेनी मुक्ति थाय, शामाटे के केवल ज्ञान तथा मुक्ति ए सर्वे शुकल ध्यानमां छे तथा समकित प्रमुख ए सर्वे आत्मस्वभावमां छे एवुं सर्व सिद्धांतमां दिसे छे परंतु एवा पाठ कोइ सिद्धांतमां जोवामां आवता नथी जे फलाणा तिर्थे गया थकी मुक्ति थाय, तथा फलाणी फलाणी तिथीनो उपवास करवो तेथकी मुक्ति थाय, तथा ते तपनुं उजमणुं करवुं तथा गुरुनां नव अंग पूजवां, तथा पोथी पूजवी तथा वास नखाववो, तथा जोग उपधान वहेवां, तथा तेनी विधी कराववी, तेना रुपैया गुरुने देवा, इत्यादिक हालमां ए व्यवहार घणो दिसे छे. ने सूत्रमां पाठ नथी तेनी प्ररुपणा करवी ने जे सूत्रने विषे आत्म स्वरूपथीज मुक्ति कही ते न प्ररुपे तेने अभिनिवेशी मिथ्यात्व कहिये, केमके ते जाणीने सिद्धांतनी रीते प्ररुपता नथी पोतानी मतलबनुं प्ररूपे छे, तेने अभिनिवेशी मिथ्यात्व

कहिये ३ चोथुं संशयिक मिथ्यात्व केहेतां जे केवली परमात्माना वचनने विषे शंका उत्पन्न थाय, जेम ओछी बुद्धिना धणी जे बालजीव छे तेणे प्रथम अज्ञानी तथा कुगुरुना वचनथी सांभलेली वातो तथा शास्त्र पछी सुगुरु तेने बतावे छे के भाइओ ए तो आश्रवनां तथा आरंभनां काम तमे करोछो ते थकी तमारे संसार वधशे, माटे तमे संवर निर्जरानुं काम करो अने उपाधि छे ते टालो, जेम तमारा आत्मानुं कारज सिद्ध थाय. ते वारे तेना मनमां शंका पडेके आ वचन साचुं के पूर्वे सांभल्युं ते वचन साचुं एम शंका रहे पण शास्त्र जोइने निश्चय न करे तेने संशयिक मिथ्यात्व कहिये ४

पांचमुं अणाभोग मिथ्यात्व केहेतां अजाणपणुं जेने धर्म कर्मनी कशी ओलखाण नथी संसारमां रच्यो पच्यो रेहेछे आत्म स्वरूप जाण्युं न होय त्यांहां सुधी अजाण कहीये आ माटे के सिद्धांतमां कह्युं छे के

अभे गया जिवाजीवा

इत्यादिक पाठ छे माटे जीव अजीवनी आदे देइने स्वरूप जाणे पछी जीव स्वरूप सद्दहे. अजीव सत्ताने दूर करे इत्यादिक आत्म स्वरूपनुं जाणपणुं छे तेने जाण कहिये ए विनाना बीजा जे रह्या तेने अणाभोग मिथ्यात्व कहिये ५ ए मिथ्यात्वनो अधिकार कह्यो ते चोथाकर्मग्रंथथकी जाणजो. ए मिथ्यात्व ज्यां सुधी गयुं नथी त्यां सुधी कोइ जीव समकित पामे नहि. ए मिथ्यात्वना कारणथी अनंतां नवां कर्म उपार्जे अने आत्माने भारे करे एथकी आत्मा अनंताकाल संसारमां परिभ्रमण करे एटले आश्रवनो प्रथम हेतु कह्यो. मूल १ उत्तर ५ हवे बीजो हेतु अव्रत छे तेना १२ भेद तेनी विगत. पृथ्वीकाय

१ अप्काय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय, ६ फरसेंद्रि ७ रसेंद्रि ८ घ्राणेंद्रि ९ चक्षु इंद्रि १० श्रोतेंद्रि ११ मन १२ ए बारने जेणे संवरयां नथी ने नियम करयो नथी ते धणीने ए बारे कारण थकी अनंता कर्मनुं आववुं थाय छे, केमके जेम घरने विषे वार छींडां छे ते छींडां पुरे नहि त्यां सुधी चोर चखार सर्वे आवे अने ते घरमां कांइ माल जणस रहे नहि, तेम इहां आत्मारूपी जे घर तेने ज्ञान दर्शनरूपी धनने बार अव्रतरुपी छिंडां, ते मध्ये राग द्वेष रूपि चोरनुं आववुं थाय. ज्ञानदर्शनरुपि धन छे ते चोरी जाय. पण ए बार छिंडां छे ते पूरे तो सुखे रहेवाय ए आश्रवनो बीजो हेतु कह्यो. मूल २ उत्तर १७ हवे त्रीजो हेतु कषाय १ बीजो नोकषाय २, हवे ते कषायना चार भेद छे क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ते एक एकना चार चार भेद छे, ते मध्ये पहेलो अनंतानुं वंधियो क्रोध केवो छे के जेम पथ्थरनी सल्ला फाटी पडी ते फरीथी भेगी न थाय तेम अनंतानुवंधिया क्रोध वालोजीव आवखापर्यंत क्रोधे धमधम्यो रहे १, तथा अनंतानुवंधियोमान केवो छे के जेवो पथ्थरथंभ अनेक उपाय करिये तो पण नमे नहि, कडका कडका थाय पण ते नमे नहि तेम अनंतानुवंधियामान वालाजीव, राज, पाट, देश, धन, सर्वेखूटे अनेक लोक समजावे पण कोइने नम्युं पासुं आपे नहि २, अनंतानुवंधिमाया केवी छे के जेवां वांसनां मूराडां छिन्न छिन्न थइ जाय पण पांशरा थाय नहि, तेम अनंतानुवंधिमायावाला जीवजीवे त्यां सुधी कपटतजे नहि ३, तथा अनंतानु वंधिलोभ केवो छे के जेवुं करमजनारंगनुं लुगडुं बालीने राख करीये तो पण लाल रहे पण रंग छोडे नहि, तेम अनंतानु वंधि लोभ वालो जीव जीवित पर्यंत लोभ न तजे ४ तथा बीजी चोकडी अप्रत्याखानीया कषायनी कहीये छीये.

अमत्याखानी क्रोध केवो छे के कोइ काळी भूमीकानें विषे फाट पडे छे ते बार महिने वरसाद पाणी नवां थाय ने घणां ढोर ढांखर उपर फरे तेथी गुंदाइने एक थाय तेम ए क्रोधवाला जीवने बार महिने क्रोध उतरे. १ तथा अमत्याखानी मान केवो छे के जेवो अस्थिनो थंभ घणी मेहेनते घणे कष्ट करीने कोईक वालवासमर्थ थाय तेम ए मानवालाने कोइक घणी तरेहथी समजावतां मान छोडे. २ अमत्याख्यानी माया केवी छे के जेवां घेटानां शींगडां पांशरां करवां ते कोई पुरुष कलावालो होय ने घणीक तरेहथी मेहेनत करे त्यारे पांसरां थाय तेम ए मायावालाने कोइ बहू रीतथी समजावे तो माया तजे. ३ अमत्याख्यानी लोभ केवो छेके अज्ञानी लोकना खाळ कुवा छे ते मध्ये घरनी अशुची अपवित्र एठवाड प्रमुख मांहे जाय छे ते सदाय कोही गएलुं रहे छे तेनो डाघ जे वस्त्रने लागे तो ते धोवीथी पण जाय नहीं कोइ खरो कसबी मले तो ए डाघने काहाडे तेम ते लोभवालाने कोइ खरी मेहेनत करीने तेने समजावे तो ते लोभ छोडे ते विना कांइ छोडे नहि. ४ हवे त्रीजी चोकडी मत्याख्यानी कषाय ते मध्ये मत्याख्याननो क्रोध केवो छे ? के जेवी वेलुने विषे वे भाग करीये ते कंइ एनी मेले भेगा थाय नहि. परंतु वे ऋतु गए थके त्रीजी ऋतु आवे त्यारे. ते वारे सामो पवन आवे ते रेत उडीने खाड पुरे ते वारे ते रेती एकमेक थाय, तेम ए क्रोधवाला पुरुषने कोइ समजावे तो मुकी दे यावत् चार मास उपर रहे नहि १ तथा मत्याख्यानी मान केवो छे के जेवो लाकडानो थंभ कोइ पुरुष तेल तापथी मेहेनत करे तो थोडी मेहेनतथी वले तेम ते मानवाला जीवने कोइ सारी रीते समजावीने कहे तो मान मूकीदे अथवा केटलेक दाहाडे स्वभावे पण मुकीदे. २ तथा मत्याख्यानी माया केवी छे, के जेवी गौमूत्रीका जेम वांकी

वांकी मुतरती चाले तेने कोइ पुरुष झालीने उभी राखे तो वांकाइ न रहे, तेम ते मायावाला जीवने केटलीक तरेहथी समजावीने कहेतो ते पुरुष कपट छोडीदे. ३ तथा मत्याख्यानी लोभ केवो छे ? जेवुं गाडीनुं उंजण तेनो डाघ जो वस्त्रने लाग्यो होय तो धोवीने त्यांहां गये थके डाघ जाय तेम ते लोभवाला जीवने कांइ थोडी मेहेनत करीने समजावे तो लोभ तजे. ४ तथा चोथी चोकडी संज्वलनी कहीये छीये ते मध्ये प्रथम संज्वलनो क्रोध केवो होय? जेम पाणीमां आगळ लीटा ताणता जइये ने पाछल लीटी मलती जाय तेम ए संज्वलन वाला क्रोधना जीवने क्रोधनो धमधमाट थाय पण तुरत ते क्रोध उतरी जाय तेनो पंदर दाहाडानो नियम छे, ए नियम चार कषायना माथे समजवा१ तथा संज्वलननो मान केवो होय जेवो नेतरनो थंभ जेम वालीये तेम वले तेम ते मानी पुरुष ते मान आवेने तुरत वली जाय. २ संज्वलनी माया केवी छे के जेम वेला उगे छे ते वांका वांका चाले छे परंतु एक छेडो झालीने ताणीये एटले पांशरो तीर थाय तेम ते मायावाला जीव मनमां कपट करे पण क्षण एकमां काहाडी नांखे. ३ संज्वलनो लोभ केवो छे के जेवो हलदीनो रंग तडको लागे ने उडी जाय तेम ते लोभवाला जीवने लोभनो उदय थाय परंतु क्षण एकमां वली जाय. ४ एटले ए कषाय चारे चोकडीना सोल भेद सहित कहीने देखाडया हवे नोकपायनुं स्वरूप कहीय छीए, एनोकषायना नव भेद छे,

शिष्य--स्वामि नोकषाय एवो शब्द शाथकी मुकवो पडयो

गुरु—हे भद्र एने विषे कषायपणुं नथी परंतु ए थकी कषाय उत्पन्न थाय माटे एने कषाय तो ना कहेवाय तेथी नोकषाय कह्या परंतु ए कषाय नहि पण कषायना भाइ छे. हवे प्रथम हास्य, ए

नामे नोकषाय छे. एटले हांशी एवुं तो विनोदनुं नाम. छे प-रंतु हांशी थकी विखवाद थाय, एम सर्वे भेदमां समजी जवुं १ रति कहेतां शाता मानवी ते थकी पण सामाने अथवा पोताने द्वे-षादि कारण उत्पन्न थाय. २ अरति एटले अशाता ते थकी प्रत्यक्ष द्वेषभाव दीसे छे ३ भय एटले भय थकी पण द्वेषादि कारण उत्पन्न थाय छे ४ सोग ते थकी पण द्वेष उत्पन्न थाय ५ दुगंछा ते थकी पण द्वेष थाय ६ पुरुष वेद ए तो महा विखवादनुं कारण दीसे छे ७ स्त्रीवेद ८ तथा नपुंशक वेद ९ ए त्रण वेदना उदय थकी प्रत्यक्ष कंकास भासन थाय छे एटले नव नोकषाय कह्या, एटले कषाय तथा नोकषाय मलीने २५ भेद थया ए कषा-यना कारण थकी अनंतां कर्म आवे छे जाय छे एटले कषाय कह्यो मूल ३ उत्तर ४२. हवे जोगनुं स्वरूप कहिये छिये तेना त्रण भेद छे मनजोग १ वचनजोग २ कायजोग ३ ते मध्ये मनजोगना चार भेद सत्य मनजोग १ सत्यासत्य मनजोग २ असत्य मनजोग ३ असत्यासत्य मनजोग ४ तथा वचनना पण चार भेद सत्य वचन जोग १ सत्यासत्यवचन जोग २ असत्यवचन जोग ३ असत्यासत्य वचनजोग ४ तथा कायजोगना सातभेद. उदारिक कायजोग १ उदारिक मिश्रकायजोग २ वैक्रियकायजोग ३ वैक्रियमिश्रकायजोग ४ आहारक कायजोग ५ आहारकमिश्रकायजोग ६ तेजसकार्मण कायजोग ७ एटले ए जोगना पंदरभेद कह्या ए जोगथकी पण अनंतां कर्म आवे छे एटले मुल हेतु ४ अने उत्तर हेतु ५७. ए नवां कर्म आववानां कारण कह्यां. एटले हेतु कहेतां ए कर्म आववाना वालेशरी दलाल छे ए मांहेलो एक होय त्यां सुधी कर्म आवे जे ए चारनो नाश करे तेनी पासे कर्म ना आवे. कोनी पेठे के एक सरो-वर छे ते सरोवरनी चारे दिशाथकी पाणी आवे छे तेमां पूर्वनी

दिशे पांच गडनालां छे अने दक्षिणदिशे बारगडनालां छे तथा प- श्चिम दिशे २५ गडनालां छे ने उत्तर दिशे १५ गडनालां छे एटले पाणी आववाना हेतु ए गडनालां छे. ए गडनालां छे तो पाणी आ- वी शके. जो गडनालां बंध करीये तो पाणी आवी शके नहीं तेम इहां एक जीवरुप सरोवर छे तेने विषे पांच गडनालां तो मिथ्या- त्वनां जाणवां बारगडनालां अव्रतनां जाणवां पचीस गडनालां कषायनां जाणवां तथा पंदर गडनालां जोगनां कह्यां छे. ए सर्वे मलीने सत्तावन गडनालां छे, ए सत्तावने गडनाले थइने कर्मरूपि पाणी चाल्यां आवे छे तेथी जीवरूपी सरोवरने स्फटिक रत्नरूप जे तलियुं छे ते देखातुं नथी अने ज्यांहां सुधी ए गडनालां बंध न थाय त्यांहा सुधी कर्मरुपी पाणी आववुं बंध केम थाय अपि तु नज थाय एटले जे आवे छे कर्म तेहनेज आश्रव कहीये २ हवे तेज आश्रवने विषे आव्यां एवां जे कर्म तेना बे भेद एक शुभ अने बीजो अशुभ हवे जे शुभ छे ते थकी शुं शुं कार्य थाय, ते कहिये छीये शरीर सारुं बंधाय, रुप सारुं होय २ घाट सारो होय ३ इंद्रि- यो पांचे परवडी होय ४ गति सारी देवतानी तथा मनुष्यनी उत्तम पामे ५ धन पामे, पुत्र परिवार पामे, राज्यधानी पामे, इंद्रनी पद्वी पामे, तिर्थंकर गोत्र बांधे इत्यादिक जे जे कार्य रुडुं ते सर्वेने शुभ प्रकृति कहिये तेने पुन्यनो उदय जाणवो ते थकी उपरांतु जेटलुं वी- परित छे ते सर्वे अशुभ जाणवुं तेने पापनो उदय कहीये एटले कर्म- नुं आववुं तेने आश्रव कहीये अने जे वारे ते कर्म उदे आव्यां तेने पुन्य पाप कहीये एटले ए सर्वे पुद्गल दल छे ते आत्मानी घात कर- ता छे ए थकी कांइ आत्मानुं कल्याण थाय नहि.

शिष्य—हे भगवान तमे पुन्य पाप बेहू सरखां गणी निषेधी- नाख्यां ने ए बेमां फरक घणो छे शामाटे के पुन्यना उदेथकी उत्त-

म गतिने पामे देवगुरु धर्मनी संगति थाय, तीर्थ जात्रा व्रत नियम करे वे रुपैया सारे मार्गे वावरे ते थकी शासन दीपे तेने तमे पाप नी साथे केम गणो छो.

गुरु—हे भद्र तें पुन्यने अधिक जाण्युं ने पापने न्यून जाणे छे ते तुं सुखदुख आश्रीने समजे परंतु जेटलुं सुखनुं कारण छे ते पण अंते दुखनुं कारण थाय, अथवा दुखनुं कारण ते अंते सुखनुं कारण थाय, परंतु ए बंने पुद्गल छे ए कांइ आत्मीक गुण नथी शा माटे जे मोटा मोटा राजा तथा शेठ साहूकार तथा यावत् नव ग्रैवेयकना देव सुधी ए सर्वने अंते चार गति संसारमां रखडवानुं थाय छे ते मध्ये जे समकिती जीव छे, यावत् पांच अनुत्तर विमानना देव सुधी ते चार गतिमां रखडे नहीं. शा माटे के ते एवुं जाणे छे के आ सुख सर्वे पुद्गलीक छे संजोगे मल्युं छे विजोगे जशे माटे विनाशीक सुखनी मूर्छा कोण राखे ते पोताना आत्मीक सुखमां मगन छे, तेने कोइनी आशा नथी एक फक्त आत्मीक धर्मनी रमणता करीने रहे छे, तेने चार गतिमां रखडवुं न होय अने जे पुद्गलीक सुखना भोगी छे ते चार गतिमां रखडे.

शिष—हे भगवान् तमे कह्युं के आत्मीक सुखना भोगी छे ते साचुं पण सुख पाम्या ते पुन्यथी खरा के नहीं माटे पुन्यने पापनी बरोबर केम गणाय.

गुरु—हे भद्र पुन्यथी पाम्या ते ठीक पण ते कंइ पुन्यमां रच्या पच्या नथी तथा पुन्य चाहीने करवा गया नथी केमके जेम डांगरनो वावनारो पराल वास्ते वावतो नथी तेम समकिती जीव जे जे काम करे ते आत्माना धर्म वास्ते करे पण कंइ पुन्य वास्ते करे नहिं कदापि तद्भव मोक्षे न जावुं होय तो शुभ गति बांधे परंतु ते शुभना उदयमां समकिती राचे नहि. तथा जे देवगुरु

धर्मनी सामग्री मेलवे एवुं जे तें कह्युं पण ते कंइ एवो नियम नथी के देवगुरु धर्मनी सामग्री पुन्यथीज मले. शा माटे के देवगुरुनी सामग्री मलवी तेना घणा प्रकार छे जे पापना ऊदयथी दृढ प्रहारी चोर प्रत्यक्ष चार हत्या करीने जातांज गुरुने मल्या ने गुरुनी पासे धर्म पामी चारित्र लीधुं लेइने छ मास सुधी महा परिसह सहीने केवल ज्ञान उपार्जीने मोक्षे गया तथा दूर्गंधा आवती चोवीसीमां पद्मनाभ तीर्थंकर पासे दीक्षा लेइने सिद्धि वरशे, तेनो पण पापनो उदय जोयामां आवे छे तथा श्री भगवतीजीमां अर्जुनमालीदीन एक प्रत्ये छ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणस मारवावालो ते पण भगवाननी पासे दीक्षा लेइने मोक्षे गयो इत्यादिक बहू जणानो विचार शास्त्रमां छे, तो एथी कांइ एवो नियम न थयो के पुन्यथकीज देवगुरुनी सामग्री मले तथा कह्युं के तीर्थ जात्रा व्रत नियम करे ते पण पुन्य होय तो थाय ते वाते पण मिथ्यात्व छे शा माटे के स्थावर तीरथनी जात्राए जवुं आववुं ते कांइ धर्ममां नथी केमके तेने कोइ गुणठाणानी अपेक्षा लागे नही.

शिष्य—स्वामी चोथा गुणठाणानी ए करणी छे अने तमो पण सम्यक्त द्वार ग्रंथमां तथा मंदीर स्वामीनो ढालो प्रमुख घणा शास्त्रोमां लावेला छो ने तमे इहां ना केम कोहोछो.

गुरु—हे मानुभाव ! अमे जे सम्यक्त द्वार प्रमुखने विषे लाव्या छिये तेनुं कारण सांभल एक तो कल्प व्यवहार आ कालना घणा लोकोनुं मानेलुं माटे, तथा बीजुं कारण के ढुंढीया लोको बीलकुल प्रतिमा उठावीने बेठा छे ते आपणा पक्षने मान देखाडवा वास्ते, तथा त्रीजुं कारण एक शासन सारु दीसे एटला माटे अमे लावेला छीये हवे अमे जे चोथा गुणठाणानी करणीनी ना कही तेनुं कारण सांभल जे लोकोने सूर्याभ देवनो तथा द्रौपदी प्रमुखनो

अधिकार देखाडीये छीये परंतु ते करणीमां विचार घणो छे शा माटे के विजय देवता प्रमुख घणा देव देवपणे उपन्या ते वखते पुजा करी छे पण तेने भगवाने समकिती कह्या नथी ते तो मिथ्यात्वी छे अने ते देव नवा उपने एटला सर्वे पुजा करे एवुं सूत्र जोतां मालुम पडे छे परंतु कंइ समकिती मिथ्यात्वीनो नियम रह्यो नथी तेम कंइ फरीथी पुजा करवानो अधिकार कोइने छे नहि. तथा जे तें व्रत नियमनुं कह्युं ते कांइ पुन्यथकीज थाय एवुं संभवतुं नथी. आ माटे के नंदिषेणने मामानी सात कन्याओमांथी कोइए ना इच्छयो ते वारे झंपापात लेवाने पाहाड उपर चडयो हतो परंतु गुरुए झंपापात करवा नहि दीधो. ने धर्म पमाडीने चारित्र दीधुं तथा श्रेयांस कुमारनो जीव ए भवथी नवमे भवे ननामीका एवे नामे गाथांपतिनी दीकरी हती. ते महा दुखी खावा पीवानुं उभा रहेवानुं ठेकाणुं नहोतुं ते पण डुंगर उपर झंपापात करवाने गइ हती. त्यांहां गुरु मल्याने ते धर्म पामीने पच्चखाण बहु कर्यां इत्यादिक घणा जीव पापना उदय थकी पण व्रत नेम पामेला छे माटे ते पण इहां पुन्यना उदयनो नियम नथी. तथा तें जे कह्युं के बे रुपैया खरचे वावरे छे ते पण खरचे वावरे ते साचुं छे परंतु परमात्माए साधुना दानविना बीजे मार्गे पइशो खरचे तेने कंइ धर्म कह्युं नथी ते करतां आ कालने विषे जे कांइ खरचे छे ते अभिमानना लीधा थकी घणा खरचे छे अने जे अभिमानादिकथकी खरचे तेने प्रश्न व्याकरण सूत्रमां मंदबुद्धिया कह्या छे यावत्नरक गामी सुधी पण कह्या छे माटे ए पुन्य थकी कंइ सुक्रीत नीपजतुं नथी.

शिष्यवाक्य—स्वामी पुन्यथकी सुक्रीत न नीपजे एम केम कहेवाय आमाटे के तिर्थंकर नाम कर्म तो पुन्यथकीज बंधाय छे.

गुरुवाक्य—हे देवाणु प्रिय एटला एटला दृष्टांते में तने समजाव्यो पण तुं समज्यो नहिं हजी तारी दृष्टि पुन्यमां वधती रहे छे अने पुन्य ते तो जड छे ते जड होय ते जडनी दृष्टि राखे माटे ए जड दृष्टि कहाडी नांख के जेम तारा आत्मानुं कल्याण थाय अने तुं जाणतो हशे के तीर्थंकर गोत्र पुन्यथकी बंधाय छे पण ए ठेकाणाने विषे तो करोडोनी कमाणी खोइने कोडीनी कमाणी हाथमां आवे छे तेनुं कारण कहुं ते हवे तुं सांभल तीर्थंकर गोत्र बांधवानां कारण वीस कह्यां छे ते मध्येथी एक अथवा बे अथवा त्रण अथवा यावत् विशे आराधे ते धणी मोक्षे तद्भवे जाय ज्यारे सराग भावमां पडी जाय त्यारे तीर्थंकर गोत्र बांधे जो सरागभावे न परिणमे तो तद्भवे मोक्षे जतो अने अनंता सुख भोगवतो ते मुकीने बे भवनां जन्म मर्ण आदे देइने अनंता दुख भोगववानो संसार वधार्यो तेमां एणे शुं वधारे नफो कहाड्यो, हवे जे तीर्थंकर गोत्र बांधवानां स्थानक वीस छे ते तुं सांभल तेमां कयुं स्थानक पुन्यदायक छे ए तो सर्वे स्थानक धर्म दायक छे पण पोतानी भूले पुन्यदायक थयुं हवे ते थानकनां नाम कहिये छीये अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन ३ गुरु ४ स्थविर ५ बहूश्रुत ६ तप ७ आत्मानुं वत्सलपणुं ८ ज्ञान भणवुं ९ दर्शन १० विनय ११ आवश्यक १२ चारित्र १३ उपसमचारित्र १४ सर्वे अतीचार टालवा १५ वेयावच्च १६ समाधिवंत रहेवुं १७ गुरुनुं कार्य करवुं १८ अपूर्व ज्ञान भणवुं १९ प्रवचन प्रभावना करवी २० ए वीशे स्थानक ज्ञाताजीमां कह्यां छे तथा हालना प्रवर्त्तनमां तो थानक बीजी रीते छे ते लखीये छीये अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन ३ आचारज ४ स्थविर ५ उपाध्याय ६ साधु ७ ज्ञान ८ दर्शन ९ १० चारित्र ११ ब्रह्मचर्य १२ क्रिया १३ तप १४ गोयमश १५

जीणाणं १६ चारित्र १७ नाणस्य १८ सुअस्स १९ तीथस्स २० ए जे वीस थानक छे ते सर्वेनी सेवा भक्ति पुजा बहुमान जे करवुं ते सर्वे निर्जरामां छे केमके ए वीस बोल चार प्रकारमां आवी गया छे, ते चारनां नाम ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४. प्रवचन १ ज्ञान २ सुअस्स ३ नाणस्स ४ ए चार तो ज्ञानना भेद छे १ दर्शन ए बीजो भेद २ अरिहंत १ सिद्ध २ आचारज ३ उपाध्याय ४ स्थविर ५ साधु ६ विनय ७ चारित्र ८ ब्रह्मचर्य ९ क्रिया १० गोयमस्स ११ जीणेस १२ चारित्र १३ तीर्थ १४ ए चउद बोल तो चारित्र पदमां छे ते मध्ये जीणेश बोल छे ते केटलाएक पंडित ज्ञान मध्ये गणे छे केटलाक चारित्रमां कहे छे तत्व तो ज्ञानी गम्य छे ३ तप ए चोथो भेद छे एटले ए चार भेदमां वीसे स्थानक समाइ गयां अने ए चारने भगवंते मोक्षना मार्गज कह्या छे ते कांइ आश्रव थाय नहि. ए तो निर्जरा हेतु छे माटे तीर्थंकर नाम कर्म बांधवुं ते आश्रव छे, ते एवां थानक शेवीने जे धणी आश्रव उपार्जे ते धणीए रत्न नाखी देइने कोडी बांधी शा माटे जे महा निर्जरानां कारण हतां तेने छोडीने सराग भावमां पेठो तेथी तेणे ए तीर्थंकर नाम कर्मरूप आश्रव उपार्जी तद् भवनी मुक्ति गमावी अने जन्म मरण वधार्यो ते माटे अमे कहिये छियेके पुन्यमां कांइ माल नथी अने जे पुन्य पाप छे ते बे आठ कर्मनी प्रकृति छे तेमां १२० एकसोनेवीस प्रकृती छे तेमां पुन्यनी ४२ अने पापनी ८२ ते मध्ये प्रथम पुन्यनी प्रकृति कहिये छिये. शाता वेदनी १ उंच गोत्र २ मनुष्यनी गति ३ मनुष्यनी आनुपुर्वी ४ देवतानी गति ५ देवतानी आनुपूर्वी ६ पंचेंद्रिनी जात ७ उदारीक शरीर ८ वैक्रिय शरीर ९ आहारक शरीर १० तेजस शरीर ११ कार्मण शरीर १२ उदारीक अंगोपांग १३ वैक्रिय अंगोपांग १४ आहारक अ-

गोपांग १५ वज्र ऋषभनाराच संघयण १६ सम चतुरस्र संस्थान १७ शुभवर्ण १८ शुभगंध १९ शुभरस २० शुभफरस २१ अगुरु लघुनामकर्म २२ पराघात नाम कर्म २३ उस्वास नामकर्म २४ आताप नामकर्म २५ उद्योत नामकर्म २६ शुभ विहायो गति २७ निर्माण नामकर्म २८ देवतानुं आवखुं २९ मनुष्यनुं आवखुं ३० तिर्यंचनुं आवखुं ३१ तीर्थंकर नाम कर्म ३२ त्रसपणुं ३३ बादरपणुं ३४ पर्याप्तापणुं ३५ प्रत्येकपणुं ३६ स्थिरपणुं ३७ शुभ नाम कर्म ३८ सौभाग्य नामकर्म ३९ सुस्वर नाम कर्म ४० आदिनाम कर्म ४१ जस नामकर्म ४२ ए पुन्यना भेद कह्या.

हवे पापना भेद लखीये छिये. मतीज्ञानावरणी १ श्रुत ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मनः पर्यवज्ञानावरणी ४ केवलज्ञानावरणी ५ दानाअंतराय ६ लाभा अंतराय ७ भोगाअंतराय ८ उपभोगाअंतराय ९ वीर्यअंतराय १० चक्षुदर्शनावरणी ११ अचक्षुदर्शनावरणी १२ अवधि दर्शनावरणी १३ केवलदर्शनावरणी १४ निद्रा १५ निद्रानिद्रा १६ प्रचला १७ प्रचलाप्रचला १८ थीणद्धी १९ अशातावेदनी २० नीचगोत्र २१ मिथ्यात्व २२ नरकनीगती २३ नरकनीआनुपूर्वी २४ नरकनुं आवखुं २५ कषाय २५ पूर्वे कह्या ते समजजो. ५०, तिर्यंचनीगति ५१ तिर्यंचनी आनुपूर्वी ५२ एकेंद्रीनीजाति ५३ बेरंद्रीनी जाति ५४ तेरंद्रीनीजाति ५५ चउरंद्रीनीजाति ५६ अशुभविहायोगति ५७ उपघातनामकर्म ५८ अशुभवर्ण ५९ अशुभगंध ६० अशुभरस ६१ अशुभ फरस ६२ ऋषभ नाराच संघयण ६३ नाराच संघयण ६४ अर्धनाराच ६५ किलिका संघयण ६६ छेवट्टुं संघयण ६७ न्यग्रोध संस्थान ६८ सादी संस्थान ६९ वामन संस्थान ७० कुब्ज संस्थान ७१ हुडक संस्थान ७२ स्थावर नाम कर्म ७३ सूक्ष्म नाम कर्म ७४ अपर्याप्त नाम कर्म

७५ साधारण नाम कर्म ७६ अस्थिर नाम कर्म ७७ अशुभ नाम कर्म ७८ दुर्भाग्य नाम कर्म ७९ दुस्वर नाम कर्म ८० अनादेय नाम कर्म ८१ अजस नाम कर्म ८२ इति पाप तत्वना भेद. एटले ए बे मलीने १२४ थया ते मध्ये वरणादिक ४ पुन्य तथा पाप बेमां गणाय छे माटे १२० प्रकृती थइ ते मध्ये तीर्थंकर गोत्र पण नाम कर्ममां आवी गयुं अने अरिहंत तो कर्म हणे तेने अरिहंत कह्या छे पण कांइ कर्म बांधे तेने अरिहंत कह्या नथी अने ए कर्मनुं ज्यांहां आववुं तेने आश्रव कहीये. शुभ कर्म आवे तेने शुभ आश्रव कहिये तथा अशुभ कर्म आवे तेने अशुभ आश्रव कहिये. एटले ए बंने आश्रवज छे माटे तिर्थंकर नामकर्म बांधवुं ते पण आश्रवमां छे अने आश्रव छे ते सदाय तजवा जोग छे एटला माटे पुन्य पाप बंने निषेध्यां माटे समजु पुरुषने पुन्य पाप एके बंछवा जोग नथी शादृष्टांते के जेम एक लीमडाने विषे लिंबोलीनो ठलियो छे ते कडवो छे अने लिंबोलीनो रस कांइ मिठाश सहित छे परंतु बेमां दुर्गंध छे माटे समजु पुरुष खाता नथी तेम पुन्य अथवा पाप ए बंने आश्रवज छे ते ज्ञानी पुरुषने आदरवाजोग न होय एटले पुन्य पापनुं स्वरूप कह्युं.

हवे बंध तत्व ओलखाविये छिये. तेना चार भेद छे. प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ तेने लाडवाने दृष्टांते कहिये छिये. प्रदेश छे ते लोटने ठेकाणे छे. रस छे ते घीने ठेकाणे छे. प्रकृति छे ते खांड तथा गोळ ने ठेकाणे छे, स्थिति छे ते तेनी मर्यादा छे, मर्यादा कहेतां आ लाडु आटलाकाल सुधी रहेशे, हवे गोलनो लाडु होयतो वायु हरता होय. खांड तथा साकरनो लाडु होय तो गरमी हरता होय, तेम अहियां जेवी जेवी प्रकृतिनो बंध तेवी तेवी शुभाशुभ प्रकृति उदय आवे

तथा जे रस छे तेनुं कारण एवुं छे के रस वधतो होय तो लाडवो न भावे. तेना चार भेद छे. एकठाणियो १ बेठाणियो २ त्रण ठाणियो ३ चारठाणियो ४ हवे ठाण कहेतां शुं कहिये के जेम जे लिंमडानो रस छे ते स्वभावे तो कडवो छेज पण ते रस पांचशेर लेइने उकालिये ते चारशेर रहे त्यारे उतारीये त्यारे तेनी कडवाश घणी वधे तेज रस त्रणशेर रहे त्यारे उतारीये तो कडवाश अत्यंत वधती जाय ने बशेर रहे त्यारे उतारीये त्यारे तेथी पण घणी वधे तथा शेर एक रहे ने उतारीये त्यारे कडवाश घणी वधी जाय, ते रसनी पासे पण जवाय नहि. तेम अहियां एक ठाणिया रसनां जे कर्म छे तेनुं तोडवुं सुलभ पडे अने जे बे ठाणिया रसनां कर्म छे ते तोडवां दूर्लभ पडे ते थकी पण त्रण ठाणिया रसनां जे कर्म छे ते छेदवां अतिदुर्लभ पडे, तेथकी चउठाणिया रसनां जेकर्म छे ते छेदवां महा दूर्लभ थइ पडे. अहियां रसपली छेदादिक विचार एकठाणियाथी चउठाणिया सुधि अनंता भेद छे तेनो विस्तार कर्म ग्रंथनी टिकाथकी जाणजो. हवे जे लाडवामां लोट एक शेर छे अने घी अडधो पाशेर छे ते लाडवाने भागतां कांइ वार लागे नहि. लाडवो बांधतां वेराइ जाय तेम केटलांएक कर्म तो आवे छे तेम जाय छे तथा जे लाडवामां पाशेर घी छे ते लाडवो वले परंतु हाथ अराडतांज भागे तेम केटलांएक कर्म सहेज स्वभावथी अथवा सहेज कष्टथकी क्षय थाय, तथा जे लाडवामां अडधो शेर घी छे तेने हाथे करीने ज्यारे भागीये त्यारे भागे तेम एवां जे कर्म छे ते बाह्य तपादि कष्ट अथवा अल्पज्ञान थकी क्षय थाय तथा जे लाडवामां शेर पोणो घी छे ते लाडवो भागतां कठण पडे तेम तेवां जे कर्म छे ते सर्वथा ज्ञान ध्यानाविना अथवा अंगे भोगव्याविना जाय नहि तथा जे लाडवामां शेरशेर घी पडेलुं छे ते लाडवो भागवो तो

बहूज कठण थइ पडे तेम तेवी जातनां जे कर्म तेने खरी शुकल ध्यानरुपी अग्नि लागे तोज बले अथवा अंगे भोगवे ते द-हाडेज जाय.

गुरु—हे भद्र अमे जे निर्जरा कहि तेनुं कारण सांभल के त्यां अल्पज्ञान ध्यान कह्युं छे तेतो आत्म उपयोग होय तेने होय अने ज्यांहां आत्म उपयोग छे तेनां सर्वे कारज निर्जरामां कह्यां छे ते अपेक्षाए कह्युं छे. बीजे प्रकारे वली जे सर्वे जीवपूर्व कृतकर्म पोते भोगवीने खेरवे छे ने अकाम निर्जरावाळा अज्ञान-पणे तप कष्ट करीने पूर्वकर्मने छेदे ने नवां कर्म बांधे ते श्री भ-गवतीजीमां कह्युं छे माटे ए अपेक्षा लेइने कह्युं छे परंतु कंइ आ-दरवा जोग नथी पूर्वे जे आश्रवमां कह्युं छे ते सत्य छे. हवे जे कर्मनुं बांधवुं तेनी वर्गणा केटली थाय छे अने केटलां कर्म भेगां थयेथी लेवाजोग थाय छे तेनो विचार कहियें छीये तेनी वि-गतः—वर्गणाओ आठ छे तेनां नाम उदारिक १ वैक्रिय २ आहा-रक ३ तेजस ४ भाषा ५ श्वासोश्वास ६ मन ७ कार्मण ८ हवे ते वर्गणानुं मान कहियें छिये जेटला छुटा परमाणुआ छे ते अनंता छे ते गणवा नहिं जे बे परमाणुआ भेळा थाय तेने द्वीप्र-देशीखंध कहिये जेना त्रण परमाणुआ भेळा थाय तेने त्रणुक खंध कहिये एम एक वधते परमाणुए संज्ञा पण ते प्रमाणे नामनी कहेवी जेवारे नवपरमाणुआ भेगा थये संख्यात प्रदेशी खंध कहिये ते यावत् अठ्ठाणुं आंक उपराउपरिचडे तेनुं नाम सिहरपलीका कहेवाय एटला परमाणुआ भेगा थाय तेने संख्यात प्रदेशी खंध कहिये एटले जघन्य संख्याती खंध नव प्रदेशी जाणवो उत्कृष्टो संख्याती खंध सिहरपलीका प्रदेशी खंध जाणवो. मध्यस्थ संख्या-ती खंध तेना संख्याती भेद जाणवा जे उत्कृष्टो संख्याती खंध

छे ते मांहे एक परमाणुंओ बीजो भले ते वारे असंख्याती खंध कहिये ते यावत् अनंतामां एक उणो होय त्यांहां सुधी असंख्यात प्रदेशी खंध कहिये एटले असंख्यात प्रदेशी खंध मध्यस्थना असंख्याती भेद छे तथा असंख्याताना नव भेद पण करेला छे ते श्री विशेषावश्यक ग्रंथ थकी जोजो तथा ते मांहे एक प्रदेश भले थके अनंत प्रदेशी खंध कहिये ते अनंत प्रदेशी खंधना जघन्य थकी उत्कृष्टा सुधी जतां वच्चे जे रह्या मध्यस्थ तेना अनंता भेद छे तथा नव भेद पण अनंताना करेला छे ते पण विशेषावश्यक थकी जाणजो तथा संसारनी मांहिलीकोरे अभवी जीव अनंता छे ते चोथे अनंते छे ते थकी अनंतगुणा प्रदेश मलीने खंध बंधाणो ते खंध अनंत प्रदेशी मध्यस्थमां गणाय एवो जे खंध तोय पण जीवने लेवा जोग न थाय शामाटे के अतिशे सूक्ष्म छे माटे जीव ग्रही शके नहिं ते ज्यारे बादरनी वर्गणामां होय त्यारे उदारिक वर्गणामां लेवा योग्य थाय एटले ए खंध पण उदारिक वर्गणानो जाणवो ते थकी अनंतगणा प्रदेश मलीने जे खंध थाय ते वैक्रिय अने लेवा जोग थाय शामाटे के उदारिक करतां वैक्रियनी वर्गणा सुक्ष्म छे. २ ते थकी अनंत गणी आहारकनी वर्गणा एम अनुक्रमे एक एक थकी अनंत गणी करतां सातमी मनोवर्गणा अनंत गणी थइ जाय ते मनोवर्गणा करतां अनंत गणी कार्मण वर्गणा आठमी छे हवे ते वर्गणामां चार वर्गणा सुक्ष्म छे ने चार वर्गणा बादर छे तेमां प्रथम बादरनी वर्गणानां नाम गणाविये छीये. उदारीक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४. सुक्ष्मनां नाम, भाषा १ श्वासोश्वास २ मन ३ कार्मण ४ हवे ते बादर सूक्ष्मनो फेरछे ते जणाविये छिये एटले बादर वर्गणामांवीस २० गुणछे अने सूक्ष्मवर्गणामां १६ गुण होय, बादरना

२० गुण ते वर्ण ५ गंध २ रस ५ फरस ८ ए २० वीस, सूक्ष्मना १६ गुण ते वर्ण ५ गंध २ रस ५ फरस ४ एसोल एवी रीते जे वर्गणाओ कर्मनी आवी जीवने मळे छे तेनो बंध पडे तेने बंधतत्व कहिये तेनो विस्तार विचार कर्म पयडी ग्रंथनी टीका थकी जाणजो.

एटले ए सर्वे अजीवतत्वछे शामाटे के अजीवना पांच भेद पूर्वे कह्या छे ते मध्ये पुद्गलास्तिकायरूपी द्रव्य एक कह्योछे ने बाकीना चार अरूपी अजीवने कंइ नडता नथी अने एक पुद्गल द्रव्य जीवने नडे छे त्यारे ते पुद्गलनुं जीवने आवीने मळवुं तेने आश्रव कह्यो. तेमां शुभ पूदगल आवे तेने शुभ आश्रव कहिये तेने लोकमां प्रसिद्ध-पणे पुन्य एवुं नाम छे अशुभ आवे तेने अशुभ आश्रव कहिये ते लोकमां प्रसिद्ध पाप एवुं नाम छे ते जीव साथे ते कर्मने बंधावुं तेने बंध कहिये ते जे कर्मनो बंध जीव साथे थयो तेनी स्थि-तिनुं मान कहिये छीये ज्ञानावरणीनी त्रीस कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति छे तथा मोहनी कर्मनी सीतेर कोडा कोड सागरोपमनी स्थिति छे तथा दर्शनावरणी तथा वे-दनीनि त्रीश कोडाकोड सागरोपमनी स्थिति छे तथा आयु-कर्मनी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति छे तथा तेत्रीस लाख तेत्रीस हजार त्रणसें ने तेत्रीस एटला पूर्व तथा तेवीस लाख करोड अने बावन हजार करोड वरसनी स्थिति उत्कृष्टी छे अने नामकर्म तथा गोत्रकर्म ए बेनी वीसकोडाकोडी सागरो पमनी स्थिति छे तथा अंतराय कर्मनी त्रीसकोडाकोड सागरो पमनी स्थिति छे इत्यादिक अजीव द्रव्यना विचार भगवती प्रमुखने विषे थकी जाणजो एटले ए जीवनां पांचे तत्व कह्यां, हवे जीव तत्वनो विचार कहिये छीये जीव केहतां जेहना विषेचेतना रूप लक्षण छे तेनां छ लक्षण छे तेनां नाम ज्ञान १ दर्शन २

चारित्र ३ वीर्य ४. तप ५ उपयोग ६ ए छ लक्षण सहित सर्वे जीव छे कोण सिद्ध अथवा संसारी एटले जीवनी सत्ता जोतां सिद्ध तथा संसारी एकजरूप छे. तोय पण अशुद्ध व्यवहारनयनो पक्ष लेइने जीवना भेद कहुं छुं ते जीवना ५६३ भेद छे ते चार गतिना मलीने प्रथम तिर्यंचनी गतिना ४८ भेद छे, नरकनी गतिना १४ भेद देवतानी गतिना १९८ भेद छे मनुष्यनी गतिना ३०३ भेद ए सर्वे मलीने ५६३ भेद थया ते प्रथम तिर्यंचनी गतिना ४८ भेद विवरिने कहिये छीये, पृथ्वीकाय सूक्ष्मने बादर, एटले सूक्ष्म केहेतां चरम चक्षुए दीठामां ना आवे एतो ज्ञानीना दीठामां आवे पण ए सुक्ष्म चउद राजलोकमां व्यापीने रह्या छे, ते जेम पृथ्वीकायना सूक्ष्म कह्या तेम पांचे स्थावरना समजजो. बादर पृथ्वीकाय जे आ धरती तथा पाहाड पर्वत सोनुं रुपुं प्रमुख ते सर्वे बादर पृथ्वी कहिये. ए सुक्ष्म बादर बे पृथ्वीना पर्याप्ताने अपर्याप्ता गणीये एटले चार भेद थया.

शिष्यवाक्यः—पर्याप्ता अपर्याप्ता एटले शुं ?

गुरुवाक्यः—हे भद्र जीव मात्र पर्याप्ति तथा प्राणने धारण करे तेना नामने विवरा सहित कहुं ते सांभल प्रथम पर्याप्तिनां नाम. आहार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति २ इंद्रि पर्याप्ति ३ श्वासोस्वास पर्याप्ति ४ भाषा पर्याप्ति ५ मन पर्याप्ति ६ ए छ पर्याप्ति हवे तेनो अर्थ, आहार पर्याप्ति केहेतां जे गतिने विषेथी चवीने आव्यो तेज समे पोत पोतानी गतिमां जइने उपजे कदापि वक्र गति होय तो बे समये अथवा त्रण समये तथा चोथे समये जइने उपजे तेनुं कारण आकाशनी श्रेणीना विभागनुं छे ते बहु श्रुतना मुख थकी धारी लेजो हवे ज्यां सुधी रस्तामां छे त्यां सुधी आहार पामे नहिं जे वारे पोतपोतानी गतिमां जइने

उपजे तेज समे आहार ले. १ ते आहार लेइने शरीरपणे परिणमावे एटले इहां एक अंतरमूहुर्त्ते शरीरपर्याप्ति बीजी थाय, एपज समे समे आहार करीने शरीरनी पुष्टी करतां इंद्रि मगट करे त्यांहां पण एक मुहूर्त्त थाय तेने इंद्रीपर्याप्ति कहीए ३ पछी अंतर मुहूर्ते श्वासोश्वास पर्याप्ति बंधाय एटले श्वास उंचो लेइ नीचो मुकवो तेने श्वासोश्वास मर्याप्ति कहीए ४ त्यारे पछी अंतर मुहूर्ते भाषा पर्याप्ति थाय एटले भाषानुं उच्चारण थाय ५ त्यारपछी अंतर मुहुर्ते मन पर्याप्ति थाय एटले मनथकी विचारवुं तेने मन पर्याप्ति कहीए ६ ए छ ए पर्याप्ति मलीने एक अंतरमुहूर्त कहीए.

शिष्यवाक्यः—के छएमां अंतर मुहूर्त अंतर मुहूर्त्तनो आंतरो कह्यो ने छ नुं मलीने पण अंतरमुहूर्त कह्युं तेनुं शुं कारण.

गुरुवाक्यः—मुहूर्त एवो शब्द बे घडीनो छे तेमां थकी उणुं तेने अंतरमुहूर्त कहीए. जयणाथकी नवसमयना कालने पण अंतर मुहूर्त कहीए उत्कृष्टुं बे घडीमां समय उणुं तेने पण अंतरमुहूर्त कहीए एटले मध्य अंतर मुहूर्तना असंख्याताभेद छे ते माटे पेहेला अंतरमुहूर्त जे पर्याप्तिना बांधवाना एकएक जे कह्या ते सर्वे जघन्यथकी तथा मध्यस्थ लीजीए तथा पछाडी छ ए मलीने एक जे कह्युं ते उत्कृष्टुं कहीए. हवे ए पर्याप्ति जेने जेटली छ ते कहीए छीए एकेंद्री केहेतां पांचे थावरने प्रथमनी चार पर्याप्ति होय बेरंद्री, तेइंद्रि तथा चोरंद्री तथा असन्नि पंचेंद्री एटलाने पांचे पर्याप्ति होय तथा सन्नि पंचेंद्रीने छ पर्याप्ति होय—हवे प्राणदसनां नामः श्रोतइंद्रीः १ चक्षुइंद्रीः २ घ्राणइंद्रीः ३ रसइंद्रीः ४ फरसइंद्रीः ५ मनबलः ६ वचनबलः ७ कायबलः ८ स्वासोस्वासः ९ आवखुंः १०.

शिष्यवाक्यः—श्वासोश्वासने पर्याप्तिमां गण्यो हतो ने प्राणमां केम गणोछो.

गुरुवाक्यः—तिहां श्वासोस्वास पर्याप्ति बांधवा आशरे गणी हती अने इहां भोगववा आश्रित कही छे जेम कोइ पुरुष आवी रीते करी लाख रुपैया कमाणो, अने ते धणीए आवी रीते करी लाख रुपैया भोगव्या ते कमायानो ने भोगव्यानो जेम फेर छे तेम इहां पर्याप्ति प्राणनो फेर समजवो. एकेंद्रीने चार प्राण. फरस इंद्रीः १ कायबलः २ श्वासोस्वासः ३ आवखुंः बेरंद्रीने छ प्राण, फरस इंद्री १ रस इंद्रीः २ वचनवलः ३ कायबलः ४ श्वासोस्वासः ५ आवखुंः ६ तेरंद्रीने सात प्राणः फरस इंद्रीः १ रस इंद्रीः २ घ्राण इंद्री ३ वचनवल ४ कायबलः ५ श्वासोस्वासः ६ ने आवखुंः ७ चौरंद्रीने आठ प्राण, फरस इंद्री १ रस इंद्री २ घ्राण इंद्री ३ चक्षु इंद्री ४ वचनवल ५ कायवल ६ श्वासोस्वास ७ ने आवखुं ८. समुच्छीम् पंचेंद्रीने नव प्राण. फरस इंद्री १ रस इंद्री २ घ्राण इंद्री ३ चक्षु इंद्री ४ श्रोत इंद्री ५ वचनवल ६ कायवल ७ श्वासोस्वास ८ आवखुं ९ सन्नि पंचेंद्रीने दस प्राण ५ इंद्री मनबल ६ वचनवल ७ कायवल ८ श्वासोस्वास ९ ने आवखुं १० हवे जे अपर्याप्ता छे तेना बे भेद करण अपर्याप्ता १ लब्धि अपर्याप्ता २ एटले करण अपर्याप्ता कहेतां ज्यां सुधी त्रीजी इंद्री पर्याप्ति पुरी न थइ होय त्यां सुधी करण अपर्याप्ति कहीए ने जेने इंद्री पर्याप्ति पूरी थइ तेने करण पर्याप्ति कहीए अने लब्धि अपर्याप्ती केहेतां चार तथा छ जेने जेटली पर्याप्ती लाधी छे तेने तेटलीमां अधुरी होय तेने लब्धि अपर्याप्ती कहीए अने गतिनी मर्याद प्रमाणे जेने जेटली हती तेटली पर्याप्ती पुरी थइ तेने लब्धि पर्याप्ती कहीए जे जे करण अपर्याप्ती कह्या ते जीव इंद्री पर्याप्ति बांध्या वगर कोइ जीव मरेज नहीं जे जीव मरे ते करणपर्याप्ति पुरी कर्या पछी जे अपर्याप्ती मरे ते लब्धि अपर्याप्ती कहेतां चार वालाने चारमांथी

उणी तेथी पांचवालाने पांच थकी उणी तथा छ वालाने छ थकी उणी होय ने जे मरे तेने लब्धि अपर्याप्ती कहीए तथा ज्यां सुधी जेने जेटली पर्याप्ति छे ते बांधी नथी रह्यो, त्यां सुधी पण तेने अपर्याप्ती कहीए जेने जेटली पर्याप्ति छे तेटली बांधी रह्यो तेने पर्याप्तो कहीए.

शिष्यवाक्य—के स्वामी मने पूर्वे एक वचनमां शंका रही छे के तमो ए विगलेंद्रिने विषे वचनबल कह्युं ते बेरेंद्रि तथा तेरेंद्रिने विषे कांइ शब्दपणु जणातुं नथी.

गुरुवाक्यः—हे भद्र ! बेरंद्रि तथा तेरंद्रिमा वचनबल कह्युं ते सत्य छे परंतु तने सांभल्यामां ना आवे, तथा तने शंका पडी परंतु जेने रस इंद्रि थइ तेने वचनबल होयज तथा तने प्रत्यक्ष प्रमाणथी बतावुं छुं के शंखला जलो एल प्रमुख ए जीव सर्वे बेरंद्रि छे, तथा कीडी मकोडी कानखजुरा प्रमुख जीव तेरंद्रि छे तथा भमरा भमरी वींछी प्रमुख जीव चौरंद्रि जे ते मध्ये भमरा भमरी तो प्रत्यक्ष बोले ते संभलाय छे. बेरंद्रि तथा तेरंद्रिनी भाषानी शक्तिमंद छे तथा सांभलवामां नाहि आवे शा द्रष्टांते के जेम कोइ गर्भने विषे आवीने उपन्यो जे जीव ते जन्म अवस्था पेहेलां तेने वचन बलनी शक्ति छे तो जन्मीने तरत बोले छे जो पूर्वे शक्ति न होत तो आहिंआं पाधरी शक्ति आवत नहि अने तेने वचनबल गर्भमां आव्यो त्यां एक अंतर मुहूर्त्तमां बंधाणुं छे परंतु नव महीना सुधी उच्चारणनी शक्ति ना आवी तेम इहां बेरंद्रि आदिक जीवने वचनबलनी शक्ति छे परंतु उच्चारण करवारूप शक्ति नथी हवे जे पृथ्विकायना जे सूक्ष्म तथा बादर तथा पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ४ तथा अप्काय कहेतां पाणी तेना बादर ९ तथा सूक्ष्म १. बादर केहेतां नदी तलाव प्रमुख सूक्ष्म ते चौदराज लोक व्यापी.

पर्यांप्ता ७ अपर्यांप्ता ८ तथा तेउकाय केहेतां जे अग्निकाय तेना बादर ९ तथा सूक्ष्म १० बादर अग्नि जे काष्टादिकनो अढी द्वीपने विषे सूक्ष्म अग्निकाय केहेतां चौदराज लोक व्यापी पर्याप्ता ११ अपर्याप्ता १२ वायुकाय केहेतां जे वायरो वाय छे ते बादर १३ तथा सुक्ष्म १४ पर्याप्ता १५ अपर्याप्ता १६ तथा वनस्पतिकाय तेना बे भेद प्रत्येक १ साधारण २ प्रत्येक केहेतां एक शरीरे एक जीव होय तेने प्रत्येक कहिए एटले आंबा लींबडा प्रमुख झाड वेल गुच्छा प्रमुखने विषे थडनो तथा डाला तथा त्वचा तथा पान फल फूल एक एको जीव होय ते मध्ये फुलनी जेटली पांखडी तेटला जीव गणवा तेनो विस्तार पन्नवणा सूत्रथी जाणजो ने प्रत्येक वनस्पतिना पर्याप्ता १७ अपर्याप्ता १८

हवे साधारण वनस्पतिना बे भेद बादर तथा सुक्ष्म बादर जे बत्रीश अनंतकाय एटले जेम कंद प्रमुख सर्वे जाणवा तेमां एक शरीरे अनंता जीव रह्या छे ते दृष्टिगोचर दीठामां आवे माटे तेने बादर कहीये तेनुं नाम बादरनिगोद पण कहिये तेना पर्याप्ता १९ ने अपर्याप्ता २० हवे सूक्ष्म साधारण वनस्पतिनो विचार कहीये छीये तेनुं नाम सूक्ष्म निगोद पण कहीये ते चौदराज लोकमां व्यापीने रहेल छे, तेनुं स्वरूप किंचित् मात्र कहिये छीये, एक आंगलने मान आकाशनुं ग्रहण करिये तेटला आकाशना असंख्याता भाग करीये ते मांहेला एक भागने विषे असंख्याता आकाश प्रदेशे छे ते मांहेला एक आकाश प्रदेशे एक गोलो छे एक गोलामां असंख्याता निगोद छे एक निगोदमां अनंताजीव छे ते जीवनां मान केटलां छे के अतित कालना समय गया, अनागत कालना जेटला समय आवशे तेथकी अनंतगुणा जीव एक निगोदमां छे एटले अतित अनागत कालना समयनो कांइ पार पामीये नहिं ते

पण अनंता छे तेथकी पण अनंताजीव एक निगोदमां छे ते कोइ काल ते निगोदनो पार पामिये नहिं.

शिष्यवाक्य—हेस्वामी ! ते निगोद खाली केम न थाय सदायकाल मोक्षनो मार्ग तो चालतो छे माटे ए नीगोद कोइ काले पण खाली थइ जवी जोइये कांइ नवा जीव तो उत्पन्न थताज नथी अने जे जीव मांहेथी गया ते पाछा आवता नथी तो घणा जीव छे. ते घणेकाले खाली थशे जेम एक बाजरीनो कोठार भरेलो छे ते मध्ये नवी बाजरी भरशुं नहि अने शांणेथी कादवा मांडीशुं तो ते कोठार खाली थशे के नहि अपितु थायज; अथवा मोटुं एक सरोवर पाणीए भरेलुं छे अने नवी आवक आववानुं बंध कर्युं छे ने तेमांथी माणस तथा जानवरे पीवा मांडयुं ते खाली थाय के नहिं अपितु खाली थायज तेम ए निगोदना जीव घणेकाले खुटया जोइये.

गुरुवाक्य—हे भद्र ! जे अनागतकालना समय ते थकी तथा अतितकालना समय थकी अनंत गणा जीव एक निगोदमां छे एटले समये समये अकेको जाय तोपण खाली न थाय तथा बे तथा त्रण तथा संख्याता अकेके समे मुक्ति जाय तोपण ए निगोद खाली थाय नहि अने अकेके समये राश बंधी अकेको तो मोक्षे जाय नहिं केमके वच्चे विरह काल पडे अथवा एक समे एकसोने आठ मोक्षे जाय ए थकी अधिक तो मोक्षे जवानो अधिकार छेज नहि अने एटला मोक्षे जायतो छ मास सुधी कोइ मोक्षे जाय नहि एवो विरहकाल कह्यो छे तेथी एक निगोद पण खाली थाय नही तथा जे कोठार तथा सरोवरनुं द्रष्टांत दीधुं ते इहां युक्त नथी इहां हुं द्दष्टांत देउं ते सांभल. जेम समुद्रनुं पाणी दिन प्रत्ये लाखो करोडो माणस जानवर भरे ढोले बावरे

तो पण समुद्रनुं पाणी कोइ दिन ओछुं थवानुं छे ? तेम ए निगोदना जीव पण कोइ दिन ओछा थवाना छे नही एवा एक निगोदमां एटला जीव छे के खुटे नही तो एवी असंख्याती निगोदो एक गोलामां छे एवा गोला चौदराजना जेटला आकाश प्रदेश तेटला ए गोला छे तो ए जीवनुं थालुं के दहाडे खाली थाय हवे जे ए निगोदना जीवने अत्यंत मांहो मांहे संकडाशथी महाकष्ट भोगवता थका मरे छे एक श्वास उंचो लेइने नीचो मुके एटलामां सत्तरवार जन्मीने मरे अढारमी वारनो जन्मे. एटले २५६ आवलीनुं एनुं आवखुं छे एम जन्म मरणनां महा दुःख ते भोगवे छे ते दुःखनुं मान संक्षेप थकी कहिये छिये.

जे सातमी नर्कने विषे महा दुःख छे तेमां पण अपयठाणनामा वचलो नरकावासो छे तेनुं दुःख अत्यंत आकरुं कह्युं छे त्यां आवखुं तेत्रीश सागरोपमनुं छे ते तेत्रिश सागरोपमना जेटला समय थाय एटला फेरा तेत्रिश सागरोपमने आवखे सातमी नरकने विषे एक जीव उपजे ते दुःख सर्वे भेगु करिये ते थकी अनंतगणुं दुःख एक समये निगोदना जीवने छे, इत्यादिक विस्तार सर्वे पन्नवणा तथा भगवती थकी जाणजो. एटले ए साधारण वनस्पतिना बे भेद सूक्ष्म १९ बादर २० पर्याप्ता २१ ने अपर्याप्ता २२ एटले ए एकेंद्रिना बावीश भेद थया, हवे विगलेंद्रिना ६ भेद देखाडे छे बेरेंद्रि १ तेरेंद्रि २ चौरंद्रि ३ ए त्रणेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एटले ए छ भेद थया एटले एकेंद्रि सुधां २८ भेद थया हवे तिर्यंच पंचेंद्रिना वीश भेद कहीये छीये ते मध्ये प्रथम बे भेद २, गर्भज १, समुर्छिम २, ते मध्ये गर्भजना पांच भेद जलचर १ थलचर २ खेचर ३ उरपरि ४ भुजपरि ५. जलचर कहेतां मच्छ

कच्छादिक, थलचर कहेतां पारेवुं तथा समली प्रमुख उरपरि कहेतां सर्प प्रमुख, भुजपरि कहेतां नोलिया प्रमुख, ए पांचेना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए दश भेद गर्भजना कह्या. गर्भज कहेतां माता पिताना जोगथी पेदा थाय तेने गर्भज कहिये तेथकी विपरित माता पिताना जोग विना माटी पाणी प्रमुखथकी उत्पन्न थाय तेने समूर्छिम कहिये. ते समूर्छिमना पण दश भेद जेम गर्भजना कह्या तेम जाणवा एटले तिर्यंच पंचेंद्रिना वीश भेद थया, पूर्वना मांहे घालिये एटले ४८ भेद थया. एटले तिर्यंचनी एक गति कहेवाणी. हवे नारकीना १४ भेद ते कहिये छिये ते नारकीना नाम, घमा १ वंशा २ सेला ३ अंजन ४ रिट्टा ५ मघा ६ माघवति ७ ए सात नरकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मलीने १४ भेद थया नरक तिर्यंच बंन्ने गति मलीने ६२ भेद थया.

हवे देवताना १९८ भेद कहिये छिये, तेनां नाम भुवनपति १ व्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४. ते मध्ये प्रथम भुवनपतिनां नाम कहिये छिये, असुर कुमार १, नाग कुमार २, सुवर्ण कुमार ३, अग्नि कुमार ४, द्वीप कुमार ५, उदधि कुमार ६, दिशी कुमार ७, वायु कुमार ८, विद्युत कुमार ९, स्तनित कुमार १०, तथा परमाधामी १५.

शिष्यवाक्य—स्वामि ए परमाधामी देव ते देवनी चार जातिमां कइ जातिना छे. ?

गुरुवाक्य—भुवनपतिनी दश निकाय मांहेली प्रथम असुर कुमार निकायना छे. हवे ए भुवनपतिना २५ भेद थया. हवे व्यंतर तथा वाण व्यंतरना सोल भेद कहिये छिये तेनां नाम अणपंनि १, पणपंनि २, एसी वादी, ३, भूतवादी ४, कंदित ५, कोहंड ६, महा कांदित ७, पतंग ८, जक्ष ९, पिसाच १०, भूत ११, राक्षस

१२, किन्नर १३, किंपुरुष १४, गंधर्व १५, शाम १६, ए सोळे व्यंतरनी काय. हवे तिर्यंच जृंभक देवना दश १० भेद कहिये छिये तेनां नाम अणजृंभक १ पानजृंभक २ वस्त्रजृंभक ३ लेणजृंभक ४ पुष्पजृंभक ५ फलजृंभक ६ पुष्पफलजृंभक ७ सयणजृंभक ८ विद्याजृंभक ९ अवियतजृंभक १०.

एटले ए तिर्यंचजृंभकनां दश नाम कह्यां ए भेद व्यंतरनि काय मांहे जाणवा एटले भुवनपति तथा व्यंतरमळीने एकावन ५१ भेद थया. हवे जोतिषीना दश भेद कहीए छिए चंद्र १ सूरज २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५ ए पांच अढीद्वीप मांहे छे ते चल छे ने अढीद्वीप बहारला ते पांच स्थिर छे एटले जोतिषी बे ए मळीने दश भेद थया, एटले भुवनपति तथा व्यंतर तथा जोतिषी मळीने ६१ एकसठ भेद थया, हवे कल्पवासी तथा कल्पातित ए बेना ३८ भेद कहिए छीए ते मध्ये कल्पवासी देवना ३ भेद छे किल विषिआ १ देव लोक २, ने लोकांतिक ३, ए त्रण भेद, ते मध्ये प्रथम किल विषिया कहिये छिये प्रथम त्रण पल्योपमना आवखाना सुधर्म कल्प नीचे रहे छे १, बीजो त्रण सागरोपमना आवखानो धणी त्रीजा देव लोकनी नीचे रहे छे २, तथा त्रीजो तेर सागरोपमना आवखानो धणी छठा कल्पना नीचे रहे छे ३, एटले किलविषिया कह्या. हवे बार देव लोकनां नाम कहिये छिये. सुधर्म देवलोक १, इशान देवलोक २, सनत् कुमार देवलोक ३, माहेंद्र देवलोक ४, ब्रह्म देवलोक ५, ललितंग देवलोक ६, महा शुक्र देवलोक ७, सहस्रार देवलोक ८, आनंत देवलोक ९, प्राणत देवलोक १०, आरण देवलोक ११, अच्युत देवलोक १२, एटले ए देवलोकनां नाम कह्यां. हवे नव लोकांतिकनां नाम सारस्वत १ आदित्य २ वन्हि ३ अरुणा ४ गदतोय ५ तुषित ६ अव्याबाध ७

आग्नेय ८ रिठाय ९ ए लोकांतिक कह्या एटले किलविखिया ३, देवलोक १२, लोकांतिक ९, ए त्रण मलिने चोविश भेद थया ?

शिष्यवाक्य–भगवान किल विषिया ते शुं कहिये.

गुरुवाक्य–हे भद्र ! जेम मनुष्यलोकने विषे चंडाल भंगिया प्रमुख जाति छे तेम देवलोकने विषे किल्विषियानी जाति छे. जे कोइ आहियां चारित्र धर्म थकी तथा आत्म धर्म थकी भ्रष्ट थइने पोतानो मत चलावे तथा पूजावाने अर्थे कष्ट क्रिया तप जप विशेष करे, मत जूदो पाडे, ते घणी कष्ट थकी पुन्य उपार्जीने किलविषीयो देव थाय, परंतु आत्म धर्मनो घातक माटे नीचो देवता थाय, जेम जमालि किलविषियो थया तेम जाणवुं तथा जे लोकांतिक छे ते पांचमा देवलोकने विषे नव क्रश्नराजि छे तेने विषे क्रश्न राजि प्रत्ये विमान छे ते नवे विमानने विषे जे जे उत्पन्न थाय ते देवने लोकांतिक देव कहिये, ते सर्वे भवि होय. हवे कल्पातित तेना बे भेद. ग्रैवेयक तथा अनुत्तर विमान, ते मध्ये प्रथम ग्रैवेयक कहिये छिये, सुदर्शन १ सुप्रतिबंध २ मनोरम ३ सर्वतोभद्र ४ विशाल ५ सुमणस ६ सुमनस ७ प्रियकर ८ आदित ९ ए नवे ग्रैवेयकनां नाम कह्यां.

हवे अनुत्तर विमाननां नाम कहिए छिए, विजय १ विजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एटले ए सर्वे मलीने कल्पातितना चौद भेद थया तथा कल्पवासीना २४ भेद सर्वे मलीने वैमानीकना ३८ भेद थया पूर्वली त्रणे निकायना देवना ६१ भेद मांहे नाखीए ते चारे चारे नीकाय मली नवाणुं भेद थया ९९ ते नवाणुं पर्याप्ताअने नवाणुं अपर्याप्ता ए १९८ भेद देव गतिना थया. पूर्वनी बे गतिना ६२ भेद मांहे घालीए एटले त्रण गतिना मलीने २६० भेद थया हवे मनुष्यनी गतिना भेद कहिए छिए.

ते मनुष्यने उपजवानां १०१ एकसो एक क्षेत्र छे तेना त्रण भेद, कर्म भूमिनां १५ क्षेत्र, अकर्म भुमिनां ३० क्षेत्र छे, अंतराद्विपनां ५६ क्षेत्र छे, हवे जे कर्म भूमि ते शुं कहीए ! के ज्यां असि १ मसी २ कृषि ३ एनो व्यवहार छे एटले असि कहेतां जे शस्त्रादिकनुं बांधवुं, मसी कहेतां जे कागल प्रमुखनुं लखवुं, कृषि कहेतां खेती कर्म इत्यादिक ज्यां संसार व्यवहार प्रवर्त्तें तेने कर्म भूमि कहीए, ज्यां ए पूर्वे कह्यो ते व्यवहार न होय तेने अकर्म भूमि कहीए.

शिष्यवाक्य—स्वामी अंतराद्विपमां व्यवहारतो नथी तो ए पण अकर्म भुमिमां केम न गणाय ? छासीए अकर्म भूमि कही होत तो शुं हतुं के इहां जुदा पाडया. !

गुरुवाक्यः—हे भद्र ! आ पीस्तालीस क्षेत्र पृथ्वी उपर छे ने ए छप्पन क्षेत्र जे छे ते समुद्रमां अधरछे, माटे एने अंतराद्विप कही-एछीए तेनो विवरो संक्षेपथकी आगल कहीशुं.

हवे पंदर १५ कर्म भूमिनां नाम पांच भरत पांच ऐरव्रत पांच महाविदेह, एटले आ जंबुद्विपने विषे एक भरत क्षेत्र छे एक ऐरव्रत छे, एक महाविदेह छे, ए त्रण क्षेत्र जंबुद्विपमां छे एम धा-तकी खंडना पूर्वमां त्रण क्षेत्र छे तथा पश्चिम धातकी खंडे पण त्रण क्षेत्र छे तेमज पुष्कराद्धना पूर्वमां त्रणक्षेत्र छे तथा पश्चिममां पण त्रण क्षेत्र छे.

शिष्यवाक्यः स्वामी पुखरवराद्विप न कह्यो ने पुखरार्ध केम कह्यो तेनुं शुं कारण छे ?

गुरुवाक्यः—जे ए पुखरवराद्विप सोल लाख जोजननो पोहोलो छे तेना मध्य भागने विषे वलियाकारे मानुष्योत्तरनामापर्वत १७०० जोजन उंचो एवो पडयो छे तेथी अडधो द्विप बहार रह्यो

ने अडधो द्विपमांहे रह्यो, तेथी पुखरार्ध कहेवाणो एटले मनुष्य लोकने रहेवाना अढोद्विपछे जंबुद्विप १ धातकीखंड २ पुखरार्ध ते अडधो एटले ए मानुष्योतर पर्वतेसिमा मनुष्यनी जन्म मरणनी थइ चुकी, ते थकी बहार मनुष्यनुं जन्म मरण न होय. हवे अकर्म भूमिना क्षेत्रनां नाम हेमवंत ५ हरिवर्ष ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ५ रमणिकवास ५ अरणकवास ५ ए त्रीश क्षेत्र ते मध्ये जंबुद्विपमां छ क्षेत्र, ए क्षेत्र अकेका लाधे धातकी खंडना पूर्व पश्चिम थइने बबे क्षेत्र एटले १२ . क्षेत्र लाधे पुखराअर्धना पूर्व पश्चिम थइने बबे क्षेत्र एटले १२ क्षेत्र लाधे एम अढी द्विपना थइने ३० क्षेत्रलाधे एटलां अकर्म भूमिनां कह्यां हवे अंतराद्विपना ५६ क्षेत्र बतावीये छिये, जे जंबुद्विपनोलघुहिमवंत पर्वत भरतक्षेत्रनी सिमाए छे. तेनी वेदाढाओ पूर्वदेशमां गइ अने वेदाढाओ पश्चिम देशमां गइ. तेम ऐरव्रतक्षेत्रनी सिमानोशिखरि नामापर्वत तेनी पण वेदहाढोपूर्वे गइ तथा वेदाहाढो पश्चिमे गइ, ते बन्नेपर्वत सोसोजोजन उंचा छे हेमवंतपर्वतनी इशान कोणनी दाढा उपरे ते जगतिना कोट थकी ३०० जोजन जइए त्यारे पेहेलोद्विप एकरुकनामा आवे, ते समुद्र थकी अधर ते दाढाउपर छे ते द्विप त्रणसें जोजन लांबोपोहोलो छे ते द्विपनीज गतिथकी आगल ४०० जोजनजइए त्यां बीजोद्विप हेकरणनामाआवे, ते द्विप चारसें जोजन लांबोपोहोलो छे, तेनी पेली कोरनी जगतिथकी ५०० जोजनजइए त्यारे त्रीजोद्विप आदरसमुखनामा आवे, ते ५०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनी पेहेलीकोरनी जगतिथकी छसेंजोजन ६०० जइए त्यारे चोथोद्विप हेकरणनामा आवे, ते छसें ६०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनी पेहेलोकोरनीज गतिथी सातसें ७०० जोजनजइए त्यारेपांचमोद्विप असवकरणनामे आवे, एद्विप ७०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनीपेलीकोरनी जगतिथी

८०० जोजनजइए त्यारेछठोद्विप उलकमुखनामाआवे, ते आठसें ८०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनीपेलीकोरनी जगतिथी ९०० जोजन जइए त्यारेसातमोद्विप घणदंतनामेआवे ते ९०० जोजन लांबोपोहोलोछे, ते सर्वेनीपरधी त्रणगुणीझाझेरीजाणवी, जेम ते इशानकोणनी दाढाउपरसातद्विपकह्या, तेम हेमवंतपर्वतनी अग्निकोणनीदाढाउपर सातद्विपजाणवा तेनां नाम अभासी १ गजकरण २ मेढमुख ३ गजमुख ४ सीहकरण ५ मेघमुख ६ लुसटदंत ७ ए साते द्विपनो विचार बाकी पूर्ववत जाणवो, तथा हेमवंतपर्वतनीपश्चिम दिशाना समुद्रमांहि नैरुत्यकोणनी दाढाउपरे जे सातद्विप छे तेनां नाम कहीए छीए, वैखाणी १ गौकरण २ गोमुख ३ सीहमुख ४ अकरण ५ वीधुतमुखकरण ६ नीगुढदंत ७ बाकीसर्वपूर्ववत तथा तेहीज हेमवंतपर्वतनीदाढा पश्चिमना समुद्रेवायव्य खूणे, ते उपरसात द्विपछे, तेनां नाम लागुलीक १ सकुलीकरण २ गोमुख ३ वाधरमुख ४ करणपरवारण ५ वीदुदंत ६ सुधदंत ७ एसातद्विप हेमवंत पर्वतनी पश्चिमदिशानी वाव्यकोणनीदाढाउपरे एटले हेमवंतपर्वतनी चारदाढाउपरे सर्वे मलीने २८ द्विप थाय तेम सिखरीपर्वतनी पूर्व पश्चिमनी चारदाढाउपरे एने एज नामना २८ द्विपछे एटले ए बे मलीने छप्पन द्विप थया तेने अंतरद्विपकहीए एटले ए सर्वे मलीने मनुष्यने उपजवानां १०१ क्षेत्र थयां, ने एकसोने एक क्षेत्रना मनुष्यना गर्भजना बे भेद पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एटले २०२ भेद थया तथा १०१ असन्नि मनुष्य अपर्याप्ताज मरे माटे ते तेनो एकज भेद लाधे एटले ३०३ भेद मनुष्यना थया ने २६० पूर्वे त्रण गति कही तेना ए चार गति मलीने सर्वे भेद ५६३ थया. एटले ए अशुद्ध व्यवहारथकी जीवना भेद देखाड्या हवे जीवत्व पणानो भाव देखाडे छे एटले जीवत्व ते चेतना लक्षण कहीए

एटले चार संज्ञा सर्वे जीवने विषे लाधे तेनां नाम, आहारसंज्ञा १ भयसंज्ञा २ मैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसंज्ञा ४ ए चार संज्ञाथकी रहित कोइ संसारी जीव होय नहि.

शिष्यवाक्यः—हे प्रभु एकेंद्रीने विषे संज्ञा चार क्यां दीसे छे.

गुरुवाक्यः—हे भद्र उपयोग दइने जुवे तो एकेंद्रीमां पण चार संज्ञा लाधे, जेम वनस्पति छे ते पाणी मूलथकी लेइने शिखाए पहोंचाडे छे, तो ए प्रत्यक्ष आहार लीधो के नहि? तथा भयसंज्ञा लज्जालु झाडने विषे छे के कोइ पुरुष हाथ अराडे तो संकोचाइने नमी जाय, तथा मैथुनसंज्ञा खजुरी प्रमुखने विषे छे जे नरनो गेर चढे त्यारे खजुरी फले त्यां सुधी खजुरी फले नहि, तथा परिग्रह संज्ञा जे काकडी प्रमुखना वेला पोताना फलने पोते ढांकीने रहे छे, तथा राता पुवाडीयानां मूल ज्यां धरतीमां निधान होय त्यां वींटाइने रहे तेम एकेंद्रिने विषे पांच थावरने ए चार संज्ञा होयज, बादर द्रष्टि गोचर कोइकनुं आवे, शाथकी के ए थावरने तेनुं कर्त्तव्य पोतानी ज्ञान बुद्धियकी समज्यामां आवे पण ए चार संज्ञा विना कोइ संसारी जीव छे नहि.

शिष्यवाक्य—स्वामी सिद्धने विषे ए चार संज्ञा पामीये के नहीं.

गुरुवाक्य—सिद्धने विषे ए संज्ञा न होय शा माटे के सिद्ध छे ते आत्मस्वरूपी छे संज्ञा छे ते पुद्गलीक छे.

शिष्यवाक्य—भगवतिजीमां चार संज्ञा आत्मीक कही छे ने तमे पुद्गलीक केम कोहोछो?

गुरुवाक्य—जे आत्मीक संज्ञा कही छे ते व्यवहार वचन. शा माटे के ते ठेकाणे आत्माने कर्म सहित मान्यो छे माटे ए ठेकाणे आत्मीक कही पण आत्मीक छे नहि.

शिष्यवाक्य—स्वामी कोइ ठेकाणे पुद्गलीक कही छे ?

गुरुवाक्य—के एहीज भगवतीजीने विषे तथा पन्नवणा प्रमुख घणा शास्त्रमां संज्ञाने पुद्गलीक कही छे, तथा संज्ञाओ १६ कही छे ते मध्ये क्रोधादिक संज्ञामां गणी छे माटे सर्व पुद्गलीक छे एटले संज्ञा संसारी जीवने होय, सिद्ध परमात्माने न होय एटले एवी संज्ञा सहित होय तेने जीव जाणवो हवे ते संसारी जीवनुं आवखुं लखीये छीये. पृथ्वीकायनुं २२००० बावीसहजार वर्षनुं आवखुं, अपकायनुं ७०००, सातहजार वर्षनुं आवखुं, तेउकायनुं त्रण अहोरात्रिनुं, वायुकायनुं ३००० त्रणहजार वर्षनुं आवखुं, वनस्पतिकायनुं १०००० दसहजार वर्षनुं आवखुं, थावर पांचेनुं आवखुं जाणवुं, हवे त्रसनुं आवखुं कहीये छीये. बेरंद्रीनुं १२ वर्षनुं आवखुं, तेरंद्रीनुं ४९ दिवसनुं, चौरंद्रीनुं ६ महीनानुं तथा तिर्यंच पंचेंद्रि जलचरनुं पुर्व कोडनुं जाणवुं, खेचरपंखीनुं पल्योपमनो असंख्यातमो भाग जाणवो, तथा थलचर तिर्यंचनुं त्रण पल्योपमनुं आवखुं जाणवुं, तथा उरपरि सर्पनुं पूर्वकोडनुं जाणवुं, भूजपरि सर्पनुं क्रोड पूर्वनुं जाणवुं. सर्वेनुं जघन्य अंतर मुहुर्त जाणवुं. हवे जलचर समूर्छिमनुं पूर्व क्रोडनुं आवखुं, थलचर समूर्छिमनुं ८४००० चोराशि हजार वर्षनुं, खेचर समूर्छिमनुं, ७२००० बहोतेर हजार वर्षनुं, उरपरि समूर्छिमनुं ५३००० तेपन हजार वर्षनुं, भूजपरि समूर्छिमनुं ४२००० बेतालीस हजार वर्षनुं जाणवुं, हवे सात नर्कनुं आवखुं कहिये छिये. पहेली नर्कनुं एक सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं ने बीजी नरके त्रण सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, त्रिजी नर्के सात सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, चोथी नर्के दश सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, ने पांचमीनर्के सतर १७ सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, छठी नर्के बावीश सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, सातमी नर्के ३३ तेत्रिश सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं. पहेलीनर्के

जघन्य १०००० दश हजार वर्षनु आवखुं, पहेलीनुं जे उत्कृष्ट ते बीजीनुं जघन्य, एम यावत् छठ्ठीनुं उतकृष्ट ते सातमीनुं जघन्य, तथा सातमी नर्के अपेठाण नर्कावाशे जघन्य तथा उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनुं. तथा हवे भुवनपतिनु आवखुं कहिये छिये. असुर कुमार निकायमां दक्षण दिशाना चमरेंद्रनुं एक सागरोपमनुं आवखुं तेनी देवीनुं साडीत्रण पल्योपमनु आवखुं उत्तर दिशाना बली इंद्रनुं एक सागरोपम झाजेरु आवखुं तेनी देवीनुं साडीचार पल्योपमनुं आवखुं, तथा नागकुमार प्रमुख नवेनिकायनी दक्षिण श्रेणिनुं १॥ दोढपल्योपमनुं आवखुं, तथा उत्तर दिशाना नवेनिकायनुं बे पल्योपम माठेरुं आवखुं ते बे श्रेणिनी देवांगनानुं आवखुं तेनीनिकायनादेवथी अरधुं जाणवुं तथा सर्व भुवनपतिनुं जघन्यथी १०००० दशहजारवर्षनुं आवखुं जाणवुं, हवेव्यंतरनीनिकायनुं उत्कृष्टं एकपल्योपमनुंआवखुं जाणवुं अने जघन्य १०००० दश हजार वर्षनुं आवखुं जाणवुं, तेनी देवीनुं अरधा पल्योपमनुं जाणवुं, चंद्रमानुं एक पल्योपमने १००००० एक लाख वर्षनुं आवखुं, सूरजनुं एक पल्योपमने १००० एक हजार वर्षनुं आवखुं, ग्रहनुं एक पल्योपमनुं, नक्षत्रनुं ०॥ अडधा पल्योपमनुं, तारानुं ०। पापल्योपमनुं आवखुं, तेनी देवीयोनुं सर्व सर्वना देवथकी ०॥ अडधुं, जघन्य थकी सर्वेने पल्योपमनो आठमो भाग, हवे विमानिकनुं आवखुं कहिये छिये. सुधर्म देवलोके जघन्य १ एक पल्योपम, उत्कृष्ट बे सागरोपमनुं आवखुं तेनी देवीनुं सातपल्योपमनुं आवखुं त्यां अपरग्रीहिता देवीओ छे तेनुं ५० पचाशपल्योपमनुं आवखुं तथा इशान देवलोके बे सागरोपम झाझेरानुं तथा तेनी देवीनुं ९ नवपल्योपमनुं, त्यां अपर ग्राहिता देवीओ छे, तेनुं ५५ पल्योपमनुं आवखुं छे, सनत्कुमार देवलोके सात सागरोपमनुं

आवखुं देवांगना हवे अहियांथकी छे नहि, जघन्य आवखुं नीचला देवलोके उत्कृष्ठ होय ते उपले देवलोके जाणवुं. एटले अहियां बे सागरोपमनुं आवखुं छे तेम सर्वे देवलोके समजवुं. चोथे देवलोके सात सागरोपम झाझेरानुं, आवखुं जाणवुं, पांचमे देवलोके दश सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं छठे देवलोके चौद सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं सातमे देवलोके सत्तर सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, आठमे देवलोके अढार सागरोपमनुं नवमे १९ सागरोपमनुं आवखुं दशमे २० सागरोपमनुं आवखुं अगियारमे २१ सागरोपमनुं आवखुं बारमे देवलोके २२ सागरोपमनुं आवखुं हवे नव ग्रैवेयक मध्ये प्रधान हेठेनी ग्रैवेयकनुं २३ तेवीश सागरोपमनुं आवखुं, बीजी २ ग्रैवेयके २४ चोवीश सागरोपमनुं आवखुं, ३ त्रीजी ग्रैवेयकनुं २५ पचीस सागरोपमनुं आवखुं, हवे मध्य नर्कना पहेली ग्रैवेयकनुं २६ सागरोपमनुं आवखुं, बीजी ग्रैवेयकनुं २७ सतावीश सागरोपमनुं आवखुं, त्रीजी ग्रैवेयकनुं अठावीस सागरोपमनुं आवखुं. हवे उपरली नरकना पहेली ग्रैवेयकनुं २९ सागरोपमनुं आवखुं बीजी ग्रैवेयकनुं ३० सागरोपमनुं आवखुं त्रीजी ग्रैवेयकनुं ३१ एकत्रीस सागरोपमनुं आवखुं हवे पांच अनुत्तर विमाननुं आवखुं कहिये छिये, ते मध्ये चार अनुत्तर विमाननुं आवखुं जघन्यथी ३१ एकत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्टुं ३२ तेत्रीश सागरोपमनुं आवखुं छे, तथा सर्वार्थ सिद्ध विमाने जघन्य तथा उत्कृष्टुं ३३ तेत्रीश सागरोपमनुं आवखुं जाणवुं, एटले ए देवनुं आवखुं कह्युं.

हवे मनुष्यनुं आवखुं कहियें छीयें देवकुरु तथा उत्तरकुरुना जुगलीयानुं आवखुं ३ त्रण पल्योपम, हरिवर्ष तथा रमणिकवासना जुगलीयानुं २ बे पल्योपमनुं आवखुं छे, हेमवंत तथा अरणकवास क्षेत्रना जुगलीआनुं १ एक पल्योपमनुं आवखुं, अंतरद्वीपना जुग-

स्त्रीआनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं छे, हवे कर्मभूमिना मनुष्यनुं आवखुं एकक्रोडपूर्वनुं छे ते महाविदेहक्षेत्रमां जाणवुं, तथा पांचमे आरे भरत ऐरव्रतक्षेत्रने विषे ??० एकसोनेदशवरसनुं आवखुं जाणवुं तथा छठ्ठे आरे २० वरसनुं आयुष्य जाणवुं तथा असंज्ञि मनुष्यनुं अंतरमुहूर्तनुं आयुष्य जाणवुं. गर्भज तथा असंज्ञि मनुष्यनुं जघन्य थकी अंतरमुहूर्तनुं आयुष्य जाणवुं एटले मनुष्यनुं आयुष्य कह्युं तथा सर्वजीवनुं आयुष्य कह्युं. शुद्धनिश्चयनये विचारीने जोइये तो जेवा सिद्धपरमात्मा तेवोज चेतन छे. चेतनसत्तानेविषे जडसत्ता जूदीछे माटे चेतनचेतनना रूपमांजछे.

शिष्यवाक्य—हे भगवान चेतन पोतानाज रूपमां छे तो चार गति संसारमां परिभ्रमण करवुं. जन्ममरणनां दुःख सेहेवां तेवुं केम थाय छे ?

गुरुवाक्य—हे मानुंभाव जे धणीये पोताना चेतननी भुले जडने पोतानो मान्योछे त्यांसुधी दुखी छे पण पोते पोताना स्वरूपने विषे भासन करे पछी व्यापकपणुं करे, पछी रमण करे तो तेने कांइये दुख होयनही, अत्रदृष्टांत–जेम कोइ पुरुष महा डाह्यो विचीक्षण छे ने तेज पुरुषे मदीरापानकरयुं, तेना केफथी गफलती थयो ते वारे ते अशुचीजग्यानेविषे पडे अने पवित्राइपणुं माने रस्तामां पडे अने घर माने परंतु ते जीवनो जे वारे केफ उतरे ते वारे ते अशुचीने अशुचीमाने, रस्ताने रस्ता माने, पोते पोताना घरमां जइने बेसे, प्रथम केफमां अशुची अने सुख मानीने पडयो हतो ते भ्रमणा बधीए मटी जाय तेम आ चेतन अज्ञानना जोर थकी मिथ्यारूप भ्रमजालमां पडयोछे ते धणी सर्व पुदूगलनुं कर्त्तव्य तेने आत्मा जाणे ते थकी करीने चारगतिसंसारमां रखडवानुं थाय, जन्ममरणादिक दुःखसहे, जे वारे ज्ञान भासन थाय ते वारे जडनुं कर्त्तव्य सर्व खोटुं जाणे,

पोते मांही प्रवेश करे नहीं, तथा बीजे द्रष्टांते जेम फटक रत्ननो एक थंभ छे, ते थंभने एक दीशाये लाल पत्र बांधीये, एक दिशे श्याम बांधीये जे वारे लाल पत्र बांध्या होय ते वारे फटकलाल दीशे, श्यामफटक बांध्युंहोय ते वारे फटकश्यामदीशे अपितु फटक तो श्यामे नथी ने लाल पण नथी फटकतो निर्मल स्वभावेजछे तेम आ आत्मा-रागद्वेषरूप जे लाल श्यामरूपपत्रछे,तेथीलोकमां सारो नवलो केहेवाय छे पण आत्मा मूल स्वभावे जोइयेत्यारे तेने कांइरागद्वेष छे नही राग-द्वेषतो जड छे आत्मातो निराकार निरंजनछे. आत्माने विषे तो ज्ञान दर्शन चारित्र रह्युंछे, एवी रीते जे आत्माने ओलखीने जे रमण करे अने जे शक्तिभावे सत्ताने विषे अनंती ऋद्धि रही छे ते व्यक्ति-भाव केहेतां सर्व प्रगट करे तेनुं कल्याण थाय ए जीवतत्त्व कह्यो. १. हवे संवरतत्व कहीयेछीये, एटले संवर केहेतां आवतांकर्मने रोकवां तेने संवर कहिये. ते संवरना त्रण भेद छे. मनसंवर १, वच-नसंवर २, कायसंवर ३, कायसंवरकेहेतां जेथकी आश्रव आवे एवां कामकायाए करीने न करे,तथा वचनसंवरकेहेतां जेबोलवाथकी आश्रव आवेतेवुं वचन नबोले, तथा मनसंवर केहेतां जे मनथकी आश्रव आवे एवुं मन न रमाडे ए संवर ते सर्वे व्यवहार छे निश्चय थकी आत्मा पोताना स्वरूपमां रहे तेने संवर कहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामी अमे तो पूर्वे संवरना ५७ बोल सांभल्या छे ते तमे कंइ कह्या नहीं अने तमे तो आत्मानो संवर कह्यो ते तो अमे पूर्वे सांभलेलुं नथी.

गुरुवाक्य—हे भद्र सत्तावन बोल जे तें संवरना सांभल्या छे, ते मध्ये केटलाएक बोलतो व्यवहार छे कोइक बोल निश्चय छे ते मध्ये जे व्यवहार संवर छे ते थकी कोइ जीवनी मुक्ति थाय नही एतो अंते पण, आश्रवज थाय अने जे निश्चय संवर छे ते थकीज धर्म थाय अने मुक्ति पण तेथीज जाय.

शिष्यवाक्यः—स्वामी तेनो एटलो वधो फेर केम छे तेनी समज पाडो.

गुरुवाक्यः—हे भद्र ! ए सत्तावन बोलनी रीत छे ते हुं तने कहुं ते तुं सांभल. प्रथम सत्तावन नाम छे ते काहिए छीए. इर्या समिती १ भाषा समिती २ एषणा समिती ३ आदाननिखेपणा समिती ४ परिठावणीया समिती ५ मन गुप्ति ६ वचनगुप्ति ७ कायगुप्ति ८ क्षुधापरिसह ९ तृषापरिसह १० शितपरिसह ११ उश्नपरिसह १२ डंसपरिसह १३ अचेलकपारिसह १४ अरातिपरिसह १५ स्त्रीपारिसह १६ विहार परिसह १७ नीखेदपारिसह १८ सज्यापरिसह १९ आक्रोसपारिसह २० वधपरिसह २१ जाचनापरिसह २२ अलाभपरिसह २३ रोगपरिसह २४ त्रणफास परिसह २५ मलपरिसह २६ सत्कारपरिसह २७ प्रज्ञापरिसह २८ अज्ञानपरिसह २९ समकितपारिसह ३० क्षमा ३१ मार्दव ३२ आर्जव ३३ मुक्ति ३४ तप ३५ संजम ३६ सत्य ३७ सौच ३८ अकिंचन ३९ ब्रह्मचर्य ४० अनित्यभावना ४१ अशरणभावना ४२ संसारभावना ४३ एकत्वभावना ४४ अन्यत्वभावना ४५ अशुचीभावना ४६ आश्रवभावना ४७ संवरभावना ४८ निर्जराभावना ४९ लोकभावना ५० वोधिदूर्लभभावना ५१ धर्मभावना ५२ सामायकचारित्र ५३ छेदोपस्थापनीय चारित्र ५४ परिहारविशुद्धचारित्र ५५ सूक्ष्मसंपराय चारित्र ५६ यथाख्यातचारित्र ५७ ए सत्तावन बोल संवरना छे ते मध्ये घणा बोल व्यवहार दीसे छे, केमके प्रथमज पांच जे समिती छे ते आत्मग्राही नथी शामाटे जे प्रथम इर्या समिती जे साधुने धुंसरा प्रमाणे कहेतां साडात्रण हाथ द्रष्टि राखीने चालवुं ते परजीवनी दया आश्रीने छे तथा पोताना पडवा आखडवा आश्रीने छे, तेनी समिती ज्ञान विना घणा जीव पाले छे तथा

भाषा समिती जे छे, ते वचन थकी कोइ जीवने बाधा पीडा थाय एवुं वचन न बोलवुं, ते पण परजीव आश्रीने छे, तथा पोतानुं मान राखवा आश्रीने छे तथा त्रीजी एषणा समिती छे ते पण एकेंद्रि आदिक जीवने रखोपा आश्रीने छे शामाटे जे गोचरीना जे दोष टालवा ते मुख्यतापणे अपकाय तथा अग्निकाय तथा वनस्पतिकाय प्रमुख जीवनुं रखोपुं छे तथा चोथी आदान समिती ते जणश भाव लेवी मेलवी ते पुंजी प्रमार्जिने लेवी, तथा मुकवी ते पण परजीवनी दया आश्रीने छे तथा पांचमी परिठावणीआ समिती केहेतां जे आहार पाणी वस्त्र पात्र लघुनीत वडी नीत प्रमुख जे जे परठववुं ते सर्वे जग्या पुजी प्रमार्जिने परठववुं ते पण परजीवनी दया आश्रीने छे तथा मन गुप्ति कहेतां मनने आर्त्तरौद्रध्यानमां जावा न देवुं, जाताने रोकवुं, तथा वचन गुप्ति जे वचन विना कारणे उच्चारण न करवुं, अने जे उच्चारण ते पण कोइ जीवने बाधा पीडा थाय एवुं न करवुं तथा कायगुप्ति कहेतां कायाए करीने जीवनी हिंसा प्रमुख नीपजे ते काम न करवां, एटले ए पंचसामिती तथा त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता कहेवाय ते जमाली प्रमुख घणा जीवे पाली पण कांइ ते जीवनी कार्य सिद्धि थइ नहि अने भगवाने एने निन्हवमां गण्या ते प्रत्यक्ष सिद्धांत बोले छे माटे एने ते व्यवहारज जाणवो, एने विषे कांइ आत्मानी कारजसीद्धि दिसती नथी.

शिष्यवाक्यः—स्वामी ! जो एने विषे आत्मानी कार्यसिद्धि नथी तो सिद्धांतने विषे ठेकाणे ठेकाणे अष्ट प्रवचन मातानी वार्त्ता केम लाव्या छे. ने एवा देखीने तेने साधु जाणे तेने मिथ्यात्व लागे.

गुरुवाक्यः—हे भद्र ! ए कल्पव्यवहार छे एथकी बाल जीव

धर्म पामे ने साधुना गुण बाह्य थकी देखीने साधु माने माटे एने कांइ मिथ्यात्व लागे नहि, एटले साधु श्रावकनी ओलखाण पण ए थकी थाय तथा साधुनो व्यवहार घणो सारो दीसे तथा पर जीवनी दया पण रहे ते कारण माटे सिद्धांतमां ए वार्त्ता लावेला छे. ते करतां सिद्धांतनी माहेलीकोरे व्यवहारनी पुष्टि घणीक छे शामाटे के त्यां त्रण नयनी वार्त्ता रही छे. नैगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ चार नयनी वार्त्ता सिद्धांतमांथी कहाडी नांखी छे ते अधिकार सम्यक्द्वार ग्रंथथकी जाणजो. पण ते अष्ट प्रवचन माताने विषे आत्मस्वरूपनी रमणता नथी, अने ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता नहि त्यां कांइ धर्म नहि, अने जो आत्मस्वरूपनी रमणताविना अष्ट प्रवचन मातामां धर्म होत तो जमाली प्रमुखने निन्हव न कहेता माटे आत्मस्वरूपनी रमणता थकी धर्म तथा मुक्ति छे पण ते विना नथी.

हवे बावीस परिसहनी समज पाडुं ते सांभल, प्रथम जे क्षुधा परिसह कहेतां जे क्षुधा वेदवी एथकी कांइ आत्मानुं कल्याण भासन थतुं नथी, शामाटे जे तिर्यंच पंचेंद्रि घोडा ढोरां प्रमुख बहु क्षुधा वेठे छे पण कांइ तेनुं कार्य थतुं नथी ने क्षुधा वेठ्याथी कारज थाय तो तेज जीवनुं कारज थाय तथा तृषा परिसह कहेतां जे, जलनी तरस भोगववी तेने विषे कांइ आत्मकार्य नथी. शामाटे के जो ए थकी कारज थाय तो बपैया प्रमुख जानवर मोक्षे गया जोइये, तथा उष्ण परिसह कहेतां जे ताप सेहेवो ते थकी पण कांइ मुक्ति थाय नहिं, केमके बलद घोडा रोझ, खच्चर प्रमुख जनावर सदाय तडकेज रहे छे, पण ए ताप थकी पण कांइ तेनी सिद्धि थइ नाहि, तथा सीत परिसह कहेतां जे टाढाड सेहेवी ते पण सर्व पंखी तथा ढोर तथा भिक्षु प्रमुख घणा मनुष्य ते पण सित सहे छे पण तेनु कांइ कारज सिद्ध थतुं नथी तो बीजानुं

थयां थकी थाय, तथा डंस परिसह कहेतां जे डंस, मच्छर, चांचड, मांकण, इत्यादिक परिसह सेहेवो ते परिसह थकी कारज सिद्धि होय तो सर्वे जानवर तथा पंखीने विशेष थकी थाय छे, ने मनुष्यने सामान्य प्रकारे छे, ए परिसह थकी जो मुक्ति थती होय तो प्रथम जानवरादिकनी सिद्धि थवी जोइए. पछी मनुष्यनी सिद्धि थाय परंतु सत्ता स्वरूप ओलख्या विना कोइ दिन मुक्ति थवानी नथी तथा अचेलक परिसह कहेतां वस्त्रादिक न राखवुं, तेना बे भेद, दिगंबरने मते बिलकुल न राखवुं. श्वेतांबरना पक्षना बे भेद, सिद्धांतनो तथा आवश्यकनो, सिद्धांतना पक्ष थकी जोतां कोइक साधु वस्त्र राखे तथा प्रश्न व्याकरण सूत्रने मते बधा ए राखे एवुं भासे छे परंतु बीजा सूत्रना मतथकी भासननथी थतु. तथा आचारांगजीवाला एवुं कहे छे के, कोइ साधुथी सीत परिसह न खमाय तो एक तथा बे तथा त्रण पछेडी राखे, पछी सीतकाल गयाथी वोसरावे अथवा कोइ न वोसरावे तथा कल्पसूत्रनी टिका प्रमुखने विषे आर्ज रक्षितनामा जुगप्रधाने पोताना पिता सोमलनामा ब्राह्मणने दिक्षा दिधी ते वारे तेने सर्व धर्म साचुं भास्युं पण चलोटो कहाड्यो नहोतो, शाथी के लज्जा परिसह न जिताणो ते थकी होय; पण श्री आर्यरक्षित जुग प्रधाने बहु महेनते जुक्तिये करीने कढाव्यो तो ते जोतां वस्त्र भासन थतुं नथी. आवश्यकने मते हाथ बेनो कटको बे कुणी वच्चे दाबीने चाले, इत्यादिक विचारे छे, ए सर्वेने अचेलकज कहिये. ते अचेलक परिसह थकी मुक्ति थाय ते पण कांइ संभवतुं नथी शा माटे जे जानवर वाघ तो सर्वे अचेलक छे तथा मनुष्यने विषे वाघरी प्रमुख घणा लोको तुच्छ वस्त्रना धारी छे, तेमनां अंग पण पुरां ढंकातां नथी, तो तेनी मुक्ति प्रथम थवी जोइये, पण ते कांइ थती नथी मुक्ति तो पोताना आत्म स्वरूप

थकी छे, तथा अरति परिसह केहेतां अशाता एटले शरीरादिकने अथवा मनने मान अपमान प्रमुख आदे देइने अशाता उत्पन्न थाय ए अशाता परिसह सेहेवो ते ठीक छे, समभावे रहेवाय तो आत्मीककार्य छे, जो आत्मा ओलखे तो; नही तोए पण व्यवहार छे. केमके एवा घणा जीव मान अपमान समभावे गणे छे. ते जोगी वेरागी तथा ओछी समजवाला जीव ते पण सर्वे समभावे रहे छे, परंतु तेमां कांइ कार्यज सिद्धि थाय नही, जो आत्मस्वरूपने ओलखीने तेने पुद्गलिक भाव जाणीने समभावे रहेतो तेनुं कार्य सिद्ध थाय. तथा स्त्री परिसह केहेतां स्त्रीयादिकना हाव भाव देखीने मन चपल थाय ते परिसह सेहेवो. परंतु ते परिसह सेहेवा थकी तो कार्यनी सिद्धि छे नहि शामाटे के खाखीसन्याशी परमहंस प्रमुख घणा ए जोगने साचवे छे, तथा घोडा प्रमुख जानवर पण परवश रह्या थकी पाले छे, तथा केटलाक मनुष्यने अणमलते सचवाय छे तथा मलते पण घणा धर्मवाला साचवे छे पण तेनुं कांइ कारज सिद्ध थाय नहि.

शिष्यवाक्य—के स्वामीतेतोजैननुंधर्म पाम्या वगर मोक्षे जता नथी पण जैननुंधर्मपामे ते मोक्षे जाय के नहि.

गुरुवाक्य—के जैननाधर्मना अने अन्यमतना ए धर्ममां शो फेर छे ए व्रत तो सर्वेने सरखुं पालवानुं छे माटे ए व्रत आश्रीने कांइ जैनमां अने अन्यधर्ममांकशोफेर छे नहि, परंतु जैननो ए फेर छे के जे खटद्रव्यनी ओलखाण, ते मध्येथी पांच द्रव्यनो त्याग एक आत्मधर्मनुं आदरवुं तेना गुण पर्यायसहित ओलखाण करवी तेने भेदज्ञान कहिये. तेज अभेदज्ञानपणे थाय, तो मुक्ते जाय माटे ज्ञानमांज मुक्ति रही छे तथा, विहारपरिसह केहेतां जे चालवुं तेनो श्रम तथा गाम गाम जायगा नवी शोधवी तथा आहार पाणी सर्वे वि-

हारमां उत्पन्न थाय ते परिसह सेहेवा थकी कोइ कहेशे के मुक्ति थाय ते वात पण संभवे नहि, शा माटे जे आजीवीकाथकी लोको घणा गामोगाम फरे छे ने परिसह सहे छे, तथा अन्यमतीना भेख धारी पण सर्वे एमज परिसह सहे छे, तथा घोडाप्रमुख विहार-ना परिसह सहेछे, पण तेनुं कांइ कार्य सिद्ध थतुं नथी, तथा निखेद परिसह केहेतां जे लोकोतेतुं अपमान करे ते परिसह सेहेवो ते थकी पण कोइ केहेशे के आत्मा कर्मरहित थाय, ते वात संभ-वे नहि शा माटे जे घणा भिक्षुक लोको घर घर भटके छे ने ते लो को तेने घणुं निभ्रंछे तथा श्वानने घरघरथी मारीने लोको काढी मूके छे, तो ए परिसह थकी कारज सिद्धि थात तो एटलाने थवी जोइये, परंतु कारज सिद्धि तो एक आत्मज्ञानने विषे छे, तथा सज्या परिसह केहेतां भूमि तथा पाट प्रमुखनी जोगवाइ सारी मळी अथवा नवळी मळी तो ते परिसह सेहेवो, ते परिसह थकी पण कांइ कार्य थतुं दिसे नहि केमके जे घणा लोको विषम जग्या-ने विषे पण रेहे छे तथा जनावर पण विषम जग्याने विषे बेसे सुवे छे तेथी कांइ तेनुं कारज थाय नहि, तथा आक्रोस परिसह केहे-तां कोइ आक्रोस करी वचन कहे, अथवा मरमनां वचन कहे ते परिसह सहेवो तेनो विचार, पूर्वे नखेद परिसहमां कह्यो छे ते थकी जाणजो, तथा वध परिसह केहेतां कोइ ताडे छेदे भेदे ते परिसह सेहेवो, परंतु कांइ ते परिसह थकी पण कारज सिद्धि थाय नहि शा माटे जे तिर्जंचनी गतिने विषे एक एकनो छेदन भेदन घणां करे छे तथा मनुष्य पण ते जीवोने छेदन भेदन करे छे तथा मनुष्य मनुष्यने पण छेदन भेदन करे छे तथा वाघरी थोरी प्रमुख नीच जातिने ताडना तर्जना घणी थाय छे तथा उंच लो-कोमां पण थाय छे ते प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे पण कांइ तेनी कारज सिद्धि थती नथी.

शिष्यवाक्य—स्वामी ते लोक छेदन भेदन खमे छे तेने कांइ समता परिणाम नथी ने साधु लोको तो समताथकी परिसह सहेते माटे ते लोकोनी कारज सिद्धि न थाय ने साधु लोकोनी कारज सिद्धि थाय.

गुरुवाक्यः—हे भद्र समता कांइ एक प्रकारनी नथी शा माटे जे कारण कारण जुक्त समता छे एक तो समता कहेतां सामो पुरुष बोल्यो तेना सामुं न बोले तेवारे पोताना मनमां विचारे के बंन्न सरखा बनशुं माटे पोतानी मोटम राखवाने न बोले. ते पण समता कहिए तथा बीजो भेद सामो पुरुष बोल्यो ते पोतानी समजमांज नहि केवल मुर्खपणे जे कहे तेनी हा, ते पण समता कहेवाय, तथा त्रीजे भेदे राजा प्रमुखना सामुं बोलवानी पोतानी प्राप्ति नथी त्यां पण समता राखवी पडे, ना राखे तो उलटुं विशेष दुःख पेदा थाय तेने पण समता कहीए. तथा चोथो भेद सामाना बोल्या प्रमुख पेटमां राखे, मुखथकी कहे नाहि. लोकमां घणो समतावान जणाय परंतु जेवारे पोतानो अवसर आवे त्यारे ते ए वेर ले ते पण एक समता, तथा पांचमो भेद जे ज्ञानमां समजे नाहि अने मर्कट वैरागयकी पापनो भय राखीने समता राखे ते पण एक समता, इत्यादिक बहु प्रकार समताना छे पण तेथकी कांइ कारज सरे नाहि, जे वारे आत्म स्वरूपनी ओलखाण थइ होय ने पुद्गलना बंध उदय उदिरणाना भाव समजता होय, पछी आत्माथकी एवो विचार थाय के ए आत्मानां बांधेलां कर्म पूर्वेनां उदे आव्यां छे ते भोगव्या विना छुटे नाहि, ने सामा पुरुषने एवोज कर्मनो उदय छे के उलटां कर्म चीकणां बांधे छे. एम पुद्गलनुं स्वरूप विचारतां राग द्वेष न उठे ते वारे आत्मस्वरूपमां स्थिर थाय तेने समभाव कहिए ने तेनुं नाम समता, तेथकी अनंतां कर्म निर्जरे माटे ए

समता ते समतामां गणाय, बाकी समताओ ते वस्तुताए जोतां असमताज छे, ते माटे वध परिसहथकी कांइ मुक्ति नहि. मुक्ति तो पोताना स्वरूप रमणमां छे, तथा जाचना परिसह केहेतां जे घरघर भिक्षा मागवी, ते एक मोटो परिसह छे ते परिसहनुं सहन करवुं, परंतु तेथकी कांइ कारज सरे नहि, केमके घणा भिक्षुक लोको तथा सारा माणस आजीविकाथी हिण थये थके लज्जा मुकी भीक्षावर्ती करे छे, तथा अन्य दर्शणना भेख धारीनी पण जाचना वृत्ति एज आजीविका छे तेथकी पण कारज सिद्धि थाय नहि अने जो काम थतुं होय तो ते पहेलुं थवुं जोइए, तथा अलाभ परिसह केहेतां जाचना करतां पण वस्तु पाम्या नहि, तेने अलाभ परिसह कहिये ते परिसह पण सर्वे जाचक लोको तथा भिक्षुक लोको सर्वे अणमलवाथी संतोष करीने बेसे छे, तथा गृहस्थ पण एकएकने घेर वस्तु जाचवा जाय ने न मले तो संतोष राखे, तथा जनावर पण घास दाणो मले तो भले, न मले तो संतोष राखीने बेसे छे. एम सर्वे जीवनी एज नीति छे, कदापि कोइ जीव उत्पातीया होय, ते हायवराय करे पण ते कांइ परिसहथकी कारज सिद्धि थाय नहि तथा रोग परिसह केहेतां शरीरमां रोग आवी उत्पन्न थए थके परिसह सहे परंतु ते परिसह सर्वे जीव सहे छे कोण मनुष्य वा कोण जानवर तथा ओसड वेसड साधुने पण करवां कह्यां छे ते साधु करे छे ने ते दुखनो निर्वाह समता राखीने करवो ते सर्वे निर्वाह करे छे कोइ उत्पातीओ होय ते हाय वराय करे परंतु रोगनुं आवखुं आवी रह्या वगर रोग जाय नहि माटे ए परीसह सहेवा थकी कांइ मुक्ति कहेवाय नहि तथा तृणफास परिसह केहेतां डाभ प्रमुख घासना संथाराना फरस कठण छे ते मुनि निर्वाह समताथी करे परंतु ते परिसह सेहेवा थकी मुक्ति मले ते तो

संभवे नहि, शामाटे जे कोली भिल प्रमुख घासमांज पड्या रहे छे, तथा जानवर पण घासमां बेसे उठे छे तथा खेतीवाला लोक शियालो आवे थके परालना ढगलामांज बेसी रहे छे माटे ए परिसह तो घणा जीवना सहेवामां आवे छे पण तेनुं कोइनुं कारज थयुं एवुं कोइना सांभल्यामां आव्युं नथी, तथा मल परिसह कहेतां जे शरीरमेल तथा परसेवो वले ते परिसह सहेवो, तो ते परिसह बंधिवान लोको राजद्वारे छे, जेने केद थयो त्यांथी मांडीने ज्यां सुधी केदमां रहे त्यां सुधी हजामत तथा नाहावुं तथा लुगडां धोवां ए सर्वे बंध छे तो ते लोकोने ए परिसह बराबरनो दिसे छे माटे जो ए परिसह थकी कारज सिद्धि थाय तो ते लोकोनी थवी जोइये परंतु आत्मस्वरूप ओलख्या विना कारज सिद्धि छे नहि तथा सत्कार परिसह कहेतां सन्मान पामवा थकी मनमां अभिमान न करे ते परिसह पण कपटी तथा लोभी पुरुष भली रीते सहे तथा गफलत मनुष्य पण सहे तथा जनावर मात्रने पण ए परिसह छे माटे मान पामवा थकी अभिमान न थयुं ते थकी कांइ अविनाशी सुख मले नहि अविनाशी सुख तो आत्मा निर्मल थये मले तथा प्रज्ञा परिसह कहेतां जे ज्ञाननुं विशेषपणे जाणवुं थाय तेनो मद न करवो ए परिसह जो न सहे तो केवल न पामे परंतु धर्म थकी भ्रष्ट न थाय, समकित तेनुं जाय नहि कदापि ते थकी अतिशे मद थइ जाय तो आकरुं कर्म उपार्जे परंतु समकित न जाय. जेम महारुस महातुस नामा मुनि पूर्वे ज्ञाननो मद घणो कर्यो. ते थकी आभवने विषे ते ज्ञाननुं आवरण उदय आव्युं तेथी अगियार अंग भण्या हता ते भुली गया परंतु समकित तथा चारित्र कांइ गयुं नहि. ने एज भवने विषे छे ते कर्मना उदयनो क्षय करीने केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया. तेम ए ज्ञानना मद करवाथी ज्ञाननुं

आवरण बंधाय माटेः ज्ञाननो मद न करवो. ते ज्ञानना बे भेद छे, व्यवहार ज्ञान तथा निश्चय ज्ञान, व्यवहार ज्ञान ते वैदक, ज्योतिष, राज्यनीति, शृंगारशास्त्र, कलाशास्त्र, अन्यमतिनां शास्त्र, ए सर्वे व्यवहार छे. तथा जैन शास्त्रना चार भेदछे ४ ते मध्ये गणि ताणु जोग कहेतां जे द्विप देवलोक प्रमुख जे लांबा पहोला पर द्विपआदे देइने मान बांधवुं, ते सर्वे गणिताणुजोग कहिये तथा धर्म कथानु जोग कहेतां जेने विषे धर्म करवा थकी पाम्या तेनी कथाओ कहेवी ते धर्मकथानुजोग, तथा चरण करणानु जोग कहेतां जे चरण शित्तरीना ७० बोल पंचमहाव्रत आदे देइने, तथा करण शित्तरीना ७० बोल पडिलेहण प्रमुख आदे देइने, एनो जे विचार एज चरण शित्तरी करण शित्तरीनुं जे कहेवुं सांभलवुं तेने चरणकरणानुंजोग कहिये ते त्रणे जोग व्यवहार छे, त्रणे पुन्य प्रकृतिना हेतु छे, तथा चोथो द्रव्यानुजोगकेहेतां जे द्रव्य गुणने पर्यायनो विचार नयनिक्षेपासहित स्याद्‌वाद जाणवुं, ते केहे॰ वुं सांभलवुं, तेने शुद्ध व्यवहार कहीये पण आत्मानो उपयोग मांहि- रमतो होय तो. नहि तो पूर्वना व्यवहारमां गणीये, अने तेज द्रव्य गुण पर्याय अभेदपणे ग्रहिने रमणता करे तेने निश्चय ज्ञान कहिये, माटे ए ज्ञान जे निश्चय ज्ञानना समजु तेने मद आवे नहि, कदापि कोइ कर्मना उदय थकी मद आवे तो संभाली लेवो ते धणीना आत्मानी सिद्धि थाय ते निःसंदेह जाणवुं. तथा समकित परिसह केहेतां जे समकितमां मुझावुं नहि शामाटे जे समकित छे ते अभ्यं- तर आत्मानी रमणतामां छे ने कदापि समजवामां बराबर न आवे तोपण सद्दहणा पाकी राखवी, पण मुझावुं नहि एटले समकित केहेतां श्रद्धानुं नाम छे, ते व्यवहार श्रद्धा देवगुरु धर्मने कहिये परंतु निश्चय श्रद्धातो खटद्रव्य नवतत्व नयनिक्षेपा प्रमुखे करीने

आत्म उपयोग सहित जे जाणपणुं तेने निश्चय श्रद्धा कहीए अथवा तेनुं जाणपणुं तेने न होय तो नवतत्व खट द्रव्य भावे करीने सद्दहवा एटले ए बावीशे परिसह कह्या.

शिष्यवाक्यः–हे भगवंत तमे केटलाएक परिसहनी मांहेली कोरे अंन्यमतिनो तथा ग्रहस्थनो तथा भिक्षुकनो तथा जानवरनो द्रष्टांत देइने ते परिसहमां मुक्तिनी ना पाडी परंतु ते जीव तो अज्ञान छे ते अज्ञानपणे जे करे तेनी मुक्ति शानी होय तथा परिसह परवशपणे सहे तेनी मुक्ति शानी होय, पण जे पोताने वशपणे संसारनां सुख छोडीने साधुपणुं लीधुं ने जाणीने परिसह सहे तेनी मुक्ति के मन होय ए अमारा मनमां मोटी शंका छे.

गुरुवाक्यः–तें जे कह्युं के संसार मुकीने निकल्या तेने परिसहथी मुक्ति जोइये ते वात एम नथी, जो परिसह थकी मुक्ति होय अने संसार मुकवा थकी मुक्ति होय तो जमालीए राजधानी छोडीने दिक्षा लीधी, अने परिसह पण जाव जीव सुधी मनुष्यना तथा देवना तथा तिर्यंचना उंचना ते सह्या परंतु अनंत संसारी थया पण मुक्ति थइ नहि.

शिष्यवाक्यः—स्वामी एतो वचनना उत्थापक थया माटे संसार रखड्या परंतु आपणे तो कोइ हमणां उत्थापक तो छे ज नहि माटे तेनो परिसह धर्ममां केम न गवेस्यो.

गुरुवाक्यः—हे भद्र तरणाना चोरने शुळीनो हुकम थाय त्यारे जे करोडो धननो चोर तेने सो दंड देवाय? तो तेनो दंडतो हवे कांइ संभवतो नथी शाथी के तरणा साटे शुळी थइ, ने शुळीथी अधिक दंडतो बीजो कांइ संभवतो नथी तेम इहां जमाळी तो एक मात्रानो चोर छे केमके भगवाने कह्युं के "करे माणे करुं"

एटले करवा मांड्युं तेने कर्युं कहिये ने जमालीनुं केहेवुं ए छे के "करुं माणेकरुं" एटले काम पुरुं थइ रहे त्यारे कर्युं कहिये एटलुं एक मात्रा वचन फेरव्युं तेथकी अनंतो संसार वधी गयो तो अहियां तो हालना समाने विषे तो सर्व सूत्र उथाप्यां छे केमके मांढेथकी तो एवुं कहे छे के कानो मात्र उथापवो नहि एनो विस्तार सिद्धांत सारोद्धारथकी जाणजो. हाल ने सभे अहिंज प्रवर्त्तन छे ते घणुं के आवश्यकनी टिकाथकी छे परंतु सूत्रने मलतुं कोइक वचन छे ते समजु होय ते विचारी जो जो प्रत्यक्ष सूत्रने उथापीने आवश्यकनी टिका मानीए छिए तथा हालना स्तवन सजाय मानीने पण सूत्रने उथापी नांखीए छीए तेने हवे शो डंड ठरे ? अनंतो संसार तो जमालिने कह्यो ने अहियां तो कांइक उथापवानुं लख्युं रहेतुं नथी माटे ते पुरुषमां ते ज्ञानी पणु शुं जाण्युं माटे ए पण परीसह सहेते सर्वे अजाणज छे, जेम अन्य दर्शनना भेख धारी परिसह सहे छे तेम ए पण सहे छे ए २२ बावीश परीसह छे ते शाता अशाताना पक्षमां छे माटे ए बावीश परिसह सहेवाथकी कांइ मुक्ति थाय नहि ने तेने कांइ संवर कहेवाय नहि शामाटे जे बाह्य द्रष्टि व्यवहारवाला तेने संवर माने, परंतु निश्चयथकी विचारी जोतां आश्रवज छे ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता तेने निश्चय संवर कहिये एटले जेने आत्मानी रमणता होय ने परिसह सहेते थकी मुक्ति थइ, तो ए कांइ परिसहना जोरथी मुक्ति पाम्यो नहि एतो ज्ञानना जोर थकी मुक्ति पाम्यो अहियां कोइ वीर स्वामीनो द्रष्टांत देशे जे घणा परीसह सह्या तेनुं केम ? तेनो उत्तर जे एमने कर्म उदय घणां हतां तो घणा परिसह थया परंतु तेथकी केवलज्ञान तो पाम्या नथी, ते तो शुकलध्यानना बीजो पायो एकत्व भावज्ञान विचारतां केवलज्ञान पाम्या माटे अहियां परिसहनुं परिबल जाणवुं नहि, जो परिसहथकी

केवलज्ञान होय तो धनोकाकंडी तथा मेघकुमार प्रमुख घणा साधुये परिसह सह्या पण कांइ केवलज्ञान पाम्या नहि; तथा श्रीमल्लिनाथ स्वामी दिक्षा लेइने तरत केवलज्ञान पाम्या त्यां कांइ परिसह थयो नथी माटे मुक्ति तो ज्ञानध्यानमां छे ते कांइ बीजी वस्तुमां छे नहि ए वातमां संदेह राखवो नहि.

हवे दश विध यति धर्म कहिये छिये ते मध्ये प्रथम क्षमा धर्म, क्षमा केहेतां समपरिणाम एटले जडनुं धर्म ते उपर रागद्वेष न राखे आत्मस्वरूपमां रमे तेने क्षमा धर्म ते आत्मीक कहीये ते विनानी जे समता छे ते पूर्वे कह्यो बावीश परिसहना अधिकारने विषे ते प्रमाणे जाणवी.

हवे बीजुं मार्दव धर्म केहेतां मद अहंकारनो त्याग ते पण पुर्वे कहेलुंज छे तो पण इहां जरा देखाडीए छीए के आठ प्रकारनो मद छे ते मध्ये प्रथम कुल मद केहेतां जे पोतानो पक्ष ते एवुं विचारे के अमे आवा कुलना छीये तेने मद कहिये, परंतु ते मद न करे तथा कांइ आत्मानो धर्म प्रगट न थाय शा माटे के एने विषे कांइ आत्म रमणता छे नहि एतो लोकमां निर्मानी पुरुष केहेवाय कदापि जो आत्म स्वरूपनी रमणता होय तो एवुं विचारे के तारुं कुल एके छे नहि अने कुल ते चार गतिने विषे लाधे, अने ते चार गतिमां तुं एक कुलमां उपन्या विना रह्यो नथी माटे इहां कीयुं कुल तारुं गणाय एमां कोइ तारुं कुल नथी, एमां एक आत्मीक धर्म तारुं छे ते तुं सांभल एटले तेने उंच नीच मध्यम कोइ विचारवानो ते धणीने न रह्यो तेने कुल मद तज्यो कहिये तेने धर्म कहिये तथा बीजो जातिमद केहेतां मातानो पक्ष एटले मातानुं कुल ते पोतानी जात केहेवाय तेनो विचार पण सर्वे कुलनी परे जाणवो, तथा त्रीजो मद ऐश्वर्य कहीए ते ऐश्वर्य मद केहेतां ठक-

राइनो मद त्यां पण जे एवुं विचारे जे आ राज्य ऋद्धि ते छे ने नथी एवुं विचारीने मद न करे, ए कांइ धर्ममां नथी ए पण संसार व्यवहारमां छे हवे जे पुरुष एवुं विचारे जे अनंतो काल थया संसारमां भटकतो राजा ऐश्वर्य प्रमुख थयो तथा तेओनो दास पण थयो माटे ए ऐश्वर्य पणुं ते तुं नही ए तो पुन्यनी प्रकृतिना जोरथी पाम्या छे ने ते पुन्य ते जड छे ने तुं तो चेतन छे ते ए जडनी ठकराइथी तारी कांइ कारज सिद्धि थइ नहि ज्यारे तुं तारी आत्म शक्तिये करीने मुक्तिनो ठाकोर थइश ए ठकराइ तने सुखदाइ थशे माटे आ ठकराइमां शुं तुं राचे छे एवी रीते जे विचारे तेने धर्ममां गणाय तथा चोथो बल मद एटले शरीरनुं बल पराक्रम तेथी घणा जीव अभिमानमां छाक्या रहे छे ने अमो जेवो कोइ बलीयो छे नाहि एवो मद न करवो, भलाभली पृथ्वि छे एक एकनाथी बलीया होय एम विचारीने जे मद न करे ते पण व्यवहार छे हवे जे धणी एवो विचार करे जे अहो चेतन तुं अनंत शक्तिनो धणी थइने जडनी तुच्छ शक्तिमां शुं राचे छे तुं तारी शक्ति प्रगट कर के जेम तुं अक्षय सुख पामे तो तारी शक्ति केटली छे एक समे चौद राज्य चाल्यो जाय एवी अत्यंत शक्ति छे ते शक्ति तारी तुं प्रगट कर ने कर्म रूप शत्रुने जीत ने जडरूप बंधीखानाथी छुटतो तारी शक्ति लोकमां वखाणवा जोग थाय, ने तुं लोकने पूजवा सेववा लायक थाय एम विचारीने जेने माननो त्याग थयो छे तेने धर्ममां गणीये, पांचमो धन मद, धन पामीने मद न करवो केमके अथिर पदार्थ छे माटे मद करवो नहि एवो जे विचार ते व्यवहार हवे जे धणी पोताना आत्मा थकी विचार करे के अहो चेतन आ तो जडनो खजानो छे सात धातु नवरत्न ते सर्वे पृथ्विकायनुं दल छे ते कांइ

आत्मीक वस्तु नथी तेनुं पामवुं ते पूर्वना पुन्यना जोग थकी पामे, ने आभवने विषे जेनो लाभा अंतराय तथा भोगा अंतराय प्रमुखनो जेने क्षय उपसम थयो होय ते धगीने मले ने ते धगी भोगवे. परंतु हे चेतन ! ए कांइ आत्माना भोगमां आवे नहि, ए तो जडना भोगमां आवे छे. आत्मा तो ज्ञानदर्शन चारित्रनो भोक्ता छे माटे एवुं धन धान्यादिक पामीने मूर्छा न राखवी, तथा मद पण न करवो तेने धर्म कहिये तथा रूपमद, रूप कहेतां जे शरीरनो वरण सारो होय, घाट सारो होय तेनो कांइ मद न करवो केमके एतो दैवोगति छे, ए कोइने वश नथी एम जाणीने मद न करवो ते व्यवहार, हवे जे आत्मस्वरूपथी विचारे जे हे चेतन ! अनंताकाले अनंतां शरीर तें बांध्यां ते स्वरूपवान तथा कुरूपवान, सुघाट वा, वे घाट, तेमां कया रूप घाटने वखाणे छे, ने तेनो मद करे छे, ने कीया रूप घाटने तुं नखेदे छे, पण विचार. हे चेतन ! ए शुभाशुभ पुन्य पापनी प्रकृतिओ छे ते सर्वे नाम कर्मनो भेद छे, माटे कोइए शुभ वर्ण, शुभगंध, शभरस, शुभफरस, वधुं पूर्वं उपार्जेलुं ते धगी अहियां सारुं वर्ण, गंध, रस, फरस, पाम्यो जेणे पूर्वे अशुभ वर्ण, रस, गंध, फरस, उपार्जेला ते अशुभ पाम्यो, परंतु ए कांइ आत्माना घरनी ऋद्धि नथी, एनो जडनी ऋद्धि छे तोए पण ए शुभाशुभ रहेवानुं नथी एतो अंते विणसी जवानुं छे, माटे ए वस्तु उपर राचवुं माचवुं नहि, एक आतमीक स्वरूपने विषे राचवुं माचवुं. तथा सातमो ज्ञानमद ते न करवो तेनो अधिकार पूर्वे परिसहना विचारमां कीधेलो छे. तथा आठमो तप मद, तपनो मद न करवो, तेनो विचार आगल कहेवाशे एटले ए आठ मद करीने रहितने मार्दवधर्म कहिये २ तथा त्रीजो आर्जव धर्म कहेतां जे सरलतापणुं एटले कपट नहि करवुं. जो संसारादिकने विषे कपट करे तो अनं-

तांकर्म उपार्जे, तो जे धणी धर्मीपुरुष कहेवाय तेने दंभ नहि राखवो. एटले दंभ सहित पुरुषनुं करेलुं जे धर्म लेखे आवे नहि, दंभ समान जगतमां बीजुं पाप नथी, सर्व धर्मनो नाश करता ए दंभ छे माटे दंभ न राखे तेने आर्जव धर्म कहिये ३. हवे चोथो मुत्ति धर्म कहेतां निर्लोभपणुं एटले आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, प्रमुखनो लोभ नहि राखे, अने लोभ राखे तो साधुगुण रहे नहि, ए सर्वे व्यवहार परंतु आत्माथकी एवो विचार उठे जे अहो चेतन! तारे शुभाशुभ कारज न करवुं. शा माटे के सर्वे पुद्गलीक वस्तु छे एम विचारीने शुभ कारजनो निषेध करे एटले पुन्यनां काम करे नहि, पुन्यनी वंछा पण करे नहि. जे धणी पुन्यनी वंछा करे तेणे साधुपणुं लीधुं पण ए संसारीज छे तेवारे कोइ कहेशे जे साधु थइने पुन्यनी वंछा कोण करे छे तेने कहिये जे तिर्थ जात्रा व्रत नियम तथा बाह्य तप तथा व्यवहार चारित्र तथा व्यवहारक्रिया इत्यादिकने विषे जे रच्या पच्या छे ते सर्वे पुन्यना इच्छक छे ने तेने आश्रवी कहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामी! जे परिग्रह प्रमुख राखे छे ते करतां तो ए साधु सारा छे.

गुरुवाक्य—परिग्रह राखे तेने साधु कहे, तेने मिथ्यात्व लागे शा माटे के वीतरागना मार्गमां तो निग्रंथ प्रवचन कहेवाय छे अने जे स्थानके निग्रंथपणुं नथी त्यां साधुपणुं पण नथी तेने कोइ साधु कहेशे अथवा साधु जाणीने वस्त्र पात्र आहार पाणीओसडवासड अथवा रोगी प्रमुख जाणीने जे एनी अनुकंपा पण करशे, ते अनंता भव रखडशे ते आवश्यक निर्युक्ति प्रमुख घणा सूत्रमां छे, ते जोइ लेजो माटे ए असंयतीनुं ओठु देवुं नहि अने जे निग्रंथ थइने साधु नाम धरावे छे. ने आत्मस्वरूपने ओलखता

नथी अने व्यवहारमां रच्या पच्या रहे छे ने लोकोने देवलोकादिक ऋद्धि देखाडीने बाळ जीवोने व्यवहारमां नाखे छे ते पोते पण अज्ञानी छे ने तेने पण अज्ञान प्रवर्त्तावे छे पोतानो पण संसार वधारे छे ने सामानो पण संसार वधरावी आपे छे ते पुन्यनी वंछा करवी नहि. एटले व्यवहारनी पण पुष्टि करवी नहि, एक आत्मधर्मनी पुष्टि करवी जे थकी आत्मा कर्म थकी छुटे तेवा शुद्ध व्यवहारनी तथा निश्चयनी प्ररूपणा करी सामाने समजाववो पण अशुद्ध व्यवहार तथा कल्प व्यवहारमां सामाने नाखवो नहि, शामाटे जे अशुद्ध व्यवहार तो अनादिकालनो चेतन करतो ज आवे छे एटले पुन्य पापनी करणी सदाय चेतनने छे, तेथी कांइ आत्मानुं कारज थाय नहि, तथा कल्प व्यवहारने विषे विखवाद घणो रह्यो शामाटे जे बहुजन कृत ग्रंथ टिका प्रमुख घणा, तेनुं मतु एकेनुं मलतुं आवे नहि तथा सिद्धांतनो पण एक रीतनो बांधो दिसतो नथी ते पण अनेक रीतो जुदी जुदी दिसे छे, तथा आजने काले स्तवन सझाय रास चरित्र प्रमुख घणा नोखा नोखा जणना करेला छे तेथी करीने आजना लोको ए कल्प व्यवहारमां पडया थका महा कर्म उपार्जे छे. लोकने विषे धर्मीनाम धरावे छे अने पोतपोताना मतनो ममत कदाग्रह छोडता नथी तेथी पोते पण अनंतां कर्म उपार्जे छे ने सामाने पण अनंतां कर्म बंधना कारणीक थायछे, माटे कल्प व्यवहार तथा अशुद्ध व्यवहारने विषे प्रवर्त्तवुं नहि, फक्त एक रागद्वेष प्रमुख मंद थइ जाय अने आत्मस्वरूपनी ओळखाण थती जाय एवो उपदेश करवो तथा श्रोतानुं पण कल्याण थाय ने वक्ताने पण श्रम लेखे आवे तेम पोताने पण शुद्ध व्यवहार तथा निश्चयमां रमण करवुं तथा पोते पुन्यनो ग्राहि न थाय फक्त एक पोताना आत्मानी मुक्तिरूप कारजनो कर्त्ता थाय, एवी रीते

समजीने जे चालवुं तेने चोथुं मुक्तिधर्म कहिये ४

हवे पांचमुं तपधर्म, कहेतां जे तप करवो ते वे प्रकारे छे, तेनो विचार आगळ नीर्जरा तत्वमां कहीशुं. ५ हवे छठ्ठो संजम धर्म, संजम कहेतां जे आत्माने संवर भावमां राखवो एटले पृथ्विकाय प्रमुख जीव अजीवनो जे संजम कहेतां हणवो नही तथा झुठुं बोलवुं नही तथा चोरी करवी नही तथा मैथुन सेववुं नही तथा परिग्रह राखवो नही तथा पांच इंद्रिने संवरवी तथा चारे कषायने टाळवुं. तथा त्रण दंडथी वीरमवुं इत्यादिक संजमना सत्तर प्रकार घणे प्रकारे थाय छे, परंतु ए सर्वे व्यवहारनयमां छे शा माटे जे ए काम तो अभवी तथा अज्ञानी पण करे छे माटे ए संजमथी आत्मानुं सार नथी, हवे जे आत्मानुं साररूप संजम छे, ते कहीये छीये. जे आत्माना गुण न हणवा, शा माटे जे ए गुणनी मुख्यता न होय त्यां सुधी मुक्तिनी आशा नही थाय कदापि कोइ कहेशे के आत्माना गुणने कोण हणे छे तेने कहीए के जे परभावमां धर्म मानीने बेठा छे ते आत्माना गुणना हणता छे, ते परभाव केहेतां पर जे जड तेना कर्त्तव्यने धर्म जाणे छे, तो जडतो जडना धर्मनो कर्त्ता छे पण कांइ आत्मिक धर्मनो कर्त्ता नथी एटले जेटला बाह्य व्यवहार पुन्य पापनी करणी तथा व्यवहार संवर तथा व्यवहार निर्जरा ए सर्वे जडनी करणी छे ते जडनी करणी ज्यां सुधी मोह रहे त्यां सुधी आत्मानुं रमण सुखे थाय नही, अने आत्मरमण थया वगर धर्म कोइ दिन थाय नही ते माटे नीज स्वरूपनी रमणता करवी, अने श्रीभगवतिजीमां.

॥ आयासंजमे. ॥

एवो पाठ छे माटे आत्मा छे तेज संजम छे तथा सत्य धर्म

सातमुं, सत्य केहतां जे जुठुं न बोलवुं, ते जुठुं छ प्रकारे करीने बोलाय छे, क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ हास्य ५ भय ६ ए छ प्रकारे करीने जे मृषा वचन केहेवुं तेनो त्याग ते व्यवहार सत्य थयुं. हवे निश्चय ओळखावीये छीये. निश्चे सत्यना वे भेद. आज्ञासत्य १ वस्तु सत्य २ प्रथम आज्ञासत्य कहीये छीये, आज्ञा केहेतां जे श्री वीतराग परमात्माए आज्ञा फरमावी ते प्रमाणे प्ररूपणा करवी ते प्रमाणेज वचननुं उच्चारण करवुं ते विना जे करे तेने आज्ञा असत्य कहीये ते शीरीते के जे परमात्माए हिंसामां धर्म कह्यो नथी, त्यां कोइ हिंसामां धर्म ठरावे तेने आज्ञा असत्य कहीये ते शीरीते ते कहीये छीये.

श्रीनंदी सूत्रमां एवुं कह्युं छे के दस पूर्व धरनां भाषेलां तथा बांधेलां जे शास्त्र तेने सूत्र कहीये तेथी ओछा ज्ञानवाळाये बांधेलां शास्त्र अथवा तेमनुं वचन ते सिद्धांतने मळतुं होय तो मानवुं अने सिद्धांतनुं वचन जे उथापे ते अनंत संसारी थाय एवुं त्यां कह्युं छे, परंतु दस पूर्वथी ओछा भणेलानुं जे वचन तथा बांधेलां जे शास्त्र तेने ग्रंथ कहेवाय, ते हइये बेसे तो मनाय, न हइये बेसे तो न मनाय. इहां केटलाएक कहे छे जे पंचांगी प्रमाण करवी तथा केटलाएक कहे छे के पांच गाथानुं स्तवन सझाय होय ते पण प्रमाण करवुं एवुं जे कहे छे, ते घणीये मिथ्यात्व प्रवर्त्ताव्युं, ने अज्ञाननो वधारो करयो शा माटे जे सिद्धांतना वचनथकी उपरांठो मार्ग जे प्रकरण प्रमुखवाळाए बांध्यो ते मार्गने मानतां थकां शुद्ध मार्ग संवरनो ते छूटी गयो. आश्रवनो वधारो थयो ने आज्ञा परमात्मानी रही नही, तेनुं कारण कहीये छीये. के परमात्माये श्रीभगवतीजी तथा उववाइ प्रमुखने विषे एवुं कह्युं छे.

॥ असहजइआदेवा ॥

इत्यादिक पाठ घणा छे ते त्यां जोजो. एटले

असहजइआदेवा

कहेतां कोइ देवतानी साहाय श्रावक न वंछे, तथा आवता भवना सुखनी चाहना न वंछे, ते श्रीठाणांगजी प्रमुखथी जाणजो. तो इहां तो भवोभवनुं मागवुं प्रत्यक्ष दीसे छे, ने श्रावक प्रतिक्रमणादिकने विषे देवनी साहाय मागे छे, तथा साधु पण मागे छे तथा साधु देवी देवलांना आगळ हाथ जोडी विनय सहित वांदवुं पूजवुं करे छे अने सूत्रे तो श्रावकने पण ना पाडी छे, तो साधुने तो हा शानी होय ? अने साधु ते पंचपरमेष्ठीमां परमेश्वर छे, ते पद पोतानुं खोइने देवी देवलांनो दास थाय छे अने सूत्रकारे तो भगवान कहीने बोलाव्या छे, तथा सूत्रमां साधुने ग्रहस्थनी संगत करवानी साफ मना छे अने इहां तो साधु ग्रहस्थ साथे रच्या पच्या थइने रहे छे, अने पोतानी मतलबनी वार्त्ताओ प्ररूपाय छे तथा प्रकरण प्रमुख जे मानवां तेने पूछीये जे कर्त्ता धणी केटला पूर्व भणेला हता ते वारे कहेशे जे पूर्वतो कांइ भण्या नहोता, ते वारे कहीये के तमे शा थकी एनुं वचन मानोछो, तेवारे महा कोप करीने बोले, ने एवुं कहेके शुं तम जेटलुं ए नहोता भण्या. कोइ शास्त्रमां एवुं दीठेलुं हशे त्यारे लावेला हशे, एवो उत्तर आपीने प्रत्यक्ष आ सूत्रना तथा पूर्वधरना करेला ग्रंथना वचन उथापे अने अंधकूवारूप जे वचन तेमणे कीधुं हशे ते कोइक शास्त्रे दिठुं हशे एवा वचननो पार केम पामीये ? प्रत्यक्ष सिद्धांत प्रमुखने विषे देखीये छीये ते खोटुं करीने आजना पंडितो असंजति, महा आरंभ परिग्रहना भरेला स्त्रीओना लोलुपी तेवानां करेलां स्तवन स-

ज्झाय प्रमुख ते मानवामां केम आवे ते जे माने तेने आज्ञा असत्य थाय. कदापि कोइ कहेशे के ए असंजति व्रतवाला नथी एटले अव्रती छे, तो ए पण सत्यप्ररूपक छे एवुं कहे छे ते महा मृषावादि छे, शा माटे जे पोते कुमार्गे चाले ने सामाने सुमार्ग बतावे, ए वात तो भासनमां आवे नहि, अने ते धणी समार्ग बतावे तो तेने धन मले क्यांथकी अने ज्यां धननुं उपार्जवुं छे त्यां मृषावाद तो प्रत्यक्ष छे, अने परमात्मानुं एज वचन छे जे निग्रंथ विना बीजानुं वचन अनर्थकारी होय.

उक्तंच:

श्री ज्ञाता तथा भगवती प्रमुख बहु सूत्रने विषे जे पाठ छे ते लखीये छीये.

॥ समणसभगवहोमाहावीरस अंतेएधमंसोचा निसमंहठतुठाए समणभगवंमाहावीरं तीखुतोआयाह- णंपयाहणंकरीएकरीए वंदीअनमंसीअएवंवीआसीस दहामीणंभंते नीगंथंपावीएणं सदहेमाणेपतीअमाणे रोएमाणेफासेमाणे अभुठीओभीणंभंते नीगंथंपावीएण एवंमएभंतेअवीतहमएइछींअमेयं पडीइछीधं मयंइछी- अंपडीइछीयंमयं सेसाओअनथमुवाओ ॥ इत्यादिक

पाठ घणा सूत्रने विषे छे माटे निग्रंथनुं वचन सदहवुं ते नो अर्थः—हवे समणो भगवंत केहेतां श्रमण भगवंत श्री माहावीर स्वामीनी पासे जे जे पुरुषे धर्म सांभल्यो ते ते पुरुषने हरख संतोष घणो उपन्यो. हृदयने विषे आणंद घणो थयो तेणे उठीने भगवंतने त्रण प्रदक्षणा देइने वांदी नमस्कार करीने विनय

सहित वे हाथ जोडीने एवुं केहे के सद्दहूं छुं भगवंत एटले भगवंत पद आगळ ए पदमां सर्वे ठेकाणे जोडवो हवे सद्दहूं केहेतां जेमने श्रद्धा वेठी एक निग्रंथना वचन उपरे, ते नीग्रंथना वचननी प्रतीत छे, तेज वचन मने रुच्युं तेज वचन हूं कायाए करीने फरसुं एज निग्रंथनां वचन करवाने वास्ते उभो थयोछुं, ते निग्रंथ प्रवचन निश्चय छे, ए कोइ काले जुटुं ना थाय ए वचन अनंत इष्ट कहेतां वल्लभ छे, एहीज वचन वारंवार हूं एने इच्छुंछुं. एहीज वचन इछुं पडीछुं, अवर जे निग्रंथ विनानां जे वचन ते अनर्थनुं मूल छे ते हुं न सद्दहुं यावत् हुं एने इच्छुं पडिच्छु नही इत्यादिक पाठे साधु अथवा श्रावकना अधिकार छे त्यां ए लाग्या छे माटे त्यांतो निग्रंथ विनानुं वचन खप लाग्युं नही अने अनर्थनुं मूल कह्युं, अने तमे तेने सत्य प्ररूपक बतावोछो ते तमने मोटुं अज्ञान दिसे छे, शामाटे जे भगवाननी आज्ञा थकी उपरांठुं छे, अने जे प्रमाणे भगवाननी आज्ञा छे ते प्रमाणे वचन वोले तेने आज्ञा सत्य कहीये वस्तू सत्य केहेतां जे द्रव्य गुणने पर्याय, जे जेना छे ते तेमां कहे तेने वस्तु सत्य कहिये तेना त्रण भेद छे द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ हवे द्रव्य कहेतां जे आत्मद्रव्य अरूपी निराकार तेने कोइरूपी अथवा मूर्त्तिमाने तेने वस्तु असत्य थाय, तथा आत्मान गुण जे ज्ञान दर्शन चारित्र प्रमुख छे, ते थकी उपरांठा पु आश्रव थकी उत्पन्न थया, लायकी चतुराइ प्रमुख तथा व्यवह संवर क्रिया तप प्रमुख तथा ते थकी उपरांठा पाप आश्रवना गु तेज आत्माना करीने माने तेने वस्तु असत्य कहीये. केमके ते जर ना गुण आत्मामां छे नही ने पुन्य पाप आश्रव एतो जड छे आत्मा चेतन छे माटे वेउना गुण भिन्न भिन्न जूदा जूदा छे ए रीते माने तेने वस्तु सत्य केहेवाय तथा आत्माना पर्याय जे

गुणनी हानि वृद्धि तथा अग अवगाह, अव्याबाध, आदे देईने अनंता पर्याय छे ते थकी उपरांठा जे वर्ण, गंध, रस, फरस, स्व-स्थान जे आत्माना पर्यायमां गणे अथवा नर नरकादिक गति जे पर्यायमां गणे ते पण वस्तु असत्य छे.

शिष्यवाक्यः—स्वामी ! नरनरकादिक गति तो सर्वे पर्यायमां गणे छे, तमे असत्य धर्ममां केम कही.

गुरुवाक्यः—हे भद्र ! जे नरनरकादिक गति ते जीवना पर्याय-मां गणीये छीये, ए ते कर्मपर्याय आश्रीने छे ने कर्मपर्याय छे ते जड छे माटे ए असत्यज छे, स्वभावपर्याय जे गणवा ते सत्य छे एटले सत्यधर्म कह्युं. ७ हवे आठमुं शौचधर्म कहीये छीये. एटले शौच कहेतां जे पवित्रपणुं ते पवित्रपणुं केटलाएक एम कहे छे जे जल तथा माटी तथा दर्भ तथा अग्नि प्रमुखथी पवित्र थाय एवुं कहे ते अज्ञानी छे शा माटे के कांइ जल प्रमुखथी पवित्र थाय नही एतो शरीरने बाह्यथकी पवित्र कर ते पण अणसमजुने मते, पण समजुने मते थाय नही त्यां कोइ कहेशे के बाह्यथकी पवित्र केम न थाय ते तो धोवा प्रमुखथकी थाय छे, तेने कहीये के जो एना थकी पवित्र थतुं होय तो कोई पुरुषनुं मोहोढुं एठुं छे ते पुरुषने माटी प्रमुख मोढामां घसावीने पाणीना सो वर्से कोगला करावीये पछी ते धणीना मोढानो कोगलो वीजा पाणीना भाजनमां नंखा-वीये ते पाणी त्रीजा भाजननुं कोई पीये ते वारे कहे के न पीये एवुं बोले त्यारे कहीये के शुं शुद्ध थयुं ते एटला एटला पाणीना कोगळा कराव्या तथा माटी प्रमुखे करीने घसाव्युं तोय पण तेना मोढानो कोगलो एठोनो एठो रह्यो त्यारे तमाराज शास्त्रने विषे पांच प्रकारनो सौच कह्यो छे.

एक तो सत्य बोले तेने पवित्र कह्यो छे, तथा सर्व जीवनी

दया पाले तेने पवित्र कह्यो छे, तथा पांच इंद्रीने जे पोताने वश राखे तेने पवित्र कह्यो छे तथा क्षमा सहित तप करे तेने पवित्र कह्यो छे, ने पांचमुं जल पवित्र कह्युं छे, माटे जलथकी कांइ पवित्र थाय नही, तथा चार ए सत्य वचन प्रमुख कह्यां ते पण व्यवहार पवित्र छे ए कांइ निश्चे पवित्र कहेवाय नही, तथा कोइ कहेशे के भगवाननुं नाम लेइये एटले मुख पवित्र थाय तथा मनमां भगवाननुं स्मरण करीये एटले मन पवित्र थाय, तथा कायाये करीने भगवाननी शेवा भक्ति करीये एटले काया पवित्र थाय, ते पण व्यवहार छे ते कांइ निश्चे नथी ए धणीने कांइ पवित्र कहेवाय नही. हवे पवित्रपणानी ओलखाण करावीये छीये. जे कायाथकी पवित्र कोने कहीये. जे शुभाशुभ आश्रवनुं काम करे नही तेने काया पवित्र कहीये तथा वचनथकी पोताने आश्रव लागे अथवा कोइ जीवने बाधा पीडा उपजे एवुं वचन बोले तथा मन पवित्र कहेतां जे मनने विषे आहट्ट दोहट्ट ध्यान ध्यावे नही, सदाय एक आत्मस्वरूपनो उपयोग तथा द्रव्य गुण पर्यायनी रमणता परभावत्यागी स्वभावभोगी एवी रीते जे मनने विषे ध्यान प्रवर्त्ते तेने निश्चे सौच कहीये, एटले सौचधर्म देखाडयुं हवे नवमुं आकिंचनधर्म कहेतां जे सोनुं १ रुपुं २ तथा त्रांबु ३ तथा कलाइ ४ तथा जसत ५ तथा सीसुं ६ तथा लोढुं ७ तथा माणेक ८ तथा हीरा ९ तथा पानुं १० मणी ११ तथा पुखराज १२ तथा लसणीया १३ तथा मोती १४ तथा परवालुं १५ प्रमुख अनेक वस्तु ते परिग्रह कहीये. ते वस्तुनो जेने त्याग तेने आकिंचनधर्म कहीये ते सर्वे व्यवहार छे. निश्चयथकी कोइ वस्तुपर स्नेह नही राखे. सचित अचित मिश्र पदार्थ ते सचित कहेतां नरनारी उपर स्नेह नही राखवो, अचित कहेतां धनधान्य पात्र प्रमुख वस्तु उपर स्नेह न राखे, मिश्र कहेतां

गाम नगर उपर स्नेह न राखवो, एटले स्नेहलता ते अभ्यंतर छे ते स्नेहलतानो जेने क्षय उपशम थाय तेने राग द्वेषनो क्षय उपसम थयो कहीये, ने जेने क्षय थाय तेने राग द्वेषनो क्षय थयो कहीये. एम जेनो रागद्वेष गयो तेने अभ्यंतर आकिंचनी कहीये तेने निग्रंथ पण कहीये एटले आकिंचन धर्म नवमुं कह्युं हवे दसमुं ब्रह्मचर्य धर्म कहीये छीये तेना नव प्रकार छे तेनी वीगत मन १ वचन २ काया ३ हवे मनथकी पोते मैथुन सेवे नही तथा सेवावे पण नहीं तथा सेवताने भलो जाणे नही, तथा वचनथकी मैथुन सेवे नहीं सेवरावे नही सेवताने भलो जाणे नहीं; तथा काया थकी मैथुन सेवे नहीं तथा कोइ पासे सेवरावे नहीं तथा कोइ सेवतो होय तेने भलो जाणे नही, एम ए नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पाले तथा बीजे प्रकारे पण नव भेद छे, तथा नव वाडसहित पण पाळवुं तेने ब्रह्मचर्य व्रत कहीये एटले दसविध यतिधर्म पण कह्युं. हवे बार भावनानो अर्थ लखीये छीये एटले भावना छे ते भाव रूपज छे शामाटे के एने विषे कशी व्यवहार थकी वस्तु करवानी नथी ए सर्व आत्म थकी विचारवानुं छे ते आत्माने घणुं हितकारी छे हवे प्रथम भावना अनित्य एवे नामे तेनो अर्थ कहीये छीये.

हवे जे पुरुष आत्मार्थी होय तेनो एवो भाव आत्माथकी उठे तेवारे एवुं स्वरूप विचारे के अहो संसार अनित्य छे एमां कांइ पदार्थ रहेवानुं नथी जेवो डाभनी अणी उपर पाणीनो बिंदुवो केटली वार टके तेवो अथिर संसार जाणवो, तथा जेवो इंद्रधनुष चोमासामां आकाशे थाय छे तेनो रंग केटली वार टकवानो तेवो आ संसार अनित्य जाणवो एटले आ सर्वे जे संजोग संसारने विषे मल्यो छे ते काइ रहेवानो नथी तथा कर्तव्य वस्तु जेटली छे एटली सर्वे विनाशीक छे जेम वीजलिनो झब्कार थइने नाश थाय तेम

ए वस्तु सर्वनो नाश थवानो छे जेम इंद्रजालथकी कांकरानो रू-
पिओ करे परंतु ए रुपिओ कांइ काम लागे नहि, तेम आ संसारनुं
सुख ए कांकराना रुपिआ बराबर छे ए कांइ सदा रहे नहि अ-
थवा जेम स्वप्नाने विषे शुभ वा अशुभ देखे परंतु आहियां कांइ शुभ
अथवा अशुभ नथी एतो जाग्यो नथी त्यां सुधी एवुं छे, जाग्यो
एटले कांइ छे नहि एटले ते स्वप्नानी वात उपरथी मनमां कांइ
हरख शोक थाय नहि तेम संसारना सुख दुःख उपरथी हरख शोक
करवो नहि, ए पण अनित्य पदार्थ छे तथा जोबन पण अनित्य
छे ए पण च्यार दहाडानो चटको कहेवाय. जेम ठार एटले झाकल-
नो तरे पृथ्वि उपर केटली वार रहे? सूरज न उग्यो त्यां सुधी
तेम ए जीवन पण त्यां सुधी रहेवानुं ए पण झाझा दिवस टके
नहि तथा कोइ रांक माणस साथे स्नेह कर्यो ते रांक बिचारो
आपणुं शुं कारज करवानो हतो, तेम ए जोवनथकी पण कांइ सारुं
कारज नीपजे नहि, माटे हे चेतन! तुं ताहारा आत्मामां रमणता
कर. शा माटे के ए अनित्य पदार्थ ए जोबन ते पामीने मदन क-
रवो तथा धन संपदा राज्य ऋद्धि ए सर्वे पण कारमा छे एतो
जेवो एक समुद्रनो कलोल चडे ने क्षय थाय तेम ए धन ठकराइ
आवे ने जाय. जेम चारुदत्त तथा वनपाल प्रमुखना द्रष्टांत जोजो
जे एक भवमां केटलीवार पाम्या ने क्षय थयो एवो ए अनित्य
पदार्थ छे. ए कोईने त्यां स्थिर थइने रही नथी, जेवो संध्यानो रंग
ते सरखो एक पामे त्यारे बने परंतु एज रंग संध्यानो क्षण एकमां
क्षय थइने अंधारूं घोर थाय तेम ए धन संपदा क्षण एकमां वीण-
सी पण जाय एनो कांइ भरुसो थाय नही जुओ मुंज जेवो राजा
तेने पण अंते भीख मागवी पडी अने सुलीये रोपाणा, तो ए ऋद्धि
तो एवी छे तथा आज कोई शरीरनुं रूप रंग घाट घणो सुंदर

सारो दीसे, परंतु एने पण कांइ वीणसतां वार लागे नही, केमके जडनो स्वभाव सडण पडण विध्वंसण छे माटे एवा शरीर उपर मूर्छा न राखवी. जो सनतकुमारनामा चक्रवर्ती तेनुं रूप इंद्रे पण वखाण्युं ने देवता जोवा आव्या ते समे खेळ भरी काया हती तो-पण देखीने भेचक थई गया तेज जे वखत सणगार करी सभामां बेठो ते वारे ते रूप न रह्युं ते देवताना केहेण थकी तंबोल थुंकी जोयुं ने मांहे जीवडा दीठा तेज वखत ते चक्रवर्ती अनित्य संसार जाणी दिक्षा लेइ चाली नीकल्यो अथवा जेम कीर्तिधर राजा सुरजनुं ग्रहण देखीने संसारने अनित्य जाण्यो तथा जेम करकंडु राजा बळदने जराये पीड्यो देखीने काया प्रमुख सर्व अनित्य जाणी, तेम ए सर्व अनित्य पदार्थ उपर हे चेतन ! तारे कदी मूर्छा न राखवी तथा मनुष्यनुं आवखुं पण अथिर छे जेवो पाणीनो पर-पोटो क्षण एकमां नाश पामे तेम मनुष्यनुं आवखुं पण समजवुं. जेवो हाथीनो कान चपळ तेवुं अथिर आवखुं जाणवुं. वळी विचारी जो के अहो संसारने वीषे तीर्थंकर केवली गणधर चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बळदेव, इंद्र, देवता आदि देईने मोटा मोटा पराक्रमी पुरुष ते पण कोई इहां अमर थईने रह्या नही ए सर्वेनां आवखां आवी गयां एवुं आवखुं अनित्य जाणीने तथा धन जोवन काया पुत्र परिवार सर्व संजोग तथा कृत्रिम वस्तु ए सर्व अनित्य छे माटे ते उपर मम-ता न करवी एक नित्य पदार्थ पोतानो आत्मा अविनासी ज्ञान दर्शन चारित्रनो पुंज तेनुं अहोनीश स्मरण करवुं ए थकी अविचळ सुख मळे जन्म मरणना फेरा टळे एवी रीते पेहेली भावना चेतन भावे. १.

हवे बीजी अशरण भावना कहिये छीये एटले अशरण कहेतां कोइ शरणे राखवा समर्थ नथी, त्यां आत्माने एवी रीते भावना

भाववी जोइये. आ आवखुं तो अस्थिर जेम हथेलीमां जल केटलीवार रहे तेम ए आवखुं पण झाझीवार रहे नहि, ने समे समे आवखुं घटतुं जाय छे, डाह्या पुरुष होय ते विचारीने जुवे जे जेटलां वर्ष गयां एटलां तो मुवां एटले मुवां कहेतां जे फरी पाछां ना आवे तेने मुवां काहिये, ते जुओ जे बाल अवस्थाने विषे जे वर्णादिक हतुं ते तरुणावस्थामां नथी तथा जे बाल अवस्थाना भाव हता ते तरुण अवस्थामां नथी, तथा जे तरुण अवस्थामां वरणादिक हता ते वृद्ध अवस्थामां नथी, तरुण अवस्थाना भाव ते पण वृद्ध अवस्थामां नथी तो जे आगल गइ अवस्थाना जे भाव ते सर्वे मरी गयां, ए कांइ हवे पाछां आवे नहि अने जे रह्युं आवखुं बाकी ते पण समे समे घटतुं जाय छे माटे हे चेतन तुं चेत केमके कोइ पुरुष जो दश गाउ ग्रामांतरे जाय छे तोपण साथे संबल राखे छे तो तारे तो लांबी वाटे जावुं छे, अने बीजी जग्यामां ते संबल मलवानुं नथी.

शिष्यवाक्यः—स्वामी! तमे तो आश्रव ग्रहण करोछो जे संबल लेवुं ते तो पुन्य आश्रव छे.

गुरुवाक्यः—हे भद्र! अमे आश्रव नथी कहेता ने पुन्यरूप भातु बंधावता नथी परंतु अमे जे कह्युं जे संबल बांध, ते ज्ञान दर्शन चारित्रनुं आराधन कर, ते रूद्धि तने आगल चालशे अने एज सुखदाता छे, जो आश्रव ग्रहण करवानुं कहेता होत तो पूर्वे एवुं न कहेता के बीजी जग्योये भातुं नहि मले ते भातुं तो देवतामां तथा तिर्यचमां पण छे.

शिष्यवाक्यः—के जे तमे देवता तिर्यचने विषे पुन्यनुं कारण देखाडयुं तो शुं त्यां ज्ञान दर्शन चारित्रनुं आराधन नथी.

गुरुवाक्यः—देवताने विषे तो समकित सुधी छे, अधिक आराधन छे नहि, तथा तिर्यंचने विषे देश विरतीपणानां अगीआर व्रत आराध्यानो अधिकार छे, परंतु हाल कालमां तो कोइ एक अक्षरनो पण आराधक देखातो नथी कदापि कोइ कहेशे के अढी द्वीप बहार हशे ते वात तो सर्वथा खोटी छे अढी द्वीप बहार चारित्र धर्म छे नहि, कदापि कोइ कहेशे के तीर्थंकर केवली विचरे त्यां हशे तो ते वातनी अमथी ना तो कहेवाती नथी परंतु डाह्या पुरुषने विचारवा जेवी वात छे, केमके जो एक खेतरमां सो कलशी दाणा नीपजे तो जोडेना खेतरवालाने पाशेर पण नीपज्या जोइये, परंतु जोडेना खेतरमां तो एक दाणो नीपजतो दीठो नहि माटे डाह्या होय ते विचारी जोजो, एटले ते स्थानकने विषे कांइ ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण पदनुं आराधन नथी, अने सर्व विरती चारित्र धर्म तो मनुष्यने विषे छे, बीजी जग्योए छे नहि, ते माटे अमो ए कहुं के बीजी जग्योए छे नहि माटे ए संबल इहांज मलशे, माटे जेम भाथुं बंधाय तेम बांधी लेजो. तुं प्रमाद करीश तो आवखूं तो समे समे चाल्युं जाय छे अने काल तो कोइने छोडनारो नथी जेम बकरांने वाघ पकडीने लेइ जाय ने बकरुं वराडा पाडतुंज रहे तेम इहां काल लेइ जशे ते वखत तुजथी कांइ सधावानुं नथी अने कोइ एवो जोरावर नथी के तने काल पासेथी छोडावे. एक शरण फक्त पोताना आत्मानुं छे.

शिष्यवाक्य—शरण तो अमोये च्यार सांभल्यां छे ते मध्ये आत्मानुं शरण सांभल्युं नथी.

गुरुवाक्य—च्यार शरणां तें सांभल्यां ते तुं सांभल. जे प्रथम अरिहंतनु शरण कहिये छिये, ते अरिहंत तो शुद्ध द्रव्यार्थिकनये जोतां तो आत्मा एज अरिहंत छे कदापि कोइ कहेशे के अरिहंत

तो जे केवलि थया तेने कहिये, तेने कहेवुं के तें कहि ए वात ठीक छे, परंतु एवंभूतनये केवलि अरिहंत छे ते शरण करवा जोग छे परंतु ते कांइ अहियां आडा आवीने हाथ आपे नहि, ने जन्म जरा मरणना फेरा टले नहि, एतो आपणो ज आत्मा आत्म स्वरूपने विषेज रमशे अने पोताना कर्मरूप शत्रुनो क्षय करशे ते वारे पोते ज केवल ज्ञान पामीने अरीहंत थशे माटे ए आत्मानुं स्मरण छे ते सत्य छे. ने जे केवली अरिहंत विचरता छे तेनुं शरण ते व्यवहार छे, तथा बीजुं सिद्धनुं शरण ते पण ठीकज छे, व्यवहार छे शा माटे के तेमने फरीथी जन्म लेवो नथी त्यारे ए अहियां आवीने आपणने शी रीते तारशे तथा मेश्रीनी गोडे एवा बोल आपणामां नथी जे भगवाननी अकललीला छे ते एमनी इच्छा थशे त्यारे तारी लेशे ते तो रीत जैननी छे नहि तथा कोइ कहेशे के

तिन्नाणं तारयाणं

ए पाठ छे तेनुं केम तेने कहिये के ए पाठ छे ते उपमा वात छे पण कांइ तारवा समर्थ नथी तथा शास्त्रे एवुं पण कह्युं छे जे अरिहंत भव्य जीवने तारवा समर्थ नथी? मार्ग देखाडवाना कुशल छे तो अरिहंत समर्थ नहि, तो सिद्ध तो समर्थ शेना होय एज, परंतु सिद्ध पद तुं आत्माने समज, अति शुद्ध द्रव्यार्थक नये करीने मुल सत्ता स्वरूप आवरणना अभावथी जोइश तो तारो आत्मा सिद्ध परमात्मा छे तो तेज शरण थकी ताहारुं कल्याण थशे तथा त्रीजुं साधुनुं जे शरण, ते साधु जैन शुद्ध मार्गना चालवा वाला एटले आचार्य उपाध्याय सर्वे साधुमां आव्या ते शुद्ध मार्गवाला तेनुं शरण जे करीये ते पण पूर्ववत् व्यवहार छे अहियां कोइ कहेशे के ए तो उपदेशना दातार छे ते समकित ज्ञान चारित्र पमाडे तेने व्यवहार केम कह्यो? तेने कहियेके समकित ज्ञान चारित्र पमाडे

तें कांइ बहारथी आवतुं नथी ते तो आत्मामांथी प्रगट थाय छे, परंतु एवा उपदेशना दातार शुद्ध मार्गना देखाडनारा माटे तेनो उपगार घणो मोहोटो छे, कदापि असंख्याता भव सुधी तेनी शेवा भक्ति करीये तोए पण गुण ओशींगण न थइये परंतु उपदेश तो ते सर्वेने दे छे, पण ते निमित्त कारणरूप छे पण उपादान कारण रूप गुरु तो आत्मा छे, जो पोते सवलो परिणमे तथा धर्मनो खपी होय तेने उपदेश गुण लागे पण जे कांइ मिथ्यात्वना भरेला बोहोळ संसारी तथा कृष्ण पक्षीया तेवा जीवोने कांइ उपदेश लागे नहि, जेम जमालीने भगवंत तथा गौतम प्रमुख साधु पण घणा समजावनारा मल्या तो पण ते कांइ समज्यो नहि, तो उपदेशना देनारनुं शुं वले ? तथा अन्य दर्शनी प्रमुख घणा जीव भगवंत पासे आवीने प्रश्न पुछयां ने प्रश्नना उत्तर भगवंते दीधा पण कांइ तेणे मान्या नहि, तो भगवंत थकी ते तरया नहि ते अधिकार श्रीभगवती थकी जाणजो, माटे पोतानो आत्मा सवलो परिणमे ने पोतानुं धर्म प्रगट करवा चाहे ते धणी धर्म पामे आत्मा तेज साधु छे ते भगवतीजिमां कह्युं छे माटे तेनुंज स्मरण करवुं.

हवे चोथुं जे केवली भाषित धर्मनुं शरण कहेतां जे केवळीए भाख्युं जे देशविरती १ सर्वविरती २ तथा वीजे प्रकारे पण बे भेद कह्या छे, श्रुत धर्म तथा चारित्र धर्म तेनुंज शरण करवुं ते व्यवहार छे माटे केवळीए भाख्युं एवुं जे धर्म जे वस्तुनो स्वभाव तेनुंज शरण करवुं ते निश्चय छे एटले वीतराग भाषित जे धर्म ते आत्मस्वरूपनी रमणता, परभावनो त्याग तेहीज शरण ते सत्य छे. एटले आ संसारनी मांहेली कोरे पोताना ज्ञान ध्यान विना कोइ राखवा समर्थ नथी, एटले जन्म जरा मरणना फेरा बीजा थकी टले नही, जेम श्रीगौतमस्वामी भगवान श्री वीरस्वामीनुं

नाम तथा शेवाभक्ति अहोनिश करता हता, ने जे वारे भगवान श्री महावीरनुं निर्वाण थयुं ते वारे स्वपरनी रमणता थइ अने भगवंत थकी पोतानो आत्मा पोते जुदो दीठो ते वारे रागद्वेष मुकीने स्वसत्तामां प्रवेश थयो, एटले शुक्ल ध्यान पण आव्युं तेथी केवलज्ञान पाम्या अने मोक्षे पण गया ने जो " भगवान वीरस्वामी वीरस्वामी " करता होत तो त्रण कालमां पण मुक्ति थात नही माटे शरण ते पोताना आत्मानुं तेहीज सत्य छे वाकी सर्वे व्यवहार छे ते माटे हे चेतन पोताना ज्ञानदर्शन चारित्रनी रमणता करवी ते थकी संसारनो पार पामीश, अने जो तुं नही करे तो आ संसारमां तने कोइ राखवा समर्थ नथी, अने तुं जे आ संसारनी मोहजालमां गुंथाणो छे ते मोहजाल मिथ्या छे ए सर्वे आलपंपाल फोकटनो छे आ संसारनी माया सर्वे जुठी जाणवी, ते अमे संक्षेपथी कहीये छीये माता तथा पिता तथा स्त्री तथा पुत्र तथा भाइ तथा भावड सगांवहालां कुटुंब परिवार, ए सर्वे स्वार्थनुं सगुं छे, एमां कोइ तारुं नथी अने रोगादिक आवीने उपने थके अथवा आवखुं आवे थके ते कोइ सगांवाहालां छोडाववाने समर्थ नथी रोग कोइथी लेवाय नही, तथा काल थकी पण राखवा कोइ समर्थ नथी अने वेदना पोते भोगवे ने मारुं मारुं करतो जाय ते वारे नरकादिक गतिनां महा दुःख भोगववां पडे, अने जे पाप करीने पैसो कमाणा ते केटला होय ते भोगवे माटे पाप जे वांध्युं होय ते भोगववुं पडे ए सज्जननी पण कारमी सगाइ छे ए कांइ आ आपणा दूःखनो विभागी न थाय,

तथापीजोने प्रत्यक्षपणे जे दुवारकां जेवी नगरी कृष्ण जेवो वासुदेव वलभद्र जेवा वलदेव, अने भगवान नेमनाथ जेवा तीर्थंकर तेने माथे घणी, तोय पण जे वखत द्विपायनदेवे दुवारकांनो दाह

कर्यो ते वारे कोईथी रखाणुं नही, अने सर्वे नगरीनो क्षय थइ ग-
यो, अने कृष्ण वलभद्र बे भाइ माता पिताने लेइ नीकलवा मांडयुं
तोय पण लेइ नीकलायुं, नही ते पण ए नगरी भेगां क्षय थइ गयां
तो कोनुं शरण करवुं के जो वासुदेव वलदेव सरखा महा जोद्धा
ते थकी पण पोतानां मावित्रने रखाणां नही, ने महा कंगाल भीक्षु-
वंत बंन्ने भाइ चाली नीकल्या छप्पन कुलक्रोड जादवना परिवारनो
धणी तेने पण ए अवस्था थइ ते सर्व पोतानां कृत कर्म पोताने
नडे छे जुओके कोइनुं शरण इहां खप लाग्युं नहि, अने तम जेटलुं
तो ते चार शरण करवामां समजता हशे शामाटे के ज्यां श्री भग-
वान नेमनाथ स्वामीनो विहार घणा फेरा थयो छे तथा ते क्षेत्रे साधु
साधवीनो विहार पण घणो छे माटे तेणे शुं अरिहंतादिक शरण नहि
कर्यां होय परंतु कोइथी रखाणां नहि तथा रोहिणी देवकी प्रमुखे
तो तिर्थंकर गोत्र बांधेलां छे तो तेने शुं समज नहि पडी होय
परंतु पोतानां बांधेलां जे कर्म ते पोतेज भोगवे ए कोइ थकी दूर
थाय नहि एवुं जाणीने आत्म धर्मनी खप करवी तथा नवनंद पा-
डलीपुरमां थया तेणे नव डुंगरीओ धननी समुद्रमां करावी ते धन
त्यां रह्युं ने पोताने काल खाइ गयो माटे धनादिक वस्तु कोइ श-
रण भूत थाय नहि तथा सुभूमनामा आठमो चक्रवर्त्ति छ खंडनो
भोक्ता जेनी पासे पचीश हजार देवता शेवामां हता तोय पण सर्वे
सेना परिवार सहित समुद्रमां डुब्यो पण कोइ राखी शक्युं नहि
आवखुं आवी रह्युं त्यारे देव पण नाशी गया माटे आ संसार
एवो शरण रहित छे माटे ते संसारने विषे मूर्छा राखवी नहि शा
माटे के जन्म जरा मरण सदाय वांसे लागी रहेलां छे ते कोइने छो-
डतां नथी तो तने केम छोडी देशे ते माटे तुं तारा स्वभाविक ध-
र्मने विषे स्थिर था, परभाव दूरकर जेम तारा आत्मानुं कारज सरे,

एज एक शरण श्रुत छे बीजो कोइ संसारमां शरणे राखनार नथी २

हवे त्रीजी संसार भावना कहिये छीये एटले संसारनुं रूप केवुं छे ते सर्वे विचार्युं जोइये प्रत्यक्ष ए बधी वस्तु कारमी दीसे छे के जुओ आ संसारने विषे आपणो जे चेतन अनंतो काळ थयां परिभ्रमण करे छे ते सर्वे कर्मने वश रह्यो थको एटले कर्म केवां जोरावर छे के भलाभला मुनिने पण अगीआरमे गुण ठाणेथी पाछा नाखी आपे छे ने नित्य नवा संसारमां रूप ग्रहण करावे छे एटले विविध प्रकारनुं नाटक जीव पासे करावे छे माटे आवो मनुष्यनो भव सुगुरुनी जोगवाइ पामीने जो कांइ धर्मनी समज तने पडी होय अने जो धर्मनो खप होय अने अनेक विध नाटक संसारमां कर्यां ते थकी थाक्यो होय तो तुं आत्मस्वरूपनी खप कर हवे तें पुर्वे नाटक कर्युं ते भवनो संक्षेप देखाडिये छिये. प्रथम तो अव्यवहार राशी निगोदमां हतो ते कोइ अकाम निर्जराना जोरथी व्यवहार राशीमां आव्यो तोय पण अनंतीवार सुक्ष्म निगोदमां गयो तथा बादर निगोदमां पण अनंतीवार गयो तेमज प्रत्येकनी गतिने विषे पण एथ्विकाय सूक्ष्म तथा बादर, अपकाय सुक्ष्म तथा बादर, इत्यादिक चारे गतिने विषे अनंताकाळ थयां तुं भटके छे एवी गति कोइ नथी के तुं ते गतिने विषे न गयो होय तथा एवो वर्ण, गंध, रस, फरस, रुप, शब्द, स्वस्थान तुं न पाम्यो, एवुं कोइ दिसतुं नथी सर्वे पुद्गलना परमाणु तुं पामी चूक्यो छे तथा चौद राज लोकने विषे एवो कोइ आकाश प्रदेश नथी जे तुं फलाणी आकाश प्रदेशे जन्म तथा मरण कर्या विना बाकी रह्यो ते माटे अनंता अनंता पुद्गळ परावर्त्तन थया शुभाशुभ आगे भोगवतां तथा जन्म मरणादिक दुःख सेहेतां थकां गयां तोए पण तने हजु कांइ संसारनो भय लागतो नथी तो ए जोतां अहो चेतन तारुं

घणुं कठोरपणुं छे अने कोण ए संसारमां सुखीयो थयो ? जेणे ए संसार छोड्यो ते सुखीआ थया. जुओथावच्चा पुत्र महा ऋद्धिनो धणी बत्रीश स्त्रीओ जेने छे, ने भगवान नेमनाथ स्वामिनी देशना सांभळीने संसार खोटो जाण्यो ने संसारथकी विरक्त भाव थयो ते संसार छोडी चारित्र लीधुं पोताना आत्मानुं शुक्ल ध्यान ध्याइने केवल ज्ञान पामीने मोक्षे गया ते सुखीया थया. तथा अनाथी मुनि संसारथकी रोगनुं कारण पामीने विरक्त थया त्यार पछी श्रेणिक राजा मल्या ते वारे घणुंक संसारनुं सुख आपवानुं देखाड्युं तोय पण ते पासमां पड्या नहि ने सामुं श्रेणीक राजाने समकित पमाड्युं ते धणी सुखीया थया. वली संसारने विषे जे सगां वहालां छे तेनो पण नियम नथी जे एनुं एज सगपण रहे एकएक जीव साथे अनंतां सगपण थयां ते सिद्धांतमां कह्युं छे तथा विवरासहित जोवुं होय तो भुवन भानु केवलीना चरित्रमां जोजो, तथा यसोधर तथा यसोधरनी माता तथा यसोधरनी स्त्री तथा यसोधरना छोकरानां सगपण अन्योअन्य थयां ते यसोधरना चारित्रथकी जाणजो, तथा श्री ऋषभदेव स्वामीने श्रेयांसकुमारनां नव भवनां सगपण जुदी जुदी रीतथी थयां ते सर्वे श्री ऋषभदेव स्वामीना चारित्रथकी जाणजो इत्यादिक घणां शास्त्रने विषे घणा जीवोना अधिकारमां सगपणनो नियम रहेतो नथी, बहु वीपारित सगपण थाय छे ते माटे एवा असार संसारनुं स्वरूप विचारीने जेम ए संसारथकी छुटवानो विचार करवो ते संसारथकी छुटवामां एक ज्ञान दरशन चारित्र एज सुखकारी छे ते पोताना आत्मामांज छे तेने प्रगट करवुं ते शाथकी थाय के जो सुगुरु स्वपर समयना जाण, आत्मज्ञानी एवा पुरुषनी सेवा करीने तेनी पासे अध्यात्म ग्रंथ तथा द्रव्यानुंजोगना ग्रंथ सांभले ते सांभलवाथकी तमने ज्ञान प्रगटशे

ने ज्ञानथकी विज्ञान प्रगटशे यावत् मुक्ति मलशे, संसारनो छेह आवशे, सर्व कर्मनो नाश थशे, अनंत सुखना विभागी थशो, एवी रीते संसार भावना भाववी ए त्रीजी भावना.

हवे चोथी भावना एकत्व कहेतां एकाकीपणे छे एटले आ संसारने विषे पूर्वे कह्या जे भवांतर गति आदिकने विषे कर्या पणे त्यां एकाकी त्यां कोइ जीवनो सहचारी हतो नहि जीव एकलो सुख दुःख सर्व भवने विषे भोगवे छे ते माटे हे चेतन? अनंतोकाल एवो एकाकीपणे थयो, तोय पण हजी तुं ममता छांडतो नथी हजी तुं जाणे छे के सर्व संसारमां वस्तु छे ते मारीज छे, एटले धन धान्य पुत्र कलत्र सज्जन संबंधी तुं मारुं मारुं करी रह्यो छे पण ते कोइ तारुं नथी, तारो तो तुं हे चेतन एकज छे, अने जो प्रत्यक्षपणे ए सर्व संसारी मल्या छे ते सर्वे स्वार्थीया छे, स्वार्थ पुरो थाय त्यां सुधी ए सर्वे सगां जाणवां, स्वार्थ पुरो नहि थाय तो एज दुश्मन जाणवां, अने तारुं आहियां कोण छे तुं जन्म्यो त्यारे पण एकलो हतो, ते वारे कांइ सगां वहालां तथा धन माल साथे लेइने आव्यो नहोतो, तथा जइश ते वारे कांइ साथे लेइने जवानो नथी, ते सर्वे सगांवहालां धनमाल अहियां पड्युं रहेशे ने तारे एकलाने जवानुं छे, माटे खोटी ममता शावास्ते करेछे ते करतां प्रत्यक्ष विचारीने जो जे मोटा मोटा चक्रवर्ती ते पण छोडी-ने गया. एटले ब्रह्मदत्त नामा चक्रवर्ती छ खंडना राज्यनो भोक्ता चौदरत्न नव निधान चोसठ हजार अंतेउरि इत्यादिक सर्व-चक्रवर्तीनी ऋद्धिने विषे अत्यंत मुर्छीत हतो ने चित्र मुनिये घणो उपदेश कर्यो हतो तो ए पण तेणे मान्युं नहि उलटो तेने संसारमां नांखवानो उद्यम कर्यो पण ते तो आत्मज्ञानी पुरुष ते संसारने प्रत्यक्ष जुठो जाणे छे ते संसारमां केम पडे? अने ब्रह्मदत्तने

उपदेश न लाग्यो ते वारे मुनी विहार करीने गया अने ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती संसारना सुखनो अत्यंत रागी तेज भवमां आंधलो थयो ने अंते मरीने सातमी नर्के गयो पण ऋद्धि परिवार कोइ साथे गयो नहि तथा रावण लंकाधिपति त्रण खंडनुं राज जेने घेर, महा अभिमाननो भरेलो एवो जे पुरुष ते पण अंते रण-संग्रामने विषे मराणो अने मरीने नर्के गयो पण ए ऋद्धि परि-वार कशुंए खप लाग्युं नहि माटे एवो संसार अस्थिर छे ने आ-पणुं कोइ नथी आपणो तो एक चेतन छे बाकी सर्वे स्वार्थनुं छे जेम एक वृक्ष उपर सांज पडे हजारो जनावर भेगां थाय अथवा केटलांएक मांहे माला करीने रहेतां होय पण जे वारे ए वृक्षने माथे आपदा आवीने पडे एटले दव लागे अथवा कोइ कापवा आवे ते वारे सर्वे जानवर मुकीने नासी जाय एमज आ संसारने विषे, जीवने स्वार्थ होय त्यां सुधी सर्वे सगुं छे पण आपदा आवी पडे तेवारे कोइ भडुं न थाय तथा आवखुं आवी रहे तेवारे कोइ राखे नहि, माटे आपणे एकला आव्या ने एकला जवुं ते संसार उपर खोटी ममता शा वास्ते करवी. जेम नमीराजा पोताना शरीरने दाहज्वर रोग उपन्यो ते वारे स्त्रीओ बावनाचंदन घ-सती ते चुडानो खडखडाट घणो थतो शामाटे के एक हजार राणी हती ते सर्वे घसती ते प्रधानना कहेणथी अकेकी चुडी रा-खी तेथी राजाने सुख उपज्युं पछी प्रधानना कहेणथी राजा-ने मालम थयुं के राणीए अकेकी चुडी राखी छे तेथी खलभरा ट नथी माटे एकाकीमां सुख वृत्ति छे एम विचारी मन साथे एवो निश्चय कर्यो के जो मने रोग मटे तो हूं एकाकी विचरुं. तेमज प्रभाते रोग मटयो ने चारित्र लेइ एकाकी चाली नीकल्यो सर्व परिवार फीको थइने उभो रह्यो ते वारे गाममांथी नी-

करया पछी शक्रेंद्रे अगवार नोखां नोखां रूप करीने नमि राजानी परीक्षा करी पण संसार सामुं नमिराज ऋषिये जोयुं नहि, तथा वनमां श्री ऋषभदेव स्वामिना मंदिरने विषे चार द्वारे थइने चार प्रत्येक बुद्ध पेठा ते मध्ये करकंडुराज ऋषिश्वर पासे सोनानो खरपो खाज खणवाने राखेलो छे त्यां बीजा प्रत्येक बुद्धे कह्युं के साधुने कंचन शुं ? ते वारे त्रीजा प्रत्येक बुद्धे बीजा प्रत्येक बुद्धने कह्युं के तुं तारा स्वभावमां एकाग्रपणुं मुकीने बीजामां केम भले छे ते वारे चोथा प्रत्येक बुद्धे त्रीजा प्रत्येक बुद्धने कह्युं तुं वली एनामां केम पेसे छे तुं तारा स्वभावमां रमण कर. ते वारे चारे प्रत्येक बुद्ध एकत्व भावमां रमण करवा लाग्या तेथी केवल ज्ञान पाम्या ते अधिकार प्रत्येक बुद्धना चरित्र प्रमुख घणे ठेकाणे छे.

एम एकत्व भाव आत्मस्वरूप विचारवुं इहां गुण पर्याय पण जूदा न पाडवा गुण पर्याय छे, ते द्रव्यमांज छे अने गुण पर्याय द्रव्य विना ना होय अने गुणपर्याय विना द्रव्य पण न होय ते दृष्टांते करीने ओलखावीये छीये. जे घटने घटनो गुण जल धारणपणुं ते कांइ जूदुं नथी ज्यां घट छे त्यां जलधारण करशेज, ज्यां जल धारणपणुं त्यां घट छेज, माटे ए द्रव्यने द्रव्यनो गुण ते भेगोज छे, त्यां घटने घटना पर्याय जे रक्त तत्वादीक ते पण कांइ जुदा नथी, ज्यां घट छे त्यां वर्ण छे ने वर्ण छे त्यां घट छे, तेमज द्रव्यने विषे द्रव्यनो पर्याय जुदो नथी एटले आत्मा ते द्रव्य ज्ञानादिक ते गुण ते कांइ आत्मा थकी ज्ञानादिक गुण जुदा नथी ने जो ज्ञानादिक गुण जुदा कहीये तो आत्मा शानें कहीये माटे आत्माए ज्ञानादिक गुण अने ज्ञानादिक गुण ते आत्मा तथा आत्माने आत्माना गुण पर्याय जुदा नथी माटे गुण पर्याय सहित आत्मा, जेम

पटने पटनुं श्वेतपणुं तथा आधारआधेपणुं ते कांइ जुदुं नथी ए त्रण मलीने एक वस्तु थाय. कदापि त्रणमांथी एक न होय तो ए वस्तु पणं न होय. आहियां उपनय जोडीये छीये, जेम पट ते आत्माने ठामे ने आधार आधेपणुं ते ज्ञानादिक गुणने ठामे अने श्वेतादिक ते पर्यायने ठामे. ते जेम त्रण मलीने एक एक वस्त्र थयुं, तेम आहियां पण गुण पर्याय सहित आत्मा थाय एवी रीते विचार एकत्व भावनो करवो ते केवलज्ञान दातार छे शा माटे के ए शुक्ल ध्यानना बीजा पायानुं लक्षण छे, एटले शुक्ल ध्यानने पेहेले पाये तो भेद ज्ञान तथा भेदाभेद ज्ञान छे तेथकी एकला मोहनीकर्मनो नाश थाय पण केवलज्ञान न पामे, अने शुक्ल ध्याननो बीजो जे पायो एकत्व भाव छे ने अभेदज्ञान छे तेथकी त्रण कर्मनो नाश थाय. ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अंतराय. ए त्रण कर्मनो क्षय थयाथी केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगटे, एवो एकत्व भावनाने विषे माल रह्यो छे माटे एकत्व भावना सदाय निरंतर भाववी, ए भावना भावतां थकां अनंतां कर्म निर्जरे अने मुक्ति दुकडी आवे. ए वातमां शंका राखवी नहि ए चोथी भावना कही. हवे पांचमी भावना कहिये छिये.

ते अनित्यभावना छे एटले अनित्य कहेतां सगांवाहालां सज्जननो जे स्नेह ते सर्वे अनित्य छे अने ए स्नेहना राखवा थकी जीव भवसमुद्रने विषे डुबे छे अने अनंतां जन्म मरण करे छे अने अनंतु दुःख भोगवे छे एम विचारीने सगांवहालां सज्जन उपरथी स्नेहभाव तजवो केमके ए ममतारूप डाकणी सर्वने खाइ गइ छे ने आपणने पण अनंतो काल थयां रोले छे माटे ए ममता डाकणीने घर थकी कहाडवी अने जे सज्जन संबंधी मल्यां छे ते स्वार्थनां सगां छे पण तारुं एमां कोइ छे नहि. तुं पण एमां कोइनो नथी, सर्वे

संजोगे मली विजोगे जाशे, जेम पंथी जननो मेळो कहेतां जेम को-
इक धर्मशालाने विषे रस्ते जतां रात त्यां रह्या, बीजां पण देशदे-
शनां पंथी आवीने उतर्यां छे, तेनी साथे प्रीति बंधाणी ने प्रभातनो
काल थयो त्यारे सर्वे सर्वेने मार्गे चाली नीकल्यां, हवे ए प्रीतिनो
निर्वाह क्यां करशे, तेम आ जीव इहांथकी परलोक गये थके ए
सगां वहालांना स्नेहनो निर्वाह क्यां करशे, माटे सर्वे अनित्य
पदार्थ छे अथवा जेम तिर्थने विषे संघ प्रमुख मले छे, पछी तेमां
केटलाएक जीव पुन्य उपार्जे ने केटलाएक जीव पाप उपार्जे. एम
नफो टोटो लेइने सहू सहूने मार्गे पाछा जाय तेम आ मनुष्यभव-
रूपि तीर्थ तेने विषे आ जीवरूपी संघ मल्यो छे तेमां को-
इक जीवतो वस्तुधर्म पामीने ज्ञान ध्यान करे. करीने सर्व कर्म ख-
पावीने मोक्षे जाय, अथवा कोइक जीव पुन्य उपार्जिने देवादिक
शुभ गतिमां जाय अथवा कोइक जीव पाप उपार्जिने नर्कादिक ग-
तिमां जाय, पण कोइ स्थिर भावे तो अहियां रेहवानो छेज नहि,
अने जे सज्जन संबंधी ते तो जो स्वार्थ तेनो पुरो न थाय तो तुरत
छेह दाखे, जेम परदेशी राजाने सुरीकंताराणीए झेर देईने मारी
नांख्यो. ते अधिकार रायपसेणीथी जोजो तथा ब्रह्मदत्त चक्रव-
र्त्तिनी माता चुलणी जे स्वार्थ पोतानो न सरतो दीठो त्यारे लाख-
नो मेहेल करावीने दीकरा वहुने मांहेलीकोर सुवाडयां ने ते मेहेल
सलगावी दीधो, पछी ते ब्रह्मदत्तनुं आवखुं हतुं तो सलंगमां थइने
जीवतो नीकल्यो, परंतु मातानो स्नेह पण एटलोज छे माटे संसार
अनित्य छे तथा जुवो श्रेणीक राजाए पोताना पुत्र कोणीकनो
अंगुठो छ मास सुधी मोहोडामां राखीने लोही परु चुस्युं, अने
कोणीकनी माता चेलणाने ए पुत्र जीवतो राखवोज नहि हतो, पण
श्रेणीके जोरावरीए ते पुत्रने उछेरयो तेज पुत्रे पिताने काष्ट पंजरमां

घाल्यो ने दीन प्रत्ये पांचसें पांचसें कोरडा मारे, जुवो ए संसारनुं सगपण एवुं अनित्य छे ए सर्वे स्वार्थनुं सगुं छे तथा मरुदेवा माता जेवारे रीखवदेव स्वामी दिक्षा लेइने चाली नीकल्या त्यांथी मांडीने एक हजार वर्ष सुधी मारो रीखव मारो रीखव करीने आंखे आंधलां थयां, ते सर्वे स्नेहनां फल जाणवां. जे वारे भगवंत केवल ज्ञान पाम्या ते वारे भरत वांदवा गयो ते वारे माताने पण साथे तेडी गया ते हाथीनी खंधे बेठा थकाज भगवंतनी ऋद्धि संपदा देखीने स्नेह तुटी गयो अने विचार्युं जे हुं रीखव रीखव करतां आंधली थइ अने रीखवतो आटली रिद्धि भोगवे छे अने माताने संभारतो पण नथी, तो केनो रीखवने केनी माता सहु सहुना आत्मानुं सरीख छे एम अनित्य भावना भावतां थकां अंतगड केवली थइने मोक्षे गयां, ते फल ते अनित्य भावनानुं, तथा श्री गौतम स्वामी त्रीश वर्ष सुधी महावीर स्वामीनी सेवामां रह्या अने भगवान उपर घणो स्नेह रह्यो, तेथी करीने केवलज्ञान पाम्या नहि, तथा क्षेपक श्रेणी पण आवी नहि, जे वारे भगवान निर्वाण पाम्या ते वारे एवी भावना थइ जे केना वीर ने केना कुवीर ! वीर तो आत्मानुं कारज करीने गया अने तुं फोगट वीर वीर पोकारे छे तेमां तारुं शुं वल्युं ? तुं तारा आत्मानुं कारज कर एम अनित्य भावना भावतां थका केवलज्ञान पाम्या एम बीजाने पण अनित्य भावना भाववी तेथकी आत्मानुं कारज थाय एटले ए पांचमी भावना कहि

हवे छठी भावना अशुची नामे कहिये छिये एटले अशुची कहेतां अपवित्र वस्तुने विचारवी एटले ते अपवित्रपणुं शा थकी पामे छे ? ते कहिये छिये जे जीव मोहने वश पड्यो थको कर्म बांधे ते थकी मन वश पण न रहे अने मन वश न रहे ते वारे मन

जोगथकी कर्म घणा बांधे तथा मन वश न होय तो इंद्रिओ पण जोर घणुं दाखवे अने इंद्रिओना परिवलथी करीने जीव प्रमादमां पडे ने प्रमादमां पड्यो एटले तेने ज्ञान ध्यान तो होयज नहि, तेने तो इंद्रिओना पोषणनोज विचार अहोनिश रहे, तथा जीव अनंतां कर्म अशुभ उपार्जे अथवा कदापि कोइ शुभ उपार्जे परंतु अंते ए कर्म-बंध कहिये, ते कर्मना जोरथी करीने जीव नरकादिक गतिने विषे जइने उपजे तो त्यांतो रुधीर मांसनो कर्दम थइने रह्यो छे, ने सदाय छेदन भेदन छे त्यां अशुचीनुं शुं कहेवुं अथवा मनुष्य अथवा तिर्यंचनी गतिने विषे आवे तो त्यां पण गर्भवासने विषे तो अशुचीनोज भंडार छे ते गर्भवासमां उपजाववानी तथा उपजवाना थानकनी वार्ता संक्षेपथकी देखाडीये छिये, जीव गर्भने विषे केटला दिवस रहे तथा केटला रात्र रहे तथा केटला मुहूर्त्त रहे तथा केटला श्वासोश्वास रहे तथा जीव शो आहार ले एटलां वानां गर्भनां कहीशुं. हवे जे गर्भने विषे जीव बसेंने साडीसित्योतेर अहोरात्र रहे एटलो गर्भ स्थितिनो कालभाये छे, तेमां कोइने गर्भ ओछो थइ जाय ते सर्वे कर्मनो व्याघात जाणवो. तथा जीव गर्भने विषे आठ हजार त्रणसेंने पचवीस मुहूर्त्त रहे. व्याघातथकी ओछो अधिक जाणवो तथा चौदलाख दशहजार बसेंने पचवीस एटला श्वासोश्वास गर्भने विषे लेवे.

हवे गर्भावासे जीवने उपजवानुं थानक देखाडे छे, ते स्त्रीनी नाभिने हेठे बे नाडी छे, ते बे नाडी फुलने आकारे छे तेनी नीचे योनि छे, ते मध्ये जीवने पजवानुं ठेकाणुं छे ते जेम कमल उंधुं करीने राखिये ते आकारे छे, तेनी नीचे जेवी आंबानी मांजर तेवे आकारे मांसनी पेसी छे ते जे वारे स्त्रीने ऋतुकाल होय ते वारे मांसनी मांजर फुटे ते मांहेथकी रक्त वहे जीवनी

उत्पात्ति विषे जे अधोमुख फूलने आकारे योनि छे, त्यां पुरुषनुं वीर्य संप्राप्त थाय ते काले योनीमिश्रीत होय ते वारे जीव उपजवा जोग थाय. ते वीर्य प्राप्त थया थकी बार मुहूर्त्त सुधी जीवनुं उपजवुं थाय, ते वार पछी ते वीर्य नाश पामे. अहियां केटलाएक जीव पण नाश पामे. शामाटे के जो जीव त्यां उपजे तो एक पण उपजे तथा बे पण उपजे तथा त्रण पण उपजे तथा उत्कृष्टा नव लाख उपजे, तेनुं आवखुं जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टुंक्रोडपूर्वनुं, ते जीव जे उपजे तेना पितानी संख्या कहीये छीये, एक होय अथवा बे होय अथवा नवसें पिता होय, हवे गर्भना जीवने उपजवानुं ठेकाणुं कहीये छीये. स्त्रीनी जमणी कुखे पुत्र होय, डाभी कुखे दीकरी होय, ए बे कुखनी मध्य भागने विषे नपुषक होय. हवे ते गर्भनी स्थिति कहीये छीये, मनुष्य गर्भमां रहेतो बार वर्ष रहे एथी अधिकुं न रहे, कदापि कोइ अधिकुं रहेतो छोड होय पण जीव न होय, कदापि नवो जीव ते छोडमां आवीने उपजे तो छोड पल्लव थाय. तिर्यंच गर्भमां रहेतो उत्कृष्टो आठ वर्ष रहे, हवे गर्भने अहारनी विधि कहीये छीये. जे जे गर्भने विषे उपजे ते प्रथम समे अहार ले ते अहार शुं करे ? मातानुं रुधिर पितानुं वीर्य ते प्रत्ये अहार करे तो अपवित्र असुची दूगंछनीय एवो अहार करे छे ते वार पछी तेनुंज शरीर बांधे. यावत् छ ए पर्याप्ति पुरी करे. एम करतां सात दिवस थाय त्यारे पाणीना परपोटा जेवो थाय, ते वार पछी मनुष्यपणुं बांधे, ते वार पछी आंबानी गोटी सरखो बंधाय, ते वार पछी प्रथम महिनो पुरो थये ए गर्भ एक करखणे उणो एक पलनो थाय, सोल मासानुं एक करखण कहीये चार करखणे एक पल कहीये. तथा बीजे महिने ते पेसी कठण थाय ते वार पछी त्रीजे मासे माताने डोहोला उपजे, गर्भ सारो होय तो सारा सारा

अभिलाख थाय, अथवा गर्भनो जीव माठो होय तो माठा माठा अभिलाख थाय, तथा चोथे मास माताना अंगनो वधारो थाय, तथा पांचमे मासे पांच अंग थाय हाथ २ तथा पग २ तथा मस्तक १ ए पांच अंग थाय, छठे मासे रुधिरनो संग्रह थाय, तथा सातमे मासे सातसें नाडी बंधाय, तथा पांचसें पेसी बंधाय, तथा नव धमणी अने नाभीथाय, तथा नवाणुंलाख रोमराय प्रगटे, तथा रोम अहार ग्रह थाय, अने समे समे परिणमे, वली बीजा केस दाढी मूछविनाना कह्या. सर्व शरीरे मलीने साडीत्रणकोडी रोमरायहोय. आठमे मासे सर्व अंगोपांग संपूर्णहोय हवे गर्भनेविषे जे उपन्यो तेने लघुनित्य वडीनित्य सलेखम वलखा प्रमुखकांइ न होय एटले ते जीव गर्भमां रह्यो थको आहार करे ते आहार इंद्रि नी पुष्टीकरे, हाड तथा मेज तथा केस प्रमुखनी वृद्धि करे, हवे जे गर्भमां रह्यो थको आहार करे ते सर्व शरीरे करे अने सर्व शरीरे परिणमावे, अने वारंवार आहार करे ने सर्व शरीरे उश्वास निश्वा-सले ते पण वारंवार ले, ते आहार क्यां थकी ले छे ? मातानी नाभीनी ने पुत्रनी नाभीनी रसहरणी जे नाडी छे ते मातासाथे संलग्नज छे, ते पुत्रना जीवने स्पष्ट छे ते कारणमाटे आहारकरे तेथी आहार परिणमे तथा एक बीजी नाडी पुत्रना शरीरसु संलग्नपणे छे, तेमाताना शरीरने स्पष्ट छे, ते कारण थकी शरीर पुष्ट थाय, तेथकी घणी पुष्टी थाय तथा व्यवहारनय ने मते तो जीव समये समये आहार ले छे तथा माता आहार ले तो गर्भनो जीव पण आहार ले. हवे गर्भमां मातानां अंग केटलां तथा पितानां अंग केटलां ते कहिये छिये. पितानां ३ अंग छे, अस्थी १ अस्थी मांहेली मीजा २ केशरोम प्रमुख ३, तथा मातानां अंग ३, मांस १ लोही २ अने कपालनो मांहेलो भेजो ३, हवे

जीव कदापि गर्भमांथीज चवे तो नरनरकादिक चारे गतिमां जइ उपजे. हवे ते गर्भमां रह्योथको जीव माता जो सूवे तो पोते सूवे, माता जागे तो पोते जागे, माता सुखणी ए सुखीयो, माता दूखणी ए दूखियो, एवी रीते गर्भमां रह्योथको जीव अशुची अपवित्रमां दुख परवशपणानुं भोगवतो थको रहे. एटले स्थानक महा मलमूत्रनुं भरेलुं तेमां वसवुं पडे. एवी रीते नव महीना गर्भने विषे रहे. हवे जे पुर्वे माताना रुधिरनुं बल थोडुं होय अने पिताना वीर्यनुं बल घणुं होय तो गर्भ पुरुष वेदे थाय, जो माताना रुधिरनुं बल घणुं होय ने पिताना वीर्यनुं बल थोडुं होय तो स्त्रीवेद बंधाय, जो रुधिर तथा वीर्यनुं बल समभागे होय तो नपुंशक वेद बांधे, तेमां कोइ जन्म-कालने विषे मस्तके करी आवे, कोइने पेहेलां पग आवे अथवा कोइ तिर्छो आवे. ए सर्वे पुन्य पापनां फल छे. ए सर्वे जो पोतानी पूर्वनी अवस्था जो संभारे तो कोइनी दुर्गंच्छन करे. केमके ए गर्भवास नरकनी कुंभीपाक सरखो छे. अने ने कोइ जीव पूर्व अवस्था भुलीने जुवानीना मदमां छाक्या थका अशुचीनी दुर्गंच्छना घणी करे छे, ते अज्ञान छे अथवा शरीरने विषे जे छे ते कहियेछिये.

अराडपांसलीओ परीष्टकंडकनामे संधीनी छे, तथा बार पांस-लीओ कंडक वंशासानी छे, चार आंगुल प्रमाण ग्रिवा छे, चार पलनी जीभ छे, बे पलनां नेत्र छे, चार पलोनुं मस्तक छे, सात आंगलनी जिव्हा छे, आठ पलनुं हृदय छे पचीस पलनुं कालजुं छे, बे अंतस कह्यां छे ते मध्ये १ सूक्ष्म ने १ स्थूल, स्थूलने वडीनितनुं स्थानक कहिये, ने सूक्ष्म ने लघुनितनुं स्थानक कहिये. वली ते शरीरमां बे परिणमवानां बे स्थानक छे, एक दक्षण तथा एकवाम, दक्षणने पासे परिणमे तो दुःखनु कारण, वामपासे परि-

णमे तो सुखनुं कारण, एकसोने साठ संधि छे, एकसोने सित्तोतेर मर्मनां थानक छे ते ठेकाणे लागे तो मरे, त्रणसें हाडनी माला छे,नवसें नाडी छे, सातसें सारी छे. पांचसें मांसनी पेसी छे, नव धमणीओ नाडी छे, नवाणुं लाख रोमराय छे, मस्तक दाढी मूछ विना सर्व मली सर्व शरीरनी साडीत्रणक्रोड रोमराय छे, एक सोनेसाठ नाडी नाभि थकी उंची चाले छे, ते मस्तकना बंधनी छे, तेने रसहरणी कहीये, मस्तके रस पहोंचाडे. ए रसहरणी नाडीनो जेटलो उपघात थाय एटली रोगनी प्राप्ति गणवी, आंख तथा नाक तथा कान तथा जीभ एना बलने हणे, रोग थाय पिडा करे, ए सर्वे उर्ध्व नाडीनां फल जाणवां तथा वली एक सोने साठ नाडी नाभि थकी जे उठी ते अधोगामिनी कहेतां नीची चाली ते पगने तलिये बंधाणी छे, ते नाडीने उपघात थाय तो एटला रोग प्रगट थाय, नेत्रनो तथा जंघानो तथा मस्तकनो तथा आदोशीशी यावत् अंध थाय, त्यां सुधी पण ए रोग एना जाणवा, तथा एकसोने साठ नाडी नाभि थकी जे उपडी ते तिर्च्छि गतीए चाली, ते हाथनां आंगलां सुधी पहोंची, तेना उपघाते करी जे रोग थाय ते कहीये छिये त्रे पासे वेदना थाय, तथा पेटनी वेदना, तथा मुखनी वेदना, ए सर्वे एनी रसहरणीना घात थकी उपजे, तथा एकसोने साठ नाडी नाभि थकी जे उपनी अधो गामिनी कहेतां गुजस्थानक सुधी पहोंची, तेने उपघात थकी जे रोग उपजे ते कहीये छिये. लघुनित वडीनित तथा वायु तथा करमिया प्रवर्ते, अथवा लघुनित वडीनितनुं थंभवुं थाय, तथा वायु रुंधाय, तथा हरस विकार पांडुरोग इत्यादिक कथोला रोग ए रसहरणीना घात थकी थाय छे. तथा पचवीश नाडी नाभि थकी उपनी ते सलेखमने उधरवावाली छे, उपघातथी सलेखम थाय, तथा पचवीश

नाडी पित्तनी धरनारी छे, उपघात थकी पितनो रोग थाय. तथा दश नाडी वीर्यनी धरनारी छे, इत्यादिक पुरुषने सातसें नाडी तेनी रसहरणी जे नाडी तेने उपघात न होय तो सदाय शरीरने सुख रहे, अने ते रसहरणी नाडीने कांइ उपघात थयो होय तो ते ते प्रकारनो रोग थाय तथा त्रीश नाडी ओछी होय एटले छसें-नेशीतेर होय ते स्त्रीने जाणवी. नंपुशकने छसेंनेएशी नाडी होय.

हवे शरीरमां धातु प्रमुखनुं प्रमाण छे ते कहीए छीये, शरीर मध्ये रुधिरनो एक हाडो होय अने मांसनो अडधो हाडो होय, अने माथानो भेजो एक पायो होय, लघुनित एक हाडो होय, वडीनीत एक पायो होय, पित्तनो एक कळव होय, कफनो एक कळव होय, सळेखमनो एक कळव होय, वीर्यनो अडध कळव होय, ए प्रमाणे बराबर शरीरमां सर्वे वस्तु रहे, त्यां सुधी शरीरमां रोगादिक न थाय. अधिक न्यून थाय ते वारे रोगनी उत्पत्ति थाय, तथा पुरुषने पांच कोठा शरीरमां होय, स्त्रीने छ कोठा होय एटले एक कोठो गर्भ धरवानो अधिक होय, पुरुशने नव द्वार सदाय वेहे छे, स्त्रीने बार द्वार वहे छे, तेनां नाम कान २, चक्षू २, वडीनित १, नासीका २, मुख १, लघुनीत १, ए पुरुपने नव द्वार जाणवा, स्त्रीने ए थकी त्रण द्वार अधिक तेनां नाम, स्तन २, प्रसवयोनी १, ए त्रण अधिक होय ए रीते बार द्वार स्त्रीने वहे. ते सदाय पुरुप स्त्रीने वह्यांज करे छे तथा जे पुरुपने पांचसें पेसी मांसनी कही छे ते मध्येथी त्रीस ओछी स्त्रीने होय, तथा नपुंशकने वीसवधारे होय, एटले मनुष्यना शरीरने विषे मांस मेलादीक जे भरेलुं छे, ते महा अपवित्र छे, केमके मांहे परु छे, लघुनीत वडीनीत प्रमुख भर्युं छे, महा दुर्गछानुं स्थानक छे माटे एवुं अशुचिनुं स्थानक, आ शरीर अपवित्रनो कोथळो ते तुं जाणतो नथी अने जुवानीना मदमां छाक्यो

थको चंदन अत्तर कुसम चूरण प्रमुखे पोताना शरीरने विलेपन प्रमुख सुगंधे भर्यो रहेछे ने लोकोनी दुगंछना घणी करेछे ते तने आगल कर्म घणां भोगववां पडशे, माटे पूर्वना जे कहेला बोल गर्भ तथा शरीर प्रमुखना ते संभारीने दूगंछना कोइनी करवी नही, अने आत्मा साथे एवो विचार करवो. हे चेतन ! ए पुद्गलनो स्वभाव सडण पडण विध्वंसण छे, एना वरणने तथा रसफरसने पलटवानो स्वभाव रह्यो छे, एना पर्यायनी एज स्थिति छे, माटे तुं पुदुगलना धर्ममां प्रवेश करीश नहि तुं तारा आत्मिक धर्मने विषे प्रवेश कर, तारा धर्मने विषे कशी असुची अपवित्र छे नही, तुं तो सदाय पवित्र छे माटे पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रना उपयोगने मूकवुं नहीं एवी छठ्ठी असुची भावना भावे.

हवे सातमी आश्रवभावना कहीये छीये, हवे ते आश्रव केवो छे? के आश्रवरूपी एक सरोवर छे एटले कायारूप सरोवर जाणवुं, ते मध्ये इंद्रि तथा मनरूप मच्छकच्छ रमी रह्या छे, तथा विषयना कलोल त्यां घणा थइ रह्या छे, पापरूपी पाणी भरेलुं छे, ते काया-रूप आश्रव सरोवर छे, तेने पांच गडनालां छे, ते पांच गडनालानां नाम जीवहिंसा १, जुठुं बोलवुं २, चोरी ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, हवे ते मध्ये प्रथम जे जीवहिंसा जे त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा ते धर्म निमित्ते अथवा संसार निमिते करवी तेने हिंसाश्रव कहीये. अहियां कोइ कहेशे के धर्म निमित्ते कांइ हिंसा थाय ते कांइ पापमां गणी नथी तेने कहिये के प्रश्न व्याकरण सुत्रने विषे, धर्मनिमित्ते जे हिंसा करे तेने महा मंदबुद्धि याने महादुष्ट परिणामी कह्या छे तथा दशवैकालिक सूत्रने विषे जयणा ए धर्म कह्यो छे, इत्यादिक सर्वे सूत्रने विषे जयणा विना धर्म थाय नहि, अने जे धमाधम करी ने धर्मधर्म पोकारे छे, ने जीवहिंसा करे छे, ते जीव शास्त्र जोतां

महा मांठी गतिना छे, अने बहुल संसारी दीठामां आवे छे, अने अनंतो संसार ते रखडशे, एवां परमात्मानां वचन छे, तथा जे धन ना लोभि थका जे पुजा प्रतिष्ठा स्नात्र व्रत पच्चखाण करावे छे, तथा तेनो उपदेश करेछे, ते सर्व पत्थरना नाव सरखा जाणवा, तेमां ते बुडे छे ने बीजाने बोळे छे, ए विचारा अज्ञान जीव पेट भरवावास्ते धर्म तथा पाप तथा आश्रव संवरनी कशी ओलखाण राखता नथी, अने कदापि कोइये बेशास्त्र वांचेलां छे तो तेने पोताना स्वार्थ आगल कांइ सुज पडती नथी, तथा पोते पण बुडे ने आगलनाने पण बुडाडे छे. एवुं श्री परमात्मानुं वचनछे माटे ज्यां ज्यां जीवनी हिंसा त्यां त्यां सर्व ठेकाणे आश्रवज कहिये. शा माटे के भगवंते अव्रत बार कह्यां छे तेमां छए कायनुं अव्रत हिंसाज छे, त्यां कांइ एवुं नथी कह्युं के धर्म कारण हिंसा करे ते पापमां न गणवी, जे कोइ जाणीने सोमल खाशे, तेने पण झेर चडशे, ने अजाणे खाशे तेने पण झेर चडशे माटे संसार अर्थे अथवा धर्म अर्थे जेधणी हिंसा करशे तेने महा आकरां कर्म बंधाशे. यावत् नर्कादिक गतिने विषे जशे. एवुंकोइ जीवने कह्युं नथी के तुं मने मारीने तारुं संसारनुं कारज साध, अथवा धर्मनुं कारज साध एवुं तो कोइ कहेतुं नथी, सर्वे जीव जीववुं वंछे छे, माटे हे चेतन! सर्वथा प्रकारे त्रस अथवा थावर जीवनी हिंसा न करवी. ते हिंसा नहि करे ते धणी आत्मानो सुखी थशे ने जे हिंसा करशे तेनो आत्मा दुःखी थशे, जेम गौत्रास दुःखी थयो तेम बीजा पण दुःखी थशे ए वात विपाकथकी जाणजो. तथा बीजो आश्रव जे मृषा न बोलवुं केटलाएक एवुं कहे छे के धर्म अर्थे जूठुं बोलीये ते तुं पाप नथी ते पण वचन मिथ्या छे. परमात्माना मार्गने विषे यथार्थ वचन बोलवुं. हवे ते भावने विषे शुं विचारवुं, अहो चेतन! आ जडनां जेटलां कर्तव्य छे ए सर्वे असत्य छे. जडथकी जे जे

कारज नीपजे छे तेने तुं पोतानुं करीने जाणे छे, अथवा तेमां तुं लाभ खोट माने छे, ए सर्वे मिथ्या छे शा माटे के पुद्गलना कर्तव्यमां कोइ काले आत्माने नफो होयज नहि. ए आत्माने तो अवगुण कर्ता छे, तथा त्रीजो आश्रव जे चोरी एटले परवस्तु जे तेना स्वामीना दीधा विना जे लेवी ते सर्वे चोरी छे. माटे ते आत्माने कांइ खपमां आवती नथी धनधान्यादिक जे चोरीने तुं भेगुं करीश ते अहिंयां पड्युं रहेशे अने कर्म बांधीश ते तारे भोगववुं पडशे, तथा चोथो आश्रव जे अब्रह्मचर्य एटले स्त्री आदिकनुं सेवन ते विटंबना छे, अने स्त्रीनी संगतथकी अनंता जीव आगे डुबेला छे माटे तेने स्त्रीथकी सदाय अलगुं रहेवुं. तथा पांचमो आश्रव जे महा आरंभ जे परिग्रह ते पापनुं मुलज तथा सर्व आश्रवनुं मुल तथा सर्व दुःखनो दातार एवो जे आरंभ परिग्रहथकी सदाय अलगुं रहेवुं. अंते पण ते आरंभ परिग्रह आपणी हारे आवे नहि एथकी आपणे अनंताभव रखडवुं पडे माटे ए पांचे आश्रव तेथकी सदाय वेगलो रहे, नहि तो एज तने संसारमां अनंताभव जन्ममरण करावशे तथा बीजे प्रकारे अढार पाप स्थानक ते पण आश्रवज छे, तेथकी पण सदाय वेगलुं रहेवुं तेनां नाम हिंसादिक ५ पूर्वे कह्यां ते तथा क्रोध छट्ठो एटले क्रोध छे ते पण आश्रव रूपज छे. जे वखत जीव क्रोधने विषे आवी जाय छे ते वखत कांइ कृत्याकृत्य विचारतो नथी तथा मान ते पण जीव अभिमाननो लीधोथको न करवानां कारज करे तथा माया कपटनो भरेलो जीव शुं न करे ते? सर्वे कारज सेवे तेनो कोइ विश्वास पण न करे तथा लोभ ते तो सर्वथकी महा निष्ट छे. लोभी माणसने कोइ सगुंवहालुं हेतु कोइ होय नहि अने न करवानां कारज ते सर्वे ए लोभी माणस करे पोते दुःखी थाय ने बीजाने पण दुःखी करे तथा राग ते स्नेहनो लीधोथको कोइ

वचन बोलवानो पण विचार न होय तथा कोइ काम करवानो पण विचार न होय, कोइनी लाज शरम पण न रहे, ए राग सोनानी बेडी सरखो छे तथा द्वेष ते द्वेषनो भरयोथको पोतानुं कारज पण वगाडे ने सामानुं कारज पण वगाडे. केवो के लोढानी बेडी जेवो छे, तथा कलेश जे सामा साथे उभो करवो अने संतापथी घडी एक छेटे खसे नहि. पोते कलेशमां भरया रहे ने सामाने क्लेश उपजावे तथा अभ्याख्यान एटले पराइ खोटी वातो जाणी अजाणी करवी तथा खोटां आल कोइने माथे देवां.

हवे पैशून्य केहेतां पराइ चाडीओ खावी अथवा कोइ ए हेतु जाणीने मर्मनी वात आपणने कही होय ते प्रसिद्ध करवी तथा कोइनी मर्मनी वात जाण्यामां आवी होय तो फजेतो करवो. तथा पर परिवाद केहेतां परना अवर्णवाद बोलवा, कोइना गुण ग्रहण करवामां समजे नही ज्यां त्यां सर्वना अवगुण ग्रहण करवामां समजे. पंदरमुं पापस्थान रतअरत एटले सुख आवे थके शाता वेदवी एटले पोताना सुखमां मगन थइ गयो पारकुं दुःख जाणे नही. दुःख आवे थके हायवराय घणो करे संतोश राखे नही. तथा सत्तरमुं माया मोस केहेतां जे कपट सहित जुटुं बोलवुं. जेम आगे तो विष हतुं अने वली तेने वधार्युं एटले तेना झेरनुं शुं कहेवुं तेम पेहेलुं जुटुं बोलवुं ते तो माहा पाप छे ने वली दंभ सहित बोलवुं एटले तेना पापमां शुं कहेवुं? तथा अढारमुं मिथ्यात्व सल्य ए अढार पाप स्थान थकी हे चेतन सदाय वेगलो रहे. ए थकीज सर्व पापनी क्रिया लागे छे ने पापनी व्यासी ए प्रकृतिना उपर रंजनना करवा वाला ए अढार पाप स्थानकज छे ने ए अढार पाप स्थानक ज्यां सुधी माहेंथी गयां नथी त्यां सुधी जीवने संसार थीरभावज छे त्यां सुधी संसार घट्यो नथी ए वात निश्चेज छे. तथा ते अढार

पापस्थानमां सत्तर पापस्थान थोडा संसारना धणी छे अने एक मिथ्यात्व पाप स्थानक अनंत संसारनो धणी छे माटे एवुं जाणीने हे चेतन ए थकी तुं सदाय अलगो रहे तथा पांच इंद्रीना आश्रव छे ते पण तजवा, श्रोत इंद्रीना ३ वीपय छे ते पण तजवा जो नही तजिये तो ए थकी जडनुं पोपण थशे ने आत्मानुं घात थशे तेम पांच इंद्रीना विषय समजवा. जेम श्रोत इंद्रीना परवशपणाथी मृगनो जीव जाय छे तथा चक्षु इंद्रीना परवशपणाथकी पतंगीआनो प्राण जायछे तथा रस इंद्रीना परवशपणाथकी माछलानां प्राण जायछे तथाघ्राण इंद्रीना परवशपणाथी भमरानो जीव जाय छे तथा फरस इंद्रीना विषय थकी गजनो नाश थाय छे. ए पांच इंद्री मध्ये अकेकी इंद्री जेनी वश नथी तेना जीव जाय छे तो जेनी पांचे इंद्री मोकली होय ते तो सुख क्यां थकी देखें माटे हे चेतन ए पांच इद्रीरूप जे संसारना दूत तेने छुटा मुकीश तो ए तने सुख केम आववा देशे ने तने संसारमां रोलवशे माटे तुं ए पांचे दूतने पकडीने केद कर एटले तुं सुखीयो थइश. इत्यादिक जे जे कारण थकी आश्रवनुं आववुं थाय छे ते ते कारणने तुं वंध कर जेम तारो आत्मा भारे न थाय अने जो तुं आश्रवने वंध नही करे तो तारा आत्माने तरवानी वखत कोइ काले नथी माटे आश्रव वंध करी एवी भावना भाववी

तथा आठमी जे संवर भावना एटले पुर्वे सातमी आश्रव भावनाने विषे जे अधिकार कह्यो तेने रुंधवानो विचार तेने संवर कहिये तथा मन वचन कायाना जोग संवरवा ते सर्वे व्यवहार संवर छे तथा जे परभावनो त्याग अने स्वभावने विषे रमण करवुं एटले ज्ञानदर्शन चारित्रमां रमण करवुं तेने संवर कहिये ॥ तथा नवमी निर्जरा भावना एटले धर्मध्यान शुक्ल ध्याननुं ध्यावुं तथा गुरु पासे लागेला दोषनुं प्रायश्चित लेवुं तथा विनयवेयावच्च गुरुवादि-

कनी करवी इत्यादिक भावना भाववी तेने निर्जरा तत्व कहिये ॥ दशमी लोकस्वरूप भावना लोक कहेतां चौदराज लोक तेनो आकार कहिये छिये पुरुष आकार कहेतां पुरुष बे पग पहोला करीने उभो रहे, हाथ बे कमरे आवे तेवा आकारे लोक छे तथा बीजे प्रकारे वलोणा आकार कहिये, ते कहेतां जेम स्त्री वलोवाने उभी रहे अने माखण उपर लाववा झडकाले छे ते वखत जेवो एनो आकार होय ते आकारे लोक छे तथा त्रीजे प्रकारे एक सरावलुं निचे उंधु वालीये ते उपर सरावलानुं संपुट करीने उपर मुकीये पण नीचेनुं कांइक मोटुं मुकी एने उपरनां बे सरखां ने नाहानां मुकीए ते आकारे लोक छे, ते लोकना त्रण भेद छे उर्ध्व तथा अधो तथा तिर्छो लोक छे, ते जे पुरुषाकारने विषे जे नाभिनी जग्याथकी नीचुं तेने अधोलोक कहिये ते सात राजथी कांइक झाझुं छे, तथा सात राज माठेरो नाभिथकी उपरनो भाग छे तेने उर्ध्वलोक कहिये, तथा जे नाभिनी जग्यानो भाग छे तेने तिर्छोलोक कहिये. हवे ते त्रणे लोकनुं किंचीत् स्वरुप देखाडिये छिये अधोलोकने विषे सात पृथ्वी छे ते मध्ये पहेली पृथ्वी रत्नप्रभा एवे नामे छे तेनो एक लाखने एंसीहजार जोजननो पिंड छे ते मेरु पर्वतनी संभुतला पृथ्वीना भागथकी गणवो. हवे जे एकलाख एंसीहजार जोजननो पिंड छे ते मध्ये एकहजार जोजन निचे मुकीये ने एकहजार जोजन उपर मुकीये तेना मध्यमां एकलाखने अठोतेरहजार जोजननो पिंड रह्यो ते मांहे तेर भाग करीये तेमां ते नर्कना पाथडा छे तेना वचला आंतरा अगीयार रह्या ते मध्ये दश आंतरामां भुवनपतिनी दश निकायो छे ने एक आंतरु खाली छे तथा हजार जोजन जे उपरनुं रह्युं ते मध्ये सो जोजन उपर मुकीए तथा सो जोजन हेठळ मुकीए एटले आठसें जोजन रह्युं ते मध्ये आठ व्यंतरनी नि-

कायो छे तथा उपरना सो जोजनमांथी दश जोजन उपर मुकीए तथा दश जोजन निचे मुकीए मध्यना एंसी जोजनमां आठ जातना वाण व्यंतरनो रेहेवास छे ते भुवनपति तथा व्यंतरने रत्नमय जग्याओ छे हवे जे नर्क रत्नप्रभा तेना त्रण भाग करीए ते मध्ये प्रथमनो भाग रत्ननो छे ते रत्नना भागनी महिली कोर सोल कंड रत्नना सोल जातना छे बीजा भागोमां रत्नना भाग नथी, तथा तेर पाथडे थइने त्रीस लाख नर्कावास छे ते नर्क पृथ्विने निचे त्रण वलीयां छे, एक घनोदधी १ घनवा २ तनवा ३ ए त्रण वलीयाने आधारे करीने ए पृथ्वि रही छे तेनी निचे एक राज आकाश छे त्यां गये थके बीजी नर्क पृथ्वि आवे तेने विषे अगीयार पाथडा छे ते पृथ्वि कांकरा सरखी जाणवीः त्यां थका एक राज गये थके त्रीजी पृथ्वि वालुक प्रभा एवे नाम आवे तेने विषे नव पाथडा छे ते पृथ्वी वेल सरखी छे त्यां थकी एक राज चोथी पृथ्वी पंकप्रभा एव नामे आवे त्यां सात पाथडा छे ते पृथ्वि पंक केहेतां कादव जेवी छे त्यां थकी एक राज पांचमी पृथ्वि धुमप्रभा एवे नामे आवे त्यां पांच पाथडा छे ने ते धुंवाडा सरखी पृथ्वि छे. त्यां थकी एक राज छठी पृथ्वि तमप्रभा नामे आवे तम केहतां अंधकाररूप छे त्यां एकज पाथडो छे, त्यां थका एक राज झाझेरी सातमी पृथ्वि तमतमा एवे नामे आवे, त्यां अंधकार अत्यंत घणाज तद्रूप छे त्यां एकज पाथडो छे ते मध्ये पांच नरकावास छे तेनां नाम कहिये छिये काल १ महाकाल २ रोलु ३ माहारोलु ४ अपेठाण ५ कालादीक चार पाथडा चार दिसीने विषे छे ते असंख्याता जोजनना छे ने अपेठाण नामे नरकावास मध्यनो एक लाख जोजन लांबो पोहोलो छे तेनी वेदना घणी आकरी छे त्यांथकी एक राज गये थके अलोक आवे. हवे ते सातें पृथ्वीनुं

पोहोलपणुं कहीये छीये पेहेली पृथ्वी एक राज लांबी पोहोळी छे. बीजी नरक पृथ्वी बे राज लांबी पोहोली छे त्रीजीनरक पृथ्वी त्रण राज लांबी पोहोली छे तेम एक राज वधते वधते छठी छ राज, ते थकी सातमी नरक पृथ्वी सात राज लांबी पोहोली छे हवे ते साते नरकनी वेदनानुं स्वरूप कहीये छीये प्रथमनी त्रण नरकने विषे परमाधामी कृत वेदना छे तथा खेत्रवेदना पण छे. तथा चोथी पांचमी बे नरकने विषे माहोमांहे वैक्रीय शरीर करीने लढी मरे छे एकएकने वेदना करेछे. तथा खेत्रवेदना पणछे, तथा छठी सातमी बे नरकने विषे खेत्रवेदना एकलीज छे परंतु पेहेली नरकने विषे अनंती वेदना छे तेथकी बीजी नरकने विषे अनंत गणी वेदना छे एम अनुक्रमे एक एकथकी अनंत गणी वधती वेदना जावत छठी करतां सातमी नरक पृथ्वीने विषे अनंत गणी वेदना छे तथा ते साते नरक मांहे महा अंधकार छे त्यां कोइ चंद्रमा सूरज प्रमुख अजवालुं करता छे नही.

शिष्यवाक्य—ज्यारे साते नरक पृथ्वीमां अंधारुं कह्युं त्यारे भुवनपति व्यंतरमां पण अंधारु छे ?

गुरुवाक्य—भूवनपती व्यंतरने विषे रेहेवाना जे रहेवास ते सर्वे रतनमय छे तेथी माहा उद्योतकारी छे त्यां कांइ अंधकार छे नही अने तेना रहेवासनाजे भुवन ते जंबु द्वीप जेवडा छे जावत अढी द्वीप जेवडा छे ते महा उद्योतमय छे घठार्यां मठार्यां माहा तेजनो पुंज मुके छे इत्यादिक एनो विस्तार जीवाभिगम थकी जाणजो.

शिष्यवाक्यः—के स्वामि आंतरे आंतरे भुवनपतिने विषे महा उद्योत महासुख छे तो नर्कना पाथडा ने विषे अंधारु ने

महा दुःख ते शुं ? ते पण पृथ्वि तो रत्ननी छे अथवा सोल कंड रत्नना पूर्वतमे कह्याज छे.

गुरुवाक्यः—हे भद्र जे देवना जे रहेवासना जे उद्योत तथा सुख ते सर्वे पुन्यना जोरथी भोगवे छे तथा नर्कवालाने अंधकार तथा दुख ते सर्वे पापना जोरथी छे जेम कोइ एक घरने विषे हेठे उपर तेना उपर एम अनेक लोक वसे छे ते सर्वेने सुख दुख तो पोताना पुन्य पापना उदे प्रमाणे मळे छे तथा जग्यानी जे शोभा ते पण पुन्य पाप प्रमाणे छे, तथा तें जे कह्युं जे रत्ननी पृथ्वि तथा रत्नना कुंड तेनुं एम छे के ज्यां नरियानो रहेवास छे त्यां तो उपर खर पृथ्वि समज्यामां आवे छे माटे त्यां उद्योत नथी तेनो विस्तार पन्नवणा तथा जीवाभिगम थकी जाणजो हवे तिर्छा लोकनो अधिकार कहीये छीये त्यां प्रथम जंबुद्वीप एक लाख जोजन लांबो पहोलो छे ने सर्वे द्वीप समुद्र एने वींटीने रह्या छे तेना मध्य भागने विषे मेरु पर्वत छे, ते एक लाख जोजननो उंचो छे दशहजार जोजन लांबो पहोलो छे, तेनी पूर्व पश्चिमे महाविदेहनी सोल सोल विजय छे, बे मळीने बत्रीश विजय छे, देवकुरु उत्तरकुरु आदे देइने छ क्षेत्र जुगलीयानां छे तथा भरत ऐरव्रत क्षेत्र छे ते कर्म भूमिनां छे ते सर्वे उत्तर दक्षिणे छे, ने सर्वे क्षेत्र थकी मेरु उत्तर दिशामां छे तथा छप्पन अंतर द्वीप छे ते सर्वे द्वीपोने फरती जगति छे तथा जंबुद्वीपने जगतिनो कोट छे तेने चार दरवाजा छे तथा उत्तरकुरुने विषे सुदर्शन नामा जंबु वृक्ष छे. इत्यादिक विचार सर्व जंबुद्वीप पन्नती थकी जाणवो. तेने फरतो लवण समुद्र जाणवो, ते बे लाख जोजननो जाणवो तेमां पताल कलसा छे, ते मध्ये थकी पाणी उछले छे तेनी भरतीओट थाय छे, तेनुं पाणी खारुं छे तेने पण फरती जगति छे तेनी परधी सोळ लाख जोजन माठेरी

छे, तेने फरतो धातकी खंड छे, तेने विषे जंबुद्वीप करतां बमणां क्षेत्र तथा बमणी रीत सर्वे जाणवी. एटलो विशेष जे त्यांना बे ये मेरु चोरासी हजार जोजन उंचा छे, तथा बे इखुकाल पर्वत छे तथा धावडीनुं वृक्ष छे तथा फरती जगति छे, बाकी सर्वे जंबुद्वीपनी रीते जाणवुं. ते द्वीप चार लाख जोजन पोहोलो छे तेनी परधी एकताळीस लाख जोजन झाझेरी छे, तेने फरतो कालोदधी नामे समुद्र छे तेनुं पाणी काले वर्णे छे, ने पाणी सरखुं पाणी मीठुं छे, तेने पण फरती जगति छे, आठलाख जोजन पोहोलो छे तेनी परधी एकाणुं लाख जोजन झाझेरी छे, तेने फरतो पुखरवर नामा द्वीप छे तेना मध्य भागने विषे मानुषोत्तर पर्वत वळीयाकारे पड्यो छे तेनी मांहेलीकोरे अडधो जे द्वीप ते मध्ये सर्व धातकी खंडनी पेरे समजी लेवुं, परंतु खेतर धातकी खंडना करतां ए बमणो मोटो छे, ए अढी द्वीपनी मांहेलीकोरे मनुष्यनो रेहेवास छे तथा मनुष्यनुं जन्म मरण पण ए अढी द्वीपनी मांहेलीकोरे छे, तथा तीर्थंकर केवळी गणधर आचारज उपाध्याय साधु ते धर्मदेवता तथा देवाधीदेव ते अढी द्वीपनी मांहेलीकोरेज छे, तथा अढी द्वीपनी बाहारनी कोरे देवता तिर्यंचना रेहेवास छे ते एक एक द्वीप थकी समुद्र बमणो एम अनुक्रमे असंख्याता द्वीप समुद्र मुकता थका छेल्लो स्वयंभूरमण नामा द्वीप आवे ते पा राज पोहोलो छे ते थकी स्वयंभूरमणनामा समुद्र बमणो पोहोलो छे, एटले अडधा राजमां छे, तथा अढी द्वीपने विषे जे चंद्रमा सूर्यग्रह नक्षत्र तारा सदाय फर्या करे छे तेथी दिवस रात्रिनु मान बंधाय छे तेथी समय खेतर कहीये छीये तथा अढी द्वीप बाहार जे चंद्रमा सूरज ग्रह नक्षत्र तारा छे ते सर्व स्थीरभाव छे, ज्यां सूरज छे त्यां सदाय दिवस रहे छे, चंद्रमा छे त्यां सदाय रात रहे छे, तथा चंद्रमा सूरजनुं पचास हजार

जोजननुं आंतरु रहे छे एटले श्रेणी वंध रहे छे एम असंख्याता द्वीप समुद्रनुं जाणवुं.

शिष्यवाक्य—स्वामीं ते असंख्याता केटला हशे.

गुरुवाक्य—अढीसागरोपमना जेटला समय तेटला ए द्वीप समुद्र छे तेनो विस्तार अधिकार जीवाभिगम थकी जाणजो. एटले तिर्छा लोकनो अधिकार कह्यो. हवे उर्ध्व लोकनो कहीयेछीये, त्यां पेहलुं देवलोक सुधर्मनामा छे, त्यां बत्रीश लाख वैमान छे सर्वे रतनमय छे, ते थकी उत्तरनी दिशे बरोबर इशान देवलोक छे तेने विषे अठाविश लाख वैमान छे, तेना इंद्रनुं नाम देवलोकने नामे समजी लेवुं. सर्वेने विषे ते बे देवलोक लगडीने आकारे छे तेना उपर सनतकुमारनामा देवलोक दक्षणदिशाए छे तेने विषे बारलाख विमान छे तेने विषे देवांगनानुं उपजवुं होय नाहि, तथा आगलना देवलोकमां पण उपजवानुं नथी ते थकी उत्तर दक्षणने विषे महेंद्रनामा देवलोक छे तेने विषे आठ लाख विमान छे, तेना उपर चोथु पांचमुं ब्रह्मदेवलोक छे, तेने विषे आठ लाख विमान छे, तेना उपर पांचमुं ब्रह्मदेवलोक छे तेने विषे चार लाख विमान छे तथा कृष्णराजि त्यां छे, तेने विषे नवलोकांतिक देवनां नव विमान छे, जे तिर्थंकरनी दिक्षानेसमे उपदेश करवा आवे छे ते देवोनो रहेवास त्यां छे, ते देवलोक पांच राज लांबु पहोळुं छे तेना उपर छटुं ललीतांग नामा देवलोक छे, तेने विषे पचाशहजार विमान छे तेना उपर सातमुं महाशुक्रनामा देवलोक छे तेने विषे चालीस हजार विमान छे. तेना उपर आठमुं सहसारनामा देवलोक छे, तेने विषे हजार विमान छे तेना उपर अनंतनामा नवमुं देवलोक छे, ते थकी उत्तरादिसी दसमुं प्राणतनामा देवलोक छे, ते बे देवलोक मलीने चारसें विमान छे, ते बंने देवलोक मलीने प्राणतनामा एक

इंद्र छे, ते उपर आरणनामा देवलोक दक्षिण दिशामां छे, ते थकी उत्तरादिशाने विषे अच्युतनामा वारमुं देवलोक छे, ते वे देवलोक मलीने त्रणसें विमान छे ते वे देवलोक मलीने अच्युतनामा एक इंद्र छे, ए वार देवलोकने कल्प कहीये ते उपरनाने कल्पातीत कहीये, तेनो विचार कहीयेछीये, ते वार देवलोक उपर नव ग्रैवेयक छे तेना प्रथम त्रण ग्रैवेयक पहेलुं वीजुं त्रीजुं ए त्रण मलीने एक प्रथम त्रिक कहीये, ते पहेला त्रिकनां एकसो अगीयार वैमान छे तथा वीजात्रिकनां एकसोने सात विमान छे, तथा त्रिजात्रिकनां सो विमान छे, ते त्रणेत्रिकमलीने नवग्रैवेयक कहीये ते नवग्रैवेयकमलीने ३१८ विमान छे ते उपर पांच अनुतर विमान छे, तेनां नाम विजय, विजयंत, जयंत, अपराजित, सर्वार्थ सिद्ध, ते मध्ये विजयादिक चारविमान चारादिशाने विषे छे, अने पांचमुं सर्वार्थ सिद्धनामा विमान लाख जोजन लांबु पहोलुं मध्यभागमां छे, ते विमाननी धजाथकी वार जोजन उपर सिद्ध सिला छे ते मध्यमां आठजोजन जाडी छे, छेडे माखीनी पांख जेवी पातली छे ते सिद्धसिला उपर एक जोजनना त्रेविश भाग मुकीनें चोवीशमा भागने विषे सिद्ध परमात्मा छे, ते अलोकने अडीने रह्या छे आत्मस्वरूपी छे, अनंत सुखमय छे जन्मजरा मरणना फेरा टल्या छे, ज्ञानरूप ज्योतिमय निरंजन निराकार, अलख अजर परमात्मा, एवा सिद्ध भगवंत त्यां वसे छे तथा पहेला वीजा देवलोकना देव तो मनुष्य तिर्यंच पृथ्वी पाणी अने वनस्पतिमां उपजे, तथा आठमा देवलोकना देव मनुष्य तिर्यंचमां उपजे. अने तिर्यंचना जीव आठमा देवलोक सुधी जाय, ते उपरनादेव मनुष्यगतीमां आवे तथा श्रावक तथा आजिवीका मतिना वारमादेवलोक सुधी जाय तथा व्यवहार साधु नवग्रैवेयक सुधी जाय.

शिष्यवाक्य—व्यवहार साधु शामाटे कह्या.

गुरुवाक्य—जेने आत्मस्वरूपनी ओळखाण नथी अने व्यवहारथकी तपक्रिया कष्टचारीत्र पाले छे ते जीवने हजु सुधी समकित पण प्रगट्युं नथी, ने मिथ्या द्रष्टि छे ते कोइ भवी छे अने कोइ अभवी छे, ते सर्वे एवा व्यवहार कष्टथकी नवग्रैवेयक सुधी जाय पण कांइ तेना आत्मानुं कल्याण थाय नहि. ते जीव तो अनंतो कालसंसारमां रखडवाना जाणवा, माटे तेने व्यवहार चारित्रीया कहिये, तथा निश्चे चारित्रीया पांच अनुत्तर विमान तथा सिद्ध पण जाय, हवे ते चउद राजलोक उंचपणे छे, ते मध्ये एक राज लांबा पहोला पणे चउदे राजसुधी तेने त्रश नाडी कहीये, परंतु सिद्धसिल्लाए गए थके पिस्तालीस लाख जोजन लांबी पहोली छे एज त्रसनाडीने विषेज त्रस जीव छे बाकी सर्वे लोकने विषे पांच स्थावर भरेला छे, ते माटे हे चेतन एज लोकने विषे कोइ आकाश प्रदेश तें जन्म मरण कर्याविना छोड्या नथी.

शिष्यवाक्य—सर्व लोक कहेतां सिद्ध पण भेगा आव्या तो शुं सिद्धना भेगा बीजा जीव छे ?

गुरुवाक्य—सिद्धना भेगा पांचे स्थावर सुक्ष्म तथा बादर वायुकाय त्यां छे. ते मध्ये चार स्थावर तो असंख्याता छे अने सूक्ष्म वनस्पति ते नीगोदकहीये ते जीव अनंता छे.

शिष्यवाक्य—ते जीव सिद्ध क्षेत्रमां रह्या छे, तेने कांइ सिद्धना सुखनो भाग आवतो हशे ? अथवा कांइ सिद्धना जीवने ए बाधा पीडा करता हशे ?

गुरुवाक्य—सिद्धना सुखनो भाग एने आवे नही, तेम कांइ ए सिद्धना जीवने बाधा पीडा करे नही यथाद्रष्टांत जेमचंद्रमानुं अजवाळुं छे ते अजवालानुं सुख कांइ बे आंखे अंध छे तेने होय

नही तेम ते अंध कांइ चंद्रमाना अजवालाने बाधा पीडा करी शकतो नथी, तेम ते जीव रह्यो छे ते आपआपणा कर्मने वश दुख पीडामां रहेछे, ते अंधरूप जाणवा तेने सिद्धना सुखनो भाग क्यां थकी होय तथा सिद्ध जीव नीराकार पोताना स्वरूपरमणी छे तेने ए बाधा पीडा करवा समर्थ केम थाय ? ते अजवालारूप छे हे चेतन एवो जे कोइ लोक तेने विषे तुं अनंतकाल परिभ्रमण करे छे, तो हवे तुं एवुं लोकनुं स्वरूप जाणीने हजु तुं ए लोकथी अळगो थवा केम इच्छतो नथी, जो तुं समज्यो होय तो ए लोकथी उदाश थइने पोताना स्वरूपनी ओलखाण कर एज तने श्रेयकारी छे, एथीज तारी मुक्ति छे, एवी रीते लोक स्वरूप भावना भाववी.

हवे अगीयारमी बोधि दूर्लभ भावना कहेतां बोध बीजनुं पामवुं, ते घणुं मुश्केल छे ते कांइ सर्व गतिने विषे पामवुं थतुं नथी ते ठेकाणां बतावीये छीये. जे पांच स्थावर सूक्ष्म बादरने विषे तो अव्यक्तपणुं छे, तथा विगलेंद्रिने विषे पण अव्यक्तव्य जेवुंज छे, जेने विषे मन तथा श्रोत इंद्री छेज नही तो धर्मनुं सांभलवुं अने विचारवुं शा थकी करे ? तथा तिर्यंच पंचेंद्रीने विषे समूर्छीममां तो धर्म छेज नही तथा गर्भजने शास्त्रवाला लखे छे के समकित मूल अगीयारव्रत होय, ते हशे त्यारे केहेता हशे परंतु हालना समाने विषे तो कांइ दीठामां आवतुं नथी, अने ते जीवने तो छेदन भेदन, मारकुट भुखतरश ताहाडतडको एम दूख सेहेतांज दीन जाय छे, तथा नारकीने विषे तो गुरुनी जोगवाइ छे ज नही, तो ए जीव धर्म शानुं पामे. तथा ए जीव छेदन भेदननां माहा आकरां दुख वेठतां थकां विचरे छे समय मात्रनुं सुख तो छे नही तो धर्म शा थकी पामे ! तथा देवगतीने विषे पण चारित्र धर्मनी शास्त्र पण ना पाडे छे तथा श्रुत धर्म हशे पण कोइ देवने हशे,

परंतु घणा देवता पोताना विषय सुखमां ज भवहारी जाय छे तथा जे अकर्म भूमी तथा अंतरद्वीपना मनुष्यने तो धर्म छे ज नहीं तथा जे कर्म भूमीनां क्षेत्र एकसो सीत्तेर विजय छे ते अकेक्की विजयमां बत्रीस बत्रीस हजार देश छे, ते मध्ये एकत्रीस हजार नवसें साडा चुंवोत्तेर देश तो अनार्य छे तेमां कोइ जीव धर्म पामे, ते ना कहेवाय नही परंतु बहुलताएतो न ज पामे तथा जे साडी पचवीस देश आर्य छे तेमां पण वाघरी भील कोली प्रमुख जीव अनार्य घणा वसे छे, अने आर्य जीव तो घणा थोडा छे, तेने पण सुगुरुनी जोगवाइ घणी मुश्केल छे, शा माटे के पृथ्वी उपर पाखंड धर्म घणुं प्रवर्ते छे, अने जिन धर्म थोडुं प्रवर्ते छे ते जिनधर्मने विषे पण पाखंडी भेख धारी घणा दीसे छे, जे आरंभ परिग्रहमां डुब्या पड्या छे, अने जे वीतराग भाषित वस्तु धर्मनी ओलखाण करावनारा एवा जे सुगुरु ते तो कोइक दीसे छे अहीयां कोइक केहेशे के एकवीस हजार वरस सुधी भगवाननुं धर्म चालशे ते प्रमथकी चालशे एवुं कहेशे ते महा मीथ्यात्वी छे ने भगवानना मारगना चोर छे शामाटे जे भगवाने आरंभ परीग्रहवालाने साधु कह्या नथी तो ते थकी धर्म शानुं रहे ? धर्म तो साधु मुनिराजथकीज रेहेशे.

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे प्रथम जे क्रिया व्यवहार पाले,आरंभ परिग्रहथकी वेगला रहे, तेने तो तमे साधु पणानी ना पाडी हती तो हवे कया साधु मुनिराजथकी धर्म रहेशे.

गुरुवाक्य—हे भद्र अमे जे ना पाडी ते ज्ञानहिण जे खोटो क्रिया आडंबर करीने चाले तेनी अमे ना पाडी हती ते श्री सुमतो ग्रंथने विषे सिद्धसेन दिवाकर एवुं कही गया छे, तथा श्री भगवतीजीने विशे सुधर्मास्वामी एम कही गया छे, कह्युं छे जे

गीतार्थ होय तेने साधु कहीये, अथवा ते गीतार्थना कहेण प्रमाणे विचरे तेने साधु कहीये ते विनाना जेटला विचरे छे ते घणी कष्ट क्रिया तप लुखाशपणुं राखे छे, तोय पण तेने साधु कहीये नहि. ए श्री वीरना मुखनां वचन छे ते वारे कोइ कहेशे जे आजने काले बे अक्षरना जाण पंडितपणुं धरावता एवा भेखधारी पण छे तेने साधु कहीये के ना कहीये ? तेनो उत्तर जे एवा बे अक्षरना जाण थइ ने जे आरंभ परीग्रहथकी अलगा न थया तेने महा-मिथ्यात्वी कहीये. ने महा अज्ञानी कहीये तेनुं भण्यु सर्व धुलमां गयुं ते कांइ लेखे आव्युं नहि, ते श्री उत्तराध्ययनजीना अगीयारमा बहुश्रुत नामा अध्ययनने विषे एवुं कह्युं छे, तथा श्री आचारांगजीमां तेनी साथे यावत्ठल्लेजवा सुधीनीना पाडी छे, तथा श्री आवश्यक निर्युक्तिने विषे श्री भद्रबाहु स्वामिए एवुं कह्युं छे, के जे एने वांदे ते अनंता भव संसारमां रखडे तथा श्री भगवतीजीना आठमा सतकने विषे एने जे आहार पाणी आपे ते अनंता भव रखडे, तेमज श्रावकना प्रतिक्रमण ने विषे एने आहार पाणी आपे तेनी आलोयण गुरु पासे मागी छे एम यावत् घणा शास्त्रने विषे एने निशेध्या छे, माटे एने साधु न कहीये तथा प्रत्यक्ष पणे समजो के जे पुरुष पोते कुवो जाणे छे ते धणी कांइ चालतो कुवामां पडी जाय ? जे न जाणे ते पडे, जाणे ते पडे नहि, तेम जे पुरुषने ज्ञाननुं जाण पणुं होय तो ते पुरुष अव्रतने केम शेवे, माटे ए शेववावाला पुरुष पासे ज्ञान छे ते पण अज्ञान छे, तेवा जे भेखधारी पाखंडी तेना भाख्या धर्म मार्ग उपर चाले तेने पण कांइ धर्म पाम्यो कहीये नहि ते अधिकार श्री महानिसीथ सूत्रने चोथे अध्ययने नागील सोमिलनो अधिकार छे, ते जोजो, माटे सुगुरुविना धर्म होय नहि, ते सुगुरु ते बहुश्रुतज्ञानी पुरुष आरंभ परीग्रहथकी वे-

गला होय तेने सुगुरु कहीये ते सुगुरु सदायकाल सर्वे क्षेत्रे ना होय, एतो कोइक क्षेत्रे कोइक अवसरे मळे. ते चोथे आरे पण कोइक अवसरे मळता. ते आधिकार महानिसीथ सूत्रथकी जाणजो. एवा कदापी कोइ अवसरे सुगुरुनुं मळवुं थाय तो त्यां तेर काठीया आवीने नडे ते थकी गुरु दर्शन करी शके नहि तो वाणी सांभळवी तो क्यां थकी? कदापि कोइ जीव जबरो थइने तेर काठीआने दूर करीने गुरु पासे जाय तो पण शणगारादिक रस कथाना लोलुपी थका धर्म पामी शके नहि अथवा केटलाक जीव बेठा थका उंघे, अथवा केटलाक जीवकथामां चार प्रकारनी वार्ता लेइ बेसे ते थकी धर्म सांभलेज नहि. एम करतां ए सर्व कारण ने दूर करीने धर्म सांभलवा बेसे तो पुर्वे कुगुरु स्वदर्शनना अथवा अन्य दर्शनना तेने जे भरमावे छे तेथी तेने सुगुरुनुं वचन रुचे नहि यथा द्रष्टांतेः—एक नगरने विशे राजा महा भक्तिवान अने पंडितना वचननो लोलुपी अने स्वभावे भद्रीक हतो, ते जे जे पंडित लोक आवे तेने वडे आडंबरथी हाथी उपर बेसाडीने घेर तेडी लावे तेने पांच रात्री राखी शेवा भक्ति करी धर्म तेनी पासे सांभलीने तेने पांच रुपैयानो माल देइने भली रीते विदाय करी आवे, एम जे जे पंडित आवे तेने एम करे, तेमां एक ब्राह्मण पंडित आव्यो ते स्वभावे कपटी छे ते मनमां एवुं विचारतो हूवो जे आ राजा बहु भाक्तिवान अने बहु दानेश्वरी छे तो ए राजा महारे वश रहेतो घणुं सारुं. तो हुं जो एने विलो मुकीने घेर जइश तो ए राजा भद्रीक छे ते बीजाने वश थशे एम विचारी त्यां थकी जाय नहि. एम करतां केटलांक वर्ष वहि गयां ते वारे मनमां विचार्यु के आपणे ग्रहस्थ ठर्या ते घेर गया विना तो चाले नहि माटे हवे घेर तो जवुं पण राजा आपणे वश रहे एवुं करीने जवुं एवुं वि-

चारी राजा पासे आज्ञा मागी तेवारे राजाए कह्युं के सुखे थकी पधारो हुं तमने शक्ति अनुसार विदायगिरी करुं तेवारे ब्राह्मणे ए वात कबुल करी. राजाये विदायगिरी करी ते वारे ते पंडित राजा प्रत्ये कहेतो हवो जे तुं घणो भद्रीक छे, अने घणो दानेश्वरी छे पण तने हजु पंडितनी परीक्षा नथी, पण हुं तने शास्त्रमां कोइक रीतना अर्थ छे ते देखाडुं पण ताहारा पेटमां रहे तो. कोइने कहे माटे ते देखाडवा जेवुं नथी, ते वारे राजा बोल्यो जे आवडी वधी सर्व राज्यनी वार्ता माहारा पेटमां रहे छे तो शास्त्रनी वार्ता हुं कोइने केम कहीश? माटे मने कृपा करीने देखाडो. ते वारे पंडित ना मुक्कर गयो के ए वात तने कहेवाय नहि अने तुज थकी जीरवाय पण नहि एम कहीने राजाने घणो मोह चडाव्यो, ते वारे राजा घणो आग्रह करीने वळग्यो, ते वारे ते पंडिते घणो बंदोवस्त करीने राजाने गीतानो पाठ देखाडयो, ते मध्ये एक शब्दनो अर्थ पूर्वे जे थतो हतो अने शब्दनो अर्थ पण एज हतो ते कहीने देखाडयो. अने पछी कह्युं के आ अर्थ तो अमारे सर्व लोकने समजाववानो छे पण पंडित लोकना समज्यामां ए शब्दनो अर्थ एवो छे के सींके बेठी देवी चणा चावे एवो अर्थ पंडितोना जाणवामां छे बीजाना जाण्यामां नथी अने पंडीत बीजाने जणावता पण नथी पण तारी घणी भक्ति जाणीने में तने ए अर्थ कह्यो छे पण तुं कोइनी पासे कहीश नहि अने ए शब्दनो एज अर्थ करे तेने पंडित जाणजे बीजाने पंडित जाणीश नहि.

ते पंडीत एवुं शल्य घालीने पोताने घेर गयो त्यार पछी जे जे पंडीत आवे तेने राजा बहु आडंबरथी लावीने ते गीताना पाठना शब्दनो अर्थ करावे ते एने पूर्वे पेलो पंडित शल्य घालीने गयो ते अर्थ तो कोइ थकी थाय नही त्यारे ते पंडितोने नीर्भ्रछी अपमान

करीने काढे, ते वात देशमां प्रसिद्ध थइ जे राजा पूर्वे पंडितोनुं बहु मान पूजा करता ने हमणां तो सर्व पंडितोने नीभ्रंछे छे ते वात काश्मीरमां एक पंडित सर्वोपरी शास्त्रनो जाण, सरस्वतीनो उपाशक तेने सांभलीने एवो विचार थयो जे हुं जइने राजाने ठेकाणे पाडुं ते वारे रातने समे सरस्वतीए आवीने ते पंडीतने एवुं कह्युं जे एने आगल पंडित शब्द देइ गयो छे, ते शब्दना अर्थमां ते वात कंइ छे नही तो ते शब्दनो अर्थ तुं क्यां थकी करीश के सींके बेठी देवी चणा चावे माटे तुं पण जइने अपमान पामीश ते वारे ते पंडिते देवीने कह्युं एज कारण छे के बीजुं छे, ते वारे देवीए कह्युं एज कारण छे ते वारे पंडिते कह्युं के हवे में वात जाणी छे तो ठेकाणे पाडीने आवीश ते वारे ते पंडीत ते नगरे आव्यो ते पंडित बहु नामीचो देशचावो छे, तेथी राजा बडे आडंबरे करीने लाव्यो अने ते गीतानो पाठ पाछो मोहोडा आगल धर्यो ते वारे मूल अर्थ हतो ते कर्यो ते वारे राजा बोल्यो के बीजो कांइ अर्थ एनो हशे? ते वारे पंडित बोल्यो हा छे, ते वारे पंडिते एवी रीते सात आठ अर्थ ए शब्दना कर्या तोपण राजानुं मन कांइ रीझ्युं नही ते वारे पंडित बोल्यो के ए शब्दना अनेक अर्थ छे पण एनो मूल अर्थ एक छे तेतो अमे पंडित लोक कोइने देखाडता नथी ते वारे राजा घणा आग्रहे करीने वलग्यो, जे ए अर्थ तो मने जरुर देखाडवो पडशे चालो हुं एकांत आवुं ते वारे पंडीत एकांत जइ कोइने कहेवुं नहीं एवो बंदोवस्त करीने अर्थ कर्यो जे सींके बेठी देवी चणा चावे ते वारे राजा बहु खुशी थयो, अने कहेवा लाग्यो जे पुर्वे फलाणा स्वामी आव्या हता तेणे ए अर्थ कर्यो हतो के तमे आज ए अर्थ कर्यो ते वारे पंडीते कह्युं जण जण ए अर्थ जाणता नथी ए तो पुरो पंडीत होय ते जाणे, ते वार पछी पंडीत मनमां विचारवा

लाग्यो जे ए मुरखो आ राजाने शल्य घाली गयो ते अर्थपंडीत क्यां थकी लावे, माटे एनो शल्य कहाडवो एम विचारी राजाने व्याकरण पंच काव्य सिद्धांत कौमोदी सुधी भणाव्युं पछी गीताना पाठनो राजा पासे अर्थ कराववा मांडयो ते वारे मूल शब्दनो अर्थ हतो ते आवे पण पेलो कल्पित अर्थ हतो ते आवे नही ते वारे पंडीते कह्युंके हे राजा तुं काचो छे तेथी ए अर्थ तने मांहि सुजतो नथी ते वारे राजा बोल्यो जे हुं काचो छुं ते तमे कोहोछो ते सत्य छे, पण अर्थ तो हुं कहुंछुं तेज थशे एम मांहोमांहे विवाद घणो थयो, ते वारे पंडीत बोल्यो जे एज अर्थ सत्य छे तो तें आटला बधा पंडीतोनुं अपमान केम कर्युं? ते वारे राजा बोल्यो जे स्वामी ते मुरखो मने शल्य घाली गयो ते हुं शुं जाणुं ने हवे तो तमे मने विद्यारूपी आंख्यो दीधी तेथी हवे मने सर्व यथार्थ भासन थयुं हवे कांइ हुं ठगाउं नहि, ते द्रष्टांते जे एवा कुगुरुना भरमावेला जे जीव छे तेने सुगुरुनां वचन नज रुचे, जेम जे धणीने ज्वर आवतो होय तेने अन्ननी रुची ना थाय, तेम कुगुरुना संगती लोकोने धर्म उपर रुची होय नाहि. एम करतां कोइ कुगुरुनो भरमावेलो नहोय तो ते पोते आप डाहो होय, ते पोताना डाहापण आगल सुगुरुनां वचन हइये धरे नहि अथवा कोइ जीव अज्ञानी होय तो तेने स्वभावेज रुची आवे नहि अथवा कोइ जीवना मनमांथी शंका कंखा मटे नहि एटलां बधांए कारण ज्यारे मटे अने पछी सुगुरुनुं वचन सांभले तो तेने धर्मनी प्राप्ति थाय, तेमां पण केटलाक जीव सांभलीने हइए धरे नहि तेने पण कांइ गुण थाय नहि, ते आजना कालने विषे केटलाक जीव एवा ज नजरे आवे छे, अथवा केटलाक जीवतो कुलाचार जाणीने धर्म प्रमुख सांभलवुं करे छे, तथा केटलाक जीव अभिमानना ली-

धा थका चर्चा वार्त्ता शीखे छे, पण पोतेपोताना स्वरूपनी ओलखाण करता नथी अथवा केटलाक जीव द्वीप समुद्र तथा क्रिया आचारनी वार्त्ताओ जाणीने भण्या कहेवरावे छे तथा कोइ समजु कहेवडावे छे, परंतु निश्चेथी कहेतां ते पण अज्ञानीज छे तेने कांइ धर्म पाम्यो कहिये नहि जे धणी पोताना आत्मानुं वस्तु धर्म यथार्थ सत्तागत छे तेवुं जाणीने तेने सद्दहे तेमांज भासन रमण करे तेने बोध पाम्यो कहीये ते तो तेवा ज्यारे सद्गुरु मले ने तेनी शेवा करे तो मले. कोइ जीवने सद्गुरुविना पोताना स्वभाव थकी मले, शा माटे के समकित बे प्रकारनुं कह्युं छे, एक गुरु उपदेश थकी तथा बीजु नीश्रग कहेतां स्वभाव थकी मले. माटे ए बोध पामवो जगतमां घणो दुर्लभ छे अने आ मनुष्य भवमांज विशेषे करीने छे एवी जे भावना भावे तेने बोध दुर्लभ भावना कहिये.

हवे बारमी धर्म भावना कहिये छिये एटले धर्म कहेतां "वथ्थु सहावो धम्मो" एटले वस्तुनो स्वभाव ते धर्म त पोते पोतानी वस्तुनो स्वभाव ते पोतानुं धर्म कहीये कदापि कोइ परवस्तुना स्वभावमां पोतानुं धर्म जाणे ते मूर्खाइ छे, केमके परवस्तुना स्वभावमां परनुंज धर्म रह्युं छे तेम अहिंयां समजवुं के आत्मानुं धर्म ते आत्मामांज रह्युं छे, ने पुद्गलनुं धर्म ते पुद्गलमांज रह्युं छे ते कोइ पुद्गलना स्वभाव थकी साधीने पोतानुं धर्म करवा चाहे छे ते भूल छे, एटले पुद्गल थकी साधीने पोतानुं धर्म ते शुं करे छे ते देखाडीये छीये दया दान पूजा व्रत नेम तप सामायक पोसो प्रतिक्रमण इत्यादिक जे पुद्गल थकी साधीने पोतानुं धर्म माने छे ते भुल छे.

शिष्यवाक्यः—दयादानादिक पुद्गलथकी साधीने केम कहो छो ते शुं आत्माथकी नहि.

गुरुवाक्यः—हे भद्र ए आत्माथकी नहिज. ए पुद्गलथकी सधाय ते देखाडीये छीये, जे छकायनी दयापालवी ते पुद्गलने रोकीने पलाय तो ते पुद्गलनो स्वभाव थयो, तथा दानेदवुं ते देवुं ते पुद्गल छे ने देवावाला ते पण पुद्गल छे, ए सर्व कायाथकीज थाय तथा पुजा जे करवी ते पण कायाथकी थाय तेम व्रतनियम तप प्रमुख सर्वे कायाथकी नीपजे छे ते कांइ आत्माथकी नीपजतुं नथी.

शिष्यवाक्य—काया थकी निपजे छे पण कांइ आत्माना उपयोग विना नीपजे छे ?

गुरुवाक्य—जे तें आत्मानो उपयोग मान्यो ते तारी मोटी भुल छे शा माटे जे अहियां तो मनना परिणाम भेगा भलीने कारज करे छे.

शिष्यवाक्य—मननी अने आत्मानी जूदी केम खबर पडे ! शुं जाणीये के ए मनना परिणाम छे ! के आत्मानो उपयोग छे ! अमे बेउने एकज जाणीए छीए.

गुरुवाक्य—अहो भद्र हजी सुधी तने मन आत्मानी जुदी खबर पडी नथी तो तुं धर्मनी वार्ता शानी पूछेछे ने तुं धर्म शुं पाम्यो जे जड चेतननो विभाग थयो नाहि त्यां सुधी समकित क्यां छे अने समकित विना धर्म ना होय, अने धर्म विना मुक्ति शानी मले माटे तुं पहेली जड चेतनना विभागनी समजकर.

शिष्यवाक्य—स्वामी कृपा करीने मने भेद ज्ञान देखाडो जेथी हुं आत्मानुं अने मननुं स्वरूप जुदुं जुदुं जाणुं.

गुरुवाक्य--हे देवाणुं प्रिय निद्रा वीकथा-अने प्रमाद तजीने एकाग्र चित्त थइने तुं सांभळ, जे आत्मा छे ते उपयोग ग्राही छे अने मन छे ते परिणामग्राही छे शास्त्रमां एवुं कह्युं छे के क्रिया ए, कर्म परिणामे वंध अने उपयोग धर्म एटले क्रिया छे ते कर्मनी खेंचनारी छे, अने परिणाम छे ते कर्मनो बंध पाडता छे, माटे ए वेउ तजवाजोग छे ने एक उपयोग छे तेथकी धर्म नीपजे. ते उपयोग जे छे ते स्वरूपने विषे जे रमणता करवी तेने उपयोग कहीये अने परभावमां पेसवुं तेने परिणाम कहीये एवी रीते उपयोगनी अने परिणामनी वहेंचण जाणवी.

हवे जे पुद्गलनो स्वभाव ते पुद्गलनुं धर्म कर्त्ता छे, ते थकी कांइ आत्मानुं धर्म थाय नहि शामाटे के पूर्वे जे दया प्रमुख भेद कह्या ते सर्वे पुद्गलथकी थाय त्यारे ने पुद्गलीक धर्म कहीये अने सर्वे धर्मवाला पोतपोतानी पुष्टि करे छे, तेम निश्चेमां ए जडजडनी पुष्टि करे छे, जे ए पूर्वलाभेद कह्या तेथकी शुं थाय ए ते शुभ कर्म उपार्जे तो शुभ कर्म ते पण जड छे, अने अशुभ कर्म ते पण जड छे तो एणे जडे जडना वंशनो वधारो कर्यो, पण कांइ आत्मगुणनो वधारो ए थकी थाय नहि आत्मगुणनो वधारो तो पोताना उपयोगमां रह्या थकीज थाय पण पुद्गलना कामोमां आत्मानो उपयोग होय नहि तेने धर्मी केम कहीये.

शिष्यवाक्य—जो पुद्गलना कामोमां आत्माना उपयोगनी तमे ना पाडोछो पण तेरमा गुण ठाणा सुधी पुद्गलनां कामो तो ते जीव करे छे तो ते जीवतो कांइ अधर्मी छे नहि.

गुरुवाक्य—जे धर्मी पुरुष पुद्गलना कामो करे छे तेमां पोतानो उपयोग नथी शा दृष्टांते के जेम कोइ पुरुषने राजाए मारवा कहाडयो ते पुरुषने लाडवो खावा आपे छे तेने कांइ लाडवो

खातां लाडवामां एनुं चित्त छे? तेनुं चित तो लाडवामां नथी श्रा माटे के तेने तो मारवानो महोटो भय छे, तेम जे ज्ञानी पुरुष छे ते पुद्गलनां कामो करे छे, पण ते जेम पेलो पुरुष लाडवो खाय तेवी रीते करे छे, पेटमां समजे के ए कांइ महारु नथी पण पुद्गलनुं धर्म उदे आव्युं ते रोवयुं रहे नहि ते भोगवीने खरवे पण पोते भेगो भळे नहि. पोतपोताना आत्माना उपयोगमां रहे, जेम कोइ स्त्रीने पराया छोकराने धवरावनाने महिनो ठरावीने लाव्या छे पण तेना चितनो आणंद पोताना छोकराने धवडाववामां छे, अने पानो पण पोताना छोकराने देखीने आवे अने ते छोकराने जे धवडावे ते मनमां विचारे जे पेलानो महीनो खाइये छीये ते धवराव्या वगर चाले नहि. परंतु तेमां कांइ चित्तनो आणंद पण नावे, तेम कांइ पानो पण ना आवे. तेम आहियां ज्ञानी पुरुषने समजवो के पुद्गलना कामोमां भेगोनाभळे. हवे जे पुद्गलीक धर्मना परिणाम उठावीने आत्मीक धर्मनो उपयोग करवो ते ज्ञान दर्शन चारीत्र रत्न त्रयीनुं साधवुं अने तेना स्वरुपने विषे रमवुं तेने धर्म भावना कहीये. तेमां जे व्यवहार धर्मनी भावना भाववी तेथकी, शुभ आश्रवनुं उपार्जवुं थाय तेथकी आस्माशुभ कर्म बांधे आत्माभारे थाय पण कांइ आत्मानुं कारज सिद्ध थाय नहि अने निश्चे स्वरूपनी जे भावना भाववी तेथकी भावसंवर थाय, अने आत्माने नवां कर्म आवतांरोके अने तेना आत्मानुं कारज सिद्ध थाय, ए वातमां संदेह राखवो नहि एटले भावनाओ बारे कही.

हवे पांच चारीत्र कहीये छीये प्रथम समायक चारीत्र कहेतां जे स्वसमाधि एटले आत्मस्वरूपने विशे रमणता तेने स्वसमाधि कहिये.

शिष्यवाक्य—समाधी तो घणी करी तथा जोगनुं साधन

थाय त्यारे समाधी तो थाय छे अने तमे तो आत्मानी रमणताने समाधी कहो छो.

गुरुवाक्य—जे जोग साधन थकी समाधी चडावे छे अने खटचक्रनुं साधन करे छे. अने रुचक कुंभक प्रमुख साधी तथा सुरस्वासरुंधीने समाधी चढाववी तेने हठ समाधी कहीये, तेमां मेहेनत एक करोड रुपैयानी छे, अने प्राप्ती एक कोडीनी छे. कदापि कोइ कहेशे के तमे नथी मानता तेथी एवुं कहो छो, तेने कहीवे के भाइ अमारे तो ए वातनो रागद्वेष छेज नहि, अने अमारे मते पण अमे कहेता नथी, उमास्वामीकृत गुण स्थानक क्रमारोह ग्रंथ छे तेनी टिकाने विषे एनो विस्तार घणो छे ते जोशो तो तमने समज पडशे, माटे सहज समाधीनुं साधन करवुं, सहज तो आत्मानुं स्वरूपज छे तेनी जे स्वभावे रमणता थाय तेने सहज समाधी कहीये एवा जे समाधी वंत तेने सामायक कहीये ते सामायकना वे भेद सर्व विरती सामायक ते साधु ते सदाय एवी समाधिमांज रमणता करे अने देशविरति सामायक कहेतां श्रावक तेने समाधिमां निरंतर रही ना शके शा माटे के गृहस्थ तेथी निरंतर रमणता थाय नहि, तथा गुणठाणु पण पांचमुं तेथी ते प्रमाणे समाधि होय तेने सामायक चारित्र कहीये. तथा बीजुं छेदोपस्थापननामा चारित्र कहीये छीये. जे पूर्वे कही जे समाधि तेथकी भ्रष्ट थाय शाथी के पूर्व कृत कर्मना जोरथकी परिणामनी धारा फरे तेथी करीने आश्रव भावमां जीव जाय ते वारे समाधिगुण न रहे त्यारे सामायक चारित्र पण ना रह्युं, ते पाछो पोताना आत्मानो उपयोग देइने पूर्वकृत कर्मने छेदीने पाछो चारित्र स्थापन करे एटले ज्ञान दर्शनने विषे अखंड रमण करे तेने छेदोस्थापन चारित्र कहीये..

हवे त्रीजुं परिहार विशुद्धि चारित्र कहीये छीये एटले अशुद्ध-नो परिहार तेनो आत्मा विशुद्ध थाय एटले अशुद्ध जे राग द्वेषना परिणामने घटाडवुं उपाधिने घटाडवुं अने पोताना स्वरूपनुं निर्म-लपणुं करवुं, ते निर्मल शायकी थाय के भेद ज्ञान प्रथम प्रगटे त्यारे आत्मा निर्मल थाय, एटले भेद ज्ञान ते शुं कहीये जडचेतननी वेंहेंचण तेने भेद ज्ञान कहीये ते संक्षेपथकी देखाडीये छीये, जे रूपी साकार रागद्वेष क्रोध मान माया लोभ काम विकार इत्यादिक जे वस्तु छे, ते सर्वे जडना घरनी छे तथा ज्ञान दर्शन चारित्र आदि देइने जे वस्तु छे ते सर्वे चेतनना घरनी छे एम समजीने जडनी वस्तुने दूर करे ने आत्मानी वस्तु पोतानी जाणीने तेने विषे रमणता करे एटले जडनो परिहार आत्मानुं विशुद्धतापणुं तेनुं नाम परिहार विशुद्ध चारित्र कहीये तथा चोथुं सूक्ष्म संपराय चा-रित्र ते श्रेणीगत छे. एटले जीव श्रेणी आरोहे ते श्रेणी बे प्रकारनी छे एक उपशम श्रेणी बीजी क्षेपकश्रेणी उपशम श्रेणीनो करनारो जीव पाछो पडे, अने क्षपक श्रेणीनो करनारो जीव पाछो ना पडे. शा द्रष्टांते के जेम चुलानी तथा बीजी जग्याये अग्नि छे ते अग्निने एक पुरुष तो राख प्रमुख नाखीने दाबे ते कोइना जोवामां ना आवे के अहियां अग्नि छे एवी करे अने एक पुरुष पाणी नांखीने ते अग्निनो क्षय करे ते बेमां कोनी अग्नि प्रगट थाय के जे धणीये पाणी नांखीने अग्निनो क्षय कर्यो छे तेने कांइ अग्नि प्रगट थवानी छे नहि, अने जे धणीये राख नांखीने दाबी छे तेने ए अग्नि तो प्रगट थशेज, ते द्रष्टांते अहियां बे श्रेणीनुं स्वरूप जाणवुं. जे जीव आठमा अपूर्वकरणनामा गुणठाणे जाय त्यांथी श्रेणी बंधाय ज्यां सुधी सातमा गुणठाणामां होय त्यांसुधी कांइ श्रेणी प्राप्त थाय नहि. हवे जे आठमाने विषे श्रेणी छे ते श्रेणी कहेतां मुक्तिपुरने

विषे जवानो रस्तो, ते त्यांथी वे रस्ता छे एक जमणो अने एक डावो ते जमणे रस्ते चडे तो ते धणी ते नगरे पहोंचे तथा डावे रस्ते चडे ते रस्तो तो राननो छे ते केटलीक भोंय सुधी चाले पछी आगल तो मार्ग छे नहि तेवारे पाछुं फरीने मुल ठेकाणे आववुं पडे एटले अहियां जे जमणो रस्तो ते क्षपकश्रेणी कहिये डावो रस्तो ते उपशमश्रेणी कहीये. जे धणी उपशम श्रेणीये चडे ते धणी कषाय तथा मिथ्यात्वने दावतो चाल्यो जाय, ने जे क्षपक श्रेणीये चडे ते मिथ्यात्व प्रमुखनो क्षय करतो चाल्यो जाय, ते क्षयनो करनारो यावत् केवल पामी मोक्षे जाय, अने जे दावतो चाल्यो जाय ते अगीयारमा गुणठाणा सुधी जाय, पण आगल रस्तो छे नहि माटे तेने पाछुं फरवुं पडे, अथवा जो आवखुं आवी रह्युं होय तो काल प्राप्त थाय. हवे जे पाछो वले ते शा द्रष्टांते के जेम कोइ पंखीने पगे दोरी बांधीने उराडे छे ते पंखीने जेटली दोरी होय एटली भोंय उडे पण तेथकी आगल जवाय नहि अने ते दोरी वालो दोरी खेंचे एटले ठेकाणे आववुं पडे, तेम उपशमश्रेणी वालाने मोहनी कर्मनो नाश थयो नथी, एतो उपशमावेली छे ते प्रकृति पाछी प्रगट थइने ते जीवने अगियारमे गुणठाणेथी पाछो खेंचे एम जाणवुं. हवे ते बे श्रेणीने विषे सूक्ष्म संपराय चारित्र छे, तेनुं स्वरूप किंचित् देखाडीये छीये. हवे ते आठमे गुणठाणे गयोथको प्रथम हास्य, अरति, भय, शोक, दूगंछा ए षटकने खपावे तथा उपशमावे तेवारे पछी नवमे गुणठाणे संज्वलनो क्रोध, मान, माया, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंशकवेद खपावे तथा उपशमावे तेवारे दशमे गुणठाणे संज्वलनो लोभ रहे पण ते लोभ धनधान्यादिक जड वस्तुनो न होय, अत्यंत सूक्ष्म पोताना स्वरूप प्राप्तनो होय तथा अगियारमे गुणठाणे ते लोभ उपशमी गयो होय अथवा पोताना स्वरूपनी

प्राप्ति थवानो विचार मनमां थाय जे मारा आत्मानी मुक्ति करुं एवो लोभ थाय तो पाछो अगियारमेथी पडीने दशमे आवे.

शीष्यवाक्यः—स्वामी ए कांइ परभावमां तो पेठो नथी. पोताना आत्मानी मुक्ति ताकतां उलटो पाछो पड्यो ए शुं.

गुरुवाक्य—हे भद्र इहां आत्मानी मुक्ति विचारी ते साची वात पण एतुं नाम पण लोभ केहेवाय अने लोभ छे ते जड छे अने जड छे ते आत्माना गुणनो घात कर्ता छे माटे एटलोए लोभ समजुने न जोइये.

शीष्यवाक्य—स्वामी आत्मानी मुक्ति त्यां न विचारे तो त्यां शुं विचारता हशे.

गुरुवाक्यः—हे देवाणु प्रिय त्यां पोतानी परनी कशी खबर नथी, त्यां तो द्रव्य गुण पर्याय भिन्न भिन्न नोखा करे तथा गुण छे ते पर्यायमां संक्रमावे, अथवा द्रव्यमां संक्रमावे, अथवा गुण पर्याय बन्ने द्रव्यमां संक्रमावे. एवी रीते त्यां भेद ज्ञान तथा भेदाभेद ज्ञान छे. ते पोताना स्वरूप रमणज छे, तेने सूक्ष्म संपराय चारित्र कहीए. हवे पांचमुं यथाक्षायक चारित्र कहीए छांये ॥ एटले यथाक्षायक कहेतां यथार्थ क्षय कर्यो छे जेणे मोहनी कर्मनो एटले पूर्वे सूक्ष्म संपराय चारित्रने विषे दसमे गुण ठाणे सूक्ष्मनो जे लोभ रह्यो हतो ते लोभनो क्षय कर्यो एटले संपूर्ण मोहनी कर्मनो क्षय थयो तेवारे ते जीव क्षीण मोही थयो हवे ते जीवना मनना परिणामनो कल्लोल चडे नाहि शा माटे जे मदिरारूप मोहनीनो जे केफ हतो ते केफना जोरथी अनेक तुरंग उठता हता ते मोहनी कर्मनो क्षय थयो एटले घेलछा मांहेथी गइ तेवारे तेनो आत्मा थीर भाव थयो. जेम सरोवरनुं पाणी वायु बंध थये थके स्थीरभावे रहे तेम

ए आत्मानो उपयोग थीर भाव थयो एटले यथार्थ चारित्र थयुं एटले क्षायक कहेतां मोहनीनो क्षय कहीये थीर भाव कहेतां चारित्र कहीये ते यथार्थ कहेतां जेवुं सत्तागतने विषे वस्तुपणे हतुं तेवुंज प्रगटपणे थयुं, तेवारे तेने एकत्व भाव थयो जेम जलनी जे शितलता अने जल रसनो स्वाद अने जल ए त्रणएकज छे, रस स्वादने शितलतापणुं ते कांइ जल थकी जुदुं नथी, तेमज गुण पर्याय सहित तेज द्रव्य छे कदापी कोइ अहियां कहेशे के पाणी तो उनुं पण होय तेने कहीये के वीभावथकी पाणीमां उष्णता पेसे छे पण स्वभाव थकी नथी, जे अग्निना जोगथी पाणी उष्ण थाय पण अग्नि थकी अलगु करीये अने घडी ने थाय एटले शितपणुं थाय तेम आपणो आत्मा कषायादिकना जोगथकी कामी, क्रोधी, मानी लोभी अनेक नाम धरावे छे पण ते मोहनी कर्मनो नाश थयो ते वारे स्वभाविक नीर्विकल्प निरउपाधी थीर परिणामेज होय, एवुं ए भेद ज्ञान त्यां प्रगट त्यां कांइ आत्मा अने आत्माना गुण पर्याय जुदा नथी एटले ध्याताध्येय ध्यान एकत्वपणे भजे, एटले ध्येय पदार्थ परमात्मा ते पोतानो आत्मा तेज जाणवो, अने ध्यातापणुं पोतेज छे अने ध्यान ते पोतानो उपयोग छे, एम त्रणे एक रूपज त्यां ध्यान छे तेने यथार्थ कहीये. एटले यथाक्षायक चारित्र कह्युं. कोइ अहियां कहेशे के तमे व्यवहारनो भाग अहियां लाव्या नहि. नरवुं एक निश्चय पक्षनुंज तमे पोषण कर्युं, तेनो उत्तर जे अमे कांइ अमारा घरनी रीतनुं कर्युं नथी- जे परमात्माये भाख्युं ते अमे कह्युं छे. ते श्री भगवतीजीने विषे कालेसवीपुत्र अणगारने स्थविर मुनीये बेना प्रश्नने विषे सामायक ते आत्माने कह्युं छे अने संवर पण आत्मानेज कह्युं छे ते अधिकार वीस्तारथी त्यां जोजो एटले तमने समज पडशे, एवी रीते संवरना सत्तावन बोल कह्या तेमां

केटलाक बोल तो निश्चे आत्म स्वरूपी छे ते तो सदाय आत्माने सेववा लायक छे, अने ए सेवतां थकां नवुं कर्म पेसे नही ए वात निःसंदेह छे अने जे जे बोल व्यवहारना छे ते बाल जीवने वखाणवा लायक छे पण ए थकी आवतां कर्म रोकाय नही अने आत्मानुं कारज पण तेथी थाय नही ए कहेवा मात्र संवर छे अहींयां कोइ कहेशे जे तमे आवी रीते व्यवहारने मूलथी उखेडीने काहाडी नांखोछो, तो तमे एकांत वादी दीसोछो अने भगवंते तो एकांत वादीने मिथ्यात्वी कह्या छे, तेनो उत्तर जे अमे एकांतवादी छीये नही अमारे व्यवहारपक्ष घणो वल्लभ छे ने मानवाजोग छे, पण जे शुद्ध व्यवहारछे ते तो अमारे आदरवाजजोग छे, अने जे अशुभ व्यवहार अने शुभ व्यवहार तथा कल्प व्यवहार तेने कांइ आदरवानी अमने मतलब नथी शामाटे के परमात्माए संवरनी करणी करवी कही छे पण आश्रवनी करणी कही होय तो देखाडो, एटले शुभाशुभ व्यवहार छे ते तो आश्रव छे, अने कल्प व्यवहार छे ते तो सर्व सर्वना पक्षना ओलखाण करवाने वास्ते बांध्या छे, ते प्रत्यक्ष छए दर्शनना नोखा नोखा छे, तथा जिनमां पण श्वेतांवर दिगंवरना जुदा जुदा छे, श्वेतांबरने विषे पण गच्छ गच्छना नोखा नोखा छे, ते व्यवहारथकी तो कांइ फल मालम पडतुं नथी, फोगट काय क्लेश छे, जेम संसारने विषे नातनातना नोखा व्यवहार बांधेला छे, जे मुसलमानने विषे मरे त्यारे रुवे कुटे नहि, तेमज अंग्रेज लोकने विषे पण रोवुं कुटवुं नथी, तथा हिंदुलोकने विषे रुवे कुटे तथा तेना शोग पाले छे, ते देशदेशने विषे नोखी रीत छे, मारवाडने विषे हिंदु लोको रुवे छे, पण कोइ कुटतुं नथी, तेमज पूर्व उत्तरमां जाणवुं, तथा दक्षिण देशने विषे रुवे छे पण कोइ कुटतुं नथी, ने हाथघसे छे, अने गुजरातने विषे रुवे छे अने छाती माथां कुटे छे एवा देश

देशना व्यवहार छे, परंतु मुवेलां तो पाछां आवतां नथी, तथा जवाब पण कोइ देतां नथी, तो जे नथी रोतो तेनी पण एज रीत छे अने रुवे कुटे छे तेनी पण एज रीत छे, माटे ए कल्प व्यवहारनी एवी रीती जाणवी जो ए मुवेलां पाछां आवे तो एने कल्प व्यवहारना कष्टनुं फल मले सर्व मति कल्पना कल्प व्यवहार दिसे छे माटे एवुं परमात्मानुं वचन नथी के एवा फोगटीया व्यवहार करवा परमात्मानु वचन तो ए छे के अप्रमादिभावे विचरवुं, अने कल्प व्यवहारनी क्रिया प्रमाद गुण ठाणामां छे. प्रमाद तो तजवा कह्या छे, माटे ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता छे त्यां धर्म कहुं छे एटले वस्तुना स्वभावनुं नाम धर्म छे, पण कांइ क्रियानुं नाम धर्म नथी तथा क्रिया तो नव तत्वने विषे आश्रवमां गणावी छे, तथा ठाणंगजीमां पचीस क्रिया आश्रव कही छे तेमज समवायांग प्रमुखने विषे पण कहुं छे, तथा सुगडांगजीने विषे तेर क्रिया छे ते पण आश्रवमां कही छे, एम जेटली जेटली क्रिया छे तेने तो परमात्माये तजवीज कही छे. पण आदरवानुं क्यांही कहुं होय तो देखाडो, तथा जसवीजयजी उपाध्याये कियाने फांसी रूपे कहेली छे, तथा सर्व सूत्रनी टीकाने विषे तथा प्रकरण प्रकरणनी टीकाने विषे क्रियाने कलाप कहीने बोलावी छे माटे जे आत्मज्ञान छे ते सत्य छे ते भगवति प्रमुख सूत्र तथा सुमति प्रमुख ग्रंथने जुवो, अने पयोग मांहे लगावो अने सुगुरुनां पासां सेवो तो समज्यामां आवे, तो आहिंयां कहेशो के बीजा शुं बहुश्रुत नथी, तेनो उत्तर सुमति ग्रंथने विषे एवुं कहुं छे के, जे घणुं शास्त्र जाणे अने घणुं समजे अने घणा शिष्य घणो परिवार वधारे तथा घणा श्रावक श्राविकानी पर्षदा मेलवीने उपदेश दे अने आत्मस्वरुपनो उपयोग नथी तो ते घणो संसार रखडसे अने जिनशासननो वेरी जाणवो

माटे जेने आत्मा उपयोग नहि तेनुं भण्युं पण कोइ लेखामां नहि ते माटे आत्मज्ञानी बहु श्रुत होय तेनां पासां सेवो एटले समज्या- मां आवशे तथा आनंदघनजी पण एम कही गया छे के आत्म- ज्ञानी होय तेने साधु कहीये, बीजाने तो द्रव्य लिंगी जाणवा. इ- त्यादिक घणां शास्त्र तथा घणा पंडितनां वचन जोशो तो तमने समज पडशे एम परीक्षा करीने आत्मारूप संवर तत्वने आदरवो पुद्‌गलीक भावरूप आश्रव छे तेने त्याग करवो तेना आत्मानुं कारज थशे एटले संवरतत्व कह्यो.

हवे निर्जरा तत्व कहीये छीये एटले निर्जरा कहेतां जे आत्मा- थकी कर्मने खेरववां तेना बे भेद छे एक बाह्य एक अभ्यंतर ते बाह्यथकी कर्मने खेरववानी भजना छे, अने अभ्यंतरथकी कर्म निश्चेज खरे हवे ते बाह्य अभ्यंतर तपनां नाम लखावीये छिये. अ- णसणतप १, उणोदरीतप २ वृत्ती संक्षेप ३ रसत्याओ ४ कायक्लेश ५ संलीनता ६ ए छ बाह्य तप कहीये. हवे अभ्यंतरतप कहीये छीये. प्रायश्चीत १, विनय २, वेयावच्च ३, सज्जाय ४, ध्यान ५, काउ- स्सग ६ ए छ अभ्यंतर तप कहीये. हवे प्रथम अणसणतप क- हीये छीये. ते अणसणतप बे प्रकारना छे, एक थोडाकाळनो अने बीजो जावजीवनो ॥ थोडाकाळनो छे तेना अनेक भेद छे, उपवास छठ अठम यावत् छमासीतप, तेने विषे केटलाकनां नाम कहीये छिये. रत्नावळी तप तेनी विगत. प्रथम एक उपवास करे पछी पारणुं, पछी बे उपवास, पछी पारणुं, पछी त्रण उपवास, पछी आठ छठ, पछी एक उपवासथी मांडीने सोळ उपवास सुधी चडे, पछी चोत्रीस छठ करे, पाछा सोळ उपवासथी एक उपवास सुधी उतरे, पाछा आठ छठ करे, पछी अठमथी एक उपवास सुधी उतरे एटले एक प्रवाडी थाय, ते एक वरस त्रण मास बावीस दिवसे एक प्रवाडी

पुरी थाय. एवी चार प्रवाडी करवी ते बीजी प्रवाडीये त्यां विग-य ना वावरे, त्रीजी प्रवाडीये पात्रने लेप लागे एवी वस्तु ना वावरे, चोथी प्रवाडीये आंबिल करे, एवी रीते ए रत्नावलीतप पांच वरस एक मासने अठ्ठावीस दिवशे पुरो थाय, ते एक प्रवाडीये अठ्यासी पारणां आवे एम चार प्रवाडीये थइने त्रणसेंने बावन पारणां आवे तेनो यंत्र. नं. १ जुओ.

हवे कनकावली तप कहीये छीये. ते पूरवे जे रत्नावली तप तेज प्रमाणे करवानो फक्त फरक एटलो के जे आठ आठ छठ्ठ कह्या छे ते अठ्ठम करवा. अने चोत्रीस छठ्ठ कह्या ते अठ्ठम करवा. तेनी एक प्रवाडीये वरस एक मास ५ पांच अने दिवस १२ बार, चार प्रवाडीये थइने वरस ५ पांच. मास ९ नव दीन अराढ तेनो यंत्र. नं. २ जुओ.

हवे लघुसिंह क्रीडीततप कहिये छीये. प्रथम एक अपवास, पारणुं करीने बे अपवास, पछी एक अपवास, पछी त्रण अपवास, पछी बे अपवास, पछी चार, पछी त्रण, पछी पांच, पछी चार पछी छ, पछी पांच, पछी सात, पछी छ, पछी आठ, पछी सात, पछी नव, पछी आठ, पछी नव, पछी सात, पछी आठ, पछी छ पछी सात, पछी पांच, पछी छ, पछी चार, पछी पांच, पछी त्रण पछी चार, पछी बे, पछी त्रण, पछी एक, पछी बे, पछी एक तेनो यंत्र. नं. ३ जुओ.

हवे वृद्धसिंह क्रीडीत तप कहीये छीये. प्रथम एक उपवास पछी बे उपवास पछी एक पछी त्रण पछी बे पछी चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ पछी आठ पछी सात पछी नव पछी आठ पछी दस पछी नव पछी अगीयार पछी दस पछी बार पछी अगीयार पछी तेर पछी बार पछी चउद पछी तेर पछी पंदर पछी चउद पछी सोल पछी पंदर

रत्नावली तपोदीन ३८४ पायणानादीन८८

एवं मास १५ दीन २२ एक परवाडीना थाय.

२

कनकावली तपोदीन ४३४ पारणांना दीन ८८

एवं मास १७ दीन १२ एक परवाडीना. चार परवा

डीये पांच वरस नव मास ने बारउदीन.

लघु सिंह नीडीत तपोदीन १५४ पारणांना दीन ३३ एक परवाडी

चार परवाडीये थईने बे वरस एक मास ने बे दीन.

वृधसिंह क्रिडीत तपोरीन ४९७ पायणांना दीन ६१ दोढ वरस अने अराड दिवस एक परवाडीना. चार परवाडीये थइने ७ वरस मास बे दीवस १२ बार.

मुक्तावली तपदीन ३०१ पारणां दीन ६१ सरवमलीने वरस १ दीवस २ बे. चार परवाडी थईने वरस चार दीन. ८

क्रीडीक तपदीन २७२ पायणां ३२ सरवमलीने दस मास चार दीन चार परवाडी थईने त्रण वरस चार मास दीन सोल.

पछी सोल पछी चऊद पछी पंदर पछी तेर पछी चऊद पछी वार पछी तेर पछी अगीयार पछी वार पछी दस पछी अगीयार पछी नव पछी दस पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी छ पछी सात पछी पांच पछी छ पछी चार पछी पांच पछी त्रण पछी चार पछी वे पछी त्रण पछी एक पछी वे पछी एक तेनो जंत्र. नं. ४ जुओ.

हवे मुक्तावली तप कहीये छीये. प्रथम एक उपवास पछी वे उपवास पछी एक पछी त्रण पछी एक पछी चार पछी एक पछी पांच एम अनुक्रमे सोल सुधी चडवा. पाछा एक पछी सोल पछी एक पछी पंदर एम अनुक्रमे एक सुधी उतरवा. तेनो जंत्र. नं. ५ जुओ.

ए कनकावली आदेदेइने मुक्तावली सुधी चारे प्रवाडीनां पारणांनी रीत रत्नावली प्रमाणे जाणवी.

हवे गुणरत्नाकर संवत्सर तप कहीये छीये. प्रथम मासे एक एक उपवासनुं पारणुं करवुं. वीजे मासे बबे उपवासनुं पारणुं करवुं. त्रीजे मासे त्रण त्रण उपवासनुं पारणुं करवुं. एम यावत् सोलमे मासे सोल सोळ उपवासनुं पारणुं करवुं अने ते विषे आतापना प्रमुख लेवी ते अधिकार भगवतीजीना बीजा सतकथी जाणजो.

हवे कोटीक तप कहीये छीये. प्रथम एक उपवास करवो पछी वे करवा एम यावत् सोल सुधी चडवुं. अने सोलथी पाछुं एक सुधी उतरवुं एम एनी पण चार प्रवाडी करवी. पारणानी रीत पुरवनी पेरे जाणवी तेनो जंत्र. नं. ६ जुओ.

हवे खुडपडीमा तप कहीये छीये. प्रथम एक उपवास करवो पछी वे पछी त्रण पछी चार पछी पांच. पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी एक पछी वे. पछी पांच पछी एक वे त्रण चार पछी वे त्रण चार पांच एक पछी चार पांच एक वे त्रण.

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

एनी एक प्रवाडीये तपदीन ७५ पारणां दीन २५ चार परवाडी थइने वरस एक ने मास एक दीन १० ए तप पुरो थाय पारणां पुरव वत.

हवे महा भद्र पडीमा कहीये छीये. ते प्रथम पांच उपवास करवा पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी सात आठ नव पांच छ पछी नव पछी पांच एम अनुक्रमे उपवास करवा तेनो जंत्र.

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

एम महा भद्र पडीमाना तपोदीन १७५ पारणां दीन २५ सरव मळीने मास छ अने दीन वीस एक प्रवाडीये जाणवा चार प्रवाडीये थइने वरस बे मास बे दीन २० थाय एटले ए तप पुरण थाय. पारणानी रीत पुरववत.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

हवे अति भद्र पडीमा कहीये छीये. प्रथम एक उपवास करवो पछी बे पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी छ पछी सात पछी चार पछी पांच पछी छ पछी सात पछी एक बे त्रण पछी सात पछी एक बे त्रण चार पांच छ पछी त्रण एम अनुक्रमे उपवास करवा अति भद्र पडीमा तपोदीन १९६ पारणां दीन ४९ सरव मळीने आठ महीना ने पांच दिवस एक प्रवाडीना जाणवा. चार प्रवाडीयो थइने वरस बे मास आठ दीन २० वीसे ए तप पुरो थाय. पारणां पुरववत.

हवे अतिशुद्ध पडीमा कहीये छीये. प्रथम एक उपवास करवो पछी बे पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी पांच पछी छ पछी सात आठ नव एक बे त्रण

चार. पछी नव पछी एक पछी बे त्रण चार पांच छ सात आठ पछी चार पांच छ सात आठ नव एक बे त्रण. एम अनु-क्रमे उपवास करवा साथे-ना जंत्रमां बताव्या प्रमाणे अतिशुध पडीमा तपदीन ४०५ पारणां दीन ८१ सर्व मळीने वरस एक मास चार दीन ६ एक प्रवाडी थाय चार प्रवाडीये मळीने वरस पांच मास चार दीन चोवीस ए तप पुरण थाय. पारणां पूर्वे कह्या प्रमाणे.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१	२	३	४
९	१	२	३	४	५	६	७	८
४	५	६	७	८	९	१	२	३
८	९	१	२	३	४	५	६	७
३	४	५	६	७	८	९	१	२
७	८	९	१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	७	८	९	१
६	७	८	९	१	२	३	४	५

हवे महाशुध भद्र पडीमा कहीये छीये. प्रथम एक उपवास पछी बे उपवास पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी दस पछी अगीयार. पछी छ सात आठ नव दस अगीयार एक बे त्रण चार पांच पछी अगीयार. पछी एक बे त्रण एम अनुक्रमे उपवास जंत्रमां बताव्या प्रमाणे करवा. अति महा शुध पडीमाना तप दीन ७२६ पारणां दीन १२१ सरव मळीने वरस बे मास चार दीन ७ प्रथम प्रवाडी थाय. चार प्रवाडी थइने वरस नव

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५
११	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४
१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८	९
४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३
९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२
८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१
७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६

मास ४ चार ने दीवस २८ ए तप पुरण थाय. पारणां पुरव प्रमाणे.

अथ कर्म घाती तप लखीये छीये. प्रथम छठ्ठ आठ करवा. पारणे वेसणुं करवुं. एम आठे छठ्ठ सलंग करवा आंतरा रहीत गरणुं नमो नाणस्स गणवुं, नोकार वाली २० वीस गणवी.

वार वर्षनो संलेषणा तप कहीये छीये ते प्रथम चार वर्ष सुधी विगयनो त्याग करवो बीजा चार वर्षने विषे उपवास आद देइने विचित्र प्रकारनो अठ्ठम सुधी तप करवो ते वार पछी एक वर्ष एकांतरे उपवास करवो, अने पारणे आंबेल करवुं, ते पछी मास ६ अठ्ठम अठ्ठमनो तप करवो ते वार पछी मास ६ अठ्ठम उपरनो विकट भक्त तप करवो ते वार पछी वर्ष एक आंबेलनो तप करवो, ते वार पछी वर्ष एक आंबेल आदि देइने मासखमण सुधी शक्ति सारु तप करवो, एवी रीतनो वार वर्षनो संलेखणा तप जाणवो. तथा जवमध पडीमा एक मासनो तप तेनी विगत ते जे प्रथम शुक्लपक्षने पडवेथकी मांडवो, ते प्रथम तपे एक दांती आहारनी तथा दांती एक पाणीनी, बीजे दिने दांती बन्ने आहार पाणीनी एम यावत् पुनमने दिने पंदर दांती आहार अने पंदर दांती पाणीनी, पाछुं कृश्न पक्षमां पडवेने दिन चउद दांती आहारनी तथा चउद पाणीनी, एम यावत् ओगणत्रीशमे दिवसे एक दांती आहारनी तथा एक पाणीनी, त्रिशमे दिवसे उपवास करवो तेनुं नाम जवमध पडिमा कहीये. तथा वजरमध पडिमा एक मासनी होय, ते पण प्रथम शुक्लपक्षनी एकमथी मांडवो, ते प्रथम दिवसे दांती पंदर आहारनी तथा दांती पंदर पाणीनी, बीजे दीने चउद दांती आहारनी ने चउद दांती पाणीनी, एम यावत् पुनमने दिवसे एक दांती आहारनी ने एक दांती पाणीनी तथा वदने प्रथमना दिवसे एक दांती आहारनी तथा एक पाणीनी वद २ बे दांती आहारनी ने बे दांती

पाणीनी एम यावत् अमावास्याये पंदर दांती आहार अने पंदर दांती पाणीनी तेने वजरमध पडिमा कहीये, इत्यादि तप सिद्धांतने विषे बीजा पण कह्या छे, तथा हालमां नवा कल्पीत तप घणा थाय छे. ए सर्वेने इतर कहेतां थोडा कालनो अणसण तप कहीये तथा जावज्जिव अणसण तप तेना बे भेद एक पादोपगमन अणसण, अने एक भत्त पच्चखाण अणसण. हवे पादोपगमन अणसणना बे भेद, एक सींह अग्नी प्रमुखनो उपसर्ग थाय तो पण त्यांथी डगे नहि, बीजो एवा उपसर्ग विना जेम वृक्षनी डाल कापेली पडी होय तेम हाले चाले नही. भत्त पच्चखाण अणसणना बे भेद, एक सींहादिक उपसर्ग उपन्यायका भत्त पच्चखाण करे, बीजो भात पाणी विना उपसर्गे पच्चखे ए बे भेद. एटले अणसण तप कह्यो. हवे उणोदरी तप कहीये छीये तेना बे भेद एक द्रव्य ऊणोदरी एक भाव उणोदरी, द्रव्य उणोदरीना बे भेद, एक उपगरण उणोदरी बीजी भात पाणीनी उणोदरी, उपगरण उणोदरीना बे भेद एक पातरुं काष्ट अथवा माटीनुं राखवुं ते पात्र उणोदरी कहीये. हवे भात पाणीनी उणोदरीना अनेक भेद. आठ कवल आहारना करे तेने अल्प आहारी कहीये, कवल केहेतां कुकडाना इंडा प्रमाण कोलीओ होय, बार कवल जे आहार करे तेने अडधा उणोदरी कहीये, तथा चोवीस कोलीया आहार करे तेने चोथा भागनी उणोदरी कहीये, एम यावत् एकत्रीस कवलनो आहार करे तेने पण उणोदरी कहीये शा माटे के बत्रीस कवलनुं पुरुषने आहारनुं प्रमाण, तेथी एकत्रीस वालो उणोदरीमां छे. तेथी स्त्रीने अठावीस कवलनुं परिमाण छे तेने सत्तावीस सुधी उणोदरी कहीये तेथी यावत् आठ कवलथी ते एकत्रीस कवल सुधी उणोदरीनो तप कहीये अने बत्रीस कवलपुरा ले तेने प्रमाणोपेत अहार कहीये, अथवा तेमांथी

कांइ एक शीख अथवा एक ग्रास उणो छे तेने पण प्रमाणोपेत कहीये, पण एक शीखे उणो रहे त्यांसुधी ते साधु पेटभरो ना कहीये एटले भात पाणीनी उणोदरी कही तथा द्रव्य उणोदरी कही.

हवे भाव उणोदरी कहीये छीये, तेना अनेक भेद छे अल्प क्रोध, अल्पमान, अल्पमाया, अल्पलोभ, अल्पज्ञान, अल्पबोलवुं, अल्पकलह इत्यादिक ए भाव उणोदरी कहीये एटले उणोदरी तप कह्यो, हवे त्रीजो व्रत्ति संक्षेप तप कहीये छीये. जे गोचरीना अनेक भेद छे. द्रव्य थकी अभिग्रह करे, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी, अभिग्रह करे. एटले द्रव्य थकी जे फलाणो द्रव्य मलशे तो लेइशुं, तथा क्षेत्र थकी जे आ गाममां अथवा फलाणा गाममां अथवा फलाणी पोलमां अथवा फलाणा मेहेलामां मलशे तो लेइशुं, कालथकी अभिग्रह फलाणी वेलाये मलशे तोज लेइशुं भावथकी अभिग्रह जे स्त्री अथवा पुरुष ना कुंवारीका प्रमुख आवी रीते आपशे तो लेइशुं, अथवा भाजन मांहेथी उपाडेलुं हशे तेज लेइशुं, अथवा भाजनमांथी बीजा भाजनमां घालेलुं हशे तोज लेइशुं, अथवा आपणे काजे उपाडीने बीजा भाजनमां घाल्युं हशे तो लेइशुं अथवा अनेरे भाजने घालेली वस्तु आपणे काजे उपाडेली हशे ते लेइशुं, अथवा अनेराने पीरसेलुं हशे ते आपशे तो लेइशुं, अथवा वस्त्रने विषे ढोकलां ढोकली खाखरा प्रमुख मोकला करेला हशे अने तेमांथी लेइ भाजनमां घालता हशे ते आपशे तो लेइशुं, अथवा कोइने त्यांथी लावेलुं ते आपशे तो लेइशुं, अथवा कोइना भाणामां पीरस्युं छे तेने वधारे पड्युं ते आपशे तो लेइशुं, अथवा ते पाछुं लेइने बीजा ठामने विषे घाल्युं छे ते आपशे तो लेइशुं, अथवा निंदाने स्तुति भेळी थाय तेवुं जे रसवति अने पाणी खाइ एवो जोग मलशे तो

केइथं, उशरीयुं केहेतां एने पीरस्युं ते लेइशुं, अथवा निंदनीक आ-
हार लेइशुं, अथवा लोकने वखाणवा जेवो प्रीयकारी मोदक प्रमुख
आहार ते मलशे तो लेइशुं, अथवा कटुक आहार परंतु छे गुण-
कारी ते मलशे तो लेइशुं इत्यादिक आहारनो तरेह तरेहनो
अभिग्रह करे. तथा हवे दातारनो अभिग्रह कहीये छीये. खरडे
हाथे देतो लेइशुं, अथवा अण खरडे हाथे देशे तो लेइशुं, अथवा
जे द्रव्ये हाथ खरड्यो छे ते द्रव्य आपशे तो लेइशुं, अथवा वस्त्रा-
दिक अनेक प्रकारना अहीयां अभिग्रह केहेवा, अथवा कोइथी क्षुधा
वेदनी न खमाती होय तो शीत उष्ण जेवो मलशे एवो लेइशुं, अ-
थवा गोचरी ए मौनपणे विचरशुं, अथवा पोतानी द्रष्टी ए दीठो,
आहार दातार आपशे तो लेइशुं, अथवा अणदीठो आपशे तो ले-
इशुं अथवा दातारे जे आहारनुं पुछयुं तेज आहार आपशे तो ले-
इशुं, अथवा भीक्षाए जेवो मलशे तेवो लेइशुं, अथवा घणुं अंन स्त-
वन करी आपशे तो लेइशुं, अथवा अज्ञात घरनी भीक्षा लेइशुं,
अथवा ग्रहस्थए मों आगल लावीने मुक्युं तेज लेइशुं, अथवा
मान सहित जे आहार ग्रहण करवा जोग ते आहार मलशे तो लेइशुं,
अथवा शुद्ध निर्दोष मलशे तो लेइशुं, अथवा दांतीनी संख्याये आहार
लइशुं, इत्यादिक व्रति संखेप तपना भेद जाणवा एटले व्रत्ति संखेप
तप कह्यो. हवे रसत्याओ चोथो तप तेना अनेक भेद छे. एटले घी
प्रमुख भरतेथके एवी विगयनो त्याग करे, अरस केहेतां अडद चण्या
वाल इत्यादीकनो अहार लेइशुं, अथवा आंबेल करीशुं अथवा ओ-
सामण मांहेलाशीत नीकले तेनेज वावरीशुं, अथवा हींग प्रमुखे
वघारेलुं हशे तो ते आहार नही करीये, अथवा जूनुं धान खाण
प्रमुख तेनो आहार करीशुं अथवा अंत आहार कहेतां उखलार व-
लीजली हसे ते लेइशुं, अथवा पंत आहार कहेतां टाढो प्रमुख आ-

हार लइशुं अथवा लुखो आहार लेइशुं, ते सर्वे रसनो त्याग तेने रसचाओ तप कह्यो. हवे कायक्लेशतप कहीये छीये. तेना अनेक भेद छे काउस्सग्ग करीने उभु रेहेवुं, अथवा काउस्सग्ग करीने उभा रहीने हालवुं नहीं, अथवा उकड आसने वेसवुं अथवा वार पडिमा प्रमुख साधुनी वेहेवी, अथवा वीरासने वेसवुं अथवा पलांठी वालीने वेसवुं, अथवा वक्रशीयालनी पेरे वेसवुं, अथवा दांडानी पेरे सुवुं, अथवा ताहाड ताप वेनी आतापना लेवी, अथवा वस्त्र उपगरण न राखवुं, अथवा शरीरे खाज न खणवी, मुखनुं थुंक परठवुं नही, गले उतारी जवुं शरीरनुं जे सुश्रुषा रोम केशनख प्रमुख न समारवा, अथवा शणगार न करवो, ए कायकलेश तप कह्यो. हवे प्रती संलीनता तप कहीये छीये तेना चार भेद छे, इंद्री प्रती संलीनता १, कषाय प्रती संलीनता २, जोग प्रती संलीनता ३, वीवक्त प्रती संलीनता ४, हवे इंद्री प्रतीसंलीनताना पांच भेद, श्रोत इंद्री केहेतां कानना वीषय ने विषे प्रवर्तवुं तेने रुंधवुं एटले रुडा माठा शब्द कानने विषे आवी पडया ते उपर रागद्वेश न करवो, तेने श्रोत इंद्री संलीनता कहीये अथवा चक्षु इंद्री सलीनता केहेतां जे रूपरुडां माठां देखवां तेने विषे चक्षुनुं प्रवर्तवुं रुंधवुं, एटले नेत्रनो विषय जे पंच वरणना रूपने विषे छे, ते रूपने विषे रागद्वेश ना करवो. हवे घ्राण इंद्री संलीनता कहीये छीये, एटले नासीका तेने गंधने वीषे प्रवर्तवुं ते थकी रुंधवुं एटले सुरभी गंध दुरभी गंध नासीकाने आवी प्राप्त थाय तेनो द्वेष न करवो. हवे रस इंद्री संलीनता कहीये छीये एटले जीभनो स्वभाव ते रसने ग्रहण करवानो छे, तेने विषे प्रवर्तवुं तेने रुंधवुं एटले पांच प्रकारना रसनी ग्रहण करता जीभ छे ते जे जे रस आवीने प्राप्त थाय ते शुभ अथवा

अशुभ होय तोपण द्वेष राग न करवो. हवे फरस इंद्री संलीनता कहीये छीये, ए शरीरने फरसने विषे प्रवर्त्तवानो स्वभाव छे तेने रुंधवा ते आठ प्रकारना फरस छे तेने विषे ते शरीरनो विषय छे, ते फरस आठ प्रकारना रुडा अथवा माठा आवी प्राप्त थाय तेने विषे रागद्वेष ना करवो एटले इंद्री संलीनता तप कह्यो. हवे कसाय पडी संलीनता तप कहीये छीये, तेना चार प्रकार, क्रोध जे रीसना उदये करी उपजवुं तेने रुंधवुं, अथवा क्रोध आवीने प्राप्त थयो छे तेने निष्फळ करवो, सामाना वचनादीक होय ते सहीजवां, अथवा मान जे उदय आवताने रुंधवुं, अथवा जे उदय आवी प्राप्त थयो एवो जे अभिमान तेने निष्फल करवो तथा माया केहेतां कपट तेने उदय आवताने रुंधवुं, अथवा आवी प्राप्त थाय तेने निष्फळ करवुं तथा लोभ केहेतां इच्छावंछा रूप ते उदे आवतांने रुंधवुं, अथवा लोभनो उदे आवी प्राप्त थाय तेने निष्फळ करवुं एटले कषाय प्रतिसंलीनता तप कह्यो, हवे जोग प्रतिसंलीनता तप कहीये छीये, तेना त्रण भेद छे एक मननो जे वेपार जे पर जुजवो, तेने वहु प्रकारे करीने पण संवरवो, तथा बीजो वचन संलीनता केहेतां जे अनेक प्रकारनां वचन पर जुजवां तेने संवरवुं, तथा त्रीजो कायजोग कहेतां जे कायानो वेपार आश्रवथकी रोकवो. हवे मननो जे वेपार तेनुं संवरवुं एटले माठुं जे मन तेने रुंधवुं, भला मननी उदारणा करवी तेने मन प्रतीसंलीनता कहिये. तथा वचन जोगना वेपारनुं रुंधवुं, एटले माठां जे वचन तेनुं रुंधवुं, भलांजे वचन तेनी उदारणा करवी, एटले वचनजोगनी प्रतीसंलीनता कहिये. हवे जे कायजोग एटले कायानो वेपार संवरवो एटले समाधि सहित बसवुं. एटले हाथ अने पग काचबानी गोडे गोठवी राखे, इंद्रीयो पांचे गोपवी राखवी, शरीरना अंगोपांग तेने कायजोग

प्रतीसंलीनता कहिये. एटले जोग संलीनता कह्यो, हवे विवक्त संलीनता कहिये छिये. एटले उपाश्रये स्त्री पशु नपुशक प्रमुख न होय ते उपाशरे रहेवुं तथा पाट बाजोठ पाटला प्रमुख ते पण स्त्रीयादि न होय ते शेववुं, भोगववुं, वली उत्तम वनवाडी तथा उद्यान अथवा मोटा वृक्षनी हेठे तथा देवकुलने विषे तथा घणा जण बेसता उठता होय तेवी सभाने विषे तथा पाणी भरता होय तथा पीता होय त्यां तथा घणा करीयाणां ले वेकर थतो होय त्यां स्त्री मनुषनी प्रण होय तथा गाय भेंस नपुशक ए थकी रहीत एवी जे वस्ती होय एवा उपाशराने विषे फासु एटले अचित निर्दोष त्यां पाट पाटला बाजोठ तथा अठीगण मुकवानुं पाटीयुं तथा संथारो डाभ प्रमुख घासनो अथवा उदननो इत्यादिक वस्ती पासे मागी लेइने विचरे, तेने प्रतीसंलीनता कहिये एटले ए छए बाह्य तप कह्या एटले ए बाह्य तप थकी कर्मनो नाश थाय नहि कोइ कहेशे नाश न थाय त्यारे शास्त्रवाले शा वास्ते कह्या तेनो उत्तर जे शास्त्रवाले कह्या तेने व्यवहार चलववो अने पोताना दर्शननी नोखी ओलखाण करावली प्रथमतो एज कारण, बीजुं एके एवा तपथकी शासननी शोभा घणी वधे सासन सारुं लागे त्रिजुं एके ते धणीनी बाहाज थकी इंद्रीयो बीजा विकारमां न पेसे इत्यादिक कारण जाणवां परंतु एने विशे कांइ आत्म उपयोग ए वो शब्दतो छे ज नहि अने चारीत्र नाम आत्मानुं छे तो जे वस्तु चारीत्र छे तो ते वस्तुतो एमां छे नहि आतो एक क्रियारुप छे तो क्रियाने विशेतो कोइनुं मन स्थीर रहे ने कोइनुं ना रहे जो स्थीर रहेतो ए प्रमादगुण ठाणानी क्रिया छे कांइ अप्रमादी भावतो एमां छे नहि अने अप्रमादी भावने विशेतो क्रिया होयज नहि ते विचारी जुवो हवे जे एवी क्रिया

करे ते थकी कांइ मुक्तितो मले नहि केमके मुक्तिनुं प्रथम कारण भेदज्ञान छे ते चोथागुण ठाणाथी मांडीने आठमा गुणठाणासुधी चाले तथा नवमुं दसमुं गुणठाणुं छे त्यां भेदाभेद ज्ञान छे ने वारमे गुण ठाणे अभेदज्ञान छे एटलां गुणठाणां कहेतां आठमागुण ठाणाथी वारमा गुणठाणासुधी वचननुं उचारण पण छे नहि तथा मन द्रव्य गुण पर्याय आत्म उपयोगना भेगुंज रहे ते विना जो बीजी जगाये जायतो ते गुणठाणां रहे नहि पाछो छठे सातमे गुणठाणे जाय जावत मिथ्यात्वमां पण जाय तथा अवधीज्ञानी मनपर्यवज्ञानी कोइ साधु होय ते साधु पण अवधी मनपर्यवज्ञाननो उपयोग देतां ए गुण ठाणा पामे नहि ते गुणठाणा श्रुतज्ञान अवलंबी छे ते वारमे गुणठाणे केवलज्ञान पामे ते तो वहारनी क्रिया तथा वहारना तपमां कांइ छे नहि ते वारे कोइ कहेशेके आज कांइ ते वस्तु छे नहि माटे वहाज क्रियाने तप तेज प्रधान छे तेने कहियेके वहाज क्रियाने वहाज तप प्रधान छे ते ठीक छे पण तमे आत्मधर्मना द्वेशी माटे तमने हजु समकित गुणठाणु पण आव्युं नथी माटे तमे खुशी पडे तेम करो पण ए केवुं छे के जेम लाकडाना पुतलाने वर वनावीने जान लेइने जाय तेने कोइ कन्या परणावे नहि अने ए जानैया लाज खोइने घेर आवे तेम तमे पण आत्मज्ञान हिण वहाज क्रियाना आडंवरी माटे अनंतो संसार रखडशो अने तमारा उपदेशना सांभलनावाला ते पण अनंतो संसार रखडशे ते वारे ते बोल्या जे तमे वहू कठोर वचन बोलोछो अने अमेतो वहू पंडितनां वचन कह्यां छे ते उपर चालीये छीये माटे अमे शामाटे रखडीये तेनो उत्तर जे तमे पंडितोना कहेण उपरथी चालोछो ते कांइ पंडित आत्मज्ञानीनां एवां वचन ना होय शा माटे के समकितविना आश्रवमां नाखवा छे ने आश्रवनो वधारो करवो ए वचन पंडितनां

कहेवाय नहि पंडित होय तेतो आत्मानुं स्वरुप ग्रहीने संवरभाव नीमरुपणा करे तेने पंडित कहिये ते अधिकार घणा शास्त्रमां छे ने शास्त्रनां नाम अमे पुर्वे लीधेलां छे ते थकी जाणजो. त्यारे ते वोरया जे ते शास्त्रना बांधनार पंडीत खरा ने बीजा शास्त्रना बांधनारा पंडीत ते शुं खोटा तेनो उत्तर जे तें कह्युं ते पंडीत खोटा तो ए प्रत्यक्ष खोटाज छे शा माटे के आचारदीनकर ग्रंथने विशे एवुं कशुं छे के ग्रहस्थना छोकराने परणाववाने साधु जाय एवां वचनना कहेनाराने पंडीत केम कहीये, प्रत्यक्ष तेमणे पोतानी ने पोताना परीवारनी आजीवीका बांधी छे तथा जे तपमां उजमणां करवाना ग्रंथ बांध्या, तो तेने पुछीये के पुर्वे कह्या ते तप सुत्रमां छे तेनां तो उजमणां कांइ छे नही अने तमे जे नवा तप उत्पन्न कर्यां ते तप सुत्रमां तो छे नही ने तेनां उजमणां तमे बांध्यां ते तमारी आजीवीका चलाववा सारु बांध्यां के शा वास्ते बांध्यां तथा श्रावकने उपधाननुं कहो छो अने तेनां एवां प्रकरण पण वतावो छो जे श्रावकनो नवकार पण उपधान वह्या वगर खप लागे नही ते तमे कया सुत्रमांथी लावीने देखाडो छो? जे उपाशकदशांगने विशे आणंदजी आदि दस श्रावकनो अधिकार छे, तेणे तुरत धर्म सांभळी समकीत मुळ बारव्रत उचर्यां ने अगियार पडीमा श्रावकनी वही पण उपधान वह्यां तो दीसतां नथी एम जे जे सुत्रमां श्रावकनो अधिकार होय त्यां जो जो, तथा तमे कहोछो के साधुने जोग वह्या विना सुत्र वंचाय नहि तो भगवतीजिने विशे खंधक तापस तुरत दिक्षा लेइने द्वादश अंगी भण्या इत्यादिक जेटला सुत्रमां श्रावकना अधिकार छे ते सर्वे दिक्षाओ लेइने कोइ अगीयार अंग भण्या कोइ द्वादश अंगी भण्या तथा अनुतर उववाइने विशे धना काकंडीए नव महीना चारीत्र पाळ्युं ते मध्ये मास ए-

कतो संथारानो गयो आठ मास चारीत्र रह्युं तेमां अगीयार अंग भण्या तो तेणे जोग कये दहाडे वह्या. एक भगवतीजिना जोगमां छ महीना जोइये तो मांडलीया तथा आचारी तथा दश अंगना जोग वहेतां एने केटलां वरस जोइये ते विचारीने जवाब देजो एटले ए ग्रंथना बांधनाराये पोतानी आजिवीका बांधी छे पण कांइ धर्म मार्ग बांध्यो नथी तथा श्राध विधी प्रमुख ग्रंथोने विशे वडीनीत लघु नीत दातण नाहावा खावा प्रमुखना आचार बांध्या तेने ते शुं धर्म कहिये के तेने ते शुं पाप कहिये एवा ग्रंथना बांधनाराने कहो पंडित शी रीते कहिये ने तेने पंडित कहे तेने पण अज्ञानी कहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामि सुत्रने विशे पण तमे पुर्वे कह्या ते तप कहेला छे ते धर्ममां खराके नहि.

गुरुवाक्य—हे भद्र ए तो त्यांज वहाज तप कह्या छे वहाज कहेतां वहारथी कायाने तपावे तेने वहाज तप कहिये अभ्यंतर तप ते कर्मने बाळे तेने कहिये, माटे वहाज छे ए व्यवहार छे माटे त्यांज धर्ममां गवेख्या नथी.

शिष्यवाक्यः—धर्ममां गवेख्या नथी तो इहां केहेवानी जरुर शी हती.

गुरुवाक्य—भगवाने तो साते नय वताव्या छे परंतु धर्म तो त्रण नयमांज वताव्यो छे तथा सुत्रकारे जे तप बाहाजनुं मान वधार्युं छे ते सुत्रकारना वचनमां तो घणी वातोनी शंकाज छे, प्रथम तो जसविजयजी उपाध्याये नवाणु बोलतो अणमळता काहाडीज मुकेला छे तथा सिद्धांतना मालीक जीनभद्रगणी खमा श्रमण दसपुरवधरहता तेने तथा सिधसेन दिवाकरने जे चरचाओ थइ ते

चरचामां पण जिनभद्र गणी खमाश्रमणना उत्तरमां कशुं ठेकाणु दीसतुं नथी, ते शिवाय पण घणा बोल सिद्धांतना अणमलता कल्पीत भाशन थाय छे परंतु आपणे सिद्धांतनो आधार छे, तेथी ते आधार उपर चालवानुं छे, वादी उत्तरः-तमने सिद्धांतकल्पीत भासन थयां तो तमे शावास्ते खोटुं जाणीने मानो छो तेनो उत्तर सर्व सूत्रतो कांइ खोटां भासन थतां नथी अने जे जे बोल खोटा भासन थाय छे ते अमे सद्दहता नथी अमारे कांइ ताहारी पेठे हठ वाद छे नही जे अमारा घरडा कही गया ते खरुं एवुं गधा पुंछतो तमने सोंप्युं छे.

शिष्यवाक्य—स्वामी बाह्यज तपतो व्यवहारमां गयो एमां तो कांइ आत्मानुं कारज थवानुं छे नही माटे अम उपर कृपा करीने अभ्यंतर तप ओलखावो तेम अमे करीये जेम अमारा आत्मानुं कारज सिद्ध थाय.

गुरुवाक्यः—अभ्यंतर तपना छ भेद छे ते कहीये छीये प्राय श्चीत १ वीनय २ वेयावच ३ सजाय ४ ध्यान ५ काउसग ६ ए मध्ये प्रथम प्रायश्चितना दस भेद छे ते कहीये छीये जे पोताने लाग्युं जे पाप ते गुरु पासे आवीने आलोववुं केहेतां केहेवुं तेथकी शुद्ध थाय तथा पडिकमवुं तथा मिच्छामि दूकडं देवुं तथा आलोववु ने मीछामी दूकडंदेवुं, वे ए करवां तथा अशुद्ध भावनुं टालवुं तेणे शुद्ध थाय अथवा तपनुं देवुं तेथी शुद्ध थाय तथा चारीत्रनी पर्यायनुं छेदवुं तेथी शुद्ध थाय तथा फरी थकी चारीत्र देवुं तेथी शुद्ध थाय जे थकी अतीचार लागे तेथकी वेगला राखे ए दस प्रकारे गुरु पासे प्रायश्चित ले गुरु जेवुं पाप देखे तेवी आलोयण आपे पण द्रव्यक्षेत्र कालभाव जोइने आपे एटले आलोयण आपवाना मुखत्यार गुरु छे माटे गुरुनी नजर पहोचे तेवी आलोयण आपे एटले प्रायश्चित

तप कह्यो हवे वीजो वीनयतप कहीये छीये तेना सातभेद, ज्ञाननो वीनय १ दरसननो वीनय २ चारीत्रनो वीनय ३ मननो वीनय ४ वचननो वीनय ५ कायानोविनय ६ लोकाविनय ७ ते मध्ये ज्ञाननो विनय पांच प्रकारनो छे. मती ज्ञाननो विनय करवो ते मती ज्ञानना गुण वरणव करवा १, श्रुतज्ञाननो विनय करवो ते श्रुतज्ञानना गुणग्राम करवा २, अवधीज्ञान जे मरजादा प्रमाणे रुपी द्रव्यनुं देखवुं तेना गुणग्राम करवा ३, मनपरजवज्ञान जे अढीद्वीपसंज्ञी पंचइंद्रीना मनना भावजाणे तेनो विनय करवो एटले तेना गुणग्राम करवा ४, केवलज्ञान जे रुपी अरुपी लोकालोक सर्वना भाव जाणे देखे ते सर्वनो विनय करवो ते,तेना गुणग्राम करवा, एटले ज्ञाननो विनय कह्यो. हवे दरसननो विनय कहीये छीये. एटले दरसन केहेतां समकीत तेना वे भेद एक सुश्रुषा केहेतां जे गुरुनी सेवा भक्ती करवी, ने वीजो भेद जे आसातना टालवी. हवे जे गुरुनी सेवा भक्ती करवी तेना अनेक भेद कह्या छे ते कहीये छीये, गुरु आवे थके सर्व ठामने विषे उभुं थवुं, सर्वथा वेसी रेहेवुं नही, गुरु ज्यां वेसवानी अथवा सूवानी मरजी करे त्यां तुरत आसन लेइने जवुं, अने आसन नांखी आपवुं गुरुने आसन आपवुं गुरुने सन्मान देवुं, एटले स्तवना करवी, गुरुने वस्त्रादीकनी नीमंत्रणा करवी गुरुने द्वादसवांदणे वांदवा गुरु पासे हाथ जोडीने आगळ उभु रेहेवुं, गुरु आवता होय तो सामु जवुं, आवीने रह्या होय तेनी शेवा भक्ती करवी, गुरु विहार करता होय तो पहोचाडवा जवुं, आहार प्रमुखने विषे तेडवा जवुं, एटले ए सुश्रुषा विनय कह्यो, हवे आसातना विनय कहीये. छीये तेना ४५ भेद कह्या छे अरीहंत परमात्मानी आशातना टालवी अरीहंतनुं प्ररुपेलुं जे धर्म तेनी आशातना टालवी एटले धर्म ते वस्तु स्वभाविक स्या-

द्वाद सहीत तेने धर्म अरीहंतनुं भाखेलुं कहीये तथा आचारजनी आशातना टालवी ते आचारज छत्रीस गुणे करी सहीत पंचेंद्रीनी बेगाथा थकी जाणजो उपाध्यायनी आशातना टालवी ते पचीसे गुणे करी विराजमान तेने उपाध्याय कहीये. थीवरनी आशातना टालवी ते थीवर त्रण प्रकारना, श्रुतथींवर बहूश्रुतनी आशातना टालवी वीसवरस उपरांत चारित्रनी पर्याय थइ होय तेने कहिये, तथा साठ बरस उपरांत साधु होय तेने वयथीवर कहिये हवे कुलनी आशातना टालवी एटले चंद्रादिककुल सिद्धांतमां चालेलां छे तेनी आशातना टालवी गण केहेतां गछनी आशातना टालवी ते गछ श्रीसीद्धांतमां कह्या छे तेनी, संघनी आशातना टालवी संघ केहेतां जे साधु समुदाय क्रिया पक्षी क्रियानो रागी करनारो तेनी आशातना टालवी सजोगी एटले सरखी समाचारीना साधु होय तेनी आशातना टालवी मतीज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनपरजव ज्ञान अने केवलज्ञान ए पांच ज्ञाननी आशातना टालवी ए पंदर भेदनी भक्ति बहूमान करवां एवं त्रीसभेद अने ए पंदरे गुणना गुणनी वरणवता करीने बाहेर दिपाववुं एटले ए पीस्तालीस भेद थया ए आशातना टालवारुप वीनय तथा दरशन वीनय कह्यो.

हवे चारित्र विनय कहीये छीये तेना पांच प्रकार सामायक चारित्र शुद्ध उपयोग आदरवुं १ छेदो उपस्थापन रुडी रीते पालवुं २ परिहार विशुद्ध चारित्र रुडी रीते पालवुं ते विनय ३ सुक्ष्म संपराय चारित्र पालवुं ४ यथाक्षायक चारित्र पालवुं ५ ए पांचेनुं स्वरुप पुर्वेसंवर द्वारमां कह्युं छे एटले चारित्र विनय कह्यो हवे मनविनय लखिये छिये तेना बे भेद एक प्रशस्त मनविनय १ अने एक अप्रशस्त मनविनय २ हवे अप्रशस्त मन केहेतां मनना अभिप्राय जे माठा कायिकादि क्रियांना विचार

उठे ते पोताने पण दुखदाइ ने परने पग दुखदाइ एवुं माठुं मन प्रवर्ते तेने अप्रशस्त मनविनय कहिये तेथकी उपरांठु जे स्वगुणपर्यायनी रमणता पोताना स्वरुपनुं ध्यावुं आत्माने उधरवानो विचार तेने प्रशस्त मनविनय कहिये एटले मनविनय कह्यो. हवे वचन विनय कहिये छिये ते वचनना पण बे भेद एक अप्रशस्त वचन अने बीजु प्रशस्त वचन अप्रशस्त वचन केहेतां जे वचन माठां नीकले एकेंद्रियादिक जीवने उपद्रव थाय पोताने कायिकादिक क्रिया लागे सामाने अने पोताने बेउने उपद्रवनुं जे कारण थयुं आश्रव आवे तेवुं वचन जे बोलवुं तेने अप्रशस्त वचन विनय कहिये. हवे प्रशस्त वचन विनय कहीये छीये. प्रशस्त केहेतां भलुं जे वचन बोलवुं, जे कोइ जीवने बाधा पीडा न थाय पोताने पण नवां कर्म न आवे जुनां कर्मनुं निर्जरवुं थाय परने तथा पोताने सुखदाइ एवुं जे अध्यात्म स्वरूप तथा द्रव्य गुण पर्यायनी चरचा तेने प्रशस्त वचन विनय कहिये एटले वचन विनय कह्यो, हवे कायविनय कहीये छीये तेना बे प्रकार एक अप्रशस्त कायविनय अने बीजो प्रशस्त कायविनय हवे अप्रशस्तकाय विनय केहेतां विनाउपयोगे काया ने प्रवर्तावकी तेना सात भेद छे उपयोगविना जे जवुं अथवा आववुं करे अथवा उभु रेहेवुं अथवा बेसवुं अथवा सुइ रेहेवुं अथवा खाड प्रमुख कुदीने जवुं तथा पांच इंद्रीनुं प्रवर्त्तावबुं तेने अप्रशस्तकाय विनय कहीये. हवे प्रशस्तकाय विनय एटले पूर्वे अप्रशस्त कह्या ते थकी उपरांठा भला जे आणा सहित उपयोगते सहित प्रवर्त्तवुं तेने प्रशस्तकाय विनय कहीये एटले ए कायविनय कह्यो. हवे लोकविनय कहीये छीये एटले लोकसंबंधी उपचार तेने विनय कहिये तेना सात भेद छे ते कहीये छीये. गुरुना समीपने विषे सदाय प्रवर्त्तवुं १. अथवा पारका गुरुना अभिप्राये वर्त्तवुं तेज्ञानादिक लेवाने अर्थे २, भात पाणी-

आणी देवुं ३, एनी एवी बुद्धि थाय जे हुं एने भणावुं त्यार पछी विनय करवो ४, आर्त्तपने तेना आर्त्तनी चिंता करवी. ५ देश-कालनुं जाण थवुं ६ सर्व अर्थ प्रयोजनने विषे सावधान रेहेवुं ते थकी उपरांठु ना थवुं ७ तेने लोक उपचार विनय कहिये, एटले ए विनय तप कह्यो.

हवे वैयावच तप कहीये छीये तेना दस प्रकार छे. आचार्यजी एटले पंचाचारने पालनार तेनी वैयावच करवी १, उपाध्यायजी द्वादस अंगीना जाण तेनी वैयावच करवी २, साधुनी वैयावच करवी ३, नव दिक्षित शीष्यनी वैयावच करवी ४, रोगीनी वैयावच करवी ५, तपसीनी वैयावच करवी ६, थीवरनी वैयावच करवी ७, साधर्मीक पोताना सरखी समाचारीना साधु होय तेनी वैयावच करवी ८ कुलनी जे चंद्रादीक तेनी वैयावच्च करवी ९, गण एटले गच्छनी वैयावच्च करवी १०, एटले वैयावच्च तप कह्यो, ३ हवे सज्जाय तप चोथो कहीये छीये, तेना पांच भेद छे, गुर्वादिक पासे वाचना एटले भणवुं १, प्रश्ननी शंका उपजे ते पुछीने निश्चय करवो २, पूर्वे भण्या होय ते संभारी वालवुं ३, शास्त्र शब्दना अर्थ एक एकनी अपेक्षाये विचारी जोवा ४, अने धर्मकथा केहेतां धर्मनी चर्चा वार्ता करवो ५, एटले ए सज्जाय तप कह्यो ४, हवे ध्यानतप कहीये छीये, तेना चार भेद आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, शुक्लध्यान ४ हवे आर्त्तध्यानना चार पाया, आर्त्त केहेतां मननी जे चिंता तेने आर्त्तध्यान कहीये, मनने न गमे तेवा शब्द, रूप, रस, गंध, फरसादिक जे जे पदार्थ मल्या तेनो एवो विचार करे जे आ क्यारे अहींआं थकी टले, तेना विजोगनुं जे चिंतववुं तेने अनिष्ट संजोग नामे पायो कहीये १, हवे इष्ट विजोग नामे बीजो पायो एटले भला शब्द रूप

रस, गंध, फरस, पुत्र, कलत्र सगां संबंधी पोताना मनने गमे तेवां मलेलां छे तेनो विचार जे एनो विजोग न थाय अथवा नथी मल्यां तेने मलवानो विचार, इत्यादिक जे विचार तेने बीजो पायो कहीये २, हवे त्रीजो रोग आतसपायो, रोगादिक उपने तेनी चिंता करे जे क्यारे मटशे, क्यारे जशे, अथवा नवो रोग न थाय तेनो विचार करवो ए त्रीजो पायो ३, हवे चोथो पायो, आगामी कालनी चिंता जे काल आपणे अमुक करीशुं अथवा आवती साल अमुक करीशुं, अथवा आ साल आपणे ठीक हतुं, हवे आवती साले शुं थशे इत्यादिक चिंतववुं तेने आगामी कालनी चिंता कहीये एटले आर्तध्यानना चार पाया कह्या. हवे ते आर्त्तध्यानना चार लक्षण कहीये छीये, कंदणीया केहेतां मोटे शब्दे करी रुदन विलाप करे १, सोयणीया केहेतां सोचना दिनपणुं होय २ तपणीया केहेतां आंखमांथी आंसु झरे ३, वलवणीया केहेतां मुख थकी एवो शब्द करे के हे देव! हे प्रभु हवे केम थशे ए चारे आर्त्तध्यानना लक्षण कह्यां. हवे रौद्र ध्यान कहीये छीये रौद्र केहेतां महा आकरा दुष्ट परिणाम तेना चार पाया हिंसानुबंधी एटले जीवहिंसा चिंतववी, मन थकी आरंभ समारंभ, फोजनगर गाम लुटवां, भागवां मेहेलमंदिर करावववां, लींपवां, थेपवां ए सर्वने हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान कहीये १, बीजो पायो मृषानुबंधी रौद्रध्यान एटले मनमां एवा विचार करे जे फलाणाने आवी रीते समजावीशुं, अमुकने आम कहीने समजावीशुं इत्यादिक मनथकी मृषा बोलवानो विचार करे तेने मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहीये २, हवे चोरानुबंधी रौद्रध्यान मनथकी चोरी करवानो विचार करवो, अथवा कोइ पासे चोरी करावववानो विचार करवो, अथवा चोरने सबुर आपवानो विचार करे, ए सर्वे चौरानुबंधी रौद्रध्यान कहीये ३,

चोथो पायो परिग्रह रक्षानुं वंधी रौद्रध्यान, जे परिग्रह मेलववानो विचार तथा मळेलो परिग्रह तेने रखोपुं करवानो विचार ते सारु शीरबंदी प्रमुख राखवी, अथवा परिग्रहना क्षयकारी पुरुषोने हणवा, बंदीखाने नांखवा नंखाववा इत्यादिक जे मनथी विचारे तेने परिग्रह रक्षानुबंधी रौद्र ध्यान कहीये ४, ए रौद्रध्यान कह्युं. हवे रौद्रध्याननां चार लक्षण कहीये छीये. उण्णदोशबंधी केहतां प्राये हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन परिग्रहने विषे प्रवर्त्तवुं १, शेषहूदोपाय केहतां जे हिंसा प्रमुखने विषे बहू प्रवर्त्तवुं २, अणदोशे केहतां अज्ञानथकी हिंसादिकने विशे प्रवर्त्तवुं ने धर्म मानवुं ३, आमरणांत दोश केहतां जे मरणांत लगे कोइ पापनो पश्चात्ताप न करे एटले ए रौद्रध्याननां चार लक्षण कह्यां.

हवे धर्मध्यान कहीये छीये. एटले धर्म केहतां जे वस्तु धर्मनुं पामवुं, आत्माथकी कर्मनुं निर्जरवुं तेने धर्म कहीये. तेना चार भेद छे. आज्ञाविचय धर्मध्यानं केहतां जे परमात्मानी शी आज्ञा छे ते विचारवुं, परमात्मानी एवी आज्ञा छे के ज्यां जीवनी हिंसा त्यां धर्म छे नही, जे अज्ञानी दया पाळे ते पण कांइ धर्ममां छे नही, धर्म तो ज्ञानने विषे रह्यो छे, ज्ञान ते आत्माने विषे रह्युं, त्यारे आत्मानो जे स्वभाव तेज धर्म इत्यादिक परमात्मानी आज्ञानुं स्वरूप विचारवुं ते पहेलो पायो. हवे बीजो पायो अपायवीचय, अपाय केहतां आत्मा तेनो जे विचार जे आत्मा केवो छे के जेवो फटकरत्ननिर्मळ छे तेवो आत्मा निर्मल छे, ने जे आ कर्मरूप मेळ छे ते पुद्गल छे ते हे चेतन तुं नहि, तुं तो एक स्वरूपी छे, अनेक छे ते तो पुद्गल छे, तुं तो हे चेतन अव्याबाध छे, एटले तने कशी बाधा पीडा छे नहि, बाधा पीडा जेछे ते पुद्गलने छे, ते तुं नही. तुं अनंत ज्ञानमय छे, जे अज्ञान छे ते पुद्गल छे, तुं अनंत दर्शनमय छे, अदरशन छे

ते पुद्गल छे, तुं अनंत चारित्रमय छे, अचारित्र ते पुद्गल छे, ते तुं अनंत वीर्यमय छे, अशक्तिवान ते पुद्‌गल छे, तुं अरागी छे ने राग ते जड छे. तुं अद्वेशी छे द्वेश ते पुदूगल छे, तुं अक्रिय छे, तुं अमानी छे, तुं अमायी, अलोभी, अवेदी, अछेदी, अभेदी, अकंचनी, अवर्णी छे, तुं अरस, अगंध, अफरस, तुं अमाणी छे. तुं अजोनी, अजर, अमर छे. इत्यादिक आत्माना स्वरूपना अनंत गुण छे, अने सामो प्रतिपक्षी. जे जड तेना अनंता जे दोश ते विचारवा, तेने अपाय विचय धर्मध्यान कहीये. हवे विपाक वीचय धर्मध्य.न केहेतां जे विचित्र प्रकारनां शुभाशुभ कर्मना जे उदय भोगववा तेनुं जे स्वरूप विचारवुं एटले आठ कर्मनी एकसो अठ्ठावन प्रकृति तेनो बंध उदय उदीरणाने सत्ता तेना स्वरूपनो जे विचार, तथा एकसो चोवीस प्रकृति पुन्य पापनी तेनो विचार ते सर्वे पुदूगलना भाग जाणीने छांडवानो विचार तेथकी आत्माने छोडाववा ते विचार ते सर्वे विपाकविचय धर्मध्यान कहीये, हवे चोथुं स्वस्थानविचय धर्मध्यान केहेतां चौद राजलोक तथा उर्ध्वअधो तिर्छालोकनो विचार ते सर्वे स्थानके हे चेतन तुं जन्म मरण करी चुक्यो पण कांइ तारा भवनो अंत आव्यो नही माटे तुं तारा स्वरूपनी ओळखाण करके तारा जन्म मरण मटे. इत्यादिक जे विचार तेने स्वस्थान वीचय धर्मध्यान कहीये. हवे ते धर्मध्यानना चार लक्षण कहीये छीये. एक तो भगवंतनी आज्ञानी रुची होय १, विना उपदेशे पोताना स्वभाव थकीज रुची प्रगट थाय ने समकित पामे २. गुरु उपदेश थकी रुची प्रगटे ३. अने शास्त्रना अर्थ विचारवानी रुची. ४. ए चार लक्षण कह्यां हवे चार धर्मध्यानना आलंबन कहीये छीये. गुरु समीपे वाचना लेवी १. गुरु पासे पाछुं गणीवाळवुं २. गुरु पासे शब्द अर्थनुं मेळववुं ३. गुरु पासे धर्म कथानुं कहेवुं ४.

ए चार धर्मध्याननां आलंबन जाणवां. हवे धर्मध्यान निर्णय करवारूप विचारणा तेना चार भेद कहीये छीयें. प्राणाति पातादिक आश्रवद्वारनुं उपजवुं. तेना जे उपाय विचारीने दूर करवा १. आ संसारने विषे जे शुभाशुभ कारण मेलववां. तेनो विचार करी ते पण दूर करवा २. अनंता संसारनी जे शमता जे श्रेणी तेना अनंतपणानुं चींतववुं ३. वस्तुना परिणाम क्षण क्षण परावर्त्तन थाय छे. एटले पर्यायनुं पलटावुं समे समे छेज तेनुं स्वरूप विचारवुं ४. एटले धर्म ध्याननी चार अनुपेक्षा कही ते धर्मध्यान कह्यो.

हवे शुक्लध्यान कहीये छीये. शुक्ल कहेतां निर्मल शुद्ध आत्मानुं जे ध्यान तेने शुक्लध्यान कहीये. तेना पाया चार, प्रथक्त्व वितर्क १, एकत्व वितर्क २, सुक्ष्मक्रिया प्रतिपाती ३, उच्छीन क्रिया नीवृत्ति ४. हवे प्रथक्त्व वितर्क कहेतां जे प्रथक् प्रथक् जुदा जुदा द्रव्य गुण पर्यायना वितर्क कहेतां विचारवुं ते पहेलो पायो छे ते संक्षेप मात्र द्रव्य गुण पर्यायनो विचार कहीये छीये. हवे द्रव्य ते कोने कहीये ? जेनुं रूप त्रण कालमां वदलाय नही एटले भूत, भविष्य ने वर्तमान ए त्रण काल कहीये अने गुण पर्यायनुं परावर्त्तनपणुं थाय. उत्पाद, व्यय, ध्रुव ए त्रण लक्षणे करीने सहीत होय तेने द्रव्य कहीये. अने उत्पाद तथा व्यय ए पर्यायने विषे होय अने ध्रुवतापणुं ते द्रव्यने होय अने गुण पर्याय ते द्रव्यने विषे लाधे एटले द्रव्य छे ते पर्यायनी गोडे कोइ काले पलटे नही तेने द्रव्य कहीये. ते स्वभाविक द्रव्य जेम जीवने विषे ज्ञानादिक जे गुण तथा अव्याबाधादिक पर्याय रह्या छे तथा पुद्गलने विषे वर्णादिक जे पर्याय तथा मलवा वीखरवादिक गुण रह्या छे. जेम मृतीका द्रव्यने विषे जे आधारा आधेय प्रमुख गुण तथा रक्तादिक पर्याय रह्या छे तेम पट द्रव्यने विषे तंतु पर्याय कहीये एटले पटना अवयवनी अपे-

क्षाये करीने पर्याय कहेवाय इहां कोइ केहेशे के तमे अपेक्षाये द्रव्य पर्याय कहोछो, पण कांइ स्वभाविकपणे नही तेने कहीये जे पुद्गल स्कंध मांहे द्रव्य पर्याय ते अपेक्षायेज थाय. शा माटे जे पुद्गलना स्कंधनु जे मलवुं. त्यारे एक स्कंध द्रव्य थाय अने पाछा ते वली वेराइ पण जाय, ने स्वभाविक द्रव्य होय ते वेराय नही. अने द्रव्य एकना वे थाय नही माटे इहां अपेक्षीत द्रव्य कहेवाय. कदापी कोइ कहेशे के त्यारे परमाणु द्रव्य शा माटे नथी कहेता ? तेनो उत्तर. परमाणुने द्रव्य कहीये तो तेने विषे प्रदेश वीजा नथी. ए पोतेज प्रदेश अने पोतेज द्रव्य थाय, तथा वीजुं कारण ए जे द्रव्यथी द्रव्य मले नही अने परमाणु तो वीजा द्रव्यमां मली जाय, माटे सुमतीतत्वार्थ प्रमुखने विषे तो एवुं कह्युं छे के द्रव्य द्रव्यनुं मळवुं होय नही, अने इहां तो अनंता द्रव्यनुं मलवुं थाय अने अनंत द्रव्य मलीने एक पिंड जे वारे थाय, तेवारे आत्मा पण अनंता मलीने एक पिंड थवो जोइये तो एतो महा मोटुं दूषण आवे केमके अनंता आत्मानो एक आत्मा थाय ते वारे वेदांतवादीनो पक्ष सावीत थाय.

शिष्यवाक्य—अनंत जीवनो पिंड एकनीगोद छे के नहि ?

गुरुवाक्यः—अनंता जीवनी एकनीगोद ते खरुं, पण एक्के का जीवने वन्ने काया तो पोतपोतानी नोखी छे, माटे कांइ एक पिंड थयो नथी एतो जेम एक कोठीमां वाजरी भरीये, ते वाजरी-ना दाणा घणा छे पण सर्व जूदा जूदा छे, तेम अहियां कोठीरूप उदारीक निगोदपिंड छे अने दाणारूप जीव छे, अने पुद्गल द्रव्यने जे मलवुं तेने कांइ भाजन वीजुं नथी, भाजन पोतेज छे ने द्रव्य पोते छे माटे ते वनी ना आवे अने जे पुद्गलनी अपेक्षाये द्रव्य पर्याय कह्या तेमां कांइ दूषण नथी शा माटे जे विशेष वस्तुनो अ-

पेक्षाये करीने जे व्यवहार बंधाय, शा माटे के समवाय कारण प्रमुखे करीने द्रव्यनुं लक्षण मनाय छे तेने पण अपेक्षा अवश्य जाणवी ।। गुण पर्याय इव द्रव्यं इतितत्वार्थे ।। हवे स्वभाविक कहेतां द्रव्यभावी एटले द्रव्य ते गुण कहीये, एटले जीवनो उपयोग गुण, पुद्गलनो ग्रहण गुण, धर्मास्तिकायनो गतित्व गुण, अधर्मास्तिकायनो स्थितित्वगुण, आकाशास्तिकायनो अवगाहनात्व गुण, हवे कर्मभावी ते द्रव्यना जे पर्याय कहीये. एटले जीवने नरनरकादिक पर्याय पुद्गलने वर्ण गंधादिकनुं परावर्त्तवुं ते पर्याय कहीये, ते द्रव्यादिकनां त्रण लक्षण छे. भिन्न १, अभिन्न २, भिन्नाभिन्न ३, हवे जे भिन्न कहेतां प्रदेशना अवीभागथी त्रिविध छे. ए उपचारे जाणवुं. एटले लक्षणादिकथी अभिन्न छे, अने एकएकमां त्रण त्रण भेद आवे तेथी त्रण लक्षण बांध्यां तथा त्रण लक्षण उत्पाद व्यय अने ध्रुवरूप छे, एवो पदार्थ एकज ए जिन वचननुं प्रमाण छे एटले ए द्रव्य गुण पर्यायनुं भिन्नपणु खुलासे देखाडीये छीये. एक मणीरत्ननी माला छे, ते मालानुं जे कोइ तेज रक्तत्वादिपणुं तेथी माला अळगी छे, तथा ते मणीरत्नथकी पण अळगी छे, तेमज ए द्रव्य शक्ति गुण पर्याय व्यक्तव्यथी अलगा छे, तथापि ए त्रणे एक प्रदेश संबंधे वळग्या छे जे मणीरत्न छे ते पर्याय जाणवा, अने रक्तत्वादिक तेज ते गुण जाणवा, ने माला ते द्रव्य कहीये. एम द्रष्टांते अहियां समजवुं. आत्मा ते द्रव्य, ज्ञानादिक ते गुण, अव्यावाधादिक ते पर्याय, ते शक्ति तथा गुणनी व्यक्तव्यता करीये, तेवारे ते द्रव्यथकी भिन्न छे. तथापि मूल स्वरूपे जोतां एक प्रदेश संबंधे वळगी रह्या छे तेम असंख्यात प्रदेशे पण जाणवा एटले ए परोक्ष वस्तु छे तथा घटादिनो द्रष्टांत देइने प्रत्यक्ष देखाडिये छीये.

हवे जे घटादिक द्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाणे सामान्य विशेषरूप तेनुं

अनुभवीये छीये, ते सामान्य उपयोग जोतां मृतिकादि सामान्य भासे छे अने विशेष उपयोगे घटादि विशेष भासे छे. एटले सामान्यमां ते द्रव्यरूप जाणवुं, अने विशेष ते गुण पर्यायरूप जाणवुं. हवे सामान्यने द्रव्य कह्यो, ते सामान्य बे प्रकारनो छे. ते देखाडीये छीये. उर्ध्वता सामान्य अने तिर्यग् सामान्य. ते मध्ये उर्ध्वता सामान्य ते द्रव्यनी शक्ति कहीये; तथा पेहेला अथवा पछी जे गुणनुं विशेषनुं जे करवुं, ते सर्व मांहे एकरूप शक्ति रहे. जेम कंचनते कुंडलादिक सर्व घाटने विशे पोते रहे एटले पोतानी शक्ति सरखी राखे एटले कंचनना अनेक घाट निपजे. वली ते घाट भागीने बीजा घाट बने एटले जेम ते घाटनुं फरवुं थाय छे. तेम कंइ कंचननुं फरवुं थाय नही, ते कंचनना पिंडनुं कुशलतापणानुं कारण केटलुं के पर्याय मांहे सहचारीपणे रहे, अने जो ए कुंडलादिक पर्यायने विषे जो अनुगत कुंडलादि द्रव्यपणुं न मानीये तेवारे सर्वे विशेषरूप थाय. अने विशेषरूप थतां क्षणेकवादी बोधनो मत आवे, अथवा सर्व द्रव्य मांहे एकज द्रव्य आवे, ते माटे कुंडलादि द्रव्य तेमां सामान्यपणे सुवर्णादी द्रव्य अनुभववामां आवे छे, ते प्राप्त उर्ध्वता सामान्य मानवा, एटले कुंडलादी द्रव्य थोडा पर्यायने व्यापी छे अने कंचनादी द्रव्य घणा पर्यायने व्यापी छे. ए नर नरकादी द्रव्यनुं पण विशेषपणे समजवुं. ए सर्वे नैगम नयनो मत छे, अने शुद्ध संग्रह नयने मते तो एकज द्रव्य आवे, ते वार अद्वैतवादीनो मत आवे, ज्यारे भिन्न द्रव्यमां भिन्न प्रदेशी कहीये, अने विशेषमां द्रव्यनी शक्ति एकरूप एकाकार छे, तेने तिर्यग् सामान्य कहीये, ते देखाडीये छीये, जेम ते कुंडल द्रव्य पोतानुं कुंडलता द्रव्यपणुं राखे छे, हवे अहीयां कोइ एवुं कहेशेके कुंडलादीकनुं भिन्न व्यक्तव्यता करी, ते कुंडलादी एक सामान्यमां छे, तेम सुवर्ण पिं-

डादीकनुं कुशलता ते पण सामान्य, तो तिर्यग् सामान्यने उर्ध्वता सामान्यमां शो फरक छे ! तेने कहीये जे कांइ सर्व थकी भेद होय नहीं, देश थकी भेद होय एटला माटे ज्यां देश भेद जोयामां आवे, अने द्रव्य पर्यायनी एकाकार प्रतित उपजे, तेने तिर्यग् सामान्य कहीये अने ज्यां काल भेद जोयामां आवे, आवता कालनी प्रतित उपजे तेने उर्ध्वता सामान्य कहीये. अहीयां कोइ मतवाला दिगंवरादिक एवुं बोले छे. जे खट द्रव्यनी मांहेली कोरे एक काल द्रव्यना प्रर्याय केहेवा ते उर्ध्वता परचीये छीये. अने काल विना पांच द्रव्यने पोतपोताना अवयवनी संघाते मली रह्या तेने तिर्यग् परचीये छे ए तेने मते तिर्यग् परचीयेनो आधार कुंडलादिक त्रिजग सामान्य थाय, ते वारे परमाणुं रुप अपरचीये पर्यायनो आधार भिन्न द्रव्य जोइये. परंतु त्रिजग परचीयेनो विचार वहू खुलासेथी दिगंवरानुसारी देव आगमनामा ग्रंथने विषे छे. हवे उर्द्वता सामान्य शक्तिना वे भेद देखाडीये छीये. सर्वे द्रव्य पोतपोताना गुणपर्यायनी शक्ति मात्र जोइये, तेने ओघशक्ति कहिये अने जे कारज नीपजवाने तुरत थाय तेवुं देखीये, ते कारजनी अपेक्षा लेइने जोतां तेने समुचीत शक्ति कहीये एटले समुचीत केहेतां व्यवहार जोग छे, इहां द्रष्टांत देखाडीये छीये. पत्थरने विषे धातु रहेली एवी जे कांकरियो तेने विषे कंचन कहीये ते कहेवाय नहीं. शामाटे के ए वात लोकनी रुचीमां आवे नहीं. शामाटे के लोक कहेशे के पत्थरमां कंचन क्यांथकी आव्युं, पण जो द्रष्टी देइने जोइये तो ए पत्थर मांहेनु तो कांकरीमां पण कंचन आव्युं, पण तेने ओघशक्ति कहिये अने जे कांकरीमां कंचन कहिये, ए सर्वेने रुचीमां आवे, कांकरी उकले ने तरत कंचन नीकले माटे तेने समुचीत शक्ति कहीये. तथा वीजे द्रष्टांते जेम घासने विषे घी कहिये ते ओ-

घ शक्ति छे, ए घास गाय प्रमुख चरे छे तेथी दूध देछे ते दूधमां घीनी शक्ति आवी, ते घासना प्रभावथकी, एम अनुमानथी द्रष्टांत देइने जोइये तो, समज्यामां आवे पण ते कहेवाय नही शामाटे के लोकने रुची ना आवे अने दूधमां जे घी कहीये ते सर्वे लोकनी रुचीमां आवे, ते समुचीत शक्ति कहीये. एटले नीकट जे कारज आवे थके तेना कारणने समुचीत शक्ति कहीये अने परंपरा कारण कहेवां घणुं दूर कारण रह्युं माटे तेने ओघशीक्त कहीये, ते बेनुं अन्य कारणता अने प्रयोजनता ए बे बीजां नाम पण छे ते जाणवुं.

ए आत्मद्रव्य माटे ए बे शक्ति खोलावीये छीये. जेम जे भव्यप्राणी जीवने पूर्वे अनंता पुद्गल परावर्त्तनवीत्यां ते दाहाडे पण ओघपणे सामान्य धर्मनी शक्ति हती अने जो पूर्वे नहोती तो छेले पुद्गल परावर्ते शक्ति क्यांथी आवे ? छती पर्यायविना समर्थपर्याय थाय नहीं, माटे ए पुर्वनी अवस्था तेने ओघशक्ति कहीये अने छेला पुद्गल परावर्त्ते धर्मनी समुचीत शक्ति कहीये.एटले आगळना जे पुद्गल परावर्त्तन विषे जीवने वाल अवस्था कहेवाय छे, अने छेलुं पुद्गल परावर्तन बाकी रह्युं त्यांथी ते मोक्ष जाय त्यां सुधी जोवन अवस्था कहीये, ए विचार हरीभद्र सुरीकृत जोगनी वीशी विषे कह्यो छे एम एक एक कारजने विषे ओघ समुचीतरूप अनेक शक्ति एक द्रव्यनी पामीये, ते सर्वे व्यवहारनये करीने छे एटले व्यवहारनये कारण कारजभेद नाना प्रकारना मनाय छे पण निश्चयनयथी तो द्रव्यनां कारज कारण अनेक, परंतु शक्ति स्वभाव जोतां एकरूपज हृदयमां भासन थाय छे अने जो एम ना होय तो स्वभावनो भेद पडे, स्वभावनो भेद पड्यो त्यारे द्रव्यनो भेद पडे, माटे देशकालादिकनी अपेक्षाये करीने एकानेक कारण स्वभाव मानतां कांइ दोश नथी केमके कालंतरनी अपेक्षाये छे 'एटले जे

कारण माटे स्वभावनुं अंतरभुत पणुं छेज तेणे करीने कांइ तेनुं नीफलपणुं नहोय त्यां शुद्ध निश्चयनयने मते तो कारणकारज मीथ्या छे एटले कारजकारण कल्पना छे कल्पनाये करीने रहीत जे द्रव्य तेने कहीये ते शुद्ध थीरतारूप छे तेणे द्रव्य जाणवो एम ए शक्तिरूप द्रव्य केहेतां सत्तानी शक्तिग्रहण करीने कह्यो.

हवे व्यक्तिरूप कहीये एटले व्यक्ति कहेतां जे प्रगटपणे जे गुण पर्याय थया, ते प्रत्ये देखाडीये छीये ते गुण पर्याय व्यक्तिपणे बहु भेदे एटले अनेक प्रकारना छे, पोत पोतानी जाति स्वभाव स्वभाविक कर्म भावी कल्पना कृत आप आपणा वस्तु स्वभावमां वर्ते छे, वळी कोइक शास्त्रवाला तथा दिगंबर वाळा ते शक्तिरूप गुण माने छे, केमके ए एवुं कहे छे के द्रव्य पर्यायनुं कारण ते द्रव्यज छे, तेम गुण पर्यायनुं कारण गुण छे ते द्रव्य पर्याय द्रव्य अन्यथा भाव जेम नर नरकादि गति अथवा जेम द्विप्रदेश त्रण प्रदेशी आदिक जे खंध तेनो गुण पर्याय गुणनो अन्यथा भाव छे अथवा जेम मती श्रुतादि विशेष अथवा भावस्त स्याद्वाद विशेष केवल ज्ञान छे, एम द्रव्य गुणनी जाति शास्वती छे अने पर्यायथी अशास्वती छे, एम एमना कहेवामां आवे. ए वात ते कांइ शासनमां बराबर आवती नथी, ए पण एक कल्पना पोतानी छे, अथवा तेवा शास्त्रोनी छे तथापि जुगती एम छे नहि, शा माटे के सुमति ग्रंथने विषे गुणपर्यायने जुदो कह्यो नथी. ते प्रत्यक्ष ए ग्रंथमां जोयामां आवे छे, उक्तंच सुमती ग्रंथे—परीगमणं पज्जाओ अणेगकरणे गुणती तुल्लठाः तह विणगुन्ती भणइः पजवण अदेशणा जह्मा. १

जेम कर्म भावीपणानुं पर्यायनुं लक्षण छे, तेम अनेक रीते करवुं ते पण सर्वे पर्यायनां लक्षण छे पण द्रव्य तो एकज छे अने ज्ञानदर्शनादिक जे भेद करे छे ते पर्यायज छे पण गुणना कहीये.

शामाटे के परमात्मानी देशनाने विषे तो द्रव्यपर्यायनी देशना छे पण द्रव्य गुणनी देशना नथी ए गाथानो एज अर्थ छे त्यारे कोइ तर्क करशे के गुण छे ते पर्यायथी जुदा नथी एवुं ज्यारे तमे कहेशो तो द्रव्य गुण पर्याय ए त्रण नाम शावास्ते कहोछो तेनो उत्तर जे एतो विवक्षा छे ते तो भेदनयनी कल्पना तेथकी कहेवाय छे परंतु घी ने घीनी धारा ए कांइ नोखी नथी, बोलवामां घी ने घीनी धारा बोलाय खरुं पण एकज तेमज स्वभावीने कर्मभावी कहीने गुणपर्याय भिन्न भिन्न समजाववामां आवे परंतु मूल स्वभावे तो एकज छे अने ए भेद सर्वे उपचरित छे ते माटे तेने शक्ति केम कहीये परमार्थ जोतां जूदापणुं दिसतुं नथी, शामाटे के उपचरित स्त्री कांइ हावभाव करे नहि तेम उपचरीते गुणशक्ति पण न धरे, तेमाटे जे गुणपर्यायथी भिन्न माने छे तेने दूषण देखाडीये छीये के जो द्रव्य पर्यायथकी गुण एवो पदार्थ जूदो होत तो त्रीजी नय पण कही जोइये पण सूत्रने विषे तो बेज नय कही छे द्रव्यार्थ अने पर्यायार्थ जो गुणपदार्थ नोखा होत तो गुणार्थनय जरुर केहेता ते उक्तंच सुमती ग्रंथे.

॥ दोउणणयाभगवयादव्वठीयपजवठीयाणीययो ॥
जइपुणगुणोवीहूणो गुणठीयणओविज्जुजंतो ॥ १ ॥
जंचपुणभगवयातेसुतेसुसुतेसुगोयमाइणं ॥
पजवशणाणीययावागरीयातेणंपजाया. ॥ २ ॥

रूपादीकने गुण कहीये ते सूत्रे कंइ कह्युं नथी, शास्त्रमां तो एवा शब्द छे के वनपज्जवा गंधपज्जवा, रसपज्जवा खास पज्जवा इत्यादिक पर्याय शब्द बोलाव्या छे अने जे एकगणो काळो यावत् अनंतगणो काळो इत्यादिक जे ठाम ठाम शब्द छे ते तो गणित

शास्त्रना छे एटले ए पर्यायनी सामान्य विशेषनी गणतरी आश्री छे पण ते वचन कांइ गुणास्तीकने अवीखये वांची नथी.

उक्तंचसुमतीग्रंथमध्ये. ॥ २ ॥

गुणसदमंतरेणावितणुपजवविशेषशंखाण ॥
सीझइणवरं संख्याण सथद्धमोणयगुणोती ॥
जंपइजंपंतीअत्थीसमये एगगुणोदशगुणोअनंतगुणो ॥
रुवाइपरीणामाभणइतमहाविशेषो ॥ २ ॥
जहदशंसुदशगुणंमीय एगंमीदशतणंशमंतवेव ॥
अहीयंमीविगुणसदेतहेवयेयंपीदठवं ॥ ३ ॥

एम गुण पर्यायथी परमार्थ द्रष्टी भिन्न नथी तो ते द्रव्यनी पेरे शक्तीरुप गुण केम केहेवाय. पर्यायना दळने गुणनी शक्तिरुप कहोछो, तेने विषे मोहोटुं दूषण आवे छे तेने दूषण देखाडीये छीये, के जो गुण पर्यायनुं दल कहीये तो उपादानकारण पण तेज थाय, त्यारें द्रव्य शाने कहीशुं ने द्रव्यनुं काम ज्यारे गुणे कर्युं त्यारे द्रव्यनुं कारण शुं रह्युं अने गुण ने पर्याय ए बे पदार्थ ज्यारे कहीशुं त्यारे त्रीजो पदार्थ न ठर्यो ते वारे कहेशो के अमे कहीये छीये के द्रव्य पर्यायने गुण पर्यायनुं कारज भिन्न छे ते माटे द्रव्य गुणरूप कारण जुदुं कल्पीये तेनो उत्तरके ए वात कांइ संभवती नथी शामाटे के कारज माटे कारण शब्दनो प्रवेश छे, तेणे ए कारण भेदे कारजनो पण भेद थाय अने कारजभेद थयो ते वारे तो प्रवेश पण थाय तेने कारण भेद थाय ए अन्योअन्याश्रीयनामे दूषण उपजे ते माटे गुण पर्याय जे कहीये, ते गुण परिणमवानो हेतु भेद कल्पनारूप तेथीज केवळ संभवे, पण परमार्थे नहीं, अने जे द्रव्य

गुण पर्याय ए त्रण नाम जे कहीये ते पण भेद उपचारनये करी-ने समजवा एवी रीते द्रव्य एक गुणपर्याय अनेक छे परंतु मांहोमांहे परस्पर भेद वीचारवो एमज आधाराधेय प्रमुख भावे केहेतां स्वभाव तेहीज मनमां वीचारवो.

हवे तेहिज स्वरूप विवरीने देखाडीये छीये, घटादिक जे द्रव्य ते आधाररूप दिसे छे, जे माटे ए घटरूपादिक ते थकी ज-णाय छे. एटले गुण पर्यायरूपे रसादिक आधेयपणे द्रव्य उपर रह्या छे एम आधाराधेय भाव एवी रीते द्रव्यथी गुण पर्यायने भेद छे तथा रूपादिक गुणपर्यायने एक इंद्रिगोचर कहेतां विषय छे, एटले जेम रूप चक्षु इंद्रिज जाणे अने रस जीभ इंद्रि जाणे इत्यादि. अने घटादि द्रव्य छे ते बे इंद्रिगोचर छे एटले चक्षु इंद्रियकी दिठामां आवे अने स्पर्श इंद्रियकी पण जणाय. एटले एने विषे ए बे इंद्रिनो विषय छे, तथा नैयायिक मतना अ-नुसारथी विचारीने जोइये तो त्रीजी इंद्रिनो पण विषय छे एटले घ्रांण इंद्रिये करीने पण द्रव्य प्रत्यक्ष छे. गंधवति पृथ्वि इतिवचनात् इत्यादिक विचारतां ज्ञानने विषे भ्रांतपणुं थाय ते माटे एक अनेक इंद्रि ग्राह्यपणे द्रव्यथकी गुण पर्यायने भेद जाणवो, गुंण पर्यायने मांहोमांहे भेद ते स्वभाविक पण कहीये, कर्मभात्रि पण कहीये, ए बे कल्पनायकी जाणवा. तथा संज्ञा कहेतां नाम तेथकी पण भेद द्रव्य नाम, गुण नाम, पर्याय नाम, ए संख्या गणनादिक भेद तो द्रव्य जोइये तो छ छे, अने गुण अनेक छे पर्याय पण अनेक छे, एम भेद ज्ञाननुं विचारवुं, एटले द्रव्यथकी गुण पर्याय नोखा करवा कोइ ठेकाणे पर्याय द्रव्यमां समाववा कोइ ठेकाणे पर्याय गुणमां समाववा, कोइ ठेकाणे गुणपर्याय ए बे द्रव्यमां समाववा, एवी रीते ध्यान करवुं तेने शुक्ल ध्याननो पेहेलो पायो कहीये,

पण एटलो वीशेष छे के आ द्रव्यना विचारने विषे अन्य मतनी अपेक्षाओ तथा अन्य शास्त्रनी अपेक्षाओ नोखी छे ते त्यां ध्यानमां न होय ध्यानने विषे तो स्वआत्म द्रव्य गुण पर्यायनोज विचार होय एटले प्रथम पायो शुक्ल ध्याननो कह्यो.

हवे बीजो पायो एकत्व वितर्क कहीये छीये, एकत्व केहेतां जे गुण पर्याय सहित द्रव्य, एने एकत्व कहीये, तेनो जे विचार तेने वितर्क कहीये, हवे पूर्वे जे भेद प्रथक् प्रथक् करीने विचार्युं हतुं ते तो व्यवहार नयनो पक्ष, अने ते दसमा गुणठाणा सुधी होय अने आ जे पाया ते तो शुद्ध निश्चयनयनुं स्वरूप छे, अने बारमे गुणठाणे ध्याये, ए पायाथकी घाति कर्मनो क्षय करीने केवल ज्ञान पामे ए सर्व आ पायाने विषे छे, ज्ञान दरशन चारित्र सहित आत्मा एक छे, ते अहीयां ज्ञानादिक गुण पर्याय आत्माथकी जुदो विवरवो होय नही, अहीयां तो फक्त एकत्व स्वरूपनो विचार छे, अहीयां संक्षेपथकी अभेद ज्ञान कहीये छीये. हवे जे अभेद पक्षने अनुसरीने जे द्रव्यादिकनो गुण पर्यायनो जो एकांत भेदज भाखीये तो बीजा द्रव्यनी पेरे स्वद्रव्यने विषे पण गुणगुणी भावनो उच्छेद थइ जाय, केमके जीव द्रव्यना गुण ज्ञान दरशन चारित्र इत्यादिक छे, तथा पुद्गल द्रव्यना मलण वीखरणादिक गुण, ते पोतपोताना गूण पोतपोताना द्रव्यने अहीने रहे छे, अने जे वारे भेद मानीये ते वारे पोताना द्रव्यनो नियम रहे नहि, जेम जीव द्रव्यना गुण पुद्गल द्रव्यथी जुदा छे तेम ते पोताना द्रव्यथकी पण जुदा पडी जाय ते वारे एवो नियम न रह्यो के जे ज्ञानादिक गुण तेनो गुणी जीव द्रव्य अने मलण वीखरण गुणनो गुणी पुद्गल द्रव्य एवो व्यवहार न रहे. माटे द्रव्य गुण पर्याय अभेदपणेज संभवे वली ते अभेदपणा उपर जुक्ति करीने देखाडीये छीये

के द्रव्यने विषे गुण पर्यायनो अभेदज संबंध छे, ने जो द्रव्यने विषे गुण पर्यायनो समवाय न मानीये तो संबंध भिन्न कल्पिये, ते वारे अन्य अवस्था दूषण थाय, जे माटे गुणगुणीथी अलगो समवाय संबंध कह्यो, तो ते उपर द्रष्टांत कहीये छीये. पटने पटनुं उजलतापणुं ते कंइ जूदुं छे नहि, पटते द्रव्य छे अने उजलतापणुं ते गुण पर्यायादिक छे, माटे एकत्वज छे, अने कदापि गुण पर्यायनो समवाय द्रव्यमां नहि मानो तो ते गुण पर्यायने कोइ बीजो समवाय पण जोइये. तो ते उजलता पट द्रव्यने नथी वलगी तो एनो समवाय कोण द्रव्य साथे छे, ते तो कांइ बीजा द्रव्य साथे दीसतुं नथी, माटे गुण पर्याय ते पोताना द्रव्यमां छे, ते कांइ जुदा नथी अने कदापि अन्य द्रव्यना साथे समवाय मेलववा जइये तो, वली अन्य अन्यने मेलवाय एम करतां कंइ एक ठेकाणे स्थिर बेसे नही. अने जो समवायनुं स्वरूप संबंध अभिन्नपणे माने तो गुण गुणनु स्वरूप संबंध अभिन्न मानतां शुं बगडे छे जे फोकट नवो संबंध उभो करवो? नवी कल्पना करवी एमां शुं हाथमां आवे छे? तथा जो अभेद नही मानो तो तमने मोटुं बाधक आवशे, ते पूर्वे सोनुं हतुं तेज कुंडल थयुं छे तथा जे पूर्वे मृतीका हती तेज कोठला प्रमुख आकार बंधाणो छे, अथवा जे घट प्रथम रक्त वर्ण हतो ते ज श्याम थयो एवुं सर्व लोकने अनुभव शुद्ध व्यवहार न घटे, जो अभेद स्वभाव द्रव्यादिक त्रणेने न होय तो बीजुं बाधक पण देखाडीये छीये के खंध कहीये तथा अवयवने देश कहीये एम अवयवनो जो भेद मानीये तो बमणो भार खंधमां थवो जोइये, शामाटे के एक खंधनो भार बीजो अवयवनो भार, एम बमणो भार भेद मानतां थवो जोइये जेमके एक लाडु ते शेरनो छे, ते लाडु ते द्रव्य छे अने एनो जे वान पात हरवादीक गुण तथा श्वेतादिक पर्याय

एम ज्यारे लाडु थकी गुण पर्याय जूदा मानीये, त्यारे शेर भार तो लाडुनो हतो तथा गुणनो पण शेर भार जोइये, तथा पर्यायनो पण शेर भार जोइये तेवारे शेरनो लाडु ते त्रण शेर जोइये, ते तो वात संभवे नही त्यारे ए गुण पर्याय ते द्रव्य छे, एम समजवुं पण जूदुं न समजवुं, अथवा नवा नैयायिक एम कहे छे के अवयवना भार थकी अवयवीनो भार अत्यंत ओछो छे तेने मते द्वीप्रदेशादीक खंध मांहे कंइ ए उत्कृष्टो भार न थवो जोइये, पण ते मिथ्या छे, शा माटे जे द्वीप्रदेशी खंध एकला परमाणुंनी अपेक्षाये अवयवी छे, अने परमाणुं ते अवयव छे. त्यारे परमाणुं करतां द्वीप्रदेशीमां ओछो भार जोइये, ने एक परमाणु प्रदेश करतां द्वीप्रदेशी खंध वमणो छे, ते ओछो केम थवानो ? अथवा एक परमाणुं मांहे उत्कृष्टु भारेपणुं मानीये तो रूपादीक विशेषपणे परिणम्या जोइये तो द्वीप्रदेशी मांहे केम न मान्या जोइये, ए माटे अभेद नयनां बंध मानीये तो प्रदेशनो भार छे तेज खंधना भारपणे परिणमे, जेम तंतुरूप पटरूपपणे परिणमे, जेम एक शेर तंतुनो पटवणे ते पट पण एक शेरनो थाय ते वारे गुरुपणानो दोष न लागे. त्यां कोइ कहेशे के तमे एकज द्रव्य एकत्वपणे मानो छो, अने भेद मानता नथी तो कोइ मेहेलात प्रमुख आवास छे तेने विषे काष्ठ पत्थर लोढुं माटी चुनो इत्यादिकनापर्याय मळीने एक भुवन (घर) थाय छे, तेने एक द्रव्य कहो छो, एक घर इत्यादीक लोक व्यवहार माटे एक द्रव्य कांइ मनाय नही. शामाटे के एक द्रव्य गुणपर्यायनो अभेद होयतो कहीये पण अहीयां तो द्रव्य घणा छे माटे एक द्रव्य न मनाय पाषाण काष्ट इत्यादीक द्रव्य नोखा नोखा छे माटे न मनाय. जे एकज द्रव्य होय तेना गुणपर्याय ते अभेदमां गणाय जे घटने घटनो जलधारण गुण रक्तत्वादीक प-

र्यायते अभेद छे ते कांइ द्रव्यथी जूदा नथी, तेमज आत्मद्रव्य तेज आत्मगुण तेज आत्मपर्याय एवो व्यवहार अनादि सिद्ध छे, जेजीव द्रव्य अजीव द्रव्य इत्यादिक जे व्यवस्था सहित जे व्यवहार थाय छे ते गुणपर्यायना अभेदथी नीपजे, ज्ञानादिक गुणपर्यायथी अभिन्न द्रव्य ते जीव धर्म, मलण विखरणादिक गुणपर्यायथी अभिन्न ते अजीव द्रव्य, नहि तो द्रव्य सामान्यथी विशेष संज्ञा थाय, तेमाटे सामान्य कांइ रहे नहि, अने द्रव्य गुण एवो शब्द पणं रहे नहि, अने जे द्रव्य गुणपर्याय ए त्रण नाम छे, ए त्रणे नाम स्वजाती छे अने एकत्वपणे परिणमे छे ते माटे ए त्रणे ने एकज प्रकारे कहीये तेम आत्मगुण पर्याय ने एम जाणवुं अने जो द्रव्य गुणपर्याय ने अभेदता पणुं नथी तो कारण कारजने पण अभेदता पणुं ना होय त्यारे मृतिकादि कारणथी घटादिक कारण केम नीपजे. कारज माटे कारजनी शक्ति होय तोज कारज नीपजे तेविना सर्वथा कारज नीपजे नहि, कारण मांहे अछती वस्तुनी परिणती नीपजे. जेम ससाने सिंघ ना थाय शामाटे के ससाने विषे सिंघपणानी शक्ति रही नथी अथवा बीजे द्रष्टांते एज घटवेलुकानो कां न बनावे पण वेलुकामा घटपणानी शक्ति नथी ए शक्ति तो मृतिकामांज छे माटे सत्तामां जे शक्ति होय तेज गुणपर्यायमां व्यक्ति पणे प्रगट थाय, वास्ते जे कारज माटे कारणनी सत्ता मानीये त्यारे अभेद पणुं सहेजज आवे. आहियां कोइ कहेशे जे कारज उपन्या पहेलां जो सत्ताये कारज कारणने विषे रह्युं छे तो प्रथमज कारज केम नथी देखातुं? तेनो उत्तर कारज नथी उपन्युं त्यां सुधी कारण मांहे कारजनी शक्ति द्रव्यरूपे तिरोभावनी छे तेणे करीने कारज जणातुं नथी. पण सामग्री मले त्यारे गुणपर्यायनी व्यक्तिथी आविरभाव थाय छे. तेणे करी कारज दिसे छे एटले तिरोभाव तथा आवीरभाव ए बे दरशना .दरश

न जणात्ववारुप कारजनापर्याय विशेष जाणवा, तेणे करी आवीर-भावने सत्य असत्य विकल्प दुषण न होय, शामाटे के अनुभवने अनुसारे पर्याय विकल्प छे, अहियां नैयायिक मतवाला एवुं कहे छे के अतिनकाल विषे जे घटादिक अछता छे तेनुं जेम ज्ञान होय ते पण अछतुं छे तेम घटादिक कारज अछताज मृतिकादि दलथकी सामग्री मले नीपजशे. ए अछतानुं ज्ञान होय तो अछतानी उत्पत्ति केम न होय एटले घटनुं कारण दंडादिक अमे कहीये छीये त्यां लाघवपणुं छे, तमारे मते घटाभी व्यक्तिनुं दंडादिक कारण कहेवुं त्यां गौरव होय. बीजुं अभी व्यक्तीनुं कारण चक्षु प्रमुख छे पण दंडादिक नथी, ते माटे भेद पक्षज द्रव्य घटाभी व्यक्तनुं कारण दंडाभाव पण जे घट चक्षुभावे गौरव नथी, एम जे बोलतां दोष लागे, अछतानी उत्पत्ति एवुं कहेवुं ते पण मिथ्या वार्ता छे, अने भूतकालने विषे पण घटादिक पदार्थ अछता नथी पर्यायथी नथी, पण द्रव्यार्थथी नित्यज छे अने निशट घट पण मृतिकारुप छे, ते तो सर्वथा असत्य मार्ग छे ते नभकुशुमवत थाय, जे एवुं बोले छे के सर्वथा अछता पदार्थनुं सर्व ज्ञान मांहे भासन छे, एवुं कहे छे तेने मोटो दोष आवे छे, ते देखाडिये छिये, के जो ज्ञानने स्वभावेज अछतो अर्थ अतीत घट प्रमुखनो भासे एवुं मानीये तो सर्व संसार ज्ञानना कारज छे एटले वहाज आकार अनादि अविद्या वासनाए अछता भासे छे, जेम स्वप्न मांहे अछता पदार्थ भासे छे, एम बाह्य आकार रहीत शुद्ध ज्ञाने ते बोधनेज होय, एटले जे पूर्वे कह्यां एवां वचन जे बोलवाथकी ए योगाचार नामे त्रीजो बोध तेनो पक्ष थाय, ते माटे अछतानुं ज्ञान न होय; तो कोइ कहेशे के तमने केम जाणवामां आव्युं के अतीतकाले घट हतो ? तेनो उत्तर जे अतीत घट हमणां पण जाणीये छीये शा

माटे जे द्रव्यथी छता अतीत घटने विषे वर्त्तमान गया कालरुप पर्यायथी हमणां पण अतीत घट जाण्यो जाय छे, अथवा नैगम नयने मते अतीत कालने विषे वर्त्तमानतानो आरोप करीये छिये, ते सर्वथा अछती वस्तुनुं ज्ञान न थाय, एटले धर्म जे अतीत गया कालने विषे जे अछतेकाले घट नहि तो अभावकाले भासे छे, अ-थवा धर्म अतीत घट अछतेकाले भासे छे, एम तुजने चित्त मांहे शुं भासे छे ? ते सर्वे अतीत अनागत वर्त्तमानकाले निर्भयपणे भासे छे, ए द्रष्टांत जोतां तो ससासिंघ पण जाण्युं जाय एम नथी, आ माटे के अछता अर्थनो बोध न होय, निश्चय ए कारण कार-जनो अभेद छेज ते द्रष्टांते करीने द्रव्यगुण पर्यायनो पण अभेद छे ज्ञानादिक गुण पर्याये करीने आत्मा पण अभेद छे एवी रीते ए-कत्व भाव थाय, परंतु समासे वात आ.वी तेथी बेये नयना स्वामी देखाडीये छीये. एटले भेद नयनो स्वामी ते नैयायिक छे अने अ-भेद नयनो स्वामी ते सांख्य छे, अने जिन मतवाला भेद तथा अभेद बेहु नयना स्वामी छे, एटले एके नयना पक्षपाती नथी, स्याद्वाद पक्षना अधि ारी छे, उक्तंचः—

अन्योअन्य पक्ष प्रतिपक्ष भावात् व्यथा परम सरिणः प्रवादः नयानशेषान विशेषमीथः न पक्षपाती समयस्तथानेः १ यएवदोषा किल नित्यवादे विना-सीवादे विशमस्तएव परस्पर सोषुकंटकेषु जयत्य धृ-ष्यं जिनसासनंते. २ ॥

माटे जिन स्या.दूवाद पक्षी छे हवे एवो जे एकत्व भाव ते शुक्ल ध्याननो बीजो पायो बारमे गुणठाणे होय एटले एकत्ववीतर्क

बीजो पायो कह्यो, तथा सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती त्रीजो पायो तथा उच्छीन क्रियावृति चोथो पायो ए केवल पाम्या पछी मोक्ष जवाना अवसरना छे एटले ए ध्यान तप कह्यो. ५

हवे कायोत्सर्ग छट्टो तप कहिये छीये. एटले काया प्रमुख वोसराववुं तेने कायोत्सर्ग कहीये, एटले उपाधीनुं वोसराववुं, तथा कषायनुं वोसराववुं, तथा दूर्ध्याननुं वोसराववुं, तथा कायानुं वोसराववुं अने आत्मस्वरूपने विषे रमवुं. तेने कायोत्सर्ग तप कहीये ए छ प्रकारे अभ्यंतर कहेतां आत्मानी मांहिली कोरे रह्यां जे कर्म तेने बालवाने समर्थ तेने अभ्यंतर तप कहिये एटले लोक एने तपस्वीना जाणे पण समजु होय ते तो एने तपस्वी जाणे अने कर्मथी छोडाववा समर्थ एज तप छे, माटे तप तो एने कहीये, एटले निर्जरानुं स्वरूप कह्युं. ८

हवे मोक्षतत्व कहीये छीये एटले मोक्ष कहेतां जे कर्मथकी जीवने मुकाववुं.

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे जे निर्जरा कही ते कर्मथकी निर्जरवुं ते मुकाववुंज कह्युं हतुं. अने अहीं वली मोक्षतत्व जुदो कहोछो तेमां शुं भिन्नपणुं छे.

गुरुवाक्य—हे भद्र निर्जरा ते देश थकी कर्मनुं छांडवुं छे, अने सर्व थकी कर्मनुं मुकाववुं तेने मुक्ति कहीये, अने निर्जरा तो निगोदिया जीवने पण छे, अने मुक्ति तो गर्भज पंचेंद्री मनुष्य चारीत्रीयाने चौदमे गुण ठाणे छे.

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे निर्जराना बार भेद कह्या तेमां कया भेदने विषे निगोदीयाने निर्जरा छे जे तमो बतावो छो.

गुरुवाक्य—निर्जराना बे भेद छे एक सकाम निर्जरा बीजी

अकाम निर्जरा ते अकाम निर्जरानो भेद निगोदीयाथी मांडीने मनुष्य सुधी छे एटले अकाम कहेतां जेने ज्ञानदर्शन चारीत्रनी ओ- ळखाण नथी पण छेदन भेदनादिक दुःख सहीने जे कर्मनुं छुटवुं तेने अकाम निर्जरा कहीये. जेम मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्री घणां कठोर कर्म करीनिनर्के जाय, त्यां नर्कनां छेदनभेदन खमीने कर्म निर्जरे तथा मनुष्य तिर्यंच समकित विनाना जीव तप क्रिया कष्टप्रमुख सहीने शुभ कर्म बांधीने देवतामां जाय ते देवता संबंधीया सुख भोगवीने कर्म छुटे, ते बन्नेने अकाम निर्जरा कहीये, तथा जे जीव समकिता- दि गुण पाम्यो अने ज्ञानदर्शन चारीत्रना बलथकी कर्मनिर्जरे तेने सकाम निर्जरा कहीये ते विचार श्री भगवतीजीने विषे बालमरण तथा पंडित मरणना अधिकार थकी समजजो. हवे जे सर्व कर्मथकी रहीत थाय तेने मुक्ति कहीये, एटले जीवना असंख्यात प्रदेश छे ने अकेके प्रदेशे अनंतां कर्म वलग्यां छे तेथकी छुटे तेने मुक्ति कहीये.

शिष्यवाक्य—स्वामी जीवतो एक द्रव्य अखंड छे, तो प्रदेशे प्रदेशे मांही भेदीने पेसी गया के शीरीते ए कर्म वलग्यां छे.

गुरुवाक्य—हे भद्रजीव छे ते अखंड छे, ते जीवथकी जीवना प्रदेश नोखा न पडे, परंतु ए प्रदेशना आकारनुं फरवुं छे, तेथी प्रदेश अकेकानो श्रेण पण बंधाय तथा लोकाकाशने पुरवो होय त्यारे जेटला आकाश प्रदेश लोकाकाशना छे तेटले-प्रदेशे आत्मा- नो अकेक प्रदेश वहेंची अपाय, माटे ए प्रदेश आत्माना एवी रीते भिन्न भिन्न थाय, पण द्रव्यथकी जुदो न पडे. हवे ए जे कर्म वल- ग्यां छे, चेतनने ते खीरनीररूपे वलगी रह्यां छे तथा जेम कंचन प्रमुख धातुने अग्निमां घालेथी अग्निने धातु एकमेक थइ रहे छे तेम आत्मा साथे कर्म वलगी रह्यां छे ते कर्म सर्व छुटे तेने मुक्ति कहीये ते सिद्धना पंदर भेद छे,

शिष्यवाक्य—स्वामी मुक्तिना अधिकारनें विषे सिद्धनुं शुं काम छे.

गुरुवाक्य—मुक्ति कहीये अथवा सिद्ध कहीये. ए वन्ने एकज नाम छे अने मुक्ति कहेवानुं कारण केटलुं छे के आहियां कर्मथकी मुकावुं तेनुं नाम मुक्ति तो जे कर्मथकी मुकाणो एज जीव सिद्ध आहियां कांइ वीजो अर्थ छेज नाहि.

शिष्यवाक्य—स्वामी सिद्ध तो लोकने अंते होय.

गुरुवाक्य—सिद्ध तो कर्मथकी मुकाणो एज सिद्ध, पण तेने रहेवानुं थानक लोकने अंते छे, पण त्यां कांइ वधाओने सिद्ध समजवा नहि त्यां तो सिद्ध जीव पण छे, अने संसारी जीव पण छे, माटे अहीं कर्मथकी मुकाणो तेने सिद्ध कहीये, हवे तेना पंदर भेद तें देखाडीये छीये. तिर्थंकर सिद्ध १, तिर्थंकर विनाना सिद्ध २, तिर्थसिद्ध ३, अतीर्थसिद्ध ४, ग्रहस्थलिंगेसिद्ध, ५ अन्यलिंगेसिद्ध ६, स्वलिंगेसिद्ध ७, स्त्रीलिंगेसिद्ध ८, नपुशकलिंगेसिद्ध ९, पुरुषलिंगेसिद्ध १०, प्रत्येकबुद्धासिद्ध ११, स्वयंबुद्धासिद्ध १२, बुद्धबोधीसिद्ध १३, एक सिद्ध १४, अनेकासिद्ध १५, हवे तीर्थंकर सिद्ध ते महावीर स्वामी प्रमुख जे तीर्थंकर मोक्षे गया तेने तीर्थंकर सिद्ध कहीये १, तीर्थंकर विनाना सिद्ध एटले जे गौतमादि गणधर सिध्या तेने आजिन सिद्ध कहीये. २, तीर्थ सिद्ध एटले जे भगवाननुं तीर्थ प्रवर्त्यां पछी एटले जे रिखवदेव स्वामीये प्रथम तीर्थ प्रवर्त्तीव्युं, त्यार पछी जे मोक्षे गया तेने तीर्थसिद्ध कहीये. एटले तीर्थ कहेतां जे साधु साधवी श्रावकश्रावीका ए च्यार प्रकारनुं तीर्थ कहीये, ए साधु प्रमुखने जंगम तीर्थ अने भगवाने एमनेज तीर्थ कह्यां छे, ते तीर्थ थाप्या पहेलां जे मोक्षे गया तेने अतीर्थ

सिद्ध कहीये ते मरुदेवा माता प्रमुख ए चोथो भेद ४, ग्रहस्थलिंगे कहेतां संसारपणामां रह्याथको कर्म खपावी मोक्ष जाय तेने ग्रहस्थ-लिंगे सिद्ध कहीये.

शिष्यवाक्य—स्वामी चारित्र विना तो मुक्तिनी ना पाडोछो तो ग्रहस्थपणामां केम मोक्षे गया.

गुरुवाक्य—चारित्र विना मुक्ति होय नहि पण चारित्रना बे प्रकार छे एक निश्चय बीजो व्यवहार जे व्यवहार चारित्र छे ते संसारनो त्याग करवो तथा पंचमहाव्रत उचरवां इत्यादिक सर्वे ए व्यवहार चारित्र छे तेने विषे कांइ मुक्ति छे नहि, ते तो अभवी पण आदरे छे अने मुक्ति तो निश्चय चारित्रमां छे, ते निश्चय चारित्र ते आत्म रमणने विषे रह्युं छे, ते ज्ञान ध्यानथी करीने हेठलना गुणठाणाने छांडतो जाय अने उपरना गुणठाणाने आदरतो जाय एम अनुक्रमे चउदमे गुणठाणे थइने मोक्षे पण जाय ए सर्वे आत्मानी रमणता ज्ञान ध्यानरूप उपयोग तेमां छे, ए कांइ बहारना व्यवहार चारित्रमां मुक्ति नथी, माटे ग्रहस्थने भाव चारित्र आवे तो मोक्षे जाय.

शिष्यवाक्यः—कोइ ग्रहस्थ मोक्षे गया के ए केहेणीज छे.

गुरुवाक्यः—मोक्षे गया छे, केहेणी खोटी होय नही. प्रत्यक्ष मरुदेवा ग्रहस्था वासेज मोक्षे गयां छे, एमणे क्यां साधुपणुं लीधुं छे, एटले ग्रहस्थ लींगे सिद्ध ५, अन्य लींगे सिद्ध एटले जैनशासनना लींग धारण विना अन्य दर्शनीना भेखवाला मोक्षे जाय तेने अन्य लींगे सिद्ध कहीये.

शिष्यवाक्यः—स्वामी जैनशासन विना बीजाने तो मुक्ति छे नही, अन्य दर्शनने विषे परीव्राजकनी पांचमा देव लोक सुधीनी

गति छे अने आजीवीका मतीने बारमा देवलोक सुधीनी गती छे, बीजा सर्वनी तेथी नीची गती छे. अने बारमा देवलोक उपर तो एक जैन दर्शनवाळानीज गति छे, अने नमे तो अहीं अन्य द-र्शननी मुक्ति कहोछो तेनुं केम ?

गुरुवाक्यः—हे भद्र तें जे प्रश्न कर्युं ते ठीक पण तारी नजर बरावर पहोंची नही, शा माटे के तेना तेज धर्ममां रच्या पच्या रहे तेनी एटला सुधी गती छे अने जेने अंतरमां जैन भाव आवे तेनी कांइ ए गति नथी.

शिष्यवाक्यः—स्वामी जो जैनभाव आवे तो ए छकायनो कुटो केम करे अने छकायनी हिंशा तो गइज नथी तो साधपणुं क्यां थकी आव्युं.

गुरुवाक्यः—छकायनो कुटो व्यवहार थकी न मट्यो ते देखी ने तुं स्वरुप हिंशाने पाप माने छे, ते कांइ ज्ञानी गुरुष खातरमां गणता नथी, शा माटे के मुक्तिनुं कारण ते तो ज्ञान तथा स्वभावने विषे छे, अने स्वरूप दया जे छे ते तो अज्ञानने विषे तथा परभा-वने विषे छे.

शिष्यवाक्यः—जो परभावने विषे तथा अज्ञानने विषे छे तो महाव्रत उचरवानुं शुं कारण छे.

गुरुवाक्यः—जे जीव समकीत पामीने सातमे गुण ठाणे गयां अने व्यवहार चारित्र ले तेने ए गुण कर्ता छे, शा द्रष्टांते के जेम कोइ पुरुष जमवा बेठो, अने सर्व जातनी रसोइ भाणामां आवी छे, अने ते रसोइ जमतानी वखतमां जो अथाणुं आवे तो वे केवल वधता भावे पण रसोइ भाणामां पीरशी नथी अने अथाणुं एकलुं भाणामां आवे तेथी कांइ सुख भागे नहीं माटे

समजुने पण जीवदया प्रमुख रुडी रीते पालवी ए जीवदया ज्ञानने बहु गुण कर्ता छे, जेम कोइवर परणवाने जाय अने पोशाकसारो नहोय तो लोकमां कशोभा पामे तथा पोताना मनथी पण बहु खोटुं लागे, अने पोशाक प्रमुख सामग्री सारी होय तो पोताना मनथी पण सारुं लागे अने लोकमां पण सारुं दीसे यद्यपी कन्या तो वरने वरवानी छे, कंइ पोशाकने वरवानी नथी तेम अहीयां पण जीवदया छे ते पोशाक तथा अथाणारूप समजवुं माटे समजुने ए गुण कर्ता छे, अने अन्य लींगवाला जे मोक्षे जाय, ते कंइ जैन दर्शनना शास्त्रना भोमीया नथी, ते तो एक ज्ञानना परीबलथकी आत्मस्वरूपनी रमणता करीने कर्मखपावे छे, जो एम ना होय तो अनार्य लोक अनार्यना मुलकमां रह्या थका अनंता मोक्षे गया छे, ते शाथकी मोक्षे गया त्यां कांइ जैननो उपदेश छे नही परंतु एक ज्ञानना परीबलथकी आत्मस्वरूपनी ओळखाण थइ तेथी स्वरूप रमणी थइने कर्मखपाविने मोक्षे जाय ते आगे अनंता गया हमणां जाय छे अने आगे आनंता जशे, ए वातमां शंका राखवी नही. स्वलींग तथा अन्यलींगने विषे मुक्ति तथा धर्म पेटुं नथी, धर्म तथा मुक्ति तो एक आत्मस्वरूपमां छे, एटले अन्यलींग एटले साधु वेशे सिद्ध थया ते ७, पुरुषलींगे सिद्ध ते पुरुषलींगे सिध्या ते गौतमादीक प्रमुख ८, स्त्रीलींगे सिद्ध ते चंदन वाला प्रमुख९, नपुशकलींगे सिद्ध ते जाते नपुशक धर्म न पामे कृत्रीम नपुशक सिद्ध १०, बुद्ध बोधी सिद्ध केहेतां जे गुरुना उपदेशथकी प्रतिबोध पामीने जे सिध्या ते ११ प्रत्येक बुद्ध केहेतां जे प्रतीकारण एटले कांइ कारण देखीने प्रतीबोध पाम्या जेम करकंडु रीखवने जराकुल जाणीने प्रतीबोध पाम्या तथा नमिराजा एक चूडी थकी प्रतीबोध पाम्या, इत्यादिक प्रतीबोध पाम्या तेने प्रत्येक बुद्ध कहीये १२, हवे स्वयंबुद्धि

केहेनां जे स्वयमेव पोतानी मेळे प्रतिबोध पामी चारीत्र लेइ मोक्षे गया तेने स्वयंबुद्धि सिद्ध कहीये.

शिष्यवाक्यः—स्वामी प्रत्येक बुद्धमांने स्वयंबुद्धमां शो फेर छे ?

गुरुवाक्यः—प्रत्येकबुद्ध परकारणवडे प्रतीबोध पामे छे अने स्वयंबुद्ध तेने पर पोतानो नियम नथी, शामाटे के मृगा पुत्र साधुने देखीने जाती स्मरण पामी प्रतिबोध पाम्या तेमज भ्रगु मोहित तथा भ्रगु मोहितना पुत्र आदे देइने छ जीव ते मध्ये बेने जाती स्मरण, चार एक एकना कारणथी, तथा अनाथी मुनी रोग आकुल थकी, तथा कपील केवली भिक्षाना कारण थी इत्यादिक स्वयंबुद्धनो कंइ एक प्रकारनो नियम नथी, तथा पि प्रत्येक बुद्ध अने स्वयंबुद्ध एनो अन्यभाव एक सरखो छे परंतु शास्त्रकारे भेद जूदो लख्यो छे, ते श्री पन्नवणा सूत्रनी टिकाने विषे एवुं कह्युं छे के स्वयंबुद्ध पोताने ज्ञान जाणपणुं होय तो पोतेपोतानी मेले विचरे, कोइना भेगो न विचरे. कदापि पोताने जाणपणुं ओछुं होय तो कोइ साधुना संघाडामां भेगो रहीने क्रिया आचार शीखे, पछी पोतानी खुशी होय तो भेगो विचरे या जूदो विचरे, अहियां कदापी कोइ कहेशे के स्वयंबुद्धने चेलाचेली परिवार न होय, ते कहेवावाला अज्ञानी छे, शा माटे के कपील केवलीये सातसें भिलोने दिक्षा आपी छे, इत्यादिक शास्त्रमां जुवे तो चेळाचेली परिवार कह्या छे, तथा भगवतीजीने विषे एवुं कह्युं छे के स्वयंबुद्धना साधु तथा साधवी तथा श्रावक तथा श्रावीका इत्यादिक पाठ घणा सूत्रमां छे पण जेने अज्ञानरुपी यां पडल आडां फरयां होय ते धणो ना देखे, तेमां कांइ शास्त्रनो दोष ना जाणवो, एटले स्वयं बुद्धनो अधिकार कह्यो १३. तथा एक सिद्ध ते महावीर स्वामी प्रमुख १४, अनेक सिद्धने रीखव देव

प्रमुख १५, एम पंद्रे भेदे कर्मथकी मुकाइने सिद्धि पदने वरया तेने मुक्तितत्व कहीये, एटले ए नव तत्व संक्षेपथी देखाड्यां, ते नव तत्वनुं सार तत्व एक छे ते सर्वे मांहे आत्म तत्व एज सार छे, अने बीजो जे अजीव तत्व ते छोडवा जोग छे एम ए बे तत्वनुं स्वरूप ओलखीने हेय ज्ञेय उपादेय ए त्रण स्वरूप मांहे हेय ते छांडवा जोग वस्तुने छांडवी, ज्ञेय कहेतां जाणवा जोग वस्तुने जाणवी, उपादेय कहेतां आदरवा जोग वस्तुने आदरवी, एटले जीवा जीव पदार्थ जाणवा अने ते जाणीने अजीव पदार्थनो त्याग करवो, अने जीव पदार्थ आत्म स्वरूप तेनुं आदरवुं, एवी रीते तत्वनो सार जाणी रागद्वेष विषय कखाय त्यागीने पोताना स्वरूपने विषे थिर भावे रमणता करवी एटले सर्व धर्मनुं तथा सर्व शास्त्रनुं सार ए जे छे.

॥ दुहा ॥

ए ग्रंथ पुरण भयो, पुरण भयो आणंद ॥
गुणनीधी गुण आगलो, प्रगटयो चिदानंद ॥ १ ॥
चिदघन आनंदनो, भाख्यो एह विचार ॥
तत्व बे तेमां भाखीया, जडचेतन ए धार ॥ २ ॥
तेना तत्व नव कह्या, विवरीने विचार ॥
तत्व एक तेमां कह्यो, अद्वैत भाव उदार ॥ ३ ॥
रत्नागर सम एह छे, भरीयो गहेर गंभीर ॥
बहु वस्तु बहु पदतणो, वहोरी भरीयो निर ॥ ४ ॥
कल्पवृक्ष समजाणजो, वंछीत पुरणहार ॥

सर्व ग्रंथ सीरताजए, उत्तम एह विचार ॥ ५ ॥
एह ग्रंथ जे वांचशे, भणशे जे महाभाग ॥
आत्मा निर्मल तेहनो, अनुभव साथे जाग ॥ ६ ॥
अनुभव एहमां दाखीयो, आत्म केरो सार ॥
वक्ता पुरुष ते धिये, अथवा श्रोतासार ॥ ७ ॥
अनुभव जग चिंतामणी, अनुभव वंछीतपुर ॥
अनुभवथी कर्म सवी टले, थाये ते शुरवीर ॥ ८ ॥
गुण अनंत अनुभवतणा, कहेतां नावे पार ॥
एहथी शिवसंपति मले, एहीज सुख दातार ॥ ९ ॥
समकित पण अनुभव विषे, चारित्र पण एह ॥
अनुभवथी केवल लहे, एमां नहि संदेह ॥ १० ॥
एम अनंता गुण कह्या, अनुभव ज्ञानना सार ॥
ज्ञाता लेजो परखीने, एह ग्रंथने धार ॥ ११ ॥
अनुभववीण जे जे कथा, ग्रंथ प्रकरण होय ॥
ते ते सहु निष्फल कह्यां, हंसविण काया जोय ॥१२॥
तजे कुबुद्धि एहथी, भजे सुबुद्धि सार ॥
पढतां एह ग्रंथने, भेद ज्ञान मनोहार ॥ १३ ॥
तेम अभेद ज्ञान छे, नय निश्चय व्यवहार ॥
आत्मज्ञानी सुख लहे, पामे भवनो पार ॥ १४ ॥
कल्प व्यवहार उछेदीयो, उछेद्यो परभाव ॥